श्री उदयप्रभदेव सूरि विरचित

आरंभसिद्धि.

श्री हेमहंस गणि विरचित टीका सहित—

श्री हरिभद्र सूरि विरचित

लग्नशुद्धि.

श्री रत्नशेखर सूरि विरचित

दिनशुद्धि.

ए त्रणे ग्रंथो सर्वोपयोगी जाणी गुर्जर भाषानुवाद
छपावी प्रसिद्ध करनार

श्रावक भीमसिंह माणेक.

पुस्तको प्रसिद्ध करनार तथा वेचनार.

मांडवी, मुंबइ.

संवत् १९७४. वीर संवत् २४४४. सने १९१८.

Printed by Ramchandra Yesu Shedge, at the Nirnaya-Sagar Press, 23, Kolbhat Lane, Bombay.

Published by Bhanji Maya for Bhimsi Maneck, 225-231 Mandvi, Sackgalli, Bombay.

प्रस्तावना.

आ अपार संसारसागरमां मग्न थयेला प्राणीगणो चोराशी लक्ष योनिरूप तरंगोमां भ्रमण कर्या करे छे. तेमां दैवयोगे मानुष्यादिक सामग्रीरूप फलकादिकनुं अवलंबन मळ्या छतां पण केटलाएक अभव्यत्वादिक दुर्भाग्यने योगे असत्कर्मरूप विपरीत वायुना आकर्षणथी पुनः पुनः अरघट्टघटीना न्याये तेज योनितरंगोमां अनंत काळ सुधी भ्रमण कर्या करे छे, अने केटलाएक भव्यो सद्भाग्यने योगे संयमादिक सत्कर्मरूपी अनुकूळ वायुनी प्रेरणाथी मुक्तिरूपी तीरे पहोंची निर्भय परमानंदने पामे छे. आ मुक्तिज सर्व कोइ पण दर्शनने इष्टतम छे, कारण के अन्य गतित्रय (देव, नारक अने तिर्यंच) सिवाय एक मनुष्यगतिमांज अने तेमां पण कर्मभूमिना मनुष्योने माटेज धर्म, अर्थ, काम अने मोक्ष ए चार पुरुषार्थ साधवानी फरज शास्त्रमां कहेली छे अर्थात् ते मनुष्योज चारे पुरुषार्थो साधी शके छे. तेमां मोक्ष पुरुषार्थने इष्टतम गणेलो छे एटले के मोक्ष साध्या पछी बीजुं कांइ पण साधवानुं अवशेष रहेतुं नथी. ते मोक्षने साधवानुं एकांत साधन धर्मज छे, एटले के धर्मनुं मुख्य फळ मोक्षज छे, अने अर्थ तथा काम ए आनुषंगिक फळ छे.[1] आ उपरथी सिद्ध थाय छे के मनुष्य अने तिर्यंचना प्राणित्व जाति अने आहारादिक धर्मो (संज्ञाओ) समान छतां पण मात्र एक धर्म पुरुषार्थने आश्रीनेज मनुष्यभव श्रेष्ठ गण्यो छे. कह्युं छे के—

"आहारनिद्राभयमैथुनं च, समानमेतत्पशुभिर्नराणाम् ।
धर्मो हि तेषामधिको नराणां, धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः ॥ १ ॥"

"आहार, निद्रा, भय अने मैथुन आ चार पशुओनी साथे मनुष्योने समान छे. तेमां मनुष्योने एक धर्मज अधिक छे, ते धर्म वडे रहित होय तो ते पशु समानज छे."

आ धर्म भिन्न भिन्न दर्शनोमां अन्यान्य प्रकारे वर्णन कर्यो छे. तेमां सर्वथा प्रकारे धर्मनी शुद्धता जैन दर्शनना जेवी कोइ पण दर्शनमां नथी एम घणी रीते सिद्ध थाय छे, परंतु ते अत्र अप्रस्तुत होवाथी कहेवामां आवतुं नथी.

अहीं धर्म शब्दनो सामान्य अर्थ फरज—कर्तव्य थइ शके छे. ते लौकिक अने लोकोत्तर भेदे करीने बे प्रकारनो छे. तेमां पित्रादिक पुत्रादिकनुं पोषण करे, जन्मोत्सवादिक संस्कार करे, विद्याध्ययन करावे, लग्न करे तथा व्यापारादिकमां योजना करे, ए तेमनी फरज—धर्म छे. तेज रीते पुत्रादिक पित्रादिकनी सेवा—भक्ति करे, तथा अंते और्ध्वदेहिकादिक क्रिया करे, ते तेमनी फरज—धर्म छे. एज रीते पति—पत्न्यादिक अन्योन्यना हितकार्यमां प्रवर्ते तथा निर्वाहादिकने कारणे कृषि, व्यापार अने राजसेवादिक कार्यमां प्रवर्ते, ए विगेरे धर्म—फरज कहेवाय छे. आ सर्वनो लौकिक धर्ममां समावेश थाय छे अने केवळ

---

१ उपरनी युक्तिथी अर्थ, काम अने मोक्षनो धर्ममांज समावेश थाय छे.

आत्माना मोक्ष पर्यन्तना पारलौकिक हितने माटेज नित्यकर्म, देवपूजा, गुरुशुश्रूषा, दान, शील, तप, भाव, संयम (देशविरति अने सर्वविरति) विगेरे सत्क्रियामांज जे प्रवर्तवुं ते सर्व लोकोत्तर धर्म कहेवाय छे. आ बन्ने प्रकारना धर्ममां जेम बाह्य सामग्री एटले पुरुषसंपद्, धन, नीरोगता, आत्मवीर्य, सद्बुद्धि अने चित्तोत्साह विगेरेनी आवश्यकता छे तेज रीते सन्मुहूर्त्तरूप आभ्यंतर—दैवी सामग्रीनी पण अत्यंत आवश्यकता छे. लौकिक अथवा लोकोत्तर कोइ पण शुभ कार्य करती वखते कुतूहली क्षुद्र देवोनो अनेक प्रकारे उपद्रव संभवे छे. कह्युं छे के—

"श्रेयांसि बहुविघ्नानि, भवन्ति महतामपि ।
अश्रेयसि प्रवृत्तानां, क्वापि यान्ति विनायकाः ॥ १ ॥"

"महापुरुषोने पण कल्याणकारी कार्यो घणां विघ्नवाळां थाय छे, अने अशुभ कार्यमां प्रवर्तेला पुरुषोनां विघ्नो कोइ पण ठेकाणे चाल्यां जाय छे."

अयोग्य काळे करेलां विवाहादिक तथा दीक्षा—प्रतिष्ठादिक कार्यो उत्तर काळे उलटां अशुभ फळने आपनारां दृष्टिपथमां आवे छे. अयोग्य काळे करेलां प्रयाण, वेपार विगेरेनां विपरीत परिणामो नीपजे छे. ए विगेरेने दूर करवा माटे दैवी सामग्री सिवाय बीजी कोइ पण सामग्री समर्थ नथी एटलुंज नहीं, परंतु परवशताने लीधे थयेलां जन्म, व्याधि अने मरणादिक पण अयोग्य काळे थयां होय तो ते पण शांति—पुष्टि आदि दैवी सामग्रीथी निर्दोष थाय छे. आवा अनेक हेतुने लइने दरेक शुभ कार्यमां शुभ मुहूर्त्तनी जरुर छे, अने तेने प्रतिपादन करनार ज्योतिष् शास्त्र छे.

अन्य शास्त्रोनी जेम आ ज्योतिष् शास्त्रनो विषय पण अत्यंत सूक्ष्म अने उत्सर्ग—अपवादादिक वडे अति गहन तथा सुविस्तृत छे. जेम अध्यात्मादिकनुं रहस्य समजवुं अति कठिन छे तेम आ ज्योतिषनुं तत्त्व पण अति गहन छे. अन्य शास्त्रोनी जेम आ ज्योतिषनुं तत्त्व पण अति गहन छे. अन्य शास्त्रोनी जेम आ ज्योतिष् शास्त्र पण अनेक दर्शनीओए भिन्न भिन्न प्रकारे स्वस्वशास्त्रीय भाषामां रचेलुं छे. जो के दर्शननी भिन्नताने लइने प्राये आ शास्त्रना विषयमां भिन्नता नथी, तोपण गणित सिवायना सर्व विषयोमां एकज दर्शनना ग्रंथकार आचार्योना पण मतांतरो छे. ते सर्व विषयोनुं सूक्ष्म ज्ञान जो होय तो ते अमुक अपेक्षाए केवळी जेटलुं ज्ञान धरावे छे तेम सामान्य मनुष्यने प्रतीत थाय छे, कारण के अष्टांग निमित्तने जाणनार **गोशाळक श्रीमहावीर स्वामीनी** समान बनी पोताना सेवकोमां तीर्थंकर जेटलो पूज्य थयो हतो. **वराहमिहिर** के जेणे

---

१ आ शास्त्र केवळ काळने प्रतिपादन करनार होवाथी सर्व कार्यमां काळनेज हेतुरूप गणे छे, तेथी करीने द्रव्य, क्षेत्रादिकनो निषेध थइ शकतो नथी.

प्रथम जैनी दीक्षा अंगीकार करीने अनेक शास्त्रोमां प्रवीणता मेळवी हती ते पोताना भाइ भद्रबाहुने गुरुए आचार्यपद आपेलुं जोइने ईर्ष्याने लीधे चारित्रनो त्याग करी प्रतिष्ठानपुरना जितशत्रु राजानो पूज्य पुरोहित थयो हतो. एकदा वराहमिहिरे[1] अमुक ठेकाणे कुंडाळुं करीने राजाने कह्युं के आ कुंडाळामां आकाशमांथी अमुक वखते बावन पळनो मोटो मत्स्य पडशे. ते वखते भद्रबाहु स्वामीए कुंडाळानी बहार पडवानुं कह्युं अने तोलमां तेथी उंणो पडवानुं कह्युं. तेज प्रमाणे कुंडाळा बहारज अने उंणा तोलवाळो पड्यो. त्यारपछी एकदा राजानी राणीए पुत्र प्रसव्यो. तेनी जन्मकुंडळी करीने वराहमिहिरे कुंवरनुं सो वर्षनुं आयुष्य कह्युं, भद्रबाहु स्वामीए बिलाडी थकी सातमे दिवसे मरण थशे एम कह्युं. ते सांभळी राजाए गाममांथी सर्वे बिलाडीओने बहार कढावी अने घणी चोकसीथी मक्षिकानो पण प्रवेश न थइ शके तेवा एकांत महेलमां ते पुत्रने राख्यो. दैवयोगे सातमे दिवसे बारणाना उंबरामां बेठेली धात्रीना उत्संगमां रहेला पुत्रना माथा पर द्वारनी अर्गला पडी, तेथी तेनुं मरण नीपज्युं. ते जाणी राजाने अत्यंत शोक थयो. पछी तेणे गुरु पासे जइने पूछ्युं के आपना कहेवा प्रमाणे पुत्रनुं सातमे दिवसे मरण थयुं, परंतु ते मरण बिलाडीथी थयुं नहीं, तेनुं शुं कारण ?[2] गुरुए कह्युं के द्वारनी अर्गला उपर बिलाडीनुं चित्र छे, तेमज अर्गलाने बिलाडी कहे छे, तेथी ते बिलाडीथीज मरण थयुं छे. ते सांभळी राजाए ते वातनी खात्री करीने गुरुना ज्ञाननी प्रशंसा करी. आ प्रमाणे जैन ज्योतिषमां रहेला अपूर्व ज्ञाननी यथार्थता शास्त्रप्रसिद्ध छे.

आवा विस्तार ज्ञानवाळा ज्योतिष् शास्त्रमां आखी खगोळ विद्यानो पण समावेश थाय छे. श्रीसूर्यप्रज्ञप्ति अने चंद्रप्रज्ञप्ति विगेरे गणित शास्त्रने आधारे वर्ष, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, रात्रि दिवस विगेरे काळचक्रनो विभाग नियमित रीते जाणी शकाय छे. तेज रीते तिथि तथा मासनी वृद्धि अने क्षय, ग्रहो, नक्षत्रो, ताराओ विगेरेनो उदय, अस्त, वक्र गति अने ऋजु गति, तथा उल्कापातादिक उत्पातो आगळथी जाणी शकाय छे, अने फळप्रतिपादक ग्रंथोने आधारे पृथ्वी पर थता सुकाळ, दुष्काळ विगेरे शुभाशुभ फळ पण जाणी शकाय छे. एक मनुष्यना जन्मादिक काळने आश्रीने तेनी आखी जींदगी

---

१ वराहमिहिरे ज्योतिषना विषय उपर वाराहीसंहिता रची छे, ते लोकमां प्रसिद्ध छे.
२ आ भद्रबाहु स्वामी चौद पूर्वधर होवाथी श्रुतकेवळी हता अने तेथी करीने केवळीना जेटली कथन करवानी शक्ति हती. तेमणे आचारांग निर्युक्ति, सूत्रकृतांग निर्युक्ति, बृहत्कल्प मूळ तथा तेनी निर्युक्ति, व्यवहार मूळ, आवश्यक निर्युक्ति, दशवैकालिक निर्युक्ति, उत्तराध्ययन निर्युक्ति, पिंड निर्युक्ति, ओघ निर्युक्ति, दशाश्रुतस्कंध मूल तथा तेनी निर्युक्ति, संसक्त निर्युक्ति, उपसर्गहर स्तोत्र तथा ज्योतिषमां भद्रबाहु संहिता अने द्वादश भाव जन्मप्रदीप विगेरे ग्रंथो रच्या छे.

संबंधी दरेक शुभाशुभ फळ जाणी शकाय छे एटलुंज नहीं, परंतु तेना आभ्यंतर गुण दोषो अने मनमां करेला गुप्त विचारो तथा पूर्व अने पश्चात् भवनुं पण ज्ञान थइ शके छे. अमुक मनुष्यने आश्रीने अमुक मास, तिथि, वार, नक्षत्र विगेरेना संयोगे कार्य करवाथी अमुक शुभाशुभ फळ प्राप्त थवानुं जाणी शकाय छे. विगेरे विगेरे आ ज्योतिष् शास्त्रमां अत्यंत सूक्ष्म ज्ञान समायेलुं छे, परंतु आवा पडता काळमां तेवा ज्ञानना संपूर्ण ज्ञाता अत्यंत दुर्लभ छे, तोपण तेना उछावत्ता ज्ञानवाळा तरतमताए करीने सांप्रत काळे पण जोवामां आवे छे. ज्योतिष् शास्त्रने आधारे कोइ पण निमित्त कहेलुं होय ते करतां जो ते विपरीतपणे परिणाम पामेलुं जोवामां आवे तो तेमां शास्त्रनो के अध्यापक गुरुनो दोष होतो नथी, परंतु ज्ञाताने तेनुं रहस्य यथार्थ समजवामां आव्युं न होवाथी तेनी विपरीत बुद्धिनोज दोष होय छे. जेमके–कोइ गुरुना बे शिष्यो समान ज्ञानवाळा हता, तेओ कार्यप्रसंगे ग्रामांतर गया. ग्राम बहार नदीतीरे तेओ विश्रांतिने माटे बेठा. ते वखते गामनी एक वृद्धा स्त्री नदीमांथी पाणी भरी पाणीनो घडो माथे लइ चाली. तेणीए आ बन्ने ब्राह्मणोने विद्वान् जाणीने पूछ्युं के 'हे पंडितो ! मारो पुत्र परदेश गयो छे. तेना कांइ पण खबर नथी. तो ते क्यारे आवशे ?' आवो प्रश्न पूछती वेळाएज ते वृद्धाना मस्तक परथी पाणीनो घडो पडी गयो अने तेना ककडा थइ गया, तथा तेमांनुं पाणी नदीमां मळी गयुं. ते जोइने एके कह्युं के 'हे वृद्धा ! तमारो पुत्र मृत्यु पाम्यो छे.' ते सांभळीने बीजाए कह्युं के–'हे बंधु ! एम न बोल. तेनो पुत्र अत्यारे घेर आव्यो छे. हे वृद्धा ! तमे शोक करशो नहीं. घेर जाओ. तमारो पुत्र घेर आव्यो छे.' ते सांभळीने वृद्धा उतावळी उतावळी घेर गइ अने पुत्रने जोयो. आ बन्ने विद्यार्थीओ एकज गुरु पासे सरखा ग्रंथो भण्या हता छतां पहेलाए विनयहीन होवाथी तेनुं रहस्य जाण्युं नहोतुं अने बीजाए विनयवंत होवाथी जाण्युं हतुं, तेथी तेनुं ज्ञान यथार्थ हतुं. अहीं विरुद्ध फळ कहेवानो हेतु ए छे जे पहेलाए घडो फुटी जवाथी पुत्रनुं पण मरण कल्प्युं अने बीजाए घडो पोतानी उत्पत्ति (माटी)मां मळी जवाथी तथा पाणी साथे पाणी मळी जवाथी पुत्रने पोतानी उत्पत्तिस्थाने आवेलो कल्प्यो.

आ उपरथी एम सिद्ध थाय छे के शास्त्र तो मात्र दिग्दर्शनज करावे छे, अने पछी ग्राहकनी बुद्धिना परिणाम प्रमाणेज ते परिणमे छे, तेथी करीनेज आगममां कह्युं छे के–सम्यक् शास्त्र पण मिथ्यादृष्टिने विपरीत परिणमे छे, अने मिथ्या शास्त्र पण सम्यक्दृष्टिने सम्यक् परिणमे छे. तेज रीते आ ज्योतिष् शास्त्रना विषयमां पण समजवुं. जैन ज्योतिषना ग्रंथो जेवा के–अर्घकांड, अष्टांगहृदय संहिता, आयज्ञानतिलक वृत्ति, आय प्रश्न, आय सद्भाव, गणिततिलक वृत्ति, चंद्रराजु, चक्रविवरण, जन्मकुंडळी विचार, जन्मपत्री विचार, जन्मपत्री पद्धत्ति, जन्मांभोधि, जातकाभिधान, जातक

दीपिका, ज्योतिष्चक्र विचार, ज्योतिष्सार संग्रह, ताजिकसार वृत्ति, तिथ्यादि सारणी, द्वादश भाव जन्म प्रदीप, नरपति जयचर्या विगेरे विगेरे एटला बधा छे के मात्र प्रसिद्ध ग्रंथोनां पण नामो अत्रे लखतां अति विस्तार थइ जाय. आ विषयना ग्रंथो बीजा विषयोना ग्रंथोनी अपेक्षाए बहु ओछा छपाया छे एम कहीए तो ते कांइ अतिशयोक्ति भरेलुं नथी, माटे तेवा ग्रंथोनी खास जरुर जणायाथी हालमां आ आरंभसिद्धि, लग्नशुद्धि अने दिनशुद्धि नामना त्रण ग्रंथो भाषांतर सहित छपावीने प्रसिद्ध कर्या छे.

आ आरंभसिद्धि नामना मूळ ग्रंथना कर्ता नागेंद्र गछना श्रीउदयप्रभदेव सूरि छे. दरेक शुभाशुभ प्रारंभोनी सिद्धि करनार होवाथी आ ग्रंथनुं "आरंभसिद्धि" ए अन्वर्थ नाम छे. आ नाम उपरथीज तेनो विषय समजी शकाय छे के आ ग्रंथ केवळ मुहूर्त्तनाज विषयवाळो छे. कोइ पण कार्यना मुहूर्त्तनो निश्चय करवा माटे अनेक ग्रंथोनी अपेक्षा पडती होवाथी तेना विद्वानोने अति प्रयास थतो जोइ पूज्यपाद श्रीउदयप्रभदेव सूरिए मुहूर्त्त अने तेने लगता योग, करण, गणित, फळ विगेरे सर्व आपेक्षिक विषयोनो संग्रह आ ग्रंथमां करेलो छे, एम टीकाकारे पण प्रारंभे पीठिकामां स्पष्ट जणाव्युं छे, तेथी आ ग्रंथनी पहेलां मुहूर्त्त संबंधी आवो कोइ पण ग्रंथ हतो नहीं एम सिद्ध थाय छे.

ग्रंथकार श्रीउदयप्रभदेव सूरिए ग्रंथमां पोतानो सत्तासमय, जन्मभूमि, मातापिता, दीक्षागुरु विगेरे कांइ पण हकीकत जणावी नथी. तेमज पोते बीजा कया कया ग्रंथो रच्या छे ? ए विगेरे कांइ पण लख्युं नथी, परंतु ग्रंथना प्रारंभमां टीकाकारे पीठिकामां जणाव्युं छे के "(श्रीवस्तुपाळ नामना) मंत्रीश्वरे श्रीनागेंद्र गछना गुरु सत्‌ज्ञान सत्‌क्रिया अने सद्‌गुणोए करीने शोभता एवा श्रीमान् उदयप्रभदेव सूरिने आचार्यपद पर स्थापन कर्या हता." आ लेखने अनुसारे शोध करतां आ सूरीश्वर संबंधी केटलीक हकीकत अन्यान्य ग्रंथोमांथी मळी आवी छे. तेमां श्रीवस्तुपाळचरित्र प्रस्ताव सातमामां—

ततोऽनेकपुरग्राम–वास्तव्यार्हतसन्ततिम् ।
आहूय बहुमानेन, श्रीधवलकपत्तने ॥ ३६० ॥
श्रीनागेन्द्रगणाधीशै–र्विधा मंत्री क्षमाभृताम् ।
प्रत्यक्षं कारयामास, सविशेषमहोत्सवम् ॥ ३६१ ॥
उदयप्रभसूरीणां, पूरिताङ्गिमनोरथम् ।
श्रीआचार्यपदारोप–प्रतिष्ठां विष्टपाद्भुताम् ॥ ३६२ ॥ त्रिभिर्विशेषकम् ॥
शतानि त्रीणि सूरीणां, तदुत्सवदिदृक्षया ।
समं स्वकीयसंघेन, तदापुर्मंत्रिवेश्मनि ॥ ३६३ ॥
तेषां सपरिवाराणां, संघपूजामहोत्सवम् ।
विधिवद्विदधे मंत्री, विशुद्धसिचयादिभिः ॥ ३६४ ॥ इत्यादि

"त्यारपछी वस्तुपाळ मंत्रीए अनेक पुर अने ग्रामना रहेवाशी श्रावकोना समूहने घणा मानपूर्वक श्रीधवलक्क पत्तनमां बोलावीने श्रीनागेंद्र गच्छना सूरीश्वर पासे विशेष प्रकारना महोत्सवपूर्वक बन्ने प्रकारे क्षमाने धारण करनार श्रीउदयप्रभ सूरिनी जगतमां अद्भुत एवी आचार्यपदनी प्रतिष्ठा करावी. ते वखते (दान वडे) सर्व प्राणीओना मनोरथ तेणे (मंत्रीए) पूर्ण कर्या. ते महोत्सव जोवानी इच्छाथी त्रणसो आचार्यो पोतपोताना गच्छ अने संघ सहित मंत्रीना आमंत्रणथी त्यां पधार्या हता. परिवार सहित ते सर्व आचार्योना समूहनी पूजानो महोत्सव मंत्रीए शुद्ध वस्त्रादिक वडे विधिपूर्वक कर्यो हतो." इत्यादि.

आ उदयप्रभ सूरिए धर्माभ्युदय[1] नामनुं महाकाव्य, सुकृतकीर्तिकल्लोलिनी तथा उपदेशमाळा उपर कर्णिका नामनी वृत्ति (टीका) रची छे. ते विषे कर्णिका वृत्तिनी[2] प्रशस्तिमां आ प्रमाणे लख्युं छे.—

"श्रीमद्विजयसेनस्य, सौमनस्यं न मन्यते ? ।
यद्वासिता धृताः कैर्न, गुणाः शिष्याश्च मूर्धसु ॥ १२ ॥
शिष्यस्तस्य च लक्षणक्षणचणः साहित्य सौहित्यवा-
नुद्यत्तार्किकतर्ककर्कशमतिः सिद्धान्तशुद्धान्तरः ।
श्रीधर्माभ्युदये कविः प्रविलसद्दुर्वादिगोत्रे पवि-
स्तामेतामुदयप्रभोऽस्य गणभृद्वृत्तिं व्यधात्कर्णिकाम् ॥ १३ ॥
सेयं पुरे धवलके तिलके धरित्र्यां,
मंत्रीशपुण्यवशतो वसतौ वसद्भिः ।
वर्षे निध्यङ्कनयनेन्दुमिते (१२९९) वितेने,
श्लोकैः शिवोदधिशिवैः प्रमितेऽद्भुतश्रीः ॥ २१ ॥"

"श्रीमान् विजयसेन गुरुना चित्तनी प्रसन्नताने कोण नथी मानता? ते गुरुथी वासित थयेला तेना गुणो अने शिष्यो कोणे मस्तक पर धारण नथी कर्या ? ते गुरुना शिष्य लक्षण शास्त्रमां निपुण, साहित्यना विषयमां विद्वान्, विकास पामता तार्किक लोकोना तर्कनो पराजय करवामां कर्कश मतिवाळा, सिद्धांतना ज्ञानथी शुद्ध हृदयवाळा, श्रीधर्माभ्युदय काव्यना कवि (रचनार) अने विकास पामता दुष्ट वादीओरूपी पर्वतने भेदवामां वज्र समान श्रीउदयप्रभ सूरिए आ उपदेशमाळानी कर्णिका नामनी वृत्ति करी छे.

---

१ आ काव्यमां वस्तुपाळ मंत्रीनुंज चरित्र आवे छे. २ कर्णिका वृत्तिनी प्रत मळी शकी नथी, परंतु आ उदयप्रभ सूरिना शिष्य श्रीमल्लिषेण सूरिए रचेली स्याद्वादमंजरी (टीका)नी प्रस्तावनामांथी आ श्लोको मळी आव्या छे.

पृथ्वीरूप स्त्रीना तिलक समान धवलकपुरमां मंत्रीश (वस्तुपाळ)ना पुण्यवशथी तेना उपाश्रयमां वसता आ सूरिए संवत् १२९९ ना वर्षे ११४११ श्लोक प्रमित आ कर्णिका नामनी वृत्ति रची छे.''

आ उपरथी आ ग्रंथकार सूरि श्रीविजयसेन सूरिना शिष्य हता तथा तेमनो सत्ता-समय संवत् १२९९ मां हतो एम सिद्ध थाय छे. श्रीविजयसेन सूरिना गुरु कलिकाल गौतम श्रीहरिभद्र सूरि, तेमना गुरु श्रीआनंद सूरि अने अमरचंद्र सूरि हता, तेमना गुरु श्रीशांति सूरि अने तेमना गुरु श्रीमहेंद्रप्रभ सूरि हता.

आ ग्रंथमां पांच विमर्शो पाडेला छे अने तेनुं सर्व मळीने एकंदर अनुष्टुप्नी गण-त्रीए ४६० श्लोक पूरतुं प्रमाण छे. श्लोको नाना मोटा छंद तथा वृत्तमां घणा रसिक अने उच्च संस्कृत भाषामां बनावेला होवाथी विद्वानोना हृदयने रंजन करे तेवा छे. आ पांचे विमर्शमां थइने अगीयार द्वार पाडेलां छे. तेमां पहेला विमर्शमां तिथिद्वार १, वार-द्वार २, नक्षत्रद्वार ३ अने योगद्वार ४, ए चार द्वार छे. बीजा विमर्शमां राशिद्वार ५ अने गोचरद्वार ६, ए बे द्वार कहेलां छे. त्रीजा विमर्शमां कार्यद्वार ७ एकज कहेलुं छे. चोथा विमर्शमां गमद्वार ८ तथा वास्तुद्वार ९ ए बे द्वार कहेलां छे, अने पांचमा विम-र्शमां विलग्नद्वार १० तथा मिश्रद्वार ११ ए बे द्वार कहेलां छे. ते ते द्वारोमां ते ते

---

१ जैन धर्मना प्राचीन इतिहासमां पृष्ठ २१ मां उदयप्रभ सूरिनो सत्तासमय १२२० थी १२८७ लख्यो छे, परंतु कर्णिकानी प्रशस्तिमां लखेलो संवत् १२९९ छे. ते वधारे मानवा योग्य छे. तेमज जैन ग्रंथावळीमां पण पृष्ठ १७१ मां कर्णिका रचवानो काळ संवत् १२९९ ज लखेलो छे. २ आ हरिभद्र सूरि सिवाय बीजा त्रण एज नामना सूरि थइ गया छे. तेमां एक याकिनीमहत्तरा-सूनुना नामथी महान् प्रसिद्ध छे, तथा बीजा बे बृहद्गच्छमां थयेला छे. आ हकीकत हरिभद्र सूरि चरित्र (छापेल)ना पहेला पृष्ठमां फुटनोटमां सविस्तर आपेली छे. ३ आ वंशावळी जैन धर्मना प्राचीन इतिहासमां आपेली छे (पृष्ठ २१) तेमज उपर्युक्त हरिभद्र सूरि चरित्र उपरथी पण खात्री थइ शके तेम छे. ४ आ सर्व उपर लखेली हकीकत तथा फुटनोटो उपरथी आ ग्रंथकारनो सर्व हेवाल सिद्ध थाय छे, परंतु जैन ग्रंथावळीमां हकीकत संगत थती नथी. तेमां पृष्ठ ७६ मां फुट-नोटमां उदयप्रभ सूरि नामना बे आचार्य थयानुं लखे छे. तेमां आ ग्रंथकारने पहेला कह्या छे, ते संबंधी लखेली हकीकत मळती आवे छे, परंतु बीजा उदयप्रभ सूरि रविप्रभ सूरिना शिष्य अने मल्लि-षेण सूरि के जे स्याद्वादमंजरीना टीकाकार हता तेना गुरु हता एम जे लख्युं छे ते संगत नथी. तेमज उदयप्रभ सूरिना रचेला घणा ग्रंथो जैन ग्रंथावळीमां लख्या छे, परंतु बेमांथी कया उदयप्रभ सूरिए कया कया ग्रंथो रच्या ? तथा बीजा उदयप्रभ सूरिनो सत्ताकाळ कयो हतो ? ए विगेरे कांइ पण चोकस थइ शकतुं नथी.

विषयोने विस्तारथी संपूर्ण रीते वर्णव्या छे. आ बाबत अनुक्रमणिकामां सविस्तर आपेली होवाथी अत्रे लखवी उचित धारी नथी.

ग्रंथनी प्रांते टीकाकारे पोतानी प्रशस्तिने पछवाडे "ग्रंथकारनो अभिप्राय" एवा नामथी मोटा वृत्तमां तेर श्लोको आप्या छे. ते सर्व श्लोको आ ग्रंथना जिज्ञासु सर्व मनुष्ये प्रथम अवश्य वांचीने ग्रंथकारना अभिप्रायने आज्ञारूपे मानवो एम अमो खास भलामण करीए छीए, कारण के वृत्तिकारे वृत्तिरूप ग्रंथ बनाव्या पछी अत्यंत सावद्य कार्यथी भीरुपणाने लीधे आ ग्रंथने जळशरण करवो उचित धार्यो हतो, परंतु भिन्न भिन्न ग्रंथोमांथी उद्धृत करेला दुष्प्राप्य विषयोनो नाश करवो ते पण योग्य नहीं लागवाथी मात्र पोताना गच्छमां गुप्त रीते राखवाना हेतुथी आ ग्रंथने जाळवी राखवामां आव्यो छे, परंतु सर्वविरतिने धारण करनार साधुए कोइ पण जातनां (चैत्यादिकनां) मुहूर्त्तो आपवाथी तेना व्रतनी हानि थाय छे, तेथी मुहूर्त्त कहेनार साधुने अने ग्रंथकारने महा पापना भागी कह्या छे. अहीं शंका करी छे के—ज्यारे चैत्यादिकनां मुहूर्त्तो साधुए आपवां न जोइए तो भिन्न भिन्न ग्रामोमां वसता श्रावकोने पुण्यनी वृद्धि शी रीते थाय अने साधुने पण पुण्यनो लाभ शी रीते थाय? आ शंकाना जवाबमां ग्रंथकारे कह्युं छे के—चैत्यादिक कराववामां यतिओने अनुमोदना करवाथीज पुण्य थाय छे, परंतु गृहस्थीओने विवाहादिकनी जेम चैत्यादिकनां मुहूर्त्तो पण जोशीज आपे छे, तथा ज्योतिषना ज्ञानवाळा मुनिओ तो मात्र जोशीओने समग्र संवाद बतावे छे. अर्थात् मुहूर्त्तोमां दोष होय तो ते सूचना आपे छे. आ रीते सर्व सुस्थ थइ शके छे. तेम छतां कोइ मूढ भारे कर्मी आ शास्त्रने आधारे मुहूर्त्त आपशे तो आरंभना समूहथी उत्पन्न थतुं पाप तेनेज हो, अने मने ग्रंथकारने ते पापनो लेश पण न हो. एम शुद्ध अंतःकरणना उद्गारो ग्रंथकारे प्रगट कर्या छे. आ उपरथी ग्रंथकार सावद्य कार्यथी केटलाबधा भीरु छे ते स्पष्ट जणाइ आवे छे, माटे ग्रंथकारना अभिप्रायने आज्ञारूप मानवा दरेकने अमो प्रार्थना करीए छीए.

आ ग्रंथ उपर श्रीहेमहंस गणिए सुधीश्रृंगार नामनी वृत्ति (टीका) संवत् १५१४ वर्षे रची छे. तेनुं अनुष्टुप्नी गणत्रीए ८०९३ श्लोकनुं प्रमाण छे. आ टीकाकार महाराजनो स्थितिकाळ तथा गुर्वावळी प्रशस्तिना अंतमां लखेल छे त्यांथीज जाणी लेवा. प्रस्तावना विस्तृत थवाना कारणथी अहीं लखेल नथी. आ टीकाकारे संवत् १५१५ वर्षे व्याकरणना विषयवाळो न्यायसंग्रह नामनो ग्रंथ, तेना पर न्यायार्थमंजूषा नामनी मोटी वृत्ति (टीका) तथा तेना पर न्यास पण रच्यो छे. ते विषे तेनी प्रशस्तिना छेल्ला श्लोक आ प्रमाणे छे.—

चिन्मयानां मयाऽमीषां, ऋषीणां सुप्रसादतः ।
हेमहंसाभिधानेन, वाचनाचार्यताजुषा ॥ १३ ॥
श्रीमद्विक्रमवत्सरे तिथितिथौ (१५१५) शुक्लद्वितीयातिथौ,
पूर्वाह्णे मृगलाञ्छने मृगशिरः शृङ्गाग्रशृङ्गारिणि ।
शुक्रस्याहनि शुक्रमासि नगरे श्रीसागरेऽह्म्मदा-
वादे निर्मितपूर्तिरेष जयताद्ग्रन्थः सुधीवल्लभः ॥ १४ ॥

"ज्ञानवंत आ (चारित्ररत्न गणि नामना विद्यागुरु)ना सुप्रसादथी वाचनाचार्यनी पदवीने पामेला में हेमहंस गणिए विक्रम संवत् १५१५ ना जेठ सुदि द्वितीया शुक्रवारने दिवसे पूर्वाह्ण काळे मृगशिर नक्षत्रना शृंगना अग्र भागने चंद्र शोभावतो हतो त्यारे (मृगशिर नक्षत्रमां चंद्र हतो त्यारे) लक्ष्मीना सागर समान अमदावाद नगरमां पंडितोने प्रिय एवो आ ग्रंथ समाप्तिने पाम्यो, ते जयवंत वर्तो."

तेमज आ टीकाकारे संवत् १५१० वर्षे षडावश्यकनो बाळावबोध पण कर्यो छे. ते बाळावबोधने अंते आ प्रमाणे लख्युं छे.—

"इति श्रीतपागच्छनायकसकलसुविहितपुरन्दरश्रीसोमसुन्दरसूरि-श्रीमुनिसुन्दरसूरि-श्रीजयचन्द्रसूरिपदकमलसेविना शिष्यपण्डितहेमहंसगणिना श्राद्धवराभ्यर्थनया कृतोऽयं षडावश्यकबालावबोध आचन्द्रार्कं नन्द्यात् । संवत् १५१० वर्षे" ॥

आ सिवाय बीजा ग्रंथो आ पूज्य गणिए रच्या छे के नहीं ? ते कही शकातुं नथी. षडावश्यकनो बाळावबोध जोतां तेमनुं आगमज्ञान, न्यायसंग्रह जोतां तेमनुं व्याकरण-ज्ञान, तेनी न्यायार्थमंजूषा टीका जोतां न्यायशास्त्रनुं ज्ञान अने आ आरंभसिद्धिनी टीका जोतां तेमनुं ज्योतिषनुं ज्ञान अद्वितीयज मालम पडे छे.

आ टीकामां टीकाकार महाराजाए प्राये मूळ श्लोकना दरेक पदनो सविस्तर अने सरळ अर्थ करेलो छे. ते उपरांत मूळ कारना वचनने सुदृढ करवा माटे स्व-पर दर्शनना ग्रंथो तथा ग्रंथकारोनां वचनोनी साक्षी आपी छे. केटलेक स्थळे ग्रन्थांतरोनां गूढ वचनोनी पण सविस्तर टीका करी छे. केटलेक स्थळे मूळ कारे नहीं कहेला मतांतर तथा अपवादो पण वर्णव्या छे. केटलेक ठेकाणे मूळ कारना विषयने लगता विषयांतरो पण विस्तार-पूर्वक वर्णव्या छे. तथा केटलेक स्थाने प्रसंगानुप्रसंगने लइने नवीन विषयोनां मुहूर्त्तो पण कह्यां छे. आ सर्व कार्योनां मुहूर्त्तोनी साथे प्राये तेनां शुभाशुभ फळो पण बताव्यां छे. तेमज केटलेक स्थळे मूळना अने ग्रंथांतरना विषयो स्पष्ट समजाववा माटे यंत्रो पण आपेलां छे. आ सर्व हकीकत ग्रंथांतरोनां वचनो आपीनेज सिद्ध करी छे. एकंदर आ आखा ग्रंथमां लगभग सीतेर ग्रंथो अने ग्रंथकारोनां वचनो आप्यां छे. तेनां नाम नीचे प्रमाणे.—

श्रीपति
लल्ल
रत्नमाळा
यतिवल्लभ
नारचंद्र
पूर्णभद्र
दैवज्ञवल्लभ
दिनशुद्धि
व्यवहारप्रकाश
नरपतिजयचर्या
हर्षप्रकाश
पा(लो)कश्रीग्रंथ
व्यवहारसार
सारंग
केशवार्क
विवाहवृंदावन
त्रिविक्रम
लघुजातक
बृहज्जातक
ताजिक
प्रश्नशतक वृत्ति
यवनेश्वर

लग्नशुद्धि
होरामकरंद
भुवनदीपक
त्रैलोक्यप्रकाश
मुहूर्त्तसार
सप्तर्षि
वाराहसंहिता
ज्योतिषसार
रत्नमाळाभाष्य
नक्षत्रसमुच्चय
रुद्रयामल
प्रश्नप्रकाश (कर)
शौनक
गदाधर
महादेव
भोज
हरि
दुर्गसिंह
कल्पाख्य छेद ग्रंथ वृत्ति
गौतम
यवन
स्थानांग वृत्ति

चंद्रप्रज्ञप्ति वृत्ति
वास्तुविद्या
स्वरोदयवित्
भास्करव्यवहार
योगयात्रा ग्रंथ
वास्तुशास्त्र
ब्रह्मशंभु टीका
विद्याधरी विलास
काळनिर्णय
ब्रह्मसिद्धांत
काठगृह्य
खंडखाद्य भाष्य
गर्ग
विवाहपटल
भीमपराक्रम ग्रंथ
करणकुतूहल–भास्कर सिद्धांत
सत्यसूरि
बृहस्पति
लक्ष्मीधर
देवलमुनि
अध्यात्मशास्त्र

आ उपरथी वाचकवृंदने स्पष्ट समजाशे के टीकाकारने ज्योतिषना विषयमां केटला ग्रंथनुं अने केवुं असाधारण ज्ञान हतुं ? आ एकज ग्रंथ साद्यंत उपस्थित होय तो ते वर्तमान समयमां उच्च विद्वाननी पंक्तिमां गणाय ए निर्विवाद छे. टीकाना पण दरेक विषयो अनुक्रमणिकामां सविस्तर आप्या छे, तेथी आ स्थळे विस्तारना भयथी लखता नथी. आ ग्रंथ दरेकने उपयोगी थाय एवा हेतुथी भाषांतर करावीने छपाव्यो छे. तेमां प्रथम मूळ श्लोक अने तेनी नीचे मूळ श्लोकनो अर्थ लखेलो छे. तेनी नीचे श्लोकनी टीकानुं मात्र भाषांतरज लख्युं छे, परंतु टीकामां ग्रंथांतरोनां जेटलां वचनो टीकाकारे आप्यां छे तेनुं मूळ पण भाषांतर सहित आप्युं छे. मूळ तथा ग्रंथांतरोनां वचनोने आश्रीने जेटली समजुती तथा उदाहरणो विगेरे टीकाकारे आप्यां छे तेनुं अक्षरशः

मात्र ज्ञाषांतरज सरळ रीते लख्युं छे. मात्र कोइक स्थळेज टीकाकारना संक्षिप्त अने दिग्दर्शन करेला विषयने स्पष्ट समजाववा माटे थोमोक विस्तार ज्ञाषांतरमां कर्यो छे.

आ ग्रंथनुं तेमज नीचे लखेला लग्नशुद्धि तथा दिनशुद्धि नामना ग्रंथोनुं ज्ञाषांतर भावनगरनिवासी शेठ कुंवरजी आणंदजी मारफत शास्त्री जेठालाल हरिभाइ पासे कराव्युं छे. तेमां प्रवर्तक महाराज श्रीकांतिविजयजीना शिष्य मुनिराज श्रीभक्तिविजयजी महाराजे सारी मदद आपी छे. तथा आ ज्ञाषांतरनुं मेटर अने छपातां फारमो साद्यंत तपासी आपनार पन्यासजी महाराज श्रीदानविजयजी महाराजाए घणी कृपा करी छे. तेमज आ ग्रंथनी परम शुद्ध एक प्रति पूज्यपाद श्रीविजयानंद सूरीश्वर (आत्मारामजी महाराज)नी तथा बीजी तेमनाज प्रशिष्य उपर्युक्त मुनिवर श्रीज्ञक्तिविजयजी महाराजनी मळी हती, जेथी आ स्थळे ते सर्व पूज्योनो अमो अंतःकरणपूर्वक आज्ञार मानीए छीए.

आ ग्रंथ पूर्ण थया बाद पाछळ लग्नशुद्धि तथा दिनशुद्धि के जे मात्र मूळज उपलब्ध थया छे ते पण ज्ञाषांतर सहित छपाव्या छे. जो के आ बन्ने ग्रंथो अति लघु होवाथी आरंज्ञसिद्धि करतां वधारे उपयोगी नथी, तोपण तेमांथी केटलांक चालतां मुहूर्त्तो सहेलाइथी अल्प प्रयासे मळी शके तेम छे, तथा कोइ कोइ नवीन विषयो पण तेमां छे, तेथी आ बे ग्रंथो कायमने माटे वधारे उपयोगी होवाथी तेमनुं प्राकट्य दुरस्त धार्युं छे. ते बन्ने ग्रंथोमां कया कया विषयो छे, ते माटे जिज्ञासुए अनुक्रमणिका वांचीनेज जिज्ञासा पूर्ण करवी.

आमांनो लग्नशुद्धि नामनो ग्रंथ १४४४ ग्रंथना कर्ता श्रीहरिभद्र सूरि के जेओ याकिनीमहत्तरासूनुना नामथी प्रसिद्ध छे तेमणे रचेलो छे. तेमां मात्र १३३ गाथाउ प्राकृत ज्ञाषामांज छे, तोपण अल्प शब्दोमां प्रज्ञूत अर्थनो समावेश होवाथी सूत्ररूपे आ ग्रंथ छे. आ ग्रंथमां मात्र लग्ननीज शुद्धि छे, तेमां पण दीक्षा, उपस्थापना अने प्रतिष्ठानांज लग्न विषे छे. आ ग्रंथ पर नानी मोटी टीका छे के नहीं? ते विषे कांइ निश्चय थयो नथी. आ ग्रंथकार पूज्यपादनो संपूर्ण इतिहास तथा तेमनुं माहात्म्य सुप्रसिद्ध होवाथी वाचकवर्गना समयनो व्यर्थ व्यय करवा इच्छता नथी.

दिनशुद्धि ग्रंथना कर्ता श्रीहेमतिलक सूरिना शिष्य श्रीरत्नशेखर सूरि छे. एम ग्रंथनी छेल्ली गाथामां स्पष्ट लखेलुं छे. तेउनो सत्तासमय संवत् १४२० मां हतो. तेमने दिल्हीना

१ आ नामना बीजा श्रीरत्नशेखर सूरि आ सूरिनी पछी एटले संवत् १४५७ मां जन्म, संवत् १४६३ मां दीक्षा, संवत् १५०२ मां सूरिपद अने १५१७ मां पोष वदि छठने दिवस स्वर्गवास विगेरे जैन धर्मना प्राचीन इतिहास उपरथी थयेलां जणाय छे. ते सूरीश्वरे श्राद्धप्रतिक्रमण

राजा फिरोजशाह तुघलके घणुं मान आप्युं हतुं. आ सूरीश्वरे श्रीपाळचरित्र, गुणस्थानक्रमारोह अने लघुक्षेत्रसमास विगेरे अनेक ग्रंथो रचेला छे. एम जैन धर्मना प्राचीन इतिहासमां आपेलुं छे. तेमज जैन ग्रंथावळीमां पृष्ठ १३२ मां गुणस्थानक्रमारोहना कर्ता रत्नशेखर सूरि लखेला छे अने रच्यानो संवत् १४४७ नो छे तथा पृष्ठ २३४ मां श्रीपाळचरित्रना कर्ता पण तेज लख्या छे. तेनो संवत् १४२८ लख्यो छे. ते सिवाय बीजा ग्रंथो पण आ सूरिना रचेला हशे के नहीं तेनो निश्चय थइ शकतो नथी, कारण के गुरुगुणषट्त्रिंशिका वृत्तिना रचनार रत्नशेखर सूरि ग्रंथावळीना पृष्ठ १४० मां लख्या छे, पण तेनो संवत् विगेरे कांइ पण नहीं होवाथी बेमांथी कया सूरि आना कर्ता छे ते सिद्ध थइ शकतुं नथी. तथा पृष्ठ १९७ मां गुरुगुणषट्त्रिंशिका कुलक उपर दीपिका नामनी टीकाना कर्त्ता रत्नशेखर सूरि लख्या छे, तेमां पण संवत् लखेलो नथी, परंतु तेनी फुटनोटमां नागपुरीय शाखाना हेमतिलक सूरिना शिष्य अने वज्रसेन सूरिना प्रशिष्य तथा श्रीपाळचरित्रना कर्ता लखेला होवाथी आ प्रकृत सूरि मालम पडे छे. विगेरे. विगेरे.

आ दिनशुद्धि ग्रंथ पण संक्षिप्तज छे एटले के तेमां १४४ गाथाओ छे. आ ग्रंथ पर पण नानी मोटी टीका छे के नहीं ते उपलब्ध थयुं न होवाथी मात्र मूळ ग्रंथज भाषांतर सहित प्रगट कर्यो छे, तोपण केटलेक स्थळे स्पष्ट समजुतीने माटे प्रतिमां नहीं छतां यंत्रो दाखल कर्या छे. आ ग्रंथमां वार, तिथि, करण, नक्षत्र, ताराबळ, योगो, प्रयाण, चैत्य करणादिक, मृतक्रिया, दीक्षा, प्रतिष्ठा विगेरेनां मुहूर्त्तो तथा लोच, विद्यारंभ विगेरे विषयो लीधा छे. एकंदर आ लघु ग्रंथ छतां पण अति उपयोगी छे. आ ग्रंथना विस्तृत विषयो पण अनुक्रमणिकामां दाखल करेला होवाथी अत्रे विस्तारता नथी.

छेवट आ ग्रंथोना जिज्ञासु जनोने आ ग्रंथना सदुपयोगमां प्रवृत्ति अने दुरुपयोगथी निवृत्ति करवानी सूचना आपी आ प्रस्तावना समाप्त करवामां आवे छे अने आशीर्वाद आपीए छीए के आ ग्रंथोमां बतावेलां शुभ कार्योनां शुभ मुहूर्त्तोने लीधे शुभ फळ प्राप्त करी सज्जनो आनंद पामो. इति शम् । तथाऽस्तु ॥

वृत्ति, श्राद्धविधि वृत्ति तथा आचारप्रदीप विगेरे ग्रंथो रच्या छे. आ सूरिना गुरु श्रीमुनिसुंदर सूरि हता. आ उपरथी आ बन्ने सूरि भिन्न छे एम सिद्ध थाय छे, अने उपर लखेला ग्रंथावळीना आधारे पण जूदा सिद्ध थाय छे, केमके ग्रंथावळीना पृष्ठ ९६ मां लक्षणसंग्रहना कर्ता रत्नशेखर लख्या छे, अने नीचे फुटनोटमां संवत् १५०२ थी १५१७ नो सत्तासमय लख्यो छे. (आ सूरिपदनो सत्तासमय जाणवो.) तोपण ग्रंथावळीमां रत्नशेखर नामना एकज सूरि थया होय एम धारीने लखेलुं जणाय छे, परंतु बन्ने भिन्न मानवा योग्य छे.

संवत् १९७४ आषाढ पूर्णिमा. { ली. प्रकाशक.

અનુક્રમણિકા.

પ્રથમ વિમર્શ. ૧

તિથિદ્વાર. ૧

વારદ્વાર. ૨.

नक्षत्रद्वार. ३.

योगद्वार. ४.

विमर्श. २.

राशिद्वार. ५.

गोचरद्वार. ६.

विमर्श. ३.

कार्यद्वार. ७.

मूळ श्लोक. पृष्ठ.

विमर्श. ४.

गमद्वार. ८.

वास्तुद्वार. ए.

વિમર્શ. ५.

વિલગ્નદ્વાર. १०.

मिश्रद्वार. ૧૧.

लग्नशुद्धिनी अनुक्रमणिका.

गोचरशुद्धि. १.

दिनशुद्धि. २.

लग्नशुद्धि. ३.

दिनशुद्धिनी अनुक्रमणिका.

॥ श्रीउदयप्रभदेवसूरिविरचित ॥

॥ आरंभसिद्धि ॥

॥ भाषान्तर ॥

॥ अथ प्रथमो विमर्शः ॥

॥ ॐ नमः श्रीसर्वज्ञाय ॥

श्रीधर्मन्यायसम्यग्व्यवहृतियुवतेर्जीवलोकेन भर्त्रा,
श्रेष्ठे तादृङ्मुहूर्त्ते परिणयनमिहाचीकरद्यो युगादौ ।
लीलायेते यथैतौ सततमवियुतौ सत्फलाढ्यौ स दत्तां,
वस्तुं नः सिद्धिसौधे सुसमयमृषभस्वामिदैवज्ञराजः ॥

अर्थ—जे ऋषभदेव स्वामीए युगना प्रारंभमां तेवा कोइ श्रेष्ठ मुहूर्त्ते श्रीधर्म अने न्यायपूर्वक सम्यक् प्रकारनी व्यवहृति (व्यवहार)रूप युवति (स्त्री)नो जीवलोक-रूपी भर्ता साथे विवाह कराव्यो छे, ते श्रीऋषभस्वामीरूपी श्रेष्ठ दैवज्ञ (नैमित्तिक) जे प्रकारे आ बन्ने दंपती सत् फळे करीने व्याप्त एवा थइने निरंतर वियोग रहित क्रीडा करे ते प्रकारे सिद्धिरूपी सौधमां निवास करवा माटे अमने सारुं मुहूर्त्त आपो.

आदर्शेषु पुरापि सन्ति कतिचिद्व्याख्यालवाः केऽपि च,
प्राप्ताः श्रीवरसोमसुन्दरगुरोः पादप्रसादान्नवाः ।
उक्तानुक्तदुरुक्तमर्थमथ तैरारंभसिद्धेरहं,
व्याकर्तुं स्वपरोपकारविधये तद्वार्तिकं प्रस्तुवे ॥

अर्थ—आ आरंभसिद्धि नामना ग्रंथनी व्याख्याना केटलाक लवो (नानी व्याख्याओ) पहेलां पण केटलांक पुस्तकोमां छे, अने केटलाक नवा लवो मने उत्तम एवा श्रीसोम-सुंदर गुरुना चरणकमळना प्रसादथी प्राप्त थया छे, माटे ते सर्व लवोए करीने पोताना अने परना उपकारने माटे उक्त, अनुक्त अने दुरुक्त अर्थने स्पष्ट करवा माटे हुं आ आरंभसिद्धिनी व्याख्या करुं छुं.

आ भरतक्षेत्रमां समग्र त्रिवर्ग (धर्म, अर्थ अने काम)नुं इच्छा प्रमाणे उपार्जन करवाथी गर्जना करतो गुर्जर (गुजरात)नामे देश छे. तेना स्वामी श्रीवीरधवल नामना राजाए संघपति (संघवी) श्रीवस्तुपाळने सर्व राज्यना व्यापारनो अधिकार आप्यो हतो. ते मंत्रीश्वरे श्रीशत्रुंजय, उज्जयंत (गिरनार) अने अर्बुद (आबु) विगेरे मोटां तीर्थोमां

पोताना अर्बुद, अंबुज अने खर्व विगेरे संख्यावाळा द्रव्यनो व्यय करीने कलियुगनो अहंकार नाश पमाड्यो हतो. भिन्न भिन्न देशमां निवास करनारा कविजनोए करेली स्तुतिओना समूहने सहन करनार अने तेवा प्रकारना धीर, उदात्त अने मनोहर गुणनी श्रेणिए करीने उपार्जन करेला तथा जगतने व्यापीने रहेला यशरूपी शरीरनी संपत्तिए करीने कदापि नाश नहीं पामनार ते मंत्रीश्वरे श्रीनागेंद्र गच्छना गुरु, सत् ज्ञान, सत् क्रिया अने सद्गुणोए करीने शोभता एवा श्रीमान् उदयप्रभदेव सूरिने आचार्यपद पर स्थापन कर्या हता. तेमणे अन्य अन्य (भिन्न भिन्न) ग्रंथोमां छुटक छुटक रहेलां लौकिक अने लोकोत्तर कर्मना विषयवाळा ज्योतिषनां मुहूर्त्तादिक होवाथी जोशी लोकोने अत्यंत प्रयास थतो जोइने तेमना उपकारने माटे निरंतर उपयोगी, सत् अर्थनी प्राप्ति माटे देवहट्टी समान आ ग्रंथ रच्यो छे. "आ ग्रंथने जाणनाराओनुं खरुं पांडित्य (अपूर्ण ज्ञान) न थाओ" एवा हेतुथी पोतानी कृतिनुं सर्व ज्योतिषना विषयमां समर्थपणुं जणाववा माटे आ पूज्य आचार्य महाराजे केटलांएक सावद्य कर्मो पण संपूर्ण रीते कह्यां छे. तथा केवळ धर्मनां कार्योमां ज एकांतपणे अभ्युदयने इच्छता अमोए पण ते (धर्मक्रिया)-नां मुहूर्त्तो अने लग्नोना विषयमां घणा जोशीओना विवादने पामेला गुण दोषना निर्णयने स्पष्ट करवा माटे घणा घणा ज्योतिषना अभिप्रायो देखाडवापूर्वक आ टीका करेली छे, तोपण पूर्वे कहेला हेतुथी ज ते सावद्य कर्मोना विषयमां पण व्याख्या करी छे; परंतु सत् अने असत्‌ना विवेकमां (विवेचन करवामां) चतुर एवा डाह्या पुरुषोए ते सावद्य क्रियाओनां मुहूर्त्तादिको मात्र जाणवा योग्य ज छे, पण सावद्य कर्ममां प्रवर्तेला जनोने कहेवा लायक नथी. ते विषे कह्युं छे के—

"यदेव साधकं धर्मे तद्वक्तव्यं वचस्विना ।
न त्वीषदपि बाधाकृदेषैव हि वचस्विता ॥"

"धर्मनुं ज जे साधक होय, ते ज डाह्या पुरुषे बोलवुं जोइए, परंतु धर्मने बाधा करनारुं लेश पण बोलवुं नहीं. ए ज डाह्या पुरुषनुं डहापण छे."

अहीं कोइ शंका करे के—"ज्यारे सावद्य कर्मोनां मुहूर्त्तादिक जाणवा योग्य ज मात्र छे, पण कहेवा योग्य नथी, त्यारे तेवां कर्मोने आ ग्रंथमां लखवानुं शुं फळ छे ? अर्थात् तेवां कर्मो ग्रंथमां लखवां ज नहोतां". आनो जवाब ए छे जे—"तेवां कर्मोनुं ज्ञान ज अहीं लखवानुं फळ छे." फरीथी शंका करे छे के—"ज्ञान क्रियाए करीने ज फळवाळुं छे. (एटले ज्ञाननुं फळ क्रिया ज छे.) क्रिया रहित ज्ञान तो वंध्या गायनी जेम प्राप्त करवा लायक नथी." आनो जवाब ए छे के—"मात्र क्रिया करवाथी ज ज्ञान फळवाळुं थाय छे एवो कांइ नियम नथी, परंतु अकृत्योमां (न करवा योग्य क्रियाओमां) जे न प्रवर्तवुं ते पण ज्ञाननुं फळ छे. नहीं तो चोरी अने परस्त्रीसेवनादिक पापने जाणनारा (ज्ञान-

वाळा) विवेकीने पोतानुं ज्ञान सफळ करवा माटे ते चौर्यादिक कर्ममां प्रवृत्ति करवानुं प्राप्त थशे, तेथी करीने अहीं पण सावद्य कर्ममां प्रवर्तनना निवर्तन वडे ज सावद्य कर्मना ज्ञाननुं सफळपणुं कल्पवुं योग्य छे. आ ज कारणने लइने कह्युं छे के—

"ये सुविहिताः पदस्थाः प्रौढाः सावद्यवचनतो विरताः ।
तेषामेव ग्रन्थः सदायमुपयोगितां लभताम् ॥"

"जेओ सत्कार्यने करनारा, प्रौढतावाळा अने सावद्य वचनथी निवृत्ति पामेला पदस्थो (आचार्यादिक पदने धारण करनारा) छे, तेओने ज आ ग्रंथ सदा उपयोगी थाओ."

वळी श्रीजिनशासननी प्रभावनादिक विशेष फळना लाभने जोइने कोइवार अपवाद मार्गने आश्रीने सावद्य कर्मनी प्ररूपणा करवानुं पण आगममां कहेलुं होवाथी अमुक वखते सावद्य कर्मनां मुहूर्त्तादिकनुं ज्ञान पण उपयोगी छे. अत्यंत विस्तारथी सर्युं. प्रस्तुतने ज कहीए छीए.—

"तत्त्वार्थमेव वक्ष्ये क्वचन विशेषं च सोपयोगमिह ।
तत्तदनुसारतोऽक्षरघटना सूत्रे स्वयं कार्या ॥"

"हुं आ ग्रंथनी टीकामां तात्त्विक अर्थने ज कहीश, अने कोइ स्थळे उपयोगी एवा विशेषने पण कहीश, माटे ते ते तात्त्विक अने विशेष अर्थने अनुसारे सूत्रमां (मूळ ग्रंथना श्लोकमां) अक्षरघटना (अक्षरार्थ) पोतानी मेळे करी लेवी."

प्रथम शास्त्रना आरंभमां मंगल, अभिधेय, संबंध अने प्रयोजन कहेवां जोइए एवुं वचन होवाथी प्रथम मंगळने माटे उचित एवा देवताना नमस्कारने ग्रंथकार कहे छे.—

ॐ नमः सकलारंभसिद्धिनिर्विघ्नवेधसे ।
अर्हणामर्हते साक्षादुपलंभाय शंभवे ॥ १ ॥

अर्थ—समग्र शुभ कर्मना आरंभनी सिद्धिमां निर्विघ्नता करनार, पूजा करवा योग्य, प्रत्यक्ष ज्ञानवाळा तथा सुखने उत्पन्न करनारा जिनेश्वरने मारो नमस्कार थाओ.

आ श्लोकमां "शं" एटले सुखने माटे "भवति" एटले थवाना स्वभाववाळा ए अर्थने लइने "शंस्वयंविप्राद्भुवो डुः" आ व्याकरणना सूत्रवडे डु प्रत्यय लागवाथी शंभु शब्द थइ शंभवे ए चतुर्थी विभक्तिना एकवचननुं रूप थयुं छे. आवा शंभुने एटले जिनेश्वरने नमस्कार थाओ. आ ग्रंथ सर्व दर्शनीओने उपयोगी होवाथी शंभु एवो श्लेषवाळो शब्द लख्यो छे. ते शंभु केवा छे ? तो तेनुं विशेषण "ॐ" छे, ते "अव्" एटले रक्षण करवुं ए धातु उपरथी उणादिनुं सूत्र लागी "म" प्रत्यय तथा "ऊट्" आगम आवी गुण

१ एक ज शब्दने जूदा जूदा अर्थमां लइ शकाय ते श्लेष कहेवाय छे, तेथी शंभु एटले महादेव तथा जिनेश्वर एम बन्ने अर्थ लइ शकाय छे, माटे ए श्लेष कहेवायो.

थवाथी ॐ शब्द सिद्ध थयो छे. ते अव्ययना प्रकरणमां गणावेलो होवाथी अव्यय छे, अने तेनो अर्थ "परमब्रह्मरूप" थाय छे. आ श्लोकमां मातृकावर्णनी जेम "ॐ नमः" ए सिद्धमंत्र लख्यो छे तेनुं प्रयोजन विघ्न रहित इष्ट अर्थनी सिद्धि थाय ते छे. तथा समग्र शुभ आरंभो (कार्यो)नी सिद्धिमां विघ्नरहितपणाना उत्पन्न करनार आ विशेषणवडे युक्तिए करीने "आरंभसिद्धि" एवुं आ ग्रंथनुं नाम पण सूचव्युं छे. तथा पूजा करवाने योग्य ए पण शंभुनुं विशेषण छे. त्यां कोइ ठेकाणे "अर्हाणामर्हते" एवो पाठ होय तो "पूज्यना पण पूज्य" एवो अर्थ करवो. तथा प्रत्यक्ष ज्ञानवाळा एटले जेने प्रत्यक्ष ज्ञान छे अने जेनाथी अन्यने प्रत्यक्ष ज्ञान थाय छे एवा शंभुने नमस्कार हो.

हवे बीजा सूत्र (श्लोक) मां अभिधेय, संबंध अने प्रयोजन कहे छे—

दैवज्ञदीपकलिकां व्यवहारचर्या-
मारम्भसिद्धिमुदयप्रभदेव एताम् ।
शास्ति क्रमेण तिथि १ वार २ भ ३ योग ४ राशि ५-
गोचर्य ६ कार्य ७ गम ८ वास्तु ९ विलग्न १० मिश्रैः ॥ २ ॥

अर्थ—श्रीउदयप्रभ आचार्य जोशीओने दीपकनी ज्योत जेवी अने शुभ व्यवहारनां कार्योने आचरण करनारी आ आरंभसिद्धिने अनुक्रमे तिथि १, वार २, नक्षत्र ३, योग ४, राशि ५, गोचर ६, विद्यारंभादिक कार्य ७, गम (प्रयाण) ८, वास्तु ९, लग्न १० अने मिश्र ११ आ अग्यार द्वारवडे कहे छे.

स्पष्ट अर्थने प्रकाश करवाथी आ आरंभसिद्धि जोशीओने दीपकनी ज्योत समान छे. व्यवहार एटले शिष्ट (सारा) जननो शुभ तिथि, शुभ वार अने शुभ नक्षत्रादिकमां शुभ कार्य करवारूप सदाचार. आवा सदाचारनी चर्या एटले अमुक रीते करवापणुं, ते चर्या अभिधेयपणाए करीने जेमां रहेली छे. आ प्रमाणे "व्यवहारचर्या" एम कहेवाथी आ ग्रंथनुं अभिधेय जणाव्युं छे; अने आम कहेवाथी आ ग्रंथ वाचक थयो अने व्यवहारचर्या वाच्य थइ, तेथी वाच्यवाचक भाव नामनो संबंध पण सूचव्यो छे एम जाणवुं. तेमज "व्यवहारचर्या" एवुं आ ग्रंथनुं बीजुं नाम पण छे एम जाणवुं. अहीं प्रयोजन बे प्रकारनुं छे—एक अनंतर अने बीजुं परंपर. तेमां श्रोताओने व्यवहारनी कुशळतानी सिद्धि थाय ए आ आरंभसिद्धिनुं अनंतर प्रयोजन छे, तथा यथार्थ रीते व्यवहारनी प्रवृत्तिए करीने धर्म, अर्थ अने काम ए त्रण पुरुषार्थनी सिद्धि थाय, तथा अनुक्रमे मोक्षरूप पुरुषार्थनी पण सिद्धि थाय ए परंपर प्रयोजन छे. हवे पूर्वोक्त व्यवहारचर्या नामना अभिधेयने अग्यार द्वारवडे विभाग पाडीने बतावे छे.—प्रतिपद् विगेरे तिथिओ १,

रवि आदिक वारो २, अश्विनी आदि नक्षत्रो ३, सिद्धियोगादिक योगो ४, मेष विगेरे राशिओ ५, गायनी जेम चरवुं ते गोचर कहेवाय छे. "चरेराङस्त्वगुरौ" ए सूत्रथी य प्रत्यय करीने गोचर्य शब्द सिद्ध थयो छे. एनो अर्थ "पूर्व पूर्वनी राशिथी उत्तर उत्तर राशिमां ग्रहोनुं जवुं" एवो थाय छे ६, विद्यारंजादिक कार्यो ७, गम एटले यात्रा ८, वास्तु एटले घर, हाट, प्रासाद विगेरे अने तेना संबंधथी तेमां प्रवेश करवो ते पण जाणवुं ए, आ गम अने वास्तु नामनां बन्ने द्वारोनो कार्यद्वारमां समावेश थइ शके छे, परंतु आ बे द्वारोमां वधारे कहेवानुं होवाथी जूदां जूदां द्वार कर्यां छे. विलग्न एटले लग्न नामनुं द्वार १०, तथा मिश्र एटले कहेलां अने नहीं कहेलां एवां घणां द्वारोए करीने कहेवा लायकनो एक द्वारमां संग्रह करवो ते ११, आ अग्यार द्वारोवडे व्यवहारचर्याने कहे छे.

प्रथम तिथिद्वारने कहे छे.

नन्दा जद्रा जया रिक्ता पूर्णा चेति त्रिरन्विता ।
हीना मध्योत्तमा शुक्ला कृष्णा तु व्यत्यया तिथिः ॥ ३ ॥

अर्थ—प्रतिपद्थी आरंजीने नंदा, जद्रा, जया, रिक्ता अने पूर्णा ए प्रमाणे अनुक्रमे पांच तिथि जाणवी. ए रीते त्रण वार गणवाथी पंदर तिथि पूरी थाय छे. एटले के १–६–११ ए तिथिउने नंदा जाणवी, २–७–१२ ए तिथिउं जद्रा जाणवी, ३–८–१३ जया, ४–ए–१४ रिक्ता अने ५–१०–१५ ए तिथिउने पूर्णा जाणवी. आ नंदा विगेरे नाम सार्थक छे, एटले के पोतानां नाम प्रमाणे फळ आपनारी छे. ते विषे श्रीपतिए कह्युं छे के—चित्र, उत्सव, वास्तु, क्षेत्र अने नृत्यादिक आनंदवाळां कार्यो नंदा तिथिए करवामां आवे छे. विवाह, अलंकार, वाहन, प्रयाण तथा शांतिपौष्टिकादिक जद्र कर्मोने जद्रा तिथिए करवामां आवे छे. युद्ध तथा सैन्य उपर हुमलो करवो विगेरे विजयवाळां कामो जया तिथिए करवामां आवे छे. वध, बंध, घात, विष, अग्नि अने शस्त्रादिक संबंधी कार्यो रिक्ता तिथिए करवामां आवे छे. तथा विवाह, दीक्षा, यात्रा विगेरे मांगलिक कार्यो पूर्णा तिथिए करवामां आवे छे. सामान्य रीते तो अमावास्या अने रिक्ता तिथिने वर्जीने प्राये सर्व तिथिए शुज कार्य करवामां आवे छे. तथा अमावास्याने दिवसे ते ज तिथिए अवश्य करवा योग्य कार्य सिवाय बीजां कार्य करवानो निषेध छे. लल्ल कहे छे के—

"स्युर्यंत्रमंत्ररक्षादीक्षाक्षुद्रेषु कर्मसु स्नाने । रिक्तादर्शाष्टम्यः शस्ताः ॥"

"जंत्र, मंत्र, रक्षा, दीक्षा, क्षुद्र कार्य अने स्नान एटलां कार्यमां रिक्ता तिथि तथा अमावास्या अने अष्टमी ए पांच तिथिउं शुज छे."

शुक्ल पक्षनी पहेली पांच तिथिओ हीन कहेवाय छे, छठ्थी दशम सुधीनी बीजी पांच तिथिओ मध्यम छे, अने अग्यारशथी पूर्णिमा सुधीनी त्रीजी पांच तिथिओ उत्तम छे; परंतु कृष्ण पक्षमां एथी उलटुं जाणवुं. एटले के कृष्ण पक्षमां पहेली पांच तिथिओ उत्तम, बीजी पांच मध्यम अने त्रीजी पांच तिथिओ हीन जाणवी.

रत्नमाळामां तिथिना स्वामी आ प्रमाणे कह्या छे.—

"तिथिपाश्चतुर्मुख १ विधातृ २ विष्णवो ३, यम ४ शीतदीधिति ५ विशाख ६ वज्रिणः ७।
वसु ८ नाग ९ धर्म १० शिव ११ तिग्मरश्मयो १२, मदनः १३ कलि १४ स्तदनु विश्व १५ इत्यपि ॥"

"चतुर्मुख (ब्रह्मा) १, विधाता २, विष्णु ३, यमराज ४, चंद्र ५, विशाख (कार्तिकस्वामी) ६, इंद्र ७, वसु ८, नाग ९, धर्म १०, शिव ११, सूर्य १२, कामदेव १३, कलि १४ अने विश्व १५ आ पंदर स्वामीओ प्रतिपद्थी पंदर तिथिना अनुक्रमे जाणवा."

"तिथौ हि दर्शसंज्ञके पितॄनुशन्त्यधीश्वरान् ।
त्रयोदशीतृतीययोः स्मृतस्तु चित्तपोऽपरैः ॥"

अमावास्यानी तिथिने विषे पितृदेवने स्वामी कहेला छे. एने बीजा आचार्योए त्रीज अने त्रयोदशीनो चित्तप एटले कामदेव स्वामी छे एम कह्युं छे."

"वह्नि १ र्विरञ्चो २ गिरिजा ३ गणेशः ४, फणी ५ विशाखो ६ दिनकृ ७ न्महेशः ८।
दुर्गा ९ न्तको १० विश्व ११ हरि १२ स्मराश्च १३, शर्वः १४ शशी १५ चेति पुराणदृष्टाः ॥"

"अग्नि १, ब्रह्मा २, पार्वती ३, गणपति ४, शेषनाग ५, कार्तिकस्वामी ६, सूर्य ७, महेश ८, दुर्गा ९, यमराज १०, विश्व ११, हरि १२, कामदेव १३, शर्व १४ अने चंद्र १५, आ प्रमाणे पण अनुक्रमे तिथिना स्वामीओ पुराणने विषे जोयेला छे." आ देवोनी प्रतिष्ठा विगेरे कार्यमां ते ते तिथिनो उपयोग छे. एटले के जे देवनी जे तिथि होय ते तिथिए ते देवनी प्रतिष्ठा विगेरे करवामां आवे छे. ए ज प्रमाणे आगळ नक्षत्र, करण अने मुहूर्त्तना स्वामीओ कहेवामां आवशे त्यां पण ते ते देवनी प्रतिष्ठादिकमां पोतपोतानां नक्षत्रादिकनो उपयोग करवामां आवे छे एम रत्नमाळाना भाष्यमां कह्युं छे. जिनेश्वरनी प्रतिष्ठा विगेरेमां तो सर्व शुद्ध तिथि, नक्षत्र, करण अने मुहूर्त्त उपयोगी छे, कारण के जिनेश्वर सर्व देवोना पण अधिदेव छे.

हवे खराब एटले वर्ज्य तिथिओ कहे छे.—

रिक्ताः ४-९-१४ षष्ठ्यष्टमीद्वादश्यमावास्याः शुभे त्यजेत् ।
स्वीकुर्यान्नवमीं क्वापि न प्रवेशप्रवासयोः ॥ ४ ॥

अर्थ—शुभ कार्यमां रिक्ता (४—९—१४), छठ, आठम, बारश अने अमावास्या आ तिथिओ त्याग करवा लायक छे. कोइक शुभ कार्यमां नवमीने पण लेवामां आवे छे,

परंतु ते तिथि प्रयाणमां अथवा प्रवेशमां बिलकुल लेवी नहीं. आ व्यवस्था शुभ एटले सौम्य कार्यमां जाणवी, अशुभ कार्यमां तो अशुभ तिथि ज विशेष सिद्धिकारक गणाय छे. आ उपरनी सर्व तिथिओ पक्षछिद्र नामे होवाथी अशुभ छे. कह्युं छे के—

"षष्ठ्यष्टमीचतुर्थीचतुर्दशीद्वादशीकुहूनवमीः ।
पक्षच्छिद्राण्याहुर्लभते नेतैषु संसिद्धिम् ॥"

"छठ, आठम, चोथ, चौदश, बारश, अमास अने नोम आटली तिथिओ पक्षछिद्र नामे कहेवाय छे. आ तिथिए करेला कार्यनी सिद्धि थती नथी. तेमां पण छठ अने बारश ए बे तिथिओ यात्रामां विशेष अशुभ छे; परंतु ध्रुव कार्यमां ते बे तिथिओ शुभ छे, एम लल्ल कहे छे. "चौदश पण यात्रामां विशेष अशुभ छे" एम श्रीपति कहे छे.

त्रीन् वारान् स्पृशती त्याज्या त्रिदिनस्पर्शिनी तिथिः ।
वारे तिथित्रयस्पर्शिन्यवमं मध्यमा च या ॥ ५ ॥

अर्थ—जे तिथि वृद्धि होवाने लीधे त्रण वारने स्पर्श करती होय ते त्रिदिनस्पर्शिनी तिथि कहेवाय छे. हर्षप्रकाश ग्रंथमां आने फल्गु नामे तिथि कही छे, तथा तिथिना क्षयने लीधे एक वारमां त्रण तिथिनो स्पर्श थतो होय तो ते त्रण तिथिमांनी वचली तिथि अवम नामे (क्षय) कहेवाय छे. आ त्रिदिनस्पर्शिनी तथा अवम ए बन्ने तिथि शुभ कार्यमां वर्जवी. कह्युं छे के—

"दिनक्षये भवेत्कार्यक्षयस्तेन शुभं न तत् ।
प्रकृत्यन्यत्वमुत्पातस्त्र्यहस्पृक् तदतोऽशुभम् ॥"

"दिवस (तिथि)नो क्षय होय तो कार्यनो क्षय थाय छे, माटे क्षय तिथि शुभ नथी; तथा प्रकृतिनुं अन्यपणुं एटले विकार होय तो ते उत्पात कहेवाय छे, तेथी त्रण दिवसने स्पर्श करनारी तिथि पण अशुभ छे.

हवे दग्धा तिथि कहे छे.

दग्धामर्केण संक्रान्तौ राश्योरोजयुजोस्त्यजेत् ।
भूत ५ दृग् २ युक्तयोः शेषां शोधिते भगणे १२ तिथिम् ॥ ६ ॥

अर्थ—सूर्यनी संक्रांतिमां जे राशि चालती होय ते जो विषम (एकी) होय तो तेमां पांच उमेरवा, अने जो सम (बेकी) होय तो तेमां बे उमेरवा. पछी तेनो बारे भाग लेतां जे अंक शेष रहे ते तिथिने दग्धा तिथि जाणवी. बारे भाग लेतां जो शून्य शेष रहे तो बारशने दग्धा जाणवी, अने बारे भाग लइ न शकाय तो ते ज तिथि दग्धा जाणवी. आ दग्धा तिथि शुभ कार्यमां वर्जवानी छे.

एटले के—मेष १, मिथुन ३, सिंह ५, तुला ७, धन ९ अने कुंभ ११ ए विषम राशि छे. आमांनी कोइ पण राशिमां सूर्यसंक्रांति होय तो ते राशिना अंकमां पांच उमेरी बारे भाग लेतां जे शेष रहे ते अंकवाळी तिथि ते संक्रांतिमां सूर्यदग्धा जाणवी; तथा वृष २, कर्क ४, कन्या ६, वृश्चिक ८, मकर १० अने मीन १२ ए सम राशि छे. आमांनी कोइ पण राशिमां सूर्यसंक्रांति होय तो ते राशिना अंकमां बे उमेरी बारे भाग लेतां जे शेष रहे ते तिथि ते संक्रांतिमां सूर्यदग्धा जाणवी.

उदाहरण—मेष राशि पहेली छे, तेथी एकमां पांच उमेरतां छ थाय. तेनो बारे भाग नहीं चालवाथी छ ज बाकी रह्या, तेथी मेष राशिनो सूर्य होय त्यारे छठने दग्धा जाणवी. तुला राशि सातमी छे, तेथी सातमां पांच नाखवाथी बार थाय. तेनो बारे भाग लेतां शून्य वधे छे, तेथी तुला राशिनो सूर्य होय त्यारे बारशने दग्धा जाणवी. धन राशि नवमी छे, तेथी नवमां पांच नाखवाथी चौद थाय. तेनो बारे भाग लेतां बे शेष रहे छे, माटे धन राशिनो सूर्य होय त्यारे बीजने दग्धा जाणवी. ए रीते बीजी पण विषम राशिमां जाणवुं. वृष राशि बीजी छे, तेथी तेमां बे उमेरी बारे भाग लेतां भाग चालतो नथी, तेथी चारना चार बाकी रह्या; माटे वृष राशिनो सूर्य होय त्यारे चोथने दग्धा जाणवी. मकर राशि दशमी छे, तेमां बे उमेरवाथी बार थाय. तेनो बारे भाग लेतां शून्य रहे छे, तेथी मकर राशिनो सूर्य होय त्यारे बारश दग्धा जाणवी. मीन राशि बारमी छे, तेमां बे उमेरतां चौद थाय तेनो बारे भाग लेतां बाकी बे रहे छे, माटे मीन राशिनो सूर्य होय त्यारे बीजने दग्धा जाणवी. ए ज रीते बीजी सम राशिओमां पण जाणवुं. ते दग्धा तिथिने ते संक्रांतिना आखा मासमां तजवी योग्य छे.

दग्धा तिथिने ज स्पष्टताथी कहे छे.—

दग्धाऽर्केण धनुर्मीने २ वृषकुंभे ४ ऽजकर्किणि ६ ।
द्वन्द्वकन्ये ८ मृगेन्द्रालौ १० तुलैणे १२ द्व्यादियुक्तिथिः ॥ ७ ॥

अर्थ—धनुष अने मीननी संक्रांतिमां बीजने दग्धा तिथि जाणवी. वृष अने कुंभनी संक्रांतिमां चोथ, मेष अने कर्कनी संक्रांतिमां छठ, मिथुन अने कन्यानी संक्रांतिमां आठम, सिंह अने वृश्चिकनी संक्रांतिमां दशम तथा तुला अने मकर राशिनी संक्रांतिमां बारश दग्धा तिथि कहेवाय छे. आ रीते सूर्यदग्धा तिथि जाणवी.

प्रसंगोपात्त चंद्रदग्धा तिथिने कहे छे (हर्षप्रकाश)—

"कुंभधणे २ अजमिहुणे ४ तुलसीहे ६ मयरमीण ८ विसकक्के ।
विछियकन्नासु १२ कमा बीआई समतिही उ ससिदड्ढा ॥"

"कुंभ अने धनना चंद्र होय त्यारे बीजने दग्धा तिथि जाणवी, मेष अने मिथुनना

चंद्र होय त्यारे चोथ दग्धा तिथि जाणवी, तुला अने सिंहना चंद्र होय त्यारे छठ, मकर अने मीनना चंद्र होय त्यारे आठम, वृषभ अने कर्कना चंद्र होय त्यारे दशम तथा वृश्चिक अने कन्याना चंद्र होय त्यारे बारशने दग्धा तिथि जाणवी." दग्धा तिथिमां जन्मेलुं बाळक प्राये अल्प आयुष्यवाळुं होय छे.

दग्धा तिथिनुं फळ यतिवल्लभ नामना ग्रंथमां आ प्रमाणे कह्युं छे.

"कुष्टं क्षौरेऽम्बरे दौःस्थ्यं गृहवेशे तु शून्यता ।
आयुधे मरणं यात्राकृष्युद्वाहा निरर्थकाः ॥"

दग्धा तिथिने दिवसे क्षौर कराववाथी कुष्ट रोग थाय छे, नवुं वस्त्र पहेरवाथी दुःस्थिति थाय छे, नवा घरमां प्रवेश करवाथी शून्यता थाय छे, नवुं शस्त्र धारण करवाथी मरण थाय छे, अने यात्रा, खेती तथा विवाह करवाथी ते निष्फळ थाय छे.

हवे क्रूर तिथि कहे छे.—

त्रिशश्चतुर्णामपि मेषसिंहधन्वादिकानां क्रमतश्चतस्रः ।
पूर्णाश्चतुष्कत्रितयस्य तिस्रस्त्याज्या तिथिः क्रूरयुतस्य राशेः ॥ ८ ॥

अर्थ—मेषथी, सिंहथी अने धनथी आरंभीने राशिनां त्रण चतुष्क करवां. तेमां प्रतिपद्‌थी आरंभीने अनुक्रमे चार तिथिओ तथा पहेली पूर्णा एटले पांचम ए तिथिओने पहेला चतुष्कमां क्रूर तिथि जाणवी. ए रीते बीजा चतुष्कमां छठथी आरंभी नोम सुधी तथा बीजी पूर्णा एटले दशम क्रूर तिथि जाणवी. तथा त्रीजा चतुष्कमां अग्यारशथी आरंभीने चौदश सुधी तथा त्रीजी पूर्णा एटले पूर्णिमा ए तिथिओने क्रूर तिथि जाणवी. (आ क्रूर तिथि सर्व शुभ कार्यमां तजवानी छे.) एटले के मेष राशिमां (रवि, मंगळ, शनि के राहु एमांथी) कोइ पण क्रूर ग्रह होय तो एकम अने पांचम, वृष राशिमां कोइ पण क्रूर ग्रह होय तो बीज अने पांचम, मिथुनमां क्रूर ग्रह होय तो त्रीज अने पांचम, तथा कर्कमां क्रूर ग्रह होय तो चोथ अने पांचम आ तिथिओ क्रूर जाणवी. एवी रीते सिंह राशिमां छठ अने दशम, कन्यामां सातम अने दशम तथा वृश्चिकमां नोम अने दशम ए तिथिओ क्रूर जाणवी. ए रीते धनमां अग्यारश अने पूर्णिमा, मकरमां बारश अने पूर्णिमा, कुंभमां तेरश अने पूर्णिमा तथा मीनमां चौदश अने पूर्णिमा ए तिथिओ क्रूर जाणवी. आ राशिओ केवळ क्रूर ग्रह सहित होय तो ज ते तिथिओ क्रूर थाय छे, पण सौम्य ग्रहनी साथे होय तो ते तिथिओ शुभ ज जाणवी. "जे माणसनी नामराशि क्रूर ग्रहे आक्रांत होय ते माणसे शुभ कार्यमां ते राशि संबंधी तिथि वर्जवी" एम केटलाक कहे छे. वळी बीजा कोइ आचार्य कहे छे के—मेष राशि क्रूर ग्रह सहित होय त्यारे एकम अने पांचमनी पहेली पंदर घडीनो त्याग करवो, वृष राशि क्रूर ग्रह सहित होय त्यारे

बीज अने पांचमनी बीजी पंदर घमीनो त्याग करवो, मिथुन राशि क्रूर ग्रह सहित होय तो त्रीज तथा पांचमनी त्रीजी पंदर घमीनो त्याग करवो, तथा कर्क राशि क्रूर ग्रह सहित होय तो चोथ अने पांचमनी चोथी एटले छेल्ली पंदर घमीनो त्याग करवो. ए रीते सिंहादिक चतुष्कमां तथा धनादिक चतुष्कमां पण ते ज प्रमाणे जाणवुं.

हवे तिथिने आश्रीने करणो कहे छे.—

करणान्यथ शकुनि १ चतुष्पद २ नागानि ३ क्रमाच्च किंस्तुघ्नम् ४।
असितचतुर्दश्यर्धात्तिथ्यर्धेषु ध्रुवाणि चत्वारि ॥ ए ॥

अर्थ—ज्यारे जेटला प्रमाणवाळी तिथि होय त्यारे तेना अर्ध प्रमाणवाळां सर्व करणो होय छे, केमके "तिथिनो अर्ध जाग करण कहेवाय छे," एवुं वचन छे. ते आ प्रमाणे—कृष्णपक्षनी चतुर्दशीना अर्धा जागथी एटले रात्रिथी आरंजीने अर्धी अर्धी तिथिमां अनुक्रमे शकुनि १, चतुष्पद २, नाग ३, अने किंस्तुघ्न ४, ए चार करणो ध्रुव जाणवां. (कारण के ते करणो नियमित स्थाने रहेलां होवाथी ध्रुव कहेवाय छे.) अर्थात् कृष्णपक्षनी चतुर्दशीनी रात्रिए शकुनि करण होय छे. अमावास्याए दिवसे चतुष्पद अने रात्रिए नाग, तथा शुक्ल प्रतिपद्ना दिवसे किंस्तुघ्न करण होय छे.

बाकीनां करणो कहे छे.—

अथ बव १ बालव २ कौलव ३ तैतिल ४ गर ५ वणिज ६ विष्टयः ७ सप्त।
मासेऽष्टशश्चराणि स्युरुज्ज्वलप्रतिपदन्त्यार्धात् ॥ १० ॥

अर्थ—बव १, बालव २, कौलव ३, तैतिल ४, गर, ५, वणिज ६, अने विष्टि ७, आ सात करणो छे; अने ते शुक्ल प्रतिपद्नी रात्रिथी आरंजीने एक मासमां आठ वार आवृत्ति करवाथी चर कहेवाय छे. अर्थात् शुक्ल प्रतिपद्नी रात्रिए बव करण होय छे, बीजने दिवसे बालव अने रात्रिए कौलव होय छे, त्रीजने दिवसे तैतिल अने रात्रिए गर होय छे (तैतिलनुं बीजुं नाम स्त्रीविलोचन पण छे). चोथने दिवसे वणिज अने रात्रिए विष्टि (जद्रा) होय छे. आ एक आवृत्ति थइ. ए प्रमाणे पांचमने दिवसे बव, रात्रिए बालव, छठने दिवसे कौलव अने रात्रिए तैतिल, सातमने दिवसे गर अने रात्रिए वणिज, तथा आठमने दिवसे विष्टि, आ बीजी आवृत्ति थइ. ए प्रमाणे आठमनी रात्रिए बव, ते छेवट शुक्ल एकादशीनी रात्रिए विष्टि आवे. आ त्रीजी आवृत्ति थइ. पछी बारशने दिवसे बव ते यावत् पुनमने दिवसे विष्टि आ चोथी आवृत्ति थइ. पछी पुनमनी रात्रे बव, कृष्णपक्षनी प्रतिपद्ने दिवसे बालव, यावत् कृष्णपक्षनी त्रीजनी रात्रे विष्टि ए पांचमी आवृत्ति थइ. पछी चोथने दिवसे बव यावत् सातमने दिवसे विष्टि ए छठी आवृत्ति थइ. पछी सातमनी रात्रिए बव यावत् दशमीनी रात्रिए

विष्टि आवे ते सातमी आवृत्ति थइ. पछी अग्यारशने दिवसे बव यावत् कृष्ण चतुर्दशीए दिवसे विष्टि आवे ते आठमी आवृत्ति थइ. आ आठ आवृत्ति तथा पछीनां चार ध्रुव करणोए करीने आखो मास पूर्ण थाय छे. अहीं जे दिवस तथा रात्रिना विभाग कह्या छे, तेमां तिथि ज्यारथी शरु थाय त्यारथी त्रीश घडी सुधी दिवस (पूर्वदळ) जाणवो, अने बीजी त्रीश घडी रात्रि (पश्चिमदळ) जाणवी. एटले के तिथिनी जेटली घडी होय तेना बे भाग करी पहेला भागने दिवस अने बीजा भागने रात्रि समजवी.

प्रसंगने लीधे आ करणोना स्वामी कहे छे.—

"इन्द्रो १ विधि २ मित्रा ३ र्यम ४ भू ५ श्री ६ शमना ७ श्चलेषु करणेषु ।
कलि १ वृष २ फणि ३ मरुतः ४ पुनरीशाः क्रमशः स्थिरेषु स्युः ॥"

इंद्र १, ब्रह्मा २, मित्र ३, सूर्य ४, पृथ्वी ५, लक्ष्मी ६ अने यम ७ आ अनुक्रमे बव विगेरे चळ करणोना स्वामी छे. तथा कलि १, वृषभ २, सर्प ३ अने वायु ४ आ शकुनि विगेरे चार ध्रुव करणोना अनुक्रमे स्वामी जाणवा."

करणोनुं फळ कहे छे.—

**दशामूनि विविष्टीनि दिष्टान्यखिलकर्मसु ।
रात्र्यहर्व्यत्ययाद्भद्राऽप्यदुष्टैवेति तद्विदः ॥ ११ ॥**

अर्थ—विष्टि विनानां बाकीनां दशे करणो सर्व कार्यमां शुभ छे. अर्थात् एक विष्टि (भद्रा) करण ज अशुभ छे. तथा भद्रा पण रात्रि अने दिवसना विपर्यासथी अदूषित छे एटले शुभ छे एम तेना विद्वानो कहे छे. अर्थात् रात्रिनी (तिथिना पश्चिमदळनी) भद्रा जो दिवसे आवे अथवा दिवसनी (तिथिना पूर्वदळनी) भद्रा जो रात्रिए आवे तो ते अशुभ नथी.

भद्राना अशुभपणा माटे ग्रंथांतरमां कह्युं छे के.—

"यदि भद्राकृतं कार्यं प्रमादेनापि सिध्यति ।
प्राप्ते तु षोडशे मासे समूलं तद्विनश्यति ॥"

"जो कदाच भद्रामां करेलुं कार्य भूलथी पण सिद्ध थइ गयुं होय तोपण सोळमो मास प्राप्त थये ते कार्य मूळ सहित नाश पामे छे."

कोइ वखत भद्राने प्रशस्य पण कही छे. ते विषे नारचंद्रना टिप्पनकमां कह्युं छे के—

"दाने चानशने चैव घातपातादिकर्मणि ।
खराश्वप्रसवे श्रेष्ठा भद्राऽन्यत्र न शस्यते ॥"

"दानमां, अनशनमां, घात अने पात विगेरे कर्ममां, तथा गधेडा अने घोडानी प्रसूतिमां भद्रा श्रेष्ठ छे, अन्य कार्यमां श्रेष्ठ नथी."

भद्रा रात्रि अने दिवसना विपर्यासथी अदूषित छे ते विषे कह्युं छे के—

"रात्रिभद्रा यदाऽह्नि स्यादह्नभद्रा यदा निशि ।
न तत्र भद्रादोषः स्यात् सर्वकार्याणि साधयेत् ॥"

"रात्रिनी भद्रा जो दिवसे होय अने दिवसनी भद्रा जो रात्रे होय तो ते वखते भद्रानो दोष नथी. ते सर्व कार्योने साधे छे."

वळी "या विष्टिरक्रमप्राप्ता स्यात्" "अन्य दिवसनी भद्रा अन्य दिवसे एटले तेथी बीजे दिवसे आवी होय अथवा अन्य रात्रिनी भद्रा अन्य रात्रिए आवी होय तो ते अदूषित छे (शुभ छे)." आम पण कोइक कहे छे. आ बन्ने वचनोनो अभिप्राय ए छे जे पोताना स्थानथी भ्रष्ट थवाने लीधे ते भद्रा निर्बळ छे, परंतु आ बन्ने वचनो बहु संमत नथी, केमके अन्य स्थाने गयेला (रहेला) विषादिकनुं पण मारणस्वरूप नाश पामतुं नथी. एम त्रिविक्रम कहे छे. अहीं आ प्रमाणे विशेष जाणवो.

"सुरभे वत्स या भद्रा सोमे सौम्ये सिते गुरौ ।
कल्याणी नाम सा प्रोक्ता सर्वकार्याणि साधयेत् ॥"

"हे वत्स (शिष्य) ! देवगणना नक्षत्रमां सोम, बुध, शुक्र के गुरुवारे भद्रा आवे तो ते कल्याणी नामनी भद्रा कहेली छे, ते सर्व कार्योने साधनारी छे." वळी—

"स्वर्गेऽजोक्षेणकर्केष्वधः स्त्रीयुग्मधनुस्तुले ।
कुंभमीनालिसिंहेषु विष्टिर्मर्त्येषु खेलति ॥"

"मेष, वृष, मकर अने कर्कना चंद्र होय त्यारे विष्टि (भद्रा) स्वर्गमां क्रीडा करे छे, कन्या, मिथुन, धन अने तुलाना चंद्र होय त्यारे विष्टि पातालमां क्रीडा करे छे, तथा कुंभ, मीन, वृश्चिक अने सिंहना चंद्र होय त्यारे विष्टि मनुष्यलोकमां क्रीडा करे छे."

भद्रानो काळ (समय) स्पष्ट रीते बतावे छे.—

रात्रौ चतुर्थ्येकादश्योरष्टमीराकयोर्दिवा ।
भद्रा शुक्ले तिथौ कृष्णे त्वेकैकोने यथाक्रमात् ॥ १२ ॥

अर्थ—शुक्लपक्षमां चतुर्थी तथा एकादशीनी रात्रिए (पश्चिमदळमां) अने अष्टमी तथा पूर्णिमाए दिवसे (पूर्वदळमां) भद्रा होय छे, अने कृष्णपक्षमां अनुक्रमे एक एक ओछी तिथिए होय छे. एटले के कृष्णपक्षमां तृतीया अने दशमीनी रात्रिए (पश्चिमदळमां अने सप्तमी तथा चतुर्दशीए दिवसे (पूर्वदळमां) भद्रा होय छे.

अहीं कोइने शंका थाय के—"विष्टि अशुभ होवाथी तेने वर्जवा माटे विष्टि नामनुं एक ज करण कहेवुं योग्य छे, परंतु बीजां बव विगेरे करणोनुं वर्णन कर्युं तेनो क्यां उपयोग थशे ?" आनो जवाब ए छे जे—"संक्रांति विगेरेमां आ सर्व करणोनो उपयोग छे." कह्युं छे के—

"शकुनिचतुष्पदनागे किंस्तुघ्ने कोलवे वणिज्ये च ।
ऊर्ध्वं संक्रमणं गरतैतिलविष्टिषु पुनः सुप्तम् ॥
बवबालवे निविष्टं सुभिक्षं चोर्ध्वसङ्क्रमे ।
उपविष्टो रोगकरः सुप्तो दुर्भिक्षकारकः ॥"

"शकुनि, चतुष्पद, नाग, किंस्तुघ्न, कोलव अने वणिज्य एटलां करणमां जो संक्रांति बेठी होय तो ते ऊर्ध्व (उभेलुं) संक्रमण कहेवाय छे. गर, तैतिल अने विष्टिमां संक्रांति बेठी होय तो ते सुप्त (सुतेली) कहेवाय छे अने बव तथा बालवमां संक्रांति बेठी होय तो ते बेठेली संक्रांति कहेवाय छे. तेमां जो ऊर्ध्व (उभेली) संक्रांति होय तो सुकाळ थाय, बेठेली होय तो रोगने उत्पन्न करे अने सुतेली होय तो दुकाळ थाय." तथा—"शीतोष्णवर्षर्तुषु सूर्यसंक्रमाः, क्रमेण सुप्तोर्ध्वनिवेशिनः शुभाः ।" "शीत ऋतुमां, उष्ण ऋतुमां अने वर्षा ऋतुमां अनुक्रमे करी सुतेली, ऊर्ध्व अने बेठेली संक्रांति होय तो ते शुभ छे, एटले शीत ऋतुमां सूर्यसंक्रांति सुप्त होय तो ते शुभ छे, उष्ण ऋतुमां सूर्यसंक्रांति ऊर्ध्व होय तो ते शुभ छे अने वर्षा ऋतुमां सूर्यसंक्रांति बेठेली होय तो ते शुभ छे." तथा "पूर्व अने उत्तर एवां बे करणनी संधिमां (एक करणनी समाप्तिमां अने बीजा करणना प्रारंभमां) रहेली संक्रांति सुप्तोत्थिता (सुइने उठेली) नामे कहेवाय छे, ते सर्वदा अशुभ ज छे." एम पूर्णभद्र कहे छे.

विष्टिनां मुखादिक अंगो अने तेना फळने कहे छे.—

बाण ५ द्वि २ दिग् १० जलधि ४ षट् ६ त्रिक ३ नाडिकासु,
वक्त्रं १ गलो २ हृदय ३ नाभि ४ कटा ५ श्च पुच्छम् ६ ।
विष्टेर्विदध्युरिह कार्य १ वपुः २ स्व ३ बुद्धि ४–
प्रेम ५ द्विषां क्षय ६ मिमेऽवयवाः क्रमेण ॥ १३ ॥

अर्थ—विष्टिनी पहेली पांच नाडिका (घडी)ने विष्टिनुं मुख जाणवुं, त्यारपछीनी बे घडीने कंठ जाणवो, त्यारपछीनी दश घडीने हृदय जाणवुं, त्यारपछीनी चार घडीने नाभि जाणवी, त्यारपछीनी छ घडीने कटि जाणवी अने त्यारपछीनी त्रण घडीने पुच्छ जाणवुं. तेमां जो विष्टिने मुखे कार्य कर्युं होय तो ते कार्यनो नाश थाय छे, कंठे कर्युं होय तो शरीरनो नाश (मरण) थाय छे, हृदये कर्युं होय तो द्रव्यनो नाश थाय छे, नाभिए बुद्धिनो नाश थाय छे, कटिए प्रीतिनो नाश थाय छे, अने पुछडे अवश्य जयनी प्राप्ति थाय छे. आ विषे लल्ल कहे छे के—

"शुभाशुभानि कार्याणि यान्यसाध्यानि भूतले ।
नाडीत्रयमिते पुच्छे भद्रायास्तानि साधयेत् ॥"

"आ पृथ्वी पर शुभ अथवा अशुभ जे कोइ कार्य असाध्य होय ते त्रण घमीना प्रमाणवाळा विष्टिना पुछे करवाथी सिद्ध थाय छे." तेनुं पुछ आ प्रमाणे कह्युं छे.—

"दशम्यामष्टम्यां प्रथमघटिकापञ्चकपरं,
हरिद्यौ ११ सप्तम्यां त्रिदश १३ घटिकान्ते त्रिघटिकम् ।
तृतीयायां राकासु च गतसविंशैक २१ घटिके,
ध्रुवं विष्टेः पुछं शिवतिथि १४ चतुर्थ्योश्च विगलत् ॥"

"दशम अने आठमे प्रथमनी पांच घमी पछी विष्टिनुं पुछ आवे छे, एटले के ते तिथिए विष्टिनो कटिनी बीजी घमीथी प्रारंभ थाय छे, तेथी पांच घमी पछी पुछ आवे अने त्यारपछी मुख विगेरे कटि पर्यंत अंगो आवे छे. अग्यारश अने सप्तमीने दिवसे हृदयनी छेल्ली त्रण घमीथी विष्टिनो प्रारंभ थाय छे, तेथी विष्टिनी तेर घमी गया पछी तेनुं त्रण घमी प्रमाण पुछ आवे छे. त्रीज अने पुनमने दिवसे विष्टिनो कंठनी बीजी घमीथी प्रारंभ थाय छे, तेथी विष्टिनी एकवीश घमी गया पछी तेनुं पुछ आवे छे, तथा चोथ अने चौदशने रोज विष्टिनो मुखथी प्रारंभ थाय छे, तेथी विष्टि उतरतां छेल्ली त्रण घमी पुछ आवे छे." भद्रा (विष्टि)नो आकार आ प्रमाणे कह्यो छे.—

"सर्पिणी वृश्चिकी भद्रा दिवारात्र्योः स्मृता क्रमात् ।
सर्पिण्या वदनं त्याज्यं वृश्चिक्याः पुछमेव च ॥"

"दिवसनी भद्रा सर्पिणी कही छे, अने रात्रिनी भद्रा वृश्चिकी (वींछण) कही छे. तेमां सर्पिणीनुं मुख अने वृश्चिकीनुं पुछ तजवा योग्य छे." आ प्रमाणे केटलाक कहे छे. वळी बीजा कोइ एम कहे छे के—"शुक्लपक्षनी भद्रा सर्पिणी छे अने कृष्णपक्षनी भद्रा वृश्चिकी छे."

अहीं विष्टिनां मुख विगेरे अंगो पांच विगेरे घमीवाळां कह्यां छे ते मात्र व्यवहारथी एटले सामान्य रीते साठ घमीनी तिथि होय तो त्रीश घमीनी अर्धी तिथि थाय अने ते वखते ज आ कहेली घमीनी व्यवस्था घटी शके छे, परंतु तिथि साठ घमीथी न्यून के अधिक होय त्यारे अर्धी तिथि पण न्यूनाधिक होय. ते वखते मुखादिकनी पांच विगेरे घमीओ पण न्यूनाधिक थाय छे. दाखला तरीके कोइ तिथि जघन्यथी ५४ घमी होय त्यारे अर्धी तिथि २७ घमीनी होय; माटे विष्टि पण २७ घमीनी होय; तथा कोइ तिथि उत्कृष्ट ६६ घमीनी होय त्यारे ३३ घमीनी अर्धी तिथि होय, माटे विष्टि पण ३३ घमीनी होय, ए रीते तिथिनुं मान मध्यम होय त्यारे विष्टि पण मध्यम प्रमाणवाळी होय छे. तेथी करीने एक घमीना साठ पळ होवाथी तेने विष्टिनी घमी ३० होवाथी त्रीशे भाग लेतां बे पळ आवे छे, माटे विष्टि त्रीश घमीथी जेटली घमी न्यून के अधिक होय तेटली

घमीथी बमणा पळ दरेक अंगनी घमीउमांथी न्यून के अधिक करवा. जेमके कोइ तिथिए विष्टि २ए घमीनी होय त्यारे जद्राना मुखनी पांच घमीमांथी दश पळ न्यून करवा, तेटलुं विष्टिनुं मुख समजवुं. ए ज रीते विष्टिनुं गळुं बे घमीनुं बे तेथी बे घमीमांथी चार पळ न्यून करवा, तेटलुं विष्टिनुं गळुं जाणवुं. ए ज प्रमाणे विष्टिनुं हृदय दश घमीनुं बे तेथी तेमांथी वीश पळ न्यून करवा, तथा नाजि चार घमीनी बे माटे चार घमीमांथी आठ पळ न्यून करवा, तथा कटि ब घमीनी बे माटे तेमांथी बार पळ न्यून करवा, अने पुञ्छ त्रण घमीनुं बे तेथी तेमांथी ब पळ न्यून करवा. आ मान त्रीश घमीमांथी एक घमी न्यून एटले २ए घमीनी विष्टि होय त्यारे समजवुं, पण ज्यारे विष्टि त्रीश घमीमांथी बे घमी न्यून होय एटले के २० घमीनी होय, त्यारे उपर कहेलुं हानिनुं प्रमाण बमणुं करीने न्यून करवुं. जेमके विष्टि एक घमी उठी हती त्यारे पांच घमीना प्रमाणवाळा मुखमांथी दश पळ न्यून कर्या हता, तेथी ज्यारे विष्टि बे घमी ओठी बे त्यारे तेथी बमणा एटले वीश पळ न्यून करवा, अने ज्यारे विष्टि त्रीश घमीमांथी त्रण घमी न्यून होय एटले के सत्यावीश घमी होय त्यारे ते ज हानिनुं प्रमाण त्रण गणुं ओबुं करवुं. जेम एक घमी न्यून हती त्यारे विष्टिना मुखमां दश पळ न्यून कर्या हता तेम त्रण घमी न्यून होवाथी त्रीश पळ न्यून करवा जोइए. ए ज प्रमाणे विष्टि त्रीश घमी उपर एक, बे के त्रण घमी विगेरेनी वृद्धि होय त्यारे पण ते ज प्रमाणे विष्टिना ते ते अंगनी घमीथी बमणा करेला पळो ते ते अंगनी घमीमां वधारवा. जेमके विष्टि एकत्रीश घमी होय तो तेना मुखनी पांच घमी बे, तेथी तेमां दश पळ वधारे समजवा विगेरे.

विष्टिनुं मुख एकांतपणे तजवा योग्य बे, माटे यात्रादिक समयमां ते विष्टि जे प्रकारे सन्मुख थाय बे ते कहे बे.—

जद्रेन्द्रा १४ ष्टा ८ श्व ७ तिथ्य १५ ब्धि ४ दशे १० शा ११ ग्नि ३ मिते तिथौ।
दिग् ८ यामा ८ ष्टकयोर्नेष्टा संमुखी पृष्ठतः शुजा ॥ १४ ॥

अर्थ—चतुर्दशीने दिवसे पहेले पहोरे विष्टि पूर्व दिशामां होय बे, अष्टमीना बीजा प्रहरे अग्नि खूणामां होय बे, सप्तमीना त्रीजे प्रहरे दक्षिणमां होय बे, पूर्णिमाना चोथा प्रहरे नैरृत्य खूणामां होय बे, चतुर्थीना पांचमे प्रहरे पश्चिममां होय बे, दशमीने बठे प्रहरे वायव्यमां होय बे, एकादशीने सातमे प्रहरे उत्तर दिशामां होय बे अने तृतीयाना आठमा प्रहरे ईशान खूणामां होय बे. आ विष्टि प्रयाणादिक कार्यमां सन्मुख होय तो ते अशुज्ञ जाणवी, अने पाबळ होय तो ते शुज्ञ जाणवी. आ विष्टिनी दिशा विगेरे जोवानी बीजी रीत—

"घुजाट्टणी सिते पक्षे गृभिजूढ सितेतरे।
व्यञ्जनैस्तिथयो ज्ञेयाः स्वरैश्च प्रहरा दिशः ॥"

शुक्लपक्षमां घु, जा, ट्ट अने णी तथा कृष्णपक्षमां गृ, भि, जू अने ढ ए अक्षरोमां व्यंजने करीने तिथि जाणवी अने स्वरे करीने प्रहर तथा दिशा जाणवी. एटले के घु ए चोथो व्यंजन अने पांचमो स्वर छे तेथी चोथने दिवसे पांचमी दिशा (पश्चिम)मां पांचमा प्रहरे प्रयाण करनारने विष्टि सन्मुख आवे छे, ए ज प्रमाणे जा ए आठमो व्यंजन अने बीजो स्वर होवाथी आठमने दिवसे बीजी दिशामां एटले अग्नि खूणामां बीजे प्रहरे प्रयाण करनारने भद्रा सन्मुख थाय छे. ट्ट एमां ट ए अग्यारमो व्यंजन अने ऋ ए सातमो स्वर होवाथी अग्यारशने दिवसे सातमे प्रहरे सातमी दिशा (उत्तर)मां प्रयाण करनारने विष्टि सन्मुख आवे छे. णी एमां ण ए पंदरमो व्यंजन अने ई ए चोथो स्वर होवाथी पूर्णिमाने दिवसे चोथा प्रहरे चोथी दिशा (नैर्ऋत्य)मां प्रयाण करनारने विष्टि सन्मुख होय छे. ए ज प्रमाणे गृ, भि, जू अने ढ ए अक्षरोमां पण जाणी लेवुं.

॥ इति तिथिद्वारम् ॥ १ ॥

॥ अथ वारद्वारम् ॥ २ ॥

हवे बीजुं वारद्वार कहे छे, तेमां वारनो आरंभ क्यारे थाय छे? ते कहे छे.—

वारादिरुदयादूर्ध्वं पलैर्मेषादिगे रवौ।
तुलादिगे त्वधस्त्रिंशत्तद्द्युमानान्तरार्धजैः ॥ १५ ॥

अर्थ—मेषादिक छ राशिमां सूर्य रह्यो होय त्यारे सूर्योदयनी पछी ते दिवसना दिनमान अने त्रीशनी वच्चेना आंतराना अर्ध पळवडे वारनो आरंभ थाय छे, अने तुलादिक छ राशिमां सूर्य रह्यो होय त्यारे सूर्योदयनी पहेलां तेटला पळे वारनी प्रवृत्ति थाय छे. जेमके गुर्जर देशमां कर्क संक्रांतिए उत्कृष्ट दिनमान घडी ३३ पळ ४८ नुं होय छे, तेमांथी त्रीश बाद करतां बाकी घडी ३ पळ ४८ रह्या. तेनो अर्ध भाग करतां घडी १ पळ ५४ रह्या. एटले के कुल ११४ पळ रह्या, माटे ते दिवसे सूर्योदय पछी ११४ पळे वारनो आरंभ जाणवो. ते ज प्रमाणे मकर संक्रांतिमां जघन्य दिनमान घडी २६ पळ १२ नुं होय छे. तेने त्रीशमांथी बाद करतां बाकी घडी ३ पळ ४८ रह्या. तेने प्रथमनी जेम अर्धुं करतां ११४ पळ रह्या, माटे ते दिवसे सूर्योदय पहेलां ११४ पळे वारनी प्रवृत्ति जाणवी. ए ज प्रमाणे मध्यम दिनमान होय त्यारे पण आ रीते ज जाणवुं. आ वारना आरंभनो समय कहेवानुं प्रयोजन ए छे जे आगळ जे काळहोरा तथा अर्ध प्रहर विगेरे कहेवामां आवशे तेनी गणतरी वारना आरंभथी करवानी छे. दिनमान लाववानो स्थूळ उपाय—सामान्य उपाय आ प्रमाणे कह्यो छे.—

"रसद्वि २६ नाड्योऽर्कपला १२ मृगे स्युः, सचापकुंभेऽष्टकृतैः पलैस्ताः २६–४८ ।
अलौ च मीनेऽष्टयमाः सशक्रा २८–१४, मेषे तुलायामपि त्रिंशदेव ३० ॥
कन्यावृषे त्र्यग्निशिखिनो ३१ऽङ्गवेदैः ४६, सार्कास्त्रिरामा मिथुने च सिंहे ३३–१२ ।
कर्के त्रिरामा वसुवेदयुक्ता ३३–४८, एषा मितिः संक्रमवासराणाम् ॥"

"मकर संक्रांतिने पहेले दिवसे घडी २६ पळ १२ नुं दिनमान होय छे, धन अने कुंभ संक्रांतिए घडी २६ पळ ४८ नुं दिनमान होय छे, वृश्चिक अने मीन संक्रांतिए घडी २८ पळ १४ नुं दिनमान होय छे, मेष अने तुला संक्रांतिए ३० घडीनुं दिनमान होय छे, कन्या अने वृष संक्रांतिए घडी ३१ पळ ४६ नुं दिनमान होय छे, मिथुन अने सिंह संक्रांतिए घडी३३ पळ १२ नुं दिनमान होय छे, तथा कर्क संक्रांतिना पहेले दिवसे घडी ३३ पळ ४८ नुं दिनमान होय छे. आ प्रमाणे ते ते संक्रांतिने पहेले दिवसे दिनमान होय छे, अने त्यारपछी—

"एकार्क १–१२ पक्षद्विशरा २–५२ स्त्रिदन्ता ३–३२–
स्त्रिदन्त ३–३२ पक्षद्विशराः २–५२ कुसूर्याः १–१२ ।
मृगादिषट्केऽहनि वृद्धिरेवं, कर्कादिषट्केऽपचितिः पलाद्या ॥"

"मकर संक्रांतिमां दरेक दिवसे पळ १ विपळ १२ एटलुं दिनमान वृद्धि पामे छे, कुंभ संक्रांतिमां पळ २ विपळ ५२ दरेक दिवसे वृद्धि पामे छे, मीन संक्रांतिमां पळ ३ विपळ ३२ वृद्धि पामे छे, मेष संक्रांतिमां पळ ३ विपळ ३२, वृष संक्रांतिमां पळ २ विपळ ५२ तथा मिथुन संक्रांतिमां पळ १ विपळ १२ एटलुं दिनमान दरेक दिवसे वृद्धि पामे छे. ए ज रीते कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक अने धन संक्रांतिमां अनुक्रमे उपर प्रमाणे तेटलुं तेटलुं दिनमान हानिने पामे छे. दिनमान जेटलुं वृद्धि पामतुं होय तेटली रात्रिना माननी हानि जाणवी अने दिनमाननी जेटली हानि होय तेटली रात्रिना माननी वृद्धि जाणी लेवी. ए प्रमाणे वृद्धि हानि करवाथी कुल पळनी संख्या आ प्रमाणे आवे छे—

"वड्ढइ छसु मयराइसु पलाण छत्तीस ३६ छलसि ८६ छहिअसयं १०६ ।
कमउक्कमओ हायइ तहेव कक्काइरासीसु ॥"

"मकर विगेरे छ संक्रांतिमां ३६, ८६ अने १०६ पळ क्रमे तथा उत्क्रमे वृद्धि पामे छे. एटले के मकर संक्रांतिमां ३६, कुंभमां ८६, मीनमां १०६, मेषमां १०६, वृषमां ८६ अने मिथुन संक्रांतिमां ३६ पळनी दिनमानमां वृद्धि थाय छे. ते ज प्रमाणे कर्क विगेरे संक्रांतिमां ३६, ८६ अने १०६ पळ क्रमे तथा उत्क्रमे हानि पामे छे.

दिनमाननुं यंत्र—

संक्रांतिना प्रथम दिवसनुं मान	घडी	पळ	मासावधि प्रतिदिन मान	पळ	विपळ	आखा मासमां वृद्धि हानिना कुल पळ.
मकर	२६	१२	वृद्धि	१	१२	३६
कुंभ	२६	४०	वृद्धि	२	५२	०६
मीन	२०	१४	वृद्धि	३	३२	१०६
मेष	३०	०	वृद्धि	३	३२	१०६
वृष	३१	४६	वृद्धि	२	५२	०६
मिथुन	३३	१२	वृद्धि	१	१२	३६
कर्क	३३	४०	हानि	१	१२	३६
सिंह	३३	१२	हानि	२	५२	०६
कन्या	३१	४६	हानि	३	३२	१०६
तुला	३०	०	हानि	३	३२	१०६
वृश्चिक	२०	१४	हानि	२	५२	०६
धन	२६	४०	हानि	१	१२	३६

दिनशुद्धि ग्रंथमां आ प्रमाणे विशेष कह्यो छे.—

"विछिअकुंभाइतिए निसि मुहि विस धणुहककतुलिमझे ।
मिगमिहुणकन्नसीहे निसि अंते संकमइ वारो ॥"

"वृश्चिक, कुंभ, मीन अने मेष आ चार संक्रातिमां रात्रिना प्रारंभ वखते वारनो प्रारंभ थाय छे, वृषभ, धन, कर्क अने तुला संक्रांतिमां अर्ध रात्रिए वारनो प्रारंभ थाय छे, मकर, मिथुन, कन्या अने सिंह संक्रातिमां रात्रिना अंतमां वारनो प्रारंभ थाय छे."

"राम ३० रस ६० नन्द ९० बाणा ५० वेदा ४० ष्टौ ८० सप्त ७० दशहताः कार्याः।
मन्दादीनां दिनतः क्रमेण भोगस्य नाड्यः स्युः ॥"

"शनिवारनी भोगघडी दिवसना प्रारंभथी ३० घडी सुधी छे, त्यारपछीनी ६० घडी रविनी भोगनाडी (घडी) छे, त्यारपछीनी ९० घडी सोमनी, पछी ५० घडी मंगळनी, पछीनी४० घडी बुधनी, पछीनी ८० घडी गुरुनी अने त्यारपछीनी ७० घडी शुक्रवारनी भोगनाडी छे. (शनिवारनी सवारथी आरंभीने आवता शनिवारनी सवारे आ सर्व घडीओ पूर्ण थाय छे.) माटे ज शनिवार सुतो होय तो तेने शुभ कह्यो छे, केमके शनिवारे दिवसनी त्रीश घडी पूरी थये रात्रे रविनी भोगघडी होवाथी शनि सुतेलो कहेवाय छे, माटे ते शुभ छे.

हवे वारनां नामो तथा तेमनुं फल कहे छे—

रविचन्द्रमंगलबुधा गुरुशुक्रशनैश्चराश्च दिनवाराः ।
रविकुजशनयः क्रूराः सौम्याश्चान्ये पदोनफलाः ॥ १६ ॥

अर्थ—रवि, सोम, मंगळ, बुध, गुरु, शुक्र अने शनि ए सात वार छे. तेमां रवि, मंगल अने शनि ए त्रण वार क्रूर छे अने बाकीना चार वार सौम्य छे. आ सर्वे वारो ३/४ शुभाशुभ फळ आपनारा छे. एटले के वीश वसानी अपेक्षाए पंदर वसा जेटलुं फळ आपे छे. क्रूर वारमां करेलुं कार्य पंदर वसा अशुभ फळ आपे छे, अने सौम्य वारमां करेलुं कार्य पंदर वसा शुभ फळ आपे छे. कह्युं छे के—

"रविमन्दारवारेषु यस्मिन् संक्रमते रविः ।
तस्मिन्मासि भयं विद्याद्दुर्भिक्षावृष्टितस्करैः ॥"

"रवि, शनि के मंगळवारे जो सूर्यनी संक्रांति थइ होय तो ते मासमां दुकाळ, अनावृष्टि तथा चोरादिकनो भय थाय छे एम जाणवुं;" परंतु आ त्रण वारोनी क्रूरता जेटली दिवसे गणाय छे तेटली रात्रिए गणाती नथी. कह्युं छे के—"न वारदोषाः प्रभवन्ति रात्रौ" "रात्रिए वारना दोष समर्थ थता नथी." वारोने विषे आ प्रमाणे कार्यो करवानां कह्यां छे.—राज्याभिषेक, नोकरी, विचार, शस्त्र, औषध, विद्या, संग्राम, प्रयाण, सुवर्ण, तांबु, ऊन, अलंकार, शिल्प (कारीगरी), पुण्यकर्म तथा उत्सवादिक कार्यो रविवारे करवाथी सिद्ध थाय छे. रूपुं, गायन, भोजन, खेती तथा वेपार विगेरे कार्यो सोमवारे करवाथी सिद्ध थाय छे. सर्व क्रूर कर्म, रक्तस्राव, सुवर्ण, परवाळा, खाण, धातु, सेना निवेशादिक कार्यो मंगलवारे करवाथी सिद्ध थाय छे. अक्षर शीखवा, कान विंधवा, कविता करवी, कसरत करवी, तर्क करवो, वाद विवाद करवो तथा कळाभ्यास ए विगेरे कार्यो बुधवारे सिद्ध थाय छे. सर्वे शुभ मांगलिक कार्य, दीक्षा, विद्या, यात्रा, औषध विगेरे गुरुवारे सिद्ध थाय छे. दीक्षाने वर्जीने बुध अने गुरुमां कहेलां सर्व कार्यो शुक्रवारे सिद्ध थाय छे, अने दीक्षा, घरप्रवेश, घरनो आरंभ विगेरे स्थिर कार्य तथा क्रूर कार्य शनिवारे करवाथी सिद्ध थाय छे. एम कह्युं छे, सामान्य रीते कहीए तो—

"सर्वार्थसाधका वारा गुरुशुक्रबुधेन्दवः ।
प्रोक्तमेव कृतं कर्म भौमार्कार्किषु सिध्यति ॥"

"गुरु, शुक्र, बुध अने सोम ए वारो सर्व कार्यना साधक छे, अने मंगळ, रवि तथा शनिवारे जे कार्य करवानुं कह्युं होय ते ज करवाथी सिद्ध थाय छे." आ दैवज्ञवल्लभमां कह्युं छे. तथा—

"लाक्षाकुसुंभमंजिष्ठारागे काञ्चनभूषणे ।
शस्तौ भौमरवी लोहोपलत्रपुविधौ शनिः ॥"

"लाख, कसुंबो अने मजिठ ए रंगने विषे तथा सुवर्णना भूषणने विषे मंगळ तथा रवि सारा छे, अने लोढुं, पत्थर तथा सीसाने विषे शनिवार सारो छे." तथा—

"द्रव्यादिदानग्रहणे निधाने, वाणिज्यसेवागुरुराजयोगे ।
कलाकृषिस्त्रीशुभकर्मवित्तन्यासौषधेष्वारशनी न शस्तौ ॥"

"द्रव्यादिक लेवा देवामां, निधानमां, वेपारमां, नोकरीमां, गुरु अने राजना दर्शनमां, कळा शीखवामां, खेती करवामां, स्त्रीना समागममां, शुभ कार्यमां, द्रव्यनी थापण मूकवामां अने औषध खावामां आटला कार्यमां मंगल तथा शनि सारा नथी." एम यतिवल्लभमां कह्युं छे.

आ विषे विशेषमां लल्ल आ प्रमाणे कहे छे.—

"उपचयकरस्य कुर्याद्ग्रहस्य वारे स्ववारविहितं यत् ।
अपचयकरग्रहदिने कृतमपि सिद्धिं न याति पुनः ॥"

"पोतपोताना वारमां करवानां जे कार्य कह्यां छे ते उपचय (वृद्धि) करनारा ग्रहना वारने विषे करवामां आवे छे, पण अपचय (हानि) करनारा ग्रहना वारने विषे करवामां आवतां नथी, कारण के ते वारमां करेलुं कार्य कोइ पण प्रकारे सिद्ध थतुं नथी. आगळ कहेवामां आवता गोचरादिक विधिए करीने ज्यारे जे ग्रह जेने अनुकूळ होय ते ग्रह तेनो ते वखते उपचय करनार कहेवाय छे अने प्रतिकूळ होय तो ते अपचय करनार कहेवाय छे.

हवे वारोने आश्रीने काळहोरा कहे छे.—

होराः पुनरर्कसितज्ञचन्द्रशनिजीवभूमिपुत्राणाम् ।
सार्धघटीद्वयमानाः स्ववारतस्तास्तु पूर्णफलाः ॥ १७ ॥

अर्थ—अढी घडीनी एक होरा होय छे. तेमां जे दिवसे जे वार होय तेनी पहेली होरा जाणवी. पछी पोताना वारथी जे छठो वार होय ते वारनी बीजी होरा, तेनाथी जे छठो वार होय तेनी त्रीजी होरा जाणवी. कह्युं छे के—"अर्कसितज्ञचन्द्रशनिजीवभूमिपुत्राणां" "रविथी छठो शुक्र छे, तेथी छठो बुध छे, तेथी छठो सोम छे, तेथी छठो शनि, तेथी छठो गुरु अने तेथी छठो मंगळवार छे." ए प्रमाणे एक अहोरात्रिमां चोवीश होरा आवे छे. जेमके रविवारथी छठो शुक्र छे, तेनाथी छठो बुध छे अने तेनाथी छठो सोम छे, ए प्रमाणे गणवुं. एटले के रविवारे पहेली होरा रविनी, बीजी शुक्रनी, त्रीजी बुधनी, चोथी चंद्रनी, पांचमी शनिनी, छठी गुरुनी, सातमी मंगळनी अने आठमी रविनी. ए प्रमाणे अनुक्रमे वारंवार गणवुं ते छेवट अहोरात्रिने अंते साठ घडीमां थइने चोवीश होरा थाय. ते ज प्रमाणे सोमवारे पहेली चंद्र होरा आवे छे. तेने पण छठा छठा वारनी होरा ए प्रमाणे चोवीश सुधी गणवुं. मंगळवारे पहेली होरा मंग-

ळनी आवे छे. ए प्रमाणे साते वारनी होरा जाणवी. आगळ अर्धी राशिने होरा नामथी कहेवामां आवशे, माटे आनुं नाम काळहोरा केहवाय छे. आ काळहोरानां नाम चोघडीयां प्रमाणे जाणवां एम नारचंद्रमां लख्युं छे. अहीं घंटालाला न्याये करीने वार शब्दनो बन्नेमां संबंध होवाथी पोताना वारने दिवसे ते ज वारनी होराने समये जो कार्य करवामां आवे तो कार्य करनारने पूर्ण फळ एटले के वारनुं पोतानुं पंदर वसा फळ अने पांच वसा होरानुं मळी वीश वसा शुभ के अशुभ फळ मळे छे. ते विषे लल्ल कहे छे के— "वारफलं होरायां" "वारोनुं फळ होरामां पूर्ण मळे छे." आ होरा कहेवानुं कारण ए छे के—

"यस्य ग्रहस्य वारे यात्किञ्चित्कर्म प्रकीर्तितम् ।
तत्तस्य कालहोरायां पूर्णं स्यात्पूर्णमेव हि ॥"

"जे ग्रहना वारने विषे जे कार्य करवानुं कह्युं होय ते कार्य ते वारनी काळहोराने वखते करवाथी तेनी शीघ्र सिद्धि थाय छे." एम यतिवल्लभमां कह्युं छे. वळी—

"होराफलवारफले निन्द्ये द्वे अपि न जातु गृह्णीत ।
एकस्मिन् शुभफलदे तयोश्च कार्यं शुभं कुर्यात् ॥"

"होरानुं फळ तथा वारनुं फळ ए बन्ने जो निंद्य (अशुभ) होय तो ते कदापि ग्रहण करवां नहीं एटले ते समये कांइ पण कार्य करवुं नहीं, अने ते बन्नेमांथी जो एक शुभ फळ आपनार होय तो ते समये शुभ कार्य करवा लायक छे." एम व्यवहारप्रकाशमां कह्युं छे.

हवे वारने विषे कुवेळा कहे छे.—

त्याज्योऽर्धयामो वेदा ४ द्रि ७ द्वि २ पञ्चा ५ ष्ट ८ त्रि ३ षण्मितः ६ ।
सूर्यादौ कालवेलार्धयामाङ्कात्सैकपञ्चमी ॥ १८ ॥

अर्थ—रविवारथी आरंभीने अनुक्रमे चोथो, सातमो, बीजो, पांचमो, आठमो, त्रीजो अने छठ्ठो अर्ध प्रहर (चोघडीयुं) शुभ कार्यमां तजवा लायक छे. एटले के रविवारे चोथुं चोघडीयुं, सोमवारे सातमुं चोघडीयुं, मंगळवारे बीजुं, बुधवारे पांचमुं, गुरुवारे आठमुं, शुक्रवारे त्रीजुं अने शनिवारे छठ्ठुं चोघडीयुं शुभ कार्यमां वर्जवा लायक छे. आ विषे दिनशुद्धिमां आ प्रमाणे कह्युं छे के—

"सोल १६ ड ८ दसग ३२ दुग २ इग १ चउ ४ चउसट्ठी ६४ अद्धपहरमज्झपला ।
जत्ताइसु अइअहमा पुव्वाई छ छ दिसिं ॥ १ ॥"

जे अर्ध प्रहर वारने आश्रीने त्याग करवाना कह्या छे, तेमां ते अर्ध प्रहरनी अनुक्रमे सोळ, आठ, बत्रीश, बे, एक, चार अने चोसठ मध्यम पळो पूर्वादिक छठ्ठी छठ्ठी दिशाए यात्रादिक कार्यमां अत्यंत तजवा लायक छे. अर्थात् रविवारे चोथा अर्ध प्रहारनी मध्यनी सोळ पळ पूर्व दिशामां अत्यंत त्याग करवा लायक छे. एटले ते वखते पूर्व दिशामां यात्रादिक करवानो निषेध छे. ए रीते सोमवारे सातमा अर्ध प्रहरनी मध्यनी

आठ पळ पूर्वथी छठी दिशाए एटले वायव्य खूणामां तजवा लायक छे, मंगळवारे बीजा अर्ध प्रहरनी बत्रीश पळ वायव्यथी छठी दिशाए एटले दक्षिण दिशामां तजवा लायक छे. बुधवारे पांचमा अर्ध प्रहरनी बे मध्य पळ तेथी छठी दिशाए एटले ईशान खूणामां तजवा लायक छे, गुरुवारे आठमा अर्ध प्रहरनी एक पळ पश्चिम दिशामां तजवा लायक छे, शुक्रवारे त्रीजा अर्ध प्रहरनी चार मध्य पळ अग्नि खूणामां तथा शनिवारे छठा अर्ध प्रहरनी चोसठ मध्य पळ उत्तर दिशामां तजवा लायक छे. (हवे श्लोकना उत्तरार्धवडे काळवेळा कहे छे—) उपर जे वर्जवा लायक अर्ध प्रहरो कह्या छे, तेमने अनुक्रमे मांडीने छेडे एकडो लखवो, ते आ प्रमाणे.—४–७–२–५–८–३–६–१. पछी अर्ध प्रहरना आंकडाथी जे पांचमो अंक आवे ते अर्ध प्रहरने काळवेळा कहे छे. जेमके रविवारे चोथो अर्ध प्रहर छे तेनाथी पांचमो अंक आठ छे, तेथी रविवारे आठमा अर्ध प्रहरने काळवेळा जाणवी, सोमवारे सातमो अर्ध प्रहर छे तेनाथी पांचमो अंक त्रण छे, तेथी सोमवारे त्रीजो अर्ध प्रहर काळवेळा जाणवी. ए रीते अनुक्रमे पोतपोताना वारना अंकथी पांचमो अंक गणतां मंगळवारे छठो, बुधवारे पहेलो, गुरुवारे चोथो, शुक्रवारे सातमो अने शनिवारे बीजो अर्ध प्रहर काळवेळा कहेवाय छे.

काळवेळाने ज पाठांतरवडे स्पष्ट कहे छे.—

"सूर्यादौ कालवेलाष्ट ८ त्रि ३ षट् ६ क्षा १ ब्ध्य ४ श्व ७ द्विमिताः २ ॥"

"रविवारथी आरंभीने अनुक्रमे आठमो, त्रीजो, छठो, पहेलो, चोथो, सातमो अने बीजो अर्ध प्रहर काळवेळा जाणवी." आ काळवेळा उपरथी अर्ध प्रहर काढवानी एवी रीत छे के—काळवेळाना अंकमां चार नाखी आठे भाग लेवो, जे अंक शेष रहे ते अर्ध प्रहर जाणवो. जेमके रविवारनो आठमो अर्ध प्रहर काळवेळा छे, माटे आठमां चार उमेरी आठे भाग लेतां शेष चार रहे छे, तेथी रविवारे चोथो अर्ध प्रहर वर्ज्य थयो. ए रीते सोमवारे त्रीजो अर्ध प्रहर काळवेळा छे. तेमां चार उमेरवाथी सात थया. आठे भाग चालतो नथी, तेथी बाकी सात ज रह्या, माटे सोमवारे सातमो अर्ध प्रहर थयो. ए रीते सर्व वारमां जाणवुं. १८.

हवे कंटक तथा उपकुलिक कहे छे.

कंटकोऽपि दिनाष्टांशे स्ववारान्मंगलावधौ ।
बृहस्पत्यवधौ चोपकुलिकस्त्यज्यते परैः ॥ १९ ॥

अर्थ—जे दिवसे जे वार होय ते वारथी मंगळवार जेटलामो होय तेटलामो दिनाष्टांश[1] कंटक कहेवाय छे, अने पोताना वारथी गुरुवार जेटलामो होय तेटलामो दिनाष्टांश उप-

१ दिवसनो आठमो भाग, अर्थात् चोघडीयुं.

कुलिक कहेवाय छे. आ बन्ने दिनाष्टांश शुभ कार्यमां अन्य विद्वानोए वर्जित कह्या छे. उदाहरण—रविवारथी मंगळवार त्रीजो छे, माटे रविवारे त्रीजो दिनाष्टांश कंटक कहेवाय छे, सोमवारथी मंगळवार बीजो छे, माटे सोमवारे बीजो दिनाष्टांश कंटक कहेवाय छे. मंगळवारथी मंगळवार पहेलो ज छे, माटे मंगळवारे पहेलो दिनाष्टांश कंटक जाणवो, बुधवारथी मंगळवार सातमो होवाथी बुधवारे सातमो दिनाष्टांश कंटक नामा छे. ए रीते गणवाथी गुरु, शुक्र अने शनिवारे अनुक्रमे छठ्ठो, पांचमो अने चोथो दिनाष्टांश कंटक नामा कहेवाय छे. उपकुलिक आ प्रमाणे छे—रविवारथी गुरुवार पांचमो छे, माटे रविवारे पांचमो दिनाष्टांश उपकुलिक कहेवाय छे. ए रीते गणवाथी सोमवार, मंगळवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार अने शनिवारे अनुक्रमे चोथो, त्रीजो, बीजो, पहेलो, सातमो अने छठ्ठो दिनाष्टांश उपकुलिक नामा कहेवाय छे. अन्य विद्वानोए आ बन्ने दिनाष्टांश शुभ कार्यमां वर्ज्या छे एम कहेवाथी ग्रंथकारे पण तेनो (वर्जवानो) निषेध कर्यो नथी, तेथी ग्रंथकारना मतमां पण आ योग वर्जित समजवा. ए प्रमाणे बीजे ठेकाणे पण अन्यनो मत बतावाथी ग्रंथकारनी पण संमति जाणवी. दिनाष्टांश एटले दिवसनो आठमो भाग एवुं कह्युं छे, माटे ते अष्टमांश दिनमानने आश्रीने चार घडीथी ओछो अथवा अधिक थइ शके छे. एटले के जघन्य दिनमान होय त्यारे घडी ३ पळ १६ विपळ ३०, आटलो अष्टमांश थाय छे, अने उत्कृष्ट दिनमान होय त्यारे घडी ४ पळ १३ विपळ ३० आटलो अष्टमांश थाय छे, आ रीते मध्यम दिनमानमां पण अष्टमांश काढवा. १९.

हवे कुलिक कहे छे.—

कुलिको द्विघ्नशन्यन्तमिते त्याज्यः स्ववारतः ।
मुहूर्त्तेऽह्नि निशि त्येके भागः पञ्चदशस्तु सः ॥ २० ॥

अर्थ—पोताना वारथी शनिवार जेटलामो होय तेने बमणा करवाथी जे संख्या आवे तेटलामुं मुहूर्त्त ते दिवसे कुलिक कहेवाय छे अने रात्रिए ते ज संख्यामांथी एक ओछो करवो एटले तेटलामुं मुहूर्त्त रात्रिए कुलिक कहेवाय छे. जेमके रविवारथी शनिवार सातमो छे. तेने बमणा करवाथी चौदमुं मुहूर्त्त दिवसे कुलिक थयो, अने रात्रिए तेरमुं मुहूर्त्त कुलिक थयो. तथा सोमवारथी शनिवार छठ्ठो छे, माटे छने बमणा करवाथी बार थया, तेथी सोमवारे दिवसे बारमुं मुहूर्त्त कुलिक अने रात्रिए अग्यारमुं मुहूर्त्त कुलिक कहेवाय छे. ए रीते बीजा वारोमां पण जाणवुं. अहीं मुहूर्त्त शब्द आप्यो छे, अने ते मुहूर्त्त सामान्य रीते बे घडीनुं कहेवाय छे, तोपण आ ठेकाणे (कुलिकमां) दिनमान अने रात्रिमानने आश्रीने पंदरमो भाग जाणवो. एटले के जघन्य दिनमान होय त्यारे घडी १ पळ ४४ विपळ ४० अने उत्कृष्ट दिनमान होय त्यारे घडी २ पळ १९ विपळ १२ एटलो

काळ पंदरमो अंश एटले मुहूर्त्त कहेवाय छे. एवी ज रीते रात्रिमानने आश्रीने पण जघन्य अने उत्कृष्ट मानमां पंदरमो अंश काढवो. तथा मध्यम मान होय त्यारे पण ए ज रीते पंदरमो अंश काढवो. कुलिकमां कांइ पण शुभ कार्य करवामां आवतुं नथी. ते विषे व्यवहार प्रकाशमां कह्युं छे के—"छिन्नं भिन्नं नष्टं ग्रहजुष्टं पन्नगादिभिर्दष्टम् । नाशमुपयाति नियतं जातं कर्मान्यदपि तत्र ॥ १ ॥" "कुलिकमां छेदायेली, भेदायेली, नासी गयेली, ग्रहे (भूत प्रेतादिके) सेवेली अने सर्पादिके डसेली चीजो (मनुष्यादिक प्राणी तथा वस्तु) अवश्य नाश पामे छे. तथा तेमां बीजुं पण करेलुं कार्य नाश पामे छे." तथा—"सोमे ब्राह्मः कुजे पैत्रः सुराचार्ये च राक्षसः । शुक्रे ब्राह्मः शनौ रौद्रो मुहूर्त्ताः कुलिकोपमाः ॥ १ ॥" "सोमवारे ब्राह्म मुहूर्त्त, मंगळवारे पैत्र मुहूर्त्त, गुरुवारे राक्षस मुहूर्त्त, शुक्रवारे ब्राह्म मुहूर्त्त अने शनिवारे रौद्र मुहूर्त्त, आटलां मुहूर्त्तो कुलिक जेवां छे." अहीं ब्राह्म एटले ब्रह्मा संबंधी, पैत्र एटले पितृ संबंधी विगेरे अर्थ जाणवो. ब्राह्म विगेरे मुहूर्त्तोनो विभाग आगल होरना अधिकारमां कहेवाशे. आ एक मुहूर्त्तनो कुलिक दिवसे एक तथा रात्रिए एक मळी बे वार आवे छे, पण अर्ध प्रहरादिक वेळा तो सूर्यने आश्रीने थाय छे, माटे दिवसे ज आवे छे, रात्रिए आवता नथी. आ कुलिक विषे नारचंद्रमां एम कह्युं छे के—पोताना वारथी शनिवार जेटलामो आवे तेटलामो दिनाष्टांश कुलिक कहेवाय छे, तेथी रविवारादिकमां अनुक्रमे सातमो, छठ्ठो, पांचमो, चोथो, त्रीजो, बीजो अने पहेलो दिनाष्टांश कुलिक कहेवाय छे. एम कह्युं छे. २०.

दिवसे दिनाष्टांश ज कुलिक छे एवुं नारचंद्रनुं वचन प्रमाण करवापूर्वक वारोने विषे सुवेळा बतावे छे.—

भानोर्भू १ नयन २ र्त्तवः ६ सितरुचेः शीतांशु १ पञ्चा ५ ष्टमा ८
भौमस्याब्धि ४ नगा ७ ष्टमाः ८ शशितनूजस्य त्रि ३ तर्का ६ ष्टमाः ८।
जीवस्य द्वि २ शरा ५ द्र्यो ७ भृगुभुवश्चन्द्रा १ ब्धि ४ षष्ठा ६ ष्टमाः
शौरेस्त्री ३ षु ५ नगा ७ ष्टमा ८ श्च दिवसेष्वेतेऽष्टमांशाः शुभाः ॥२१॥

अर्थ—रविवारे दिवसे पहेलो, बीजो अने छठ्ठो अष्टमांश (चोघडीयुं) शुभ छे, अर्थात् त्रीजो, चोथो, पांचमो, सातमो अने आठमो अष्टमांश अर्ध प्रहरादिके करीने दूषित छे. सोमवारे दिवसे पहेलो, पांचमो अने आठमो अष्टमांश शुभ छे, मंगळवारे चोथो, सातमो अने आठमो, बुधवारे त्रीजो, छठ्ठो अने आठमो, गुरुवारे बीजो, पांचमो अने सातमो, शुक्रवारे पहेलो, चोथो, छठ्ठो अने आठमो तथा शनिवारे त्रीजो, पांचमो, सातमो अने आठमो अष्टमांश शुभ छे. आ अष्टमांशो दिवसे ज शुभ छे. रात्रिए तेमनी

गणतरी करी नथी. अहीं पण पूर्वनी जेम अष्टमांशनो समय बार घडीथी न्यूनाधिक-वाळो जाणवो. २१.

हवे वारने विषे छायालग्न कहे छे.—

सिद्धछाया क्रमादर्कादिषु सिद्धिप्रदा पदैः ।

रुद्र ११ सार्धाष्ट ८॥ नन्दा ९ ष्ट ८ सप्तभि ७ श्चन्द्रवद्वयोः ॥ २२ ॥

अर्थ—रविवारथी आरंभीने अनुक्रमे अगीयार, साडा आठ, नव, आठ, सात तथा छेल्ला बे वारे चंद्रनी जेम एटले साडा आठ साडा आठ पगलांए करीने सिद्धि आपनारी सिद्ध छाया कहेवाय छे. अर्थात् रविवारे अग्यार पगलां, सोमवारे साडा आठ पगलां, मंगळवारे नव, बुधवारे आठ, गुरुवारे सात अने शुक्र तथा शनिवारे साडा आठ साडा आठ पगलांए करीने सिद्ध छाया थाय छे. जेमके रविवारे सूर्य सन्मुख उभा रही पोताना शरीरनी छाया अग्यार पगलां जेटली होय ते वखते सिद्ध छाया कहेवाय छे. सोमवारे साडा आठ पगलां जेटली छाया होय ते वखते सिद्ध छाया कहेवाय छे. ए रीते सर्व वारोमां जाणवुं. अवश्य कार्यनी सिद्धि आपनार होवाथी आनुं नाम सिद्ध छाया कहेवाय छे. नरपति जयचर्यामां कह्युं छे के—"नक्षत्राणि तिथिर्वारास्ताराश्चन्द्रबलं ग्रहाः । दुष्टान्यपि शुभं भावं भजन्ते सिद्धछायया ॥ १ ॥" "नक्षत्र, तिथि, वार, ताराबळ, चंद्रबळ अने ग्रहो जो कदाच दूषणवाळां होय तोपण सिद्ध छायाए करीने तेओ शुभ भावने भजे छे. (शुभ फळ आपे छे.)." आ सिद्ध छायानो समय त्रीश अक्षर बोलीए तेटलो छे, एम वृद्ध परंपरा छे. एटले के ज्यारे इष्ट छायानां पगलांनो समय पंदर वर्णना उच्चार काळ जेटलो न्यून होय त्यारे कार्य करवानो आरंभ करवो, अने इष्ट छायाना समय उपरांत पंदर वर्णना उच्चार जेटलो समय जाय त्यांसुधीमां ते कार्य पूरुं करवुं. आ प्रमाणे करवाथी सिद्ध छाया साधेली कहेवाय छे, परंतु घणा काळे समाप्त थइ शके एवा कार्यमां तो सिद्ध छायानी आगळ पाछळना त्रीश वर्णोच्चार जेटला समयमां तेनो आरंभ करी देवो. पछी कार्यनी समाप्ति वखते कांइ पण मुहूर्त्तनी जरुर नथी. आ सिद्ध छाया साधवा माटे पुरुषनां पगलांनुं प्रमाण जाणवुं, परंतु सात आंगळनो शंकु करीने जो सिद्ध छाया काढवी होय, तो उपर कहेलां पगलां बदले तेटलां आंगळवडे सिद्ध छाया काढवी, अने जो बार आंगळना शंकुवडे सिद्ध छाया काढवी होय तो तेनुं प्रमाण आ प्रमाणे जाणवुं—"वीसं सोलस पनरस चउदस तेरस य बार बारे व । रविमाइसु बारंगुलसंकुछायंगुला सिद्धा ॥ १ ॥" बार आंगळना शंकुवडे सिद्ध छाया काढवी होय तो रविवारे वीश आंगळे करीने, सोमवारे सोळ आंगळे करीने, मंगळवारे पंदर, बुधवारे चौद, गुरुवारे तेर, शुक्रवारे बार अने शनिवारे पण

बार आंगळवडे सिद्ध छाया थाय छे, एटले के ते ते वारे ते ते आंगळना प्रमाण जेटली छाया होय ते वखते सिद्ध छाया कहेवाय छे. २२.

॥ इति वारद्वारम् ॥ २

॥ अथ नक्षत्रद्वारम् ॥ ३

हवे त्रीजुं नक्षत्रद्वार कहे छे. तेमां प्रथम अठ्यावीश नक्षत्रोने आश्रीने दरेकना चार चार पाद आश्री अक्षरो कहे छे.—

चुचेचोलाश्विनी १ भ्रेया लीलूलेलो भरण्यथ २ ।
आईऊए कृत्तिका ३ तु ओवावीवू च रोहिणी ४ ॥ २३ ॥
वेवोकाकी मृगशिर ५ आर्द्रा ६ कुघङछा पुनः ।
केकोहाहि पुनर्वस्वो ७ हूहेहोडा तु पुष्यभे ८ ॥ २४ ॥
डीडूडेडोभिरश्लेषा ९ ममिमूमे मघा १० मता ।
मोटाटीटू फल्गुनी प्राक् ११ टेटोपापीभिरुत्तरा १२ ॥ २५ ॥
हस्तः १३ पुषणठैर्वेणैश्चित्रा १४ पेपोररिः पुनः ।
रुरेरोताः स्मृताः स्वातौ १५ तीतूतेतो विशाखिका १६ ॥ २६ ॥
अनुराधा १७ ननीनूने स्याज्ज्येष्ठा १८ नोययीयुभिः ।
स्याद् येयोभाभिभिर्मूलं १९ पूर्वाषाढा २० भुधाफढैः ॥ २७ ॥
भेभोजाज्युत्तराषाढा २१ जुजेजोखाऽभिजि २२ न्मता ।
श्रवणे २३ स्युः खिखूखेखो धनिष्ठायां २४ गगीगुगे ॥ २८ ॥
गोससीसूः शतभिषक् २५ प्राक् सेसोददि भद्रपात् २६ ।
डुशझथोत्तराभद्रा २७ देदोचची तु रेवती २८ ॥ २९ ॥

अर्थ—अहीं अनुक्रमे अठ्यावीश नक्षत्रोनां नाम गणाव्यां छे. तेमां सामान्ये करीने साठ घडी सुधी एक नक्षत्र होय छे, तेथी पंदर पंदर घडीनुं एक एक पाद कहेवाय छे. तेमां जेना नामनो प्रथम अक्षर 'चु' होय, तो तेनो जन्म अश्विनी नक्षत्रना पहेला पादमां थयेलो छे एम जाणवुं. एटले के अश्विनीना पहेला पादमां जन्मेला मनुष्यनुं नाम जेमां पहेलो अक्षर 'चु' आवे एवुं पाडवुं जोइए. ते ज नक्षत्रना बीजा पादमां 'चे', त्रीजामां 'चो', अने चोथा पादमां 'ला' अक्षर पहेलो आवे एवुं नाम करवुं जोइए.

अहीं चु अक्षरे करीने तेना सजातीय स्वरवाळो चू पण जाणवो. ए ज प्रमाणे चे अक्षरे करीने चै, अने चो अक्षरे करीने चौ पण जाणवो. वळी ला अक्षरे करीने ल पण जाणवो. ए प्रमाणे सर्व नक्षत्रोना अक्षरोमां पण पोतपोताना सजातीय स्वरवाळा ते ते अक्षरो पण जाणवा. एटले के जरणी नक्षत्रना पहेला पादमां लि ली, बीजामां लु लू, त्रीजामां ले लै, अने चोथा पादमां लो लौ विगेरे. ए प्रमाणे सर्व नक्षत्रोमां जाणवुं.

नक्षत्रोना पादने आश्री अक्षरो नीचे प्रमाणे जाणवा.—

१ अश्विनी—चु चे चो ला.	२ जरणी—ली लू ले लो.
३ कृत्तिका—आ ई ऊ ए.	४ रोहिणी—ऊं वा वी वू.
५ मृगशिर—वे वो का की.	६ आर्द्रा—कु घ ङ ब.
७ पुनर्वसु—के को हा हि.	८ पुष्य—हू हे हो मा.
९ अश्लेषा—मी डू मे मो.	१० मघा—म मि मू मे.
११ पूर्वाफाल्गुनी—मो टा टी टू.	१२ उत्तराफाल्गुनी—टे टो पा पी.
१३ हस्त—पु ष ण ठ.	१४ चित्रा—पे पो र रि.
१५ स्वाति—रु रे रो ता.	१६ विशाखा—ती तू ते तो.
१७ अनुराधा—न नी नू ने.	१८ ज्येष्ठा—नो य यी यु.
१९ मूल—ये यो जा जी.	२० पूर्वाषाढा—जु धा फ ढ.
२१ उत्तराषाढा—जे जो जा जी.	२२ अजिजित्—जु जे जो खा.
२३ श्रवण—खि खू खे खो.	२४ धनिष्ठा—ग गी गु गे.
२५ शतजिषक्—गो स सी सू.	२६ पूर्वाजाद्रपद—से सो द दि.
२७ उत्तराजाद्रपद—दु श ऊ थ.	२८ रेवती—दे दो च ची.

अहीं उपरना कोष्टकमां आर्द्रामां घ ङ अने ब, हस्तमां ष ण ठ, पूर्वाषाढामां ध फ ढ, तथा उत्तराजाद्रपदमां श ऊ थ, आ अक्षरो कहेला बे. ते दरेक अक्षर दशे स्वरवाळा जाणवा. एटले के घ अक्षरे करीने घ घा घि घी घु घू घे घै घो घौ आ दशे जाणवा. ए प्रमाणे ङ ब विगेरे अक्षरोमां जाणवुं. ष ण ठ आ ठेकाणे ष अक्षरे करीने मूर्धन्य ष दश स्वरवाळो लेवो, पण क वर्गनो ख जाणवो नहीं, केमके ते क वर्गनो ख तो अजिजित् अने श्रवणमां कह्यो बे. ऋ ॠ ऌ आ अक्षरो प्राये करीने नामना आरंजमां आवता नथी, तोपण ऋषिदत्त, ऋषज विगेरे नामोमां आवे बे तो तेमां स्वरचक्र ग्रंथना अजिप्रायथी ऋ ने बदले रि, ॠने बदले री, अने ऌ ने बदले लि होय एवा धारवा. ब्रह्मदत्त, श्रीधर, ध्रुव विगेरे नामोमां ब, श्री अने धु, ए अक्षरोने पहेला बे एम जाणवा. कह्युं बे के—"यदि नाम्नि जवेद्वर्णः संयोगाक्षरलक्षणः। ग्राह्यस्तस्यादिमो

वर्ण इत्युक्तं ब्रह्मयामले ॥ १ ॥" "जो नामनो पहेलो वर्ण संयोगअक्षरवाळो होय तो तेनो पहेलो अक्षर स्वर सहित ग्रहण करवो. एम ब्रह्मयामलमां कह्युं छे." वळी अनुस्वार तथा विसर्ग अक्षरोमां कांइ पण विकार कर्त्ता नथी, तेथी ते दरेक अक्षर साथे लइ शकाय छे. (बाळचंद्र, बिहारीलाल विगेरे नामोमां) ब अक्षरने व जेवो जाणवो, केमके ब अने व ए बे अक्षरोनी ऐक्यता कहेली छे. च वर्गना पांचमा अक्षर ञकारने क वर्गना पांचमा अक्षर ङकार जेवो गणवो. अहीं कोइने शंका थाय के कोइ पण नामना प्रारंभमां ङ ञ के ण आवता नथी, तेथी ते अक्षरो शामाटे अहीं लीधा ? तेनो जवाब ए छे जे पूर्वना आचार्याए ए अक्षरो लीधा छे, माटे अहीं पण तेने गणाव्या छे. वळी आ अक्षरो गणाव्यानुं कांइ पण फळ नथी एम धारवुं नहीं, केमके एकाशी पदोवाळा सर्वतोभद्र नामना चक्रमां आ अक्षरोवडे ग्रहनो वेध थाय छे त्यारे ते ते ग्रहना पादवाळाने शरीर पीडा थाय छे एवुं तेनुं फळ कहेलुं छे. सर्वतोभद्र चक्रना विवरणमां कह्युं छे के—"विध्यन्ते घङछा रौद्रे षणठा हस्तगे व्यधेः । फढधाः प्रागषाढायामाहिबुध्ने तु शाझथाः ॥ १ ॥" "आर्द्रा नक्षत्रमां घ, ङ अने छ ए त्रण अक्षरोनो वेध थाय छे, हस्तमां ष, ण अने ठनो वेध थाय छे, पूर्वाषाढामां फ, ढ अने धनो वेध थाय छे, तथा उत्तराभाद्रपदमां श, झ अने थ ए त्रण अक्षरोनो वेध कहेवाय छे." २३–२४–२५–२६–२७–२८–२९.

हवे अभिजित् नक्षत्रनुं स्वरूप बतावे छे.—

उत्तराषाढमन्त्यांह्रिं चतस्रश्च श्रुतेर्घटीः ।
वदन्त्यभिजितो भोगं वेधलत्ताद्यवेक्षणे ॥ ३० ॥

अर्थ—उत्तराषाढानो छेल्लो एटले चोथो पाद अने श्रवण नक्षत्रनी पहेली चार घडी, आटला काळने अभिजित् नक्षत्र कहे छे. आ नक्षत्र वेध, लत्ता, उत्पात विगेरे जोवामां उपयोगी छे. अहीं उत्तराषाढानो छेल्लो पाद कह्यो छे ते सामान्य रीते पंदर घडीनो होय छे, परंतु जो उत्तराषाढा नक्षत्रनो भोगकाळ साठ घडीथी न्यूयाधिक होय तो ते कुल घडीओना चोथा भागने चोथो पाद गणवो. "वेध, लत्ता विगेरे जोवामां आ अभिजितनो उपयोग छे" एम कहेवाथी अन्य स्थळे तेनो उपयोग करवानो नथी एम अर्थातथी जाणी लेवुं; तथा वेध, लत्ता विगेरे जोती वखते अभिजितनी पंदर घडी (अथवा तेथी न्यूनाधिक घडी (काढी लइने बाकी जेटली घडी रहे तेटली घडीनुं उत्तराषाढा गणी तेना पाद कल्पवा. ए ज रीते श्रवणमांथी पण अभिजितनी चार घडी काढी बाकी रहेली घडीओनुं श्रवण गणी तेना पाद कल्पवा. ३०.

हवे अठ्यावीश नक्षत्रोना स्वामी कहे छे—

नेशास्त्वश्वि १ यमा २ ग्नयः ३ कमलजू ४ श्चन्द्रो ५ऽथ रुद्रोऽदिति ७-जीवोऽहिः ९ पितरो १० नगो ११ऽर्यम १२ रवी १३ त्वष्टा १४ समीर १५ स्तथा॥ शक्राग्नी १६ अथ मित्र १७ इन्द्र १८ निर्ऋती १९वारीणि २० विश्वे २१ विधि२२-वैकुंठो २३ वसवो २४ऽम्बुपो २५ऽजचरणो २६ऽहिर्बुध्न २७ पूषाभिधौ २८ ॥३१॥

अर्थ—नीचेना कोष्टक प्रमाणे नक्षत्रोना स्वामी जाणवा.

नक्षत्र स्वामी	नक्षत्र स्वामी.
१ अश्विनी—अश्विनोदस्र.	२ भरणी—यम.
३ कृत्तिका—अग्नि.	४ रोहिणी—कमलजू (ब्रह्मा).
५ मृगशिर—चंद्र.	६ आर्द्रा—रुद्र (शंकर).
७ पुनर्वसु—अदिति (देवोनी माता).	८ पुष्य—जीव (गुरु—बृहस्पति).
९ अश्लेषा—अहि (सर्प).	१० मघा—पितृ.
११ पूर्वाफाल्गुनी—भग (योनि).	१२ उत्तराफाल्गुनी—अर्यमा (सूर्यनो भेद).
१३ हस्त—रवि (सूर्य).	१४ चित्रा—त्वष्टा (विश्वकर्मा).
१५ स्वाति—समीर (वायु).	१६ विशाखा—शक्र (इंद्र) तथा अग्नि.
१७ अनुराधा—मित्र (सूर्यनो भेद).	१८ ज्येष्ठा—इन्द्र.
१९ मूळ—निर्ऋती (राक्षसोनी माता).	२० पूर्वाषाढा—वारि (जळ).
२१ उत्तराषाढा—विश्व नामना तेर देवो.	२२ अभिजित्—विधि (ब्रह्मा).
२३ श्रवण—वैकुंठ (विष्णु).	२४ धनिष्ठा—वसु(वसु नामना आठ देवो).
२५ शतभिषक्—अंबुप (वरुण).	२६ पूर्वाभाद्रपद—अजचरण(रुद्रनो भेद).
२७ उत्तराभाद्रपद—अहिर्बुध्न (सूर्यविशेष).	२८ रेवती—पूषा (सूर्यनो भेद).

समजुती—अश्विन तथा उदस्र ए बे देव छे. विशाखा नक्षत्रना प्रथम अर्धा भागमां शक्र तथा बीजा अर्धा भागमां अग्नि देवता छे, तेथी आ नक्षत्र द्विदैवत (बे देवता-वाळुं) एवा नामथी तथा मिश्र नामथी ओळखाय छे, मूळ नक्षत्रनो स्वामी नैर्ऋती कह्यो छे, ते नैर्ऋती राक्षसोनी माता छे तेथी राक्षसोने पण ते नक्षत्रना स्वामी जाणवा, अने तेथी करीने ज मूळ ए रक्षोनक्षत्र एटले राक्षसनुं नक्षत्र एवा नामथी ओळखाय छे. नक्षत्रोना स्वामी कहेवानुं फळ ए छे जे ते ते देवना नामथी ते ते नक्षत्रोनो व्यवहार करवामां आवे छे, तेथी तेमना स्वामी कह्या छे. ३१.

हवे अठ्यावीश नक्षत्रोना ताराउनी संख्या कहे छे.—

त्रित्र्यंगभूतजगदिन्दुकृतत्रितर्के-
ष्वक्षिद्विपञ्चकुकुवेदयुगाग्निरुद्रैः ।
वेदाब्धिरामगुणवेदशतद्विकद्वि-
दन्तैश्च तत्समतिथिर्न शुभा भतारैः ॥ ३२ ॥

अर्थ—अश्विनी नक्षत्रना त्रण तारा छे १, भरणीना त्रण तारा छे २, ए प्रमाणे अनुक्रमे अंग एटले छ ३, भूत–पांच ४, जगत्–त्रण ५, इंदु–एक ६, कृत–त्रण ७, त्रण ८, तर्क–छ ९, इषु–पांच १०, अक्षि–बे ११, बे १२, पांच १३, कु–एक १४, कु–एक १५, वेद–चार १६, युग–चार १७, अग्नि–त्रण १८, रुद्र–अग्यार १९, वेद–चार २०, अब्धि–चार २१, राम–त्रण २२, गुण–त्रण २३, वेद–चार २४, शत–सो २५, बे २६, बे २७, तथा रेवती (२८) ना दंत–बत्रीश ताराउ छे. आ प्रमाणे अनुक्रमे २८ नक्षत्रोना तारानी संख्या जाणवी. अहीं तारानी संख्या कहेवानुं प्रयोजन ए छे जे आ ताराउनी संख्यानी समान तिथि अशुभ छे. एटले के अश्विनी नक्षत्रना त्रण तारा छे तेथी त्रीजने दिवसे अश्विनी नक्षत्र होय तो ते दिवसे शुभ कार्य करातुं नथी. ए रीते भरणी विगेरेमां पण तारानी संख्या प्रमाणेनी तिथि शुभ कार्यमां वर्जवानी कही छे. शतभिषक् नक्षत्रना सो ताराउ कह्या छे, तेमां सोनी साथे पंदरे भाग लेतां बाकी दश रहे छे, माटे दशमने दिवसे शतभिषक् नक्षत्र होय तो ते दिवस शुभ कार्यमां तजवा योग्य छे. ए ज रीते रेवतीना बत्रीश तारा होवाथी पंदरे भाग लेतां बे वधे छे, माटे द्वितीया युक्त रेवती तजवा योग्य छे. लल्ल कहे छे के—"दग्धा तद्दिननक्षत्रतारातुल्या तिथिर्भवेत्" "ते दिवसना नक्षत्रना ताराने तुल्य–समान एवी तिथि दग्ध तिथि कहेवाय छे." आ प्रमाणे सामान्य वचन कहीने ते ज लल्ल आ प्रमाणे विशेष कहे छे के—"तारासमैरहोभिर्मासैरब्दैश्च धिष्ण्यफलपाकः" "ताराने तुल्य एवा दिवस, मास अने वर्षे करीने नक्षत्रनुं फळ परिपक्क थाय." ३२.

नक्षत्रोनी ज चर, ध्रुव विगेरे बीजी संज्ञा कहे छे.—

चरमाद्युश्चलं स्वातिरादित्यं श्रवणत्रयम् ।
लघु क्षिप्रं च हस्तोऽश्विन्यभिजित्पुष्य एव च ॥ ३३ ॥
मृदु मैत्रं मृगश्चित्रानुराधा चैव रेवती ।
ध्रुवं स्थिरं च वैरंचमुत्तरात्रितयान्वितम् ॥ ३४ ॥

---

१ तिथि पंदर छे माटे.

दारुणं तीक्ष्णमश्लेषा मूलमार्द्रा महेन्द्रजम् ।
क्रूरमुग्रं च भरणी तिस्रः पूर्वा मघान्विताः ॥ ३५ ॥
मिश्रं साधारणं च द्वे विशाखाकृत्तिकाभिधे ।
ईदृङ्नाम्नोचिते धिष्ण्ये निर्मितं कर्म शर्मणे ॥ ३६ ॥

अर्थ—स्वाति, पुनर्वसु अने श्रवणादि त्रण एटले श्रवण, धनिष्ठा अने शतभिषक् ए पांच नक्षत्रो चर तथा चल कहेवाय छे. हस्त, अश्विनी, अभिजित् अने पुष्य ए चार नक्षत्रो लघु तथा क्षिप्र कहेवाय छे. मृगशिर, चित्रा, अनुराधा अने रेवती ए चार नक्षत्रो मृदु तथा मैत्र कहेवाय छे. रोहिणी, त्रण उत्तरा एटले उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा अने उत्तराभाद्रपद ए चार नक्षत्रो ध्रुव अने स्थिर कहेवाय छे. अश्लेषा, मूळ, आर्द्रा अने ज्येष्ठा ए चार दारुण तथा तीक्ष्ण कहेवाय छे. भरणी, मघा, त्रण पूर्वा एटले पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढा अने पूर्वाभाद्रपद ए पांच नक्षत्रो क्रूर तथा उग्र कहेवाय छे. तथा विशाखा अने कृत्तिका ए बे नक्षत्रो मिश्र तथा साधारण कहेवाय छे. अर्थात् आ बे नक्षत्रो स्थिर, चळ, तीक्ष्ण तथा मृदु विगेरे कांइ पण कहेवातां नथी. आ चर विगेरे नामे करीने उचित एवा नक्षत्रमां करेलुं कार्य सुखने माटे थाय छे, एटले के जेवुं नक्षत्रनुं नाम होय तेवुं कार्य तेवां नक्षत्रोमां करवाथी कार्यनी सिद्धि थाय छे. ३३–३४–३५–३६.

आ चरादिक नक्षत्रोमां केवां कार्य करवा योग्य छे ते ज कहे छे.—

कुर्यात्प्रयाणं लघुभिश्चरैश्च मृदुध्रुवैः शान्तिकमाजिमुग्रैः ।
व्याधिप्रतीकारमुशन्ति तीक्ष्णैर्मिश्रैश्च मिश्रं विधिमामनन्ति ॥३७॥

अर्थ—लघु तथा चर नक्षत्रमां प्रयाण, करीयाणां, अलंकार, कळा, मैथुन, औषध, ज्ञान, विज्ञान, वाहन, उद्यान विगेरे संबंधी कार्य करवामां आवे छे. मृदु तथा ध्रुव नक्षत्रमां शांति, बीज, घर, नगर, अभिषेक, बाग बगीचा, भूषण (अलंकार) वस्त्र, गीत, मंगळ तथा मित्र विगेरे संबंधी कार्य तथा स्थिर कार्य करवामां आवे छे. उग्र नक्षत्रमां लडाइ, वंचना (छेतरवुं ते), विष, घात, बंधन, उच्छेदन, शस्त्र अने अग्नि विगेरे संबंधी कार्य करवामां आवे छे. तीक्ष्ण नक्षत्रमां व्याधिनो प्रतीकार (दवा विगेरे उपाय), भूत, यक्ष, मंत्र अने निधिनी साधना तथा भेदकर्म विगेरे संबंधी कार्य करवामां आवे छे. तथा मिश्र नक्षत्रमां मिश्र कार्य एटले सुवर्ण, रूपुं, तांबुं, लोढुं विगेरे सर्व अग्निकर्म तथा वृषोत्सर्ग अने अग्निनो परिग्रह विगेरे कार्य करवामां आवे छे. दिनशुद्धि ग्रंथमां कह्युं छे के—"लहूचरे सुहारंभो उग्गरिक्खे तवं चरे । धुवे पुरपवेसाई मिस्से संधिक्कियं करे ॥१॥" "लघु अने चर नक्षत्रमां शुभ कार्यनो आरंभ करवो, उग्र नक्षत्रमां तप आचरवो,

ध्रुव नक्षत्रमां पुरप्रवेशादिक करवा, तथा मिश्र नक्षत्रमां संधि विगेरे कार्यो करवां." वळी कह्युं छे के—"तीक्ष्णोग्रभोक्तं विदधीत मिश्रे क्रूरोदितं दारुणभेषु कुर्यात् । तीक्ष्णोग्रमिश्रैर्यदिहोदितं तन्मृदुध्रुवैः क्षिप्रचरैर्न कुर्यात् ॥ १ ॥" "तीक्ष्ण तथा उग्र नक्षत्रमां करवा लायक कार्य मिश्रमां पण करी शकाय छे, क्रूर नक्षत्रमां करवा लायक कार्य दारुण नक्षत्रमां करी शकाय छे, परंतु तीक्ष्ण, उग्र अने मिश्रमां करवा लायक कार्य जे अहीं कह्यां छे, ते कार्य मृदु, ध्रुव, क्षिप्र अने चर नक्षत्रमां करवा लायक नथी." वळी कह्युं छे के—"प्रायः शान्ते कार्ये न योजयेत् कृत्तिकास्त्रिपूर्वाश्च । वारुणरौद्रे च तथा द्विदैवतं याम्यमश्लेषाम् ॥ २ ॥" "प्राये करीने शांत कार्यमां कृत्तिका तथा त्रण पूर्वा एटले पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढा अने पूर्वाभाद्रपद ए चार नक्षत्र लेवा लायक नथी. तथा वारुण एटले शतभिषक्, रौद्र एटले आर्द्रा, द्विदैवत एटले विशाखा, याम्य एटले भरणी अने अश्लेषा आटलां नक्षत्रो पण लेवा लायक नथी." आ चरादिक संज्ञाओ वारने आश्रीने पण ग्रंथांतरमां आ प्रमाणे कही छे.—"चरः १ स्थिर २ स्तथोग्र ३ श्च मिश्रो ४ लघु ५ रथो मृदुः ६ । तीक्ष्णश्च ७ कथिता वाराः प्राच्यैः सूर्यादयः क्रमात् ॥ १ ॥" "पूर्वाचार्योए रविवारथी आरंभीने अनुक्रमे चर, स्थिर, उग्र, मिश्र, लघु, मृदु अने तीक्ष्ण एवी संज्ञाओ कहेली छे. अर्थात् रविवार चर, सोमवार स्थिर, मंगळवार उग्र विगेरे."आ वारनी संज्ञा आपवानुं प्रयोजन ए छे जे चर नक्षत्रमां करवानुं कार्य चर वारमां आवे तो ते विशेष सिद्धिकारक छे. ए रीते एक ज संज्ञावाळा नक्षत्र तथा वारमां ते ते करवा लायक कार्यो विशेष फळदायक थाय छे. २७.

हवे चंद्र संक्रांतिने आश्री सत्यावीश नक्षत्रोनी मुहूर्त्त संख्या कहे छे.—

भेषु क्षणान् पञ्चदशैन्द्ररौद्रवायव्यसार्पान्तकवारुणेषु ।

त्रिघ्नान् विशाखादितिभध्रुवेषु शेषेषु तु त्रिंशतमामनन्ति ॥ २८ ॥

अर्थ—ऐन्द्र (ज्येष्ठा), रौद्र (आर्द्रा), वायव्य (स्वाति), सार्प (अश्लेषा), अंतक (भरणी) तथा वारुण (शतभिषक्) आ छ नक्षत्रो पंदर मुहूर्त्त एटले अर्धा दिवसना भोगवाळां छे अर्थात् पंदर मुहूर्त्तीयां कहेवाय छे. विशाखा, अदिति (पुनर्वसु), ध्रुव एटले रोहिणी, उत्तराषाढा, उत्तराफाल्गुनी अने उत्तराभाद्रपद आ छ नक्षत्रो पीस्तालीश मुहूर्त्त एटले दोढ दिवसना भोगवाळां छे एटले पीस्तालीश मुहूर्त्तीयां छे, बाकीनां एटले अश्विनी, कृत्तिका, मृगशिर, पुष्य, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, अनुराधा, मूळ, पूर्वाषाढा, श्रवण, धनिष्ठा, पूर्वाभाद्रपद अने रेवती आ पंदर नक्षत्रो त्रीश मुहूर्त्तीयां छे एटले एक दिवसना भोगवाळां छे. आ प्रमाणे प्राचीन ज्योतिष् शास्त्रमां नक्षत्रोनी भुक्तिराशि कहेली छे, परंतु हालमां तो सर्वे नक्षत्रो एक एक दिवसना ज भोगवाळां

छे. एटले दरेक नक्षत्र सामान्य रीते साठ घडी जोगवे छे एम श्रीमत् आवश्यक बृहद्वृत्तिना टिप्पनकमां कह्युं छे. आ मुहूर्तीयां नक्षत्रोनी संज्ञानो उपयोग नवा उदय पामेला चंद्रदर्शनमां छे ते विषे रत्नमाळामां कह्युं छे के—"बृहत्सु धान्यं कुरुते समर्घ्यं जघन्यधिष्ण्येऽभ्युदिते महार्घ्यम् । समेषु धिष्ण्येषु समं हिमांशुः शुक्लद्वितीयाभ्युदयी विलोक्यः ॥ १ ॥" "सुदि बीजने दिवसे उदय पामता चंद्रने जोवो. जो ते वखते बृहत् नक्षत्र एटले पीस्तालीश मुहूर्त्तीयुं नक्षत्र होय तो धान्य सस्तुं थाय एम जाणवुं, जघन्य एटले पंदर मुहूर्त्तीयुं नक्षत्र होय तो धान्य मोंघुं थशे एम जाणवुं, अने जो सम एटले त्रीश मुहूर्त्तीयुं नक्षत्र होय तो धान्यना भाव समान रहेशे एम जाणवुं. ए प्रमाणे दरेक मासना भाव जाणवा. कयां कयां नक्षत्रो चंद्रनी आगल, पाछल अने साथे होय छे? ते माटे आ प्रमाणे कह्युं छे के—"युज्यन्ते षड् द्वादश नव चेति निशाकरेण धिष्ण्यानि । प्राग्मध्यपश्चिमार्धैः पौष्णैशाखंडलादीनि ॥ १ ॥" "पौष्ण एटले रेवतीथी आरंभीने छ नक्षत्रो चंद्रनी आगळ चालनारां छे तेथी तेओ पूर्वयोगी कहेवाय छे, तथा ऐश एटले आर्द्राथी आरंभीने बार नक्षत्रो मध्यभागयोगी कहेवाय छे अर्थात् ते नक्षत्रो चंद्रनी साथे रहेनारां छे, तथा आखंडल एटले ज्येष्ठाथी आरंभीने नव नक्षत्रो चंद्रना पश्चिमार्ध योगवाळां छे, एटले के ते नक्षत्रो चंद्रनी पाछल चालनारां छे." आ पूर्वयोगी विगेरे नक्षत्रोनी संज्ञानुं फळ आ प्रमाणे छे.—"पूर्वार्धयोगिषूढस्त्रीणामतिवल्लभो भवेद्भर्ता । पश्चार्धयोगिषु स्त्रीप्रेम मिथो मध्ययोगिषु ॥ २ ॥" "पूर्वार्धयोगी नक्षत्रमां विवाह थया होय तो स्त्रीने भर्ता उपर घणी प्रीति होय, पश्चार्धयोगीमां विवाह थया होय तो पुरुषने स्त्री उपर घणो प्रेम होय, अने मध्ययोगीमां विवाह थया होय तो बन्नेने परस्पर समान प्रीति रहे छे." आ ज प्रमाणे सेवा, मित्राइ विगेरेमां पण फळ जाणवुं. एटले के पूर्वयोगी नक्षत्रमां सेवा (नोकरी विगेरे) तथा मित्राइनो आरंभ थयो होय तो जे मुख्य (शेठ विगेरे) होय ते गौण (नोकर विगेरे) ने अत्यंत प्रेमवाळो रहे छे, पश्चार्धयोगीमां आरंभ थयो होय तो जे गौण होय ते मुख्यने घणी प्रीति भक्तिवाळो थाय छे, तथा मध्ययोगीमां आरंभ कर्यो होय तो परस्पर प्रीति रहे छे.

नक्षत्रोनी आकृति नीचे प्रमाणे होय छे.—

हयवदन १ भग २ क्षुर ३ शकट ४ मृगशिरो ५ मणि ६ गृहे ७ षु ८ चक्राणाम् ९ ।
प्राकार १० शयन ११ पर्यंक १२ हस्त १३ मुक्ता १४ प्रवालानाम् १५ ॥ १ ॥
तोरण १६ मणि १७ कुंडल १८ सिंहविक्रम १९ स्वपन २० गजविलासानाम् २१ ।
शृंगाटक २२ त्रिविक्रम २३ मृदंग २४ वृत्त २५ द्वियमलानाम् ॥ २६ ॥ २ ॥
पर्यंक २७ मुरज २८ सदृशानि भानि कथितानि चाश्विनादीनि ।

अश्विनी नक्षत्रथी आरंभीने अनुक्रमे हयवदनादिक आकारवाळां नक्षत्रो कहेलां छे एटले के अश्विनी नक्षत्र अश्वना मुखना आकारवाळुं छे १, भरणी भग (योनि)ना आकारवाळुं छे २, कृत्तिका क्षुर (अस्त्र)ना आकारवाळुं छे ३. ए प्रमाणे अनुक्रमे शकट (गाडुं) ४, मृगनुं मस्तक ५, मणि ६, घर ७, बाण ८, चक्र ९, किल्लो १०, शयन ११, पर्यंक १२, हाथ १३, मोती १४, परवाळा १५, तोरण १६, मणि १७, कुंडळ १८, सिंहनां पगलां १९, स्वपन (शय्या) २०, हस्तिनी चाल २१, शृंगाटक २२, त्रिविक्रम २३, मृदंग २४, वृत्त (गोळ) २५, द्वियामल २६, पर्यंक २७ अने मुरज (वाजित्र विशेष) २८. आवा आकारवाळां कहेलां छे.

दिशाओनो क्रम आ प्रमाणे छे.—चित्रा अने स्वाति नक्षत्रना उदयना मध्य भागमां पूर्व दिशा छे, ते बन्नेना अस्तना मध्यमां पश्चिम दिशा छे, ध्रुवनो तारो ज्यां होय ते उत्तर दिशा छे अने तेनी सन्मुखनी दिशा दक्षिण छे.

जे जे नक्षत्रो जे जे दिशामां चालनारां छे ते कहे छे.—

दक्षिणमार्गेऽश्लेषा १ ब्राह्मत्रय ४ करयुगे ६ द्विपतिषट्कम् १२।
उत्तरतः पुनरभिजित्त्रय ३ मश्वित्रय ६ यौनयुगलानि ८ ॥ १ ॥
आजपादद्वयं १० स्वात्या ११ दित्ये १२ चेति भ्रमन्ति खे।
मध्यमार्गे शतभिषक् १ पुष्य २ पौष्ण ३ मघा ४ इति ॥ २ ॥

अश्लेषा, रोहिणी, मृगशिर, आर्द्रा, हस्त, चित्रा, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूळ, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा आ बार नक्षत्रो दक्षिण मार्गमां चाले छे. अभिजित्, श्रवण, धनिष्ठा, अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, स्वाति, पुनर्वसु आ बार नक्षत्रो उत्तर मार्गमां चाले छे. तथा शतभिषक्, पुष्य, रेवती, मघा ए चार नक्षत्रो मध्य भागे चालनारां छे (आ सर्व हकीकत व्यवहार प्रकाशमां छे).

चंद्रथी कइ कइ दिशामां नक्षत्रो रहेलां छे ते कहे छे.—

बे फग्गुणि २ भद्दवया ४ सवण ५ धणिट्ठा ६ य रेवइ ७ भरणी ८।
असिणि ९ सयभिस १० साई ११ अभिजु १२ त्तरजोइणो चंदे ॥ १ ॥
पुणवसु १ रोहिणि २ चित्ता ३ मह ४ जिट्ठ ५ णुराह ६ कत्तिअ ७ विसाहा ८।
चंदस्स उभयजोगा अह दक्खिण जोइणो चंदे ॥ २ ॥

पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, श्रवण, धनिष्ठा, रेवती, भरणी, अश्विनी, शतभिषक्, स्वाति अने अभिजित् आ बार नक्षत्रो चंद्रथी उत्तर तरफ रहे छे, एटले आ नक्षत्रोथी दक्षिण तरफ रहीने चंद्र गति करे छे. पुनर्वसु, रोहिणी, चित्रा, मघा, ज्येष्ठा, अनुराधा, कृत्तिका अने विशाखा ए आठ नक्षत्रो चंद्रनी बन्ने

एटले उत्तर तथा दक्षिण बाजुए रहे छे, एटले के कोइ वखत दक्षिण तरफ अने कोइ वखत उत्तर तरफ रहे छे. तथा बाकीनां एटले पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, हस्त, मूळ, अश्लेषा, मृगशिर, आर्द्रा अने पुष्य ए आठ नक्षत्रो चंद्रथी दक्षिणमां रहे छे.

तिथि तथा नक्षत्रनुं संपूर्ण बळ कइ वखते होय छे ते कहे छे.—

तिथिर्धिष्ण्यं च पूर्वार्द्धे बलवद्दुर्बलं ततः ।
नक्षत्रं बलवद्रात्रौ दिने बलवती तिथिः ॥ १ ॥ (व्यवहारसार)

दिवसना पूर्वार्ध भागमां तिथि तथा नक्षत्र संपूर्ण बळवान् होय छे, अने त्यारपछी दुर्बळ थाय छे. रात्रिए केवळ नक्षत्रनुं ज बळ होय छे, अने दिवसे केवळ तिथि ज बळवान् होय छे.

॥ इति नक्षत्रद्वारम् ॥ ३ ॥

॥ अथ योगद्वारम् ॥ ४ ॥

रवि विगेरे वारने विषे तिथि तथा नक्षत्रने आश्रीने शुभ तथा अशुभ योग कहे छे. तेमां प्रथम रविवारे शुभ योग कहे छे.—

भानौ भूत्यै करादित्यपौष्णब्राह्ममृगोत्तराः ।
पुष्यमूलाश्विवासव्यश्चैकाष्टनवमी तिथिः ॥ ३९ ॥

अर्थ—रविवारे हस्त, पुनर्वसु, रेवती, रोहिणी, मृगशिर, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपद, पुष्य, मूळ, अश्विनी अने धनिष्ठा नक्षत्र होय तथा पडवो, आठम अने नोम तिथि होय तो ते शुभ योगने माटे छे. अहीं वार अने तिथि, तथा वार अने नक्षत्र एम बबेनो योग होय तो द्विक शुभ योग जाणवो, अने वार, नक्षत्र तथा तिथि ए त्रणे मळतां होय त्यारे त्रिक शुभ योग जाणवो. ए प्रमाणे अशुभ योगमां पण जाणवुं. ३९.

रविवारे अशुभ योग कहे छे.

न चार्के वारुणं याम्यं विशाखात्रितयं मघा ।
तिथिः षट्सप्तरुद्रा ११ र्क १२ मनु १४ संख्या तथेष्यते ॥ ४० ॥

अर्थ—रविवारे वारुण (शतभिषक्), याम्य (भरणी), विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा अने मघा नक्षत्र होय, तथा छठ, सातम, अग्यारश, बारश अने चौदश, ए तिथिओमांनी कोइ पण तिथि होय तो ते इष्ट्राती नथी, अर्थात् ते दिवसे अशुभ योग जाणवो. अहीं विशाखा त्रितय लख्युं छे तेथी अनुक्रमे उत्पात, मृत्यु अने काण योग थाय छे. एटले के रविवारे विशाखा नक्षत्र होय तो उत्पात योग, अनुराधा होय तो मृत्यु योग

अने ज्येष्ठा होय तो काण योग जाणवो. ए प्रमाणे आगळ पण कुयोगना श्लोकमां ज्यां त्रिक शब्द आवे त्यां पण उत्पात विगेरे त्रण योग अनुक्रमे जाणवा. ४०.

सोमवारे शुभ योग कहे छे.—

सोमे सिद्ध्यै मृगब्राह्ममैत्राण्यार्यमणं करः ।
श्रुतिः शतभिषक् पुष्यस्तिथिस्तु द्विनवाभिधा ॥ ४१ ॥

अर्थ—सोमवारे मृगशिर, ब्राह्म (रोहिणी), मैत्र (अनुराधा), आर्यमण (उत्तराफाल्गुनी), कर (हस्त), श्रुति (श्रवण), शतभिषक् अने पुष्य नक्षत्र होय तथा बीज के नोम तिथि होय तो ते दिवसे शुभ योग जाणवो. ४१.

सोमवारे अशुभ योग कहे छे.—

न चन्द्रे वासवाषाढात्रयार्द्राश्विद्विदैवतम् ।
सिध्यै चित्रा च सप्तम्येकादश्यादित्रयं तथा ॥ ४२ ॥

अर्थ—सोमवारे वासव (धनिष्ठा), पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, अभिजित्, आर्द्रा, अश्विनी अने द्विदैवत (विशाखा) अने चित्रा नक्षत्र होय, तथा सातम, अग्यारश, बारश अने तेरश तिथि होय तो ते दिवसे अशुभ योग जाणवो. अहीं षाढात्रय एटले पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा अने अभिजित् नक्षत्र होय तो अनुक्रमे उत्पात, मृत्यु अने काण योग पण जाणवा. ४२.

मंगळवारे शुभ योग कहे छे.—

भौमेऽश्विपौष्णाहिर्बुध्नमूलराधार्यमाग्निभम् ।
मृगः पुष्यस्तथाश्लेषा जया षष्ठी च सिद्धये ॥ ४३ ॥

अर्थ—मंगळवारे अश्विनी, पौष्ण (रेवती), आहिर्बुध्न (उत्तराभाद्रपद), मूल, राधा (विशाखा), अर्यम (उत्तराफाल्गुनी), अग्निभ (कृत्तिका), मृगशिर, पुष्य अने अश्लेषा नक्षत्र होय तथा जया एटले त्रीज, आठम अने तेरश तथा छठ तिथि होय तो ते सिद्धिने माटे छे, एटले ते दिवसे शुभ योग जाणवो. ४३.

मंगळवारे अशुभ योग कहे छे.—

न भौमे चोत्तराषाढामघार्द्रावासवत्रयम् ।
प्रतिपद्दशमी रुद्रप्रमिता च मता तिथिः ॥ ४४ ॥

अर्थ—मंगळवारे उत्तराषाढा, मघा, आर्द्रा, वासवत्रय एटले धनिष्ठा, शतभिषक् अने पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र होय तथा पडवो, दशम अने अग्यारश तिथि होय तो ते दिवसे अशुभ

योग जाणवो. अहीं पण वासवत्रय एटले धनिष्ठा, शतभिषक् अने पूर्वाभाद्रपद होय तो अनुक्रमे उत्पात, मृत्यु अने काण योग पण जाणवा. ४४.

बुधवारे शुभ योग कहे छे.—

बुधे मैत्रं श्रुतिज्येष्ठापुष्यहस्ताग्निभत्रयम् ।
पूर्वाषाढार्यमर्क्षे च तिथिर्भद्रा च भूतये ॥ ४५ ॥

अर्थ—बुधवारे मैत्र (अनुराधा), श्रवण, ज्येष्ठा, पुष्य, हस्त, अग्निभ (कृत्तिका) विगेरे त्रण एटले कृत्तिका, रोहिणी अने मृगशिर, पूर्वाषाढा तथा अर्यम एटले उत्तराफाल्गुनी आमांनुं कोइ नक्षत्र होय तथा भद्रा एटले बीज, सातम अने बारश एमांनी कोइ तिथि होय तो ते दिवसे शुभ योग जाणवो. ४५.

बुधवारे अशुभ योग कहे छे.—

न बुधे वासवाश्लेषारेवतीत्रयवारुणम् ।
चित्रामूलं तिथिश्चेष्टा जयैकेन्द्रनवांकिता ॥ ४६ ॥

अर्थ—बुधवारे धनिष्ठा, अश्लेषा, रेवती, अश्विनी, भरणी, वारुण (शतभिषक्), चित्रा अने मूळ नक्षत्र होय, तथा जया एटले त्रीज, आठम अने तेरश, तथा पडवो, चौदश अने नोम एमांनी कोइ पण तिथि होय तो ते दिवसे अशुभ योग जाणवो. अहीं पण रेवती, अश्विनी अने भरणी होय तो अनुक्रमे उत्पात, मृत्यु अने काण योग जाणवा. ४६.

गुरुवारे शुभ योग कहे छे.—

गुरौ पुष्याश्विनादित्यपूर्वा ३ श्लेषाश्च वासवम् ।
पौष्णं स्वातित्रयं सिद्ध्यै पूर्णाश्चैकादशी तथा ॥ ४७ ॥

अर्थ—गुरुवारे पुष्य, अश्विनी, पुनर्वसु, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढा, पूर्वाभाद्रपद, अश्लेषा, वासव (धनिष्ठा), पौष्ण (रेवती), स्वातित्रय एटले स्वाति, विशाखा अने अनुराधा नक्षत्र होय तथा पूर्णा एटले पांचम, दशम अने पूनम तथा अग्यारश होय तो शुभ योग जाणवो. ४७.

गुरुवारे अशुभ योग कहे छे.—

न गुरौ वारुणाग्नेयचतुष्कार्यमणद्वयम् ।
ज्येष्ठा भूत्यै तथा भद्रा तुर्या षष्ठ्यष्टमी तिथिः ॥ ४८ ॥

अर्थ—गुरुवारे वारुण (शतभिषक्), आग्नेयचतुष्क एटले कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिर अने आर्द्रा, अर्यमणद्वय एटले उत्तराफाल्गुनी अने हस्त, तथा ज्येष्ठा आ नक्ष-

त्रोमांथी कोइ एक होय तथा जडा एटले बीज, सातम अने बारश, तथा चोथ, बठ अने आठम आमांनी कोइ तिथि होय तो ते दिवसे अशुज योग जाणवो. अहीं पण रोहिणी, मृगशिर अने आर्द्रा होय तो अनुक्रमे उत्पात, मृत्यु अने काण योग जाणवा, अने कृत्तिका नक्षत्र होय तो यमघंट नामनो योग थाय बे. ४८.

शुक्रवारे शुज योग कहे बे.—

शुक्रे पौष्णाश्विनाषाढा मैत्रं मार्गं श्रुतिद्वयम् ।
यौनादित्ये करो नन्दात्रयोदश्यौ च सिद्धये ॥ ४९ ॥

अर्थ—शुक्रवारे पौष्ण (रेवती), अश्विनी, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, मैत्र (अनुराधा), मार्ग (मृगशिर), श्रवण, धनिष्ठा, पूर्वाफाल्गुनी, पुनर्वसु अने हस्त नक्षत्र होय तथा नंदा एटले पडवो, बठ अने अग्यारश, तथा तेरश तिथि होय तो ते दिवसे शुज योग थाय बे. ४९.

शुक्रवारे अशुज योग कहे बे.—

न शुक्रे जूतये ब्राह्म पुष्यं सार्पं मघाजिजित् ।
ज्येष्ठा च द्वित्रिसप्तम्यो रिक्ताख्यास्तिथयस्तथा ॥ ५० ॥

अर्थ—शुक्रवारे ब्राह्म (रोहिणी), पुष्य, सार्प (अश्लेषा), मघा, अजिजित् अने ज्येष्ठा नक्षत्र होय, तथा बीज, त्रीज, सातम तथा रिक्ता एटले चोथ, नोम अने चौदश होय तो ते दिवसे अशुज योग जाणवो. अहीं पण पुष्य, अश्लेषा अने मघा होय ते दिवसे अनुक्रमे उत्पात, मृत्यु अने काण योग पण थाय बे. ५०.

हवे शनिवारे शुज योग कहे बे.—

शनौ ब्राह्मश्रुतिद्वन्द्वाश्विमरुद्गुरुमित्रजम् ।
मघा शतजिषक् सिद्ध्यै रिक्ताष्टम्यौ तिथी तथा ॥ ५१ ॥

अर्थ—शनिवारे ब्राह्म (रोहिणी), श्रुतिद्वंद्व एटले श्रवण अने धनिष्ठा, अश्विनी, मरुत् (स्वाति), गुरुज (पुष्य), मित्रज (अनुराधा), मघा अने शतजिषक् नक्षत्र होय तथा रिक्ता एटले चोथ, नोम अने चौदश तथा अष्टमी तिथि होय तो ते दिवसे शुज योग थाय बे. ५१.

हवे बेवट शनिवारे अशुज योग कहे बे.—

न शनौ रेवती सिद्ध्यै वैश्वमार्यमणत्रयम् ।
पूर्वा ३ मृगश्च पूर्णाख्या तिथिः षष्ठी च सप्तमी ॥ ५२ ॥

अर्थ—शनिवारे रेवती, वैश्व (उत्तराषाढा), आर्यमणत्रय एटले उत्तराफाल्गुनी,

हस्त अने चित्रा, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढा, पूर्वाभाद्रपद अने मृगशिर नक्षत्र होय तथा पूर्णा एटले पांचम, दशम अने पूनम, तथा छठ अने सातम होय तो ते दिवसे अशुभ योग थाय छे. अहीं पण उत्तराफाल्गुनी, हस्त अने चित्रा होय तो उत्पात, मृत्यु अने काण योग पण अनुक्रमे थाय छे. ५२.

अहीं विशेष एटलो छे के सुयोगना सात श्लोकोमां जे पहेलां पहेलां नक्षत्र आप्यां छे ते नक्षत्र जो ते ज वारे होय तो अमृतसिद्धि योग थाय छे. ते विषे कह्युं छे के.—

"हस्त १ सौम्या २ श्विनी ३ मैत्र ४ पुष्य ५ पौष्ण ६ विरंचितैः ७ ।
भवत्यमृतसिद्ध्याख्यो योगः सूर्यादिवारगैः ॥ १ ॥"

"रवि आदि वारने विषे अनुक्रमे हस्त, सौम्य (मृगशिर), अश्विनी, मैत्र (अनुराधा), पुष्य, रेवती अने विरंचित (रोहिणी) होय तो ते दिवसे अमृतसिद्धि योग थाय छे. एटले के रविवारे हस्त नक्षत्र होय, सोमवारे मृगशिर होय, मंगळवारे अश्विनी, बुधवारे अनुराधा, गुरुवारे पुष्य, शुक्रवारे रेवती अने शनिवारे रोहिणी नक्षत्र होय तो ते दिवसे अमृतसिद्धि योग थाय छे." आ योगने विषे कार्य करवाथी अवश्य ते कार्यनी सिद्धि थाय छे, एम रत्नमाळाना भाष्यमां कह्युं छे.

श्री हर्षप्रकाशमां पण कह्युं छे के—

"भद्रासंवर्त्तकाद्यैश्चेत्सर्वदुष्टेऽपि वासरे ।
योगोऽस्त्यमृतसिद्ध्याख्यः सर्वदोषक्षयस्तदा ॥ १ ॥"

"भद्रा अने संवर्त्तक विगेरे अशुभ योगोवडे दूषण पाम्या छतां पण ते दिवसे जो अमृतसिद्धि योग होय तो सर्व दूषणनो क्षय थाय छे."

"शुक्रवारे जो रेवती नक्षत्र होय तो ते दिवसे शत्रु योग थाय छे, अने उत्तराभाद्रपद होय तो अमृतसिद्धि योग थाय छे," एम लोकश्री ग्रंथमां कह्युं छे.

कोइ आचार्य कहे छे के—"शरतिथितः सप्ततिथिष्वेते सप्तापि मृत्युदाः क्रमशः" । "पांचमथी सात तिथि सुधी अनुक्रमे आ साते अमृतसिद्धि योगोवाळा वारो मृत्यु देनारा छे. एटले के रविवारे अमृतसिद्धि योग होय, पण ते दिवसे पांचम होय, सोमवारे अमृतसिद्धि योग होय, पण छठ होय, मंगळवारे सातम, बुधवारे आठम, गुरुवारे नोम, शुक्रवारे दशम अने शनिवारे अमृतसिद्धि योग सहित अग्यारश होय तोपण ते मृत्युदायी जाणवा."

वळी कह्युं छे के—

"विशाखादिचतुष्केषु रविवारादिसप्तके ।
उत्पातमृत्युकाणाश्च सिद्धियोगाश्च कीर्तिताः ॥ १ ॥"

"विशाखादिक चार चार नक्षत्रोवडे रविवारादिक सात वारने विषे उत्पात, मृत्यु, काण अने सिद्धि योग कह्या छे. नीचेनुं कोष्टक जुओ.—

	रवि	सोम	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि.
उत्पात	विशाखा	पूर्वाषाढा	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उत्तराफाल्गुनी
मृत्यु	अनुराधा	उत्तराषाढा	शतभिषक्	अश्विनी	मृगशिर	अश्लेषा	हस्त
काण	ज्येष्ठा	अभिजित्	पूर्वाभाद्रपद	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा
सिद्धि	मूळ	श्रवण	उत्तराभाद्रपद	कृत्तिका	पुनर्वसु	पूर्वाफाल्गुनी	स्वाति

अहीं उत्पात, मृत्यु अने काणने ठेकाणे अनुक्रमे प्रवास, मरण अने व्याधि एवां नाम पण पूर्णभद्रे कहेलां छे.

यमघंट योग आ प्रमाणे थाय छे.—

"मघा १ विशाखा २ र्द्रा ३ मूल ४ कृत्तिका ५ रोहिणी ६ करैः ७ ।
रव्यादिवारसंयुक्तैर्यमघंटो भृशोऽशुभः ॥ १ ॥

"रविवारे मघा, सोमवारे विशाखा, मंगळवारे आर्द्रा, बुधवारे मूळ, गुरुवारे कृत्तिका, शुक्रवारे रोहिणी अने शनिवारे हस्त नक्षत्र होय तो ते दिवसे यमघंट नामे योग थाय छे. ते घणो ज अशुभ फळदायक छे." अहीं पाकश्री ग्रंथकार हस्त नक्षत्रने ठेकाणे पूर्वाषाढा तथा उत्तराषाढाने कहे छे.

वज्रमुशळ योग आ प्रमाणे थाय छे.—

"भर १ चित्तु २ त्तरसाढा ३ धणि ४ उत्तरफग्गु ५ जिठ ६ रेवइआ ७ ।
सूराइजम्मरिक्का एएहिं वज्जमुसल पुणो ॥ १ ॥"

"रविवारे भरणी, सोमवारे चित्रा, मंगळवारे उत्तराषाढा, बुधवारे धनिष्ठा, गुरुवारे उत्तराफाल्गुनी, शुक्रवारे ज्येष्ठा अने शनिवारे रेवती नक्षत्र होय तो वज्रमुशळ नामे अशुभ योग थाय छे. आ रवि विगेरे ग्रहोनां जन्मनक्षत्र छे. अहीं भरणीने ठेकाणे लोकश्री ग्रंथमां अश्विनी कहेल छे.

अरि (शत्रु) योग आ प्रमाणे थाय छे.—

"भर १ पुस्सु २ त्तरसाढा ३ अद्द ४ विसाहा ५ य रेवई ६ सभिसा ७ ।
अक्काइआणएहिं अरिजोगा गुरुविणिद्दिठ्ठा ॥ १ ॥"

"रविवारे भरणी, सोमवारे पुष्य, मंगळवारे उत्तराषाढा, बुधवारे आर्द्रा, गुरुवारे विशाखा, शुक्रवारे रेवती अने शनिवारे शतभिषक् नक्षत्र होय तो ते अरि योग कहेवाय छे, एम गुरुजने बताव्युं छे." प्रीतिना कार्यमां आ योग वर्जवामां आवे छे.

अस्थिर (चर) योग आ प्रमाणे थाय छे.—

"मह १ मूलु २ त्तरसाढा ३ अद्द ४ विसाहा य ५ रोहिणी ६ सभिसा ७ ।
सुक्काइआण कमसो जहाकमं अत्थिरो जोगो ॥ १ ॥"

"शुक्रवारे मघा, शनिवारे मूळ, रविवारे उत्तराषाढा, सोमवारे आर्द्रा, मंगळवारे विशाखा, बुधवारे रोहिणी अने गुरुवारे शतभिषक् होय तो ते अस्थिर (चर) योग कहेवाय छे." स्थिर कार्योमां आ योग वर्जवा योग्य छे.

क्रकच (कर्क) योग आ प्रमाणे थाय छे.—

"अक्काइसु कक्को बारसी उ पच्छक्कमेण जा छट्ठी ।
कक्कय नामा जोगो "

रविवारादिकमां बारशथी पश्चानुपूर्वीए छठ सुधी आववुं एटले क्रकच (कर्क) योग थाय छे. अर्थात् रविवारे बारश, सोमवारे अग्यारश, मंगळवारे दशम, बुधवारे नोम, गुरुवारे आठम, शुक्रवारे सातम अने शनिवारे छठ होय तो क्रकच (कर्क) योग थाय छे.

बीजी रीते आ प्रमाणे पण छे.—

"यत्र संख्या युतौ वारतिथ्योर्जातास्त्रयोदश ।
ज्ञेयः क्रकचयोगोऽयं हेयश्च शुभकर्मणि ॥ १ ॥"

"रविवारादिक वारनी अने तिथिनी संख्या भेगी करवाथी ज्यारे तेरनी संख्या थाय त्यारे तेने क्रकच योग जाणवो. आ योग शुभ कार्यमां वर्ज्य छे. जेमके रविवारनी एक संख्या तेमां बार नाखवाथी तेरनी संख्या थाय छे, माटे रविवारे बारश होय त्यारे क्रकच योग थाय. ए प्रमाणे गणवाथी पण उपरनी गाथा प्रमाणे मळतुं आवे छे."

संवर्तक योग आ प्रमाणे.—

"पडिवय तिजु बुहेणं छट्ठी जीवेण बिजु सुक्केण ।
सत्तमि सणिसूरेसुं एए संवट्टया जोगा ॥ १ ॥"

"बुधवारे पडवो अथवा त्रीज होय, गुरुवारे छठ होय, शुक्रवारे बीज होय तथा शनि अने रविए सातम होय तो ते संवर्तक योग कहेवाय छे." हर्षप्रकाश विगेरे ग्रंथमां "बुधवारे मात्र पडवो ज होय अने सातमने दिवसे रविवार ज होय तो संवर्तक योग थाय," एम कह्युं छे. बाकी सर्व उपर प्रमाणे.

प्रथमथी आरंभीने अहीं सुधीना जे जे योगो कह्या तेना पांच वर्ग थइ शके छे, ते आ प्रमाणे—विरुद्ध योग १, सामान्य योग २, सुयोग ३, सिद्धि योग ४ अने अमृत-सिद्धि योग. आ योगोमां कार्य करवाथी तेनुं फळ अनुक्रमे आ प्रमाणे जाणवुं.—

अत्यंत असिद्धि १, दैवयोगे सिद्धि २, विलंबे सिद्धि ३, इच्छित सिद्धि ४ तथा इच्छितथी अधिक सिद्धि ५. आ प्रमाणे त्रिविक्रमे कह्युं छे.

फरीथी ग्रंथकार बीजा योगो कहे छे. तेमां प्रथम कुमार योग कहे छे.

योगः कुमारनामा शुभः कुजज्ञेन्दुशुक्रवारेषु ।
अश्वाद्यैर्द्व्यन्तरितैर्नन्दादशपञ्चमीतिथिषु ॥ ५३ ॥

अर्थ—मंगळ, बुध, सोम अने शुक्र, एमांना कोइ वारे अश्विनीथी आरंभीने बे आंतरावाळां नक्षत्र एटले अश्विनी, रोहिणी, पुनर्वसु, मघा, हस्त, विशाखा, मूळ, श्रवण अने पूर्वाभाद्रपद, एमांनुं कोइ एक नक्षत्र होय, तथा नंदा एटले पडवो, छठ अने अग्यारश, तथा पांचम अने दशम, एमांनी कोइ पण तिथि होय तो कुमार नामनो शुभ योग थाय छे. आ योग स्थिर कार्यमां एटले मैत्री, दीक्षा, व्रत, विद्या अने शिल्पनुं ग्रहण करवुं विगेरे कार्यमां तथा गृहप्रवेशादिकमां विशेषे करीने शुभ छे; परंतु ते वखते विरुद्ध योग होवो न जोइए. अर्थात् मंगळवारे दशम अने पूर्वाभाद्रपद, सोमवारे अग्यारश अने विशाखा, बुधवारे पडवो अने मूळ अथवा अश्विनी तथा शुक्रवारे रोहिणी होय तो ते दिवसे कुमार योग पण शुभकारक नथी, कारण जे ते ते दिवसोमां कर्क, संवर्तक, काण अने यमघंट योगनी उत्पत्ति होय छे. आ प्रमाणे श्रीहरिभद्रसूरिकृत लग्नशुद्धि प्रकरणमां कहेलुं छे. ५३.

हवे राज योग कहे छे.—

राजयोगो भरण्याद्यैर्द्व्यन्तरैर्भैः शुभावहः ।
भद्रातृतीयाराकासु कुजज्ञभृगुभानुषु ॥ ५४ ॥

अर्थ—मंगळ, बुध, शुक्र अने रवि, आमांना कोइ वारे तथा भद्रा एटले बीज, सातम अने बारश तथा त्रीज अने पूनम, एमांनी कोइ पण तिथिए भरणी विगेरे बे आंतरावाळां नक्षत्र एटले भरणी, मृगशिर, पुष्य, पूर्वाफाल्गुनी, चित्रा, अनुराधा, पूर्वाषाढा, धनिष्ठा अने उत्तराभाद्रपद, एमांनुं कोइ पण नक्षत्र होय तो शुभकारक राज योग थाय छे. आ योग मांगलिक कार्यमां, धर्मकार्यमां, पौष्टिकमां, अलंकार पहेरवामां तथा क्षेत्रना आरंभादिक कार्यमां विशेषे करीने श्रेष्ठ छे. "आ योग तरुण योग नामे पण कहेवाय छे." एम पूर्णभद्रे कह्युं छे. आ योग पण विरुद्ध योग न होय त्यारे लेवो एम संभवे छे, तेथी रविवारे सातम अथवा बारश अने भरणी होय, मंगळवारे धनिष्ठा होय, बुधवारे भरणी के धनिष्ठा होय अने शुक्रवारे बीज के सातम तथा पुष्य होय, ते दिवसे राज योग होय तोपण इष्ट (शुभकारक) नथी, केमके ते ते दिवसोमां संवर्तक, कर्क, वज्रमुशळ, उत्पात तथा काण विगेरे कुयोगनी उत्पत्ति थाय छे. ५४.

हवे स्थिर (स्थविर) योग कहे छे.—

स्थिरयोगः शुभो रोगोच्छेदादौ शनिजीवयोः ।
त्रयोदश्यष्टरिक्तासु द्व्यन्तरैः कृत्तिकादिभिः ॥ ५५ ॥

अर्थ—गुरुवारे अथवा शनिवारे तेरश, आठम के रिक्ता एटले चोथ, नोम अने चौदश होय, तथा कृत्तिकादिक द्व्यंतर नक्षत्र एटले कृत्तिका, आर्द्रा, अश्लेषा, उत्तराफाल्गुनी, स्वाति, ज्येष्ठा, उत्तराषाढा, शततारका के रेवती होय तो ते रोगादिकना नाशमां शुभकारक एवो स्थिर योग थाय छे. आ योगनुं फळ पाकश्री ग्रंथमां आ प्रमाणे कह्युं छे.—

"अणसण खित्त वाहि रिणं रिउ रण दिव्वं जलासए बंधो ।
कायव्वो थिरजोगे जस्स य करणं पुणो नत्थि ॥ १ ॥"

"जे कार्यनुं फरीथी करवापणुं नथी एवां कार्य जेवां के अनशन, क्षेत्रशुद्धि, व्याधिहरण, ऋण (देणुं) देवुं, शत्रुनो वध, लडाइ, दिव्य करवुं, जळाशय बंधाववुं, ए विगेरे (मंत्रभेद, स्नेहभेद विगेरे) कार्यो स्थिर योगमां कराय छे." ५५.

हवे यमल तथा त्रिपुष्कर योग कहे छे.—

यमलाख्यो द्विपादर्क्षे त्रिपादर्क्षे त्रिपुष्करः ।
जीवारशनिवारेषु योगो भद्रातिथौ स्मृतः ॥ ५६ ॥

अर्थ—गुरु[१], मंगळ अने शनिवारे बीज, सातम के बारश होय अने जो द्विपाद नक्षत्र एटले मृगशिर, चित्रा अने धनिष्ठा होय तो ते दिवसे यमल नामे योग कहेवाय छे. तथा ते ज तिथि वारने विषे त्रिपाद नक्षत्र एटले कृत्तिका, पुनर्वसु, उत्तराफाल्गुनी, विशाखा, उत्तराषाढा अने पूर्वाभाद्रपद होय तो त्रिपुष्कर नामनो योग कहेवाय छे. ५६.

हवे पंचक कहे छे.—

पञ्चके वासवान्त्यार्धात्तृणकाष्ठगृहोद्यमान् ।
याम्यदिग्गमनं शय्यां मृतकार्यं च वर्जयेत् ॥ ५७ ॥

अर्थ—धनिष्ठाना पश्चार्धथी एटले बे पाया गया पछी रेवतीना अंत सुधी पंचक कहेवाय छे. तेमां तृण, काष्ठ, गृहारंभ, दक्षिण दिशामां गमन, नवी शय्या (पलंग विगेरे) तथा प्रेत कार्य वर्ज्य कहेलां छे. ते विषे व्यवहारसारमां कह्युं छे के—

"धनिष्ठा धननाशाय प्राणघ्नी शततारका ।
पूर्वायां दंडयेद्राजा उत्तरा मरणं ध्रुवम् ॥ १ ॥
अग्निदाहश्च रेवत्यामित्येतत्पंचके फलम् ।"

---

१ नारचंद्रमां गुरुवारने स्थाने रविवार कहेल छे.

धनिष्ठामां कार्य करवाथी धननो नाश थाय, शततारकामां करवाथी प्राणनो नाश थाय, पूर्वाभाद्रपदमां करवाथी राजदंड थाय, उत्तराभाद्रपदमां करवाथी निश्चे मरण थाय, अने रेवतीमां करवाथी अग्निदाह थाय. ए प्रमाणे पंचकनुं फळ जाणवुं. उपर मृतकार्य करवानो निषेध कर्यो छे, परंतु कोइ अकस्मात् पंचकमां ज मरण पामे तो ते मृतकना हाथ पग छेदीने बांधवा एम लल्ले कह्युं छे, पण गरुड पुराणमां तेने दहन करवानो विधि आ प्रमाणे कह्यो छे.—दर्भनां चार पूतळां करीने शबनी साथे राखवां, पछी ते शबनी साथे ज पूतळां पण बाळवां. एम न करे तो पुत्र अथवा बीजा सगोत्रीनो नाश थाय. ५७.

पंचक विषे मतांतर कहे छे.—

पञ्चकं श्रवणादीनि पञ्च ऋक्षाणि निर्दिशेत् ।
केचित्पुनर्धनिष्ठादिपञ्चकं पञ्चकं विदुः ॥ ५८ ॥

अर्थ—श्रवणथी आरंभीने पांच नक्षत्र सुधी पंचक कहेवुं. तथा कोइक आचार्य धनिष्ठाथी आरंभीने पांच नक्षत्रने पंचक कहे छे. (सर्वेना मतमां रेवतीने अंते पंचक समाप्त थाय छे.) नारचंद्र ग्रंथमां श्रवण अने रेवतीमां सर्व दिशाए गमन करवानी अनुमति आपीने दक्षिण दिशामां पण गमन करवानुं स्वीकार्युं छे. ते आ प्रमाणे.—

"सर्वदिग्गमने हस्तः श्रवणं रेवतीद्वयम् ।
मृगः पुष्यश्च सिद्ध्यै स्युः कालेषु निखिलेष्वपि ॥ १ ॥"

"हस्त, श्रवण, रेवतीद्वय एटले रेवती अने अश्विनी, मृगशिर तथा पुष्य आटलां नक्षत्रो सर्व काळे सर्व दिशामां गमन करवाने लायक छे अर्थात् सिद्धि आपनारां छे."५८.

यमल, त्रिपुष्कर अने पंचक, एवां नामो सार्थक छे एटले के नाम प्रमाणे फळदायक छे. ते कहे छे.—

हानिवृद्ध्यादिकं सर्वं योगे स्याद्यमले द्विशः ।
त्रिशस्त्रिपुष्कराख्ये तु पञ्चशः पञ्चकेऽपि च ॥ ५९ ॥

अर्थ—यमल योगमां करेलुं हानि वृद्धिवाळुं सर्व कार्य बमणुं थाय छे, त्रिपुष्कर योगमां करवाथी त्रण गणुं थाय छे अने पंचकमां करवाथी पांच गणुं थाय छे, तेथी आ योगोमां इष्ट कार्य ज करवा लायक छे, अनिष्ट कार्य करवा लायक नथी ए आनो अभिप्राय छे. ५९.

हवे गंडांत योग कहे छे.—

गंडान्तं च त्यजेत्त्रेधा लग्न ४-८-१२ तिथ्यु ५-१०-१५-डुषु ९-८-२७ त्रिषु ।
प्रत्येकं त्रिभागांतरैकद्विघटीमितम् ॥ ६० ॥

अर्थ—लग्न गंडांत, तिथि गंडांत अने नक्षत्र गंडांत ए त्रण प्रकारनो गंडांत योग सर्व शुभ कार्यमां तजवा योग्य छे. ते त्रणे प्रकारनो गंडांत पोतपोताने त्रीजे त्रीजे भागे अनुक्रमे अर्ध घडी, एक घडी अने बे घडीना प्रमाणवाळो छे. एटले के लग्न (राशि) बार छे तेने त्रीजे त्रीजे भागे चोथुं कर्क, आठमुं वृश्चिक अने बारमुं लग्न मीन आवे. तेमां कर्कनी छेल्ली पंदर पळ तथा सिंह लग्ननी प्रथमनी पंदर पळ ए बन्ने मळी त्रीश पळ एटले अर्ध घडी गंडांत योग थाय छे. ए रीते वृश्चिकनी छेल्ली पंदर अने धननी पहेली पंदर पळ तथा मीननी छेल्ली पंदर अने मेषनी पहेली पंदर पळ गंडांत योग जाणवो. आ लग्न गंडांत कहेवाय छे. तिथि पंदर छे, तेनो त्रीजो त्रीजो भाग गणतां पांचम, दशम अने पूनम आवे छे. तेमां पांचमनी छेल्ली अर्ध घडी अने छठनी पहेली अर्ध घडी मळीने एक घडीनो गंडांत योग जाणवो. ए रीते दशमनी छेल्ली अर्ध घडी अने अग्यारशनी पहेली अर्ध घडी तथा पूनमनी छेल्ली अर्ध घडी अने पडवानी पहेली अर्ध घडी गंडांत योग जाणवो. आ तिथि गंडांत कहेवाय छे. नक्षत्र सत्यावीश छे, तेनो त्रीजो त्रीजो भाग गणतां नवमुं अश्लेषा, अढारमुं ज्येष्ठा अने सत्यावीशमुं रेवती छे, तेथी अश्लेषानी छेल्ली एक घडी अने मघानी पहेली एक घडीने गंडांत योग जाणवो. ए ज रीते ज्येष्ठानी छेल्ली घडी अने मूळनी पहेली घडी तथा रेवतीनी छेल्ली घडी अने अश्विनीनी पहेली घडी एम बबे घडीनो गंडांत योग जाणवो. आ नक्षत्र गंडांत योग कहेवाय छे. जन्म, गर्भाधान, यात्रा, विवाह, व्रत, गृहनो आरंभ तथा प्रवेश, अने क्षौर विगेरे सर्व कार्यमां आ योग अशुभ कहेलो छे. ६०.

"आ त्रणे गंडांत उपर कह्याथी बमणा बमणा प्रमाणवाळा छे" एम श्रीपति कहे छे. सारंग कहे छे के—"नक्षत्र गंडांत आठ घडीनो छे." केशवार्क कहे छे के—"नक्षत्र गंडांतनी ज रीते विष्कंभादिक सत्यावीश योगने मध्ये रहेलो गंडांत पण पांच पांच घडीनो छे."

गंडांत योगनुं फळ नीचे प्रमाणे कह्युं छे.—

"नक्षत्रो मातरं हन्ति तिथिजः पितरं तथा ।
लग्नस्थो बालकं हन्ति गंडान्तो बालदूषकः ॥ १ ॥"

"बाळकनो जन्म नक्षत्र गंडांतमां थयो होय तो ते माताने हणे छे, तिथि गंडांतमां थयो होय तो पिताने हणे छे, अने लग्न गंडांतमां थयो होय तो ते बाळकनो ज हणनार थाय छे."

"जातो न जीवति नरो मातुरपथ्यो भवेत्स्वकुलहन्ता ।
यदि जीवति गंडान्ते बहुगजतुरगो भवेद्भूपः ॥ १ ॥"

"गंडांतमां जन्मेलो मनुष्य जीवतो नथी अने माताने अहितकारक तथा पोताना

कुळनो नाश करनार थाय छे, परंतु जो कदाच ते बाळक जीवे तो घणा हाथी घोडा-वाळो राजा थाय छे."

"नट्ठं न लब्भइ इत्थ अहिदट्ठो न जीवई।
जाउं वि मरई पायं पत्थिउं न निअत्तई॥ १॥"

"गंडांतमां खोवायेली वस्तु पाछी आवती नथी, सर्पदंश थयो होय तो ते मनुष्य जीवे नहीं, जन्मेलुं बाळक पण प्राये मरण पामे छे, तथा तेमां प्रयाण कर्युं होय तो ते पण प्राये पाछो आवतो नथी."

विवाह वृंदावनमां संधि नामनो पण दोष कह्यो छे. ते आ प्रमाणे.—

"नक्षत्रयोगतिथिसंधिषु नाडिकैका तिथ्यष्टविंशतिपलैः सहितोभयत्र"।

"सर्वे नक्षत्र, योग अने तिथिनी संधिने विषे बन्ने बाजु अनुक्रमे एक घडी उपर पंदर, आठ अने वीश पळ सहित एक एक घडी संधिदोष कहेवाय छे एटले के नक्षत्रोनी संधिमां पहेला नक्षत्रना अंतनी एक घडी अने पंदर पळ तथा पछीना नक्षत्रनी आरंभनी एक घडी अने पंदर पळ मळी कुल अढी घडीनो संधिदोष कहेवाय छे. ए रीते बे योगनी संधिमां पूर्व योगना अंतनी एक घडी अने आठ पळ तथा पछीना योगनी पण आरंभनी एक घडी अने आठ पळ मळी बे घडी अने सोळ पळ संधिदोष कहेवाय छे. ए रीते बे तिथिनी संधिमां पूर्व तिथिनी अंतनी एक घडी अने वीश पळ तथा पछीनी तिथिनी आरंभनी एक घडी अने वीश पळ मळी बे घडी अने चाळीश पळनो संधिदोष कहेवाय छे. आ संधिदोष मांगलिक कार्यमां तजवा योग्य छे."

संधिदोष विषे विक्रमनो मतांतर आ प्रमाणे छे.—

"नक्षत्रराश्योः रविसंक्रमे स्यु,-रर्वाक् परत्रापि रसेन्दु १६ नाड्यः।
एका घडी षट्पलसंयुतेन्दो,- र्नाड्यश्चतस्रः सपलाः कुजस्य॥ १॥
बुधस्य तिस्रो मनवः १४ पलानि, सार्धाश्चतस्रः पलसप्त जीवे।
द्व्यशीतिनाड्यः पलसप्त शौरेः, शुक्रस्य हेयाः सपलाश्चतस्रः॥ २॥"

नक्षत्र अथवा राशिने आश्रीने सूर्यनुं संक्रमण होय एटले एक नक्षत्रथी बीजा नक्षत्रमां अथवा एक राशिथी बीजी राशिमां सूर्यनुं संक्रमण होय तो पूर्व नक्षत्र अथवा राशिनी अंतनी सोळ घडी तथा पछीना नक्षत्र अथवा राशिनी प्रारंभनी सोळ घडीने संधि नामनो दोष कहे छे. ए रीते चंद्रना संक्रमणमां एक एक घडी अने छ छ पळ, मंगळना संक्रमणमां चार चार घडी अने एक एक पळ, बुधना संक्रमणमां त्रण त्रण घडी अने चौद चौद पळ, गुरुना संक्रमणमां साडी चार चार घडी अने सात सात पळ, शनिना संक्रमणमां ब्याशी ब्याशी घडी अने सात सात पळ अने शुक्रनी संक्रांतिमां

चार चार घडी अने एक एक पळ सुधी संधिदोष कहेवाय छे. आ दोष पण सर्व शुभ कार्यमां वर्ज्य छे.

हवे वज्रपात योग विषे कहे छे.—

वज्रपातं त्यजेद्द्वित्रिपञ्चषट्सप्तमे तिथौ ।

मैत्रे २ ऽथ त्र्युत्तरे ३ पैत्र्ये ५ ब्राह्मे ६ मूलकरे ७ क्रमात् ॥६१॥

अर्थ—बीजने दिवसे मैत्र (अनुराधा) होय, त्रीजने दिवसे त्रण उत्तरा एटले उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा के उत्तराभाद्रपद होय, पांचमने दिवसे पैत्र्य (मघा) होय, छठने दिवसे ब्राह्म (रोहिणी) होय, अने सातमने दिवसे मूळ के हस्त होय तो वज्रपात नामनो योग थाय छे. ते शुभ कार्यमां तजवा लायक छे. ६१.

"वज्रपात योगमां कार्य कर्युं होय तो छ मासमां कार्यकर्तानुं मरण थाय छे" एम हर्षप्रकाशमां कह्युं छे. वळी "तेरशने दिवसे चित्रा के स्वाति नक्षत्र होय तोपण वज्रपात योग थाय छे" एम नारचंद्रनी टिप्पणीमां कह्युं छे. वळी "सातम ने भरणी, नोम ने पुष्य तथा दशम ने अश्लेषा होय ते पण तजवा योग्य छे" एम कह्युं छे.

वळी नारचंद्रनी टिप्पणीमां काळमुखी नामनो योग आ प्रमाणे कह्यो छे.—

"चउ रुत्तर पंच मघा कत्तिअ नवमीइ तइअ अणुराहा ।
अट्ठमि रोहिणिसहिआ कालमुही जोगि मास छगि मच्चू ॥ १ ॥"

"चोथने दिवसे त्रण उत्तरा होय, पांचम ने मघा होय, नोम ने कृत्तिका, त्रीज ने अनुराधा तथा आठम ने रोहिणी होय, तो ते काळमुखी नामनो योग कहेवाय छे. आ योगमां कार्य करे तो छ मासे कर्तानुं मरण थाय."

दिनशुद्धि ग्रंथमां नक्षत्र मृत्युयोग आ प्रमाणे कहेल छे.—

"मूलद्दसाइचित्ताअसेससयभिसयकत्तिरेवइआ ।
नंदाए भद्दाए भद्दवया फग्गुणी दो दो ॥ १ ॥
विजयाए मिगसवणापुस्सऽसिणिभरणिजिट्ठ रित्ताए ।
आसाढदुग विसाहा अणुराह पुणव्वसु महा य ॥ २ ॥
पुन्नाइ कर धणिट्ठा रोहिणि इअमयगऽवत्थनरकत्ता ।
नंदिपइट्ठापमुहे सुहकज्जे वज्जए मइमं ॥ ३ ॥"

"नंदा तिथिए एटले पडवो, छठ अने अग्यारशे मूळ, आर्द्रा, स्वाति, चित्रा, अश्लेषा, शतभिषक्, कृत्तिका अने रेवती होय, भद्रा एटले बीज, सातम अने बारशे पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, पूर्वाफाल्गुनी अने उत्तराफाल्गुनी होय, विजया एटले त्रीज, आठम अने तेरशे मृगशिर, श्रवण, पुष्य, अश्विनी, भरणी अने ज्येष्ठा होय,

रिक्ता एटले चोथ, नोम अने चौदशे पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, विशाखा, अनुराधा, पुनर्वसु अने मघा होय, तथा पूर्णा एटले पांचम, दशम अने पूर्णिमाए हस्त, धनिष्ठा अने रोहिणी नक्षत्र होय तो ए मृतक अवस्था नक्षत्र कहेवाय छे, माटे नंदि प्रतिष्ठा आदि शुभ कार्यमां बुद्धिवान पुरुषोए तजवा योग्य छे."

तथा अबला नामे योग आ प्रमाणे थाय छे.—

"कत्तियपभिई चउरो सणि बुहि ससि सूर वार जुत्तकमा ।
पंचमि बिइ एगारसि बारसि अबला सुहे कज्जे ॥ १ ॥"

"कृत्तिका आदि चार एटले कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिर अने आर्द्रा नक्षत्र शनि, बुध, सोम अने रविवारे अनुक्रमे होय, तथा ते दिवसे अनुक्रमे पांचम, बीज, अग्यारश अने बारश होय तो अबला नामनो योग थाय छे. आ योग सर्व कार्यमां अशुभ छे."

पाकश्री ग्रंथमां ऋतुने आश्रीने शुभ तथा अशुभ योग आ प्रमाणे छे.—

"कत्ति उ मग्गसिरे वि अ पंचमि गुरुवार पुणवसू चेव ।
सुहया उ हुंति सरए अद्दा दसमी कुजे असुहा ॥ १ ॥"

"कार्तिक अने मार्गशीर्ष मासमां पांचम, गुरुवार अने पुनर्वसु ए त्रणे एक दिवसे होय तो ते दिवसे शुभ योग कहेवाय छे. तथा शरद् ऋतुमां (कार्तिक तथा मार्गशीर्ष मासमां) आर्द्रा, दशम अने मंगळवार ए त्रणे एक ज दिवसे होय तो ते अशुभ योग जाणवो. १."

"पोसे माहे छट्ठी भिगुत्तराफग्गु अ कज्जकरा ।
असुह इगारसि गुरुणा फग्गुणि पुव्वा य हेमंते ॥ २ ॥"

"पोष तथा माघ मासमां छठ, शुक्रवार अने उत्तराफाल्गुनी एक ज दिवसे होय तो ते दिवसे कार्यनी सिद्धि थाय छे अर्थात् शुभ छे. तथा हेमंत ऋतुमां (पोष अने माघमां) अग्यारश, गुरुवार अने पूर्वाफाल्गुनी एक ज दिवसे होय तो ते अशुभ छे. २."

"फग्गुण चित्ते मासे तेरसि सफला विसाह बुहवारो ।
बारसि सुक्के साइ वसंतकाले वि वज्जिज्जा ॥ ३ ॥"

"फाल्गुन तथा चैत्र मासमां तेरश, विशाखा अने बुधवार एक ज दिवसे होय तो ते सफळ (शुभ) छे. तथा वसंतकाळे (फागण अने चैत्रमां) बारश, शुक्र अने स्वाति एक ज दिवसे होय तो ते वर्ज्य छे. ३"

"वइसाह जिट्ठ सूरो पडिवय मूलो अ उत्तराफग्गू ।
सुह गिम्ह असुह तेरसि सणिवारे सवणनक्खत्ते ॥ ४ ॥"

---

१ अहीं मासनी गणतरी पूनमीया महीना प्रमाणे करवी. एटले के कार्तिक मास गुजराती प्रमाणे लेवो होय तो आश्विन वद तथा कार्तिक शुद जाणवो.

"वैशाख तथा ज्येष्ठ मासमां रविवार, पडवो अने मूळ के उत्तराफाल्गुनी एक ज दिवसे होय तो ते शुभ छे. तथा ग्रीष्म ऋतुमां (वैशाख तथा ज्येष्ठमां) तेरश, शनिवार अने श्रवण नक्षत्र एक ज दिवसे होय तो ते अशुभ छे. ४."

"आसाढ सावण बिआ उत्तरभद्दवय चंददिण सुह उ ।
पाउसि असुहो उ बुहो चउदसि पुव्वा य भद्दवया ॥ ५ ॥"

"आषाढ तथा श्रावण मासमां बीज, उत्तराभाद्रपद अने सोमवार एक ज दिवसे होय तो ते शुभ छे. तथा प्रावृड् ऋतुमां (आषाढ तथा श्रावणमां) बुधवार, चौदश अने पूर्वाभाद्रपद एक ज दिवसे होय तो ते अशुभ जाणवो. ५."

"भद्द व आसो मासे सत्तमि सणिवार रोहिणी सफला ।
वासारत्ते असुहा रवि कत्तिअ पुन्नमासी अ ॥ ६ ॥"

"भादरवा तथा आशो मासमां सातम, शनिवार अने रोहिणी एक ज दिवसे होय तो ते सफळ (शुभ) छे. तथा वर्षा ऋतुमां रविवार, कृत्तिका अने पूर्णिमा एक ज दिवसे होय तो ते अशुभ छे. ६."

आ छए गाथामां ऋतु अने मासना नाममां विपर्यय छे, कारण के नाममाळा विगेरे ग्रंथोमां आश्विन अने कार्तिक विगेरे बबे मासनी शरद् विगेरे ऋतु कही छे अने अहीं तो कार्तिक अने मार्गशीर्ष विगेरे बबे मासनी ऋतुओ कही छे. तथा आ गाथाओमां शिशिर ऋतु बिलकुल लीधी ज नथी अने वर्षा ऋतु तथा प्रावृड् ऋतु एक ज छतां बे जूदी जूदी लइने छ ऋतुनां नाम पूरां कर्यां छे. आ सर्व विपर्यास ते ग्रंथकर्ताए ज करेलो छे, माटे तेमनो एवो ज मत हशे एम जणाय छे.

हवे मूळ ग्रंथकार रवि योग कहे छे.—

योगो रवेर्भात्कृत ४ तर्क ६ नन्द ९, दिग् १० विश्व १३ विंशो २० डुषु सर्वसिद्ध्यै ।
आद्ये १ न्द्रिया ५ श्व ७ द्विप ८ रुद्र ११ सारी १५, राजो १६ डुषु प्राणहरस्तु हेयः ६२

अर्थ—सूर्यनुं जे नक्षत्र चालतुं होय ते नक्षत्रथी गणतां ते दिवसनुं नक्षत्र जो चोथुं होय तो चोथो रवि योग जाणवो. छठुं होय तो छठो रवि योग, नवमुं होय तो नवमो, दशमुं होय तो दशमो, तेरमुं होय तो तेरमो अने वीशमुं होय तो वीशमो रवि योग जाणवो. आटला रवि योग सर्व सिद्धिकारक छे, एटले के आ योगने दिवसे करेलुं कार्य सिद्ध थाय छे; परंतु सूर्यना नक्षत्रथी ते दिवसनुं नक्षत्र पहेलुं, पांचमुं, सातमुं, आठमुं, अग्यारमुं, पंदरमुं के सोळमुं होय तो ते योग प्राणने हरण करनारो छे तेथी ते सर्व कार्यमां तजवा योग्य छे. ६२.

आ रवि योग विषे हर्षप्रकाशमां कह्युं छे के.—

"एआए फलं कमसो विउलं सुक्खं ४ जयं च सत्तूणं ६ ।
लाभं ए च कज्जसिद्धी १० पुत्तुप्पत्ती १३ अ रज्जं २० च ॥ १ ॥"

"आ रवि योगनुं फळ अनुक्रमे आ प्रमाणे छे.—चोथा रवि योगे कार्य करवाथी घणुं सुख थाय छे, छठे होय तो शत्रुने जीताय छे, नवमे लाभ थाय छे, दशमे कार्यसिद्धि थाय छे, तेरमे पुत्रनी उत्पत्ति थाय छे अने वीशमे राज्य मळे छे."

शुद्ध लग्ननुं जेवुं बळ होय छे, तेवुं बळ आ रवि योगनुं होय छे. एम यतिवल्लभमां कह्युं छे. वळी कह्युं छे के—

"इक्कस्स भए पंचाणणस्स भज्जंति गयघडसहस्सा ।
तह रविजोग पणट्ठा गयणम्मि गहा न दीसंति ॥ १ ॥"

"एक सिंहना भयथी सहस्र हाथीओनो समूह नासी जाय छे, तेम रवि योगथी नाश पामेला ग्रहो आकाशमां देखाता नथी अर्थात् जो रवि योग सारो बळवान् होय तो बीजा कुयोगो नासी जाय छे."

"रविजोग राजजोगे कुमारजोगे असुद्ध दिअहे वि ।
जं सुहकज्जं कीरइ तं सव्वं बहुफलं होइ ॥ १ ॥"

"अशुभ दिवसे पण जो रवि योग, राज योग के कुमार योग होय अने ते दिवसे जे शुभ कार्य कर्युं होय ते सर्व कार्य बहु फळदायक थाय छे."

आ रवि योगमां अभिजित् नक्षत्र गणेलुं नथी, कारण के ग्रंथांतरोमां सत्यावीश रवि योगोनुं ज फळ कहेलुं छे. आ योगमां बीजो, त्रीजो, बारमो, सत्तरमो, छवीशमो अने सत्यावीशमो, आटला रवि योग विषे कांइ कह्युं नथी तथा तेनो निषेध पण कर्यो नथी, तेथी तेटला योगो मध्यम जाणवा. बाकीना रवि योगोनुं शुभाशुभपणुं अहीं पण केटलाकनुं साक्षात् कह्युं छे, अने केटलाकनुं फळ उपग्रहपणाए करीने हमणां ज कहेशे.

हवे सत्यावीश रवि योगोनी मध्ये जेमनी उपग्रह संज्ञा छे, ते कहे छे.—

नोपग्रहास्तु भूत्यै भूता५ द्रि ७ फणी ८ न्द्र १४ तिथि १५ धृति १८ युगले १९ ।
रविभात्तथैकविंशादिषु पञ्चसु २१-२२-२३-२४-२५ चरति भेऽविन्दौ ॥ ६३ ॥

अर्थ—सूर्यना नक्षत्रथी चंद्रनुं (ते दिवसनुं) नक्षत्र पांचमुं, सातमुं, आठमुं, चौदमुं, पंदरमुं, अढारमुं, ओगणीशमुं, एकवीशमुं, बावीशमुं, त्रेवीशमुं, चोवीशमुं के पचीशमुं होय तो ते नक्षत्र उपग्रह कहेवाय छे. आ बार उपग्रहो आबादीने माटे नथी अर्थात् अशुभ छे.

आ बार उपग्रहोमांना आठनी संज्ञा तथा तेमनुं विवाहादिक कार्यमां जे फळ थाय छे ते नारचंद्रमां आ प्रमाणे कह्युं छे.—

"विद्युन्मुख १ शूला २ शनि केतू ४ ल्का ५ वज्र ६ कंप ७ निर्घाताः ।
ङ ५ ज ८ ढ १४ द १८ ध १९ फ २२ ब २३ भ २४ संख्ये रविपुरत उपग्रहा धिष्ण्ये॥१॥
फलमंगज १ पतिमरणे २ दशमदिनान्तस्तथाऽशनि निपातः ३ ।
सानुजपति ४ धननाशौ ५ दौःशील्यं ६ स्थान ७ कुलघातौ ॥ २ ॥"

"पांचमा उपग्रहनुं नाम विद्युन्मुख छे, आठमानुं शूल नाम छे, चौदमानुं अशनि, अढारमानुं केतु, ओगणीशमानुं उल्का, बावीशमानुं वज्र, त्रेवीशमानुं कंप अने चोवीशमा उपग्रहनुं नाम निर्घात छे (१). विद्युन्मुखमां विवाहादिक कार्य करवाथी पुत्रनुं मरण थाय, शूलमां करवाथी पतिनुं मरण थाय, अशनिमां करवाथी दश दिवसनी अंदर वज्रपात थाय, केतुमां करवाथी नाना भाइ सहित पतिनो नाश थाय, उल्कामां करवाथी धननो नाश थाय, वज्रमां करवाथी दुःशीलपणुं थाय, कंपमां करवाथी स्थाननो नाश थाय अने निर्घातमां करवाथी कुळनो घात (नाश) थाय."

बाकीना चार उपग्रहो सामान्य रीते अनिष्ट फळने आपनारा छे. एकाशी पद नामना वेधचक्रादिकमां पण आ रीते ज उपग्रहोनुं फळ जाणवुं.

हवे प्रसंगोपात्त आरूल नामनो योग कहे छे. तेमां अभिजित् नक्षत्र गणवानुं छे. एटले के अठ्यावीश नक्षत्रोनी गणतरीए जाणवो.—

"द्वि २ हया ७ ङ्के ९ न्द्र १४ नृपै १६ क २१ त्र्य २३ ष्टयुग्विंशति २८ प्रमे ।
सूर्यभाच्चन्द्रभे स्यादारूलस्त्याज्यः सदा बुधैः ॥ १ ॥"

"सूर्यना नक्षत्रथी चंद्रनुं नक्षत्र जो बीजे, सातमे, नवमे, चौदमे, सोळमे, एकवीशमे, त्रेवीशमे के अठ्यावीशमे होय तो ते आरूल योग कहेवाय छे. आ योग शुभ कार्यमां डाह्या माणसे त्याग करवा लायक छे. "रूलो यात्रासु रोधकृत्" आवुं चोथुं पाद प्रत्यंतरमां छे. तेनो अर्थ ए छे के—"आ आरूल योग यात्राने विषे रोध करनार छे."

आरूल योग जाणवानो सहेलो उपाय नरपतिजयचर्यामां आ प्रमाणे कह्यो छे.—

"सूर्यभात्गुणयेन्दोर्भं सप्तभिर्भागमाहर ।
शून्यं द्वौ वा न शेषौ चेदारूलो नास्ति निश्चितम् ॥ १ ॥"

"सूर्यना नक्षत्रथी चंद्रनुं नक्षत्र गणवुं. पछी तेने साते भाग लेवो. तेमां जो शून्य अथवा बे शेष न रहे तो आरूल योग नथी एम निश्चे जाणवुं अर्थात् जो शून्य के बे शेष रहे तो अवश्य आरूल योग होय छे."

(आ आरुख योग प्राये उत्तर दिशामां विशेष उपयोगी छे.) आ उपरथी ए सिद्ध थयुं के नवमो रवि योग (शुभ छे तोपण) यात्रादिकमां सारो नथी.

हवे दररोज थनारा आनंदादिक उपयोगो कहे छे.—

उपयोगास्त्वश्वि १ मृगा २ श्लेषा ३ कर ४ मैत्र ५ वैश्व ६ वारुणतः ७ ।
रव्यादिषु तद्दिनभप्रमिताः क्रमतोऽभिधानफलाः ॥ ६४ ॥

अर्थ—रविवारे अश्विनी नक्षत्रथी गणतां ते दिवसे (रविवारे) जेटलामुं नक्षत्र होय तेटलामो उपयोग ते दिवसे छे एम जाणवुं. सोमवारे मृगशिरथी गणवुं, मंगळवारे अश्लेषाथी, बुधवारे हस्तथी, गुरुवारे अनुराधाथी, शुक्रवारे उत्तराषाढाथी अने शनिवारे शतभिषकथी गणवुं. ते रीते गणतां ते दिवसनुं जेटलामुं नक्षत्र होय तेटलामो उपयोग ते दिवसे जाणवो. अहीं अभिजित् नक्षत्र गणवानुं छे. ते उपयोगोनां नाम प्रमाणे तेमनुं फळ जाणवुं.

ते उपयोगोनां नामो आ प्रमाणे छे.

आनन्दः १ कालदंडश्च २ प्राजापत्यः ३ सुरोत्तमः ४ ।
सौम्यो ५ ध्वांक्षो ६ ध्वजश्चैव ७ श्रीवत्सो ८ वज्र ९ मुद्गरौ १० ॥ ६५ ॥
छत्रं ११ मित्रं १२ मनोज्ञश्च १३ कंपो १४ लुंपक १५ एव च ।
प्रवासो १६ मरणं १७ व्याधिः १८ सिद्धिः १९ शूला २० मृतौ २१ तथा ॥ ६६ ॥
मुसलो २२ गज २३ मातंगो २४ राक्षसोऽथ २५ चरः २६ स्थिरः २७ ।
वर्धमानश्चेति २८ नाम्ना स्युरष्टाविंशतिः क्रमात् ॥ ६७ ॥

अर्थ—आनंद, काळदंड, प्राजापत्य, सुरोत्तम, सौम्य, ध्वांक्ष, ध्वज, श्रीवत्स, वज्र, मुद्गर, छत्र, मित्र, मनोज्ञ, कंप, लुंपक, प्रवास, मरण, व्याधि, सिद्धि, शूल, अमृत, मुसळ, गज, मातंग, राक्षस, चर, स्थिर तथा वर्धमान, आ अठ्यावीश उपयोगोनां अनुक्रमे नाम जाणवां.

आनंदादिक योगनुं कोष्टक.

योगनाम	रवि	सोम	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
१ आनंद	अश्विनी	मृगशीर्ष	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उत्तराषाढा	शतभिषा
२ काळदंड	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित्	पूर्वाभाद्र०
३ प्राजापत्य	कृत्तिका	पुनर्वसु	पूर्वाफा०	स्वाति	मूळ	श्रवण	उत्तराभा०
४ सुरोत्तम	रोहिणी	पुष्य	उत्तराफा०	विशाखा	पूर्वाषाढा	धनिष्ठा	रेवती

योगनाम	रवि	सोम	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
५ सौम्य	मृगशीर्ष	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उत्तराषाढा	शतभिषा	अश्विनी
६ ध्वांक्ष	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित्	पूर्वाभा॰	भरणी
७ ध्वज	पुनर्वसु	पूर्वाफा॰	स्वाति	मूळ	श्रवण	उत्तराभा॰	कृत्तिका
८ श्रीवत्स	पुष्य	उत्तराफा॰	विशाखा	पूर्वाषाढा	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी
९ वज्र	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उत्तराषा॰	शतभिषा	अश्विनी	मृगशीर्ष
१० मुद्गर	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित्	पूर्वाभा॰	भरणी	आर्द्रा
११ छत्र	पूर्वाफा॰	स्वाति	मूळ	श्रवण	उत्तराभा॰	कृत्तिका	पुनर्वसु
१२ मित्र	उत्तराफा॰	विशाखा	पूर्वाषाढा	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य
१३ मनोज्ञ	हस्त	अनुराधा	उत्तराषाढा	शतभिषा	अश्विनी	मृगशीर्ष	अश्लेषा
१४ कंप	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित्	पूर्वाभा॰	भरणी	आर्द्रा	मघा
१५ लुंपक	स्वाति	मूळ	श्रवण	उत्तराभा॰	कृत्तिका	पुनर्वसु	पूर्वाफा॰
१६ प्रवास	विशाखा	पूर्वाषाढा	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उत्तराफा॰
१७ मरण	अनुराधा	उत्तराषाढा	शतभिषा	अश्विनी	मृगशीर्ष	अश्लेषा	हस्त
१८ व्याधि	ज्येष्ठा	अभिजित्	पूर्वाभाद्र॰	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा
१९ सिद्धि	मूळ	श्रवण	उत्तराभा॰	कृत्तिका	पुनर्वसु	पूर्वाफा॰	स्वाति
२० शूळ	पूर्वाषाढा	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उत्तराफा॰	विशाखा
२१ अमृत	उत्तराषाढा	शतभिषा	अश्विनी	मृगशीर्ष	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा
२२ मुसळ	अभिजित्	पूर्वाभा॰	भरणी	आर्द्रा	मघा॰	चित्रा	ज्येष्ठा
२३ गज	श्रवण	उत्तराभा॰	कृत्तिका	पुनर्वसु	पूर्वाफा॰	स्वाति	मूळ
२४ मातंग	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उत्तराफा॰	विशाखा	पूर्वाषाढा
२५ राक्षस	शतभिषा	अश्विनी	मृगशीर्ष	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उत्तराषा॰
२६ चर	पूर्वाभाद्र॰	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित्
२७ स्थिर	उत्तराभा॰	कृत्तिका	पुनर्वसु	पूर्वाफा॰	स्वाति	मूळ	श्रवण
२८ वर्धमान	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उत्तराफा॰	विशाखा	पूर्वाषाढा	धनिष्ठा

आ योगोनुं फळ तेमनां नामवडे ज जणाय तेवुं छे तेथी जूदुं कहेता नथी. केटलाक आचार्य प्राजापत्य, सुरोत्तम, मनोज्ञ, कंप, लुंपक, प्रवास, मरण, व्याधि, शूळ अने अने गज, ए दश योगने स्थाने अनुक्रमे धूम्र, प्रजापति, मानस, पद्म, लंबक, उत्पात, मृत्यु, काण, शुभ अने गद, एवां नामो पण कहे छे. आ उपयोगो विष्कंभादिक दररोजना योगोनी साथे ज सर्वदा रहेला होवाथी सार्थक नामवाळा छे.

हवे कुयोगोने विषे अपवाद कहे छे.—

यत्प्रातिकूल्यं वाराणां तिथिनक्षत्रसंभवम् ।
हूणवंगखसेष्वेव तत्त्यजेदिति केचन ॥ ६८ ॥

अर्थ—संवर्तक अने कर्क विगेरे तिथिथी उत्पन्न थयेल तथा उत्पात, मृत्यु, काण अने उपयोगादिकने विषे नक्षत्रथी उत्पन्न थयेल वारोनुं प्रतिकूळपणुं हूण देश, वंग देश अने खस देशमां ज त्याज्य छे एम केटलाक कहे छे. तात्पर्य ए छे के खास जरुरीआत कार्य न होय तो बीजा देशोमां पण आ योगो वर्जवा योग्य छे.

हवे शुभ अने अशुभ योगना संकरमां शुभ योगनुं प्रबळपणुं कहे छे.—

सिद्धियोगः कुयोगश्च जायेतां युगपद्यदि ।
कुयोगं तत्र निर्जित्य सिद्धियोगो विजृंभते ॥ ६९ ॥

अर्थ—जो कदाच एकी वखते सिद्धि योग अने कुयोग भेळा थया होय, तो तेमां कुयोगने जीतीने सिद्धि योग उल्लास पामे छे (प्रबळ थाय छे). अहीं सिद्धि योग शब्दनो यौगिक अर्थ होवाथी सर्वे शुभ योगो जाणवा.

हवे दिवसना (दररोजना) विष्कंभादिक योगो कहे छे.—

विष्कंभः १ प्रीति २ रायुष्मान् ३ सौभाग्यः ४ शोभन ५ स्तथा ।
अतिगंडः ६ सुकर्मा ७ च धृतिः ८ शूलं ९ तथैव च ॥ ७० ॥
गंडो १० वृद्धि ११ र्ध्रुव १२ श्चैव व्याघातो १३ हर्षण १४ स्तथा ।
वज्रं १५ सिद्धि १६ र्व्यतीपातो १७ वरीयान् १८ परिघः १९ शिवः २० ॥७१॥
सिद्धः २१ साध्य २२ शुभः २३ शुक्लो २४ ब्रह्मा २५ चैन्द्रो २६ऽथ वैधृतः २७ ।
इति सान्वयनामानो योगाः स्युः सप्तविंशतिः ॥ ७२ ॥

अर्थ—विष्कंभ १, प्रीति २, आयुष्मान् ३, सौभाग्य ४, शोभन ५, अतिगंड ६, सुकर्मा ७, धृति ८, शूल ९, गंडो १०, वृद्धि ११, ध्रुव १२, व्याघात १३, हर्षण १४, वज्र १५, सिद्धि १६, व्यतीपात १७, वरीयान् १८, परिघ १९, शिव २०, सिद्ध २१, साध्य २२, शुभ २३, शुक्ल २४, ब्रह्मा २५, इंद्र २६ अने वैधृत २७. आ सत्यावीश योगो अन्वर्थ संज्ञावाळा एटले पोतपोतानां नाम प्रमाणे फळ आपनारा छे.

आ योगोनां फळ माटे नारचंद्रनी टिप्पणीमां आ प्रमाणे विशेष कह्यो छे.—

"विरकंभ १ सूल २ गंडे ३ अइगंडे ४ वज्ज ५ तह य वाग्घाए ६ ।
वइधिइ ७ सूराइकमा अइदुट्ठा मूलजोगाउ ॥ १ ॥"

"रविवारे विष्कंभ होय, सोमवारे शूळ होय, मंगळवारे गंड होय, बुधवारे अतिगंड होय, गुरुवारे वज्र होय, शुक्रवारे व्याघात होय अने शनिवारे वैधृति होय तो ते मूळ योगो अत्यंत दुष्ट छे."

આ સત્યાવીશ યોગોની મધ્યે જેટલા દુષ્ટ યોગો છે, તેમાં પણ જેટલી દુષ્ટ ઘડીઓ છે, તે કહે છે.—

व्यतिपातवैधृताख्यौ सकलौ परिघस्य पूर्वमर्द्धं च ।
प्रथमः पादोऽन्येष्वपि विरुद्धसंज्ञेषु हातव्यः ॥ ७३ ॥

અર્થ—વ્યતીપાત અને વૈધૃત નામના યોગો સમગ્ર (આખા) તજવા લાયક છે, પરિઘનો પહેલો અર્ધ ભાગ ત્યાજ્ય છે, અને બાકીના વિરુદ્ધ (અશુભ) નામવાળા યોગોમાં પ્રથમ પાદ વર્જવા યોગ્ય છે. આ યોગોનો અર્ધ ભાગ તથા એક પાદ પંચાંગમાં લખેલી ઘડીઓને અનુસારે સમજવા. વિરુદ્ધ નામવાળા યોગો વિષ્કંભ, ગંડ, અતિગંડ, શૂળ, વ્યાઘાત તથા વજ્રપાત જાણવા.

ઉપર જે પ્રથમ પાદ વર્જવાનું કહ્યું છે, તેમાં બીજો પ્રકાર કહે છે.—

त्यजेद्वा पञ्च विष्कंभे षट् तु गंडातिगंडयोः ।
घटिकाः सप्त शूले तु नव व्याघातवज्रयोः ॥ ७४ ॥

અર્થ—અથવા તો વિષ્કંભ યોગમાં પહેલી પાંચ ઘડી તજવી, ગંડ અને અતિગંડમાં પહેલી છ છ ઘડી, શૂળમાં પ્રથમની સાત ઘડી અને વ્યાઘાત તથા વજ્ર યોગમાં પ્રથમની નવ નવ ઘડી વર્જવા યોગ્ય છે.

વિષ્કંભાદિક દુષ્ટ યોગોમાં એકાર્ગલવેધ નામના યોગની ઉત્પત્તિ થાય છે તે કહે છે.—

एकार्गलः कुयोगेषु चन्द्रेऽर्के च परस्परात् ।
गते साभिजिदोजर्क्षे त्याज्यः पादान्तरो न चेत् ॥ ७५ ॥

અર્થ—દુષ્ટ યોગને દિવસે અભિજિત્ સહિત અઠ્યાવીશે નક્ષત્રોમાંના વિષમ નક્ષત્રમાં પરસ્પર (સામસામા) ચંદ્ર અને સૂર્ય રહ્યા હોય તો તે એકાર્ગલ કહેવાય છે, તે તજવા યોગ્ય છે; પરંતુ જો એકાર્ગલ યોગ પાદના આંતરાવાળો ન હોય તો જ તજવા લાયક છે.

આ એકાર્ગલ યોગ દુષ્ટ યોગોમાં થાય છે એમ કહ્યું છે, માટે પ્રીતિ, આયુષ્માન્ વિગેરે શુભ યોગમાં તે થતો જ નથી એમ સૂચવન કર્યું છે. કુયોગ છતાં પણ આ યોગનો સંભવ ક્યારે થાય છે ? તે ઉપર ચંદ્ર અને સૂર્યની સ્થિતિ દર્શાવી છે. અહીં અભિજિત્ લખેલું હોવાથી અઠ્યાવીશ નક્ષત્રો જાણવાં. આ પ્રમાણે લત્તાના શ્લોકમાં પણ સમજવું. આ શ્લોકનો સમગ્ર ભાવાર્થ આ રીતે છે.—આગલ કહેવામાં આવે એ રીતે એકાર્ગલ ચક્ર કરી તેમાં અનુક્રમે અઠ્યાવીશ નક્ષત્રો લખવાં, પછી જો ચંદ્રથી સૂર્ય અને સૂર્યથી ચંદ્ર એક બીજાથી વિષમ[1] નક્ષત્રે એક જ લીંટીમાં રહેલા હોય તો એકાર્ગલ થાય છે અને તે સર્વ

---

[1] ત્રણ, પાંચ, સાત, નવ ઇત્યાદિ એકી નક્ષત્ર વિષમ કહેવાય છે.

कार्यमां तजवा योग्य छे, एटले के जे नक्षत्रमां एकार्गल पडेलो होय ते नक्षत्र शुभ कार्यमां तजवा योग्य छे, परंतु सूर्ये तथा चंद्रे आक्रमण करेलां नक्षत्रोनां पादोनो आंतरो एटले परस्पर सन्मुख नहीं रहेवारूप विशेष न होय अर्थात् तेमनां पादो पासे पासे ज होय तो ते एकार्गल अवश्य वर्जवा योग्य छे अने पादना आंतरावाळो होय तो त्याग करवो वा न करवो.

आ एकार्गल योगने ज स्थापनादिकना विधिए करीने विशेष प्रकारे कहे छे.—

तिर्यक्त्रयोदशोर्ध्वैकरेखे खर्जूरके त्यजेत् ।
कुयोगे शीर्षभादर्कचन्द्रावेकार्गलर्क्षगौ ॥ ३६ ॥

अर्थ—तेर रेखा (लींटी) आडी अने एक रेखा ऊभी ए रीते खजुरीनुं वृक्ष करवुं. तेना मस्तक (शिखर) पर आगल कहेवामां आवशे ए रीते नक्षत्र मूकवुं (लखवुं). पछी दक्षिण बाजुथी अनुक्रमे पछीनां सत्यावीश नक्षत्रो दरेक रेखाए मूकवां. पछी एक रेखारूप अर्गलने छेडे रहेलां बन्ने नक्षत्रोने विषे जो चंद्र अने सूर्य रह्या होय तो ते एकार्गल कहेवाय छे. तेमां पण सन्मुख रहेलां बन्ने नक्षत्रोनां बन्ने पादमां ते सूर्य चंद्र रहेला होय तो ते आंतरा रहित एटले संपूर्ण एकार्गल थाय छे ते आ प्रमाणे.—

"आद्येन विध्यते तुर्यो द्वितीयेन तृतीयकः ।
तृतीयेन द्वितीयस्तु तुर्येण प्रथमस्तथा ॥ १ ॥"

"पहेला पादवडे चोथा पादनो वेध थाय छे, बीजा पादवडे त्रीजा पादनो वेध थाय छे, त्रीजा पादवडे बीजा पादनो वेध थाय छे अने चोथा पादवडे पहेला पादनो वेध थाय छे." चोथुं अने पहेलुं तथा बीजुं अने त्रीजुं पाद, ए परस्पर आंतरारहित कहेवाय छे एम समजवुं. आथी विपरीतपणे जो सूर्य चंद्र रह्या होय तो ते पादना आंतरावाळो कहेवाय छे अने तेथी ते दोषरहित छे. जेम कोइ धनुर्धर निशानने विंधवा लाग्यो, ते वखते जो तेनी दृष्टि निशानथी जरा पण चूके तो ते निशान विंधातुं नथी. तेम वेध पण जो पादना अग्र भागथी भ्रष्ट थयो होय तो ते फळदायक नथी. ते विषे यतिवल्लभमां कह्युं छे के—

"बाणाग्रदृष्टिपाताद्यद्वल्लक्ष्यं भिनत्ति धानुष्कः ।
तद्वत्समदृष्टिगतो वेधो धिष्ण्यं प्रदूषयति ॥ १ ॥"

"जेम धनुषधारी बाणना अग्र भाग पर दृष्टि राखीने लक्ष्य (निशान) ने विंधे छे, तेम सम (सरखी) दृष्टिमां रहेलो वेध नक्षत्रने दूषित करे छे." (आ प्रमाणे बीजा वेधोमां पण जाणवुं.)

हवे खजुरीना मस्तक पर कयुं नक्षत्र मूकवुं तेनी रीत बतावे छे.—

खर्जूरकस्य शीर्षर्क्षमानमेकार्गले मतम् ।
योगांकः सैक उंजोऽन्यः साष्टाविंशतिरर्द्धितः ॥ ७७ ॥

अर्थ—इष्ट दिवसे विष्कंभादिक योगोमांनो जेटलामो योग होय ते जो विषम होय तो तेमां एक उमेरवो, अने सम होय तो तेमां अठ्यावीश उमेरवा. पछी ते बन्नेने अर्धा करवा. जे संख्या आवे ते संख्यावालुं (तेटलामुं) नक्षत्र खजुरीने मस्तके मूकवुं. ए प्रमाणे खजुरीना मस्तकना नक्षत्रनुं प्रमाण एकार्गलमां कहेलुं छे.

एकार्गल यंत्र

चन्द्र	मृगशीर्ष	रवि
रोहिणी		आर्द्रा
कृत्तिका		पुनर्वसु
भरणी		पुष्य
अश्विनी		अश्लेषा
रेवती		मघा
उत्तराभा०		पूर्वाफा०
पूर्वाभा०		उत्तराफा०
शतभिषा		हस्त
धनिष्ठा		चित्रा
श्रवण		स्वाति
अभिजित्		विशाखा
उत्तराषाढा		अनुराधा
पूर्वाषाढा		ज्येष्ठा
	मूळ	

पादवेध यंत्र

चंद्र	रवि
४	१
३	२
२	३
१	४

समजुती—इष्ट दिवसे शूळ योग नवमो छे, तेथी तेमां एक वधारी दश कर्या, तेनो अर्ध करवाथी पांच आव्या, तेथी पांचमुं नक्षत्र मृगशीर्ष छे माटे ते नक्षत्र मस्तक पर आवे. ए रीते इष्ट दिवसे गंड योग होय तो ते दशमो होवाथी तेमां अठ्यावीश उमेरी अर्ध करवाथी ओगणीश आवे छे, तेथी ओगणीशमुं मूळ नक्षत्र मस्तक पर मूकवुं. ए रीते बीजा कुयोगोमां पण जाणवुं.

मस्तकनुं नक्षत्र लाववा माटे लल्ल कहे छे के—

"शूले मूर्ध्नि मृगो मघा च परिघे चित्रा पुनर्वैधृते
व्याघाते च पुनर्वसू निगदितौ पुष्यश्च वज्रे स्मृतः ।
गंडे मूलमथाश्विनी प्रथमके मैत्रोऽतिगंडे तथा
सार्पश्च व्यतिपात इन्दुतपनावेकार्गलस्थौ यदा ॥ १ ॥"

"जो शूळ योग होय तो मस्तक पर मृगशीर्ष नक्षत्र आवे, परिघ योग होय तो मघा आवे, वैधृत होय तो चित्रा, व्याघात योग होय तो पुनर्वसु, वज्र योग होय तो पुष्य, गंड होय तो मूळ, विष्कंभ होय तो अश्विनी, अतिगंड होय तो अनुराधा अने व्यतिपात होय तो अश्लेषा नक्षत्र मस्तक पर आवे. ए प्रमाणे नक्षत्रो स्थापी पछी चंद्र तथा सूर्य जे नक्षत्रना होय ते नक्षत्र उपर स्थापवा. जो चंद्र अने सूर्य एक अर्गलमां रहेला होय तो एकार्गल योग जाणवो."

हवे सात शलाकाना चक्रवडे वेध योग कहे छे.—

वेध ऊर्ध्वतिरः सप्तरेखे पूर्वादितोऽभिजात् ।
भस्य रेखाग्रगे खेटे हेयश्चेन्न पदान्तरम् ॥ ७८ ॥

अर्थ—ऊभी तथा आडी सात सात रेखाने विषे पूर्वादिक दिशाना क्रमे स्थापन करेलां कृत्तिकादिक नक्षत्रथी इष्ट दिवसना नक्षत्रनी रेखाना अग्र भागमां जे नक्षत्र छे तेमां कोइ ग्रह होय तो वेध थाय छे. ते त्याग करवा लायक छे, पण जो पादनुं आंतरुं न होय तो त्याग करवा लायक छे. एटले के—ऊभी तथा आडी सात सात रेखा करवी, पछी तेमने छेडे पूर्वादिक दिशाना क्रमे कृत्तिकाथी आरंभीने सात सात नक्षत्रो (अभिजित् सहित) स्थापवां. पछी जे जे ग्रह जे जे नक्षत्रमां होय, ते ते ग्रह ते ते नक्षत्रनी पासे मूकवो. पछी जे रेखाने छेडे इष्ट दिवसनुं नक्षत्र आव्युं होय, ते रेखाने बीजे छेडे जो कोइ ग्रह आव्यो होय तो ते ग्रहवडे ते इष्ट नक्षत्रनो वेध थयो जाणवो. ते वेध त्याग करवा लायक छे, कारण के "क्रूर वेध होय तो मृत्यु ज थाय छे अने सौम्य वेध होय तो सर्वथा सुखनो नाश थाय छे." आ वेधनो अपवाद कहे छे.—जो ते वेध पूर्वनी रीते पादना आंतरावाळो होय तो त्याग करवो वा न करवो. एटले के इष्ट नक्षत्रना जे पादमां कार्य करवुं होय, अने तेनी सन्मुखना नक्षत्रना पादमां जो ते ग्रह न होय, परंतु पादने आंतरे होय तो आ ग्रह वेध पादांतरित थयो, तेथी ते दूषणवाळो नथी. ते विषे पूर्णभद्र कहे छे के—

"विद्धं पादं परित्यज्य कुर्यात्कार्यमशंकितः ।
सर्पदष्टाङ्गुलिच्छेदे विषवेषोद्भवः कुतः ॥ १ ॥"

"वेधवाळा पादनो त्याग करीने निःशंक रीते कार्य करवुं, केमके सर्पे डसेली अंगुलीनो छेद कर्या पछी विषना प्रवेशनी उत्पत्ति क्यांथी होय ?"

केशवार्क तो पादांतरित ग्रह वेधने पण ग्रहण करवानो निषेध करे छे. ते कहे छे के—

"विश्लेषमायाति यथासुभिः स्वैरेणः शरेणैकदिशि हतोऽपि ।
तथांह्रिवेधादपि तारकाणां क्रूरस्य नश्येद्बलसत्त्वसंपत् ॥ १ ॥"

"जेम मृग शरवडे एक भागमां हणायो होय तोपण पोताना प्राणवडे वियोग पामे छे

एटले मरी जाय छे, तेम क्रूर ग्रहवडे नक्षत्रना पादनो वेध थवाथी पण बळ, सत्त्व अने संपत्तिनो नाश थाय छे."

श्रीपति कहे छे के—

"ऋक्षं सौम्यग्रहैर्विद्धं पादमात्रं परित्यजेत् ।
क्रूरैस्तु सकलं त्याज्यमिति वेधविनिश्चयः ॥ १ ॥"

"जो नक्षत्रनो सौम्य ग्रहवडे वेध थयो होय तो मात्र ते पादनो ज त्याग करवो, अने क्रूर ग्रहवडे वेध थयो होय तो ते आखुं नक्षत्र तजवुं. ए प्रमाणे वेधनो निश्चय (व्यवस्था) छे."

सात शलाकाना वेधनो यंत्र.

कृ रो मृ आ पु पु अ

भ — म
अ — पू०
सप्त रेखा
रे — उ
वेधचक्र
उ — ह
पू — चि
श — स्वा
ध — वि

श्र अ उ पू मू ज्ये अ

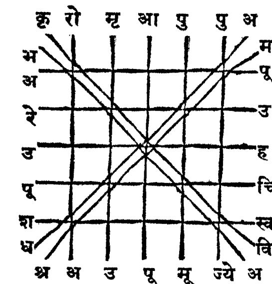
हवे विवाहमां विचारवा योग्य बीजो वेध योग पांच शलाका चक्रवडे बतावे छे.—

विवाहे पूर्ववत्पञ्च रेखा द्वे द्वे तु कोणके ।
लिखित्वाऽग्निजतो ज्ञानि वेधं तत्रापि चिन्तयेत् ॥ ३९ ॥

अर्थ—विवाहने विषे पूर्वनी जेम एटले उभी तथा आडी पांच पांच रेखा तथा चारे

खूणाओमां बबे रेखा करीने कृत्तिका नक्षत्रथी आरंभीने अठ्यावीश नक्षत्रोने स्थापन करी तेमां पण वेधनो विचार करवो.

पंच रेखा चक्र



अहीं मूळ श्लोकमां "तत्रापि" ए पदमां "अपि" शब्द आप्यो छे, ते अव्यय छे, अने अव्ययोना अनेक अर्थ होवाथी अहीं अपि शब्दनो अर्थ अवधारण एटले निश्चय जेवो करवानो छे, तेथी एवो अर्थ थाय छे के—पूर्वे कहेलो सात रेखावाळो वेध प्रतिष्ठादिक सर्व कार्योमां जोवो, अने विवाहमां तो आ पंच रेखावाळो ज वेध जोवो ते विषे विवाह वृंदावनमां कह्युं छे के—"विवाह सिवाय बीजा कार्यमां सात रेखावाळा यंत्रनो वेध जोवो." आ वेधमां पण पूर्वनी जेम पादांतरितनी व्यवस्था जाणवी. आंतरा रहित ग्रहनो वेध होय तो तेनुं फळ आ प्रमाणे कह्युं छे.—

"रवि विहवा कुजि कुलखय बुहि वंझा भिगु अपुत्त सणि दासी।
गुरुवेहेण तवस्सिणि विलासिणी राहुकेऊहिं ॥ १ ॥"

"रविना वेधमां लग्न करवाथी स्त्री विधवा थाय छे, मंगळना वेधमां करवाथी कुळनो क्षय थाय, बुधना वेधमां करवाथी वंध्या थाय, शुक्रना वेधमां करवाथी पुत्र रहित थाय, शनिना वेधमां करवाथी दासी थाय, गुरुना वेधमां करवाथी तपस्विनी थाय, तथा राहु अने केतुना वेधमां करवाथी विलासवाळी थाय."

आ वेध दीक्षामां पण जोवो एम पूर्णभद्र कहे छे. ते कहे छे के.—

"सूरिपयाइसु सत्तसलायं वयगहणाइसु पंचसलायं।
कत्तिअमाइ ठविज्ज हु चक्कं जोअह ससिणो तो गहवेहं ॥ १ ॥"

"आचार्यपद तथा उपाध्यायपदादिकनी प्रतिष्ठादिकमां कृत्तिकादिक नक्षत्रोनुं सप्त शलाका चक्र स्थापी ते मध्ये चंद्रमानो ग्रहोनी साथे वेध जोवो, अने दीक्षामां पांच शलाका चक्र स्थापी चंद्रमानो ग्रहोनी साथे वेध जोवो."

हवे लत्ता योग कहे छे.—

लत्ता वर्ज्येष्टभस्यार्कादीनां सान्भिजिदीयुषाम्।
धृत्या १८ कृत्यु २२ डु २७ सप्त ७ र्हत् २४ पञ्चा ५ कृत्यं २२ क ए संख्यभम् ८०

अर्थ—इष्ट नक्षत्रथी अढारमा नक्षत्रने विषे रहेलो सूर्य इष्ट नक्षत्रने लातवडे हणे

छे, इष्ट नक्षत्रथी बावीशमा नक्षत्रे रहेलो चंद्र इष्ट नक्षत्रने लातवडे हणे छे, ए रीते सत्यावीशमे रहेलो मंगळ, सातमे रहेलो बुध, चोवीशमे रहेलो गुरु, पांचमे रहेलो शुक्र, बावीशमे रहेलो शनि अने नवमे रहेलो राहु इष्ट नक्षत्रने हणे छे. अहीं अभिजित् सहित अठ्यावीश नक्षत्रो लेवानां छे. लात (लत्ता) एटले पादनो प्रहार कहेवाय छे, अने ते अश्वादिकनी जेम प्राये पाछळथी मारे छे, माटे आ प्रमाणे कह्युं.

हवे जोशीओने नक्षत्रोनी गणतरी सहेलाइथी थवा माटे आगळथी लत्ता मारे ते पाठांतरवडे बतावे छे.—

लत्तयन्ति भमर्काद्याः स्वर्क्षतः साभिजित्क्रमात् ।

अर्का १२ ष्टा ८ ग्नि ३ विकृत्यं २३ ग ६ तत्त्वा २५ ष्ट ८ प्रकृति २१ प्रमम् ७१

(सूर्या १२ ष्ट ८ त्रि ३ त्रयोविंश २३ षट् ६ तत्त्वा २५ ष्टे ८ कविंशकम् २१, पाठान्तरं)

अर्थ—सूर्य पोताना नक्षत्रथी बारमा नक्षत्रने आगळनी लात मारे छे, चंद्र आठमा नक्षत्रने, मंगळ त्रीजा नक्षत्रने, बुध त्रेवीशमा नक्षत्रने, गुरु छठा नक्षत्रने, शुक्र पचीशमा नक्षत्रने, शनि आठमा नक्षत्रने अने राहु एकवीशमा नक्षत्रने लत्ता मारे छे. अहीं पण अभिजित् सहित नक्षत्रो गणवां.

पाछळनी लत्ता तथा आगळनी लत्ता ए बन्ने रीते गणतां एक ज अर्थ आवे छे. जेमके इष्ट नक्षत्र अश्विनी नक्षत्र छे, त्यांथी अढारमुं नक्षत्र ज्येष्ठा छे, ते ज्येष्ठामां रहेलो सूर्य अश्विनीने पाछळथी लात मारे छे, तथा सूर्यनुं पोतानुं नक्षत्र ज्येष्ठा छे, त्यां रहेलो सूर्य आगळना बारमा नक्षत्रने एटले अश्विनीने लात मारे छे. ए रीते सर्वत्र जाणवुं.

अहीं कोइ शंका करे के—इष्ट दिवसनुं जे नक्षत्र होय ते ज नक्षत्र चंद्रनुं पण होय छे, अने त्यां रहेलो चंद्र जो पाछळना बावीशमा अथवा आगळना आठमा नक्षत्रने लात मारे तो तेमां इष्ट नक्षत्रने शुं आव्युं ? कांइ ज नहीं, तेथी इष्ट नक्षत्रने चंद्रनी लत्तानो विचार करवो व्यर्थ छे. आ शंकानुं समाधान ए छे जे चंद्र परिपूर्ण (पूर्णिमानो) थइने ज नक्षत्रने लत्ता मारे छे, पण बीजो चंद्र लत्ता मारतो नथी. ते विषे श्रीपति कहे छे के—"द्वाविंशं परिपूर्णमूर्त्तिरुडुपः संतापयेन्नेत्तरः" "परिपूर्ण मंडळवाळो चंद्र पाछळना बावीशमा नक्षत्रने संतापे छे, पण बीजो अपरिपूर्ण चंद्र संतापतो नथी." तेथी करीने गइ पूर्णिमा जे नक्षत्रमां समाप्त थइ होय ते ज चंद्रनुं नक्षत्र धारीने त्यांथी गणतरी करवी. यतिवल्लभमां पण कह्युं छे के—

"चकार यत्र नक्षत्रे राकान्तं रजनीकरः ।
ततश्चाष्टमनक्षत्रं स पुरो हन्ति लत्तया ॥ १ ॥"

"चंद्रे जे नक्षत्रमां पूर्णिमानो अंत कर्यो होय, ते नक्षत्रथी आठमा नक्षत्रने ते आगळनी लातवडे हणे छे."

हवे लत्ताने विषे अन्य आचार्यनो मत पण बतावे छे.—

अग्रतो नवमे राहोः सप्तविंशे भृगोस्तु भे ।
केचिज्ज्योतिर्विदः प्राहुर्लत्तां तामपि वर्जयेत् ॥ ७२ ॥

अर्थ—राहु पोताना नक्षत्रथी नवमा नक्षत्रने अने शुक्र सत्यावीशमा नक्षत्रने आगळनी लात मारे छे, एम केटलाक ज्योतिर्विद कहे छे, माटे ते लत्ता पण वर्जवा योग्य छे. त्रिविक्रम तो एम कहे छे के—"नख २० संख्यं तमो हन्ति" "राहु पोताना नक्षत्रथी वीशमा नक्षत्रने लत्ता मारे छे."

लत्तानुं फळ पौर्णभद्र ज्योतिषमां आ प्रमाणे कह्युं छे.—

"अणुजविणासे १ नासो २ कज्जाभावा ३ भयं ४ विहवछेओ ५ ।
गुरु १ बुह २ सि अ ३ ससि ४ रवि ५ हयरिक्खेसु मरणमन्नेसु ॥ १ ॥"

"गुरुए हणेला नक्षत्रमां कार्य करवाथी नाना भाइनो नाश थाय, बुधथी हणायेला नक्षत्रमां कार्य करवाथी पोतानो नाश थाय, शुक्रथी हणायेला नक्षत्रमां कार्यनो नाश थाय, चंद्रे हणेला नक्षत्रमां भय उपजे, अने रविए हणेला नक्षत्रमां कार्य करवाथी वैभवनो नाश थाय, तथा बीजा (मंगळ, शनि तथा राहु) ग्रहोए हणेला नक्षत्रमां कार्य करवाथी मरण थाय."

अहीं वृद्धो कहे छे के—"सौम्य ग्रहनी लत्ता अल्प दोष करे छे, केमके ते लत्ता नक्षत्रनी दुर्बळता ज करे छे, अने क्रूर ग्रहनी लत्ता तो मरण अने दारिद्र्य विगेरे अनर्थने करे छे." केशवार्क पण कहे छे के—

"उडुनि निर्दलिते शुभलत्तया न फलमस्ति बलस्य गलत्तया ।
अशुभलत्तिभमत्ति तदूढयोर्धनसुतानसुतापकरं परम् ॥ १ ॥"

"शुभ ग्रहनी लत्तावडे हणायेला नक्षत्रमां कार्य करवाथी बल रहित होवाथी कांइ पण अशुभ फळ थतुं नथी, पण अशुभ ग्रहनी लत्तावडे हणायेलुं नक्षत्र तो तेमां परणेला दंपतीना धन तथा पुत्रनो नाश करे छे अने जीवने संतापकारक थाय छे."

वळी ग्रंथांतरमां आ प्रमाणे कह्युं छे.—

"सौम्यलत्ताहतं पातोपग्रहाद्यैश्च दूषितम् ।
भपादं वर्जयेदेव भं च केन्द्रे न चेच्छुभाः ॥ १ ॥"

"जो कदाच तत्काळ कार्य करवानुं होय, अने केंद्रमां शुभ ग्रहो होय तो सौम्य ग्रहनी लत्ताथी हणायेला तथा पात अने उपग्रहादिकवडे दूषित थयेला नक्षत्रनुं ते पाद ज

त्याग करवुं, परंतु केंद्रमां शुभ ग्रह न होय तो सौम्य ग्रहनी लत्ताथी पण हणायेलुं आखुं नक्षत्र तजवा योग्य छे."

हवे पात योग कहे छे.—

पातः सूर्यर्क्षतोऽश्लेषा मघा चित्रानुराधिका।
श्रुतिः पौष्णं च यत्र स्युस्त्याज्यस्तत्संख्यभेऽश्विभात् ॥ ७३ ॥

अर्थ—सूर्यना नक्षत्रथी अश्लेषा, मघा, चित्रा, अनुराधा, श्रवण अने रेवती ए नक्षत्रो जेटली संख्यावाळां अश्विनीथी गणतां होय तेटली संख्यावाळां नक्षत्रमां पात योग जाणवो, अने ते योग शुभ कार्यमां वर्जवा योग्य छे (आ योगने त्रिशूळपात पण कहे छे). भावार्थ ए छे के ज्यारे सूर्य ज्येष्ठा नक्षत्रनो होय त्यारे ज्येष्ठा नक्षत्रथी अश्लेषा ओगणीशमुं छे, मघा वीशमुं छे, चित्रा चोवीशमुं छे, अनुराधा सत्यावीशमुं छे, श्रवण पांचमुं छे, अने रेवती दशमुं छे. तेथी ते दिवसे अश्विनीथी गणतां ओगणीशमुं मूळ छे, वीशमुं पूर्वाषाढा छे, चोवीशमुं शतभिषक् छे, सत्यावीशमुं रेवती छे, पांचमुं मृगशीर्ष छे, अने दशमुं मघा छे, तेथी करीने आटलां नक्षत्रोमां पात योग छे एम जाणवुं. ए रीते बीजुं पण जाणवुं. आ पात योगमां अभिजित् गणवुं नहीं.

अहीं सहेलाइने माटे आम्नाय कहे छे.—

पातं शूलस्य गंडस्य हर्षणव्यतिपातयोः ।
साध्यवैधृतयोश्चान्ते धिष्ण्यं यत्तत्र वर्जयेत् ॥ ७४ ॥

अर्थ—शूळ, गंड, हर्षण, व्यतिपात, साध्य अने वैधृत, ए छ योगने अंते जे नक्षत्र होय, ते नक्षत्रमां पात योग होय छे, अने ते पात योग वर्जवा योग्य छे.

ते छ पात योगनां नाम नरपतिजयचर्यामां अनुक्रमे आ प्रमाणे कह्यां छे.—

"पवनः १ पावकश्चैव २ कालः ३ किंकर ४ एव च ।
मृत्युकृत् ५ क्षयकृच्चेति ६ पाता नामसदृक्फलाः ॥ १ ॥"

"पवन, पावक, (अग्नि), काळ, किंकर, मृत्युकृत् अने क्षयकृत् ए छ पात योगो पोतानां नाम प्रमाणे फळ आपनारा छे."

॥ इति योगद्वारम् ॥

॥ इति श्रीमति आरंभसिद्धिवार्त्तिके तिथि १ वार २ भ ३ योग ४ परीक्षात्मकः प्रथमो विमर्शः ॥



। अथ द्वितीयो विमर्शः ।

हवे राशिद्वार कहे छे.—

राशिरथ तत्र मेषोऽश्विनी च जरणी च कृत्तिकापादः ।
वृषजस्तु कृत्तिकांह्रित्रयान्विता रोहिणी समार्गार्द्धा ॥ १ ॥
मिथुनो मृगार्द्धमार्द्रा पुनर्वस्वोश्चांह्रयस्त्रयः प्रथमे ।
कर्की च पुनर्वस्वोः पादः पुष्यस्तथाऽश्लेषा ॥ २ ॥
सिंहस्तु मघाः पूर्वाः फल्गुन्यः पाद उत्तराणां च ।
कन्योत्तरात्रिपादी हस्तश्चित्रार्धमाद्यं च ॥ ३ ॥
तौली चित्रान्त्यार्द्धं स्वातिपादत्रयं विशाखायाः ।
स्याद्वृश्चिको विशाखाचतुर्थपादोऽनुराधिका ज्येष्ठा ॥ ४ ॥
धन्वी मूलं पूर्वाषाढाऽपि च पाद उत्तराषाढः ।
स्यान्मकर उत्तराषाढांह्रित्रितयं श्रुतिर्धनिष्ठार्द्धम् ॥ ५ ॥
कुंजोऽन्त्यधनिष्ठार्धं शततारा पूर्वजाद्रपात्त्रिपदी ।
मीनो जाद्रपदांह्रिस्तथोत्तरा रेवती चेति ॥ ६ ॥

अर्थ—बार राशिउ तथा तेमां आवतां नक्षत्रोनां पाद आ प्रमाणे.—

१ मेष राशिमां अश्विनी, जरणी तथा कृत्तिकानुं प्रथम पाद आवे छे.
२ वृषज राशिमां कृत्तिकानां छेल्लां त्रण पाद, रोहिणी अने मृगशीर्ष अर्धुं आवे छे.
३ मिथुन राशिमां मृगशीर्ष छेल्लुं अर्धुं, आर्द्रा अने पुनर्वसुनां प्रथम त्रण पाद.
४ कर्क राशिमां पुनर्वसुनुं छेल्लुं पाद, पुष्य अने अश्लेषा.
५ सिंह राशिमां मघा, पूर्वाफाल्गुनी अने उत्तराफाल्गुनीनुं प्रथम पाद.
६ कन्या राशिमां उत्तराफाल्गुनीना अंतनां त्रण पाद, हस्त तथा चित्रा पहेलुं अर्धुं.
७ तूल राशिमां चित्रा छेल्लुं अर्धुं, स्वाति तथा विशाखानां प्रथम त्रण पाद.
८ वृश्चिक राशिमां विशाखानुं चोथुं पाद, अनुराधा अने ज्येष्ठा.
९ धन राशिमां मूळ, पूर्वाषाढा अने उत्तराषाढानुं प्रथम पाद.
१० मकर राशिमां उत्तराषाढानां छेल्लां त्रण पाद, श्रवण अने धनिष्ठा अर्धुं.

११ कुंभ राशिमां धनिष्ठा छेल्लुं अर्धुं, शततारका तथा पूर्वाभाद्रपदनां प्रथम त्रण पाद.
१२ मीन राशिमां पूर्वाभाद्रपदनुं छेल्लुं एक पाद, उत्तराभाद्रपद अने रेवती.

राशिनी व्यवस्थामां अभिजित् नक्षत्र लेवानुं नथी, तेथी सत्यावीश नक्षत्रोने विषे दरेकनां चार चार पाद होवाथी कुल एकसो ने आठ पाद थाय छे, ते पाद अक्षरोना नियम कहेवावडे प्रथम सूचवन कर्यां छे. तेमांनां नव नव पादोए करीने एक एक राशि थाय छे. एम बार राशि कहेली छे, तेथी करीने पुरुषादिकनां नाम पाडवामां राशिनी कल्पनाए नक्षत्रना पादमां नियत करेला वर्णो (अक्षरो) ने जाणीने नामादिकना अक्षरो करवा. (तेवा अक्षरथी शरु थतुं नाम पाडवुं.) अभिजित् नक्षत्रनां त्रण पादना अक्षरो उत्तराषाढाना छेल्ला (चोथा) पादमां अंतर्गत थाय छे, अने अभिजितना छेल्ला पादना अक्षरो श्रवणना प्रथम पादमां अंतर्गत थाय छे.

हवे मेषादिक बार राशिओना वर्ण कहे छे.—

मेषाच्छोणार्जुनहरिद्रक्तश्वेतैतमेचकाः ।
पिंगपिंगलकल्माषकभ्रालमलिना रुचः ॥ ७ ॥

अर्थ—मेषथी आरंभीने शोण (रातो), अर्जुन (श्वेत), हरित (पीळो-लीलो), रक्त (रातो), श्वेत, एत (काबरचित्रो), मेचक (काळो), पिंग (पीळो-रातो,) पिंगल (पीळो-रातो), कल्माष (काबरचित्रो), कभ्राल (पीळो) अने मलिन (मत्स्यनी जेवो मेलो), आ प्रमाणे बारे राशिओना वर्ण जाणवा. आ वर्ण कहेवानुं प्रयोजन विशेषे करीने नवांशमां आवशे ते एवी रीते के धातु,मूळ तथा जीवरूप पदार्थ नवांशथी ज जणाय छे. कह्युं छे के—"अंशकाज्ज्ञायते द्रव्यं" "नवांशथी द्रव्यनुं ज्ञान थाय छे." तेथी करीने धातु अने मूळ विगेरे वस्तु चोराइ होय अथवा खोवाइ होय, तेना प्रश्नमां आ वर्णवडे ते वस्तुना वर्णनुं ज्ञान थाय छे.

हवे राशिओनां स्वरूप कहे छे.—

उद्यद्घोषवतीगदं नृमिथुनं नौस्थाऽग्निसस्यान्विता,
कन्या ना च तुलाधरो धृतधनुर्धन्व्यश्वपश्चार्धकः ।
एणास्यो मकरः कुटांकितशिराः कुंभो विलोमाननं,
मीनो मीनयुगं च नामसदृशाः प्रोक्ताः परे राशयः ॥ ८ ॥

अर्थ—जेना हाथमां वीणा छे एवी स्त्री तथा जेना हाथमां गदा छे एवो पुरुष ए बन्ने सामसामां बेठां होय ते मिथुन राशिनो आकार जाणवो. डाबा हाथमां अग्नि अने जमणा हाथमां धान्य धारण करीने वहाणमां बेठेली कन्याने आकारे कन्या राशि छे, हाथमां

तुला (त्राजवा) राखीने बेठेला पुरुषने आकारे तुला राशि छे, कटीनी नीचेनो भाग अश्वनी जेवो एटले चार पगवाळो अने शरीरनो उपरनो भाग पुरुष जेवो, वळी जेना हाथमां धनुष छे एवा पुरुषने आकारे धन राशि छे, मृगना जेवा मुखवाळा मगरने आकारे मकर राशि छे, मस्तक पर कुंभ रहेलो होय एवा पुरुषने आकारे कुंभ राशि छे. ("खांध पर खाली घडो रह्यो होय," एम बृहज्जातकमां कह्युं छे.) एक बीजाना पुछनी सन्मुख जेनां मुख रहेलां छे एवा बे मत्स्यने आकारे मीन राशि छे, तेथी करीने ज आ राशिनो उदय मस्तक अने पीठथी थाय छे. बाकीनी राशिओ एटले मेष, वृष, कर्क, सिंह अने वृश्चिक नामनी पांच राशिओ पोतपोतानां नामने समान रूपवाळी जाणवी. तेमज बारे राशिओनी चेष्टा तथा स्थान विगेरे पण पोतपोतानां नामनी सदृश ज जाणवां एवो संप्रदाय छे. ते विषे सारंग कहे छे के—

"मेषो दैन्यमुपैति गर्वति वृषो नानामतिर्मन्मथः,
शूरः कर्कटको धृतिश्च वनपे कन्या च मायाविनी ।
सत्यं रज्जुतुलास्वलो मलिनता चापश्च पापाशयो,
मोखर्यं मकरे घटे चतुरता मीने च धीरा मतिः ॥ १ ॥"

"मेष दीनताने पामे छे, वृष गर्विष्ठ थाय छे, मन्मथ (मिथुन) नाना प्रकारनी बुद्धिवाळी होय छे, कर्क शूरवीर होय छे, सिंह हिंमतवान् होय छे, कन्या कपटी होय छे, तुला सत्य अने रज्जुनी जेम सरळ होय छे, वृश्चिक मलिन होय छे, धनुष (धन) पापप्रकृतिवाळी होय छे, मकर वाचाळ होय छे, कुंभ चतुर होय छे अने मीन धीर बुद्धिवाळी होय छे."

तेमज मेष अने वृष दिवसे अरण्यमां रहेनारी अने रात्रिए गाममां रहेनारी होय छे, मिथुन गाममां रहेनार छे, कर्क अने मीन जळमां रहे छे, सिंह अरण्यमां रहे छे, कन्या अने तुला गाममां रहे छे, वृश्चिक प्रवासी छे, धन अने कुंभ गाममां रहे छे, तथा मकरनो पहेलो (मुखनो) भाग अरण्यवासी छे अने बीजो भाग जळचर छे.

चोरायेली के खोवायेली वस्तुना प्रश्न वखते चोरनी चेष्टा तथा स्थान जोवा माटे आ उपयोगी छे. ते ते लग्नमां उचित कार्य करवा माटे दैवज्ञवल्लभ एवुं कहे छे के—"राज्याभिषेक, विरोध, साहस, कूट कर्म विगेरे तथा धातुनी खाण विगेरे संबंधी कार्य मेष लग्नमां करवाथी सिद्ध थाय छे. विवाह, गृहप्रवेश, कन्यानो संबंध (वाग्दान) विगेरे ध्रुव कर्म तथा क्षेत्रनो आरंभ अने पशु वेचवा लेवानां कार्यो वृष लग्नमां करवामां आवे छे. वृष लग्नमां कहेलां कार्य उपरांत विद्या, शिल्प अने अलंकार संबंधी कार्यो मिथुन लग्नमां सिद्ध थाय छे. सेवा, भोग, मृदु शुभ कर्म, पौष्टिक कर्म, तथा वाव कूवा-

दिक जळ संबंधी कार्य कर्क लग्नमां सिद्ध थाय छे. मेष लग्नमां कहेलां कार्य उपरांत वेपार, राजसेवा तथा शत्रुनी संधि विगेरे कार्यो सिंह लग्नमां करवाथी सिद्ध थाय छे. शिल्प, औषध, भूषण, वेपार विगेरे चर अने स्थिर कार्य कन्या लग्नमां सिद्ध थाय छे. खेती, सेवा, यात्रा विगेरे तथा कन्या लग्नमां कहेलां सर्व कार्यो तुला लग्नमां सिद्ध थाय छे. ध्रुव कर्म, राजसेवा, चोरी विगेरे दारुण उग्र कार्य वृश्चिकमां सिद्ध थाय छे. यात्रा, युद्ध, व्रत विगेरे सत्कार्यो धनुषमां सिद्ध थाय छे. क्षेत्रनो आश्रय तथा जळमार्गे यात्रा विगेरे चर कार्य तथा नीच कार्य मकरमां सिद्ध थाय छे. जळमार्गे यात्रा, वहाण तैयार करवुं, बीज वाववुं, दंभ, भेद, व्रत विगेरे तथा नीच कर्म कुंभमां सिद्ध थाय छे. विद्या, अलंकार, शिल्प, पशुकर्म, वहाणनी यात्रा, अभिषेक विगेरे तथा सर्व मंगलिक कार्य मीन लग्नमां सिद्ध थाय छे.

"एतान्युक्तानि संसिद्धिं यांति शुद्धेष्वजादिषु ।
क्रूराणि क्रूरयुक्तेषु शुभानि सशुभेषु तु ॥ १ ॥"

"मेषादिक लग्न शुद्ध होय तो ए कहेलां कार्यो सिद्धिने पामे छे. क्रूर ग्रहोवडे युक्त होय तो क्रूर कार्य सिद्ध थाय अने शुभ ग्रह सहित होय तो शुभ कार्य सिद्ध थाय छे."

हवे राशिओनुं दिक्स्वामित्व तथा स्वभाव कहे छे.—

पूर्वादिदिक्षु मेषाद्याः पतयः स्युः पुनः पुनः ।
चरस्थिरद्विस्वभावाः क्रूराक्रूरा नरस्त्रियः ॥ ए ॥

अर्थ—"पुनः पुनः" "फरी फरीने" ए पद दरेक विशेषण साथे जोडवाथी आ प्रमाणे अर्थ थाय छे.—अनुक्रमे पूर्वादिक दिशाओना मेषादिक स्वामीओ छे. एटले पूर्व दिशानो मेष, दक्षिणनो वृष, पश्चिमनो मिथुन अने उत्तरनो कर्क स्वामी छे. ए रीते सिंह विगेरे चार तथा धन विगेरे चार अनुक्रमे चार दिशाना ईश कहेवा. एटले दरेक दिशाना त्रण त्रण स्वामीओ थाय छे, आनुं प्रयोजन यात्रादिकमां छे, तथा चोरायेली के खोवायेली वस्तुना प्रश्नमां वस्तु कइ दिशाए छे ते जाणवा माटे छे. तथा मेष राशि चर छे, वृष स्थिर छे अने मिथुन द्विस्वभाव छे, कारण के तेनी पहेलां वृष छे ते स्थिर छे माटे मिथुननो प्रथम अर्ध भाग स्थिर छे, अने तेनी पछी कर्क छे ते चर छे माटे मिथुननो बीजो अर्ध भाग चर छे ए रीते द्विस्वभाव जाणवो. एम जातक वृत्तिमां कह्युं छे. "पुनः पुनः" नो संबंध होवाथी कर्क चर छे, सिंह स्थिर छे, कन्या द्विस्वभाव छे. ए रीते अनुक्रमे बारे राशिओनुं चरादिकपणुं जाणवुं. आनुं प्रयोजन ए छे जे चर राशिमां जन्मेलां बाळको ते ते स्वभाववाळां थाय छे तथा मेषने आरंभीने अनुक्रमे क्रूर अने अक्रूर तथा पुरुष अने स्त्री एमांनी एक एक संज्ञा पण आपवी. एटले के मेष क्रूर

अने पुरुष छे, वृष अक्रूर अने स्त्री छे, मिथुन क्रूर अने पुरुष छे विगेरे बारे राशि सुधी लइ जतां मेष, मिथुन विगेरे छ एकीवाळी राशिओ क्रूर तथा पुरुष छे अने वृष, कर्क विगेरे बेकीवाळी राशिओ अक्रूर (सौम्य) अने स्त्री छे. आनुं फळ ए छे के क्रूर अने पुरुष राशिमां जन्मेलां बाळको क्रूर अने तेजस्वी थाय छे, तथा सौम्य अने स्त्री राशिमां जन्मेलां बाळको सौम्य अने मृदु (कोमळ) थाय छे; पण रत्नमाळामां कह्युं छे के— "मेष, सिंह, वृश्चिक, मकर अने कुंभ ए पांच राशिओ क्रूर स्वामीवाळी होवाथी क्रूर छे अने बाकीनी सात राशिओ सौम्य स्वामीवाळी होवाथी सौम्य छे." वळी क्रूर राशि पण सौम्य ग्रहथी युक्त होय अथवा तेना पर सौम्य ग्रहनी दृष्टि पडती होय तो ते सौम्य थाय छे, अने सौम्य राशि पण क्रूर ग्रह सहित होय अथवा तेना पर क्रूर ग्रहनी दृष्टि पडती होय तो ते क्रूर थाय छे. ते विषे दैवज्ञवल्लभ कहे छे के—

"ग्रहयोगेक्षणाभ्यां स्याद्राशेर्भावो ग्रहोद्भवः ।
राशिः स्वभावमाधत्ते ग्रहयोगेक्षणोज्झितः ॥ १ ॥"

"ग्रहना संबंधथी तथा दृष्टिथी राशिनो भाव ग्रह जेवो थाय छे, पण ग्रहना संबंध तथा दृष्टिथी रहित होय तो राशि पोताना भावने धारण करे छे."

हवे राशिओना बळ तथा उदय विषे कहे छे.—

षड् निशाबलिनोऽजोक्षयुग्मकर्कधनुर्मृगाः ।
पृष्ठेनोद्यन्त्ययुग्मास्ते शीर्षेणान्ये द्विधा झषः ॥ १० ॥

अर्थ—मेष, वृष, मिथुन, कर्क, धनुष अने मकर ए छ राशिओ रात्रिए बळवान् छे. अर्थात् बाकीनी सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुंभ अने मीन ए छ दिवसे बळवान् छे एम जाणवुं. खोवायेली अथवा चोरायेली वस्तुनो समय जाणवा माटे आनुं प्रयोजन छे. तेमज दिवसे बळवान् राशिना लग्न वखते दिवसे यात्रादिक करवा शुभकारी छे, अने रात्रिए बळवान् राशिना लग्नमां रात्रे यात्रादिक करवा शुभ छे. तेथी विपरीतपणुं इष्ट नथी. आ रात्रिनी बळवान् छ राशिओमांथी मिथुन विनानी पांच राशिओ पृष्ठथी उदय पामे छे एटले उदय समये तेमनुं पृष्ठ प्रथम देखाय छे. तथा बीजी मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक अने कुंभ ए छ राशिओ मस्तकथी उदय पामे छे अर्थात् उदय वखते प्रथम मस्तक देखाय छे. तथा मीन राशि बन्नेथी उदय पामे छे एटले के तेना उदय वखते एकी वखते पृष्ठ तथा मस्तक देखाय छे. आनुं प्रयोजन ए छे जे यात्रादिकमां शीर्षना उदयवाळा लग्नमां जय थाय छे, अने पृष्ठ उदयना लग्नमां निष्फळ थाय छे विगेरे.

हवे राशिओनां उच्च स्थान कहे छे.—

अर्काद्युच्चान्यज १ वृष २ मृग ३ कन्या ४ कर्क ५ मीन ६ वणिजो ७ ऽंशैः ।
दिग् १० दहना ३ ष्टाविंशति २८ तिथी १५ षुपनक्षत्र २७ विंशतिभिः २० ॥११॥

अर्थ—मेष १, वृष २, मकर ३, कन्या ४, कर्क ५, मीन ६ अने तुला ७ ए सात राशिओ अनुक्रमे दश, त्रण, अठ्यावीश, पंदर, पांच, सत्यावीश अने वीश अंशे करीने अनुक्रमे सूर्यादिकनां उच्च स्थानो छे. अर्थात् मेष राशिना पहेला दश त्रिंशांशो रविनुं उच्च स्थान छे, वृषभना पहेला त्रण त्रिंशांशो चंद्रनुं उच्च स्थान छे. मकरना पहेला अठ्यावीश त्रिंशांशो मंगळनुं उच्च स्थान छे विगेरे. अहीं संप्रदाय एवो छे के—"आखी मेष राशिमां सूर्य उच्च छे, तेमां पण दश अंशो सुधी तो परम उच्च छे, अने त्यारपछी मात्र उच्च ज छे. चंद्र वृष राशिमां उच्च छे, तेमां पण त्रण अंश सुधी परम उच्च छे, अने त्यारपछी मात्र उच्च ज छे विगेरे." आ संप्रदाय लोकश्री विगेरे ग्रंथोना अभिप्रायने मळतो छे, परंतु लघु अने बृहत् जातक तथा नारचंद्र विगेरे ग्रंथोनो अभिप्राय तो आ प्रमाणे छे.—"मेष राशिमां सूर्य उच्च छे, पण तेना ज दशमा त्रिंशांशे परम उच्च छे. चंद्र वृष राशिमां उच्च छे, पण तेना ज त्रीजा अंशे परम उच्च छे. मंगळ मकर राशिमां उच्च छे, पण तेना ज अठ्यावीशमे अंशे परम उच्च छे विगेरे." ताजिक ग्रंथमां तो परम उच्च एवी संज्ञा ज नथी, परंतु "मेष राशिमां पहेला दश भाग सुधी सूर्य उच्च छे, पण पछी तेजहीन छे." एम कह्युं छे. ए ज प्रमाणे वृषादिकमां चंद्रादिकनुं उच्चपणुं जाणवुं.

राशिओनुं नीच तथा त्रिकोण स्थान कहे छे.

स्वोच्चतः सप्तमं नीचं त्रिकोणान्यथ भानुतः ।
सिंहो ५ क्ष २ मेष १ प्रमदा ६ धनु ९ र्घट ७ घटाः ११ क्रमात् ॥ १२ ॥

अर्थ—पोतपोताना उच्च स्थानथी सातमुं सातमुं स्थान नीच जाणवुं. हवे रवि आदि ग्रहोनुं अनुक्रमे सिंह, वृष, मेष, कन्या, धन, तुला अने कुंभ ए राशिओ त्रिकोण स्थान कहेवाय छे.

जे जे ग्रहनुं जे जे उच्च स्थान होय ते थकी जे जे सातमुं स्थान होय ते ते ते (ग्रह)नुं नीच स्थान जाणवुं. अहीं पण दश, त्रण, अठ्यावीश, पंदर, पांच, सत्यावीश अने वीश ए प्रमाणे अंशनी संख्या जे पूर्वे कही छे, ते पण लेवी. तेथी करीने उच्चनी जेम नीचमां पण तेवी ज रीते अर्थ करवो. जेमके मेषथी सातमी तुला राशि छे, तेना पहेला दश त्रिंशांशो रविनुं नीच स्थान जाणवुं. वृष राशिथी सातमी वृश्चिक राशि छे, तेना पहेला त्रण त्रिंशांशो चंद्रनुं नीच स्थान जाणवुं विगेरे. अहीं पण संप्रदाय एवो छे के—"तुलामां रवि नीच छे, तेमां पण दश अंश सुधी परम नीच अने त्यारपछी मात्र नीच जाणवो. ए प्रमाणे चंद्रादिकमां पण कहेवुं." आ संप्रदाय पाकश्री विगेरे ग्रंथो साथे मळतो छे, परंतु जातक अने नारचंद्र विगेरे ग्रंथोनो अभिप्राय तो आ प्रमाणे छे.—"तुलामां सूर्य नीच छे, तेमां पण दशमा त्रिंशांशे परम नीच छे, ए प्रमाणे चंद्रादिकमां

पण जाणवुं." ताजिकमां तो परम नीच एवी संज्ञा ज नथी, परंतु "तुला राशिमां पहेला दश अंशो सुधी चंद्र नीचनो छे." एम कह्युं छे. ए प्रमाणे चंद्रादिकमां पण जाणवुं विशेष आ प्रमाणे छे.—

"कन्या राहुगृहं प्रोक्तं राहूच्चं मिथुनः स्मृतः ।
राहुनीचं धनुर्वर्णादिकं शनिवदस्य च ॥ १ ॥"

"राहुनुं घर (स्थान) कन्या राशि छे, राहुनुं उच्च स्थान मिथुन राशि कही छे, राहुनुं नीच स्थान धन राशि छे, तथा आ (राहु) ना वर्णादिक शनि प्रमाणे जाणवा."

परम उच्चपणुं तथा परम नीचपणुं साठ लिप्ताना प्रमाणवाळा ते ते अंशना मध्य भागे जाणवुं अर्थात् त्रीश लिप्ताए करीने जाणवुं. परम उच्चता अने परम नीचताना समयने जाणवानो उपाय आ प्रमाणे छे.—

"मासं रविबुधशुक्राः ३ सार्धं भौम ४ स्त्रयोदशाचार्यः ५ ।
त्रिंशन्मन्दो ६ ऽष्टादश राहु ७ श्चन्द्रः ८ सपाददिवसयुगम् ॥ १ ॥"

"एक राशिमां सूर्य, बुध अने शुक्र एक एक मास रहे छे, मंगळ दोढ मास रहे छे, गुरु तेर मास रहे छे, शनि त्रीश मास रहे छे, राहु अढार मास रहे छे, तथा चंद्र सवा बे दिवस रहे छे."

"त्रिंशांशे ज्ञार्कशुक्राणां दिनं ३ सार्धचतुर्घटि ।
इन्दोः ४ कुजे सार्धदिनं ५ मासमेकं शनैश्चरे ६ ॥ १ ॥
अष्टादशदिनी राहो ७ स्त्रयोदशदिनी गुरोः ८ ।

"बुध, सूर्य अने शुक्रनो त्रिंशांश एक एक दिवसनो छे, चंद्रनो त्रिंशांश साडी चार घडी[1] छे, मंगळनो त्रिंशांश दोढ दिवस छे, शनिनो त्रिंशांश एक मास, राहुनो त्रिंशांश अढार दिवस अने गुरुनो त्रिंशांश तेर दिवसनो छे."

आथी करीने आ प्रमाणे भावार्थ थयो के—मेषनी संक्रांतिमां नव दिवस पछी एक दिवस परम उच्चनो सूर्य कहेवाय. वृषमां नव घडी पछीनी साडी चार घडी सुधी चंद्र परम उच्च थयो. मकरमां साडी चाळीश दिवस पछी दोढ दिवस सुधी मंगळ परम उच्च छे. कन्यामां चौद दिवस पछी एक दिवस सुधी बुध परम उच्च छे. कर्कमां बावन दिवस पछी तेर दिवस सुधी गुरु परम उच्च छे. मीनमां छवीश दिवस पछी एक दिवस सुधी शुक्र परम उच्च छे. तथा तुलामां ओगणीश मास पछी एक मास सुधी शनि परम उच्च छे. ए रीते परम नीचनी पण भावना जाणवी. आ प्रकार सामान्यताथी बताव्यो छे एम जाणवुं, कारण के मंगळ विगेरे ग्रहो प्राये वक्र तथा अतिचारवाळा थाय छे. ते वखते आ

१ घडी.

परम उच्चनो तथा परम नीचनो समय न जाणवो, परंतु वक्र गतिवाळा तथा अतिचार-वाळा ग्रहोनी आगळ कहेवाशे ते रीते स्पष्टता कर्या पछी उपर कहेला अंशो प्रमाणे उच्च नीचनी भावना करवी. आ कहेलो समय तो सहज गतिवाळा ग्रहोने माटे ज समजवो.

ग्रहोना उच्च नीचपणानुं फळ आ प्रमाणे छे.—

"इक्को जइ उच्चत्थो हवइ गहो उन्नइं परं कुणइ ।
किं पुण बे तिन्नि गहा कुणंति को इत्थ संदेहो ॥ १ ॥"

"जो कदाच एक पण ग्रह उच्च स्थाने रह्यो होय तो परम उन्नतिने करे छे, तो पछी उच्च स्थाने रहेला बे त्रण ग्रहो परम उन्नतिने करे तेमां शो संदेह ?"

जन्मने विषे उच्च ग्रहनुं फळ आ प्रमाणे छे.—

"त्र्युच्चैर्नृपः पञ्चभिरर्द्धचक्री चक्री च षड्भिरुच्चैर्मुनिभि ७ स्तथार्हन् ।"

"जन्मसमये त्रण ग्रह उच्च होय तो ते राजा थाय, पांच ग्रह उच्च होय तो वासु-देव थाय, छ उच्च होय तो चक्रवर्ती थाय अने सात ग्रह उच्चना होय तो अरिहंत (तीर्थंकर) थाय." वळी कह्युं छे के—

"त्रिभिर्नीचैर्भवेद्दासस्त्रिभिरुच्चैर्नराधिपः ।
त्रिभिः स्वस्थानगैर्मंत्री त्रिभिरस्तमितैर्जडः ॥ १ ॥
अन्धं दिगंबरं मूर्खं परपिंडोपजीविनम् ।
कुर्यातामति नीचस्थौ पुरुषं चन्द्रभास्करौ ॥ २ ॥"

"जेना जन्मसमये त्रण ग्रह नीचना होय तो ते दास थाय छे, अने त्रण ग्रह उच्चना होय तो ते राजा थाय छे. त्रण ग्रहो स्वस्थाने रह्या होय तो ते मंत्री थाय छे, अने त्रण ग्रह अस्त पाम्या होय तो ते जड थाय छे. (१) चंद्र अने सूर्य जो नीच स्थाने रह्या होय तो ते पुरुषने अंध, दिगंबर (वस्त्र रहित—गरीब), मूर्ख अने भिक्षावृत्तिथी आजीविका करनार करे छे. २."

उपर मूळ श्लोकमां जे त्रिकोण संज्ञा आपी छे, ते मूळ त्रिकोण पण कहेवाय छे. त्रिकोणनुं फळ ए छे जे "त्रिकोणमां रहेला ग्रहो उच्च ग्रहना जेवुं ज अथवा तेथी कांइक न्यून फळ आपनारा छे." एम पाकश्री ग्रंथमां कह्युं छे. प्रश्न शतक वृत्तिमां त्रिकोण विगेरेने त्रिंशांशनी स्पष्टतावडे आ प्रमाणे कह्या छे.—"सिंह राशिमां वीश त्रिंशांशो त्रिकोण छे अने बाकीना दश त्रिंशांश सूर्यनुं गृह (घर—स्थान) छे. वृषभ राशिमां बे त्रिंशांशो उच्च छे, त्रीजो परम उच्च छे, अने बाकीना चंद्रनुं त्रिकोण छे. मेषमां बार त्रिंशांशो त्रिकोण छे, बाकीना अंशो मंगळनुं गृह छे. कन्यामां चौद त्रिंशांशो उच्चना छे, पंदरमो परम उच्च छे, तेनी पछीना पांच त्रिकोण छे अने बाकीना दश बुधनुं गृह

छे. धनुषमां दश त्रिंशांशो त्रिकोण छे अने बाकीना गुरुनुं गृह छे. तुलामां पंदर त्रिंशांशो त्रिकोण छे, अने बाकीना शुक्रनुं गृह छे. कुंभमां वीश त्रिंशांशो त्रिकोण छे अने बाकीना दश शनिनुं घर छे."

हवे राशिउना संबंधवाळा बार भावोने कहे छे.—

लग्नाद्भावास्तनु १ द्रव्य २ भ्रातृ ३ बन्धु ४ सुता ५ रयः ६ ।
स्त्री ७ मृत्यु ८ धर्म ९ कर्मा १० य ११ व्यया १२ श्च द्वादश स्मृताः ॥१३॥

अर्थ—लग्नथी एटले प्रथम स्थानथी अनुक्रमे तनु १, द्रव्य २, भ्रातृ ३, बंधु ४, सुत ५, अरि ६, स्त्री ७, मृत्यु ८, धर्म ९, कर्म १०, आय ११, व्यय १२, आ रीते बार भावो कहेला छे.

प्रश्न वखते, जन्म वखते अथवा यात्रादिकने समये जे कोइ राशि उदयमां होय ते राशिने लग्न नामे जाणवी. तेने बार आरावाळा चक्रनी आकृति करीने तेनी वच्चेना विवरमां मुख्य स्थाने स्थापन करवी. बाकीनी अगीयार राशिउ डाबी बाजुनां अनुक्रमे अगीयार स्थानकोमां मूकवी. ए रीते कुंडळी थाय छे. ते आ प्रमाणे—

३ \ २	१ लग्नं	१२ \ ११
४	श्री	१०
५ \ ६	७	८ \ ९

अहीं लग्ननी तनु भाव संज्ञा छे एटले इष्ट माणसना शरीर विषे ए तनु भावने आधारे विचार करवो. त्यारपछी डाबी बाजुना क्रमथी अगीयार स्थानोने विषे रहेला बीजा विगेरे स्थानोमां रहेली राशिउनी संज्ञा अनुक्रमे द्रव्य भाव २, भ्रातृ भाव ३, बंधु भाव ४, विगेरे जाणवी. तेथी इष्ट माणसनुं द्रव्य, भाइ विगेरे संबंधी ते ते स्थानोने अनुसारे विचारवां. कह्युं छे के—

"यो यो भावः स्वामिदृष्टो युतो वा सौम्यैर्वा स्यात्तस्य तस्यास्ति वृद्धिः ।
पापैरेवं तस्य तस्यास्ति हानिर्निर्देष्टव्या पृच्छतां जन्मतो वा ॥ १ ॥"

"जे जे भाव स्वामीए जोयेलो होय के युक्त होय अथवा सौम्य ग्रहोए जोयेलो के युक्त होय तो ते ते भावनी वृद्धि थाय छे. ए ज रीते जो पाप ग्रहोए युक्त के जोयेलो होय तो ते ते भावनी हानि थाय. ए प्रमाणे पूछनारने तेनी जन्मकुंडळी परथी कहेवुं."

विशेष ए छे जे छठ्ठा अरि भावमां जेम क्रूर ग्रहो अरि भावने हणे छे तेमज सौम्य ग्रहो पण हणे छे ज, पण पुष्ट करता नथी, अने व्ययस्थान तथा आठमा स्थानमां पण जेम सौम्य ग्रहो व्यय (खर्च)ने तथा मृत्युने पोषे छे तेम क्रूर ग्रहो पण पोषे ज छे, परंतु तेने हणता नथी. कह्युं छे के—"सौम्याः षष्ठेऽरिघ्नाः सर्वे नेष्टा व्ययाष्टमगाः"। "छठे स्थाने रहेला सौम्य ग्रहो अरिने हणे छे, तथा व्ययस्थाने अने आठमा स्थाने रहेला सर्वे ग्रहो अनिष्ट छे." यवनेश्वर तो कहे छे के—"अष्टमे सौम्या आयुर्वृद्धिकराः" "आठमे स्थाने सौम्य

ग्रहो होय तो ते आयुष्यनी वृद्धि करनारा छे." भ्रातृ भावमां बहेन संबंधी विचार पण करवो. बंधु एटले स्वजन छे तेथी बंधु भावमां मातानो पण विचार करवो. सुत भावमां शिष्यो पण जाणवा. स्त्री एटले भार्या, तेना भावमां गमन आगमन पण जाणवा. आठमा स्थानमां रोगादिक पण जाणवा. धर्म भावमां वंशपरंपराए आवेली विद्या अपूर्व विद्या तथा अचिंतव्यो धनलाभ विगेरे जाणवा. दशमा स्थानमां कर्म एटले वेपार, ते स्थानमां पिता, भाग्य, आज्ञा, ऐश्वर्य विगेरे संबंधी विचार करवा. लाभ स्थानमां नाश पामेलानी पण प्राप्तिनो विचार करवो. तथा व्यय स्थानमां सत् तथा असत् बन्ने जातना खर्च विगेरेनो विचार करवो.

जेम लग्नथी आरंभीने बार भाव कह्या तेम चंद्रथी पण बार भाव जाणवा. तेथी करीने लग्न अने चंद्रनी मध्ये जे बळवान् होय तेनाथी बार भाव विचारवा एवो आम्नाय छे.

बारे भावोनां बीजां नामो बतावे छे.—

सुहृन्मंदिरपातालहिबुकाम्बुसुखाभिधम् ।
चतुर्थमष्टमं छिद्रं चतुरस्रे उभे पुनः ॥ १४ ॥

अर्थ—सुहृद्, मंदिर, पाताल, हिबुक, अंबु अने सुख ए चोथा स्थानना नामो छे, छिद्र ए आठमा स्थाननुं नाम छे. चतुरस्र ए चोथा तथा आठमा ए बे स्थाननुं नाम छे. सुहृत् शब्दे करीने मित्रभवन, मंदिर शब्दवडे गृह भवन, पाताल शब्दवडे रसातल इत्यादिक पर्याय नामो पण अत्र लेवाय छे. ए प्रमाणे आगळ पण सर्वत्र जाणवुं. तथा पूर्वे कहेला तनु विगेरे बार भावोने स्थाने पण शरीर विगेरे पर्याय शब्दोनो पण व्यवहार करवो. आठमुं मृत्यु स्थान अनायु नामनुं पण कहेवाय छे.

त्रित्रिकोणं च नवमं त्रिकोणे नव पञ्चमे ।
सप्तमं कामजामित्रद्युनद्यूनास्तसंज्ञकम् ॥ १५ ॥

अर्थ—नवमुं स्थान त्रित्रिकोण कहेवाय छे. नवमुं अने पांचमुं स्थान त्रिकोण कहेवाय छे अने सातमुं स्थान काम, जामित्र, द्युन, द्यून अने अस्त नामे पण कहेवाय छे, अहीं काम एटले कामदेव छे, जामिने एटले बहेनने त्याग करे ते जामित्र कहेवाय छे, एटले के ते विवाहनो पर्याय शब्द छे. तथा सर्व कोइ ग्रह जे राशिमां उदय पामे छे, तेनाथी सातमी राशिमां अस्त पामे छे, तेथी सातमा स्थानने अस्त नामे पण कह्युं.

स्यातां तृतीये दुश्चिक्यविक्रमे पञ्चमे तु धीः ।
मध्यमेषूरणव्योमान्याहुर्दशमधामनि ॥ १६ ॥

अर्थ—त्रीजा स्थाननुं नाम दुश्चिक्य अने विक्रम कहेवाय छे, पांचमुं स्थान धी (बुद्धि) नामनुं कहेवाय छे, दशमा स्थानमां मध्य, मेषूरण अने व्योम एवां नामो कहेवाय छे,

अहीं जे चोथा स्थानना पाताळ अने अंबु संज्ञा कही छे तथा दशमा स्थानना मध्य अने व्योम संज्ञा कही छे, ते भूगोळनी रीते कही छे एम जाणवुं. भूगोळनो मत एवो छे के—"सूर्य प्रातःकाळे पूर्व दिशामां उदय पामीने दक्षिण बाजुए फरतो फरतो मध्याह्न समये दशमा स्थानरूप व्योम (आकाश)ना मध्य भागमां आवीने सायंकाळे सातमे स्थाने अस्त पामे छे, अने ते ज प्रमाणे रात्रिए पण फरतो फरतो मध्य रात्रिए चोथा स्थानरूप पाताळमां थइने पाछो प्रातःकाळे पूर्व दिशामां उदय पामे छे." आ रीते कह्युं छे. वळी पाताळ अंबुनुं (जळनुं) स्थान छे ए प्रसिद्ध छे.

उपान्त्यं सर्वतोभद्रमन्त्यं रिष्यमुदीरितम् ।
वदन्त्युपचयाह्वांस्त्रिषड्दशैकादशान् पुनः ॥ १७ ॥

अर्थ—अगीयारमुं स्थान सर्वतोभद्र कहेवाय छे, केमके ते स्थाने रहेलो ग्रह सर्वथा शुभकारक छे. बारमुं स्थान रिष्य कहेवाय छे. लग्नथी तथा चंद्रथी गणतां त्रीजुं, छठुं, दशमुं अने अगीयारमुं स्थान उपचय नामे कहेवाय छे, केमके ते स्थानोमां रहेला पाप ग्रहो पण शुभ फळदायक थाय छे. बाकीनां स्थानो अपचय एटले हानि करनारां छे, एम समजवुं. तेनुं फळ आ प्रमाणे कह्युं छे.—

"कार्यं यदुक्तं तदुपैति सिद्धिं वारे ग्रहे चोपचयर्क्षभाजि ।
नीचर्क्षसंस्थेऽपचयस्थिते च यत्ने कृते चापि भवत्यसाध्यम् ॥ १ ॥"

"जे कार्य करवानुं कह्युं होय ते उपचय स्थानवाळी राशिमां रहेल ग्रहमां तथा वारमां सिद्धिने पामे छे, अने नीच राशिमां तथा अपचय स्थानमां ग्रह रह्यो होय तो यत्न कर्या छतां पण ते कार्य असाध्य थाय छे एटले सिद्ध थतुं नथी."

केन्द्रचतुष्टयकंटकनामानि वपुः १ सुखा ४ स्त ७ दशमानि १० ।
स्युः पणफराणि परत २-५-८-११ स्तेभ्योऽप्यापोक्लिमानीति ३-६-९-१२ ॥१८॥

अर्थ—पहेलुं, चोथुं, सातमुं अने दशमुं ए चार स्थानो केन्द्र, चतुष्टय अने कंटक नामे कहेवाय छे, ते दरेकनी पछीनां एटले बीजुं, पांचमुं, आठमुं अने अगीयारमुं ए चार स्थानो पणफर नामे कहेवाय छे. तथा तेनी पछीनां एटले त्रीजुं, छठुं, नवमुं अने बारमुं ए चार स्थानो आपोक्लिम नामे कहेवाय छे. केंद्रने विषे रहेला सर्वे ग्रहो संपूर्ण पराक्रमी होय छे, पणफरमां रहेला ग्रहो अर्ध पराक्रमी होय छे, अने आपोक्लिमने विषे तेथी अर्ध एटले चतुर्थांश पराक्रमवाळा होय छे. एम त्रैलोक्यप्रकाशमां कह्युं छे. विशेष ए छे जे—संज्ञा बे प्रकारनी होय छे, एक अन्वर्थ अने बीजी यादृच्छिकी (रूढिवाळी). तेमां दुश्चिक्य, हिबुक, त्रिकोण, द्युन, द्यू, त्रित्रिकोण, चतुरस्र, मेषूरण, रिष्य, केंद्र, चतुष्टय, कंटक, पणफर तथा आपोक्लिम अने कहेवामां आवशे एवी होरा, द्रेष्काण विगेरे

संज्ञाओ सार्थक नहीं होवाथी याद्दच्छिकी कहेवाय छे, ते संज्ञाओ यवनाचार्यना मतमां रूढ होवाथी अहीं कही छे. तथा विक्रम, सुख, वेश्म, धी, जामित्र अने छिद्र विगेरे संज्ञाओ अन्वर्थ छे, तेथी करीने इष्ट मनुष्यनां विक्रम, सुख, घर, बुद्धि, विवाह अने हानि विगेरे अनुक्रमे ते ते स्थानोथी विचाराय छे. ए ज रीते लग्नथी आरंभीने प्रथम विगेरे स्थानोनी तनु विगेरे संज्ञाओ नियमित कहेली छे, तेथी तेने अनुसारे करीने ज आगळ पर पण सर्व ठेकाणे प्रथम आदि स्थानोने ठेकाणे तनु आदि शब्दनो व्यवहार जाणी लेवो.

हवे राशिओनां गृह (घर–स्थान), होरा, द्रेष्काण, नवांश, द्वादशांश अने त्रिंशांश नामना छ वर्गनुं स्वरूप बतावे छे.—

मेषादीशाः कुजः १ शुक्रो २ बुध ३ श्चन्द्रो ४ रवि ५ र्बुधः ६ ।

शुक्रः ७ कुजो ८ गुरु ९ र्मन्दो १० मन्दो ११ जीव १२ इति क्रमात्॥१९॥

अर्थ—आ छ वर्गना अधिकारमां राशिओनुं "गृह" एवुं नाम छे. तेथी करीने मेष राशि (गृह)थी अनुक्रमे मंगळ १, शुक्र २, बुध ३, चंद्र ४, रवि ५, बुध ६, शुक्र ७, मंगळ ८, गुरु ९, शनि १०, शनि ११ अने गुरु १२, आ बार स्वामीओ छे. आनुं फळ "यो यो भावः स्वामिदृष्टो युतो वा" विगेरे पूर्वे कह्या प्रमाणे छे.

होरा राश्यर्द्धमोजर्क्षेऽर्केन्द्वोरिन्द्वर्कयोः समे ।

द्रेष्काणा भे त्रयस्तु स्व १ पञ्चम ५ त्रित्रिकोणपाः ९ ॥ २० ॥

अर्थ—राशिनो अर्ध भाग होरा कहेवाय छे, तेथी एक एक राशिमां बबे होरा होय छे. तेमां मेष विगेरे विषम राशिमां पहेली होरा रविनी अने बीजी होरा चंद्रनी होय छे, तथा वृष विगेरे सम राशिमां पहेली होरा चंद्रनी अने बीजी होरा सूर्यनी होय छे. होरानुं फळ ए छे जे—"सूर्यनी होरामां जन्मेलां बाळक तेजस्वी थाय छे, अने चंद्रनी होरामां जन्मेलां मृदु (कोमळ) थाय छे इत्यादि" ए प्रमाणे द्रेष्काण विगेरेमां पण क्रूर तथा सौम्य स्वामीने अनुसारे क्रूरपणुं अने सौम्यपणुं समजवुं. दरेक राशिमां त्रण त्रण द्रेष्काण होय छे. तेमां जे पोतानी ज राशिनो ईश होय ते प्रथम द्रेष्काणनो ईश होय छे, तेथी पांचमी राशिनो जे स्वामी होय ते बीजा द्रेष्काणनो ईश होय छे, तथा नवमी राशिनो जे स्वामी होय ते त्रीजा द्रेष्काणनो स्वामी होय छे. हरिभद्रकृत लग्नशुद्धिमां पण कह्युं छे के—

"दिक्काणो उ तिभागो सो पढमो निअयरासिअहिवइणो ।
बीओ पंचमपहुणो तइओ पुण नवमगिहवइणो ॥ १ ॥"

"दरेक राशिनो त्रीजो भाग द्रेष्काण कहेवाय छे. तेमां पोतानी राशिना अधिपतिनो पहेलो द्रेष्काण, तेथी पांचमी राशिना स्वामीनो बीजो द्रेष्काण अने नवमा गृहना स्वामीनो त्रीजो द्रेष्काण समजवो."

बृहत् जातकमां पण कह्युं छे के—"द्रेष्काणाः स्युः स्वभवनसुतत्रित्रिकोणाधिपानां" पोताना स्थानना, पांचमा स्थानना अने नवमा स्थानना स्वामीओना एम त्रण द्रेष्काणो होय छे." केटलाएक आचार्यो राशिओना सप्तांश पण कहे छे, तथा तेना स्वामीओ पण कहे छे, ते होरामकरंदमां आ प्रमाणे कह्या छे.—"स्वर्क्षादोजे युग्मभे द्यूनगेहाज्ज्ञेयास्तज्ज्ञैः सप्तमांशाः क्रमेण" विषम (एकी राशिमां) पोतानी राशिथी सप्तमांशो गणवा. सम (बेकी राशिमां) पोतानी राशिथी सातमी राशि जे होय त्यांथी सप्तमांशो गणवा. एटले मेष राशिमां पहेलो मेषनो सप्तामांश जाणवो, बीजो वृषभनो यावत् सातमो तुलानो अने वृषभ राशिमां पहेलो वृश्चिकनो, बीजो धननो यावत् सातमो वृषभनो सप्तमांश जाणवो. आ प्रमाणे तेना जाणकार पुरुषोए सप्तामांश गणवा."

हवे नवांशो कहे छे.

नवांशाः स्युरजादीनामजैणतुलकर्कतः ।
वर्गोत्तमाश्चरादौ ते प्रथमः पञ्चमोऽन्तिमः ॥ २१ ॥

अर्थ—मेषथी आरंभीने दरेक राशिमां नव नव नवांशो होय छे. तेमां मेष राशिना नवांशो मेषने आदि लइने नव सुधी गणवा, (एटले के मेष राशिमां पहेलो नवांश मेषनो, बीजो नवांश वृषनो, त्रीजो नवांश मिथुननो, ए रीते नव सुधी गणतां नवमो नवांश धननो आवे छे.) ए रीते वृषना नवांशो मकरथी गणवा, मिथुनना नवांशो तुलाथी गणवा, तथा कर्कना नवांशो कर्कथी ज गणवा. ए ज प्रमाणे सिंहना नवांशो मेषथी गणवा एटले के मेषनी ज जेवा, कन्याना वृषनी जेम, तुलाना मिथुननी जेम, अने वृश्चिकना कर्कनी जेम गणवा. ए ज रीते धन, मकर, कुंभ अने मीनना नवांशो पण अनुक्रमे मेष, वृष, मिथुन अने कर्कनी जेवा ज गणवा. आ नवांशोनुं फळ पूर्णभद्र आ प्रमाणे लखे छे.—

"ति पण चउ सत्त नवमा रासीण नवंसया सुहा जम्मे ।
पढम दु अट्ठम अहमा छट्ठो पुण मज्झिमो नेओ ॥ १ ॥"

"जन्मने विषे राशिओनो त्रीजो, पांचमो, चोथो, सातमो अने नवमो ए पांच नवांशो सुखकारक एटले उत्तम जाणवा, पहेलो, बीजो अने आठमो ए त्रण नवांशो अधम (अशुभ) जाणवा, तथा छट्ठो नवांश मध्यम जाणवो."

वर्ग एटले समूहने विषे जे उत्तम ते वर्गोत्तम कहेवाय छे, तेमां चर राशिओमां पहेलो नवांश वर्गोत्तम जाणवो, स्थिर राशिओमां पांचमो नवांश वर्गोत्तम जाणवो, अने द्विस्वभाव राशिओमां छेल्लो एटले नवमो नवांश वर्गोत्तम छे. अर्थात् आ रीते गणवाथी सर्वे राशिओमां पोतपोताना नामनो नवांश वर्गोत्तममां आवे छे. वर्गोत्तमनुं फळ ए छे जे—"वर्गोत्तममां उत्पन्न थयेला मनुष्यो पोताना कुळमां प्रधान थाय छे विगेरे." छेल्लो नवांश पण अमुक राशिमां वर्गोत्तम होवाथी ते लग्नमां आदरवा योग्य छे. नहीं तो ते छेल्लो

नवांश अग्राह्य (तजवा योग्य) थइ जाय. ते विषे पूर्णभद्र कहे छे के—"लग्नस्याद्यन्तमध्येषु बलं पूर्णाल्पमध्यमं" "आदि, अन्त अने मध्यने विषे लग्ननुं बळ (फळ) अनुक्रमे पूर्ण, अल्प अने मध्यम छे." हर्षप्रकाशमां पण कह्युं छे के—"वग्गुत्तमं विणा दिज्जा नेव चरमं नवंसगं कहवि" "वर्गोत्तम विना कोइ पण वखत छेल्लो नवांश ग्रहण करवो नहीं." वर्गोत्तमना नवांशमां रहेलो ग्रह पण वर्गोत्तम कहेवाय छे अने ते (ग्रह) अत्यंत बळवान् छे. ते विषे दैवज्ञवल्लभमां कह्युं छे के—

"बलवानुदितांशस्थः शुद्धं स्थानफलं ग्रहः ।
दद्याद्वर्गोत्तमांशे च मिश्रं शेषांशसंस्थितः ॥ १ ॥"

"उदयना अंशमां रहेलो तथा वर्गोत्तमना अंशमां रहेलो ग्रह बळवान् छे अने ते स्थाननुं फळ शुद्ध (पूर्ण) आपे छे, अने बाकीना अंशमां रह्यो होय तो ते मिश्र फळ आपे छे."

"यतो य एव राशिः स्यात्स एव च नवांशकः ।
प्रोक्तं स्थानफलं शुद्धमतोऽस्मिन् सोपपत्तिकम् ॥ २ ॥"

"कारण के जे राशि होय छे ते ज नवांशक होय छे (अर्थात् ते राशिना नामनो नवांशक ज वर्गोत्तम होय छे) तेथी करीने आ नवांशने विषे स्थानफळ जे शुद्ध कह्युं ते युक्ति युक्त छे."

हवे द्वादशांश तथा त्रिंशांशनुं स्वरूप बतावे छे.

स्युर्द्वादशांशाः स्वगृहादथेशास्त्रिंशांशकेष्वोजयुजोस्तु राश्योः ।
क्रमोत्क्रमादर्थ ५ शरा ५ ष्ट ८ शैले ७ न्द्रियेषु ५ र्भौमार्किगुरुज्ञशुक्राः २२

अर्थ—पोताना गृह (स्थान)थी बार बार द्वादशांशो होय छे. एटले के जे नामनी राशि होय ते नामनो पहेलो द्वादशांश जाणवो, बाकीना अगीयार द्वादशांशो तेनी पछीनी अगीयार राशिना नामवाळा जाणवा. जेमके मेष राशिमां पहेलो द्वादशांश मेषनो, बीजो वृषनो, त्रीजो मिथुननो, ए रीते गणतां छेल्लो (बारमो) द्वादशांश मीननो आवे. वृष राशिमां पहेलो द्वादशांश वृषनो, बीजो मिथुननो, ए रीते अनुक्रमे गणतां छेल्लो मेषनो आवे. ए रीते मिथुन राशिमां पहेलो मिथुननो, बीजो कर्कनो, ए रीते गणतां छेल्लो वृषनो आवे. आ द्वादशांशोना ईशो जे मेषादिकना ईशो छे ते ज जाणवा. हवे दरेक राशिमां त्रीश त्रीश त्रिंशांश होय छे. तेना ईशो आ प्रमाणे जाणवा—मेष, मिथुन विगेरे विषम (एकी) राशिमां पांच, पांच, आठ, सात अने पांच त्रिंशांशोना स्वामी अनुक्रमे मंगळ, शनि, गुरु, बुध अने शुक्र जाणवा, अने सम (बेकी) राशिमां ते अंशो तथा ते स्वामीओ उत्क्रमथी एटले पश्चानुपूर्वीए जाणवा. एटले के वृष, कर्क विगेरे सम राशिमां पांच, सात, आठ, पांच अने पांच, त्रिंशांशोना स्वामी शुक्र, बुध, गुरु, शनि अने मंगळ जाणवा.

छ वर्गनी स्थापना (यंत्र)

गृहाणि	गृहेशाः	होरा		द्रेष्काणेशाः			नवांशेशाः	द्वादशांशेशाः	त्रिंशांशेशाः
मेष	मंगळ	रवि	चंद्र	मंगळ	रवि	गुरु	मं शु बु चं र बु शु मं गु	मं शु बु चं र बु शु मं गु श श गु	५ ५ ८ ७ ५ मं श गु बु शु
वृष	शुक्र	चंद्र	रवि	शुक्र	बुध	शनि	श श गु मं शु बु चं र बु	शु बु चं र बु शु मं गु श श गु मं	५ ७ ८ ५ ५ शु बु गु श मं
मिथुन	बुध	रवि	चंद्र	बुध	शुक्र	शनि	शु मं गु श श गु मं शु बु	बु चं र बु शु मं गु श श गु मं शु	५ ५ ८ ७ ५ मं श गु बु शु
कर्क	चंद्र	चंद्र	रवि	चंद्र	मंगळ	गुरु	चं र बु शु मं गु श श गु	चं र बु शु मं गु श श गु मं शु बु	५ ७ ८ ५ ५ शु बु गु श मं
सिंह	रवि	रवि	चंद्र	रवि	गुरु	मंगळ	मं शु बु चं र बु शु मं गु	र बु शु मं गु श श गु मं शु बु चं	५ ५ ८ ७ ५ मं श गु बु शु
कन्या	बुध	चंद्र	रवि	बुध	शनि	शुक्र	श श गु मं शु बु चं र बु	बु शु मं गु श श गु मं शु बु चं र	५ ७ ८ ५ ५ शु बु गु श मं
तुला	शुक्र	रवि	चंद्र	शुक्र	शनि	बुध	शु मं गु श श गु मं शु बु	शु मं गु श श गु मं शु बु चं र बु	५ ५ ८ ७ ५ मं श गु बु शु
वृश्चिक	मंगळ	चंद्र	रवि	मंगळ	गुरु	चंद्र	चं र बु शु मं गु श श गु	मं गु श श गु मं शु बु चं र बु शु	५ ७ ८ ५ ५ शु बु गु श मं
धन	गुरु	रवि	चंद्र	गुरु	मंगळ	रवि	मं शु बु चं र बु शु मं गु	गु श श गु मं शु बु चं र बु शु मं	५ ५ ८ ७ ५ मं श गु बु शु
मकर	शनि	चंद्र	रवि	शनि	शुक्र	बुध	श श गु मं शु बु चं र बु	श श गु मं शु बु चं र बु शु मं गु	५ ७ ८ ५ ५ शु बु गु श मं
कुंभ	शनि	रवि	चंद्र	शनि	बुध	शुक्र	शु मं गु श श गु मं शु बु	श गु मं शु बु चं र बु शु मं गु श	५ ५ ८ ७ ५ मं श गु बु शु
मीन	गुरु	चंद्र	रवि	गुरु	चंद्र	मंगळ	चं र बु शु मं गु श श गु	गु मं शु बु चं र बु शु मं गु श श	५ ७ ८ ५ ५ शु बु गु श मं

हवे ग्रहोना तथा लग्नना स्पष्टीकरण माटे तेनी शुद्धिने उपयोगी सर्व षड्वर्गनुं साधारण लिप्तामान कहे छे.—

षड्वर्गेऽष्टादश१८०० नव ९०० षट् ६०० द्वे २०० सार्द्धं शतानि षष्टिश्च ६०।
क्रमशो गृहहोरादौ लिप्ताः स्युः प्रभुरिह नवांशः ॥ २३ ॥

अर्थ—छ वर्गनी मध्ये मेषादिक गृहो (स्थानो)मांना दरेकने अढारसो अढारसो लिप्ताउ छे, होरानी लिप्ताउ नवसो छे, केमके गृहथी अर्धी होरा छे. द्रेष्काणनी लिप्ताउ छसो छे, कारण के गृहथी त्रीजे भागे द्रेष्काण छे, ए रीते नवांशोनी बसें लिप्ताउ, द्वादशांशनी दोढसो लिप्ताउ अने त्रिंशांशनी साठ लिप्ताउ छे. साठ विलिप्ता (पळ)नी एक लिप्ता (घडी) थाय छे एवुं आगळ कहेशे. आ छ वर्गनुं फळ ए छे जे—"तिथि विगेरेना बळथी चंद्रनुं बळ सो गणुं छे, तेनाथी लग्न हजार गणुं वधारे बळवान् छे, तेनाथी पण होरा विगेरे सर्वे उत्तरोत्तर पांच पांच गणा वधारे बळवान् छे." ए प्रमाणे बृहत् जातक वृत्तिमां कह्युं छे. हवे आ छए वर्गमां नवांशनुं ज प्रधानपणुं छे ते कहे छे.—आ छए वर्गमां प्रतिष्ठा, विवाह विगेरे सर्वे कार्योने विषे नवांश ज वधारे समर्थ (बळवान्) छे. ए विषे लल्ल कहे छे के—

"स्वार्द्धे नक्षत्रफलं तिथ्यर्धे तिथिफलं समादेश्यम् ।
होरायां वारफलं लग्नफलं त्वंशके स्पष्टम् ॥ १ ॥"

"नक्षत्रनुं फळ पोताना अर्ध भागमां स्पष्ट छे, तिथिना अर्ध भागमां तिथिनुं फळ स्पष्ट छे, होराने विषे वारनुं फळ स्पष्ट छे, तथा लग्ननुं फळ अंशकमां (नवांशमां) स्पष्ट छे."

अहो नवांशनुं केवुं प्राधान्य छे ? दैवज्ञवल्लभे कह्युं छे के—

"लग्ने शुभेऽपि यद्यंशः क्रूरः स्यान्नेष्टसिद्धिदः ।
लग्ने क्रूरेऽपि सौम्यांशः शुभदोऽंशो बली यतः ॥ १ ॥"

"लग्न शुभ होय छतां जो अंश (नवांश) क्रूर होय तो ते इष्ट सिद्धिने आपतो नथी, अने लग्न क्रूर होय छतां अंश सौम्य होय तो शुभकारक छे, कारण के अंश ज बळवान् छे." तेमज "क्रूर अंश (नवांश)मां रहेलो सौम्य ग्रह पण क्रूर थाय छे, अने सौम्य अंशमां रहेलो क्रूर ग्रह पण सौम्य थाय छे." एम लल्ल कहे छे. "क्रूर अंशमां रहेला सौम्य ग्रहनी दृष्टि पण दुष्ट थाय छे, अने सौम्य अंशमां रहेला क्रूर ग्रहनी दृष्टि पण शुभ (सौम्य) थाय छे." तथा ग्रहगोचरनी शुद्धिना विचारने समये "राशिना गोचरथी ग्रह शुभ होय तोपण नवांशना गोचरे करीने जो शुभ होय तो ज ते शुभ थाय छे." इत्यादि लल्ल तथा श्रीपति कहे छे.

हवे ग्रह पोताना वर्गमां रहेलो छे के बीजा वर्गमां रहेलो ? ते कहे छे.

षण्णां त्र्यादिषु वर्गेषु यो ग्रहः स्वेष्ववस्थितः ।
स स्ववर्गगतो ज्ञेय एवमेवान्यवर्गगः ॥ २४ ॥

अर्थ—कोइ पण ग्रह छ वर्गमांना कोइ पण पोताना त्रण, चार अथवा उत्कृष्टथी पांच वर्गमां रहेलो होय, तो ते स्ववर्गमां रहेलो छे एम जाणवुं, अने एवी ज रीते एटले त्रण, चार के पांच वर्गमां रहेलो होय, पण ते बीजाना वर्गमां रहेलो होय तो ते अन्य वर्गमां रहेलो जाणवो.

कोइ पण ग्रह उत्कृष्टथी पांच वर्ग सुधी ज आवी शके छे, परंतु कदापि छए वर्गमां आवी शकतो नथी, कारण के सूर्य अने चंद्र ए बे ग्रहो त्रिंशांशमां आवता ज नथी, तथा मंगळ, बुध, गुरु, शुक्र अने शनि ए ग्रहो होरामां आवता ज नथी. आ प्रमाणे जे ग्रह पोताना पांच वर्ग सुधीमां आवतो होय ते स्ववर्गमां आवेलो होवाथी ज बळवान् छे, अने अन्य वर्गमां आवेलो होय तो ते निर्बळ छे. विशेष ए छे जे—"जे नवांशमां छ, पांच के चार गृहादिक मध्ये सौम्य ग्रहस्वामी मळे तो छ वर्गनो, पांच वर्गनो के चार वर्गनो ते नवांश सौम्य होवाथी प्रतिष्ठादिकना लग्नने विषे विशेषे करीने ग्रहण करवा लायक छे. ते सौम्य ग्रहनो आ रीते निश्चय करेलो छे.—

"सत्तमनवमा मेसे १ पंचमतइया विसे २ मिहुणि छट्ठो ३ ।
पढमतइया य कक्के ४ सिंहे छट्ठो ५ कण्णी तइओ ६ ॥ १ ॥
अट्ठमनवमा य तुले ७ विच्छियलग्गे चउत्थय नवंसो ८ ।
धणुलग्गि छट्ठसत्तमनवमा ए मयरंमि पंचमओ १० ॥ २ ॥
छट्ठट्ठमा य कुंभे ११ पढमो तइओ अ मीण लग्गम्मि ।
चउपणवग्ग छ वग्गो एएसु नवंसएसु सुहो ॥ ३ ॥"

"मेष लग्नमां सातमो अने नवमो नवांश, वृषमां पांचमो अने त्रीजो, मिथुनमां छठ्ठो, कर्कमां पहेलो अने त्रीजो, सिंहमां छठ्ठो, कन्यामां त्रीजो, तुलामां आठमो अने नवमो, वृश्चिक लग्नमां चोथो नवांश, धन लग्नमां छठ्ठो, सातमो अने नवमो, मकरमां पांचमो, कुंभमां छठ्ठो अने आठमो तथा मीन लग्नमां पहेलो अने त्रीजो, आटला नवांशोमां चार वर्ग, पांच वर्ग के छ वर्ग होय ते शुभ छे." आटला नवांशोमां चार वर्गनी शुद्धि तो सर्वने छे, परंतु पांच अने छ वर्गनी शुद्धि तो केटलाएक नवांशोमां संपूर्ण रीते छे, अने केटलाएकमां केटलेक अंशे ज छे. तेनी स्पष्टता आ ग्रंथना छेल्ला श्लोकनी टीकामां लखेली छे, त्यांथी जाणी लेवी. केटलाएक आचार्यो त्रण ज वर्गनी शुद्धिए करीने अने बीजा

केटलाक नवांशनी ज प्रधानताने लीधे एक तेने ज सौम्यने लग्ने बाकीना वर्गनी शुद्धि विना पण लग्ननो आदर करे छे. तेथी करीने अहीं तत्त्व ए छे जे लग्नने विषे अवश्य ग्रहण करवा लायक नवांशनी शुद्धि कर्या पछी जेम जेम वधारे शुभ वर्गनो लाभ थाय तेम तेम प्रतिष्ठादिक शुभ कार्यमां तेनुं विशेषे करीने ग्रहण करवुं.

दिशाओना स्वामी तथा ग्रहोनी सौम्यता क्रूरता कहे छे.—

ग्रहाः स्युरैन्द्र्याद्यधिपा दिनेश१शुक्रा२र३राह्वा४र्कि५ शशि ६ ज्ञ७ जीवाः ८।
पापाः कृशेन्द्वर्कतमोऽसितारास्तैः संयुतो ज्ञश्च परे तु सौम्याः ॥ २५ ॥

अर्थ—पूर्व दिशानो अधिपति सूर्य छे, अग्नि कोणनो शुक्र, दक्षिणनो मंगळ, नैर्ऋत्यनो राहु, पश्चिमनो शनि, वायव्यनो चंद्र, उत्तरनो बुध अने ईशाननो अधिपति गुरु छे. आनुं प्रयोजन ए छे जे—"केंद्रमां रहेला बळवान् ग्रहने अनुसारे चोरादिक कइ दिशामां गया छे तेनुं ज्ञान थाय छे." कृश चंद्र, (एटले वदि चौदशथी त्रण दिवसमां चंद्र कळा रहित होय छे, माटे ते कृश चंद्र कहेवाय छे) सूर्य, राहु, शनि अने मंगळ एटला ग्रह पापी–क्रूर छे, तथा आटला ग्रहे करीने युक्त एटले आमांना कोइ पण ग्रहनी साथे एक स्थानमां रहेलो बुध पण क्रूर छे, अने बाकीना एटले पुष्ट (•कळावाळो) चंद्र, क्रूर ग्रहथी जूदो रहेलो बुध, गुरु अने शुक्र एटला ग्रहो सौम्य छे. आनुं फळ ए छे जे क्रूर अने सौम्य ग्रहना बलिष्ठपणाने लीधे (अनुसारे) उत्पन्न थयेला बाळकना स्वभाव विगेरेनुं ज्ञान थाय छे. विशेष आ प्रमाणे छे.—

"रक्तश्यामो भास्करो १ गौर इन्दु २ नात्युच्चांगो रक्तगौरश्च वक्रः ३ ।
दुर्वाश्यामो ज्ञो ४ गुरुर्गौरगात्रो ५ श्यामः शुक्रो ६ भास्करिः कृष्णदेहः ७ ॥ १ ॥"

"सूर्य रक्त तथा श्याम वर्णवाळो छे, चंद्र गौर वर्णवाळो छे, मंगळ रक्त तथा गौर छे अने अत्यंत उंचा शरीरवाळो नथी, बुध दुर्वा (धो) जेवो श्याम छे, गुरु गौर गात्रवाळो छे, शुक्र श्याम छे अने शनि कृष्ण देहवाळो छे."

आनुं फळ पण ए ज छे के बळवान् ग्रहना जेवी बाळकनी मूर्त्ति (वर्ण) होय छे, अथवा लग्नमां ते ज वखते जे नवांश होय तेना स्वामीना जेवी तेनी मूर्त्ति (वर्ण) होय छे.

हवे केतुना स्थाननो निर्णय करे छे.

प्रश्नादिष्वपरे केतुं तमसः सप्तमं विदुः ।
शुक्रेन्दू योषितौ मन्दबुधौ क्लीबौ परे नराः ॥ २६ ॥

अर्थ—केटलाएक आचार्यो प्रश्नादिकमां केतुने राहुना स्थानथी सातमे स्थाने कहे छे. प्रश्नादिक कहेवाथी जातकमां, ग्रहगोचरमां तथा प्रतिष्ठादिकना लग्नमां केतुनो

तेवा प्रकारनो उपयोग नथी एम सूचव्युं छे. केतुना स्थानना निर्णय माटे भुवनदीपकमां कह्युं छे के—

"राहुच्छाया स्मृतः केतुर्यत्र राशौ भवेदयम् ।
तस्मात्सप्तमके केतू राहुः स्याद्यन्नवांशके ॥ १ ॥
तस्मादंशे सप्तमे स्यात्केतु(तो)रंशो नवांशकः ।"

"केतुने राहुनी छायारूप कहेलो छे, तेथी करीने राहु जे राशिमां होय ते राशिथी सातमी राशिए केतु होय छे. वळी राहु जे नवांशकमां होय छे, तेथी सातमे नवांशे केतुनो नवांशक होय छे. आनो भावार्थ ए छे जे राशिना जेटलामा नवांशकमां राहु होय, ते राशिथी सातमी राशिना तेटलामा ज नवांशकमां केतु पण होय छे, परंतु राहुनी स्थितिवाळा नवांशथी गणीए तो केतुनी स्थितिवाळो नवांशक सातमो ज आवे. जेमके मेषना पहेला मेष नामना नवांशकमां राहु होय त्यारे तुलाना पहेला तुला नामना नवांशमां केतु होय छे, तेथी मेष नामना नवांशथी गणतां तुला नामनो नवांश सातमो ज छे. वळी मेषना नवमा धन नामना नवांशमां राहु होय तो तुलाना नवमा मिथुन नामना नवांशमां केतु होय, तेथी धनुष (धन) नामना नवांशथी गणतां मिथुन नामनो नवांश सातमो ज छे. इत्यादि.

हवे मूळ श्लोकना उत्तरार्धनो अर्थ आ प्रमाणे छे—शुक्र अने चंद्र स्त्रीरूपे छे, शनि अने बुध नपुंसक छे, अने बाकीना एटले रवि, मंगळ अने गुरु पुरुष छे. शनि अने बुध पण स्त्री ज छे एम कोइ आचार्य कहे छे. आनुं फळ ए छे जे जन्मना विचारमां अथवा गयेली वस्तुना विचारमां जे ग्रह बळवान् होय तेने अनुसारे स्त्री विगेरे पोताना वर्गनो बोध थाय छे.

हवे ब्राह्मणादिक वर्णोना स्वामी कहे छे.—

वर्णानां जीवसितौ १ रविभौमा २ विन्दु ३ रिन्दुज ४ श्चेशाः ।
संकरजानां तु शनिर्जीव १ सिता २ रें ३ दुजाश्च ४ वेदानाम् ॥ २७ ॥

अर्थ—वर्णोनी मध्ये ब्राह्मणोना स्वामी गुरु अने शुक्र छे, क्षत्रियोना रवि अने मंगळ स्वामी छे, वैश्यनो स्वामी चंद्र छे, अने शूद्रनो स्वामी बुध छे. संकरज एटले मूर्धावसिक्तथी आरंभीने रथकार (सुथार)नी जाति सुधीना निघंटुमां कहेला तेर भेदोवाळी मिश्र जाति अर्थात् गमे तेवी बे जातिथी उत्पन्न थयेला माणसो संकर कहेवाय छे, ते सर्वनो स्वामी शनि छे. ऋग्वेदनो स्वामी गुरु छे, यजुर्वेदनो स्वामी शुक्र छे, सामवेदनो स्वामी मंगळ छे अने अथर्ववेदनो स्वामी बुध छे. आनुं फळ ए छे जे—गुरु विगेरेना उदय तथा अस्तमां ते ते वेदवाळाने सुख दुःखादिकनी प्राप्ति थाय छे.

हवे ग्रहोनां स्थान, दिशा, काळ, चेष्टा, दृष्टि तथा स्वाभाविक बळ ए नामनां छ प्रकारनां बळने कहे छे. तेमां प्रथम स्थानबळ कहे छे.

ते स्थानबलिनो मित्रस्वगृहोच्चनवांशगाः ।
स्त्रीराशिष्विन्दुभृगुजौ पुंराशिषु पुनः परे ॥ २७ ॥

अर्थ—ते सर्वे ग्रहो मित्रना घरमां, पोताना घरमां, पोताना उच्च स्थानमां (मित्रना उच्च स्थानमां, मित्रना नवांशमां) अने पोताना नवांशमां रह्या होय तो ते बळवान् छे. स्त्री राशिमां चंद्र अने शुक्र बळवान् छे, तथा बीजा पांच ग्रहो पुरुष राशिमां बळवान् छे. अहीं गृह (घर) शब्दना उपलक्षणथी मूळ त्रिकोण पण लेवानो छे. ते विषे त्रैलोक्यप्रकाशमां कह्युं छे के—"मित्र ५ स्वर्क्ष १० त्रिकोणो १५ च्चे २० फलं दत्तेऽह्निवृद्धितः" "मित्रना स्थानमां रहेलो ग्रह एक पादनुं एटले विंशोपकनी अपेक्षाए पांच वसानुं फळ आपे छे, पोताना स्थानमां रहीने बे पादनुं एटले दश वसानुं फळ आपे छे, त्रिकोणमां रह्यो होय तो त्रण पादनुं एटले पंदर वसानुं फळ आपे छे, अने उच्च स्थानमां रह्यो होय तो चारे पादनुं एटले वीशे वसानुं फळ आपे छे."आगळ कहेवामां आवनार अधिमित्रांशमां वर्गोत्तमांशमां अथवा लग्नना उदितांशमां रहेलो ग्रह बळवान् छे, ए तो स्फुट ज छे.

। इति स्थानबलं । १

हवे दिग्बळ कहे छे.—

लग्नाद्यु(द्व्यु)त्क्रमकेन्द्राख्यदिक्षु प्राच्यादिषूद्बलाः ।
जीवज्ञौ १ भास्करक्ष्माजौ २ शनिः ३ सितसितद्युती ४ ॥ २९ ॥

अर्थ—लग्नथी आरंभीने उत्क्रम (पश्चानुपूर्वीना क्रम)थी केन्द्र नामनी पूर्वादिक दिशाओमां अनुक्रमे गुरु अने बुध, रवि अने मंगळ, शनि, तथा शुक्र अने चंद्र बळवान् छे. भावार्थ ए छे के—उत्क्रमथी केंद्र स्थान लेतां पहेलुं, दशमुं, सातमुं अने चोथुं स्थान आवे. तेथी पहेलुं (लग्न) स्थान ए पूर्व दिशा थइ, तेमां गुरु अने बुध बळवान् छे. दशमुं स्थान दक्षिण दिशा, तेमां रवि अने मंगळ बळवान् छे. सातमुं स्थान पश्चिम दिशा, तेमां शनि बळवान् छे, तथा चोथुं स्थान उत्तर दिशा, तेमां शुक्र अने चंद्र बळवान् छे. आ केन्द्र स्थानना आंतरामां जे अगीयारमुं अने बारमुं विगेरे बबे स्थानो रह्यां छे तेने अग्नि खूणा विगेरे चार विदिशाओ जाणवी अने तेमनुं पूर्वादिकनी जेवुं ज फळ जाणवुं, केमके विदिशाओ दिशाओने ज अनुसरे छे.

। इति दिग्बलं । २

हवे काळबळ कहे छे.—

बलिनोऽह्नि गुरुसितार्काः सदा बुधो निशि तु चन्द्रकुजमन्दाः ।
स्वदिनादिषु च सितासितपक्षद्वितयेषु शुभक्रूराः ॥ ३० ॥

अर्थ—गुरु, शुक्र अने रवि ए त्रण ग्रह दिवसे बळवान् छे, बुध रात्रि दिवस बळवान् छे, तथा चंद्र, मंगळ अने शनि ए त्रण ग्रहो रात्रिए बळवान् छे. पोताना दिवसमां, पोताना वर्षमां, पोताना मासमां अने पोतानी काळहोरामां ते ते दिनादिकना स्वामीरूप ग्रहो बळवान् छे. ते अधिपति (स्वामी)छे आ प्रमाणे.—

"यस्य वारस्य मध्ये स्यात् शुक्लप्रतिपदो मुखम् ।
तन्मासेशः स विज्ञेयश्चैत्रे वर्षाधिपः पुनः ॥ १ ॥"

"जे वारना ग्रहमां शुक्ल प्रतिपद्नो प्रारंभ होय ते ग्रह ते मासनो स्वामी होय छे, परंतु वर्षनो जे स्वामी होय ते चैत्र मासनो स्वामी होय छे."

वर्षनो स्वामी जाणवा माटे व्यवहारसारमां आ प्रमाणे छे.—

"चैत्रादिमेषसंक्रान्तिकर्कसंक्रान्तिवासराः ।
प्रतिवर्षं क्रमाज्ज्ञेया राजानो मंत्रिसस्यपाः ॥ १ ॥"

"चैत्र मासना पहेला वारने वर्षनो राजा (स्वामी) जाणवो, मेष संक्रांतिना वारने वर्षनो मंत्री जाणवो अने कर्क संक्रांतिना वारने वर्षनो सस्याधिप (धान्येश) जाणवो. एम दरेक वर्षे जाणवुं."

दिवसनो स्वामी ते दिवसनो वार ज जाणवो, अने काळहोराना स्वामी तो प्रथम कह्या छे ते जाणवा. आनुं फळ मुहूर्त्तसारमां कह्युं छे के—

"वर्षमासद्युहोरेशैर्वृद्धिः पञ्चोत्तरा फले ।"

"वर्षनो स्वामी (ग्रह) आखा वर्ष सुधी एक पादनुं फळ एटले पांच वसा फळ आपे छे, मासनो स्वामी आखा मासमां दश वसा फळ आपे छे, दिवसनो स्वामी आखो दिवस पंदर वसा फळ आपे छे, अने होरानो स्वामी पोतानी होरामां पोताना वारना योगने लीधे पूर्ण एटले वीशे वसा फळ आपे छे."

शुक्लपक्षमां सौम्य ग्रहो बळवान् छे अने कृष्णपक्षमां क्रूर ग्रहो बळवान् छे.

। इति कालबलं । २

हवे चेष्टाबळ कहे छे.—

रविचन्द्रावुदगयने विपुलस्निग्धाश्च वक्रगाश्चान्ये ।
बलिनो युधि चोत्तरगा व्यर्केन्दुयुताश्च चेष्टाभिः ॥ ३१ ॥

अर्थ—रवि अने चंद्र ए बे ग्रहो उत्तरायणमां बळवान् छे, एटले के मकर विगेरे छ राशिमां बळवान् छे, पण कर्क विगेरे छ राशिमां बळवान् नथी, अने बीजा पांच ग्रहो विपुल, स्निग्ध अने वक्र गतिवाळा होय त्यारे ते बळवान् छे. विपुल एटले घणा दिवसथी उदय पामेला अने विशाळ स्थूल बिंबवाळा होय, पण बाळक, वृद्ध के अस्त पामेला न होय. अहीं उदय थया पछी ग्रहोनुं बाळपणुं कहेवाय छे, अने अस्त थया पहेलां वृद्धत्व कहेवाय छे. सप्तर्षि कहे छे के "बाल्यावस्थामां तथा वृद्धावस्थामां सर्वे ग्रहो सात सात दिवस निर्बळ होय छे." वळी ते पांचे ग्रहो स्निग्ध होय एटले के स्पष्ट किरणवाळा अर्थात् आकाशमां देखाता होय, आ स्निग्धपणुं सूर्यथी अत्यंत दूर होय त्यारे होय छे. वळी ते पांचे ग्रहो वक्र गतिवाळा होय तो ते बळवान् होय छे. पाकश्री ग्रंथमां कह्युं छे के "वक्र गतिमां सर्वे ग्रहोनुं बळ मूळ त्रिकोणनी जेटलुं होय छे." परंतु हर्षप्रकाशमां तो एवुं कह्युं छे के—"वक्की पावो बली सुहो सिग्घो" "वक्री थयेलो बळवान् ग्रह दुष्ट छे, अने स्निग्ध बळवान् ग्रह शुभ छे." मंगळ विगेरे पांचे ग्रहोनी गति प्रश्नशतक वृत्तिमां आ प्रमाणे छे.—

"सूर्यभु(मु)क्ता उदीयन्ते शीघ्रा अर्के द्वितीयगे ।
समं तृतीयगे यान्ति मन्दा भानौ चतुर्थगे ॥ १ ॥
वक्राः पञ्चमषष्ठेऽर्के तेऽतिवक्रा नगाष्टगे ।
नवमे दशमे मार्गाः सरला भव ११ रिष्यगे १२ ॥ २ ॥"

"सर्वे (पांचे) ग्रहो सूर्ये भोगव्या पछी एटले सूर्यथी छूटा थया पछी उदय पामे छे, सूर्य बीजी राशिमां जाय त्यारे तेओ शीघ्र गतिवाळा थाय छे, सूर्य त्रीजे स्थाने होय त्यारे तेओ सम गति करे छे, सूर्य चोथे होय त्यारे मंद गतिवाळा होय छे, सूर्य पांचमे तथा छठ्ठे होय त्यारे तेओ वक्र गतिवाळा होय छे, सूर्य सातमे अने आठमे होय त्यारे तेओ अति वक्र गतिवाळा होय छे, सूर्य नवमे अने दशमे होय त्यारे तेओ मार्गगामी थाय छे, तथा सूर्य अगीयारमे अने बारमे होय त्यारे तेओ सरल गतिवाळा (सीधा) होय छे." अहीं सूर्य पांचमे छठ्ठे होय एम जे कह्युं ते शनि, मंगळ अने गुरुने आश्रीने कह्युं छे, केमके बुध अने शुक्र तो सूर्यनी समीपे रहीने ज वक्र थाय छे. ए ज रीते मार्गगामीमां, पण जाणवुं. एटले के शनि, मंगळ अने गुरुने आश्रीने ज जाणवुं.

आकाशमां एक ज नक्षत्रना पादमां परस्पर ताराओ अने ग्रहनो जे योग थवो ते युद्ध कहेवाय छे. तेथी करीने युद्धमां सूर्य रहित अने चंद्र सहित एवा सर्वे ग्रहो उत्तरमां गति करनारा होय तो तेओ चेष्टाए करीने बळवान् छे. एटले के उत्तर गामी ग्रहोनो जय थाय छे माटे ते बळवान् छे, अने दक्षिण गामीनो पराजय थाय छे माटे ते निर्बळ छे.

वराहना मतमां तो शुक्रने दक्षिण गामी होय तो बळवान् कह्यो छे. ते विषे वराह-संहितामां कह्युं छे के—

"सर्वे बलिन उदक्स्था दक्षिणदिक्स्थो बली शुक्रः।"

"सर्वे ग्रहो उत्तरमां रह्या होय तो बळवान् छे, अने शुक्र तो दक्षिणमां रह्यो होय तो ते बळवान् छे. । इति चेष्टाबलं । ४

हवे दृष्टिबळ कहे छे.—

सौम्यैर्दृग्बलिनो दृष्टा बले नैसर्गिके पुनः ।
मन्दारज्ञेज्यशुक्रेन्दुभास्कराः स्युर्बलोत्तराः ॥ ३२ ॥

अर्थ—सौम्य ग्रहोए तथा उपलक्षणथी मित्र ग्रहोए पण एक पाद, बे पाद, त्रण पाद के चार पादनी दृष्टिए जोयेला होय तो ग्रहो अनुक्रमे तेटलां पाद एटले तेटला वसा बळवान् कहेवाय छे. । इति दृग्बलं । ५

ज्यारे बे अथवा तेथी वधारे ग्रहोनुं बीजा ग्रहनी सरखुं बळ थाय त्यारे स्वाभाविक बळे करीने ज सबळपणुं अने निर्बळपणुं जणाय छे. तेथी करीने स्वाभाविक बळ कहे छे.—स्वाभाविक बळनो विचार करीए तो शनि, मंगळ, बुध, गुरु, शुक्र, चंद्र अने सूर्य ए ग्रहो उत्तरोत्तर अधिक बळवान् छे, एटले के शनिथी मंगळ वधारे बळवान्, तेनाथी बुध वधारे बळवान् विगेरे. राहु तो सूर्यथी पण वधारे बळवान् छे.

। इति स्वाभाविकबलं । ६

उपर जे सौम्य ग्रहोए जोयेला होय एम दृष्टिबळमां कह्युं तेमां दृष्टिनो प्रकार कहे छे.—

पश्यन्ति पादतो वृद्ध्या भ्रातृ ३ व्योम्नी १० त्रित्रिकोणके ५–९ ।
चतुरस्रे ४–८ स्त्रियं ७ स्त्रीवन्मतेनाया ११ दिमा १ वपि ॥ ३३ ॥

अर्थ—सर्वे ग्रहो पोतपोताना स्थानथी त्रीजा तथा दशमा स्थानने एक पाद विंशोपकनी अपेक्षाए पांच वसा दृष्टिए जुए छे, नवमा अने पांचमा स्थानने बे पाद एटले दश वसा दृष्टिए जुए छे, चोथा अने आठमा स्थानने त्रण पाद एटले पंदर वसा दृष्टिए जुए छे, अने सातमा स्थानने चारे पादनी संपूर्ण (वीशे वसा) दृष्टिए जुए छे. कोइ आचार्यनो एवो मत छे के पहेला (पोताना) अने अगीयारमा स्थानने पण स्त्रीनी एटले सातमा स्थाननी जेम पूर्ण दृष्टिए जुए छे. बाकीनां एटले बीजुं, छठुं अने बारमुं ए त्रण स्थानोने बिलकुल जोता नथी. एम अर्थापत्तिथी सिद्ध थयुं. ज्यां जेटला वसा दृष्टि होय त्यां तेटला वसा फळ पण जाणी लेवुं.

अहीं कोइ शंका करे छे के—"शुं सर्वे ग्रहोनी सातमा स्थानमां ज पूर्ण दृष्टि छे? के कोइने बीजे स्थाने पण पूर्ण दृष्टि छे?" ते पर कहे छे.—

पश्येत्पूर्णं शनिर्भ्रातृव्योम्नी धर्मधियौ गुरुः ।
चतुरस्रे कुजोऽर्केन्दुबुधशुक्रास्तु सप्तमम् ॥ ३४ ॥

अर्थ—शनि त्रीजा अने दशमा स्थानने पूर्ण दृष्टिए जुए छे, गुरु नवमा अने पांचमा स्थानने पूर्ण दृष्टिए जुए छे, मंगळ चोथा अने आठमा स्थानने संपूर्ण दृष्टिए जुए छे, तथा सूर्य, चंद्र, बुध अने शुक्र तो सातमा स्थानने पूर्ण दृष्टिए जुए छे.

भावार्थ—त्रीजा अने दशमा स्थान उपर बीजा ग्रहोनी एक पाद दृष्टि छे, पण शनिनी तो पूर्ण दृष्टि छे, अने नवमा तथा पांचमा पर, चोथा तथा आठमा पर अने सातमा पर जेम बीजा ग्रहोनी दृष्टि अनुक्रमे बे पाद, त्रण पाद अने संपूर्ण दृष्टि छे, ते ज रीते शनिनी पण छे, तेथी करीने शनिनी एक पाद दृष्टि कोइ पण स्थाने नथी एम सिद्ध थयुं. तथा नवमा अने पांचमा स्थान पर अन्य ग्रहोनी बे पाद दृष्टि छे, पण गुरुनी तो पूर्ण दृष्टि छे, अने जेम बीजा ग्रहोनी दृष्टि त्रीजा तथा दशमा स्थान पर, चोथा तथा आठमा स्थान पर अने सातमा स्थान पर अनुक्रमे एक पाद, त्रण पाद अने पूर्ण (चार पाद) छे तेम गुरुनी पण तेटली ज दृष्टि छे, तेथी करीने बे पाद दृष्टि कोइ पण स्थाने नथी एम सिद्ध थयुं. तथा चोथे अने आठमे स्थाने अन्य ग्रहोनी त्रण पाद दृष्टि छे, परंतु मंगळनी तो पूर्ण दृष्टि छे. जेम त्रीजे तथा दशमे स्थाने, नवमे तथा पांचमे स्थाने अने सातमे स्थाने अन्य ग्रहोनी अनुक्रमे एक पाद, बे पाद अने चारे पाद (पूर्ण) दृष्टि छे ते ज रीते मंगळनी पण छे, तेथी करीने मंगळनी त्रण पाद दृष्टि कोइ पण स्थाने नथी एम सिद्ध थयुं. सूर्य, चंद्र, बुध अने शुक्र ए चार ग्रहो तो सातमा स्थानने ज पूर्ण दृष्टिए जुए छे, बीजा कोइ पण स्थानने पूर्ण दृष्टिए जोता नथी. जे स्थानोने पादादिक दृष्टिए जुए छे, ते प्रथम कही गया छे.

ज्योतिषसारमां तो आ प्रमाणे कह्युं छे के—"सर्वे ग्रहोनी (कोइ पण ग्रहनी) बीजे अने बारमे स्थाने दृष्टि पडती नथी, छठे अने आठमे स्थाने एक पाद दृष्टि पडे छे, त्रीजे अने अगीयारमे स्थाने बे पाद दृष्टि पडे छे, नवमा अने पांचमा स्थाने त्रण पाद दृष्टि पडे छे अने केंद्रनां चारे स्थानो उपर पूर्ण दृष्टि पडे छे." वळी ताजिकमां तो बीजुं, बारमुं, छठुं अने आठमुं ए चार स्थाने बिलकुल दृष्टि ज नथी.

स्थानबळ कहेती वखते मित्र स्थान अने पोतानुं स्थान ए विगेरे जे कह्युं छे तेथी स्थान मैत्र्यादिक कहे छे.—

रवेः शुक्रशनी शत्रू ज्ञः समः सुहृदः परे ।
चन्द्रस्यार्कबुधौ मित्रे कुजगुर्वादयः समाः ॥ ३५ ॥

अर्थ—शुक्र अने शनि रविना शत्रु छे, बुध सम (नहीं शत्रु तेम नहीं मित्र) छे, अने बीजा (चंद्र, मंगळ, गुरु) मित्रो छे. चंद्रना सूर्य अने बुध मित्र छे, अने बाकीना मंगळ, गुरु विगेरे सम छे. (शत्रु कोइ नथी.)

कुजस्य ज्ञो रिपुर्मध्यौ शनिशुक्रौ परेऽन्यथा ।
बुधस्य मित्रे शुक्रार्कौ शत्रुरिन्दुः समाः परे ॥ ३६ ॥

अर्थ—मंगळनो शत्रु बुध छे, शनि अने शुक्र मध्य छे, अने बीजा मित्र छे. बुधना मित्र शुक्र अने सूर्य छे, चंद्र शत्रु छे, अने बीजा सम छे.

जीवस्यार्कात्रयो मित्राण्यार्किर्मध्यः परावरी ।
कवेरमित्रे मित्रेन्दू मित्रे ज्ञार्की समावुभौ ॥ ३७ ॥

अर्थ—गुरुना रवि, चंद्र अने मंगळ ए त्रण मित्रो छे, शनि मध्य (सम) छे तथा बीजा (बुध अने शुक्र) शत्रु छे. शुक्रना सूर्य अने चंद्र शत्रु छे, बुध अने शनि मित्र छे तथा मंगळ अने गुरु सम छे.

मंदस्य ज्ञसितौ मित्रे गुरुर्मध्यः परेऽरयः ।
तत्कालसुहृदो द्वि २ त्रि ३ सुख ४ लाभा ११ न्त्य १२ कर्म १० गाः ॥३८॥

अर्थ—शनिना बुध अने शुक्र मित्र छे, गुरु सम छे, अने बीजा एटले सूर्य, चंद्र अने मंगळ ए त्रण शत्रु छे.

शत्रु, मित्र अने समनुं यंत्र.

गृहाणि	रवि	चन्द्र	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
शत्रवः	शु. श.	०	बु.	चं.	बु. शु.	र. चं.	र. चं. मं.
मित्राणि	चं. मं. गु.	र. बु.	र. चं. गु.	र. शु.	र. चं. मं.	बु. श.	बु. शु.
मध्यस्थाः	बु.	मं. गु. शु. श.	शु. श.	मं. गु. श.	श.	मं. गु.	गु.

जन्ममां अथवा प्रश्नादिकना लग्नमां कोइ पण स्थाने कोइ पण ग्रह होय तेनाथी बीजे, त्रीजे, चोथे, अगीयारमे, बारमे के दशमे स्थाने जे कोइ बीजो ग्रह होय तो ते तेटला वखत सुधी एटले बे विगेरे स्थाने रह्यो होय त्यांसुधी तेनो मित्र थाय छे. आ तात्कालिक मैत्री कहेवाय छे.

हवे तात्कालिक मैत्रीनुं फळ कहे छे.—

मित्रमध्यारयो येऽत्र निसर्गेणोदिताः क्रमात् ।
अधिमित्रसुहृन्मध्यास्ते स्युस्तत्कालमैत्र्यतः ॥ ३९ ॥

अर्थ—अहीं जे मित्र, मध्य अने शत्रु स्वभावे करीने कहेला छे, ते अनुक्रमे तत्काल मैत्री थकी अधिक मित्र, मित्र अने मध्य थाय छे.

अर्थापत्तिथी ज मित्र स्थानथकी अन्य जे पहेलुं, पांचमुं, छठुं, सातमुं, आठमुं अने नवमुं एटलां स्थानो ते तत्काळ वैरी स्थानो थयां. तेमनुं फळ आ प्रमाणे छे.—

"येऽत्रारिमध्यमित्राणि निसर्गेणोदिताः क्रमात् ।
अधिशत्रुद्विषन्मध्यास्ते स्युस्तत्कालवैरतः ॥ १ ॥"

"अहीं जे स्वभावे करीने अरि, मध्य अने मित्र कह्या छे, ते अनुक्रमे तत्काल वैरपणाथी अधिक शत्रु, शत्रु अने मध्य थाय छे."

भुवनदीपकमां तो ग्रहोना मित्र अने शत्रु एवा बे ज पक्ष कह्या छे. ते आ प्रमाणे छे.—

"रवीन्दुभौमगुरवो ज्ञशुक्रशनिराहवः ।
स्वस्मिन् मित्राणि चत्वारि परस्मिन् शत्रवः स्मृताः ॥ १ ॥
राहुरव्योः परं वैरं गुरुभार्गवयोरपि ।
हिमांशुबुधयोर्वैरं विवस्वन्मन्दयोरपि ॥ २ ॥
अतिमैत्री राहुशन्योरिन्दुगुर्वोः कुजार्कयोः ।
सितज्ञयोः"

"रवि, चंद्र, मंगळ अने गुरु ए चारे परस्पर मित्रो छे, अने बीजाना शत्रु छे. तथा बुध शुक्र, शनि अने राहु ए चारे परस्पर मित्र छे, अने बीजाने विषे शत्रु छे. (१) राहु अने रविने परस्पर अत्यंत वैर छे, गुरु अने शुक्रने पण परस्पर अत्यंत वैर छे, चंद्र अने बुधने तथा सूर्य अने शनिने पण परस्पर अत्यंत वैर छे. (२) राहु अने शनिने, चंद्र अने गुरुने, मंगळ अने सूर्यने तथा शुक्र अने बुधने परस्पर अत्यंत मित्रभाव छे."

आ प्रमाणे ग्रहोने मित्र स्थान अने पोतानुं स्थान जो उच्च स्थान होय तो ते विशेषे करीने हर्ष तथा दीप्तिने देनारां छे. जेम रविने मित्रनुं गृह मेष राशि छे अने ते उच्च छे, बुधने पोतानुं घर कन्या छे अने ते उच्च छे. इत्यादि, पण शत्रुनां घरो तो उच्च होय तोपण प्रभाने आपनारां छे, पण अंदरथी सुख आपनारां नथी. जेम शुक्रने मीन स्थान उच्च छतां शत्रुनुं घर छे, अने मित्रनां घर नीच छतां कांइक प्रभाने आपनारां छे. जेम चंद्रने वृश्चिक स्थान नीच छे, तथा शत्रुनां घर नीच होय तो नाना प्रकारना अनर्थने तथा प्रभानी हानिने करनारां थाय छे. एम भुवनदीपक वृत्तिमां कह्युं छे.

हवे यवनाचार्ये कहेलो राशिमां रहेला ग्रहोनो परस्पर वेध कहे छे.—

स्याद्गोचरेणात्र शुभोऽपि विद्धः खेटोऽन्यखेटैरशुभः क्रमेण।
दुष्टोऽपि चेष्टश्च स वामवेधान्मिथो न वेधः पितृपुत्रयोस्तु ॥ ४० ॥

अर्थ—अहीं गोचरवडे शुभ थयेलो ग्रह पण कहेवाशे एवा क्रमे करीने बीजा ग्रहोए विंधावाथी अशुभ थइ जाय छे, अने गोचरवडे दुष्ट थयेलो ग्रह पण कहेवाशे एवा अनुक्रमे वाम वेधथकी इष्ट (शुभ) थाय छे; परंतु पिता अने पुत्रने परस्पर वेध थतो नथी. एटले के रवि अने शनि पिता पुत्र छे तथा चंद्र अने बुध पिता पुत्र छे, तेनो परस्पर वेध नथी.

अहीं त्रीजा विगेरे स्थानमां रहेला सूर्यने नवमा विगेरे स्थानमां रहेला अन्य ग्रहोवडे जे कहेवामां आवशे ते वेध कहेवाय छे, अने नवमा विगेरे स्थानमां रहेला सूर्यने त्रीजा विगेरे स्थानमां रहेला अन्य ग्रहोवडे जे कहेवाशे ते वाम वेध कहेवाय छे. एटले के त्रीजा विगेरे स्थानमां रहेलो सूर्य शुभ छे, पण जो नवमा विगेरे स्थानमां रहेला बीजा ग्रहोवडे तेनो वेध न थतो होय तो ते शुभ छे. तथा नवमा विगेरे स्थानमां रहेलो सूर्य अशुभ छे, छतां जो त्रीजा विगेरे स्थानमां रहेला अन्य ग्रहोवडे तेनो वेध थाय तो ते शुभ छे. ए प्रमाणे बीजा ग्रहो पण जाणवा. यतिवल्लभमां कह्युं छे के—

"एभिर्वेधैर्विद्धा विफलाः स्युर्गोचरे ग्रहाः सर्वे ।
विपरीतवेधविद्धाः पापा अपि सौम्यतां यान्ति ॥ १ ॥"

"गोचरमां रहेला सर्वे ग्रहो आ वेधवडे विंधाया होय तो निष्फळ (अशुभ) छे, अने विपरीत–वाम (अवळा) वेधथी विंधायेला दुष्ट ग्रहो होय तो ते सौम्यताने पामे छे–शुभ थाय छे."

रत्नमाला भाष्यमां कह्युं छे के—"जे कोइ स्थाने रहेला ग्रहे इष्ट ग्रहनो वेध कर्यो होय तो ते त्यां रहीने ज पोतानुं शुभ अथवा अशुभ फळ आपे छे. ए खरुं तत्त्व छे."

जेओ गोचरना फळने ज प्रमाणरूप गणीने वेधना विषयमां मध्यस्थपणा (उदासीनता)नो आश्रय करे छे, तेमनो मत घणा आचार्योने संमत नथी. ते विषे सारंग कहे छे के—

"यत्र गोचरफलप्रमाणता तत्र वेधफलमिष्यते न वा ।
प्रायशो न बहुसम्मतं त्विदं स्थूलमार्गफलदो हि गोचरः ॥ १ ॥"

"जे कार्यमां गोचरना फळनी प्रमाणता छे, ते कार्यमां वेधनुं फळ गणवुं अथवा तो न गणवुं. तेमां जेवी इच्छा, परंतु प्राये करीने आ वात घणाने संमत नथी, कारण के गोचर तो स्थूल मार्गे फळने आपनार छे."

यतिवल्लभमां पण कह्युं छे के—

"अज्ञात्वा वेधविधिं ग्रहगोचरपाकजातगुणदोषम् ।
ये निर्दिशन्ति मूढास्तेषां विफलाः सदादेशाः ॥ १ ॥"

"जे मूढ पुरुषो वेधना विधिने जाण्या विना ग्रहगोचरना पाकथी उत्पन्न थयेला गुण दोषने कहे छे, तेमना आदेशो सदा निष्फळ छे."

वाम (डाबो) अने अवाम (जमणो) ए बे प्रकारनो वेध जन्मनी राशिथी ज गणवो.

हवे वेधनो प्रकार कहे छे.

वेधस्त्रिषड्गगनलाभगतस्य ३—६—१०—११ भानोः,
खेटैः क्रमेण नवमान्त्यसुखात्मजस्थैः ९—१२—४—५ ।
इन्दोस्तनौ त्रिरिपुमन्मथखायगस्य १—३—६—७—१०—११,
धीधर्मरिष्यधनबन्धुमृतौ ५—९—१२—२—४—८ स्थितैश्च ॥ ४१ ॥
स्यान्मंगलस्य सहजद्विषदायगस्य ३—६—११,
सौरेस्तथा व्ययतपःसुखगैश्च १२—९—४ वेधः ।
चान्द्रेः स्वबन्धुरिपुमृत्युखलाभगस्य २—४—६—८—१०—११,
पुत्रत्रिधर्मतनुनिर्व्ययथनान्त्यगैश्च ५—३—९—१—८—१२ ॥ ४२ ॥
वाचस्पतेः स्वतनयास्तनवायगस्य २—५—७—९—११,
वेधस्तथान्त्यसुखविक्रमखाष्टगैश्च १२—४—३—१०—८ ।
शुक्रस्य षट्खमदनान्यजुषो १—२—३—४—५—८—९—११—१२ षटसप्ता-
थ्याकाशधर्मतनयायतृतीयषष्ठैः८—७—१—१०—९—५—११—३—६ ॥ ४३ ॥

अर्थ—त्रीजे, छठ्ठे, दशमे अने अगीयारमे स्थाने रहेला सूर्यनो अनुक्रमे नवमा, बारमा, चोथा अने पांचमा स्थाने रहेला अन्य ग्रहोवडे वेध थाय छे.

पहेले, त्रीजे, छठ्ठे, सातमे, दशमे अने अगीयारमे स्थाने रहेला चंद्रनो अनुक्रमे पांचमे, नवमे, बारमे, बीजे, चोथे अने आठमे रहेला ग्रहोवडे वेध थाय छे.

त्रीजे, छठ्ठे अने अगीयारमे स्थाने रहेला मंगळनो तथा शनिनो अनुक्रमे बारमे, नवमे अने चोथे स्थाने रहेला ग्रहोवडे वेध थाय छे.

बीजे, चोथे, छठ्ठे, आठमे, दशमे अने अगीयारमे स्थाने रहेला बुधनो अनुक्रमे पांचमे, त्रीजे, नवमे, पहेले, आठमे अने बारमे स्थाने रहेला ग्रहोवडे वेध थाय छे.

बीजे, पांचमे, सातमे, नवमे अने अगीयारमे स्थाने रहेला गुरुनो अनुक्रमे बारमे, चोथे, त्रीजे, दशमे अने आठमे रहेला ग्रहोवडे वेध थाय छे.

पहेले, बीजे, त्रीजे, चोथे, पांचमे, आठमे, नवमे, अगीयारमे अने बारमे रहेला शुक्रनो अनुक्रमे आठमे, सातमे, पहेले, दशमे, नवमे, पांचमे, अगीयारमे, त्रीजे अने छठे स्थाने रहेला ग्रहोवडे वेध थाय छे.

ग्रहोनो वेध यंत्र

रवेः		चन्द्रस्य		भौमशन्योः		बुधस्य		गुरोः		शुक्रस्य	
३	९	१	५	३	१२	२	५	२	१२	१	८
६	१२	३	९	६	९	४	३	५	४	२	७
१०	४	६	१२	११	४	६	९	७	३	३	१
११	५	७	२			८	१	९	१०	४	१०
		१०	४			१०	८	११	८	५	९
		११	८			११	१२			८	५
										९	११
										११	३
										१२	६

। इति राशिद्वारम् । ५

हवे उपर जे “गोचरवडे” एम कह्युं हतुं तेथी तथा क्रमे करीने पण प्राप्त थयेलुं होवाथी गोचरद्वार कहे छे.—

श्रेयान् गोचरतोऽशुभानुपचये ३-६-१०-११
चन्द्रस्तु साद्यद्युने ३-६-१०-११-१-७
वक्रार्की त्रिषडायगा ३-६-११ वथ बुधस्त्व-
न्त्यान्ययुग्लाभगः २-४-६-८-१०-११ ।
जीवः स्त्रीधनधर्मलाभसुतगः ७-२-९-११-५
शुक्रोऽरिखास्तान्त्यगो १-२-३-४-५-८-९-११-१२
जन्मेन्दोर्ग्रहणे तमोऽप्युपचये ३-६-७-१०-११-
ऽन्येषां त्वनाद्येन्दुवत् ३-६-७-१०-११ ॥ ४४ ॥

अर्थ—गायोनी चरवानी भूमिने गोचर कहे छे, तेथी लक्षणाए करीने ग्रहोने पण चालवानी भूमि गोचर कहेवाय छे. जन्मना चंद्रथी आरंभीने त्रीजे, छठे, दशमे अने

अगीयारमे सूर्य रह्यो होय तो ते गोचरनी रीते शुभ छे, जन्मनी राशिना चंद्रथी ३–६–१०–११–१–७ आटले स्थाने चंद्र होय तो ते पण शुभ छे, जन्मना चंद्रथी ३–६–११ मे स्थाने मंगळ तथा शनि रह्या होय तो ते शुभ छे, बुध २–४–६–८–१०–११ मे स्थाने होय तो शुभ छे, गुरु ७–२–९–११–५ मे स्थाने रह्यो होय तो शुभ छे, शुक्र १–२–३–४–५–८–९–११–१२ मे स्थाने होय तो शुभ छे, (पूर्णभद्रे आठमुं स्थान वर्ज्य कह्युं छे.) राहु ग्रहणने दिवसे ज ३–६–१०–११ मे स्थाने होय तो शुभ छे, बीजा आचार्यना मते पहेला स्थान विना चंद्रनी जेम राहु कह्यो छे, एटले के ३–६–१०–११–७ मे स्थाने रहेलो राहु शुभ कह्यो छे.

अहीं उपर जे जन्मनो चंद्र कह्यो छे ते इष्ट पुरुषना जन्मसमये जे राशिमां चंद्र होय छे ते तेना जन्मनो चंद्र कहेवाय छे. ग्रहण एटले सूर्य तथा चंद्रनुं बन्नेनुं ग्रहण लेवुं. ग्रहण शब्द कहेवाथी एवुं जणाव्युं छे के ग्रहण विना बीजे दिवसे राहुनो गोचर गणातो नथी, परंतु "नक्षत्र गोचरने आश्रीने तो अन्य दिवसे पण राहुनो गोचर गणाय छे." एम ज्योतिषसारमां कह्युं छे. रत्नमाला भाष्यमां कह्युं छे के—"जन्मना लग्नथी पण उपर कहेलां स्थानोमां ज रहेला ग्रहो शुभ छे." जन्मनी राशिथी तो शुभ छे ज.

गोचरनुं फळ वराहसंहितामां आ प्रमाणे कह्युं छे—

"स्थानभ्रंश १ भय २ श्री ३ परिभव ४ दैन्या ५ रिहति ६ पथां ७ गार्त्तीः ८ ।
क्षान्ति क्षय ९ सिद्धि १० धन ११ व्ययांश्च १२ जन्मादिगो रविः कुरुते ॥ १ ॥"

"जन्मना प्रथम स्थानमां रहेलो रवि स्थानथी भ्रष्ट करे छे, बीजे स्थाने होय तो भय करे छे, त्रीजे लक्ष्मी, चोथे पराभव, पांचमे दीनता, छठे शत्रुनो पराजय, सातमे पंथ (प्रयाण), आठमे शरीरनी पीडा, नवमे शांतिनो नाश, दशमे कार्यसिद्धि, अगीयारमे धनप्राप्ति अने बारमे रह्यो होय तो खर्च करावे छे."

"तुष्ट्या १ धि २ धना ३ ज्य ४ र्थभ्रंश ५ श्री ६ सार्थयुवति ७ मृति ८ भीतीः ९ ।
सुख १० जय ११ सरुग्धनक्षय १२ मिन्दुर्जन्मादिगो दत्ते ॥ २ ॥"

"जन्मना प्रथमादिक स्थानमां रहेलो चंद्र अनुक्रमे तुष्टि १, मननी पीडा २, धन ३, लडाइ ४, धननाश ५, लक्ष्मी ६, धन सहित स्त्रीनो लाभ ७, मृत्यु ८, भय ९, सुख १०, जय ११, रोग सहित धननो क्षय १२, आटलां वानां करे छे."

"रुग् १ धननाश २ धना ३ रिभ्य ४ र्थक्षय ५ धन ६ शुग ७ स्त्रघाता ८ र्त्तीः ९ ।
शुग् १० लाभ ११ विविधदुःखानि १२ दिशति जन्मादिगो वक्रः ॥ ३ ॥"

"जन्मना प्रथमादिक स्थानमां रहेलो मंगळ अनुक्रमे रोग १, धननो नाश २, धननी

प्राप्ति ३, शत्रुथी भय ४, धनक्षय ५, धनलाभ ६, शोक ७, शस्त्रघात ८, शरीरनी पीडा ९, शोक १०, लाभ ११, तथा विविध प्रकारनां दुःखो १२ आपे छे."

"बन्धा १ र्थ २ वधा ३ र्थ ४ हृति ५ स्थान ६ वपुर्बाध ७ धन ८ महापीडाः ९।
सौख्या १० र्थ ११ वित्तनाशाः १२ स्युर्ज्ञे जन्मादिगे क्रमशः ॥ ४ ॥"

"जन्मथी प्रथमादिक स्थानमां बुध रह्यो होय तो अनुक्रमे बंधन १, धन २, वध ३, धन ४, हरण ५, स्थान ६, शरीरपीडा ७, धन ८, महापीडा ९, सुख १०, धन ११ अने धननो नाश १२, प्राप्त थाय छे."

"रोगा १ र्थ २ क्लेश ३ व्यय ४ सुख ५ भी ६ नृपमान ७ धनागम ८ श्रीदः ९।
अप्रीति १० लाभ ११ हृद्दुःखदश्च १२ जन्मादिगो जीवः ॥ ५ ॥"

"जन्मथी प्रथमादिक स्थानमां रहेलो गुरु अनुक्रमे रोग १, धन २, क्लेश ३, खर्च ४, सुख ५, भय ६, राजसन्मान ७, धनप्राप्ति ८, लक्ष्मी ९, अप्रीति १०, लाभ ११ अने हृदयना दुःख १२ ने देवावाळो थाय छे."

"अरिनाशा १ र्थ २ सुख ३ श्री ४ सुता ५ रिवृद्धि ६ शुग ७ र्थ ८ वस्त्राणि ९।
असुखा १० य ११ लाभ १२ मुशना सनापि जन्मादिगस्तनुते ॥ ६ ॥"

"जन्मथी प्रथमादिक स्थानमां रहेलो शुक्र अनुक्रमे शत्रुनो नाश १, धन २, सुख ३, लक्ष्मी ४, पुत्र ५, शत्रुवृद्धि ६, शोक ७, धन ८, वस्त्र ९, असुख १०, आवक ११ तथा लाभ १२ ने सदा विस्तारे छे-आपे छे."

"अस्थान १ धनगमा २ र्था ३ रिवृद्धि ४ सुतनाश ५ लाभ ६ दुःखभरान् ७।
पीडा ८ र्थगमा ९ र्त्ति १० श्री ११ दुःखानि १२ शनिस्तनोति जन्मादौ ॥ ७ ॥"

"जन्मथी प्रथमादिक स्थानमां रहेलो शनि अनुक्रमे अस्थान (स्थानभ्रंश) १, धननाश २, धनप्राप्ति ३, शत्रुवृद्धि ४, पुत्रनाश ५, लाभ ६, दुःखना समूह ७, पीडा ८, धननाश ९, पीडा १०, लक्ष्मी ११ अने दुःखो १२ ने विस्तारे छे."

ज्योतिषसारमां राहुनुं रूप आ प्रमाणे कह्युं छे.—

"गहणे तमरासीउ नियरासी ति चउ अढिगार सुहा।
पण नव दहंऽत मज्झिम छ सत्त इग दुन्नि अइअहमा ॥ १ ॥"

"ग्रहणने दिवसे राहुनी जे राशि होय तेनाथी पोतानी राशि त्रीजे, चोथे, आठमे के अगीयारमे होय तो ते शुभ छे, पांचमे, नवमे, दशमे अने बारमे होय तो मध्यम छे, अने छठ्ठे, सातमे, पहेले तथा बीजे होय तो अति अधम छे."

तथा

"यादृशेन शशांकेन संक्रान्तिर्जायते रवेः।
तन्मासि तादृशं प्राहुः शुभाशुभफलं नृणाम् ॥ १ ॥"

"जेवा चंद्रवडे सूर्यनी संक्रांति थती होय ते मासमां मनुष्योने तेवा प्रकारनुं शुभाशुभ फळ थाय छे एम कहे छे."

आथी करीने कदाच सूर्य बारमा, आठमा विगेरे अशुभ स्थानमां रह्यो होय तोपण गोचरवडे, ताराबळवडे तथा शुभ अवस्थादिके करीने शुभ एवा चंद्रनुं बळ होय त्यारे तेनी संक्रांति थइ होय तो ते शुभ ज छे. एम रत्नमाळा भाष्यमां कह्युं छे.

तथा लल्ल कहे छे के—

"सितपक्षादौ चन्द्रे शुभे शुभः पक्षकोऽशुभे त्वशुभः ।
बहुले गोचरशुभदे न शुभः पक्षोऽशुभे तु शुभः ॥ १ ॥"

"शुक्लपक्षना प्रारंभमां एटले प्रतिपद् बेसे ते वखते जो चंद्र शुभ होय तो ते आखुं पखवाडीयुं शुभ जाणवुं, अने जो चंद्र अशुभ होय तो आखा पक्षने अशुभ जाणवो. कृष्णपक्षमां तो प्रतिपदनी शरुआतमां जो चंद्र शुभ होय तो ते आखा पक्षने अशुभ जाणवो, अने जो चंद्र अशुभ होय तो आखा पक्षने शुभ जाणवो."

तथा "यादृशेन ग्रहेणेन्दोर्युतिः स्यात्तादृशो हि सः" "जेवा ग्रहनी साथे चंद्रनो योग होय, तेवा ज ग्रहनी जेवो ते चंद्र थाय छे." एम दैवज्ञवल्लभमां कह्युं छे, तथा दैवज्ञवल्लभमां ज कह्युं छे के—

"अशुभोऽपि शुभश्चन्द्रः सौम्यमित्रगृहांशके ।
स्थितोऽथवाधिमित्रेण बलिष्ठेन विलोकितः ॥ १ ॥"

"अशुभ चंद्र पण सौम्य ग्रहना के मित्र ग्रहना स्थानना नवांशमां रह्यो होय तो ते शुभ छे. अथवा बळवान् अधिक मित्रे जोयेलो होय तोपण ते चंद्र बळवान् छे."

सर्व ग्रहोनुं साधारण फळ दैवज्ञवल्लभमां आ प्रमाणे छे—

"असत्फलोऽपि यः सौम्यैर्दृष्टो यः सत्फलोऽपि वा ।
क्रूरेण दृष्टोऽरिणा वा स न किञ्चित्फलप्रदः ॥ १ ॥"

"जे कोइ अशुभ फळदायक ग्रह सौम्य ग्रहे जोयेलो होय, अथवा जे कोइ शुभ फळवाळो ग्रह क्रूर ग्रहे अथवा शत्रु ग्रहे जोयेलो होय, ते ग्रह कांइ पण फळने देनारो नथी."

लल्ल कहे छे के—"नीचेऽस्तेऽरिगृहे वापि निष्फलो ग्रहगोचरः" "नीचमां, अस्तमां के शत्रुना घरमां रहेलो ग्रहगोचर निष्फळ छे."

हवे चन्द्रगोचर फळ कहे छे.

चन्द्रो जन्मत्रिषट्सप्तदशैकादशगः शुभः ।
द्विपञ्चनवमोऽप्येवं शुक्लपक्षे बली यदि ॥ ४५ ॥

अर्थ—चंद्र १, ३, ६, ७, १० अने अगीयारमा स्थानमां रह्यो होय तो ते शुभ छे, तथा शुक्लपक्षमां जो बळवान् होय तो बीजे, पांचमे अने नवमे स्थाने पण शुभ छे.

नारचंद्र टिप्पणीमां आ प्रमाणे विशेष कह्यो छे.—

"यात्रा १ युद्ध २ विवाहेषु ३ जन्मेन्दौ रोगसंभवे ४ ।
क्रमेण तस्करा १ भंगो २ वैधव्यं ३ मरणं ४ भवेत् ॥ १ ॥"

"जन्मना चंद्रमां यात्रा करवाथी चोरनो उपद्रव थाय, युद्ध करवाथी पराजय थाय, विवाह करवाथी विधवापणुं थाय, अने रोग उत्पन्न थयो होय तो मरण थाय."

अहीं कोइ शंका करे के चंद्रगोचर तो पहेलाना (४४ मा) श्लोकमां कही गया छे, माटे अहीं फरीथी कहेवामां आव्युं, तेथी पुनरुक्त दोष थयो. तेनो जवाब ए छे जे—ते वात खरी छे, परंतु चंद्रनुं प्राधान्य बताववाथी ते दोष नथी, केमके जेम मननो उपयोग होय तो ज सर्वे इंद्रियो पोतपोताना विषयोने ग्रहण करवामां समर्थ थाय छे, अन्यथा थती नथी, ते ज प्रमाणे चंद्र शुभ होय तो ज बीजा ग्रहो शुभ फळ दे छे, अन्यथा देता नथी. व्यवहारप्रकाशमां कह्युं छे के—"चंद्र शुभ होय तो बीजा ग्रहो शुभ फळ देनारा ज प्राये होय छे, पण अशुभ फळ आपनारा होता नथी." हर्षप्रकाशमां पण कह्युं छे के—"चंदस्सेव बलाबलमासज्ज गहा कुणंति सुहमसुहं" "चंद्रना ज बळ अबळने पामीने बीजा ग्रहो शुभाशुभ करे छे."

मूळ श्लोकमां बीजे, पांचमे अने नवमे चंद्र रह्यो होय तो ते पण शुभ छे, परंतु ते चंद्र शुक्लपक्षमां अने वळी बळवान् होय तो ज. ए प्रमाणे विशेष विधान करेलुं होवाथी पुनरुक्त दोष नथी. शुक्लपक्ष कहेवाथी वृद्धि पामतो चंद्र जाणवो, पण कृष्णपक्षमां क्षय थतो होवाथी ते लेवो नहीं. बळवान् कहेवाथी शुक्लपक्षमां कृश होय तो ते बीजे, पांचमे अने नवमे शुभ नथी अने कृष्णपक्षमां चंद्र पुष्ट होय तोपण बीजे, पांचमे अने नवमे शुभ नथी एम जाणवुं. रत्नमाला भाष्यमां पण कह्युं छे के—"बीजो, पांचमो अने नवमो गुरु जेवुं शुभ फळ आपे छे तेवुं वृद्धि पामतो शुक्लपक्षनो पुष्ट चंद्र पण बीजे, पांचमे अने नवमे स्थाने रह्यो होय तो शुभ फळ आपे छे.

उपरना श्लोकमां जो चंद्र बळवान् होय एम कह्युं, तेथी चंद्रनुं बळाबळ कहे छे.

हीनमध्योच्चबलता तिथिवत्तुहिनद्युतेः ।
बलहानाविदं त्वस्य ग्राह्यं ताराबलं बुधैः ॥ ४६ ॥

अर्थ—चंद्रनुं हीन बळपणुं, सम बळपणुं अने उच्च बळपणुं तिथिनी जेम जाणवुं. तथा चंद्रना बळनी हानिने वखते विद्वानोए आगळ कहेवामां आवशे एवुं ताराबळ ग्रहण करवुं, कारण के ते वखते ताराना बळे करीने तेनुं बळवान्पणुं छे.

शुक्ल तथा कृष्णपक्षमां पांच पांच तिथिओने आश्रीने हीन, मध्यम अने उत्तमता जे प्रमाणे कही छे, ते प्रमाणे चंद्रनुं पण हीन, मध्यम अने उच्च बळपणुं अनुक्रमे तथा उत्क्रमे जाणवुं. जातक वृत्तिमां तो आ प्रमाणे कह्युं छे.—"चंद्र उदय पामे त्यारथी दश दिवस सुधी मध्यम बळवान् छे, बीजा दश दिवस सुधी अधिक बळवान् छे, अने त्रीजा दश दिवस हीन बळवाळो छे, तथा कृष्ण चतुर्दशी, अमावास्या अने शुक्ल प्रतिपद् ए त्रण दिवस तो सर्वथा बळ रहित छे, परंतु चंद्र पर सौम्य ग्रहोनी दृष्टि पडती होय तो निरंतर बळवान् छे." अन्य आचार्यो कहे छे के—"कृष्णपक्षनी अष्टमीना अर्धा भाग पछी अने शुक्ल अष्टमीना अर्धा भाग सुधी चंद्र क्षीण जाणवो, बाकीना समयमां पुष्ट जाणवो." नक्षत्र समुच्चय ग्रंथमां तो आ प्रमाणे कह्युं छे.—

"उदिते च तथा चन्द्रे शुभयोगे शुभे तिथौ।
कृष्णस्य दशमीं यावत्सर्वकार्याणि साधयेत् ॥ १ ॥

"चंद्रनो उदय थाय त्यारथी आरंभीने कृष्णपक्षनी दशमी सुधी शुभ योग अने शुभ तिथिने दिवसे सर्व शुभ कार्यो करवां."

विशेष ए छे जे—"शुक्लपक्षनी बीजने रोज चंद्र उदय पामवानो छे तोपण दिवसना भागमां ते तिथि लेवी नहीं, कारण के प्राये करीने दृष्टिना विषयनो भाव (होवापणुं) अने अभावे (नहीं होवापणुं) करीने बीजनो व्यवहार करवामां आवे छे. ते विषे विवाहवृंदारकमां कह्युं छे के—

"उदेति चायं प्रतिपत्समाप्तौ कृशोऽपि वर्द्धिष्णुतया प्रशस्तः।
द्वीपान्तरस्थो विफलस्तु तावद्यावन्न पृथ्वीनयनाध्वनीनः ॥ १ ॥"

"आ चंद्र प्रतिपद्नी समाप्तिमां उदय पामे छे. ते कृश छतां पण वृद्धि पामवानो होवाथी प्रशस्त छे. तथा बीजा द्वीपमां रहेलो ते चंद्र ज्यांसुधी जगतना लोकोनी दृष्टिना मार्गमां आव्यो न होय, त्यांसुधी ते निष्फळ छे."

उपर जे चंद्रना निर्बळपणामां तारानुं बळ लेवानुं कह्युं ते विषे कह्युं छे के—

"चन्द्राद्बलवती तारा कृष्णपक्षे तु भर्त्तरि।
विकले प्रोषिते च स्त्री कार्यं कर्तुं यतोऽर्हति ॥ १ ॥"

"कृष्णपक्षमां तो चंद्र करतां तारा बळवान् छे, कारण के भर्ता विकलांग होय अथवा परदेश गयो होय तो स्त्री पोते ज कार्य करवाने योग्य छे."

तेथी करीने—

"कृष्णस्याष्टम्यर्द्धादनन्तरं तारकाबलं योज्यम्।
प्रतिपत्प्रान्तोत्पन्नं सन्ध्याकालोदयं यावत् ॥ १ ॥"

"कृष्णपक्षनी अष्टमीना अर्ध भाग पछी अने शुक्ल प्रतिपदने अंते उत्पन्न थयेला संध्याकाळनो उदय थाय त्यांसुधी तारानुं बळ ग्रहण करवुं." आ प्रमाणे व्यवहार-प्रकाशमां कह्युं छे.

तारानुं बळ गौण छे, एम धारवुं नहीं; केमके ताराना बळनुं प्रधानपणुं प्रगट ज छे. ते विषे लल्ल कहे छे के—

"ताराबले शशिबलं शशिबलसंयुतसंक्रमाद्बलं भानोः ।
सूर्यबले सति सर्वेऽप्यशुभा अपि खेचराः शुभदाः ॥ १ ॥"

"तारानुं बळ होय तो चंद्रनुं बळ होय छे, चंद्रना बळथी युक्त एवी संक्रांति थवाथी सूर्यनुं बळ होय छे, अने सूर्यनुं बळ छते ज सर्वे अशुभ ग्रहो पण शुभ फळ-दायक थाय छे."

हवे ताराओ कहे छे.—

जनिभान्नवकेषु त्रिषु जनि १ कर्म १० धान १९ संज्ञिताः प्रथमाः ।
तास्त्रि३-१२-२१पञ्च५-१४-२३सप्तम७-१६-२५ताराः स्युर्न हि शुभाः क्वचन४७

अर्थ—जेना जन्मने समये जे नक्षत्रमां चंद्र होय ते नक्षत्र तेनुं जन्मनक्षत्र कहेवाय छे. ते जन्मनक्षत्रथी अथवा तेनी खबर न होय तो नामना नक्षत्रथी आरंभीने नव नवनी त्रण ओळ करवी. ते त्रणे नवकमां जे पहेली पहेली त्रण ताराओ होय तेनुं नाम अनुक्रमे जन्म तारा, कर्म तारा अने आधान तारा जाणवुं. ते त्रणे नवकमांनी त्रीजी त्रीजी एटले ३–१२–२१, पांचमी पांचमी एटले ५–१४–२३ अने सातमी सातमी एटले ७–१६–२५, आटली ताराओ कोइ पण ठेकाणे शुभ नथी.

जन्म तारादिकनी संज्ञा माटे कह्युं छे के—"आधानाद्दशमे जन्म दशमे कर्म जन्मभात्" "आधाननी ताराथी दशमी तारानी संज्ञा जन्म छे, अने जन्मनी ताराथी दशमी तारा कर्म नामनी छे."

बीजी, त्रीजी विगेरे ताराओनी संज्ञा आ प्रमाणे छे.—

"संपद्विपत्क्षेमसंज्ञा प्रत्यरा साधका मृतिः ।
मैत्री परममैत्री च स्युर्द्वितीयादिमा इमाः ॥ १ ॥"

त्रणे नवकमांनी बीजी बीजी तारानुं नाम संपत् छे, त्रीजी त्रीजीनुं विपत्, चोथीनुं क्षेमा, पांचमीनुं प्रत्यरा, छठीनुं साधका, सातमीनुं मृति, आठमीनुं मैत्री अने नवमीनुं परममैत्री, एवां नामो छे. आमांनी प्रत्यराने बदले यमा एवुं पण बीजुं नाम छे.

तारार्ङनी स्थापना.

जन्म	संपत्	विपत्	क्षेमा	यमा	साधना	निधना	मैत्री	परममैत्री
१	२	३	४	५	६	७	८	९
कर्म	संपत्	विपत्	क्षेमा	यमा	साधना	निधना	मैत्री	परममैत्री
१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८
आधान	संपत्	विपत्	क्षेमा	यमा	साधना	निधना	मैत्री	परममैत्री
१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७

आ तारार्ङमां चोथी चोथी, छठी छठी अने नवमी नवमी तारार्ङ श्रेष्ठ छे. ते विषे लल्ल कहे छे के—

"ऋक्षं न्यूनं तिथिर्न्यूना क्षपानाथोऽपि चाष्टमः ।
तत्सर्वं शमयेत्तारा षट्चतुर्थनवस्थिताः ॥ १ ॥"

"नक्षत्र न्यून एटले अशुभ होय, तिथि पण न्यून होय अने चंद्र पण आठमो (अशुभ) होय, तोपण छठी, चोथी अने नवमी तारा होय तो ते सर्वने समावी दे छे–दबावी दे छे."

पहेली, बीजी अने आठमी ए त्रण त्रण तारार्ङ मध्यम छे, अने त्रीजी, पांचमी, तथा सातमी ए त्रण त्रण तारार्ङ अधम छे ते तो पूर्वे कह्युं ज छे.

हवे ते तारार्ङनो विशेष कहे छे.—

जन्माधानान्वितास्तिस्रस्तास्त्यजेत्क्षौरयात्रयोः ।
शुक्लेऽप्यासूत्थिते रोगे दीर्घक्लेशोऽथवा मृतिः ॥ ४८ ॥

अर्थ—जन्म अने आधान सहित ते त्रण त्रण (त्रीजी, पांचमी अने सातमी) तारार्ङ क्षौर तथा यात्रामां तजवा योग्य छे. शुक्लपक्षमां पण आ तारार्ङने विषे रोग उत्पन्न थयो होय तो चिरकाळ सुधी क्लेश रहे छे, अथवा मरण थाय छे.

त्रण त्रण एटले दरेक ओळनी त्रीजी त्रीजी, पांचमी पांचमी अने सातमी सातमी समजवी. अर्थात् नव जाणवी. वळी लल्ल कहे छे के—

"यात्रायुद्धविवाहेषु जन्मतारा न शोभना ।
शुभाऽन्यशुभकार्येषु प्रवेशे च विशेषतः ॥ १ ॥
जन्मर्क्षवदाधानं कर्मसु शस्तेषु शस्तमेव स्यात् ।
यच्च न जन्मनि कार्यं विवर्जनीयं तदाधाने ॥ २ ॥"

"यात्रा, युद्ध अने विवाहमां जन्मनी तारा सारी नथी. बीजां शुभ कार्यमां ते जन्म तारा शुभ छे, अने प्रवेशमां तो विशेष शुभ छे (१). जन्म तारानी जेवी आधान तारा

पण जाणवी. एटले के ते पण बीजां शुभ कार्योमां प्रशस्त ज छे, अने जे कार्य जन्म तारामां करवानुं नथी, ते कार्य आधानमां पण वर्जवा योग्य छे (२)".

जो के शुक्लपक्षमां चंद्र ज बळवान् छे, ते वखते तारानुं प्राधान्य नथी, कारण के ते विषे कह्युं छे के—

"शुक्ले पक्षे बली चन्द्रस्तारावलमकारणम् ।
पत्यौ स्वस्थे गृहस्थे च न स्त्री स्वातंत्र्यमर्हति ॥ १ ॥"

"शुक्लपक्षमां चंद्र ज बळवान् छे, तेमां तारानुं बळ कारण नथी, केमके पति साजो होय अने घेर ज होय तो स्त्री स्वतंत्रताने योग्य नथी."

आथी करीने शुक्लपक्षमां चंद्रनुं बळ ज प्रधान छे, तोपण जन्मनी, आधाननी तथा त्रीजी त्रीजी, पांचमी पांचमी अने सातमी सातमी, ए अगीयार ताराउमां जो रोग उत्पन्न थयो होय तो दीर्घ क्लेश अथवा मरण थाय छे. एटले के बीजा ग्रहो प्रतिकूळ न होय तो दीर्घ क्लेश थाय अने बीजा ग्रहो प्रतिकूळ होय तो मरण थाय. ते विषे लल्ल कहे छे के—

"यद्यपि स्याद्बली चन्द्रस्तारा तथाप्यनिष्टदा ।
जन्माधाने तृतीया च पञ्चमी सप्तमी तथा ॥ १ ॥
शेषासु तु तारासु व्याधिः साध्यो नृणां भवति जातः ।
व्याधिवदवबोद्धव्याः सर्वारंभाश्च तारासु ॥ २ ॥"

"जो के चंद्र बळवान् होय तोपण जन्मनी, आधाननी, त्रीजी त्रीजी, पांचमी पांचमी अने सातमी सातमी ताराउ अनिष्टने आपनारी छे (१), अने बाकीनी ताराउमां मनुष्योने उत्पन्न थयेलो व्याधि साध्य थाय छे. आ व्याधिनी ज जेम ताराउने विषे करेला सर्वे आरंभो जाणवा (२)."

उपर रत्नमाला भाष्यना प्रमाणथी कह्युं हतुं के "यात्रादिकमां चंद्रने शुभ अवस्थावाळो जोवो." तेथी करीने हवे चंद्रनी अवस्था कहे छे.

चन्द्रावस्था प्रोषित १ हत २ मृत ३ जय ४ हास ५ हर्ष ६ रति ७ निद्राः ८ ।
भुक्ति ९ जरा १० भय ११ सुखिता राश्यंशा द्वादश यथार्थाः ॥ ४९ ॥

अर्थ—चंद्रनी आ बार अवस्थाउ छे—प्रोषिता १, हता २, मृता ३, जया ४, हासा ५, हर्षा ६, रति ७, निद्रा ८, भुक्ति ९, जरा १०, भय ११ अने सुखिता १२. आ अवस्थाउ चंद्रनी राशिना द्वादशांशने विषे अनुक्रमे जाणवी. ते अवस्थानुं फळ ते ते नामने अनुसारे छे.

राशिना द्वादशांश आ रीते काढवा—एक राशिमां चंद्रनो भोग जेटली घडी होय ते पंचांगमां जोइने निर्णय करवो. जेम सामान्य रीते एकसो ने पांत्रीश घडी एक राशिनो

ज्ञोगकाळ चंद्रने होय छे, तेथी तेना बार ज्ञाग करतां अगीयार घमी अने पंदर पळ एक एक ज्ञागमां आवे छे. हवे इष्ट वखते (कार्य करती वखते) १३५ घमीमांथी जेटली घमी ज्ञोगवाइ होय तेने सवा अगीयार घमीए ज्ञाग लइने ज्ञोगवेलो काळ काढवो, बाकीनी घमीउमांथी ज्ञोग्य काळना द्वादशांशो पण काढवा. पछी जेटलामा द्वादशांशमां कार्य करवुं होय ते द्वादशांशनुं नाम अनुक्रमे जाणी कार्य करवुं. अहीं सामान्यवमे कह्युं छे तोपण एम जाणवुं के दरेक राशिमां द्वादशांशनी रीते चंद्र बार बार अवस्थाउने ज्ञोगवे छे. ते विषे यतिवल्लज्ञमां कह्युं छे के—

"राशौ राशौ द्वादशामूर्भुंक्तेऽवस्थाश्च चन्द्रमाः ।
द्वादशांशक्रमात्सार्द्धह्नेनाख्यासदृक्फलाः ॥ १ ॥"

"चंद्र दरेक राशिमां द्वादशांशना क्रमथी सवा बे दिवसमां नामने सदृश फळवाळी बार बार अवस्थाउने ज्ञोगवे छे."

ज्ञावार्थ ए छे जे—मेष राशिमां रहेला चंद्रनी प्रोषिताथी आरंज्ञीने बार अवस्थाउ जाणवी, वृषमां रहेला चंद्रनी हृताथी आरंज्ञीने बार अवस्थाउ गणवी, मिथुनमां रहेला चंद्रनी मृताथी आरंज्ञीने गणवी विगेरे.

मूळ श्लोकमां "यथार्थाः" एवुं कह्युं छे तेनो अर्थ ए छे जे—ते अवस्थाउ पोतपोतानी संज्ञाने सदृश फळवाळी छे. तेथी करीने प्रोषिता, हृता, मृता, निद्रा, जरा अने ज्ञया, ए नामनी छ अवस्थाउ तजवा योग्य छे. एम नारचंद्र टिप्पणीमां कह्युं छे. तेथी ज दिनशुद्धिमां पण कह्युं छे के—

"पइरासि बारसंसा असुहाउ चएजउ सुहो वि ससी ।
एआहिं होइ असुहो सुहाहिं असुहो वि होइ सुहो ॥ १ ॥"

"दरेक राशिमां बार बार द्वादशांशो (अवस्थाउ) छे, तेमांथी अशुज्ञ अंशोने वर्जवा, केमके चंद्र शुज्ञ होय तोपण ए अशुज्ञ अवस्थाउवमे अशुज्ञ थाय छे, अने चंद्र अशुज्ञ होय तोपण ते शुज्ञ अवस्थाउवमे शुज्ञ थाय छे."

हवे शनि दुष्ट छे, माटे तेनुं नक्षत्र गोचर जूदुं कहे छे.—

मन्दर्क्षतः प्रथम १ वेद ४ षम ६ ब्धि ४ बाण ५,
त्रि ३ द्व्ये २ क १ चन्द्र १ मितज्ञेषु यथाक्रमेण ।
पीडा १ विज्ञूति ५ पथ ११ बन्धन १५ धर्म २० लाज्ञ २३,
पूजा २५ऽज्ञिजूत्य २६ पमृतीः २७ फलमूचुरुच्चैः ॥ ५० ॥

अर्थ—जे नक्षत्रमां शनि रहेलो होय ते नक्षत्र पीमाकारी छे, तेनी पछीनां चार नक्षत्रो लक्ष्मीने आपनारां छे, त्यारपछीनां छ पंथ करावनारां छे, ते पछीनां चार बंधन करावनारां छे, ते पछीनां पांच धर्म करावनारां छे, ते पछीनां त्रण लाज्ञ आपनारां छे, ते

पडीनां बे पूजा (सन्मान) आपनारां छे, ते पछीनुं एक पराभव आपनारुं छे, अने ते पछीनुं एक मृत्यु आपनारुं छे. अहीं शनिना नक्षत्रथी पोताना नक्षत्र सुधी गणवुं, तेमां जेटली संख्यावाळुं पोतानुं नक्षत्र होय, तेटली संख्यावाळा नक्षत्रनुं फळ जे कह्युं छे ते जाणवुं. अहीं शनिनो आकार पुरुष जेवो छे ते कह्यो नथी, तोपण जाणी लेवो. ते विषे यतिवल्लभमां कह्युं छे के—

"यस्मिन् शनिश्चरति वक्रगतं तदर्क्षं
चत्वारि दक्षिणकरेऽङ्घ्रियुगे च षट्कम् ।
चत्वारि वामकरगाण्युदरे च पञ्च
मूर्ध्नि त्रयं नयनयोर्द्वितयं गुदे च ॥ १ ॥"

"जे नक्षत्रमां शनि चालतो होय ते नक्षत्र तेना मुखमां मूकवुं, पछीनां चार जमणा हाथमां, पछीनां छ बे पगमां, पछीनां चार डाबा हाथमां, पछीनां पांच उदर उपर, पछीनां त्रण मस्तक उपर, पछीनां बे नेत्रमां अने पछीनां बे गुदामां मूकवां." अहीं बे गुदामां कह्यां तेनुं कारण ए के ज्यारे पट्ट विगेरेमां पुरुषनो आकार चितरीए त्यारे गुदा अने गुह्यनी एकता ज जणाय छे. तेथी करीने अहीं गुदामां ज बे मूक्यां छे. मूळकारे तो ते बन्ने स्थानननी भिन्न विवक्षा करीने बन्ने स्थानमां एक एक नक्षत्र कह्युं छे.

शनि नरनी स्थापना.

मुखे	१	पीडा
दक्षिण हाथे	४	लक्ष्मी
बे पगे	६	पंथ
डाबा हाथे	४	बंधन
उदरे	५	धर्म
मस्तके	३	लाभ
बे नेत्रे	२	पूजा
गुदाए	१	पराभव
गुह्ये	१	अपमृत्यु

रुद्रयामल नामना ग्रंथमां नवे ग्रहोनां पुरुषाकारनी स्थापनाए करीने गोचरफळ कह्यां छे. तेमां रवि नरनुं स्वरूप मूळ ग्रंथकार ज जातकाधिकारमां कहेशे. बाकीना ग्रह नरो नीचे प्रमाणे.—

दृग् ३ बाहुयुग्म ६ वक्त्रेषु ३ भानां प्रत्येकतस्त्रिकम् १२ ।
हृदि सप्त १९ तथा गुह्ये चतुष्कं २३ पञ्चकं पदोः २८ ॥ १ ॥
वक्त्रे पीडां भृशं चक्षुर्हृदयेषु शुभं सुखम् ।
बाह्वोर्लाभं मृतिं गुह्ये भ्रमं दत्ते पदोः शशी ॥ २ ॥

चंद्र नरनी दृष्टिमां ३, बे बाहुमां ६, मुखमां ३, हृदयमां ७, गुह्यमां ४ अने बे पगमां ५ नक्षत्रो छे. तेनुं फळ—मुखमां होय तो अत्यंत देहपीडा करे, चक्षुमां होय तो शुभ फळ आपे, हृदयमां होय तो सुख आपे, बाहुमां होय तो लाभ आपे, गुह्यमां होय तो मृत्यु आपे, अने पगमां होय तो भ्रमण (देशाटण) आपे (करावे). अहीं पण चंद्रना नक्षत्रथी पोताना नक्षत्र सुधी गणतां जेटलामुं नक्षत्र ज्यां होय ते स्थाननुं फळ ते आपे छे.

चंद्र नरनी स्थापना. १

नेत्रे	३	शुभ
बन्ने हाथे	६	लाभ
मुखे	३	अतिपीडा
हृदये	७	सुख
गुह्ये	४	मरण
बन्ने पगे	५	भ्रमण

त्रयं त्रयं त्रिर्मुखदृक्शिरस्सु ९ द्वयानि वामेतरबाहुकंठे १५ ।
पंचोरसि २० स्युस्त्रितयं च गुह्ये २३ चत्वारि चांह्र्योः २७ कुजचक्रमेतत् ॥ १ ॥
कीर्त्तिं शिरसि हृन्नेत्रे लाभं चरणयोर्भ्रमम् ।
गुह्येऽन्यस्त्रीरतिं दत्ते कुजः शेषेषु चाशुभम् ॥ २ ॥

मंगळ नरनां मुख, दृष्टि अने मस्तक पर त्रण त्रण मूकवां ९, डाबे हाथे, जमणे हाथे अने कंठे बबे मूकवां १५, उरःस्थळ उपर पांच मूकवां २०, गुह्यमां त्रण २३, अने बन्ने पग पर चार मूकवां २७. आ मंगळ नरनुं चक्र थयुं. तेनुं फळ—मस्तक पर होय तो कीर्त्ति आपे, हृदय अने नेत्रमां होय तो लाभ आपे, चरणमां होय तो भ्रमण करावे, गुह्यमां होय तो परस्त्री पर प्रीति आपे, अने बीजां स्थानोमां होय तो ते अशुभ छे.

मंगळ नरनी स्थापना. २

मुखे	३	रोग
नेत्रे	३	लाभ
मस्तके	३	यश
वाम करे	२	रोग
दक्षिण करे	२	शोक
कंठे	२	हिक्का
हृदये	५	लाभ
गुह्ये	३	परस्त्री रति
बन्ने पगे	४	भ्रमण

वक्त्रनेत्रगलोरस्सु पादयोः पञ्च पञ्च च २५ ।
बाहुयुग्मे तथा गुह्ये त्रीण्युडूनि २८ भवन्ति च ॥ १ ॥
वक्त्रहृद्बाहुषु ज्ञप्तिं गुह्यपादेषु संक्षयम् ।
गले सुस्वरतां दत्ते नेत्रे राज्यं बुधो ग्रहः ॥ २ ॥

बुध नरना मुखमां, नेत्रमां, गळामां, उरःस्थळमां अने बन्ने पगमां पांच पांच मूकवां एटले पचीश थयां. तथा बे बाहुमां बे अने गुह्यमां एक मूकवां एटले अठ्यावीश नक्षत्रो थयां. तेनुं फळ.—मुख, बाहु अने हृदयने विषे होय तो ज्ञान आपे, गुह्य अने पादने विषे होय तो मृत्यु आपे, गळामां होय तो सारो स्वर आपे, अने नेत्रमां होय तो राज्य आपे.

बुध नरनी स्थापना. ३

मुखे	५	ज्ञान
नेत्रे	५	राज्य
कंठे	५	सुस्वरपणुं
हृदये	५	ज्ञान
बे पगे	५	क्षय
वाम करे	१	ज्ञान
दक्षिण करे	१	ज्ञान
गुह्ये	१	क्षय

शीर्षे चत्वारि राज्यं युगपरिगणिता सव्यहस्ते च लक्ष्मी-
रेकं कंठे विभूतिं मदनशरमिते वक्षसि प्रीतिलाभम् ।
षड्भिः पीडांह्रियुग्मे जलधिपरिमिते वामहस्ते च मृत्युं
दृग्युग्मे त्रीणि कुर्युर्नृपतिसमसुखं वाक्पतेश्चक्रमेतत् ॥ १ ॥

गुरु नरना मस्तक पर चार नक्षत्र मूकवां ते राज्य आपे. दक्षिण हाथमां चार मूकवां ते लक्ष्मी आपे. एक कंठे मूकवुं ते विभूति (धन) आपे. छातीमां पांच मूकवां ते प्रीतिनो लाभ आपे. बे पगमां छ मूकवां ते पीडा करे. डाबा हाथमां चार मूकवां ते मृत्यु आपे, नेत्रोमां त्रण मूकवां ते राजानी जेवुं सुख आपे. आ गुरु नरनुं चक्र जाणवुं.

गुरु नरनी स्थापना. ४

मस्तके	४	राज्य
जमणे हाथे	४	लक्ष्मी
कंठे	१	धन
हृदये	५	प्रीति
बे पगे	६	असुख (पीडा)
डाबे हाथे	४	मृत्यु
बे नेत्रे	३	सुख

युगं शीर्षे द्वयं वक्त्रे चतुष्कं हृदयेऽपि च ।
दश बाह्वोस्त्रयं गुह्ये जान्वंह्रिषु द्वयं द्वयम् ॥ १ ॥
जानुमुष्ककपादेषु दुःखं बाह्वोर्नृपार्हणाम् ।
हृच्छीर्षे सौम्यतां वक्त्रे मरणं कुरुते सितः ॥ २ ॥

शुक्र नरना मस्तक पर चार, मुखमां बे, हृदयमां चार, बे बाहुमां दश, गुह्यमां त्रण, जानुमां बे अने पगमां बे मूकवां. तेनुं फळ—जानु, गुह्य अने पादमां होय तो दुःख आपे, बाहुमां होय तो राजसन्मान आपे, हृदय अने मस्तक पर होय तो सौम्यता आपे तथा मुखमां होय तो मरण आपे.

शुक्र नरनी स्थापना ५.

मस्तके	४	सौम्यता
मुखे	२	मरण
हृदये	४	सौम्यता
हस्तद्वये	१०	राजपूजा
गुह्ये	३	दुःख
जानुद्वये	२	दुःख
पादद्वये	२	दुःख

वक्त्रे त्रीणि जयाय दक्षिणकरे चत्वारि लक्ष्म्यै पदोः
षड् भ्रान्त्यै न सुखाय वामककरे चत्वारि हृत्स्थं त्रयम् ।
लब्ध्यै कंठगमेकमामयकरं शीर्षे त्रयं राज्यदं
सौभाग्यं युगलेऽक्षिगे मृतिरथो गुह्यद्वये राहुभात् ॥ १ ॥

राहु नरना मुखमां त्रण नक्षत्रो मूकवां ते जय आपे, दक्षिण हाथे चार मूकवां ते लक्ष्मी आपे, बे पगमां ७ मूकवां ते भ्रमण करावे, डाबा हाथमां चार मूकवां ते असुख करे, हृदयमां त्रण मूकवां ते लब्धि (लाभ) आपे, कंठे एक मूकवुं ते रोग करे, मस्तक पर त्रण मूकवां ते राज्य आपे, बे नेत्रमां बे मूकवां ते सौभाग्य आपे अने गुह्यमां बे मूकवां ते मृत्यु आपे.

राहु नरनी स्थापना ६.

मुखे	३	जय
जमणे हाथे	४	लक्ष्मी
बे पगे	६	भ्रमण
वाम करे	४	क्लेश
हृदये	३	लाभ
कंठे	१	रोग
मस्तके	३	राज्य
बे नेत्रे	२	सौभाग्य
गुह्ये	२	मरण

वक्त्रे द्वे जयदे जयाय शिरसि स्यात्पञ्चकं पञ्चकं
भीत्यै तत्फणगं जयाय करयोर्युग्मे चतुष्कं स्थितम् ।
अंह्र्योः पञ्च सुखाय हृत्स्थयुगलं शोकाय कंठे व्यथा-
भीत्यै स्याच्च चतुष्टयं फलमिदं केतौ तदाक्रान्तभात् ॥ १ ॥

केतु जे नक्षत्रमां होय ते नक्षत्र तथा तेनी पछीनुं एम बे नक्षत्रो तेना मुखमां मूकवां ते जय आपनारां छे, पछीनां पांच मस्तके मूकवां ते जय आपे, पछीनां पांच फणा उपर मूकवां ते भय आपे, पछीनां चार बे हाथमां मूकवां ते जय आपे, पछीनां पांच बे पगमां मूकवां ते सुख आपे, पछीनां बे हृदयमां मूकवां ते शोक करावे, पछीनां चार कंठे मूकवां ते पीडा तथा भय करावे.

केतु नरनी स्थापना ७.

मुखे	२	जय
मस्तके	५	जय
फणे	५	भय
बे हाथे	४	जय
बे पगे	५	सुख
हृदये	२	शोक
कंठे	४	पीडा, भय

अहीं कोइ शंका करे के—आ प्रमाणे अन्य अन्य ग्रह नरोना शुभाशुभ फळनो भेद होवाथी ग्रह संबंधी ग्रहगोचर फळनो निर्णय शी रीते थइ शके? तेनो जवाब ए छे जे-इष्ट समये जे ग्रह सर्वथी अधिक बळवान् होय, ते ग्रह ते वखते शुभाशुभ फळ आपे छे. आ सर्वे ग्रह नरोने जन्मसमये ज केटलाक आचार्यो विचारे छे.

हवे ग्रहगोचर अशुभ होय तो तेने निष्फळ करवा माटे अष्टकवर्गने कहे छे.

गोचरेण ग्रहाणां चेदानुकूल्यं न दृश्यते ।
जन्मलग्नग्रहेभ्योऽष्टवर्गेणालोकयेत्तदा ॥ ५१ ॥

अर्थ—जो ग्रहोनुं गोचरवडे अनुकूळपणुं न देखातुं होय तो जन्मथी, लग्नथी अने ग्रहोथी अष्टवर्गे करीने जोवुं.

अहीं ग्रहोने सामान्य रीते कह्या छे, तोपण "रवि, चंद्र अने गुरु ए त्रण ग्रहोनुं ज अनुकूळपणुं न देखाय तो" एवो अर्थ करवो. नारचंद्रमां पण कह्युं छे के—

"रविशशिजीवैः सबलैः शुभदः स्याद्गोचरोऽथ तदभावे ।
ग्राह्याष्टवर्गशुद्धिर्जननविलग्नग्रहेभ्यस्तु ॥ १ ॥"

"बळवान् रवि, चंद्र अने गुरुए करीने गोचर शुभदायी थाय छे, अने ते (शुभ गोचर) ने अभावे जन्मथी, लग्नथी अने ग्रहोथी अष्टवर्गनी शुद्धि ग्रहण करवी."

अष्टवर्ग एटले राशिमां चालता ग्रहनो बीजा ७ ग्रहनां स्थानोथी, पोताना स्थानथी अने लग्नना स्थानथी जे विचार करवो ते विचार अष्टवर्ग कहेवाय छे.

ते ज कहे छे.—

अर्कः स्वमन्दभौमेभ्यो नवद्व्यायाष्टकेन्द्रगः ९,२,११,८,१,४,७,१० ।
त्रिकोणायारिगो ९,५,११,६ जीवाच्छुक्रादन्त्यारिकामगः १२,६,७ ॥ ५२ ॥
चन्द्रादुपचयस्थो ३,६,१०,११,ज्ञाद्धीधर्मोपचयान्त्यगः५,९,३,६,१०,११,१२, ।
पातालोपचयान्त्येषु ४,३,६,१०,११,१२ लग्नाच्च तरणिः शुभः ॥ ५३ ॥

अर्थ—सूर्य पोताना स्थानथी, शनिथी अने मंगळथी ९,२,११,८,१,४, ७ अने १० मे स्थाने रह्यो होय, गुरुथी ९,५,११ अने ६ठे स्थाने रह्यो होय, शुक्रथी १२, ६ अने ७ मे स्थाने रह्यो होय, चंद्रथी ३,६,१० अने ११ मे स्थाने रह्यो होय, बुधथी ५,९,३, ६,१०,११ अने १२ मे स्थाने होय, तथा लग्नथी ४,३,६,१०,११ अने १२ मे रह्यो होय तो ते सूर्य शुभ छे, एटले अष्टवर्गथी तेनी शुद्धि जाणवी

॥ इति सूर्याष्टकवर्गः ॥ १

चन्द्रश्चोपचये ३,६,१०,११, लग्नाद्भानोः साष्टस्मरे स्थितः ३,६,१०,११,८,७ ।
स्वात्सादिसप्तमे ३,६,१०,११,१,७, स्वारात्सद्व्य-
नवमात्मजे ३,६,१०,११,२,९,५ ॥ ५४ ॥
छिद्रत्रिलाभात्मजकेन्द्रगो ८,३,११,५,१,४,७,१० बुधा—
द्गुरोस्तु रिष्याष्टमलाभकेन्द्रगः १२,८,११,१,४,७,१० ।
शुक्रात्त्रिपंचास्तनवायखांबुगः ३,५,७,९,११,१०,४
शुभः शनेः षट्त्रिसुतायगः ६,३,५,११ शशी ॥ ५५ ॥

अर्थ—चंद्र लग्नथी ३,६,१० अने ११ मे होय, सूर्यथी ३,६,१०,११,८ अने सातमे होय, पोताना स्थानथी ३,६,१०,११,१ अने ७ मे रह्यो होय, मंगळथी ३,६,१०,११, २,९ अने ५ मे होय, बुधथी ८,३,११,५,१,४,७ अने १० मे होय, गुरुथी १२,८,११, १,४,७ अने १० मे होय, शुक्रथी ३,५,७,९,११,१० अने ४ थे होय, तथा शनिथी ६,३,५, अने अगीयारमे होय तो ते चंद्र शुभ छे.

॥ इति चन्द्राष्टकवर्गः ॥ २

कुज इन्दोरुपचयगे ३,६,१०,११ साद्ये ३,६,१०,११,१

लग्नात्सपञ्चमे ३,६,१०,११,५ सूर्यात् ।

द्व्यायाष्टकेन्द्रगः २,११,८,१,४,७,१०

स्वात्सौम्यात्त्रिसुतारिलाभस्थः ३,५,६,११ ॥ ५६ ॥

जीवात्खान्त्यायारिषु १०,१२,११,६ शुक्राद्विडान्त्यलाभशत्रुगतः८,१२,११,६।

मन्दाल्लाभनवाष्टमकेन्द्रस्थः ११,९,८,१,४,७,१० शोभनो भौमः ॥ ५७ ॥

अर्थ—मंगळ चंद्रथी ३,६,१० अने ११ मे स्थाने होय, लग्नथी ३,६,१०,११ अने १ ले स्थाने होय, सूर्यथी ३,६,१०,११ अने ५ मे होय, पोताना स्थानथी २,११,८,१, ४,७ अने १० मे होय, बुधथी ३,५,६ अने ११ मे होय, गुरुथी १०,१२,११ अने ६ ठे होय, शुक्रथी ८,१२,११ अने ६ ठे होय, तथा शनिथी ११,९,८,१,४,७ अने १० मे होय तो ते मंगळ शुभ छे.

॥ इति भौमाष्टकवर्गः ॥ ३

बुधोऽर्कतोऽन्त्यायनवारिधीषु १२,११,९,६,५

स्थितः स्वतः सत्रिदशादिमेषु १२,११,९,६,५,३,१०,१ ।

द्विषड्दशायाष्टसुखेषु २,६,१०,११,८,४ चन्द्रात्

लग्नात्तु तेष्वाद्ययुतेषु २,६,१०,११,८,४,१ शस्तः ॥ ५८ ॥

कुजशनितो व्यन्त्यारिषु १,२,३,४,५,७,८,९,१०,११

जीवादरिनिधनलाभरिष्यस्थः ६,८,११,१२ ।

शुक्रादापुत्राष्टमनवमायस्थो १,२,३,४,५,८,९,११ बुधः शुभदः ॥ ५९ ॥

अर्थ—बुध सूर्यथी १२,११,९,६ अने ५ मे रह्यो होय, पोताना स्थानथी १२,११, ९,६,५,३,१० अने १ ले रह्यो होय, चंद्रथी २,६,१०,११,८ अने ४ थे रह्यो होय, लग्नथी २,६,१०,११,८,४ अने १ ले रह्यो होय तो प्रशस्त छे, तथा मंगळ अने शनिथी १,२,३,४,५,७,८,९,१० अने ११ मे होय, गुरुथी ६,८,११ अने १२ मे होय, तथा शुक्रथी १,२,३,४,५,८,९ अने ११ मे होय तो बुध शुभ फळदायक छे.

॥ इति बुधाष्टकवर्गः । ४

गुरुः केन्द्रस्वरन्ध्राये १,४,७,१०,२,८,११

स्वारात्स्वात्सत्रिपूत्तमः १,४,७,१०,२,८,११,३ ।

अर्कात्सत्रिनवस्वि १,४,७,१०,२,८,११,३,९ न्दोः
स्वधीकामनवायगः २,५,७,९,११ ॥ ६० ॥
स्वादिखायसुखधीतपोऽरिषु २,१,१०,११,४,५,९,६
ज्ञाद्गुरुः स्मरयुतेषु २,१,१०,११,४,५,९,६,७ लग्नतः ।
स्वत्रिकोणरिपुखायगः २,९,५,६,१०,११ सितात्
त्र्यन्त्यधीरिपुषु ३,१२,५,६ मन्दतः शुभः ॥ ६१ ॥

अर्थ—गुरु मंगळथी १,४,७,१०,२,८ अने ११ मे होय, पोताना स्थानथी १,४,७, १०,२,८,११ अने ३ जे होय, सूर्यथी १,४,७,१०,२,८,११,३ अने ९ मे होय, चंद्रथी २,५,७,९ अने ११ मे होय, बुधथी २,१,१०,११,४,५,९ अने ६ ठे होय, लग्नथी २,१,१०,११,४,५,९,६ अने ७ मे होय, शुक्रथी २,९,५,६,१० अने ११ मे होय, तथा शनिथी ३,१२,५ अने ६ ठे होय तो ते गुरु शुभ छे.

॥ इति गुर्वष्टकवर्गः ॥ ५

शुक्रो लग्नादासुतधर्मायाष्टसु १,२,३,४,५,९,११,८
मतः स्वतः साभ्रः १,२,३,४,५,९,११,८,१० ।
शशिनः सान्त्यः १,२,३,४,५,९,११,८,१२
शनितः खायतपस्त्रिसुखधीमृतिषु १०,११,९,३,४,५,८ ॥ ६२ ॥
आयव्ययाष्टगोऽर्का ११,१२,८ द्बुधात्त्रिकोणाय-
षट्त्रिगः ९,५,११,६,३ शुभदः ।
ध्यापोक्लिमास्तिषु ५,३,६,९,१२,११ कुजाद्गुरो-
स्त्रिकोणाष्टखायगः ९,५,८,१०,११ शुक्रः ॥ ६३ ॥

अर्थ—शुक्र लग्नथी १,२,३,४,५,९,११ अने ८ मे होय, पोताना स्थानथी १,२,३, ४,५,९,११,८ अने १० मे होय, चंद्रथी १,२,३,४,५,९,११, ८ अने १२ मे होय, शनिथी १०,११,९,३,४,५ अने ८ मे होय, सूर्यथी ११,१२ अने ८ मे होय, बुधथी ९,५,११,६ अने ३ जे होय, मंगळथी ५,३,६,९,१२ अने ११ मे होय, तथा गुरुथी ९,५,८,१० अने ११ मे होय तो ते शुक्र शुभ छे.

॥ इति शुक्राष्टकवर्गः ॥ ६

शनिः स्वात्त्र्यायपुत्रारि ३,११,५,६ स्वारात्सव्ययकर्मसु ३,११,५,६,१२,१० ।
केन्द्राष्टायार्थगः १,४,७,१०,८,११,२ सूर्याच्चन्द्रात् षट्त्र्यायगो ६,३,११ मतः ६४
आद्यांबूपचये लग्नात् १,४,३,६,१०,११ कवेरायव्ययारिषु ११,१२,६ ।
गुरोः सधीषु ११,१२,६,५ साज्ञाष्टधर्मेषु ११,१२,६,१०,८,९ ज्ञात्तु निर्मतः ॥६५॥

अर्थ—शनि पोताना स्थानथी ३,११,५ अने ६ छे होय, मंगळथी ३,११,५,६,१२ अने १० मे होय, सूर्यथी १,४,७,१०,८,११ अने २ जे होय, चंद्रथी ६,३ अने ११ मे होय, लग्नथी १,४,३,६,१० अने ११ मे होय, शुक्रथी ११,१२ अने ६ छे होय, गुरुथी ११,१२,६ अने ५ मे होय, तथा बुधथी ११,१२,६,१०, ८ अने ९ मे होय तो ते शुभ मानेलो छे.

आ चौद श्लोकोनो भावार्थ ए छे जे—पहेला श्लोकमां जे अर्क (सूर्य) शब्द छे ते ज्यारे यात्रादिक करवानी इच्छा होय, ते समये जे राशिनो सूर्य होय ते तात्कालिक सूर्य कहेवाय छे अने "स्वमन्द" ए ठेकाणे जन्मकाळनो सूर्य ग्रहण करवानो छे. ए ज रीते शनि, मंगळ विगेरे पण जन्मकाळना ज लेवाना छे. तेथी करीने तात्कालिक सूर्य विगेरे जो जन्मकाळना सूर्य, शनि विगेरेथी नवमा, बीजा विगेरेमांना कोइ पण स्थाने होय तो ते शुभ छे. ते सर्व शुभ स्थाने रेखा "।" आपे छे एवी परिभाषा छे. तेथी करीने जेटला लग्नना ग्रहोथी कहेलांमांनां कोइ पण स्थानोमां तात्कालिक सूर्यादिक पमाय, तेटली रेखाउ देवी, अने जेटला लग्नना ग्रहोथी कहेलां स्थानोमांनां जेटलां स्थान न पमाय तेटलां शून्य—मींडां "०" देवां. ए रीते करवाथी दरेक ग्रहने आश्रीने आठ आठ रेखाउ संभवे छे. तेमां जो चार के तेथी उछी के तेथी वधारे रेखाउ पामीए तो अनुक्रमे ते मध्यम, अधम अने श्रेष्ठ जाणवी, अने तेम करवाथी जे ग्रहनी रेखाउ घणी होय ते ग्रह कदाच गोचरवडे अशुभ होय तोपण शुभ जाणवो, अने शून्य—मींडांउ घणां होय तो गोचरवडे शुभ ग्रह पण अशुभ जाणवो.

केटलाक आचार्यो कहे छे के—"कार्य वखते अष्टकवर्गनी रेखाउ मेळवाती नथी—मळती नथी; परंतु गमे ते वखते जन्मकुंडळीने ज सात वार जूदी जूदी स्थापन करीने पछी पहेली कुंडळीमां जे स्थाने सूर्य रह्यो होय, त्यांथी नवमा विगेरे आठे स्थानोमां आठ रेखाउ देवी (दरेक स्थानमां एक एक रेखा काढवी). ए ज प्रकारे शनि अने मंगळथी पण दरेकमां आठ आठ रेखाउ देवी. गुरुथी चार रेखा देवी, शुक्रथी त्रण, चंद्रथी चार, बुधथी सात अने लग्नथी छ रेखा देवी. आ प्रमाणे ते सूर्यना अष्टक-

वर्गनी कुंमळीमां सर्व मळीने सूर्यनी ४७ रेखाउं थइ. ए ज प्रमाणे बीजी, त्रीजी विगेरे चंद्रादिकना अष्टकनी कुंमळीउंमां अनुक्रमे सर्व रेखाउं करवी. तेथी चंद्रनी कुंमळीमां ४ए, मंगळनी कुंमळीमां ४०, बुधनी कुंमळीमां ५७, गुरुनी कुंमळीमां ५६, शुक्रनी कुंमळीमां ५२, अने शनिनी कुंमळीमां ३ए रेखाउं कुल थाय ठे." कह्युं ठे के—

"वसुवेदौ १ नन्दवेदौ २ खवेदौ ३ वसुसायकौ ४ ।
षड्बाणौ ५ द्विशरौ ६ नन्दवह्नी ७ रेखा इनादिजाः ॥ १ ॥"

"सूर्यथी आरंजीने अनुक्रमे ४७,४ए,४०,५७,५६,५२ अने ३ए रेखाउं थाय ठे."

आ प्रमाणे एक एक ग्रहना अष्टकवर्गनी कुंमळीमां बारे राशिनां स्थानोमां जेम संजवे तेम एक एक रेखा देवी (करवी), अने बाकीनां स्थानोमां शून्य मूकवी. एम करवाथी एक ग्रहने स्थाने उत्कृष्टी आठ रेखानो संजव थाय ठे. त्यारपठी कार्य वखते जे ग्रह जे राशिमां होय, ते स्थान जोवुं. ते स्थानमां जो रेखानुं अधिकपणुं होय तो ते ग्रहण करवुं श्रेष्ठ ठे, शून्यनुं अधिकपणुं होय तो अशुज जाणवो.

आ बन्ने मतनुं तत्त्व सरखुं ज ठे. ते रेखाउंनो उपयोग आ प्रमाणे.—

"चतूरेखे मध्यफलं हीने हीनं ततोऽधिके श्रेष्ठम् ।
विफलं गोचरगणितं त्वष्टकवर्गेण निर्दिष्टम् ॥ १ ॥"

"चार रेखा आवे तो मध्यम फळ, तेथी उंठी आवे तो हीन फळ अने तेथी अधिक आवे तो श्रेष्ठ फळ जाणवुं, अने आ श्रेष्ठ फळ अष्टकवर्गे बताव्युं होय त्यारे गोचरथी गणेलुं गोचरफळ निष्फळ थाय ठे."

आ सर्व एक ग्रहने आश्रीने कह्युं ठे. तात्कालिकना सर्व ग्रहोनी रेखाउं मेळवीए तो सोळथी उंठी रेखा कदापि न थाय, पण सत्तरथी आरंजीने उत्कृष्टी ५६ रेखाउं सुधी थाय ठे. ते वखते सत्तरथी ठवीश सुधीनी अशुज जाणवी, सत्यावीश होय तो मध्यम, अने अठ्यावीशथी आरंजीने ठप्पन सुधी उत्तरोत्तर शुज, शुजतर अने शुजतम जाणवी. कह्युं ठे के—

"रेखाधिक्यं शस्तं शून्याधिक्यं तथाऽधमं कथितम् ।
एतत्संयोगे स्युः षट्पञ्चाशन्न जातु अधिकास्ताः ॥ १ ॥"

"अधिक रेखा होय तो प्रशस्त ठे अने शून्य अधिक होय तो अधम कह्युं ठे. ए सूर्यादिक सर्वनी रेखाउंने एकठी करीए तो ठप्पन थाय ठे, पण तेथी अधिक थती नथी, कारण के सूर्यादिक सात ग्रहोनी दरेकनी आठ आठ रेखाउं मेळववाथी ठप्पन ज थाय ठे." विशेष ए ठे जे—"जो के "चतूरेखं मध्यफलं" "चार रेखा मध्य फळवाळी ठे" एम पूर्वे कह्युं ठे, तोपण जे ग्रहना अष्टकवर्गनी शुद्धि ते वखते जोवाती होय, ते

शुद्धिना स्वामीरूप ग्रहनी रेखाओ जो पोताथी ज उत्पन्न थयेली मळती होय तो चार रेखाओ आवे ते पण श्रेष्ठ छे, अने तेम न होय तो (पोताथी उत्पन्न थयेली रेखाओ न होय तो) षड्वर्ग विगेरेना बळवाळा पोताना मित्ररूप ग्रहनी पोताथी ज उत्पन्न थयेली रेखाओ मळे तोपण चार रेखाओ प्रशस्त छे, तेम पण न होय तो ते ज शुद्धिनो स्वामीरूप ग्रह जो वामवेधे करीने शुभ होय तोपण चार रेखा प्रशस्त छे. आ त्रणे प्रकारमांनो कोइ पण न होय तो चारथी अधिक रेखावाळो ग्रह पण शुभ नथी." एम व्यवहारप्रकाशमां कह्युं छे.

वळी उपर जे ५६ रेखाओ उत्कृष्ट कही छे, ते "राहुनी रेखा बिलकुल नथी" एवा मते करीने कह्युं छे, पण केटलाक तो राहुनी पण रेखाओ कहे छे, ते आ प्रमाणे.—

"केन्द्राष्टद्वित्रिगः १,४,७,१०,८,२,३ सूर्याद्राहू रेखाप्रदः स्मृतः ।
इन्दोस्तनुत्रिधीरूयष्टधर्मकर्मव्यये १,३,५,७,८,९,१०,१२ स्थितः ॥ १ ॥
भौमात्तनुत्रिधीरिष्ये १,३,५,१२ स्वांबुरूयष्टान्तिमे २,४,७,८,१२ बुधात् ।
जीवात्सप्रथमे २,४,७,८,१२,१ शुक्रादरिद्यूनायरिष्यगः ६,७,११,१२ ॥ २ ॥
शनेस्त्रिधीवधूलाभे ३,५,७,११ लग्नाद्राहुस्तु शोभनः ।
त्रिपञ्चसप्तनवमान्त्येषु ३,५,७,९,१२ रेखाऽस्य न स्वतः ॥ ३ ॥
त्रिचत्वारिंशदेव स्यू रेखा राह्वष्टवर्गगाः ।"

"राहु सूर्यथी १,४,७,१०,८,२ अने ३ जे स्थाने होय तो ते रेखाने आपनारो (शुभ) कह्यो छे, चंद्रथी १,३,५,७,८,९,१० अने १२ मे होय, मंगळथी १,३,५ अने १२ मे होय, बुधथी २,४,७,८ अने १२ मे होय, गुरुथी २,४,७,८,१२ अने १ ले होय, शुक्रथी ६,७,११ अने १२ मे होय, शनिथी ३,५,७ अने ११ मे होय अने लग्नथी राहु ३,५,७,९ अने १२ मे रह्यो होय तो ते सारो छे. आ राहुने पोताना स्थानथी रेखा आवती नथी. आ प्रमाणे राहुना अष्टकवर्गमां कुल रेखाओ ४३ अवश्य उत्कृष्टी आय छे."

हवे कया कार्यमां कयो ग्रह बळवान् लेवो ? ते कहे छे.—

सर्वत्रेन्दुः कुजः संख्ये बोधे ज्ञः स्थापने गुरुः ।
याने शुक्रः शनिर्मौण्ड्ये बली भानुर्नृपेक्षणे ॥ ६६ ॥

अर्थ—सर्व शुभ कार्यमां कार्य करनारनो चंद्र बळवान् जोवो जोइए, युद्धमां मंगळ, ज्ञानमां बुध, स्थापना (पदवी, प्रतिष्ठा, विवाह विगेरे) मां गुरु, प्रयाणमां शुक्र, मुंडनमां (दीक्षामां) शनि अने राजाना एटले उपरीना दर्शनमां सूर्य बळवान् लेवो जोइए. आ सर्वनुं गोचरादिक बळ जोवुं. कह्युं छे के—

"एग १ चउ २ अठ ३ सोलस ४ बत्तीसा ५ सट्ठि ६ सयगुण ७ फलाइं ।
तिहि १ रिक्ख २ वार ३ करण ४ जोगो ५ तारा ६ ससंकबलं ७ ॥ १ ॥"

"तिथिनुं बळ एक गणुं छे, तेनाथी नक्षत्रनुं बळ चार गणुं छे, तेनाथी वारनुं बळ आठ गणुं छे, तेनाथी करणनुं बळ सोळ गणुं छे, तेनाथी योगनुं बळ बत्रीश गणुं छे, तेनाथी तारानुं बळ साठ गणुं छे अने तेनाथी चंद्रनुं बळ सो गणुं फळदायक छे."

तेथी करीने ज कह्युं छे के—

"कर्तुरनुकूलयोगिनि शुभेक्षिते शशिनि वर्द्धमाने च ।
तारायोगेऽभीष्टे सर्वेऽर्थाः सिद्धिमुपयान्ति ॥ १ ॥"

"कर्ताने अनुकूळ योगवाळो, शुभ ग्रहे जोयेल अने वृद्धि पामतो चंद्र होय तथा तारानो योग सारो होय तो तेनां सर्व कार्यो सिद्धिने पामे छे."

तेमां पण आ प्रमाणे विभाग छे.

"ग्रामे नृपतिसेवायां संग्रामव्यवहारयोः ।
चतुर्षु नामभं योज्यं शेषं जन्मनि योजयेत् ॥ १ ॥"

"गाममां, राजसेवामां, संग्राममां अने व्यवहार (वेपार)मां, ए चार कार्यमां नामनुं नक्षत्र लेवुं, अने बाकीनां दीक्षा, प्रतिष्ठा, विवाहादि कार्यमां जन्मनुं नक्षत्र लेवुं." आ नरपति जयचर्यामां कह्युं छे.

तात्कालिक लग्नमां पण सर्व कार्योमां चंद्रनुं बळ अवश्य लेवुं. तेने माटे सारंग कहे छे के—

"लग्नं देहः षड्कवर्गोऽङ्गकानि, प्राणश्चन्द्रो धातवः खेचरेन्द्राः ।
प्राणे नष्टे देहधात्वङ्गनाशो, यत्नेनातश्चन्द्रवीर्यं प्रकल्प्यम् ॥ १ ॥"

"लग्न ए शरीर छे, षड्वर्ग ए अंगो छे, चंद्र ए प्राण छे अने (सात) ग्रहो ए (सात) धातुओ छे, प्राण नाश पामवाथी देह, धातु अने अंग पण नाश पामे छे, तेथी प्रयत्नवडे पण चंद्रनुं बळ लेवुं जोइए."

मूळ श्लोकनो भावार्थ ए छे जे—ज्यारे ते ते कार्यो लग्नना बळवानपणाथी करवामां आवे, त्यारे तेना ग्रहोनुं उदयपणाए करीने अथवा लग्नमां रहेवापणाए करीने अथवा लग्नमां कहेला षड्वर्गना स्वामीपणाए करीने अथवा केंद्रमां रहेवापणाए करीने अथवा छ प्रकार विगेरेना बळवडे करीने सबळपणुं लग्नमां करवुं, अने कार्य करनारने ए ग्रहोनुं गोचरबळ लेवुं. ज्यारे कार्य केवळ मुहूर्त्तना बळथी ज करवुं होय त्यारे ते ग्रहोनुं गोचरबळ तथा वार होरादिक लेवां.

हवे राशिमां आवेलो कयो ग्रह क्यारे फळदायक होय ? ते कहे छे.—

ज्ञोऽखिले फलदो राशावादावादित्यमंगलौ ।
मध्ये सुरासुराचार्यौ प्रान्ते त्विन्दुशनेश्वरौ ॥ ६७ ॥

अर्थ—बुध आखी राशिमां फळदायक छे, सूर्य अने मंगळ आदिमां, गुरु अने शुक्र मध्यमां अने चंद्र तथा शनि अंत भागमां फळ देनारा छे.

फळदायक एटले शुभ गोचरमां रहेलो ग्रह शुभ फळ आपे, अने अशुभ गोचरमां रह्यो होय तो अशुभ फळ आपे छे. बुध आखी राशिमां फळ आपे छे एटले के जे राशिने पोते आक्रमण करी होय ते आखी राशिमां. आदिमां एटले पहेला द्रेष्काणमां, मध्यमां एटले बीजा द्रेष्काणमां अने अंते एटले त्रीजा द्रेष्काणमां. आ नियम सहज (सरल) गतिमां वर्तता ग्रहोने आश्रीने कह्यो छे, पण ज्यारे वक्रताए करीने तथा अतिचारपणाए करीने ते ग्रहो बीजी राशिमां गया होय त्यारे आ प्रमाणे जाणवुं.—

"पक्षं १ दशाहं २ मासं च ३ दशाहं मासपञ्चकम् ।
वक्रेऽतिचारे भौमाद्याः पूर्वराशिफलप्रदाः ॥ १ ॥"

"मंगळ वक्र गतिमां के अतिचार गतिमां होय तो पंदर दिवस सुधी पूर्वनी राशिनुं फळ आपे छे, ए प्रमाणे बुध दश दिवस, गुरु एक मास, शुक्र दश दिवस अने शनि पांच मास सुधी फळ आपे छे. अहीं पूर्वनी राशि एटले के वक्री होय तो पछीनी राशिनुं अने अतिचारी होय तो पहेलानी राशिनुं फळ आपे छे, एम जाणवुं.

प्रश्न प्रकाशकर तो आम कहे छे.—

"वक्रेऽतिचारे भौमाद्याः पूर्वराशिफलप्रदाः ।
जीवः शनिश्च यत्रस्थौ तस्य राशेः फलप्रदौ ॥ १ ॥"

"मंगळ विगेरे ग्रहो वक्री के अतिचारी होय तो पूर्वराशिना फळने आपे छे, परंतु गुरु अने शनि तो जे राशिमां रह्या होय ते ज राशिना फळने आपे छे." विशेष आ प्रमाणे—

"राश्यन्तगतः खेटः परभावफलं ददाति पृच्छासु ।
अन्त्यघटीं यावदसावासीनफलं विवाहादौ ॥ १ ॥"

"प्रश्नने विषे राशिना अंत भागमां रहेलो ग्रह पछीना स्थानना फळने आपे छे, अने विवाहादिकमां तो ते ग्रह अन्त्यनी घडी सुधी ज्यां रहेलो होय ते ज स्थाननुं फळ आपे छे." अहीं राशिनो अंत्य एटले छेल्लो त्रिंशांश लेवो.

ग्रहगोचर विरुद्ध (अशुभ) होय तो माणसे विशेषे करीने सत्कर्ममां (धर्मकार्यमां) तत्पर रहेवुं, अने अत्यंत दूरनी यात्रा, अश्वक्रीडा, विकाळे फरवुं अने साहस कार्य विगेरे कार्यनो त्याग करवो.

आ प्रमाणे (विरुद्ध ग्रहगोचरमां) यात्रादिक कर्या विना निर्वाह थइ शके नहीं, तेथी ते ग्रहोनी शांतिने माटे कहे छे.—

अर्कारयो १ र्ज्ञस्य २ गुरोः ३ सितेन्द्वो ४-
र्मन्दस्य ५ राहूरगयोश्च ६ तुष्ट्यै ।
सदा वहेद्विद्रुम १ हेम २ मुक्ता ३-
रूप्याणि ४ लोहं च ५ विराटजं च ६ ॥ ६८ ॥

अर्थ—सूर्य अने मंगळनी तुष्टि माटे विद्रुमने धारण करवां, बुधनी शांतिने माटे सुवर्ण पहेरवुं, गुरुनी शांति माटे मोती पहेरवां, शुक्र अने चंद्रनी शांति माटे रूपुं पहेरवुं, शनिनी शांति माटे लोढुं पहेरवुं (पासे राखवुं) अने राहु तथा केतुनी शांति माटे राजावर्त नामनो मणि पहेरवो.

अहीं कोइ शंका करे छे के—सात ग्रहोनुं तो सर्वदा गोचरफळ विचारवानुं कह्युं छे अने दिवस, मास, वर्ष तथा होरानुं स्वामीपणुं पण सात ग्रहोने ज छे, तो अहीं राहु अने केतुनुं ग्रहण केम कर्युं ? तथा तेमनुं प्रतिकूळ गोचरपणुं पण शी रीते घटे ? के जेथी करीने तेमनी शांतिने माटे विराटज मणिने वहन करवानुं कहेवुं पड्युं ? आनो जवाब ए छे जे—राहु अने केतुनुं दिवसादिकनुं स्वामीपणुं भले न होय, परंतु ग्रहपणुं तो छे ज, केमके जो तेओ ग्रह न होय तो राशि विगेरेमां तेमनो संचार शी रीते घटे ? तथा राहु गोचर पण ग्रहणने दिवसे विचारवानुं कह्युं ज छे, तेथी तेना प्रतिकूळपणामां तेनी शांतिनो उपयोग थइ शके छे, अने केतु पण ज्यारे उदय पाम्यो होय त्यारे तेनाथी उत्पन्न थयेला उपद्रवनी शांतिने माटे तेनो शांतिक उपाय उपयोगी छे.

ग्रहोनी शांति माटे बीजो प्रकार कहे छे.—

पूषादितोषाय च पद्मराग १-
मुक्ता २ प्रवालानि ३ सगारुडानि ४ ।
सपुष्परागं ५ कुलिशं ६ च नील ७-
गोमेद ८ वैडूर्य ९ मणीन् वहेत ॥ ६९ ॥

अर्थ—रविनी तुष्टि माटे पद्मराग धारण करवो, चंद्र माटे मुक्ता, मंगळ माटे परवाळां, बुध माटे सगारुड (मरकत मणि), गुरु माटे पुष्पराग, शुक्र माटे कुलिश (वज्र), शनि माटे नील मणि, राहु माटे गोमेद जातना मणि, अने केतुनी शांति माटे वैडूर्य मणिने धारण करवा.

ग्रहोनी शांतिने माटे स्नानो कहे छे.—

एलाशिलापद्मकयष्ठुशीरसुराह्वकश्मीरजशोणपुष्पैः ।
अर्के विधौ कैरवपञ्चगव्यैः सशंखशुक्तिस्फटिकेभदानैः ॥ ७० ॥

अर्थ—सूर्य विरुद्ध (अशुभ) होय तो एलायची, मणशील, कमळ, जेठीमध, सुगंधी वाळो, देवदार, केसर अने राता कणेरनां पुष्पोथी स्नान करवुं एटले के आ सर्व वस्तु पाणीमां नाखी तेवडे स्थान करवुं. तथा ते स्नान पण ते ते ग्रहना वारने दिवसे करवुं. ए प्रमाणे सर्वत्र जाणवुं. चंद्र विरुद्ध होय तो शंख, छीप, स्फटिक अने हाथीना मद सहित पोयणा (कमळ) अने पंचगव्यवडे स्नान करवुं. पंचगव्य माटे पराशर आ प्रमाणे कहे छे.—

"कृष्णाया गोमयं मूत्रं नीलायाः कपिलाघृतम् ।
सुरभेर्दधि शुक्लायास्ताम्रायाः क्षीरमाहरेत् ॥ १ ॥"

"काळी गायनुं छाण, लीली गायनुं मूत्र, पीळी गायनुं घी, धोळी गायनुं दहीं अने राती गायनुं दुध लेवुं."

भौमे बलाहिंगुलबिल्वकेसरैर्मांस्या फलिन्याऽरुणपुष्पचन्दनैः ।
सुवर्णमुक्तामधुगोमयाक्षतैः सरोचनामूलफलैर्बुधे पुनः ॥ ७१ ॥

अर्थ—मंगळ विरुद्ध होय तो बळदाणा, हींगळोक, बीलानुं फळ, बकुलनुं फळ, मुरमांसी, प्रियंगु, रातां पुष्प (जवाकुसुम) अने लाल चंदनवडे स्नान करवुं. बुध विरुद्ध होय तो सुवर्ण, मोती, मध, गायनुं छाण, अक्षत, गोरोचंदन अने नारंगीनुं फळ, एटली वस्तुवडे स्नान करवुं.

जीवे सजातिकुसुमैः सितसर्षपयष्टिमल्लिकापत्रैः ।
मूलफलकुंकुमैलामनःशिलाभिस्तु दैत्यगुरौ ॥ ७२ ॥

अर्थ—गुरु अशुभ होय तो जाइनां पुष्प, धोळा सरसव, जेठीमध अने मल्लिका (विचकिल)नां पांदडांए करीने स्नान करवुं. शुक्र अशुभ होय तो बीजोरुं, केसर, एलायची अने मणशीलवडे स्नान करवुं.

कृष्णतिलाञ्जनलाजैः शतपुष्पीरोध्रमुस्तकबलाभिः ।
तरणितनये च गोचरविरुद्धराशिस्थिते स्नायात् ॥ ७३ ॥

शनि गोचर विरुद्ध राशिमां रह्यो होय तो काळा तल, सौवीरांजन (सोयरो), लाजा (शेकेला व्रीहि), शतपुष्पी (सोआ), लोधर, मोथ अने बळ नामनी औषधिए करीने स्नान करवुं.

राहु केतुनी शांति माटे भास्कर आ प्रमाणे स्नान कहे छे.

"रोध्रगर्भतिलपत्रकमुस्ताहस्तिदानमृगनाभिपयोभिः ।
स्नानमेतदपरोधति राहोः साजमूत्रमिदमेव च केतोः ॥ १ ॥"

"लोधरनो गर्भ, तलनां पांदडां, मोथ, हाथीनो मद अने कस्तूरीना जळवडे स्नान करवाथी राहुनी पीडा रोकाय छे, अने ते ज स्नान बकराना मूत्र सहित करवाथी केतुनी पीडा रोकाय छे."

"सप्रियंगुरजनीद्वयमांसीकुष्ठलाजसितसर्षपचन्द्रैः ।
वारिभिः सहवचैः सहरोध्रैः स्नानमत्ति निखिलग्रहपीडाम् ॥ २ ॥"

"प्रियंगु (कांग), हळदर, जटामांसी, कुष्ठ (एक जातनी वनस्पति), लाजा, धोळा सरसव अने कपूर सहित तथा वज अने लोध्र सहित जळवडे स्नान करवाथी समग्र ग्रहोनी पीडा नाश पामे छे."

आ स्नानो राजादिकने ज उचित छे. अन्य जने तो आ प्रमाणे करवुं.—

"रत्तं १ सेअं २ रत्तं ३ नीलं ४ पीअं ५ सिअं ६ तिसु किन्हं ९ ।
पूअं बलिं च कुज्जा सूराईणं विरुद्धाणं ॥ १ ॥"

"सूर्यादिक विरुद्ध होय तो तेनी शांति माटे अनुक्रमे राता १, श्वेत २, राता ३, लीला ४, पीळा ५, श्वेत ६ अने छेल्ला त्रण एटले शनि, राहु अने केतुनी शांति माटे काळा ९ पदार्थोथी (पुष्पादिक, धान्यादिकथी) पूजा तथा बळिदान करवां." आ प्रमाणे हर्षप्रकाशमां कह्युं छे.

। इति गोचरद्वारम् । ६

॥ इति श्रीमति आरंभसिद्धिवार्तिके राशि १ गोचर २ परीक्षात्मको द्वितीयो विमर्शः ॥ २

श्रीसूरीश्वरसोमसुन्दरगुरोर्निःशेषशिष्याग्रणी-
र्गच्छेन्द्रः प्रभुरत्नशेखरगुरुर्देदीप्यते सांप्रतम् ।
तच्छिष्याश्रवहेमहंसरचितस्यारंभसिद्धेः सुधी-
शृंगाराभिधवार्त्तिकस्य किल दृक् २ संख्यो विमर्शोऽभवत् ॥ २ ॥

श्रीमान् सूरीश्वर सोमसुंदर गुरुना समग्र शिष्योमां अग्रेसर अने गच्छना नायक एवा पूज्य श्री रत्नशेखर गुरु हालमां देदीप्यमान वर्ते छे. तेमना शिष्य हेमहंसे रचेली आरंभसिद्धिना सुधीशृंगार नामना वार्तिक (वृत्ति)नो आ बीजो विमर्श पूर्ण थयो.



। अथ तृतीयो विमर्शः ।

हवे कार्यद्वार कहे छे.—

कार्यं वितारेन्दुबलेऽपि पुष्ये, दीक्षां विवाहं च विना विदध्यात् ।
पुष्यः परेषां हि बलं हिनस्ति, बलं तु पुष्यस्य न हन्युरन्ये ॥ १ ॥

अर्थ—तारा अने चंद्रनुं बळ नहीं छतां पण दीक्षा अने विवाह सिवायनां बीजां शुभ कार्यो पुष्य नक्षत्रमां करवां, कारण के पुष्य नक्षत्र बीजाउना बळने हणे छे, पण पुष्यनुं बळ बीजाउ हणी शकता नथी.

गोचरवडे अथवा अष्टकवर्गवडे चंद्र विरुद्ध होय, तथा ताराउ जन्म, यम अने निधनादिकमां रहेली होय, तोपण पुष्यमां कार्य करवुं. चंद्र अने तारानुं बळ होय तो तो विशेषे करीने पुष्यमां करवुं. मूळमां "अपि" शब्द लख्यो छे ते परथी आ प्रमाणे जाणवुं.—पुष्य नक्षत्र पांच रेखाना के सात रेखाना चक्रमां दुष्ट (अशुभ) ग्रहवडे विंधायुं होय, अथवा पाप ग्रहवडे आक्रमण करायुं होय, भोगवायुं होय अथवा भोगववानुं होय, अथवा पश्चिम के दक्षिण दिशामां जतां वचमां परिघदंड अने पातवडे ते दिशामां विपरीत होय तोपण पुष्य नक्षत्रमां चंद्रनुं बळ होय त्यारे अथवा पुष्यना उदयसमये पुष्यना ज मुहूर्त्तमां प्रतिष्ठा, यात्रा, क्षौर, अन्नप्राशन, उपनयन, विद्यारंभ, श्वेत वस्त्र परिधान (पहेरवुं ते) विगेरे सर्व शुभ कार्य करवां, एम रत्नमाला भाष्यमां कह्युं छे.

मूळ श्लोकमां दीक्षा अने विवाह ए बे कार्य वर्ज्यां छे तेना उपलक्षणथी कन्यानो संबंध पण पुष्य नक्षत्रमां वर्जवो. आ कार्यो वर्जवानुं कारण ए छे जे—पहेलां प्रजापति पुष्य नक्षत्रमां पोतानी स्त्रीने परण्यो हतो. ते वखते पुष्य नक्षत्रना प्रभावथी ते अत्यंत कामनी पीडाथी पीडायो. ते पीडाने सहन करवामां अशक्तिमान् थवाथी तेणे पुष्यने शाप आप्यो के—"अरे पापी ! आज पछी तुं विवाहनां कार्योमां अधिकारी नहीं था." आ प्रमाणे श्रुति छे, ते विषे विवाहवृंदावनमां पण कह्युं छे के—

"पुष्यः स्म पुष्यत्यतिकाममेव, प्रजापतेः प्राप स शापमस्मात् ।"

"पुष्ये प्रजापतिना कामने ज अत्यंत पोषण कर्युं, तेथी ते पुष्य ते (प्रजापति)थी शापने पाम्युं."

कामने पोषण करनार होवाथी ज दीक्षामां पण पुष्य अनधिकारी छे, तेथी ते त्याज्य छे, एम जाणी लेवुं. मूळ श्लोकमां कह्युं के "पुष्य नक्षत्र बीजाउना बळने हणे छे" एटले के कुतिथि, कुवार अने कुयोगादिकना बळने हणे छे, पण ते कुतिथि, कुवार विगेरे

पुष्यना बळने हणता नथी. ते कुवारादिक जेम पुष्यना बळने हणता नथी, ते ज रीते ग्रहवेध, विरुद्ध तारापणुं ए विगेरे पुष्यना दोषने पण हणता नथी. अर्थात् पुष्य पोतानी जाते ज पोताना दोषने हणे छे. तेथी करीने कह्युं छे के—"सिंहो यथा सर्वचतुष्पदानां तथैव पुष्यो बलवानुडूनाम्" । "जेम सिंह सर्व पशुओमां बळवान् छे, तेम पुष्य सर्व नक्षत्रोमां बळवान् छे.

हवे कार्यना भेदने लीधे नक्षत्रोना अधोमुख विगेरे भेदो कहे छे.—

अधोमुखानि पूर्वाः स्युर्मूलाश्लेषामघास्तथा ।
भरणीकृत्तिकाराधाः सिद्ध्यै खातादिकर्मणाम् ॥ २ ॥

अर्थ—त्रणे पूर्वा, मूळ, अश्लेषा, मघा, भरणी, कृत्तिका अने विशाखा ए नव नक्षत्रो अधोमुख (नीचा मुख)वाळां छे तेथी तेओ खात विगेरे कार्यनी सिद्धि करनारां छे. आदि (विगेरे) शब्दथी वाव, कूवा, तळाव, खाइ विगेरे खोदवामां तथा निधान खोदवामां (नाखवामां), द्यूत रमवामां, गुफामां प्रवेश करवामां, धातुकर्ममां, राजानी साथे लडाइमां तथा गणितना आरंभमां विगेरे कार्यमां श्रेष्ठ छे.

तिर्छा मुखवाळां नक्षत्रो आ प्रमाणे छे.—

तिर्यग्मुखानि चादित्यं मैत्रं ज्येष्ठा करत्रयम् ।
अश्विनीचान्द्रपौष्णानि कृषियात्रादिसिद्धये ॥ ३ ॥

अर्थ—पुनर्वसु, अनुराधा, ज्येष्ठा, हस्त, चित्रा, स्वाति, अश्विनी, मृगशीर्ष अने रेवती, ए नव नक्षत्रो तिर्छा मुखवाळां छे, तेओ खेती, यात्रा विगेरे कार्यने सिद्ध करनारां छे. अहीं पण आदि (विगेरे) शब्दथी अश्व, हस्ती अने बळद विगेरेने दमवामां, वेपार, राजा साथे संधि, वहाण करावववुं, वहाण रस्ते जवुं, वहाणने प्रथम हांकवुं, गाडुं, रथ अने यंत्रने प्रथम चलाववां विगेरे कार्यमां पण श्रेष्ठ छे.

हवे ऊर्ध्व मुखवाळां कहे छे.—

ऊर्ध्वास्यान्युत्तराः पुष्यो रोहिणी श्रवणत्रयम् ।
आर्द्रा च स्युर्ध्वजछत्राभिषेकतरुकर्मसु ॥ ४ ॥

अर्थ—त्रण उत्तरा, पुष्य, रोहिणी, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषक् अने आर्द्रा, ए नव नक्षत्रो ऊर्ध्व (ऊंचा) मुखवाळां छे. तेओ ध्वज, छत्र, अभिषेक अने वृक्षनां कार्योमां शुभ छे. कर्म (कार्य) शब्द बहुवचनमां छे, तेथी दुर्ग, प्राकार, तोरण, उद्यान, पट्टाभिषेक विगेरे कार्य करवामां शुभ छे.

आ प्रमाणे सामान्य रीते कार्य कहीने हवे पोतपोताने स्थाने नामनो प्रकाश करवापूर्वक केटलांक उपयोगी कार्यो कहे छे.—

कृत्वाद्यऋतुचतुष्टयवर्जी विषमासु रात्रिषु न योषाम् ।
सेवेत पुत्रकामः पौष्णमघामूलभेष्वपि च ॥ ५ ॥

अर्थ—पुत्रनी इच्छावाळा पुरुषे ऋतुना प्रथमना चार दिवस वर्जीने विषम (एकी) रात्रिओमां स्त्रीने सेववी नहीं, तथा रेवती, मघा अने मूळ नक्षत्रमां पण सेववी नहीं.

विषम रात्रिने वर्जवा विषे विवेकविलासमां कह्युं छे के—

"निशाः षोडश नारीणामृतुः स्यात्तासु चादिमाः ।
तिस्रः सर्वैरपि त्याज्याः प्रोक्ता तुर्यापि केनचित् ॥ १ ॥"

"स्त्रीओने सोळ रात्रि सुधी ऋतु होय छे, तेमां प्रथमनी त्रण रात्रिओ सौने वर्जवा योग्य छे. कोइए चोथी रात्रि पण वर्ज्य कही छे."

"चतुर्थ्यां जायते पुत्रः स्वल्पायुर्गुणवर्जितः ।
विद्याचारपरिभ्रष्टो दरिद्रः क्लेशभाजनम् ॥ २ ॥"

"चोथी रात्रिए पुत्र उत्पन्न थयो होय तो ते अल्प आयुष्यवाळो, गुण रहित, विद्या अने आचारथी भ्रष्ट, दरिद्र अने क्लेशना स्थानरूप थाय छे."

विषम रात्रिमां स्त्री प्रत्ये गमन न करवा विषे कह्युं छे के—"समायां निशि पुत्रः स्याद्विषमायां च पुत्रिका"। "सम रात्रिए स्त्रीगमन करवाथी पुत्र थाय छे, अने विषम रात्रिए पुत्री थाय छे." मूळ श्लोकमां "विषम रात्रिए गमन न करवुं" एम जे निषेध मुखे कह्युं छे, ते वचन गुप्तिनुं सत्यापन करवा माटे कह्युं छे. ए रीते आगळ पण निषेध मुखनी उक्तिमां जाणी लेवुं. रेवती विगेरे नक्षत्रो मूळ श्लोकमां वर्जवानां कह्यां छे, ते विषे कह्युं छे के—

"गर्भाधाने मघा वर्ज्या रेवत्यपि यतोऽनयोः ।
पुत्रजन्मदिने मूलाश्लेषे स्तस्ते च दुःखदे ॥ १ ॥"

"गर्भ धारण करवामां मघा अने रेवती वर्ज्य छे, कारण के आ बे नक्षत्रमां गर्भ रहे तो पुत्रना जन्मने दिवसे अनुक्रमे मूळ तथा अश्लेषा नक्षत्र आवे छे, तेथी ते मूळ अने अश्लेषानो जन्म अत्यंत दुःखदायी छे. मूळ तथा अश्लेषामां जन्म थवानुं प्रमाण— "आधानाद्दशमे जन्म" "आधानथी दशमा नक्षत्रमां जन्म थाय छे," ए वचन छे.

रत्नानीव प्रशस्तेऽह्नि जाताः स्युः सूनवः शुभाः ।
अतो मूलमपि त्याज्यं गर्भाधाने शुभार्थिभिः ॥ २ ॥

"प्रशस्त दिवसे उत्पन्न थयेलां बाळको रत्ननी जेम शुभकारक थाय छे, तेथी शुभने इच्छनार पुरुषोए गर्भाधानमां मूळ नक्षत्रनो पण त्याग करवो."

हवे स्त्रीना सीमंतनुं मुहूर्त्त कहे छे.—

सीमन्तः स्यान्नृवारेषु मासि षष्ठेऽष्टमेऽपि वा ।
हस्तमूलमृगादित्यपुष्यश्रुतिषु योषिताम् ॥ ६ ॥

अर्थ—स्त्रीओनुं सीमंत कार्य पुरुष वारमां एटले रवि, मंगळ अने गुरुवारे छठे अथवा आठमे मासे अने हस्त, मूळ, मृगशिर, पुनर्वसु, पुष्य अने श्रवण एटलां नक्षत्रमां शुभ छे. त्रिविक्रम सीमंत कार्यने पुरुष नक्षत्रमां करवानुं कहे छे. तेमां पण आ ज नक्षत्रो आवे छे, केमके आ नक्षत्रो ज (बाकीनां स्त्रीरूप होवाथी) पुरुषरूपे छे.

"अर्वाग्विवाहकालाच्च पितृचन्द्रबलं सदा ।
स्त्रीणां सीमन्त उद्वाहे ग्राह्यमन्यत्र तत्पतेः ॥ १ ॥"

"विवाह कर्या पहेलां (कन्याने) पिताना चंद्रनुं बळ सदा शुभ छे, स्त्रीओना चंद्रनुं बळ सीमंत तथा विवाहमां बळवान् छे, अने बीजां कार्योमां पतिनुं चंद्र बळ शुभ छे." एम व्यवहारप्रकाशमां कह्युं छे.

विष बाळकनी उत्पत्ति कहे छे.—

विषकौमारजन्म स्याद्द्वितीयाशनिसार्पभैः ।
सप्तम्यारशतर्क्षैश्च द्वादश्यर्काग्निभैस्तथा ॥ ७ ॥

अर्थ—बीज, शनि अने अश्लेषाए करीने, सातम, मंगळ अने शतभिषके करीने, तथा बारस, रविवार अने कृतिकाए करीने विष कुमार (संतति)नो जन्म थाय छे. एटले के आवा योगमां जो कोइ बाळक उत्पन्न थाय तो ते विष कन्या के विष पुत्र थाय छे. तेनुं फळ.—

"विषकन्याख्या प्रथमं पित्रोर्वंशक्षयंकरी ।
हन्ति पश्चात्पतिं श्वश्रूं श्वशुरं देवरं तथा ॥ १ ॥"

"विष कन्या प्रथम (कुमारिका अवस्थामां) माता अने पिताना वंशनो नाश करे छे, अने पछी (परण्या पछी) पतिनो, सासुनो, ससरानो अने दीयरनो नाश करे छे." विशेषमां व्यवहारप्रकाशमां कह्युं छे के—"अभिजित् नक्षत्रमां करेलुं सर्व कार्य शुभ छे, पण तेमां उत्पन्न थयेलुं बाळक प्राये जीवतुं नथी.

हवे मूळ विगेरे नक्षत्रमां उत्पन्न थयेला बाळकने आश्रीने कहे छे.—

मूलस्यांह्रिचतुष्के पितृ १ मातृ २ द्रव्यनाश ३ सौख्यानि ४ ।
बालस्य जन्मनि स्युः क्रमतः सार्पस्य तूत्क्रमतः ॥ ८ ॥

अर्थ—मूळना पहेला पादमां बाळक उत्पन्न थाय तो पितानो नाश थाय, बीजामां जन्मे तो मातानो नाश थाय, त्रीजामां जन्मे तो द्रव्यनो नाश थाय अने चोथामां जन्मे तो सुख थाय. अश्लेषामां बाळक जन्मे तो तेनुं उत्क्रमथी फळ जाणवुं, एटले के अश्लेषाना पहेला पादमां जन्मे तो सुख थाय, बीजामां जन्मे तो द्रव्यनो नाश, त्रीजामां मातानो नाश अने चोथा पादमां जन्मे तो पितानो नाश थाय.

वराह तो मूळना चोथा पादमां जन्मेला बाळकनुं फळ आ प्रमाणे कहे छे.—

"क्षेत्राधिपसंदृष्टे शशिनी नृपस्तत्सुहृद्भिरर्थपतिः ।
द्रेष्काणांशकपैर्वा प्रायः सौम्यैः शुभं नान्यैः ॥ १ ॥"

"आ तात्कालिक जन्मलग्नमां विचारवानुं छे.—क्षेत्राधिपे देखेला चंद्रमां एटले के ते वखते (जन्मसमये) जे राशिमां चंद्र होय ते राशिनो स्वामी जो चंद्रने जोतो होय तो मूळना चोथा पादमां जन्मेलो बाळक राजा थाय अने ते राशिना मित्रोए ते चंद्रने जोयो होय तो धनपति थाय तथा चंद्रे आक्रमण करेला द्रेष्काणनो अथवा नवांशनो स्वामी जो सौम्य होय अने ते चंद्रने जोतो होय तो ते शुभ छे अने अन्य एटले क्रूर स्वामी जोतो होय तो अशुभ छे."

केटलाक आचार्यो कहे छे के—

"मूलस्यांह्रिचतुष्के क्रमेण पशुनाशिनी १ सुखकरी च २ ।
पितृपक्षमथ क्षपयति ३ मातुलपक्षं च ४ जाता स्त्री ॥ १ ॥"

"मूळना पहेला पादमां उत्पन्न थयेली कन्या पशुनो नाश करे छे, बीजा पादमां जन्मी होय तो सुख करनारी थाय छे, त्रीजा पादमां जन्मी होय तो पिताना पक्षनो नाश थाय छे अने चोथा पादमां जन्मी होय तो माताना पक्षनो नाश थाय छे."

"मूले जातोऽधमः स्यान्ना स्त्री तु पुण्यवती भवेत् ।
ज्येष्ठा मघा विपरीताऽश्लेषा तद्भयेऽधमा ॥ २ ॥"

"मूळमां जन्मेलो पुरुष अधम थाय छे, अने स्त्री जन्मी होय तो ते पुण्यवती थाय छे, ज्येष्ठा अने मघामां जन्मे तो तेथी विपरीत थाय छे, एटले के पुरुष जन्मे तो पुण्यवान् अने स्त्री जन्मे तो अधम थाय छे, अने अश्लेषामां जन्मे तो बन्ने अधम थाय छे."

"तृतीया दशमी कृष्णा शनिभौमज्ञसंयुता ।
शुक्लचतुर्दशी मूलजातः संहरते कुलम् ॥ ३ ॥"

"शनि, मंगळ अने बुधवारे करीने सहित कृष्णपक्षनी त्रीज के दशम होय अथवा शुक्लपक्षनी चौदश होय ते दिवसे मूळ नक्षत्र होय तेमां उत्पन्न थयेलो पुरुष कुळनो क्षय करे छे."

अश्लेषामां जन्मेलानुं फळ आ प्रमाणे कह्युं छे.—

"सार्पांशे प्रथमे राजा द्वितीयांशे धनक्षयः ।
तृतीये जननीं हन्ति चतुर्थे पितृघातकः ॥ १ ॥"

"अश्लेषाना पहेला अंशमां (पादमां) जन्मे तो राजा थाय, बीजा अंशमां जन्मे तो धननो क्षय थाय, त्रीजा अंशमां जन्मे तो माताने हणे अने चोथामां जन्मे तो पिताने हणे."

हवे मूळ नक्षत्रनुं पुरुषस्वरूप कहे छे.—

मूर्धा १ स्य २ स्कंध ३ बाह्वा ४ कर ५ हृदय ६ कटी ७ गुह्य ८ जानु ९ क्रमेषु १०,
स्युर्घट्यः पञ्च ५ पञ्चो ५ रग ८ करट ८ करा २ ष्ट ८ द्वि २ दि १० क्क र्के ६ तर्काः ६ ।
बालश्छत्री १ पितृघ्नो २ ऽसलदृढबलवान् ३ राक्षसो ४ ब्रह्मघाती ५,
राजा ६ नाशी ७ स्वसौख्यावह ८ इह चपलो ९ नश्वर १० श्चासु जातः ॥९॥

अर्थ—मूळ पुरुषना मस्तक पर पांच घडी मूकवी, मुखमां ५, बे स्कंध पर ८, बे बाहुमां ८, बे हाथमां २, हृदय पर ८, कटी पर २, गुह्य पर १०, बन्ने जानुए ६ अने बन्ने पगे ६ घडी मूकवी. अहीं बे स्कंध पर आठ मूकवानी कही छे तेमां दरेक पर चार चार मूकवी. ए ज प्रमाणे बाहु विगेरेमां पण ब बे जागे मूकवी. बीजे ठेकाणे पण यथायोग्य आ प्रमाणे ज जाणवुं. आ घडीओने विषे उत्पन्न थयेलो बाळक अनुक्रमे राजा १, पितृघाती २, दृढ खांधना बळवाळो ३, राक्षस ४, ब्रह्महत्यारो ५, राजा ६, नाशवंत ७, सुखी ८, चपळ ९, अने नाशवंत (अल्पायुवाळो) थाय छे अर्थात् मस्तक परनी पांच घडीओमां जन्म थयो होय तो राजा थाय, मुखनी पांच घडीमां जन्म थयो होय तो पितृघाती थाय, ए रीते अनुक्रमे जाणवुं.

मूळ पुरुषनी स्थापना.

मस्तके	५	राजा
मुखे	५	पितृहंता
बे स्कंधे	८	खांधवाळो
बे बाहुए	८	राक्षस
बे हाथे	२	ब्रह्मघाती
हृदये	८	राज्यधर
कटीए	२	अल्पायु
गुह्ये	१०	सुखी
बे जानुए	६	चपळ
बे पगे	६	अल्पायु

कोइ आचार्य आ प्रमाणे कहे छे.—

"ब्रह्महत्याकरः पाणौ यद्वा मातुलघातकः ।
गुह्यजातो धनं हन्याद्वृद्धत्वे च सुखी भवेत् ॥ १ ॥
न जीवेद्वामजंघायां पांथो वा जायते नरः ।
दक्षिणस्यां तु जंघायां जातकः स्यान्महाधनी ॥ २ ॥
कृच्छ्राज्जीवति वामेऽङ्घ्रौ दक्षिणे धनपुण्यवान् ॥"

"मूळ नक्षत्रनी हाथनी घडीमां उत्पन्न थयो होय तो ब्रह्महत्या करनार थाय, अथवा मामानो घात करे, गुह्य स्थाननी घडीमां जन्म्यो होय तो धननो नाश करे अने वृद्धपणामां सुखी थाय, वाम (डाबी) जंघानी घडीमां जन्म्यो होय तो जीवे नहीं अने जीवे तो पंथिक थाय, जमणी जंघानी घडीमां जन्म्यो होय तो महा धनवान् थाय, डाबा पगनी घडीमां जन्म्यो होय तो महा कष्टे जीवे, अने जमणा पगनी घडीमां जन्म्यो होय तो धनवान् तथा पुण्यवान् थाय."

केटलाएक मूळने वृक्षरूपे कहे छे, ते आ प्रमाणे.—

"पात् १ स्तंब २ त्वचि ३ शाखा ४ दल ५ कुसुम ६ फले ७ स्युः शिखायां ८ च घट्यो,
मूलक्रोर्वाब्धि ४ सप्त ७ ष्टक दशक १० नवे ९ ष्वं ५ ग ६ रुद्र ११ प्रमाणाः ।
मूला १ र्थ २ भ्रातृ ३ मातृः क्षपयति ४ पतति ५ प्रौढमंत्री ६ नृपश्च ७,
स्यादेतासु प्रसूतः श्रयति कृशतरं चायुरेतच्छिखायाम् ८ ॥ १ ॥"

"मूळ वृक्षना मूळमां ४ घडी मूकवी, थडमां ७, छालमां ८, शाखामां १०, पत्रमां ९, पुष्पमां ५, फळमां ६, तथा शिखा (टोच) उपर ११ घडी मूकवी. आ घडीओमां जन्मेलानुं फळ अनुक्रमे आ प्रमाणे—मूळनो नाश करे १, अर्थनो नाश करे २, भाइनो नाश करे ३, मातानो नाश करे ४, पोते नाश पामे ५, मोटो मंत्री थाय ६, राजा थाय ७, अने शिखामां नक्षत्र होय तो अल्पायु थाय ८." केटलाक आचार्यो कहे छे के शिखामां नक्षत्र होय तो मोटा आयुष्यवाळो थाय.

मूळ वृक्षनी स्थापना.

मूळे	४	मूळपात
थडे	७	अर्थहानि
छाले	८	भ्रातृनाश
शाखाए	१०	मातृनाश
पत्रे	९	मरण
पुष्पे	५	मंत्री थाय
फळे	६	राज्यप्राप्ति
शिखाए	११	अल्पायु

अन्य शास्त्रमां मूळ पुरुषथी विपरीत अश्लेषा पुरुष पण आ प्रमाणे कह्यो छे.—

"अश्लेषाघटिकाषष्टिरेवं स्थाप्या नराकृतिः ।
आदौ पादद्वये पञ्च जान्वोः पञ्च गुदेऽष्ट च ॥ १ ॥
नाभावष्टौ हृदि द्वौ च पाण्योरष्टौ द्वयं भुजे ।
स्कन्धयोर्दशकं वक्त्रे षट् शीर्षे षडिति क्रमात् ॥ २ ॥
मृति १ र्भ्रमः २ सुखं ३ व्याधी ४ राज्यं ५ हत्या ६ च दैत्यता ७ ।
स्कन्धिलः ८ पितृहा ९ नेता १० फलं ज्ञेयं यथाक्रमम् ॥ ३ ॥"

"अश्लेषा नक्षत्रनी ६० घडीओ आ प्रमाणे नरनी आकृतिए स्थापवी—प्रथम बे पगमां ५ घडी मूकवी, पछी अनुक्रमे बे जानुमां ५, गुदामां ८, नाभिमां ८, हृदयमां २, बे हाथमां ८, बे बाहुमां २, बे स्कंध उपर १०, मुखमां ६ अने मस्तक पर ६. तेनुं फळ अनुक्रमे पगथी आ प्रमाणे जाणवुं. मरण १, भ्रमण २, सुख ३, व्याधि ४, राज्य ५, हत्या करनार ६, राक्षसपणुं ७, खांधवाळो ८, पितानो घाती ९, राजा १०."

अश्लेषा पुरुषनी स्थापना.

बे पग	५	मरण	बे हाथ	८	हत्या करनारो
बे जानु	५	भ्रमण	बे बाहु	२	राक्षस
गुदाए	८	सुख	बे स्कंधे	१०	खांधवाळो
नाभिए	८	व्याधि	मुखे	६	पितृघाती
हृदये	२	राज्य	मस्तके	६	राजा

ए ज रीते मूळ वृक्षथी विपरीत अश्लेषा वृक्ष पण अन्य शास्त्रमां कहेलुं जाणवुं. विशेष एके घडीनो क्रम मूळ वृक्षनी जेम ज लेवो.

अश्लेषा वृक्षनी स्थापना.

शिखाए	४	अल्पायु
फळे	७	राज्यप्राप्ति
पुष्पे	८	मंत्री थाय
पत्रे	१०	मृत्यु
शाखामां	९	मातृनाश
छालमां	५	भ्रातृनाश
थडे	६	अर्थहानि
मूळे	११	मूळनाश

विवेकविलास विगेरे ग्रंथोमां तो मूळ अने अश्लेषानां मुहूर्त्तोए करीने जन्मेलानुं फळ आ प्रमाणे कहेलुं छे.—

"आद्यः षष्ठस्त्रयोविंशो द्वितीयो नवमोऽष्टमः ।
अष्टादशश्च मूलस्य मुहूर्त्ता दुःखदा जनौ ॥ १ ॥
त्रयोविंशपञ्चविंशौ द्वाविंशोऽष्टत्रयोदशौ ।
एकोनत्रिंशत्रिंशौ च सार्पे स्युरशुभाः क्षणाः ॥ २ ॥"

"मूळ नक्षत्रना पहेला, छठा, त्रेवीशमा, बीजा, नवमा, आठमा अने अढारमा मुहूर्त्तमां जन्म थाय तो ते दुःखदायी छे. तथा अश्लेषाना त्रेवीशमा, पचीशमा, बावीशमा, आठमा, तेरमा, ओगणत्रीशमा अने त्रीशमा मुहूर्त्तमां जन्म थाय तो ते पण अशुभ (दुःखदायी) छे." आनुं कारण ए छे जे आ मुहूर्त्तोना स्वामीओ क्रूर छे, माटे ते अशुभ छे. ते स्वामीओ आ प्रमाणे.—

"राक्षसो १ यातुधानश्च २ सोमः ३ शक्रः ४ फणीश्वरः ५ ।
पितृ ६ मातृ ७ यमाः ८ कालो ९ वैश्वदेवो १० महेश्वरः ११ ॥ १ ॥
साध्यदेवः १२ कुबेरश्च १३ शक्रो १४ मेघो १५ दिवाकरः १६ ।
गंधर्वो १७ यमदेवश्च १८ ब्रह्मविष्णुमय १९ स्ततः ॥ २ ॥
ईश्वरो २० विष्णु २१ रिन्द्राणी २२ पवनो २३ मुनय २४ स्तथा ।
षण्मुखो २५ भृंगिरीटी २६ च गौरी २७ मातृ २८ सरस्वती २९ ॥ ३ ॥
प्रजापति ३० श्च मूलस्य त्रिंशन्मुहूर्त्तनायकाः ।
विपरीताः पुनर्ज्ञेया अश्लेषाजातबालके ॥ ४ ॥"

"मूळ नक्षत्रनां त्रीश मुहूर्त्तोना नायको अनुक्रमे आ प्रमाणे छे.—

राक्षस १, यातुधान (राक्षस) २, सोम ३, शक्र ४, नागेंद्र ५, पितृ ६, मातृ ७, यम ८, काळ ९, वैश्वदेव १०, महेश्वर ११, साध्यदेव १२, कुबेर १३, शक्र १४, मेघ १५, दिवाकर १६, गंधर्व १७, यमदेव १८, ब्रह्माविष्णु १९, ईश्वर २०, विष्णु २१, इंद्राणी २२, पवन २३, मुनिओ २४, षण्मुख (कार्त्तिकस्वामी) २५, भृंगिरीटी २६, गौरी २७, मातृ २८, सरस्वती २९ अने प्रजापति ३०. आथी विपरीत (एटले छेल्लेथी अनुक्रमे) अश्लेषानां मुहूर्त्तोना नायको जाणवा. तेमां उत्पन्न थयेला बाळकनुं पण ते प्रमाणे (नायक प्रमाणे) फळ जाणवुं."

हवे मूळ नक्षत्रमां जन्मेला बाळक माटे शांतिनो विधि कहे छे.—

त्यजेन्न वीक्षेत समाष्टकं वा, बालं पिता मूलविकारशान्त्यै ।
शतौषधीमूलमृदम्बुरत्नैः, स्नायाच्च हुत्वा सशिशुप्रसूकः ॥ १० ॥

अर्थ—मूळना विकार (दोष)नी शांति करवा माटे पिताए ते बाळकनो त्याग करवो, एटले के पोताना घरथी दूर राखवो. अथवा आठ वर्ष सुधी ते बाळकने जोवो

नहीं. पछी शांतिनो होम करीने सो उंषधीनां मूळ, सात प्रकारनी माटी, तीर्थोनां जळ अने पंच रत्नथी बाळक तथा तेनी माता सहित पोते स्नान करवुं. उंषधीउंनी साथे पंचगव्य, हाथीनो मद, बीज सहित पंचकषाय अने सर्वौषधी पण लेवी, एटके के सुवर्णमय मूळ नक्षत्रनुं राक्षसरूप करावvुं. पछी सो छिद्रवाळा घडामां ते राक्षस तथा सर्वे उंषधी विगेरे नाखवुं अने तेनी विधिने जाणनार विद्वान् पासे होम करावavापूर्वक स्नान करवुं. अश्लेषामां जन्मेला बाळकनो पण आ ज विधि छे, परंतु सुवर्णना राक्षसने बदले सुवर्णना सर्पनुं रूप बनाववुं. आ मूळ विधान तथा अश्लेषा विधान विस्तारथी गृहस्थधर्मसमुच्चय विगेरे ग्रंथोमां आप्युं छे. ते बहु दोष युक्त होवाथी अहीं तेनो विस्तार कर्यो नथी. बहु सावद्य आरंभना पापथी भय पामनार पुरुषे तो मूळ अथवा अश्लेषामां बाळकनो जन्म थाय त्यारे सर्व नक्षत्रोना भोगवनार नवग्रहोए पण जेनां चरणकमळ सेवातां छे एवा श्रीमान् अरिहंतनी तथा विशेषे करीने मूळ नक्षत्रमां ज उत्पन्न थयेला श्रीसुविधि स्वामीनी अष्टोत्तरशत प्रकारी स्नात्र पूजा शास्त्रोक्त विधि प्रमाणे महोत्सवपूर्वक भणाववी. एम करवाथी पण समग्र क्षुद्र उपद्रवोनी शांति थयेली सर्वत्र साक्षात् जोवामां आवे छे.

अहीं केटलाक कहे छे के—

"विष्कंभादिकुयोगेषु कुलिके सत्रिपुष्करे ।
संक्रान्तौ दुर्दिने विष्टौ मूलाश्लेषाजबालके ॥ १ ॥
गणकेनैव कर्त्तव्यं पौष्टिकं मूलसार्पयोः ।"

"विष्कंभादिक कुयोगमां, कुलिकमां, त्रिपुष्करमां, संक्रांतिमां, खराब दिवसे, विष्टिमां, मूळमां अने अश्लेषामां बाळकनो जन्म थयो होय तो मूळ अने अश्लेषानुं पौष्टिक कर्म गणकनी (जोशीनी) पासे ज कराववुं."

जन्मादिकमां उपयोगी नक्षत्रोना कुल्यादिक भेदो कहे छे.

कुल्यभान्यश्विनी पुष्यो मघा मूलोत्तरात्रयम् ।
द्विदैवतं मृगश्चित्राकृत्तिकावासवानि च ॥ ११ ॥
उपकुल्यानि भरणी ब्राह्मं पूर्वात्रयं करः ।
ऐन्द्रमादित्यमश्लेषा वायव्यं पौष्णवैष्णवे ॥ १२ ॥

अर्थ—अश्विनी, पुष्य, मघा, मूळ, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपद, विशाखा, मृगशीर्ष, चित्रा, कृत्तिका अने धनिष्ठा ए बार नक्षत्रो कुल्य कहेवाय छे (११) भरणी, रोहिणी, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढा, पूर्वाभाद्रपद, हस्त, ज्येष्ठा, पुनर्वसु, अश्लेषा, स्वाति, रेवती अने श्रवण ए बार नक्षत्रो उपकुल्य कहेवाय छे.

कुल्यादिक नक्षत्रोनुं फळ कहे छे.—

पूर्वेषु जाता दातारः संग्रामे स्थायिनां जयः ।
अन्येषु त्वन्यसेवार्त्ता यायिनां च सदा जयः ॥ १३ ॥

अर्थ—पूर्व एटले कुल्य नक्षत्रमां जन्म थयो होय तो ते दातार थाय छे, अने ए नक्षत्रोमां जो संग्राम (युद्ध) थयुं होय तो स्थायिनो एटले पोताने स्थाने रहेला राजानो जय थाय छे, अर्थात् चमी आवेला राजानो पराजय थाय छे. तथा अन्य एटले उपकुल्य नक्षत्रमां जेनो जन्म थयो होय ते बीजानी (राजादिकनी) सेवा–नोकरी करनारा थाय छे, अने ते नक्षत्रोमां जो युद्ध थयुं होय तो चमी आवनारनो जय थाय छे अर्थात् स्थानमां रहेलानो पराजय थाय छे.

हवे कुल्योपकुल्य नक्षत्रो कहे छे.—

कुल्योपकुल्यभान्यार्द्राऽभिजिन्मैत्राणि वारुणम् ।
फलन्त्येतानि पूर्वोक्तद्वयसाधारणं फलम् ॥ १४ ॥

अर्थ—आर्द्रा, अभिजित्, अनुराधा अने शततारका ए चार नक्षत्रो कुल्योपकुल्यक छे. आ नक्षत्रो पूर्वे कहेला बन्नेनुं साधारण फळ आपे छे, एटले के ते नक्षत्रोमां जन्मेला दातार पण थाय छे, अने अन्यना सेवको पण थाय छे; अने युद्ध थयुं होय तो संधि थाय छे. कह्युं छे के—"कुल्योपकुल्यभे सन्धिः" "कुल्योपकुल्य नक्षत्रमां युद्ध थाय तो संधि थाय."

हवे वारोना कुल्यादिक भेदो कहे छे.—

गुर्वर्कार्कीन्दवः कुल्या उपकुल्यः कुजः सितः ।
तमश्चाथ बुधो मिश्रस्तत्र नक्षत्रवत्फलम् ॥ १५ ॥

अर्थ—गुरु, सूर्य, शनि अने चंद्र ए चार वारो कुल्य छे, मंगळ अने शुक्र ए बे उपकुल्य छे, तथा राहु अने बुध मिश्र एटले कुल्योपकुल्य छे. ते सर्वेनुं फळ नक्षत्रो प्रमाणे जाणवुं. अहीं राहु वार नथी, तोपण ग्रहोनो प्रसंग होवाथी तेने लीधो छे.

केटलाएक आचार्यो तिथि, वार, समय अने राशिना योगे करीने कुल्य योग आ प्रमाणे कहे छे.—

"सूर्योदये कुजस्याह्नि नन्दा वृश्चिकमेषयोः १ ।
कुलीरयुग्मकन्यानां भद्रा यामे बुधाहनि २ ॥ १ ॥
चापसिंहघटानां च मध्याह्ने वाक्पतौ जया ३ ।
वणिग्वृषभयो रिक्ता त्रियामान्ते भृगोर्दिने ४ ॥ २ ॥
सूर्यास्ते शनिवारे तु पूर्णा स्यान्नक्रमीनयोः ५ ।
कुलजास्तिथयो वारे वेलायां राशिषु क्रमात् ॥ ३ ॥"

"मंगळवारने दिवसे सूर्योदय वखते वृश्चिक अथवा मेष राशि होय अने नंदा तिथि होय, बुधवारने दिवसे पहेला पहोरने अंते कर्क, मिथुन के कन्या राशि होय अने नडा तिथि होय, गुरुवारे दिवसे मध्याह्न समये धन, सिंह के कुंज राशि अने जया तिथि होय, शुक्रवारे दिवसे त्रण पहोरने अंते तुला के वृष राशि अने रिक्ता तिथि होय, तथा शनिवारे सूर्यास्त समये मकर के मीन राशि अने पूर्णा तिथि होय, आ प्रमाणे अनुक्रमे वार, वेळा अने राशिने विषे तिथिर्ज होय तो ते तिथिर्ज कुल्य कहेवाय छे, अने तेथी करीने ज ते तिथिर्ज ते ते वखते उत्तम छे.

हवे रवि पुरुष कहे छे.—

मूर्ध्नि ३ स्यां ३ स २ जुजा २ करो २ र ५ उदरा १ धोजाग १ जानु २ क्रमे ६,
ष्वग्निर्त्रिद्वियमद्विपञ्चकुकुद्दक्तर्केषु जेष्वर्कजात् ।
नृपः १ स्वाद्वशनो २ ऽसलो ३ऽधिकबल ४ श्चौरो ५ धनी ६ शीलवान् ७,
जारः ८ स्यात्पथिकश्च ए जिक्षु १० रपि चोत्पन्नः क्रमाद्बालकः ॥ १६ ॥

अर्थ—सूर्यना नक्षत्रथी पहेलां त्रण नक्षत्रो सूर्य पुरुषना मस्तक पर मूकवां, पछीनां ३ मुखमां, पछी खना उपर २, जुजा पर २, हाथमां २, हृदय उपर ५, उदर पर १, अधोजागे (गुह्ये) १, जानुए २ अने पगमां ६ मूकवां. ते ते नक्षत्रमां उत्पन्न थयेला बाळकने आ प्रमाणे अनुक्रमे फळ जाणवुं.—राजा १, मिष्ट जोजनवाळो २, खांधवाळो ३, अधिक बळवान् ४, चोर ५, धनवान् ६, शीळवान् ७, परस्त्रीरत ८, पथिक ए अने जिक्षुक १०. बे बाहुए होय तो स्थानभ्रष्ट थाय एम कोइ ठेकाणे कह्युं छे.

रवि नरनी स्थापना.

मस्तके	३	राजा
मुखे	३	मिष्टजोजी
बे स्कंधे	२	खांधवाळो
बे बाहुए	२	बळवान्
बे हाथे	२	चोर
हृदये	५	धनवान्
नाजीए	१	सुशील
गुह्ये	१	परस्त्री पर आसक्त
बे जानुए	२	परदेशगमन
बे पगे	६	जिक्षाचारी

विशेष ए छे जे आ परथी आयुष्यनुं ज्ञान पण थाय छे.—

"शतं मूर्ध्नि मुखे स्कन्धे चाशीतिर्भुजहस्तयोः ।
सप्तसप्ततिवर्षाणि हृन्नाभ्योरष्टषष्टिका ॥ १ ॥
गुह्ये षष्टिस्तथा जान्वोरष्ट षट् पादयोस्तथा ।
रविचक्रे क्रमेणैवमायुर्ज्ञेयं विचक्षणैः ॥ २ ॥"

"रविना चक्रमां विद्वानोए आ प्रमाणे अनुक्रमे आयुष्य जाणवुं.—मस्तक पर नक्षत्र होय तो सो वर्षनुं आयुष्य थाय, मुख अथवा स्कंध पर होय तो एंशी वर्ष, बाहु अथवा हाथमां होय तो ७७ वर्ष, हृदय अथवा नाभि पर होय तो ६८ वर्ष, गुह्ये होय तो ६० वर्ष, जानु पर होय तो ८ वर्ष अने पगमां होय तो ६ वर्षनुं आयुष्य जाणवुं."

हवे जातकर्मादिकने आश्रीने कहे छे.—

स्याज्जातकर्म चरलघुमृदुध्रुवर्क्षेष्वमीषु नामापि ।
तच्चाविरुद्धमुभयोर्योनि १ गण २ राशि ३ तारका ४ वर्गैः ५ ॥१७॥

अर्थ—चर, लघु, मृदु अने ध्रुव नक्षत्रोमां जातकर्म करवुं. नाम पण आ नक्षत्रोमां पाडवुं अने ते नाम बन्नेना (दंपतीना) योनि, गण, राशि, तारा अने वर्गे करीने अविरुद्ध पाडवुं.

जातकर्म करीने षष्ठीजागरणादिक पण आ चरादिक नक्षत्रोमां ज करवुं. चरादिक नक्षत्रो पण शुभ चंद्रवडे युक्त लेवां अथवा ते नक्षत्रो उदयसमयनां लेवां, अथवा ते नक्षत्रो संबंधी मुहूर्त्तमां कार्य करवुं. आ त्रण प्रकारमांथी पूर्व पूर्वने अभावे उत्तर उत्तर प्रकार लेवो एटले के चंद्रबळ न होय तो उदयबळ लेवुं अने उदयबळ न होय तो मुहूर्त्त लेवुं. ते विषे व्यवहारप्रकाशमां कह्युं छे के—

"धिष्ण्यानां मौहूर्त्तिकमुदयात्सितरश्मियोगाच्च ।
अधिकबलं यथोत्तरमिति"

"नक्षत्रोनुं मुहूर्त्त बळवान् छे, ते करतां उदयबळ वधारे बळवान् छे अने ते करतां पण चंद्रबळ वधारे बळवान् छे एम उत्तरोत्तर वधारे बळवान् छे."

जो ते ज दिवसनुं नक्षत्र होय अने ते ज नक्षत्रना मुहूर्त्तमां कार्य कराय तो ते अत्यंत शुभ छे. ते विषे शौनक कहे छे के—"नक्षत्रवत्क्षणानां बलमुक्तं द्विगुणितं स्वनक्षत्रे ।" "मुहूर्त्तोनुं बळ पण नक्षत्रना जेटलुं ज कह्युं छे. तेमां पण पोताना नक्षत्रमां बमणुं कह्युं छे." ए प्रमाणे सर्वत्र जाणवुं.

ते बाळकनुं नाम पण दंपतीने अविरुद्ध करवुं. ते साथे गुरु शिष्य अने स्वामी सेवक विगेरेने पण अविरुद्ध समजवुं.

हवे अठ्यावीश नक्षत्रोनी योनि कहे छे.

उडूनां योन्योऽश्व १ द्विप २ पशु ३ भुजंगा ४ हि ५ शुनकौ ६-
स्व ७ जा ८ मार्जारा ९ खुद्वय १०, ११ वृष १२ मह १३ व्याघ्र १४ महिषाः १५।
तथा व्याघ्रै १६ णै १७ ण १८ श्व १९ कपि २० नकुलद्वन्द्व २१, २२ कपयो २३
हरि २४ वाजी २५ दन्तावलरिपु २६ रजः २७ कुञ्जर २८ इति ॥ १८ ॥

अर्थ—अश्विनीथी आरंभीने नक्षत्रोनी योनि एटले उत्पत्तिस्थान अनुक्रमे आ प्रमाणे छे.—अश्व १, हाथी २, पशु (बकरो) ३, भुजंग (सर्प) ४, अहि (सर्प) ५, कूतरो ६, बिलाडो ७, बकरी ८, बिलाडो ९, पछी बे नक्षत्रोनी उंदर १०, ११, बळद १२, पाडो १३, वाघ १४, पाडो १५, व्याघ्र १६, मृग १७, मृग १८, कूतरो १९, वानर २०, पछी बे नक्षत्रोनी नोळीयो २१, २२, वानर २३, सिंह २४, घोडो २५, सिंह २६, बकरो २७ अने हाथी २८. गुरु, शिष्य अने दंपती विगेरेना योगने माटे पूर्वाचार्योए आ योनिनी कल्पना करी छे, पण सत्य नथी. ए प्रमाणे रत्नमाला भाष्यमां कहेल छे.

हवे योनिवैर कहे छे.

श्वैणं हरीभमहिबभ्रु पशुप्लवंगं, गोव्याघ्रमश्वमहिमोतुकमूषिकं च ।
लोकात्तथाऽन्यदपि दम्पतिभर्तृभृत्ययोगेषु वैरमिह वर्ज्यमुदाहरन्ति ॥१९॥

अर्थ—कूतराने अने मृगने परस्पर वैर छे. ए ज रीते सिंह अने हाथी, सर्प अने नोळीयो, बकरो अने वानर, बळद अने वाघ, घोडो अने पाडो तथा बिलाडो अने उंदर, ए सर्वेने परस्पर वैर छे. आ सिवाय पण वाघ अने मृग, कूतरो अने बिलाडो इत्यादि लोकप्रचलित वेरो पण जाणवां. स्त्री पुरुष अने स्वामी सेवक विगेरेना योगमां आ वैर वर्जवानुं कह्युं छे. उपलक्षणथी गुरु शिष्य विगेरेमां पण वैर वर्जवुं. अर्थात् एकनुं जन्मनक्षत्र अश्विनी होय तो कूतरानी योनि थइ, बीजाना जन्मनक्षत्रनी योनि मृग होय तो ते परस्पर वैर कहेवाय छे. व्यवहारप्रकाशमां विशेष आ प्रमाणे छे.—

"विहाय जन्मभं कार्ये नामभं न प्रमाणयेत् ।
जन्मभस्यापरिज्ञाने नामभस्य प्रमाणता ॥ १ ॥"

"कार्यमां जन्मना नक्षत्रनो त्याग करीने नामना नक्षत्रने प्रमाण करवुं नहीं, परंतु जन्मनक्षत्रनी खबर न होय तो नामना नक्षत्रने प्रमाण करवुं." तेमज

"द्वयोर्जन्मभयोर्मेलो द्वयोर्नामभयोस्तथा ।
जन्मनामभयोर्मेलो न कर्तव्यः कदाचन ॥ २ ॥"

"बन्नेनां जन्मनक्षत्रनो योग करवो, अथवा बन्नेनां नामनक्षत्रनो योग करवो

परंतु एकनुं जन्मनक्षत्र अने बीजानुं नामनक्षत्र ए बेनो योग कदापि करवो नहीं." अर्थात् एकना जन्मनक्षत्रनी खबर न होय तो बन्नेनां नामनक्षत्रो ज लेवां. ए ज प्रमाणे गण, राशि विगेरेमां पण जाणवुं.

हवे सत्यावीश नक्षत्रोना गणो कहे छे—

दिव्यो गणः किल पुनर्वसुपुष्यहस्त-
स्वात्यश्विनीश्रवणपौष्णमृगानुराधाः ।
स्यान्मानुषस्तु भरणी कमलासनर्क्ष-
पूर्वोत्तरात्रितयशंकरदैवतानि ॥ २० ॥
रक्षोगणः पितृभराक्षसवासवैन्द्र-
चित्राद्विदैववरुणाग्निभुजंगभानि ।
प्रीतिः स्वयोरति नरामरयोस्तु मध्या
वैरं पलादसुरयोर्मृतिरन्त्ययोस्तु ॥ २१ ॥

अर्थ—पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, स्वाति, अश्विनी, श्रवण, रेवती, मृगशीर्ष अने अनुराधा, ए ए नक्षत्रो देवगण छे. भरणी, रोहिणी, त्रण पूर्वा, त्रण उत्तरा अने आर्द्रा ए ए नक्षत्रो मनुष्यगण छे. (२०) मघा, मूल, धनिष्ठा, ज्येष्ठा, चित्रा, विशाखा, शतभिषक्, कृत्तिका अने अश्लेषा ए नव राक्षसगण छे. आमां बन्नेनो एक ज वर्ग होय तो अत्यंत प्रीति रहे, एकनो देववर्ग अने बीजानो नरवर्ग होय तो मध्यम प्रीति रहे, राक्षस अने देववर्ग होय तो वैर रहे, तथा मनुष्य अने राक्षसवर्ग होय तो मृत्यु थाय. कह्युं छे के—

"स्वकुले परमा प्रीतिर्मध्यमा देवमर्त्ययोः ।
देवराक्षसयोर्वैरं मरणं मर्त्यरक्षसोः ॥ १ ॥"

"पोताना वर्गमां अत्यंत प्रीति रहे, देव अने मनुष्यने मध्यम प्रीति रहे, देव अने राक्षसने वैर थाय, अने मनुष्य तथा राक्षसने मृत्यु थाय, अर्थात् ते बे वर्गमां होय तो मरण थाय." अभिजित् नक्षत्र एकज विद्याधरना गणमां छे एम केटलाक कहे छे.

विशेष ए छे जे—वर विगेरे मुख्य माणसनो राक्षसगण होय अने वहु विगेरे गौण माणसनो मनुष्यवर्ग होय तोपण ते बन्नेने शुभ राशिकूट होय, तेना स्वामीनी मैत्री होय, योनिनी शुद्धि होय तथा नाडीवेधनी शुद्धि होय तो ते योग शुभ छे. ते विषे गर्ग कहे छे के—

"रक्षोगणो यदा पुंसः कुमारी नृगणा भवेत् ।
सद्भकूटं १ खगप्रीति २ र्योनिशुद्धि ३ स्तदा शुभम् ॥ १ ॥"

"ज्यारे पुरुषनो राक्षसगण होय अने कुमारीनो मनुष्यगण होय त्यारे शुभ राशिकूट, ग्रहनी मैत्री अने योनिनी शुद्धि होय तो ते शुभ छे."

हवे राशिकूट तथा राशिओनुं परस्पर वैर अने मित्रपणुं कहे छे.—

राशेरोजान्मृतिः षष्ठे सर्वाः स्युः संपदोऽष्टमे ।
राशौ द्विद्वादशे नैःस्व्यं स्वामिमैत्र्ये पुनः श्रियः ॥ २२ ॥

अर्थ—विषम राशिथी छठ्ठे मरण थाय, आठमे सर्व संपत्तिओ थाय, द्विर्द्वादश (बीजे बारमे) राशिमां निधनपणुं थाय, अने स्वामीनी मैत्रीमां लक्ष्मी प्राप्त थाय छे.

विस्तरार्थ—ज्यां बेनी (स्त्री पुरुषनी अथवा गुरु शिष्य विगेरेनी) राशि परस्पर छठी आठमी होय तो ते बन्नेनुं षडष्टक ए नामनुं राशिकूट कहेवाय छे. ए प्रमाणे बीजुं बारमुं अने नवमुं पांचमुं विगेरे पण जाणवुं. मेष, मिथुन विगेरे विषम राशिथी छठी राशि होय तो ते शत्रु षडष्टक कहेवाय छे, केमके ते राशिओने परस्पर वैर छे. तेमां जेनी आठमी राशि होय तेनुं मरण थाय छे एम रत्नमाला भाष्यमां कह्युं छे, अने विषम राशिथी ज आठमी राशि होय तो ते प्रीति षडष्टक कहेवाय छे, केमके ते राशिओना स्वामीओने परस्पर मैत्री छे. तेथी करीने तेनुं आ प्रमाणे तात्पर्य छे.—

"मकरवृषमीनकन्यावृश्चिककर्काष्टमे रिपुत्वं स्यात् ।
अजमिथुनधन्विहरिघटतुलाष्टमे मित्रताऽवश्यम् ॥ १ ॥"

"मकर, वृष, मीन, कन्या, वृश्चिक अने कर्कना अष्टकमां शत्रुपणुं थाय, अने मेष, मिथुन, धन, सिंह, कुंभ अने तुलाना अष्टकमां अवश्य मित्रता थाय."

अहीं कोइ शंका करे के—वैर अने मैत्री विगेरे बन्ने दंपत्यादिकना जन्मना लग्नमां विचारवा योग्य छे, केमके जन्मलग्न ज सर्वत्र बळवान् छे, तो अहीं जन्मराशिने आश्रीने केम वैर मैत्री कही ? आनो जवाब ए छे जे—

"जन्मलग्नमिदमङ्गमङ्गिनां, मेनिरे मन इतीन्दुमंदिरम् ।
सौहृदं च मनसोर्न देहयोर्मेलकस्तदयमिन्दुगेहयोः ॥ १ ॥"

"जे जन्मलग्न छे ते प्राणीओनुं अंग-शरीर मानेलुं छे, अने चंद्रनुं स्थान (राशि) प्राणीओनुं मन मानेलुं छे, तेथी मननी ज मित्राइ होय छे, शरीरनी होती नथी. तेथी करीने आ चंद्रनी राशिनो मेलाप युक्त छे."

शंका—ज्यारे एम छे त्यारे राशिने आश्रीने मैत्री विगेरेनो विचार भले हो, परंतु ए स्थूळ विचार छे. तेथी करीने जन्मनी राशिमां रहेला नवांशोने विषे ते मैत्र्यादिकनो

---

१ आ बीया बारमुं भाषामां कहेवाय छे.

विचार करवो योग्य छे, केमके—"प्रभुरिह नवांशः" "अहीं नवांशो प्रभु—समर्थ छे" एम प्रथम कही गया छे.

जवाब—एम नथी, कारण के आ स्थळे पूर्वाचार्योए आ स्थूळ विचारने ज प्रमाणरूप मान्यो छे. जो एम न होय तो कर्क संक्रांतिमां मकरना नवांशो पण आवे छे, तो ते नवांशोमां रहेला सूर्यने केम उत्तरायणनो नथी कहेता ? तथा विधान करेला नक्षत्रनो दिवसना भागमां अभाव होय त्यारे पण तेना उदयमां अथवा तेनां मुहूर्त्तोमां जेम जातकर्म, क्षौरकर्म विगेरे थाय छे तेम पाणिग्रहण (विवाह) पण केम नथी करातुं ? तेथी अहीं स्थूळनुं ज प्रमाणपणुं छे. आथी करीने सूक्ष्म विचार अप्रमाण छे एम न जाणवुं,कारण के कह्युं छे के—

"भिन्नभिन्नफलभाग्भुवि भूयानेकधिष्ण्यदिनजोऽपि जनोऽयम् ।
सूक्ष्मतापि ननु तेन गरिष्ठा, किं तु मूलमनुरुध्य विधेया ॥ २ ॥"

"एक नक्षत्रमां, एक दिवसमां तथा एक ज लग्नमां पण उत्पन्न थयेला आ जीवो पृथ्वी पर भिन्न भिन्न फळने भोगवनारा घणा ज छे, तेथी करीने सूक्ष्मता पण मोटी (प्रमाणभूत) छे, परंतु मूळ (पूर्वाचार्योना प्रमाण) ने अनुसरीने ते सूक्ष्मतानो उपयोग करवो." लग्नमां नवांशो, द्वादशांशो, त्रिंशांशो, कळा, विकळा विगेरे उत्तरोत्तर सूक्ष्म होवाथी भिन्न भिन्न फळनो संभव छे. तेथी करीने—

अत्यन्तसूक्ष्मः स कलैकदेशो, येनाखिलानां भिदुरा फलर्द्धिः ।
नास्मादृशां दृग्विषयः स तस्मान्मूलानुकूला व्यवहारसिद्धिः ॥ ३ ॥

"ते कळानो एक विभाग अत्यंत सूक्ष्म छे के जे विभागे करीने सर्वनी फळसंपत्ति भेदवाळी छे—भिन्न भिन्न फळदायक छे, पण ते कळानो विभाग आपणी दृष्टिना विषयमां आवतो नथी, तेथी करीने मूळने अनुकूळ एटले पूर्वाचार्यना प्रमाणने अनुकूळ व्यवहारनी सिद्धि करवी." तेथी करीने जन्मादिकना लग्नमां कळा, विकळा सुधी विचार कराय छे. ते ज रीते पूर्वाचार्योए प्रमाण करेलुं छे. इत्यलं. ।

षडष्टकनी स्थापना.

शत्रु षडष्टक	
६	८
वृष	धन
कर्क	कुंभ
कन्या	मेष
वृश्चिक	मिथुन
मकर	सिंह
मीन	तुला

प्रीति षडष्टक	
६	८
मेष	वृश्चिक
मिथुन	मकर
सिंह	मीन
तुला	वृष
धनु	कर्क
कुंभ	कन्या

मूळ श्लोकमां जे द्विद्वादश एटले बीजुं बारमुं कह्युं ते स्वभावथी ज दारिद्र्यकारक छे, तोपण ते दंपती विगेरेना राशिना स्वामीओनी जो परस्पर मैत्री होय अथवा उपलक्षणथी राशिना स्वामी एक ज होय, त्यारे द्विद्वादशक अत्यंत शुभ जाणवुं. जो बेमांथी एक स्वामी मध्यस्थ (उदासीन) होय अने बीजो मैत्रीवाळो होय तोपण द्विद्वादशक शुभ ज जाणवुं. अवशिष्ट एटले के जो राशिओना स्वामीओने परस्पर वैर होय अथवा एकनुं मध्यस्थपणुं अने बीजानुं वैरपणुं होय, अथवा बन्नेनुं मध्यस्थपणुं होय तो ते द्विद्वादशक अशुभ जाणवुं. ते विषे सारंग कहे छे के—

"प्रीतिरायुर्मिथो मैत्र्यां सुखं स्यात्सममित्रयोः ।
द्वयोः समत्वे न स्नेहो न सुखं समवैरिणोः ॥ १ ॥"

"राशिना बन्ने स्वामीने परस्पर मैत्री होय तो प्रीति तथा आयुष्य घणुं होय, एक मध्यस्थ अने एक मित्र होय तो सुख थाय, बन्ने मध्यस्थ होय तो प्रीति न होय, तथा एक सम अने एक वेरी होय तो सुख न होय."

द्विद्वादश (बीजुं बारमुं)नी स्थापना.

(१)

श्रेष्ठ द्विद्वादशक	
२	१२
मेष	मीन
मिथुन	वृष
सिंह	कर्क
तुला	कन्या
धनु	वृश्चिक
कुंभ	मकर

(२)

शुभ द्विद्वादशक.	
२	१२
कन्या	सिंह

(३)

अशुभ द्विद्वादशक	
२	१२
वृश्चिक	तुला
मकर	धनु
मीन	कुंभ
वृष	मेष

(४)

अशुभतर द्विद्वादशक	
२	१२
कर्क	मिथुन

आमांना पहेला यंत्रमां प्रथमनां पांच द्विद्वादशकमां ग्रहोने परस्पर मैत्री छे, अने छेल्लामां बन्नेनो स्वामी एक ज छे. बीजा यंत्रमां एक राशिनो स्वामी मध्यस्थ छे अने बीजानो स्वामी मित्र छे, तेथी करीने आ बन्ने यंत्रो प्रीतिकारक छे. त्रीजा यंत्रमां चारेना स्वामीओ परस्पर मध्यस्थ छे. चोथा यंत्रमां एक मध्यस्थ छे अने बीजो वैरी छे अथवा "चंद्र अने बुधने परस्पर वैर छे" ए मत लइए तो बन्ने वैरी छे. तेथी करीने आ बन्ने यंत्रोनां पांचे बीया बारमां शत्रु छे. त्रिविक्रम पण कहे छे के—"सिंह राशि सिवाय बीजी सर्व विषम राशिथी बीजी राशि आवे एवां बीया बारमां अशुभ छे, अने सम

राशिथी तथा सिंह राशिथी बीजी राशि आवे एवां बीया बारमां आवे ते शुज ठे. केटलाएक कहे ठे के—"नाम्री विगेरे चारनी अनुकूळता होय तो परस्पर मध्यस्थपणावाळां बीया बारमां पण सारां ठे." ते विषे सारंग कहे ठे के—

"नाम्री १ योनि २ गणा ३ स्तारा ४ चतुष्कं शुजदं यदि ।
तदौदास्येऽपि नाथानां जकूटं शुजदं मतम् ॥ १ ॥"

"जो नाम्री, योनि, गण अने तारा, ए चार शुज होय तो राशिना स्वामीर्जनुं उदासीनपणुं (मध्यस्थपणुं) ठतां पण राशिकूट शुजदायी मानेलुं ठे." नाम्री अने तारानुं स्वरूप आगळ कहेशे. "सिंहना बीया बारमा सिवाय बीजां सर्वे बीया बारमां अशुज ठे" एम व्यवहारप्रकाशमां कह्युं ठे.

हवे राशिनुं नव पंचम कहे ठे.—

श्रेयो मैत्र्यात्परे त्वाहुः कलिकृन्नवपञ्चमम् ।
एकऋक्षे च जिन्नांशे श्रेयः शेषेषु च द्वयोः ॥ २३ ॥

अर्थ—नव पंचम राशिना स्वामीर्जनी मैत्री होय तो शुज ठे, केटलाक कहे ठे के क्लेशकारक ठे. एक राशिमां जिन्न अंशमां पण शुज ठे, अने बाकीनां राशिकूटोमां बन्नेने शुज ठे.

"नव पंचम स्वजावथी ज क्लेशनो हेतु ठे, तेमां विवाह थयो होय तो संततिने हानि करनार ठे" एम व्यवहारसारमां कह्युं ठे. केटलाएक कहे ठे के–बन्नेनी राशिर्जने परस्पर मैत्री होय ते नव पंचम शुज ठे, अने एकनी मैत्री तथा बीजानुं मध्यस्थपणुं होय तो ते मध्यम ठे.

नव पंचमनी स्थापना.

शुज नव पंचम	
ए	५
मेष	सिंह
वृष	कन्या
मिथुन	तुला
सिंह	धनु
तुला	कुंज
वृश्चिक	मीन
धनु	मेष
मकर	वृष

मध्यम नव पंचम	
ए	५
कुंज	मिथुन
मीन	कर्क
कर्क	वृश्चिक
कन्या	मकर

विशेष ए छे जे प्रीति (शुभ) नवपंचमथी प्रीति बीया बारमुं श्रेष्ठ छे अने तेथी पण प्रीति षडष्टक सारुं छे. वळी नारचंद्र टिप्पणीमां कह्युं छे के—

"आसन्नस्तु वरो ग्राह्यो नासन्ना कन्यका पुनः ।
मृतैकमातापितरं संग्राह्यं नवपंचकम् ॥ १ ॥"

"आसन्न (नजीक)नो वर ग्रहण करवो, पण नजीकनी कन्या ग्रहण करवी नहीं, एटले के जो कन्यानी राशिथी गणतां वरनी राशि समीपे होय अने वरनी राशिथी गणतां कन्यानी राशि दूर होय तो नवपंचम विगेरे सर्व राशिकूट शुभ छे, पण कन्यानी राशिथी गणतां वरनी राशि दूर होय तो ते शुभ नथी. तोपण जो वर के कन्या बेमांथी एकनां माता पिता मरण पाम्यां होय तो नवपंचम शुभ ज छे."

मूळ श्लोकमां "एक ऋक्ष" कह्युं छे, त्यां ऋक्षनो अर्थ "राशि" एवो छे, तेथी जो बेउनी एक ज जन्मराशि होय तो नवांशना भेदथी ते शुभ छे, अने बेउनुं जन्म-नक्षत्र एक होय तो ते शुभ नथी. त्रिविक्रम कहे छे के—

"एकर्क्षे जायते यत्र विवाहे वरकन्ययोः ।
मूलवेधस्तु स प्रोक्तो महादुष्टफलप्रदः ॥ १ ॥"

"जो विवाहमां वर कन्यानुं एक ज (जन्म) नक्षत्र होय तो ते मूळवेध कहेवाय छे, ते महा दुष्ट फळने आपनार छे." लल्ल पण कहे छे के—

"एकनक्षत्रजातानां परेषां प्रीतिरुत्तमा ।
दम्पत्योस्तु मृतिः पुत्रा भ्रातरो वार्थनाशकाः ॥ १ ॥"

"एक नक्षत्रमां उत्पन्न थयेला बीजाओने उत्तम प्रीति रहे छे, परंतु स्त्री पुरुषनी तो मृति (मरण) ज थाय छे. अथवा तेना पुत्रो अने भाइओ धननो नाश करनार थाय छे." तेमां पण एटले एक नक्षत्रमां पण पादनो भेद होय एटले जूदा जूदा पादमां जन्मेला होय तो ते शुभ ज छे, पण एक ज पादमां जन्म्या होय तो ते शुभ नथी. कह्युं छे के—

"नक्षत्रमेकं यदि भिन्नराश्योरभिन्नराश्योरपि भिन्नमृक्षम् ।
प्रीतिस्तदानीं निबिडा नृनार्योश्चेत्कृत्तिकारोहिणिवन्न नाडिः ॥ १ ॥"

"जो नक्षत्र एक होय अने राशि भिन्न होय, अथवा राशि एक होय अने नक्षत्र भिन्न होय तो ते स्त्री पुरुषने अत्यंत प्रीति रहे, परंतु कृत्तिका अने रोहिणी जेवी एक नाडी (नाडीवेध) न होवी जोइए. एटले के जेम कृत्तिका अने रोहिणीने नाडीवेध छे, तेवो नाडीवेध न होवो जोइए." तथा—

"नाग्निर्दहत्यात्मतनुं यथा वा द्रष्टा स्वदृष्टेर्न हि दर्शनीयः ।
एकांशकत्वे समतैव तद्वन्न भर्तृभार्याव्यवहारसिद्धिः ॥ २ ॥"

"जेम अग्नि पोताना देहने बाळतो नथी, अने जेम द्रष्टा पोतानी दृष्टिए जोवा लायक

नथी (पोतानी दृष्टिए पोताने जोइ शकतो नथी), तेम एक ज अंशमां जन्म्या होय तो समानपणुं थाय छे, माटे वर वहुना व्यवहारनी सिद्धि थइ शकती नथी." एक पाद छतां पण शुभ छे, एम केटलाक कहे छे—

"पराशरः स्माह नवांशभेदादेकर्क्षराश्योरपि सौमनस्यम् ।
एकांशकत्वेऽपि वसिष्ठशिष्यो नैकत्रपिंडे किल नाडिवेधः ॥ ३ ॥"

"पराशर कहे छे के नवांशनो भेद होय तो एक नक्षत्र अने एक राशिमां पण प्रीति होय छे. वशिष्टनो शिष्य कहे छे के एक अंश होय तोपण एक शरीरमां अर्थात् एक नक्षत्रमां नाडीवेध अवश्य न होय."

मूळ श्लोकमां "शेषेषु च द्वयोः" एवुं छे. तेमां शेष एटले बाकीना एटले के सातमे सातमे, दशमे चोथे, त्रीजे अगीयारमे राशिकूट होय तो ते श्रेष्ठ छे, कारण के आ स्थानोमां राशिओने ज परस्पर मैत्री छे, तेथी तेना स्वामीनी मैत्री विचारवानी नथी. ते विषे गदाधर कहे छे के—

"राशिकूटे शुभे लब्धे ग्रहमैत्रीं न चिन्तयेत् ।
अलाभे राशिकूटस्य ग्रहमैत्रीं तु चिन्तयेत् ॥ १ ॥"

"राशिकूट शुभ प्राप्त थयुं होय तो ग्रहनी मैत्री विचारवी नहीं, अने राशिकूट शुभ मळ्युं न होय तो ग्रहनी मैत्री विचारवी."

तेमां पण एटले सप्तम सप्तम विगेरेमां एक ज स्वामीपणुं होय तो अत्यंत श्रेष्ठ जाणवुं.

सर्वे बाकीनां राशिकूटोनी स्थापना.

शुभ तृतीयैकादश	
३	११
मेष	कुंभ
वृष	मीन
मिथुन	मेष
कर्क	वृष
सिंह	मिथुन
कन्या	कर्क
तुला	सिंह
वृश्चिक	कन्या
धन	तुला
मकर	वृश्चिक
कुंभ	धन
मीन	मकर

सप्तम सप्तम	
७	७
मेष	तुला
वृष	वृश्चिक
मिथुन	धन
कर्क	मकर
सिंह	कुंभ
कन्या	मीन

दशम चतुर्थ श्रेष्ठतर	
१०	४
वृष	कुंभ
कर्क	मेष
वृश्चिक	सिंह
मकर	तुला
कन्या	मिथुन
मीन	धन

दशम चतुर्थ श्रेष्ठ	
१०	४
मेष	मकर
मिथुन	मीन
सिंह	वृष
तुला	कर्क
धनु	कन्या
कुंभ	वृश्चिक

अहीं सप्तम सप्तममां तथा त्रण अगीयारमां स्वामीनी मैत्रीनी चिंता (विचार) करवानी नथी. दशम चतुर्थ (१०–४) मां तो पहेला चारमां मैत्री छे, अने छेल्ला बेमां एक ज स्वामी छे, तेथी ए छए राशिकूट अत्यंत श्रेष्ठ छे. बीजा दशम चतुर्थनां छए कूट स्वभावथी ज श्रेष्ठ छे.

तात्पर्य ए छे जे—प्रथम नक्षत्र योनि विगेरेनी शुद्धि बळवान् छे, तेनाथी राशिनुं वशपणुं बळवान् छे, तेनाथी पण राशिना स्वामी जे ग्रहो तेमनी मैत्री बळवान् छे, तेनाथी पण राशिओनी स्वाभाविक मैत्री बळवान् छे. ते विषे कह्युं छे के—

"स्वभावमैत्री १ सखिता स्वपत्यो २ र्वशित्व ३ मन्योन्यभयोनिशुद्धिः ४ ।
परः परः पूर्वगमे गवेष्यो हस्ते त्रिवर्गी युगपद्युतिश्चेत् ॥ १ ॥"

"राशिओनी स्वाभाविक मैत्री, तेमना स्वामीओनी मैत्री, तेमनुं वशवर्त्तिपणुं तथा परस्पर नक्षत्र योनिनी शुद्धि, पूर्व पूर्वना अभावे पर परनी गवेषणा करवी, यथा स्वाभाविक मैत्रीना अभावे तेमना स्वामीओनी मैत्री, तेना अभावे वशवर्त्तिपणुं इत्यादि; जो एक साथे स्वाभाविक मैत्री, तेमना स्वामीओनी मैत्री आदि होय तो धर्म, अर्थ अने काम त्रणे वर्ग तेना हाथमां जाणवा, परंतु तारामैत्री अने नाडीवेध शुद्धि तो सर्वत्र जोवानी ज छे. केटलाएक नवीन गाममां वसवा माटे आ प्रमाणे कहे छे.—

"जन्मराशिस्थितो ग्रामस्त्रिषष्ठः सप्तमोऽपि वा ।
स्वकीयो द्रव्यनाशाय आपदा च पदे पदे ॥ १ ॥
चतुर्थोऽष्टमको ग्रामो द्वादशो यदि वा भवेत् ।
यत्रैवोत्पद्यते अर्थस्तत्रैवार्थो विलीयते ॥ २ ॥
पञ्चमो नवमो ग्रामो द्वितीयो यदि वा भवेत् ।
दशमैकादशश्चैव शुभदः स फलप्रदः ॥ ३ ॥"

"पोतानी जन्मराशिमां रहेल ग्राम तथा जन्मराशिथी त्रीजे, छठे के सातमे होय तो द्रव्यनो नाश थाय तथा डगले डगले आपत्ति प्राप्त थाय. जन्मराशिथी चोथे, आठमे के बारमे जो होय तो अर्थ ज्यां पेदा थाय त्यांज नाश पामे. नवमे, बीजे, दशमे के अगीयारमे शुभकारी फळनो आपनार छे.

हवे ताराओ कहेवी छे. तेमां प्रथम तेनी साथे संबंध होवाथी नाडीवेध कहे छे.

चक्रे त्रिनाडिके धिष्ण्यमेकनाडिगतं शुभम् ।
गुरुशिष्यवयस्यादेर्न वधूवरयोः पुनः ॥ २४ ॥

अर्थ—त्रण नाडीवाळा चक्रमां एक नाडीमां रहेलुं नक्षत्र होय ते गुरु शिष्यने तथा

मित्रादिकने आदि शब्दथी स्वामी नृत्यादिक सर्व वेधोने शुजकारी बे, परंतु वहु वरने शुज नथी, एटखे के जेउनां जन्मनक्षत्रो अथवा नामनक्षत्रो एक नामीमां रह्यां होय तो ते नामीवेध कहेवाय बे, अने जिन्न जिन्न नामीमां रह्यां होय तो नामीवेध नथी एम जाणवुं.

त्रिनामी चक्र स्थापना—



दंपतीना संबंधमां आ नामीवेध शुज नथी. ते विषे हर्षप्रकाशमां कह्युं बे के—

"सुअसुहिसेवयसिस्साघरपुरदेस सुह एगनामी आ ।
कन्ना पुण परिणीआ हणइ पइं ससुरं (च) सासुं च ॥ १ ॥"

"पुत्र, मित्र, सेवक, शिष्य, घर, नगर अने देश, ए सर्वे एक नामीमां एटखे नामीवेधमां होय तो श्रेष्ठ बे, परंतु एक नामीमां रहेखी कन्या जो परणी होय तो ते पतिने, ससराने तथा सासुने हणे बे." विशेष ए बे जे—"पुत्र, मित्रादिकने नामीवेध होय तो विरुद्ध योनिवाळा नक्षत्रनो योग पण अशुज नथी."

वर वहुने नामीवेध होय तो तेनुं फळ आ प्रमाणे कह्युं बे.—

"हृन्नामिवेधतो जर्तुर्मध्यनामीव्यधे द्वयोः ।
पृष्ठनामीव्यधे नार्या मृत्युः स्यान्नात्र संशयः ॥ १ ॥
समासन्ने व्यधे शीघ्रं दूरवेधे चिरेण च ।
वेधान्तरजमानेऽत्र वर्षे दुष्टं प्रजायते ॥ २ ॥"

"हृदयनी नामीनो (पहेखा नक्षत्रनी नामीनो) वेध होय तो पतिनुं मरण थाय बे, मध्य (बीजी) नामीनो वेध होय तो बन्नेनुं मरण अने पृष्ठनी (त्रीजी) नामीनो वेध होय तो स्त्रीनुं मरण थाय बे. आ वात निःसंदेह बे. तेमां पण पासेनो वेध होय तो शीघ्रताथी अशुज थाय बे, दूर वेध होय तो चिरकाळे अने वचमां वेध होय तो नक्षत्रनी संख्या प्रमाणे (तेटखे) वर्षे अशुज थाय बे."

कदाच नक्षत्रवेधनो त्याग न थइ शके तो पादवेधनो अवश्य त्याग करवो. ते विषे नरपतिजयचर्यामां कह्युं बे के—

"एतच्चक्रं समाखिख्य अश्विन्याद्यंह्रिपंक्तितः ।
वेधो द्वादशनामीजिः कर्तव्यः पतिकन्ययोः ॥ १ ॥

एवं निरन्तरो येषां दम्पतीनां भवेद्वेधः ।
तेषां मृत्युर्न संदेहः सान्तरस्त्वल्पदुःखदः ॥ २ ॥ "

"अश्विनीना पहेला पादनी पंक्तिथी आरंभीने बार नाडी (रेखा)ए करीने आ चक्र आलेखवुं, तेमां वर वहुनो वेध जोवो. तेमां जे दंपतीनो वेध आंतरारहित होय तो अवश्य तेमनुं मृत्यु थाय अने जो आंतरा सहित एटले दूर होय तो अल्प दुःखदायी थाय."

वळी ते ज ग्रंथमां "दंपतीनी जेम देवता, मंत्र तथा गुरु शिष्यना योगमां पण नाडीवेध अशुभ छे," एम कह्युं छे. ते आ प्रमाणे.—

"एकनाडीस्थिता यत्र गुरुर्मंत्रश्च देवता ।
तत्र द्वेषं रुजं मृत्युं क्रमेण फलमादिशेत् ॥ १ ॥"

"ज्यां गुरु, मंत्र अने देवता एक नाडीमां रह्या होय त्यां अनुक्रमे द्वेष, व्याधि अने मृत्युरूप फळने कहेवुं."

प्रथम कहेला सर्वे मैत्रीना प्रकारोमां आ नाडीवेध बळवान् छे. ते विषे कह्युं छे के—

"सदा नाशयत्येकनाडीसमाजो भकूटादिकान् सर्वभेदान् प्रशस्तान्" ।

"नक्षत्र, (राशि) कूट विगेरे सर्व शुभ भेदोनो एक नाडीवेध ज नाश करे छे."

हवे तारामैत्री कहे छे.—

द्वयेषु गुरुशिष्यादेः प्रीतिहेतोः परस्परम् ।
त्रिपञ्चसप्तमीं तारां सर्वत्र परिवर्जयेत् ॥ २५ ॥

अर्थ—परस्पर प्रीतिना हेतुरूप गुरु शिष्यादिकनां द्वंद्वोने परस्पर त्रीजी, पांचमी अने सातमी तारा सर्वत्र वर्जवी. एटले के बेमांथी एकनी पण तारा त्रीजी, पांचमी के सातमी होय तो तेमनी तेवी (सारी) प्रीति थती नथी. (नव नव तारानी त्रण ओळी प्रथम कही छे ते अहीं जाणवी.)

तेमां पण विशेषे करीने गुरु, वर, राजादिक स्वामी विगेरेनी तारा त्रीजी, पांचमी के सातमी न ज होवी जोइए. कह्युं छे के—

"भीरुभादचल ७ पञ्च ५ तृतीया ३ शोकवैरविपदे वरताराः" ।

"स्त्रीना नक्षत्रथी वरनी तारा सातमी, पांचमी के त्रीजी होय तो ते अनुक्रमे शोक, वैर अने विपत्तिने माटे छे."

आ तारामैत्रीनुं प्रधानपणुं छे. ते विषे दैवज्ञवल्लभमां कह्युं छे के—

"पुंस्त्रीराशीशयोर्मैत्र्यामेकेशत्वे च वश्यभे ।
षडष्टमादिष्वपि स्यात्तारामैत्र्या करग्रहः ॥ १ ॥"

"वर कन्यानी राशिना स्वामीओनी मैत्री छतां, अथवा तेमनुं एक स्वामीपणुं छतां,

तथा वश्यपणुं छतां, तेमज षडष्टक विगेरे छतां पण तारामैत्रीए करीने पाणिग्रहण करवामां आवे छे."

हवे वर्गमैत्री कहे छे.—

चत्वारोऽकचटा वर्गाः क्रमात्तपयशास्तथा ।
यत्नतो वर्जनीयाः स्युरितरेतरपञ्चमाः ॥ २६ ॥

अर्थ—अकारादिक स्वरोनो अ वर्ग, कादि पांचनो क वर्ग, च विगेरे पांचनो च वर्ग, ए रीते ट वर्ग, त वर्ग, प वर्ग, यरलवनो य वर्ग, तथा शषसहनो श वर्ग एम आठ वर्ग जाणवा. आ वर्गोमांथी परस्पर पांचमो पांचमो वर्ग यत्नथी वर्जवा योग्य छे. एटले के वर वहु विगेरेना नामना पहेला पहेला अक्षर जे जे वर्गमां आवता होय ते वर्ग एक बीजाथी पांचमो होय तो तेमना स्वामीओनुं जातिवैर होवाथी ते तजवा योग्य छे.

वर्गना स्वामीओ हर्षप्रकाशमां आ प्रमाणे कहेला छे.—

"वैनतेयौ १ तु २ सिंह ३ श्वा ४ऽहि ५ मूषक ६ मृगो ७ रणाः ८ ।
क्रमादकचटादीनां स्वामिनोऽमी स्मृता बुधैः ॥ १ ॥"

"अ, क, च विगेरे आठे वर्गोना स्वामी अनुक्रमे गरुड १, बिलाडो २, सिंह ३, कूतरो ४, सर्प ५, उंदर ६, मृग ७ अने घेटो ८, आ प्रमाणे पंडितोए कहेला छे. आमां दरेकथी पांचमा पांचमा साथे वैर छे."

विशेष ए छे जे—योनि १, गण २, राशि ३, ताराशुद्धि ४ अने नाडीवेध ५, आ पांच बाबतो जन्मनक्षत्रनी खबर होय तो ते जन्मनक्षत्रे करीने ज जोवी. खबर न होय तो नामना नक्षत्रवडे जोवी, पण वर्गमैत्री अने लेणादेणी तो प्रसिद्ध नामना नक्षत्रे करीने ज जोवी.

वर्ग कहेवानी साथे संबंध होवाथी परस्पर लेणादेणी जाणवानी रीत बतावे छे.—

नामादिवर्गांकमथैकवर्गे, वर्णांकमेव क्रमतोऽक्रमाच्च ।
न्यस्योभयोरष्टहृतावशिष्टेऽर्धिते विशोपाः प्रथमेन देयाः ॥ २७ ॥

अर्थ—बेउनां नामना आदि अक्षरवाळा वर्गना अंक (संख्या) ने अथवा एक ज वर्गनां होय तो ते नामना पहेला अक्षरोनी संख्याने जोडे जोडे मूकवी. पछी तेने आठे भागी जे अवशेष रहे तेनुं अर्ध करवुं. जे आवे तेटला वसा पहेला अंकना वर्गवाळो बीजा वर्गनो देवादार छे एम जाणवुं. ए रीते क्रम अने उत्क्रमवडे जेम घटे तेम लेणुं अने देणुं यथायोग्य वाळवुं, अने बाकीनुं देणुं निश्चित करवुं, अने जो परस्पर लेणुं के देवुं न आवे तो बेमांथी एकने जेने आवे तेनो निर्णय करवो.

उदाहरण—कणाद गुरु अने वल्मीक शिष्य छे. तेमनां नामना वर्गनी संख्या अनु-

क्रमे मूकी त्यारे २७ सत्यावीश थया. तेने आठे जाग लेतां त्रण शेष रह्या, तेने अर्ध कर्या त्यारे दोढ रह्यो, माटे कणाद गुरु वल्मीकनो दोढ वसानो देवादार थयो. हवे (कणाद वल्मीक पासे केटलुं मागे ते जाणवा माटे) ते ज आंकने उत्क्रमे मूकतां ७२ बोंतेर थया, तेने आठे जाग लेतां कांइ पण शेष रह्युं नहीं, तेथी वल्मीक गुरुनो कांइ पण देवादार न थयो, परंतु गुरु ज शिष्यनो देवादार थयो. आ योगनिधान ग्रंथमां कहेलुं उदाहरण कह्युं छे. हवे बीजुं उदाहरण आपीए छीए.—आदिनाथ अने श्रीदत्तना वर्गना अंक मूकवाथी १८ अढार थया. तेने आठे जाग लेतां बे वध्या, तेनुं अर्ध करतां एक आव्यो. तेथी एक वसो आदिनाथ श्रीदत्तना देवादार थया. हवे ते ज अंको उत्क्रमे स्थापवाथी ८१ थया. आठे जाग्या त्यारे एक अवशेष रह्यो. तेने अर्ध करवाथी अर्ध आव्यो, तेथी श्रीदत्त आदिनाथनो अर्धो वसो देवादार थयो. परस्पर लेणदेण वाळवाथी बाकीनो अर्धो वसो आदिनाथ श्रीदत्तना देवादार थया. ए निर्णय थयो. ए प्रमाणे सर्वत्र जाणवुं. "देवा लेवामां सहेलुं पडे माटे लेणादेणी थोडी होय ते सारी," एम नारचंद्र टिप्पणमां कह्युं छे.

अहीं गर्गाचार्ये कहेलो संग्रह श्लोक आ प्रमाणे छे.—

"राशि १ ग्रहमैत्री २ गण ३, योनी ४ तारै ५ कनाथता ६ वश्यम् ७ ।
स्त्रीदूर ८ नाडियुति ए वर्ग १० लभ्य ११ वर्ण १२ युजयो १३ द्वयेषूह्याः ॥१॥"

"गुरु शिष्य, वर वहु विगेरे द्वंद्वोमां राशि १, ग्रहमैत्री २, गण ३, योनि ४, तारा ५, एक स्वामीपणुं ६, वश्यपणुं ७, स्त्रीदूर ८, नाडीवेध ए, वर्ग १०, लेणादेणी ११, वर्ण १२ अने युजि १३, आटली १३ बाबतो जोवी. जावार्थ आ प्रमाणे जाणवो.—बेउनी राशिउनी स्वाजाविक मैत्री त्रण अगीयार, दश चार अने सप्त सप्तममां (राशिकूटमां) जोवी. ग्रहमैत्री, प्रीति षडष्टक, प्रीति द्विद्वादशम अने प्रीति नवपंचममां जोवी. तथा गण, योनि, तारा, एक स्वामीपणुं, नाडीवेध, वर्ग अने लेणादेणी, ए सर्वे कही दीधा छे माटे स्फुट छे. वश्यपणुं आगळ कहेशे. स्त्रीदूर एटले वहुनी राशि वरनी राशिथी दूर होय तो सारी अर्थात् वहुनी राशिथी वरनी राशि पासे होय तो सारी-वर्ण एटले मीनथी आरंजीने चार चार राशिना त्रण विजाग करवा. तेमां दरेक विजागमां अनुक्रमे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य अने शूद्र वर्ण जाणवा. एटले के मीन ब्राह्मण, मेष क्षत्रिय, वृष वैश्य अने मिथुन शूद्र ए रीते कर्क ब्राह्मण विगेरे. आ वर्णविजाग सारावळीमां कह्यो छे. तेनुं फळ आ प्रमाणे कह्युं छे.—

"यत्र वर्णाधिका नारी तत्र जर्त्ता न जीवति ।
यदि जीवति जर्त्ता स्यात्तदा पुत्रो न जीवति ॥ १ ॥"

"जे रुद्रमां नारी उंचा वर्णवाळी होय, ते रुद्रमां पति जीवे नहीं. जो कदाच पति जीवे तो पुत्र न ज जीवे," एम महादेव कहे छे."

युजि पण पूर्वे "पूर्वार्द्ध योगीमां परणेली स्त्रीने तेनो भर्त्ता अत्यंत वल्लभ थाय छे." ए विगेरे कहेलुं छे."

विशेष ए छे जे जिनबिंब करावनार धनिकने अनुकूळ प्रतिमा स्थापवामां तथा शिष्यनुं नाम पाडवामां मुनिओए नक्षत्रनी योनि विगेरेनो विशेष उपयोग करवो. तेमां शिष्यना नाममां नाडीवेध श्रेष्ठ छे. ते जिनेश्वरना नाममां तजवा योग्य ज छे, अने तारानो विरोध प्राये करीने जिनबिंबना अधिकारमां विचारवानो नथी. कह्युं छे के—

"योनि १ गण २ राशिभेदा ३ लभ्यं ४ वर्गश्च ५ नाडिवेधश्च ६ ।
नूतनबिंबविधाने षड्विधमेतद्विलोक्यं ज्ञैः ॥ १ ॥"

"योनि १, गण २, राशिभेद, ३, लेणादेणी ४, वर्ग ५ अने नाडीवेध ६, आ छ प्रकारनुं बळ पंडितोए नवीन जिनबिंब कराववामां जोवुं."

तेमां जिनेश्वरना जन्मनक्षत्रनी जेम जे धनिकना जन्मनक्षत्रनी खबर होय तेना जन्मनक्षत्र साथे योनि, गण, राशि अने नाडीवेध, आ चार बाबत जोवी, पण वर्ग अने लेणादेणी ए बे बाबत जोवी नहीं, केमके वर्गनुं परस्पर पांचमापणुं तथा परस्पर लेणादेणी ए बेउ बाबत जिनेश्वरनी ज जेम ते धनिकने पण प्रसिद्ध नामवडे ज जोवाय छे. आ रीत सर्वत्र लेवी, परंतु जन्मनक्षत्रनी खबर न होय तो तेनी योनि विगेरे सर्व प्रसिद्ध एवा नामना ज नक्षत्रवडे जोवुं. तेमां प्रथम तो जिनेश्वर तथा धनिकनुं योनि, गण अने वर्ग संबंधी परस्पर वैर अवश्य तजवुं. अथवा वैर छतां पण धनिकनी योनि विगेरे जो देवनी योनि विगेरेथी बळवान् होय तो ग्रहण करवामां हरकत नथी. एटले के अल्प बळवानवडे वधारे बळवाननो पराभव थइ शकतो नथी. आ अभिप्राये करीने धनिकनी योनि बिलाडो (बळवान्) होय अने देवनी योनि उंदर (निर्बळ) होय, एटलाथी कांइ दोष नथी, अने जातिवैर न होय तो धनिकनां योनि अने वर्ग अल्प बळवाळां होय तो-पण कांइ विशेष दोष नथी, कारण के शास्त्रमां योनि अने वर्गनां जातिवैरने ज वर्ज्यां छे. लोकमां पण ते ज प्रमाणे आदरवामां आवे छे. तथा जेमां देवनी राशिथी धनिकनी राशि समीपे होय, अने धनिकनी राशिथी देवनी राशि दूर होय एवुं प्रीति षडष्टक विगेरे ग्रहण करवुं. ते सिवाय बीजुं एटले अप्रीतिवाळुं ग्रहण न करवुं. तथा तेवा प्रकारनुं बीजुं कोइ शुद्ध न मळे तो ते पण एटले अप्रीतिवाळुं पण ग्रहण करवुं. देव राक्षसरूपी गणवैर पण ए ज रीते जाणवुं, केमके लोकमां पण वर कन्यादिकना संबंधमां बीजी शुद्धिने अभावे देव राक्षसरूप गणवैर पण आदर करातुं जोवामां आवे छे. शिष्यनां

नाम पाडवामां तो गुरु शिष्यनो परस्पर ताराविरोध तथा शत्रु षडष्टक विगेरे सर्व (राशिकूटना) अशुभनो त्याग करवो. योनिनो विरोध पण तजवो, परंतु नाडीवेध होय तो आ योनिविरोध अशुभ नथी. ते विषे हर्षप्रकाशमां कह्युं छे के—

"दुबारस नवपंचम छक्कट्ठग तिपणसत्तमी तारा।
अन्नुन्नं गुरुसीसाणं नामकरणे विवज्जिज्जा ॥ १ ॥
गुरुसीसाण करिज्जा नामं न विरुद्धजोणिए रिक्खे।
जइ हुज्जा न तं रिक्खं आरूढं एगनाडीए ॥ २ ॥"

"नाम करवामां गुरु शिष्यनुं परस्पर बीयां बारमुं, नवपंचम, षडष्टक तथा त्रीजी, पांचमी अने सातमी तारा, आटलां वानां वर्जवां. गुरु शिष्यना परस्पर विरुद्ध योनिवाळा नक्षत्रमां नाम करवुं नहीं, परंतु जो ते नक्षत्र एक नाडी पर आरूढ थयुं न होय तो–नाडीवेधमां न होय तो अर्थात् नाडीवेधमां ते नक्षत्र होय तो विरुद्ध योनिवाळा नक्षत्रनो दोष नथी."

गण अने वर्गनो विरोध तो तजवा योग्य ज छे. लेणादेणी पण परस्पर जोवा योग्य छे. परस्परनी राशिमैत्री विगेरेनो अभाव होय तो राशिनुं वश्यपणुं ग्रहण करवुं, केमके वश्यपणुं होवाथी शत्रु षडष्टकादिकनो पण विशेष दोष संभवतो नथी. पुत्र विगेरेना नामने विषे पण प्राये सर्व बाबत शिष्यना नाम प्रमाणे ज जाणवी. पूर्णभद्र पण कहे छे के—

"जीवेन्द्वर्केषु बलिषु त्रिषु गोचरशुद्धितः।
नामप्रथमवर्णस्य नृणां नाम विधीयते ॥ १ ॥"

"पहेला अक्षरनी गोचरशुद्धिथी गुरु, चंद्र अने सूर्य ए त्रण बळवान् होय त्यारे माणसनुं नाम करवामां आवे छे. भावार्थ ए छे जे—नाम पाडनार आचार्यादिकने जेटला वर्णो (अक्षरो) मैत्रीने भजनारा छे, ते वर्णोमांथी जे वर्णना गुरु, चंद्र अने सूर्य गोचरशुद्धिवडे बळवान् होय, ते वर्णने प्रथम (नामनी आदिमां) राखीने इष्ट (शुभ) दिवसे शिष्यादिकनुं नाम पाडवुं."

हवे कर्णवेधनुं मुहूर्त्त कहे छे.

कर्णवेधोऽह्नि सौम्यस्य मार्गे मैत्र्ये श्रुतिद्वये।
हस्तचित्रोत्तरा ३ पौष्णाश्विनादित्यद्वये शुभः ॥ २७ ॥

अर्थ—बुधवारे दिवसमां मृगशीर्ष, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, हस्त, चित्रा, त्रणे उत्तरा, रेवती, अश्विनी, पुनर्वसु अने पुष्य नक्षत्रमां कर्णवेध करवो शुभ छे. गुरुवारे पण करवानुं व्यवहारसारमां कह्युं छे.

हवे बाळकने प्रथम चलाववानुं तथा प्रथम भोजननुं मुहूर्त्त कहे छे.—

आद्याटनं प्राथमकल्पिकस्य, मृदुध्रुवक्षिप्रचरेषु भेषु ।
पूर्वाशनं मासि शिशोश्च षष्ठे, भं वारुणं स्वातिमितश्च मुक्त्वा ॥२९॥

अर्थ—बाळकने तथा नवा दीक्षित साधुने मृदु, ध्रुव, क्षिप्र अने चर नक्षत्रोमां प्रथम हिंडन तथा गोचरीनी चर्या शुभ छे. अहीं वार कह्यो नथी तोपण मंगळ अने शनि सर्व कार्यमां त्याग करवा. बाळकने पहेलुं अशन (खवराववुं ते–अबोटण) छठे महीने कराववुं, अने पूर्वनां मृदु विगेरे नक्षत्रोमांथी शततारका अने स्वाति विनानां बीजां सर्व नक्षत्रो लेवां. "पुत्रीने पांचमे मासे पहेलुं अशन कराववुं." एम भोज कहे छे. "पुत्रीने माटे मासनो नियम नथी" एम हरि कहे छे. तिथिमां रिक्ता तिथिनो सर्व कार्यमां त्याग करवो. विशेष ए छे के—

"शशिशुक्रे च मन्दाग्निः शनिभौमे बलक्षयः ।
बुधार्कगुरुवारेषु प्राशनं तु हितावहम् ॥ १ ॥"

"चंद्र अने शुक्रवारे अन्न प्राशन कराववाथी अग्नि मंद थाय छे, शनि अने मंगळवारे बळनो क्षय थाय छे, तेथी बुध, सूर्य अने गुरुवारे अन्न प्राशन कराववुं शुभ छे."

हवे नवां पात्रो वापरवानुं मुहूर्त्त कहे छे.—

पात्रभोगोऽश्विनीचित्रानुराधारेवतीमृगे ।
हस्ते पुष्ये च गुर्विन्दुवारयोश्च प्रशस्यते ॥ ३० ॥

अर्थ—अश्विनी, चित्रा, अनुराधा, रेवती, मृगशीर्ष, हस्त अने पुष्य नक्षत्रमां तथा गुरु अने चंद्रना वारे नवां पात्रो वापरवां शुभ छे.

क्षौरनुं मुहूर्त्त कहे छे.—

क्षौरं शुभस्याहनि तारकाबले, तिथौ च रिक्ताष्टमिषष्ठ्यमोज्झिते ।
चित्राचरैन्द्राश्विनपुष्यरेवतीहस्तैन्दवैस्तुल्यपतौ क्षणेऽथवा ॥ ३१ ॥

अर्थ—शुभ वारने दिवसे तारानुं बळ होय त्यारे रिक्ता तिथि, आठम, छठ अने अमावास्या सिवायनी बीजी कोइ तिथिए चर नक्षत्रो, चित्रा, ज्येष्ठा, अश्विनी, पुष्य, रेवती, हस्त तथा मृगशीर्ष नक्षत्रमां अथवा तो आ नक्षत्रोना पति जेमां होय तेवा मुहूर्त्तमां बाळकनुं प्रथम मुंडन अथवा नवीन साधुनो प्रथम लोच करवो. बाकीनां–पछीनां मुंडनो तो वार तथा मात्र नक्षत्रनी शुद्धिए करीने ज थाय छे. मुंडनमां शुभ वार एटले अक्रूर वार लेवो. ते विषे व्यवहारसारमां आ प्रमाणे लख्युं छे.—

"क्षौरे मासं दुनोत्यर्को भौमोऽष्टौ सप्त सूर्यजः ।
षट् प्रीणातीन्दुरष्टौ ज्ञो गुरुर्नव भृगुर्दश ॥ १ ॥"

"रविवारे क्षौर कराववाथी एक मास सुधी दुःख थाय छे, मंगळे आठ मास अने शनिवारे मुंडन कराववाथी सात मास दुःख थाय छे. सोमवारे मुंडन कराववाथी छ मास प्रसन्नता रहे छे, बुधवारे आठ मास, गुरुवारे नव मास अने शुक्रवारे दश मास प्रसन्नता रहे छे."

क्षौरमां ताराबळ अवश्य जोवुं जोइए, केमके "तारासुद्धं खउरं" "ताराए करीने शुद्ध दिवसे क्षौर कराववुं" एम हर्षप्रकाशमां पण कह्युं छे. चंद्रबळ पण अवश्य लेवुं एम व्यवहारप्रकाशमां कह्युं छे. जो कहेलां नक्षत्रो न मळतां आवे, अने क्षौर अवश्य करवुं होय तो कहेलां नक्षत्रोनो जे स्वामी होय, ते ज जे क्षणनो स्वामी होय ते क्षणे क्षौर कराववुं. क्षण एटले मुहूर्त्त नामनो रात्रि दिवसनो पंदरमो भाग (बेघडी). ते क्षणोना स्वामीओ आ प्रमाणे छे.—

"शिव १ भुजग २ मित्र ३ पितृ ४ वसु ५ जल ६ विश्व ७ विरंचि ८ पंकजप्रभवाः ९ ।
इन्द्रा १० ग्नीन्द्र ११ निशाचर १२ वरुणा १३ र्यम १४ योनय १५ श्चाह्नि ॥ १ ॥"

"दिवसना १५ क्षणोना अधिपतिओ अनुक्रमे आ प्रमाणे छे.—शिव १, भुजग २, मित्र ३, पितृ ४, वसु ५, जल ६, विश्व ७, विरंचि ८, पंकजप्रभव (ब्रह्मा) ९, इंद्र १०, अग्नीन्द्र ११, निशाचर १२, वरुण १३, अर्यमा १४ अने योनि १५."

"रुद्रा १ जा २ हिर्बुधाः ३ पूषा ४ दस्रा ५ न्तका ६ ग्नि ७ धातारः ८ ।
इन्द्व ९ दिति १० गुरु ११ हरि १२ रवि १३ त्वष्टृ १४ नलाख्याः १५ क्षणाधिपा रात्रौ २"

"रात्रिए क्षणोना अधिपो अनुक्रमे आ प्रमाणे छे.—रुद्र १, अज २, अहिर्बुध ३, पूषा ४, दस्र ५, अन्तक ६, अग्नि ७, धाता ८, इंदु ९, अदिति १०, गुरु ११, हरि १२, रवि १३, त्वष्टा १४ अने अनल १५."

क्षणोनां नामो आ प्रमाणे छे.—

"आर्द्रा १ श्लेषा २ नुराधा ३ च मघा ४ चैव धनिष्ठिका ५ ।
पूर्वाषाढो ६ त्तराषाढे ७ अभिजि ८ द्रोहिणी ९ तथा ॥ ३ ॥
ज्येष्ठा १० विशाखिका ११ मूलं १२ नक्षत्रं शततारकम् १३ ।
उत्तर १४ पूर्वे १५ फल्गुन्यौ क्षणास्तिथिसमा दिने ॥ ४ ॥"

"अनुक्रमे दरेक तिथिने दिवसे पंदर क्षणोनां नामो आ प्रमाणे छे.—आर्द्रा १, अश्लेषा २, अनुराधा ३, मघा ४, धनिष्ठा ५, पूर्वाषाढा ६, उत्तराषाढा ७, अभिजित् ८, रोहिणी ९, ज्येष्ठा १०, विशाखा ११, मूळ १२, शततारका १३, उत्तराफाल्गुनी १४ अने पूर्वाफाल्गुनी १५.

"दक्खिणदिसि मुत्तु गमं दिक्ख पइट्ठा गमागमाइकयं ।
जं तं सव्वं सुहयं अभिजिमुहुत्तंमि अट्ठमए ॥ ५ ॥"

"आ पंदरे मुहूर्त्तो (क्षणो)मां दक्षिण दिशाना गमन (प्रयाण)ने मूकीने बाकीनां दीक्षा, प्रतिष्ठा अने गमन आगमन विगेरे सर्व कार्य आठमा अभिजित् मुहूर्त्तमां शुभकारी छे." कह्युं छे के—

"उप्पायविट्ठि वइवायदड्ढतिहि पावगह विहिअदोसे ।
मज्झण्हगउ सूरो सव्वे ववणीय सुक्खकरो ॥ ६ ॥"

"उत्पात, विष्टि, व्यतिपात, दग्ध तिथि तथा पाप ग्रहोथी थयेला सर्वे दोषोने दूर करीने मध्याह्नकाळनो सूर्य सुखकारक छे." आ प्रमाणे हर्षप्रकाशमां छे.

पूर्णभद्र पण कहे छे के—

"ग्रसते ग्रहचक्रमसौ रविरुदये यावदेव यामयुगम् ।
उद्धमति वमनकाले वान्तं तद्विह्वलीभवति ॥ १ ॥"

"आ रवि (सूर्य) उदयसमये बे प्रहर सुधी ग्रहोना समूहने गळे छे अने पछी वमनकाळे तेमने वमे छे, अने वमेलुं एवुं ते ग्रहचक्र विह्वळ थाय छे. अर्थात् मध्याह्नसमये विह्वळ थाय छे."

"विह्वलतामुपगतवति तस्मिन् विजयाह्वयो भवति योगः ।
यस्मिन् विहितं कार्यं न चलति कथमपि युगान्तेऽपि ॥ २ ॥"

"ज्यारे ते ग्रहचक्र विह्वळताने पामे छे त्यारे विजय नामनो योग थाय छे. तेमां करेलुं कार्य युगना अंतमां पण कोइ पण प्रकारे चळतुं नथी."

लल्ल पण कहे छे के—

"रवौ गगनमध्यस्थे मुहूर्त्तेऽभिजिदाह्वये ।
छिनत्ति सकलान् दोषाँश्चक्रमादाय माधवः ॥ १ ॥"

"रवि गगनना मध्य भागमां रह्यो होय त्यारे अभिजित् नामनुं मुहूर्त्त कहेवाय छे, ते वखते माधव (कृष्ण) चक्र लइने सर्व दोषोने हणे छे."

आ विजय मुहूर्त्त माटे केटलाएक आ प्रमाणे कहे छे.—

"दुपहरघडिआऊणे दुपहरघडिएगअहिअ मज्झण्हे ।
विजयं नाम मुहुत्तं पसाहगं सव्वकज्जाणं ॥ १ ॥"

"मध्याह्नसमये बे प्रहरमां एक घडी ओछी होय त्यारे तथा पछीना बे प्रहरनी एक घडी अधिक (अर्थात् मध्याह्न पछीना बे प्रहरमांनी पहेली एक घडी अने पछीनी एक घडी) कुल आ बे घडीनुं विजय नामे मुहूर्त्त कहेवाय छे, ते सर्व कार्यने साधे छे."

सायंकाळनी संध्याना समये पण विजय योग थाय छे. ते विषे हर्षप्रकाशमां आ प्रमाणे कह्युं छे.—

"ईसिसंझामइक्कंतो किंचि उब्भिन्नताराउ ।
विजउ नाम जोगोऽयं सव्वकज्जप्पसाहउ ॥ १ ॥"

"कांइक संध्याने उल्लंघन करी गयेलो तथा कांइक ताराउ जेमां उत्पन्न थया छे एवो जे समय ते विजय नामनो योग कहेवाय छे. ते सर्व कार्यने साधे छे."

लल्ल प्रातःकाळनी संध्यामां पण यात्रा करवानुं इच्छे छे. कह्युं छे के—

"आवश्यके तथा याने सौम्येऽस्ते निधनेऽपि वा ।
व्रजेदर्कोदये वाऽपि मध्याह्ने वाऽविशंकितः ॥ १ ॥"

"तथा अवश्य यात्रा (प्रयाण) करवानी होय तो सूर्योदयसमये अथवा मध्याह्न-समये तात्कालिक लग्नकुंमळीमां सातमे अथवा आठमे स्थाने सौम्य ग्रह रह्यो होय तो-पण निःशंकपणे प्रयाण करवुं."

प्रातःकाळनी संध्यानी "उषा" अने "त्रितार" एवी पण संज्ञा छे. ते विषे पूर्णभद्र कहे छे के—

"उषाभिधानं वरयोगमेवं, त्रितारमाहुर्मुनिवृन्दवन्द्याः ।"

"मुनिउना समूहने पण वांदवा योग्य एवा महात्माउ उषा नामना श्रेष्ठ योगने त्रितार नामे पण कहे छे." वळी—"उषां प्रशंसयेद्गर्गः" "गर्ग कहे छे के उषा योग प्रशस्त छे."

आ सर्वे वचनोनुं तात्पर्य ए थयुं के त्रणे संध्याउ प्रशस्त छे. तथा—

"रात्रावार्द्रा १ तथैवाष्टौ पूर्वभद्रपदादयः ९ ।
आदित्य १० पुष्य ११ श्रुतयो १२ हस्ताद्याश्च त्रयः १५ क्रमात् ॥ १ ॥"

"रात्रिए अनुक्रमे पंदर क्षणो (मुहूर्त्तो) आ प्रमाणे जाणवा—आर्द्रा १, पूर्वाभाद्र-पदथी आठ एटले पूर्वाभाद्रपद २, उत्तराभाद्रपद ३, रेवती ४, अश्विनी ५, भरणी ६, कृत्तिका ७, रोहिणी ८, अने मृगशीर्ष ९, आदित्य (पुनर्वसु) १०, पुष्य ११, श्रवण १२, हस्तादिक त्रण एटले हस्त १३, चित्रा १४ अने स्वाति १५."

"यस्मिन् धिष्ण्ये यच्च कर्मोपदिष्टं, तद्दैवज्ञैस्तन्मुहूर्त्तेऽपि कार्यम् ।
दिक्शूलाद्यं चिन्तनीयं समस्तं, तद्वद्भः पारिघश्च क्षणेषु ॥ २ ॥"

"जे नक्षत्रमां जे कार्य करवानुं कह्युं छे, ते कार्यने ज्योतिषना जाणनाराउए ते मुहूर्त्तमां पण करवुं, परंतु ते मुहूर्त्तोमां पण नक्षत्रनी ज जेम दिक्शूळ विगेरे एटले नक्षत्र दिक्शूळ अने कीला विगेरे कहेवामां आवशे ते सर्वनो विचार करवो. एटले के जे दिशामां ते दिक्शूळादिक उत्पन्न थयुं होय ते दिशामां प्रयाण न करवुं. तथा चर, स्थिर

विगेरे नक्षत्रना सात प्रकारो कह्या छे ते आ नक्षत्र संबंधी क्षणने विषे पण इष्ट कार्यने अनुसरीने विचारवा. तथा परिघदंड के जे आगळ कहेवामां आवशे ते पण नक्षत्रनी ज जेम विचारीने यात्रादिक कार्य करवां." आ प्रमाणे रत्नमाला भाष्यमां कह्युं छे.

पोराणिक क्षणोनां नामो तो आ प्रमाणे कहेलां छे.—

"रौद्रः १ श्वेतो २ मैत्र ३ श्चारभटः ४ पञ्चमस्तु सावित्रः ५ ।
वैराजो ६ गान्धर्व ७ स्तथाभिजि ८ द्रोहिण ९ बलौ १० च ॥ १ ॥
विजयो ११ऽथ नैर्ऋताख्यो १२ माहेन्द्रो १३ वारुणो १४ भगश्चैव १५ ।
एते पुराणकथिता दिवसमुहूर्त्तास्तथाभिजित्कुतपः ॥ २ ॥
अभिजि १ द्विजयो २ मैत्रः ३ सावित्रो ४ बलवान् ५ सितः ६ ।
वैराजश्चेति ७ सप्त स्युः क्षणाः सर्वार्थसाधकाः ॥ ३ ॥"

"पुराणमां कहेला दिवसना क्षणोनां नामो आ प्रमाणे छे.—रौद्र १, श्वेत २, मैत्र ३, चारभट ४, पांचमो सावित्र ५, वैराज ६, गांधर्व ७, अभिजित् ८, रोहिण ९, बल १०, विजय ११, निर्ऋत १२, माहेंद्र १३, वारुण १४ अने भग १५. तथा अभिजित् कुतप एटले आठमुं मुहूर्त्त छे. आ सर्वे क्षणोमां अभिजित् १, विजय २, मैत्र ३, सावित्र ४, बळवान् (बळ) ५, सित (श्वेत) ६ अने विराज ७, ए सात क्षणो सर्व कार्यना साधक छे."

"रौद्रो १ गन्धर्वो २ ऽर्यप ३ श्चारणाख्यो ४,
वायु ५ र्वह्नी ६ राक्षसो ७ धातृ ८ सौम्यौ ९ ।
ब्रह्मा १० जीवः ११ पौष्ण १२ विष्णू १३ समीरो १४,
रात्रावेते नैर्ऋताख्यः १५ क्षणोऽन्यः ॥ ४ ॥"

"रात्रिना क्षणो अनुक्रमे आ प्रमाणे छे.—रौद्र १, गंधर्व २, अर्यप ३, चारण ४, वायु ५, वह्नि ६, राक्षस ७, धाता ८, सौम्य ९, ब्रह्मा १०, जीव ११, पौष्ण १२, विष्णु १३, समीर १४ अने नैर्ऋत १५." आ प्रमाणे बहु उपयोगी होवाथी क्षणनो विचार विस्तारथी कह्यो.

प्रथमनुं अने पछीनां पण क्षौरने आश्रीने वर्ज्य वखत कहे छे.—

अभ्यक्तस्नाताशितभूषितयात्रारणोन्मुखैः क्षौरम् ।
विद्यादिनिशासन्ध्यापर्वसु नवमेऽह्नि च न कार्यम् ॥ ३२ ॥

अर्थ—अभ्यंजन (तैलमर्दन विगेरे) करेलुं होय, स्नान करेलुं होय, भोजन कर्युं होय, आभूषण पहेर्यां होय, तथा यात्रामां अने रणसंग्राममां तैयार थयो होय, आवा माणसे क्षौर कराववुं नहीं. तथा विद्यारंभने दिवसे, रात्रिसमये, त्रणे संध्यासमये,

दीवाळी विगेरे पर्व दिवसे तथा नवमे दिवसे एटले पूर्वे क्षौर कराव्युं होय ते दिवसथी गणतां नवमे दिवसे क्षौर कराववुं नहीं. अहीं "नवम" शब्दे करीने नोम तिथिनो अर्थ करवो नहीं, कारण के नोम रिक्ता तिथि छे अने रिक्ता तिथिनुं वर्जन तो प्रथम कही गया छे, तेथी जे दिवसे पूर्वे क्षौर कराव्युं होय ते दिवसथी गणतां जे नवमो दिवस आवे ते दिवसे बीजी वारनुं क्षौर कराववुं नहीं. आ नवमा दिवसनो निषेध केवळ क्षौरमां ज छे एम नथी, परंतु गृहप्रवेशादिकमां पण नवमा दिवसनो निषेध छे. ते विषे लल्ल कहे छे के—

"निर्गमान्नवमे चाह्नि प्रवेशं परिवर्जयेत् ।
शुभे नक्षत्रयोगेऽपि प्रवेशाद्वापि निर्गमम् ॥ १ ॥"

"प्रयाण करवाना दिवसथी गणतां नवमे दिवसे नक्षत्र योग शुभ छतां पण पुरप्रवेशादिक करवो नहीं, तेमज प्रवेश कर्या पछी नवमे दिवसे प्रयाण पण करवुं नहीं."

आ नियम मांगळिक (सामान्य) क्षौरने माटे कह्यो छे. अमांगळिक (सूतक विगेरेनुं) क्षौर तो नवमे दिवसे पण थाय छे. "नीचे आसन नाख्या विना क्षौर कराववुं नहीं" एम लल्ल कहे छे.—

षट्कृत्तिकोऽष्टवैरश्च स्त्रिमैत्रश्चतुरुत्तरः ।
पञ्चपैत्रः सकृन्मूलः क्षौरी वर्षं न जीवति ॥ ३३ ॥

अर्थ—लगोलग छ कृत्तिकामां क्षौर करावनार, ए ज रीते आठ रोहिणीमां, त्रण अनुराधामां, चार उत्तरामां, पांच मघामां अने एक मूळ नक्षत्रमां क्षौर करावनार माणस एक वर्ष सुधी जीवे नहीं.

गणिविद्यामां तो कृत्तिका, विशाखा, मघा अने भरणी ए चार नक्षत्रोमां ज लोचकर्मने निषेध कर्यो छे. विशेष ए छे जे—

"सर्वदापि शुभं क्षौरं राजाज्ञामृतिसूतके ।
बन्धमोक्षे मखे दारकर्मतीर्थव्रतादिषु ॥ १ ॥"

"राजानी आज्ञाए, मृत्युसूतकमां, बंधनथी मुक्त थयो होय त्यारे, यज्ञमां, स्त्रीना कार्यमां, तीर्थमां अने व्रतादिकमां (व्रतादिकना प्रारंभमां) क्षौरकर्म कराववुं ए सर्वदा एटले सर्वे वार अने नक्षत्रोमां शुभ छे." अहीं स्त्रीना कार्यमां जे कह्युं छे ते कोइना कुळनो आचार छे, एटले के जेना कुळनो रीवाज होय तेने आश्रीने छे.

हवे राजाने आश्रीने क्षौरकर्म कहे छे.

श्मश्रुकर्म नरेन्द्राणां पञ्चमे पञ्चमेऽहनि ।
क्षौरभेषु नखोल्लेखो व्यर्के क्रूरे विशेषतः ॥ ३४ ॥

अर्थ—क्षौरनां नक्षत्रोने विषे त्रीजी, पांचमी अने सातमी तारा विगेरे न होय त्यारे क्रूर वार (सूर्य, शनि, मंगळ) ने दिवसे पण शुभ ग्रहनी काळहोराने विषे पांचमे पांचमे दिवसे राजाउए श्मश्रुकर्म (दाढी मुछनुं क्षौर) कराववुं. नख कपाववामां पण आ ज समय लेवो, पण एक रविवार तजवो, अने शनि तथा मंगळ अने तेनी होरा विशेषे करीने ग्रहण करवी.

हवे विद्यारंभनुं मुहूर्त कहे छे.—

विद्यां सुराध्यापकराजपुत्रसितार्कवारेषु समारभेत ।
पूर्वाश्विनीमूलकरत्रयेषु, श्रुतित्रये वा मृगपञ्चके वा ॥ ३५ ॥

अर्थ—गुरु, बुध, शुक्र अने रविवारे त्रणे पूर्वा, अश्विनी, मूळ, हस्त, चित्रा, स्वाति, श्रवण, धनिष्ठा, शततारका, मृगशीर्ष, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य अने अश्लेषा, आटलां नक्षत्रोमां विद्यानो आरंभ करवो श्रेष्ठ छे. अहीं श्रवण, धनिष्ठा अने शततारका ए त्रणने बदले केटलाक एक श्रवण ज लेवानुं कहे छे. धनिष्ठा अने शततारकानो निषेध करे छे.

विद्यारंभमां वारोनुं फळ व्यवहारसारमां आ प्रमाणे कह्युं छे.—

“विद्यारंभे नृणां वाराः कुर्वते भास्करादयः ।
आयु १ र्जाड्यं २ मृतिं ३ लक्ष्मीं ४ बुद्धिं ५ सिद्धिं ६ च पञ्चताम् ७ ॥१॥”

“विद्याना आरंभमां मनुष्योने सूर्यादिक वारो आ प्रमाणे अनुक्रमे फळ आपे छे.—रविवारे विद्यारंभ कर्यो होय तो आयुष्य, सोमे जडता, मंगळे मरण, बुधे लक्ष्मी, गुरुए बुद्धि, शुक्रे सिद्धि अने शनिए मरण.”

हवे नंदीनुं (नांद मांडवानुं) मुहूर्त कहे छे.—

नियमालोचनायोगतपोनन्द्यादि कारयेत् ।
मुक्त्वा तीक्ष्णोग्रमिश्राणि वारौ चारशनैश्चरौ ॥ ३६ ॥

अर्थ—नियम एटले समकित अथवा बार व्रतो विगेरे उच्चरवां ते, आलोचना एटले धर्मगुरुनी पासे प्रायश्चित्त मागवा माटे पोतानुं पाप प्रकाशवुं ते, योग श्रुतनुं आराधन करवा माटे विशेष प्रकारनो तपविधि, तप एटले सिद्धांतमां कहेला श्रेणी आदिक छ प्रकारना तप, आ सर्वे नियमादिकनी नंदी विगेरे एटले नांद मांडवी अथवा बीजुं कांइ पण धर्मोत्सवादिक कार्य करवुं ते तीक्ष्ण, उग्र अने मिश्र नक्षत्रोने वर्जीने बीजां नक्षत्रोमां तथा मंगळ अने शनिने वर्जीने बीजा वारोमां करवुं. विशेष ए छे जे—

“शान्तिकं पौष्टिकं कार्यं इज्यशुक्रार्कवासरे ।
कन्याविवाहनक्षत्रे पुष्याश्विश्रवणे तथा ॥ १ ॥”

"बुध, गुरु, शुक्र अने रविवारे तथा कन्याविवाहनां नक्षत्रो उपरांत पुष्य, अश्विनी अने श्रवण नक्षत्रमां शांतिक तथा पौष्टिक कार्यो करवां."

हवे प्राये करीने ब्राह्मणादिक वर्णोने आश्रीने पंदर श्लोकोवडे संस्कारो कहे छे. तेमां प्रथम मौंजीबंध (कटिमेखळाबंध एटले उपनयन) नो संस्कार कहे छे.—

मौञ्जीबन्धोऽष्टमे गर्भाज्जन्मतो वाऽग्रजन्मनाम् ।
राज्ञामेकादशे च स्याद्वत्सरे द्वादशे विशाम् ॥ ३७ ॥

अर्थ—मौंजीबंधनुं कर्म ब्राह्मणने गर्भथी अथवा जन्मथी आठमे वर्षे थाय छे. क्षत्रियने अगीयारमे वर्षे अने वैश्यने बारमे वर्षे थाय छे. ब्राह्मणने दशमे वर्षे पण मौंजीबंध करवामां आवे छे, तेमां जे प्रमाणे कुळाचार होय ते प्रमाणे करवुं.

शाखाधिपे बलोपेते केन्द्रस्थेऽह्नि च तस्य वा ।
बले सूर्येन्दुजीवानां वर्णनाथे बलीयसि ॥ ३८ ॥
माघादौ पञ्चके मासां पौष्णाश्विन्योः करत्रये ।
श्रुतिद्वये मृगादित्यपुष्येषूपनयः श्रिये ॥ ३९ ॥ युग्मम् ॥

अर्थ—शाखाधिप (वेदाधिप गुरु, शुक्र, मंगळ अने सूर्य) छ प्रकारादिकथी बळवान् होय तथा केंद्रस्थानमां रह्यो होय त्यारे उपनय (यज्ञोपवीत) संस्कार करवो, केमके शाखाधिप निर्बळ होय तो वर्णसंकर प्रजा थवानो संभव छे. तथा ते शाखाधिपना ज वारमां उपनय संस्कार करवो. अहीं "तस्य वा" ए ठेकाणे वा शब्द कह्यो छे तेथी एवुं सूचवन कर्युं के—जो लग्नना बळथी उपनयन करातुं होय तो शाखाधिपना वारमां लग्न ग्रहण करवुं. एटले के लग्नकुंडळीमां शाखाधिप बळवान् थइने केंद्रमां रहेलो करवो, अने जो मात्र दिनशुद्धिवडे ज संस्कार करवो होय त्यारे पण वार तो शाखाधिपनो ज लेवो. तथा सूर्य, चंद्र अने गुरु बळवान् होय त्यारे अथवा वर्णनो नाथ (गुरु अने शुक्र) बळवान् होय त्यारे उपनयन संस्कार करवो. अथवा तो "सूर्य, चंद्र अने गुरु बळवान् होय तो सर्वे वर्णना नाथो बळवान् ज छे" एम दैवज्ञवल्लभमां कह्युं छे. आ संस्कार माघ विगेरे पांच मास (जेठ सुधी)मां करवो. तथा रेवती, अश्विनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, श्रवण, धनिष्ठा, मृगशीर्ष, पुनर्वसु अने पुष्य नक्षत्रमां करवो शुभ छे.

पराजितेऽरिवेश्मस्थे नीचस्थेऽस्तंगते गुरौ ।
सितेऽपि चोपनीतः स्याच्छ्रुतिस्मृतिबहिष्कृतः ॥ ४० ॥

अर्थ—बे ग्रहोनो योग थयेथी जे ग्रह दक्षिण दिशा तरफ जतो होय ते पराजित कहे-

वाय ले. तेमां पण "एक शुक्र तो उत्तरमां जतो होय तो ते पराजित कहेवाय ले," एम वराह कहे ले. तेथी करीने गुरु अने शुक्र पराजित स्थानमां रह्या होय, शत्रुना स्थानमां रह्या होय, नीच स्थाने रह्या होय अथवा अस्त पाम्या होय अने तेवा समये जो उपनयन संस्कार कर्यो होय तो ते श्रुति अने स्मृतिथी बहिष्कृत (रहित) थाय ले.

क्रमादंशेषु सूर्यादेः क्रूरो १ मन्दो २ऽतिपातकी ३ ।
पटु ४ र्यज्वा ५ च यज्वा ६ च मूर्ख ७ श्चोपनयाद्भवेत् ॥ ४१ ॥

अर्थ—लग्नमां सूर्यनो नवांश रह्यो होय अने उपनयन कर्युं होय तो ते क्रूर थाय ले, चंद्रनो नवांश होय तो ते मंद थाय ले, मंगळनो नवांश होय तो अत्यंत पापी थाय, बुधनो होय तो हुशियार थाय, गुरुनो होय तो यज्वा (यज्ञ करनार) थाय, शुक्रनो होय तोपण यज्वा थाय अने शनिनो नवांश लग्नमां होय तो ते मूर्ख थाय ले.

चतुष्टयेऽर्कादिषु राजसेवी १ स्याद्वैश्यवृत्तिः २ क्रमतोऽस्त्रवृत्तिः ३ ।
अध्यापकः ४ कर्मसु षट्सु विद्वान् ५ विद्यार्थयुक्तो ६ऽन्त्यजसेवकश्च ७ ॥ ४२ ॥

अर्थ—केंद्रस्थानमां सूर्य होय तो ते राजसेवक थाय ले, चंद्र होय तो वैश्य वृत्तिवाळो एटले कृषि, पशुपाल विगेरे वृत्तिवाळो थाय ले, मंगळ होय तो शस्त्रनी वृत्तिवाळो थाय ले. बुध होय तो अध्यापक थाय, गुरु होय तो ल कर्ममां विद्वान् थाय, शुक्र होय तो विद्यावान् अने धनवान् थाय तथा शनि होय तो अंत्यजनो (चंमाळनो) सेवक थाय. केंद्रमां एकथी वधारे ग्रह होय तो जे ग्रह अधिक बळवान् होय तेनुं फळ कहेवुं. ए रीते सर्वत्र जाणवुं.

लग्ने गुरौ त्रिकोणे सिते सितांशे विधौ च वेदज्ञः ।
जवति यमांशे गुरुसितलग्नेषु जमो विशीलश्च ॥ ४३ ॥

अर्थ—लग्नमां गुरु होय, त्रिकोणमां शुक्र होय तथा शुक्रना अंशमां चंद्र होय एटले के गमे ते स्थाने रहेलो चंद्र शुक्रना नवांशमां रह्यो होय, तो ते वेदने जाणनारो थाय ले, तथा गुरु, शुक्र अने लग्न शनिना अंशमां रह्या होय तो ते जम (मूर्ख) अने शीळ रहित तथा कृतघ्नी थाय ले.

विधिगुरुशुक्रैः सार्कैर्धनगुणहीनः कुजान्वितैः क्रूरः ।
सबुधैर्बुधः सशौरैः स्यादुपनीतोऽलसो विगुणः ॥ ४४ ॥

अर्थ—चंद्र, गुरु अने शुक्र जो सूर्य साथे रह्या होय अने उपनयन कर्युं होय तो ते धन अने गुणथी रहित थाय, मंगळनी साथे रह्या होय तो ते क्रूर थाय, बुध साथे

रह्या होय तो विद्वान् थाय, अने शनि साथे रह्या होय तो ते आळसु अने गुणहीन थाय छे. आ श्लोक राज्याभिषेकना लग्नमां पण लागु पडे छे.

चन्द्रे षष्ठाष्टमे मृत्युमूर्खत्वमथवा बटोः ।
व्रतमोक्षेऽथ केशान्ते चौले चैवंविधो विधिः ॥ ४५ ॥

अर्थ—चंद्र छठे के आठमे होय तो बटुकनुं मरण थाय अथवा ते मूर्ख रहे. व्रतना मोक्षमां (मौंजीबंधन छोडवामां), केशान्त (मुंडन)मां अने चौल कर्ममां के जे पोतपोताना कुळना आचार प्रमाणे पहेले अथवा त्रीजे वर्षे करवामां आवे छे तेमां पण आ प्रमाणे ज (एटले उपरना सारा आठ श्लोकमां कह्या प्रमाणे ज) विधि जाणवो.

हवे अग्निस्थापन (अग्निहोत्र)नुं मुहूर्त्त कहे छे.

वह्नेः परिग्रहं प्राहुः कृत्तिकारोहिणीमृगैः ।
उत्तरात्रितयज्येष्ठापुष्यपौष्णद्विदैवतैः ॥ ४६ ॥

अर्थ—कृत्तिका, रोहिणी, मृगशीर्ष, त्रण उत्तरा, ज्येष्ठा, पुष्य, रेवती अने विशाखा नक्षत्रमां अग्निनुं स्थापन कह्युं छे.

केन्द्रोपचयधीधर्मेष्वर्केन्दुज्ञसुरार्चितैः ।
शेषैस्त्रिषड्दशायस्थैराद्ध्याज्जातवेदसम् ॥ ४७ ॥

अर्थ—सूर्य केंद्रस्थानमां (१–४–७–१०) रह्यो होय, चंद्र उपचय (३,६,१०,११) स्थानमां रह्यो होय, बुध पांचमे रह्यो होय, गुरु नवमे रह्यो होय, अने बीजा ग्रहो (मंगळ, शुक्र, शनि) त्रीजे, छठे, दशमे अने अगीयारमे रह्या होय त्यारे अग्नि स्थापन करवो.

उदयेऽथ नवांशे वा राशीनां जलचारिणाम् ।
उदयस्थे च शीतांशोर्वह्निरह्नाय शाम्यति ॥ ४८ ॥

अर्थ—जळचर राशिओना (कर्क, मकर, कुंभ, मीन) उदयमां अथवा नवांशमां अने चंद्रना उदयमां अग्नि तरत ज बुझाइ जाय छे.

क्रूराः कुर्युर्धने निःस्वमाढ्यं सन्तोऽन्नदं विधुः ।
हन्युश्छिद्रे ग्रहाः सर्वे लग्ने च ज्ञयमौ द्विजम् ॥ ४९ ॥

अर्थ—अग्निआधानना कुंडळीमां जो बीजा स्थानमां क्रूर ग्रह रह्या होय तो ते ब्राह्मणने निर्धन करे छे, अने सौम्य ग्रह रह्या होय तो धनाढ्य करे छे, तथा चंद्र रह्यो होय तो ते ब्राह्मणने अन्नदातार करे छे. वळी आठमा स्थानमां कोइ पण ग्रह रह्यो होय तो तेनुं मरण थाय छे, तथा लग्नमां के चंद्रनी साथे बुध अने शनि रह्या होय तो-

पण ते ब्राह्मण मरण पामे छे एम रत्नमाला भाष्यमां कह्युं छे. आठमा स्थाने रहेला ग्रहो विषे आ प्रमाणे विशेष जाणवुं के—आठमे स्थाने चंद्र रह्यो होय तो ते ब्राह्मणनी स्त्रीनुं मरण थाय, मंगळ होय तो ब्राह्मणनुंज मरण थाय, रवि, गुरु के शनि होय तो ते ब्राह्मण असाध्य रोगथी पीडा पामे, अने बुध के शुक्र रह्या होय तो कांइ पण फळ थाय नहीं. लल्ल तो लग्नमां रहेला ग्रह विषे आ प्रमाणे कहे छे के—"लग्नमां अथवा चंद्रनी साथे बुध के शनि रह्यो होय तो लोकाग्निनी साथे ते अग्निनो संग थाय छे. अर्थात् अग्नि उत्पन्न थाय छे."

जितैरस्तमितैर्नीचशत्रुक्षेत्रगतैरपि ।
सोमभौमसुराचार्यैराहिताग्निर्न नन्दति ॥ ५० ॥

अर्थ—सोम, मंगळ अने गुरु जो पराजय पाम्या होय, अस्त पाम्या होय, नीच स्थाने रह्या होय के शत्रुना घरमां रह्या होय तो अग्निनुं आधान करनार सुखी थतो नथी.

चन्द्रेऽर्के वा त्रिशत्रुस्थे लग्ने धनुषि वा गुरौ ।
मेषस्थे खा १० स्त ७ गे वारे यज्वा स्यादात्तपावकः ॥ ५१ ॥

अर्थ—अग्निआधाननी कुंडळीमां चंद्र के सूर्य त्रीजे के छठे स्थाने रह्यो होय, लग्नमां के धन राशिमां गुरु रह्यो होय, अने मंगळ मेष राशिमां के दशमा अथवा सातमा स्थानमां रह्यो होय तो अग्निनुं आधान करनार ब्राह्मण याज्ञिक थाय छे.

। इति विप्राद्यधिकारः ।

हवे नवां वस्त्र पहेरवानुं मुहूर्त्त कहे छे.—

नववाससः प्रधानं वासवपौष्णाश्विनादितिद्वितये ।
करपञ्चकध्रुवेषु च बुधगुरुशुक्रेषु परिधानम् ॥ ५२ ॥

अर्थ—बुध, गुरु अने शुक्रवारे धनिष्ठा, रेवती, अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, तथा ध्रुव एटले रोहिणी, उत्तराषाढा, उत्तराफाल्गुनी अने उत्तराभाद्रपद, आ नक्षत्रोमांथी कोइ पण नक्षत्र होय, ते दिवसे नवां वस्त्र पहेरवां शुभ छे. कह्युं छे के—

"नष्टप्राप्ति १ स्तदनुमरणं २ वह्निदाहो ३ऽर्थसिद्धि ४-
आखोर्भीति ५ र्मृतिरथ ६ धनप्राप्ति ७ स्र्थागमश्च ८ ।
शोको ९ मृत्यु १० नरपतिभयं ११ संपदः १२ कर्मसिद्धि १३-
र्विद्यावाप्तिः १४ सदशन १५ मथो बल्लभत्वं जनानाम् १६ ॥ १ ॥

मित्राप्ति १७ रम्बरहृतिः १८ सलिलप्लुतिश्च १९,
रोगो २०ऽतिमिष्टमशनं २१ नयनामयश्च २२ ।
धान्यं २३ विषोद्भवभयं २४ जलभी २५ र्धनं २६ च,
रत्नाप्ति २७ रम्बरधृतेः फलमश्विभात् स्यात् ॥ २ ॥"

"नवां वस्त्र धारण करवामां अश्विनी नक्षत्रथी नीचे प्रमाणे अनुक्रमे फळ थाय छे. अश्विनी नक्षत्रमां वस्त्र धारण करे तो नाश पामेली वस्तुनी प्राप्ति थाय छे १, भरणीमां धारण करे तो तरत ज मरण थाय २, कृत्तिकामां अग्निदाह थाय ३, रोहिणीमां अर्थनी सिद्धि थाय ४, मृगशिरमां उंदरनो भय थाय ५, आर्द्रामां मरण थाय ६, पुनर्वसुमां धननी प्राप्ति ७, पुष्यमां अर्थनी (धननी) प्राप्ति ८, अश्लेषामां शोक ९, मघामां मृत्यु १०, पूर्वाफाल्गुनीमां राजानो भय ११, उत्तराफाल्गुनीमां संपत्तिनी प्राप्ति १२, हस्तमां कार्यसिद्धि १३, चित्रामां विद्यानी प्राप्ति १४, स्वातिमां सारुं भोजन १५, विशाखामां माणसोनी प्रीति १६, अनुराधामां मित्रनी प्राप्ति १७, ज्येष्ठामां वस्त्रनी चोरी १८, मूळमां जळमां डुबे १९, पूर्वाषाढामां रोग २०, उत्तराषाढामां अत्यंत मिष्ट भोजन २१, श्रवणमां नेत्रनो व्याधि २२, धनिष्ठामां धान्यनी प्राप्ति २३, शतभिषकमां विषनो भय २४, पूर्वाभाद्रपदमां जळनो भय २५, उत्तराभाद्रपदमां धननी प्राप्ति २६, अने रेवतीमां नवुं वस्त्र पहेरवाथी रत्ननी प्राप्ति थाय छे २७."

व्यवहारप्रकाशमां कह्युं छे के—"केवळ श्वेत वस्त्रने माटे ज आ नियम नथी, पण रातां वस्त्रने माटे पण उपर गणावेलां ज नक्षत्रो शुभ छे." व्यवहारसारमां तो एम कह्युं छे जे—"रातां वस्त्र धारण करवामां पुरुषने पण जे नक्षत्रो स्त्रीओने माटे कहेवामां आवशे ते ज शुभ छे, अने आ उपर गणावेलां नक्षत्रो तो श्वेत वस्त्रने ज आश्रीने छे." हवे वारने आश्रीने आ प्रमाणे फळ जाणवुं.—

"नवाम्बरपरीभोगे कुर्वन्त्यर्कादिवासराः ।
जीर्णं १ जलार्द्रं २ शोकं ३ च धनं ४ ज्ञानं ५ सुखं ६ मलम् ७ ॥ १ ॥"

नवां वस्त्र धारण करवामां रवि विगेरे वारो अनुक्रमे जीर्ण[1] १, जलार्द्र[2] २, शोक ३, धन ४, ज्ञान ५, सुख ६ अने मल (मेलापणुं) ७, आ प्रमाणे फळ आपे छे." नवो कंबल धारण करवामां रवि पण शुभ छे एम कहेलुं छे. केटलाक आचार्यो कहे छे के—

"व्यापार्यते रवौ पीतं बुधे नीलं शनौ शितिः ।
गुरुभार्गवयोः श्वेतं रक्तं मंगलवासरे ॥ १ ॥"

---

१ वहेलुं फाटी जाय. २ निरंतर भीनुं ज रहे.

"रविवारे पीळुं वस्त्र पहेरवुं शुभ छे, बुधवारे लीलुं, शनिवारे काळुं, गुरु अने शुक्रवारे श्वेत तथा मंगळवारे रातुं वस्त्र पहेरवुं शुभ छे."

हवे स्त्रीओने नवां वस्त्र तथा अलंकार विगेरे पहेरवानुं मुहूर्त्त कहे छे.—

योषिद्भजेत करपञ्चकवासवाश्विपौष्णेषु वक्रगुरुशुक्रदिनेशवारे ।
मुक्ताप्रवालमणिशंखसुवर्णदन्तरक्ताम्बराण्यविधवात्वमतिः सती चेत् ॥५३॥

अर्थ—विधवा थवानी इच्छा न होय एवी सती स्त्रीए मोती, प्रवाळा, मणि, शंख (शंखला), सुवर्ण, दांत (हाथीदांत) तथा रातां वस्त्रोने हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, धनिष्ठा, अश्विनी अने रेवती, ए नक्षत्रोमां तथा वक्र (मंगळ), गुरु शुक्र अने रविवारे धारण करवां शुभ छे.

विशेषमां आ प्रमाणे जाणवुं.—

"पुष्यं पुनर्वसुं चैव रोहिणीं चोत्तरात्रयम् ।
कौसुंभे वर्जयेद्वस्त्रे भर्तृघातो भवेद्यतः ॥ १ ॥"

"कुसुंबा (रातां) वस्त्र धारण करवामां तथा प्रवाळा, सुवर्ण, शंख विगेरे धारण करवामां पुष्य, पुनर्वसु, रोहिणी, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा अने उत्तराभाद्रपद, ए नक्षत्रो अवश्य वर्जवां, कारण के ते नक्षत्रोमां धारण करवाथी तेना पतिनो नाश थाय छे."

वासः प्राप्तं विवाहादौ राज्ञा दत्तं च यन्मुदा ।
विरुद्धेऽपि हि वारर्क्षे तद्वसीताविशंकितः ॥ ५४ ॥

अर्थ—विवाहादिकमां मळेलुं वस्त्र तथा राजाए हर्षथी जे (वस्त्र) आप्युं होय, ते वार अने नक्षत्र विरुद्ध (अशुभ) होय तथा चंद्रादिक प्रतिकूळ होय तोपण शंका रहित धारण करवुं.

हवे फाटेलां तथा बळेलां वस्त्रने आश्रीने कहे छे.—

कृतनवभागे वाससि कोणेषु सुरास्तथान्तयोर्मनुजाः ।
असुरास्तु मध्ययोः स्युर्मध्यतमो राक्षसो भागः ॥ ५५ ॥

अर्थ—वस्त्रना नव भाग पाडीने तेना चारे खूणामां देव स्थापवा, बे छेडे मनुष्य स्थापवा, मध्यना बे भागमां असुर अने बराबर वच्चे राक्षसने स्थापवो. ते आ रीते.—

देव	असुर	देव
मनुष्य	राक्षस	मनुष्य
देव	असुर	देव

पछी तेनुं फळ आ रीते जाणवुं.—

सुर १ नर २ दनुज ३ पलादाः ४ श्रेष्ठतम १ श्रेष्ठ २ हीन ३ हीनतमाः ४
अन्ताः सर्वेऽप्यशुभा एवं शयनासनाद्येऽपि ॥ ५६ ॥

अर्थ—जो ते वस्त्र देवना भाग (अंश)मां फाट्युं के बळ्युं होय तो अत्यंत श्रेष्ठ, मनुष्यना अंशमां श्रेष्ठ, असुरना अंशमां अधम (अशुभ) अने राक्षसना अंशमां फाट्युं के बळ्युं होय तो अत्यंत अधम–अशुभ जाणवुं. तेमां पण जो ते ते देवादिकना अंशना अंत भागने विषे फाट्युं के बळ्युं होय तो ते सर्वे पण अशुभ ज छे. आ रीते ज शय्या तथा आसन विगेरेमां पण जाणवुं.

लल्ल कहे छे के—

"रुग् राक्षसांशेष्वथवापि मृत्युः, पुंजन्म तेजश्च मनुष्यभागे ।
भागेऽमराणामथ भोगवृद्धिः, प्रान्तेषु सर्वत्र भवत्यनिष्टम् ॥ १ ॥"

"राक्षसना अंशमां वस्त्र फाट्युं के बळ्युं होय तो ते वस्त्रना मालिकने रोग अथवा मृत्यु थाय, मनुष्यना भागमां फाट्युं के बळ्युं होय तो तेना मालिकने पुत्रजन्म तथा तेज थाय, अने देवना अंशमां फाट्युं के बळ्युं होय तो तेना मालिकने भोगनी वृद्धि थाय, परंतु ते सर्वना अंतना भागमां फाट्युं के बळ्युं होय तो ते अशुभ छे. अहीं राक्षसे करीने असुर पण समजी लेवो, अने तेने माटे ज रोग अथवा मरण ए बे फळ कह्यां छे. एटले के असुरना अंशमां रोग अने राक्षसना अंशमां मरण थाय एम समजवुं."

श्रीवृहत्कल्पसूत्र नामना छेदग्रंथनी वृत्तिमां कह्युं छे के—"श्री गुरु तथा गच्छने लायक एवा वस्त्रनी एषणाने माटे नीकळेला साधुने जो प्रथम तेवा प्रकारना (एटले फाटेला के बळेला) वस्त्रनो लाभ थाय तो त्यां पण नव भागनी कल्पना करीने आ प्रमाणे निमित्त ज्ञान कह्युं छे के—

"देवेसु उत्तमो लाभो माणुसेसु अ मज्झिमो ।
असुरेसु अ गेलन्नं मरणं जाण रक्खसे ॥ १ ॥"

"जो ते वस्त्र देवना अंशमां फाटेलुं के बळेलुं होय तो उत्तम लाभ थाय, मनुष्यना अंशमां मध्यम लाभ थाय, असुरना अंशमां रोग थाय, अने राक्षसना अंशमां फाट्युं के बळ्युं होय तो मरण थाय."

फाटेला तथा बळेला वस्त्रने आश्रीने ज विशेष कहे छे.—

छिते दग्धेऽथ लिप्तेऽस्मिन् गोमयाञ्जनकर्दमैः ।
अभुक्ते भूरि भुक्तेऽल्पं फलमेतच्छुभाशुभम् ॥ ५७ ॥

अर्थ—कोरुं वस्त्र भाग, अंजन के कादववडे लींपाय, फाटे के दाझे तो तेनुं शुभ के अशुभ फळ वधारे छे अने भोगवेल वस्त्र भाग, अंजन के कादववडे लींपाय, फाटे के दाझे तो तेनुं शुभ के अशुभ फळ अल्प छे.

विशेष आ प्रमाणे छे.—

"छेदाकृतिः श्रिये स्याच्छत्रादिसमा गतापि रक्षोऽंशे ।
काकोलूकादिसमा न देवभागाश्रिताऽपि पुनः ॥ १ ॥"

"ते वस्त्रना छेद (फाटेला के बळेला)नी आकृति छत्र विगेरेना जेवी होय तो ते राक्षसना भागमां होवा छतां पण लक्ष्मीने माटे छे—शुभ छे, अने कागडा के घुवडना जेवी आकृति होय तो ते देवना भागमां रह्या छतां पण अशुभ ज छे."

हवे कया मुहूर्त्तमां गयेलुं द्रव्य पाछुं सुलभ थाय छे? अथवा कया मुहूर्त्ते थापण विगेरे करवी? ते कहे छे.—

सुलभं स्वं भवेन्न्यस्तं निखातं दत्तमेव वा ।
मृदुश्रुतित्रयादित्यलघुभेषु शुभेऽहनि ॥ ५८ ॥

अर्थ—मृदु (चित्रा, अनुराधा, रेवती, मृगशिर), श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषक्, पुनर्वसु अने लघु (पुष्य, अभिजित्, हस्त, अश्विनी), ए नक्षत्रोमां तथा शुभ दिवसे एटले मंगळ अने शनि विनाना बीजा वारे धननो न्यास कर्यो होय (एटले थापणमां के वेपार विगेरेमां मूक्युं होय), पृथ्वी विगेरेमां दाट्युं होय, व्याजे आप्युं होय तथा अजाणतां खोवाइ गयुं होय तो ते धन पाछुं फरीने सुलभ छे, एटले फरीथी मळी शके छे.

विशेष ए छे जे—"ऋणदानमथादानं क्षिप्रधिष्ण्यैर्विधीयते ।" ऋण देवुं अने लेवुं ए क्षिप्र (पुष्य, अभिजित्, हस्त अने अश्विनी) नक्षत्रमां शुभ छे. वळी कह्युं छे के—

"निधिलब्धिधनविवर्द्धनमादित्याद्ब्राह्मतः करात् पौष्णात् ।
द्वितये श्रवणत्रितयोत्तरासु मित्राधिदेवे च ॥ १ ॥"

"निधिनी प्राप्ति अने धननी वृद्धि पुनर्वसु, पुष्य, रोहिणी, मृगशिर, हस्त, चित्रा, रेवती, अश्विनी, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषक्, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपद, अनुराधा अने अभिजित् ए नक्षत्रोमां शुभकारक छे."

हवे गयेली वस्तु पाछी मळशे के नहीं ते कहे छे.—

नष्टं चतुर्भिरन्धाद्यैर्गच्छेत्पूर्वादिषु क्रमात् ।
तच्चाप्यते सुखा १ यत्ना २ च्छ्रुतात्रैव ३ न सापि च ॥ ५९ ॥

अर्थ—अंधादिक चार नक्षत्रोमां गयेली चीज अनुक्रमे पूर्वादिक दिशामां गइ छे

एम जाणवुं, अने ते चीज सुखेथी मळे, यत्नथी मळे, तेनी खबर मळे अने खबर पण न मळे, ए रीते अनुक्रमे तेनुं फळ जाणवुं.

सुखेथी मळे एटले समीपे ज ते वस्तु रही छे, दूर गइ नथी एम जाणवुं. "आंधळां नक्षत्रमां गयेली वस्तु बधी पाछी मळे छे अने काणां नक्षत्रमां गयेली अर्धी पाछी मळे छे" एम केटलाक कहे छे. वळी बीजा केटलाक कहे छे के—"आंधळुं नक्षत्र पण जो बे पाद के चार पादनुं होय तो गयेली वस्तु दुःखे करीने पाछी मळे छे, पण जे नक्षत्रो त्रण पादवाळां छे एटले एक पादे लंगडां छे तेवां देखतां नक्षत्रोमां पण गयेली वस्तु पाछी मळी शके छे."

हवे आंधळां काणां विगेरे नक्षत्रोनी संज्ञा कहे छे.—

रेवत्यादिचतुष्केषु नामानि प्रतिभं जगुः ।

अन्ध १ माकेकरं २ चिब्बं ३ सुलोचन ४ मिति क्रमात् ॥६०॥

अर्थ—रेवती नक्षत्रथी चार चार नक्षत्रोमां दरेक नक्षत्रनां नाम अनुक्रमे आंधळुं, आकेकर (काणुं), चिब्ब (चीपडावाळुं) अने सुलोचन (देखतुं) ए प्रमाणे कह्यां छे.

आंधळां, काणां विगेरे संज्ञा तथा तेमां गयेली वस्तुनी दिशा तथा ते वस्तु मळशे के नहीं ते जाणवानुं कोष्टक.—

संज्ञा.	अठ्यावीश नक्षत्रोनां नामो.							दिशा.	फळ.
आंधळां	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उत्तराफा०	विशाखा	पूर्वाषाढा	धनिष्ठा	पूर्व	शीघ्र मळे
काणां	अश्विनी	मृगशिर	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उत्तराषाढा	शतभिषक्	दक्षिण	यत्नथी मळे
चिब्बां	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित्	पूर्वाभाद्रपद	पश्चिम	खबर मळे
देखतां	कृत्तिका	पुनर्वसु	पूर्वाफा०	स्वाति	मूळ	श्रवण	उत्तराभाद्रपद	उत्तर	खबर पण न मळे.

दिनशुद्धिकार आ प्रमाणे कहे छे.—

"रविरिक्खा छ बाला बारस तरुणाय नव परे थेरा ।
तरुणेहिं जाइ थेरेहिं न जाइ बाले भमइ पासे ॥ १ ॥"

"रविना नक्षत्रथी छ नक्षत्र बाळक छे, त्यारपछीनां बार नक्षत्र जुवान छे अने त्यारपछीनां नव नक्षत्रो वृद्ध छे. तेमां जुवान नक्षत्रमां गयेली वस्तु जाय–पछी आवे नहीं, वृद्ध नक्षत्रमां वस्तु जाय नहीं एटले पाछी आवे खरी, अने बाळ नक्षत्रमां गयेली वस्तु पासे ज भमे छे एटले के दूर जती नथी."

हवे प्रेत (मरेलानुं) कर्मनुं मुहूर्त्त कहे छे.

न प्रेतकर्म कुर्वीत यमले सत्रिपुष्करे ।

क्रूरमिश्रध्रुवार्द्रासु तथा मूलानुराधयोः ॥ ६१ ॥

---

१ सूर्य जे नक्षत्रमां होय ते नक्षत्रथी इष्ट दिवसनुं नक्षत्र छ सुधीमां होय तो बाळक.

अर्थ—प्रेतकार्य आटलां नक्षत्रोमां करवुं नहीं.—यमलयोगमां, पंचकमां, त्रिपुष्कर-योगमां, क्रूर (भरणी, त्रणे पूर्वा अने मघा)मां, मिश्र (विशाखा अने कृत्तिका)मां, ध्रुव (त्रण उत्तरा अने रोहिणी)मां, आर्द्रामां, मूळमां तथा अनुराधामां. वळी "रवि तथा मंगळ-वारनो पण त्याग करवो" एम दिनशुद्धिमां कह्युं छे. वळी अन्य ग्रंथमां आ प्रमाणे कह्युं छे—

"पुष्याश्विनी स्वातिहस्ता ज्येष्ठा श्रवणरेवती ।
एषु प्रेतक्रिया कार्या रविवारं विना बुधैः ॥ १ ॥

"पुष्य, अश्विनी, स्वाति, हस्त, ज्येष्ठा, श्रवण अने रेवती, आटलां नक्षत्रोमां रविवार विना बीजा वारे डाह्या पुरुषोए प्रेतक्रिया करवी."

मृते साधौ पञ्चदशमुहूर्त्तैर्नैव पुत्रकः ।
एकस्त्रिंशन्मुहूर्त्तैस्तु द्वौ प्यः शेषैस्तु भेरुभौ ॥ ६२ ॥

अर्थ—पंदर मुहूर्त्तवाळां नक्षत्रमां साधुए काळ कर्यो होय तो पुत्रक करवो नहीं, (अभिजितमां पण करवो नहीं), त्रीश मुहूर्त्तवाळांमां काळ कर्यो होय तो एक पुत्रक करवो, एटले एक पुत्रक करीने साधुनी पासे राखवो, अने संस्कारसमये तेने मध्यमां नाखवो एवी रीत छे, तथा बाकीनां पीस्ताळीश मुहूर्त्तवाळां नक्षत्रोमां काळ कर्यो होय तो बे पुत्रक करवा.

हवे सर्पदंश थयो होय ते जीवे के नहीं ? ते कहे छे.—

सर्पदष्टः सुपर्णेन रक्षितोऽपि न जीवति ।
मूलार्द्राभरणीयुग्ममघाश्लेषाद्विदैवतैः ॥ ६३ ॥

अर्थ—मूळ, आर्द्रा, भरणी, कृत्तिका, मघा, अश्लेषा अने विशाखा नक्षत्रमां सर्प-दंश थयो होय तो तेनी गरुड रक्षा करे तोपण ते जीवे नहीं, अने बीजां नक्षत्रोमां सर्पदंश थयो होय तो ते जीवे छे.

विवेकविलासमां तो आ प्रमाणे कह्युं छे.—

"मूलाश्लेषामघाः पूर्वात्रयं भरणिकाश्विनी ।
कृत्तिकार्द्रा विशाखा च रोहिणी दष्टमृत्युदाः ॥ १ ॥
तिथयः पञ्चमी षष्ठ्यष्टमी नवमिका तथा ।
चतुर्दश्यप्यमावास्याऽहिना दष्टस्य मृत्युदाः ॥ २ ॥
दष्टस्य मृतये वारा भानुभौमशनैश्चराः ।
प्रातःसन्ध्यास्तसन्ध्या च संक्रान्तिसमयस्तथा ॥ ३ ॥"

"मूळ, अश्लेषा, मघा, त्रणे पूर्वा, भरणी, अश्विनी, कृत्तिका, आर्द्रा, विशाखा अने

रोहिणी, आटलां नक्षत्रोमां सर्पदंश थयो होय तो ते मरण पामे छे (१) तथा पांचम, छठ, आठम, नोम, चौदश अने अमावास्या, आ तिथिओमां सर्पदंश थयो होय तो ते मरण पामे छे (२) रवि, मंगळ अने शनिवारे तथा प्रातःकाळनी संध्या, सायंकाळनी संध्या अने संक्रांतिना समये सर्पदंश थयो होय तो ते मरण पामे छे." इत्यादि.

हवे मांदो माणस जीवशे के नहीं ? ते विषे कहे छे.—

जातरोगस्य पूर्वार्द्रास्वातिज्येष्ठाहिनैर्मृतिः ।
भवेन्नीरोगता रेवत्यनुराधासु कष्टतः ॥ ६४ ॥
मासान्मृगोत्तराषाढे विंशत्यह्नां मघासु च ।
पक्षेण तु द्विदैवत्ये धनिष्ठाहस्तयोस्तथा ॥ ६५ ॥
भरणी वारुणश्रोत्रचित्रास्वेकादशाहतः ।
अश्विनीकृत्तिकारक्षोनक्षत्रेषु नवाहतः ॥ ६६ ॥
आदित्यपुष्याहिर्बुध्नरोहिण्यार्यमणेषु तु ।
सप्ताहादिह तारायां यदि स्यादनुकूलता ॥ ६७ ॥

अर्थ—त्रणे पूर्वा, आर्द्रा, स्वाति, ज्येष्ठा अने अश्लेषामां रोग उत्पन्न थयो होय तो रोगीनुं मरण थाय छे. रेवती अने अनुराधामां रोग उत्पन्न थयो होय तो कष्टथी नीरोगी थाय. मृगशिर अने उत्तराषाढामां रोग थयो होय तो एक महीने सारुं थाय. मघामां थयो होय तो वीश दिवसे नीरोगी थाय. विशाखा, धनिष्ठा के हस्तमां थयो होय तो पंदर दिवसे सारुं थाय. अहीं वृद्धो कहे छे के—"उत्तराषाढामां रोग थयो होय तो बे मासे मृत्यु थाय अने अभिजितमां थयो होय तो बे मासे नीरोगी थाय." भरणी, शतभिषक्, श्रवण अने चित्रामां व्याधि उत्पन्न थयो होय तो अगीयार दिवसे सारुं थाय. अश्विनी, कृत्तिका अने मूळमां थयो होय तो नव दिवसे सारुं थाय. पुनर्वसु, पुष्य, उत्तराभाद्रपद, रोहिणी अने उत्तराफाल्गुनीमां थयो होय तो सात दिवसे सारुं थाय. आ सर्व स्थळे तारानी अनुकूळता होय तो सारुं थाय एम जाणवुं. "शुक्लेऽप्यासूत्थिते रोगे दीर्घक्लेशोऽथवा मृतिः" "शुक्लपक्षने विषे पण त्रीजी, पांचमी के सातमी ताराओमां रोग उत्पन्न थयो होय तो घणो क्लेश पामे अथवा मृत्यु पामे" एम कह्युं छे.

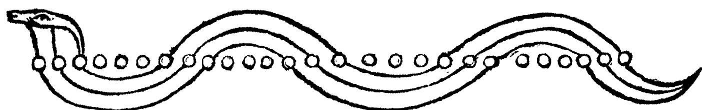
अहीं प्रसंगथी मृत्युनुं ज्ञान लखे छे.—

"आइच्चाइ धरे वि भुअंगह, पनरहमाहिठवेविणु अंगह ।
बारह बाहिरि तस्स य दिज्जइ, जीवियमरण फुडं जाणिज्जइ ॥ १ ॥"

"त्रण नाडीवाळो सर्प करवो. तेमां सूर्य जे नक्षत्रमां होय ते नक्षत्र प्रथम मूकवुं,

अने त्यारपछी अनुक्रमे बीजां नक्षत्रो मूकवां (अभिजित् गणवुं नहीं). तेमां पंदर नक्षत्रो नाडी उपर आवे अने बार नक्षत्रो बहार रहे ए रीते सर्प करीने जीवित अथवा मरण स्पष्ट रीते जाणवुं.

भुजंगनी स्थापना.



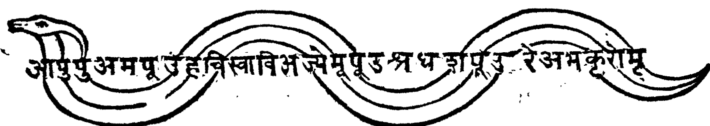
अहीं जे जे ग्रहो जे जे नक्षत्रोमां होय, ते ते ग्रहो ते ते नक्षत्र उपर मूकवा. पछी सूर्यना नक्षत्रथी रोगीना नामनक्षत्र सुधी गणवुं. तेमां जो पहेली नाडीमां एटले पहेले, नवमे, तेरमे, एकवीशमे के पचीशमे रोगीनुं नक्षत्र होय तो मरण थाय, जो बीजी नाडीमां एटले बीजे, आठमे, चौदमे, वीशमे के छवीशमे रोगीनुं नक्षत्र होय तो घणुं कष्ट थाय, अने रोगीनुं नक्षत्र त्रीजी नाडी उपर एटले त्रीजे, सातमे, पंदरमे, ओगणी-शमे के सत्यावीशमे होय तो थोडुं कष्ट थाय. बाकीनां बार नक्षत्रो उपर रोगीनुं नक्षत्र होय तो आरोग्य थाय. अहीं शुभाशुभ ग्रहना वेधथी पण शुभाशुभ फळ विशेष प्रकारे कहेवुं."

यतिवल्लभमां तो आ प्रमाणे ज भुजंगचक्रने स्थापवानुं कह्युं छे, पण तेमां आर्द्रा नक्षत्र प्रथम मूकवानुं कहे छे. ते आ प्रमाणे.—

"आर्द्राद्यैः पञ्चदशभिस्त्रीणि त्रीण्यन्तरा त्यजन् ।
त्रिनाडिचक्रे चन्द्रा १ र्क २ जन्म ३ वेधे न जीवति ॥ १ ॥"

"आंतरे आंतरे त्रण त्रण नक्षत्रोने तजीने आर्द्रा नक्षत्रथी पंदर नक्षत्रोने त्रिनाडीना चक्रमां स्थापवां. तेमां जो चंद्र, सूर्य अने रोगीना नामना नक्षत्रनो (ए त्रणेनो) वेध थाय तो ते रोगी जीवे नहीं."

त्रिनाडी चक्रनी स्थापना.



व्याधि थवाने समये जो चंद्रनुं, सूर्यनुं अने रोगीनुं नक्षत्र एक नाडी पर होय तो रोगीनुं मरण नीपजे.

दिनशुद्धि ग्रंथमां तो त्रण त्रण नक्षत्रनो त्याग कर्या विना ज आर्द्राथी आरंभीने त्रिनाडी चक्रनी स्थापना तथा फळ आ प्रमाणे कहे छे.—

"आई अद्दा मिगं अंते मझे मूलं पइट्ठिअं।
रवींदूजम्मनरकत्तं तिविद्धो न हु जीवइ ॥ १ ॥"

"प्रथम आर्द्रा, अंते मृगशिर अने मध्ये मूळ ए रीते मूकीने त्रिनाडी चक्र करवुं. तेमां सूर्यनुं, चंद्रनुं अने जन्मनुं नक्षत्र जो वींधाय एटले एक नाडी पर आवे तो रोगी माणस जीवे नहीं."

त्रिनाडी चक्रनी स्थापना.



"रवींदूजम्मनरकत्तं एगनाडीगया जया।
तया दिने जवे मच्चू नन्नहा जिणजासिअं ॥ १ ॥"

"सूर्यनुं, चंद्रनुं अने जन्मनुं ए त्रणे नक्षत्रो ज्यारे एक नाडी पर आवे, ते दिवसे रोगीनुं मरण थाय छे. जिनेश्वरनुं वचन अन्यथा थतुं नथी."

अहीं कोइ आम पण कहे छे के—

"रोगिणो जन्मऋक्षस्य एकनाड्यां यदा रविः।
यावद्दृक्षं रवेर्जोग्यं तावत्कष्टपरंपरा ॥ १ ॥"

"रोगीना जन्मनक्षत्रनी एक (सरखी) नाडी उपर ज्यारे सूर्य होय अने जेटलुं नक्षत्र सूर्यने जोगववानुं होय तेटला वखत सुधी रोगीने कष्टनी परंपरा रहे छे."

"रोगिणो जन्मऋक्षस्य एकनाड्यां यदा शशी।
तदा पीडां विजानीयादष्टप्राहरिकीं ध्रुवम् ॥ २ ॥"

"रोगीना जन्मनक्षत्रनी एक (समान) नाडी उपर ज्यारे चंद्र होय त्यारे आठ पहोर सुधीनी अवश्य पीडा जाणवी."

"क्रूरग्रहास्तदाऽन्ये तु यदि तत्रैव संस्थिताः।
तदा काले जवेन्मृत्युः सत्यमीशानजाषितम् ॥ ३ ॥"

"ते वखते बीजा क्रूर ग्रहो जो त्यां ज रहेला होय, तो ते ज वखते मृत्यु थाय छे. एवुं ईश्वरनुं वचन सत्य छे."

आ अने बीजा प्रकारोवडे विचारीने क्रूर ग्रह, दशा, चंद्रनी प्रतिकूळता, तिथि विगेरे, छेद विगेरे वडे आम्नायमां कह्या प्रमाणे जोइने रोगीना मृत्युना समयनो निर्णय करवो.

हवे औषध खावानुं मुहूर्त्त कहे छे.—

भैषज्यमिष्टं मृगवारुणानुराधाधनिष्ठाश्रुतिरेवतीषु ।
पुष्याश्विनीराक्षसहस्तचित्रापुनर्वसुस्वातिषु देहपुष्ट्यै ॥ ६७ ॥

अर्थ—प्रथम औषध खावानुं नीचेनां नक्षत्रोमां देहनी पुष्टिने माटे इच्छेलुं छे.—मृगशिर, शतभिषक्, अनुराधा, धनिष्ठा, श्रवण, रेवती, पुष्य, अश्विनी, मूळ, हस्त, चित्रा, पुनर्वसु अने स्वाति.

अहीं वार विषे कांइ कह्युं नथी तोपण सर्वत्र सौम्य वारो ज ग्रहण करवा, अने अहीं तो रविवार पण कहेलो होवाथी लेवानो छे. ए ज रीते अश्व, गजकर्म, पशुविधि, नाटक, वाव, कूवा, उद्यान, बाळकनुं नाम स्थापन, गृह करवुं, अश्वने प्रथम चलाववो, बीज वाववुं, नगरादिकनां तोरण चढाववां, तथा देवपूजा विगेरे सर्व मांगलिक कार्योमां पण वारने माटे कांइ विशेष कह्युं न होय तो सौम्य वारो तथा रविवार पण जाणी लेवा.

हवे रोगीने माथे पाणी रेडवानुं मुहूर्त्त कहे छे.—

स्नानमुल्लाघनस्येष्टं वारयोर्नेन्दुशुक्रयोः ।
ब्राह्मपौष्णोत्तराश्लेषादित्यस्वातिमघासु च ॥ ६९ ॥

अर्थ—नीरोग थयेला माणसने प्रथम स्नान चंद्र अने शुक्रवारने वर्जीने बीजा वारोमां तथा रोहिणी, रेवती, त्रणे उत्तरा, अश्लेषा, पुनर्वसु, स्वाति अने मघाने वर्जीने बीजां नक्षत्रमां इच्छेलुं छे. पूर्णभद्रमां "बुध अने गुरुवार" तथा हर्षप्रकाशमां "शनिवारने" वर्जवानुं कह्युं छे.

हवे अभ्यंग स्नाननुं मुहूर्त्त कहे छे.—

अभ्यंगमर्ककुजजीवसितेषु पर्व-
संक्रान्तिविष्टिषु विवर्जितयोगयुग्मे ।
कुर्याद्वि २ षट् ६ भुजग ८ दिक् १० तिथि १५ शक्र १४ विश्व-
संख्ये तिथौ च न कदाचन भूतिकामः ॥ ७० ॥

अर्थ—रवि, मंगळ, गुरु अने शुक्रवारे तथा पर्वमां एटले सूर्य चंद्रनुं ग्रहण अने दीवाळी विगेरेमां, सूर्यनी संक्रांतिने दिवसे, वार्जित योग व्यतिपात अने वैधृति योगने दिवसे तथा बीज, छठ, आठम, दशम, पूनम, चौदश अने तेरश, ए तिथिने दिवसे आबादीने इच्छता पुरुषे कदापि अभ्यंग स्नान एटले तेल चोळवापूर्वक स्नान करवुं नहीं.

व्रण (व्याधि) थी मुक्त थयेलाने तो व्यतिपात अने विष्टिमां पण स्नाननो निषेध नथी. कह्युं छे के—

"रविमन्दारवारेषु विष्टौ वा व्यतिपातके ।
स्नातव्यं व्रणमुक्तेन शशिन्यशुभतारके ॥ १ ॥"

"रवि, शनि अने मंगळवारे विष्टि के व्यतिपातमां अशुभ तारा अने चंद्र होय तो-पण व्रणथी मुक्त थयेलाए स्नान (अभ्यंग स्नान) करवुं."

हवे नवुं अनाज खावानुं मुहूर्त्त कहे छे.—

भुञ्जीतान्नं नवं दत्त्वा शुभेऽह्नि ध्रुवचान्द्रभे ।
पुनर्वसुकरश्रोत्ररेवतीनां द्वयेषु च ॥ ७१ ॥

अर्थ—शुभ दिवसे रोहिणी, त्रणे उत्तरा अने मृगशिर नक्षत्रमां तेमज पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, श्रवण, धनिष्ठा, रेवती अने अश्विनी ए नक्षत्रोमां नवुं अनाज दान दइने खावुं.

राजादिक स्वामीना दर्शननुं मुहूर्त्त कहे छे.—

राजावलोकनं कुर्यान्मृदुक्षिप्रध्रुवोडुभिः ।
वासवश्रवणाभ्यां च सुधीः सर्वार्थसिद्धये ॥ ७२ ॥

अर्थ—मृदु, क्षिप्र तथा ध्रुव नक्षत्रमां तेमज धनिष्ठा अने श्रवण नक्षत्रमां बुद्धिमान् पुरुषे सर्व प्रयोजननी सिद्धिने माटे राजानुं दर्शनुं करवुं. राजाए करीने पोतपोताना स्वामी—उपरी समजवा.

हवे हस्ती तथा अश्वना कर्म विषे कहे छे.—

गजवाजिकर्म नेष्टं रौद्रे पूर्वो ३ त्तरा ३ विशाखासु ।
भरणित्रितयाश्लेषाद्वितयज्येष्ठाद्वयेषु तथा ॥ ७३ ॥

अर्थ—आर्द्रा, त्रणे पूर्वा, त्रणे उत्तरा, विशाखा, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, अश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा अने मूळ, ए नक्षत्रोमां हस्तीनुं कर्म एटले गजशांतिक, दांत कापवा विगेरे तथा वाजिकर्म एटले अश्वनी शांति, आरती विगेरे करवुं इष्ट—शुभ नथी. अर्थात् बीजां नक्षत्रोमां शुभ छे. अहीं सामान्य रीते कह्या छतां पण आ प्रमाणे विशेष जाणवुं.— "अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा अने स्वाति ए नक्षत्रोमां हस्तीनुं कर्म शुभ छे, तथा अश्विनी, मृगशिर, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, स्वाति, धनिष्ठा, शतभिषक् अने रेवती ए नक्षत्रोमां अश्वनुं कर्म शुभ छे."

हवे गायो विगेरेनां बंधनस्थानादिकनुं मुहूर्त्त कहे छे.—

गवां स्थानं च यानं च प्रवेशश्च न शस्यते ।
तिथौ भूताष्टदर्शाख्ये श्रोत्रचित्राध्रुवे च भे ॥ ७४ ॥

अर्थ—गायो तथा उपलक्षणथी हस्ती, अश्व, भेंस विगेरेनुं स्थान एटले बांधवानुं ठेकाणुं नवुं करवुं ते, यान एटले प्रथम चरवा लइ जवुं ते, तथा प्रवेश एटले गृहादिकमां प्रथम प्रवेश कराववो ते कार्यमां आठम, चौदश अने अमावास्या तथा श्रवण, चित्रा अने ध्रुव नक्षत्रो प्रशस्त–शुभ नथी.

हवे गायो विगेरेने वेचवानुं तथा खरीद करवानुं मुहूर्त्त कहे छे.—

क्रयविक्रयौ न हि गवां हस्तज्येष्ठाश्विनीधनिष्ठाभ्यः ।
अन्यत्र पौष्णवारुणराधादित्यद्वयेज्यश्च ॥ ७५ ॥

अर्थ—हस्त, ज्येष्ठा, अश्विनी, धनिष्ठा, रेवती, शतभिषक्, विशाखा, पुनर्वसु अने पुष्य, आटलां नक्षत्रो सिवाय बीजां नक्षत्रोमां गायो विगेरेनो क्रय विक्रय शुभ नथी. अर्थात् हस्तादिक नक्षत्रोमां ज शुभ छे. वळी लल्ल कहे छे के—

"तीक्ष्णेषु पशुं दमयेदारण्यं न ध्रुवेषु संग्राह्यम् ।
पशुपोषणं विधेयं चरेषु दीक्षारतं मृदुषु ॥ १ ॥"

"तीक्ष्ण नक्षत्रोमां पशुनुं दमन करवुं योग्य छे, ध्रुव नक्षत्रोमां अरण्यनां पशु ग्रहण करवां योग्य नथी, चर नक्षत्रोमां पशुनुं पोषण करवुं योग्य छे, अने मृदु नक्षत्रोमां दीक्षा तथा मैथुन योग्य छे."

हवे हळ जोडवानुं मुहूर्त्त कहे छे.—

हलस्य वाहनारंभं न हि कुर्वीत कर्हिचित् ।
पूर्वासु कृत्तिकासार्पज्येष्ठार्द्राभरणीषु च ॥ ७६ ॥

अर्थ—हळनुं प्रथम वहन त्रणे पूर्वा, कृत्तिका, अश्लेषा, ज्येष्ठा, आर्द्रा अने भरणीमां कदापि करवुं नहीं. अर्थात् बीजां नक्षत्रो शुभ छे.

क्षेत्र खेडवाना आरंभने दिवसे कयुं नक्षत्र ग्रहण करवा योग्य छे ? तेने माटे हळचक्र कहे छे.—

हलचक्रेऽर्कमुक्ताद्भात्त्रयं नेष्टं शुभं त्रयम् ।
त्यजेन्नव शुभाय स्युः कृषौ भानि त्रयोदश ॥ ७७ ॥

अर्थ—हळचक्रने विषे सूर्ये भोगवीने मूकी दीधेला नक्षत्रथी गणतां पहेलां त्रण नक्षत्रो (एटले दंडिकाना मूळमां रहेलां) अशुभ छे, त्यारपछीनां एटले हळ (लांगल)-नी नीचेनां त्रण शुभ छे. पछी दंडिकाना मुखनां त्रण तथा यूपना बन्ने छेडानां त्रण त्रण मळीने नव नक्षत्रो तजवा योग्य छे, अने बाकीनां एटले बे योत्रनां मळीने दश तथा

हळना मस्तकनां त्रण, ए तेर नक्षत्रो खेतीना आरंभमां सारां छे. (कुल अठ्यावीश नक्षत्रो लेवानां छे.)

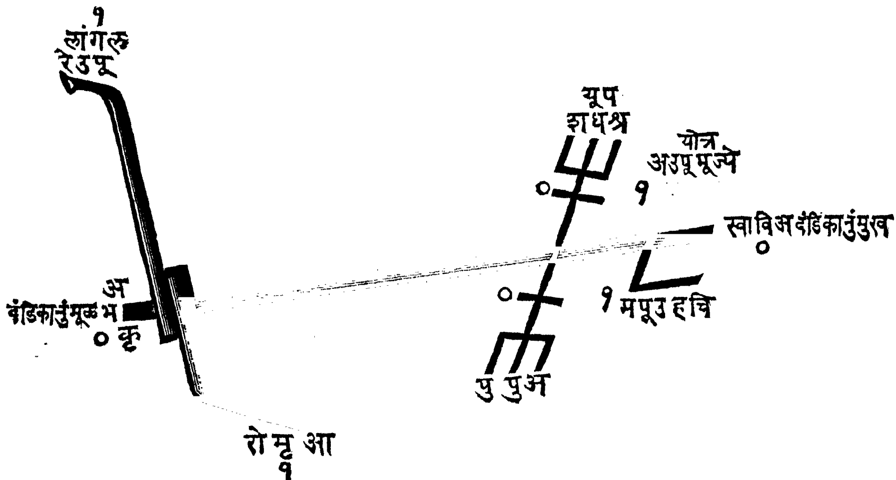
हळचक्रने स्थापन करवानी रीत आ प्रमाणे छे.—

"लांगलं दंडिका यूपं योत्रद्वयसमन्वितम् ।
हलं न्यस्य लिखेद्भानि रविणा भुक्तधिष्ण्यतः ॥ १ ॥
दंडिकाहलयूपानां द्विद्व्यन्तेषु त्रयं त्रयम् ।
योत्रयोः पञ्चके न्यस्य गणना चक्रलांगले ॥ २ ॥"

"लांगल, दंडिका, यूप अने बे योत्र सहित हळने स्थापन करीने सूर्ये भोगवेला (भोगवीने मूकी दीधेला) नक्षत्रथी आरंभीने अनुक्रमे नक्षत्रो मूकवां. तेमां दंडिका, हळ (लांगल) अने यूप ए त्रणेना ब बे छेडा उपर त्रण त्रण तथा बे योत्रमां पांच पांच नक्षत्रो मूकीने हळचक्रनी गणतरी करवी."

अहीं भरणीमां सूर्य रहेलो होय त्यारे अश्विनी नक्षत्र भोगवेलुं थयुं, तेथी अश्विनीने आरंभीने हळचक्रनी स्थापना करी छे.

हळचक्रनी स्थापना.



आनुं फळ नीचे प्रमाणे नरपतिजयचर्यामां कह्युं छे.—

"दंडिकास्थे गवां हानिर्यूपस्थे स्वामिनो भयम् ।
लक्ष्मीर्लांगलयोत्रस्थे क्षेत्रारंभदिनर्क्षके ॥ १ ॥"

---

१ चक्रमां १ ए शुभनी नीशानी छे अने ० ए अशुभनी नीशानी छे.

"क्षेत्र खेडवाना आरंभना दिवसनुं नक्षत्र जो दंष्ट्रिकामां रह्युं होय तो बळदनी हानि थाय, यूपमां रह्युं होय तो तेना स्वामी (खेडूत)ने भय थाय, अने लांगल के योत्रमां रह्युं होय तो लक्ष्मी प्राप्त थाय."

व्यवहारप्रकाशमां पण कह्युं छे के—

"पूष्णो भुक्तभतस्त्रयं न शुभदं श्रेष्ठं चतुर्थात्त्रयम् ,
न श्रेष्ठं त्रितयं च सप्तमभतो दिग्भाच्छुभं पञ्चकम् ।
सीरेऽग्र्यं त्रितयं न पञ्चदशतोऽप्यष्टादशात् पञ्चकं,
श्रेष्ठं नैव शुभं त्रयं च विकृतेः २३ षड्विंशतेः सत्त्रयम् ॥ १ ॥"

"हळचक्रमां सूर्ये भोगवेला नक्षत्रथी प्रथमनां त्रण शुभ नथी, त्यारपछी चोथाथी त्रण सारां छे, त्यारपछी सातमाथी त्रण सारां नथी, त्यारपछी दशमाथी पांच सारां छे, त्यारपछी पंदरमाथी त्रण सारां नथी, त्यारपछी अढारमाथी पांच सारां छे, त्यारपछी त्रेवीशमाथी त्रण सारां नथी, अने त्यारपछी छवीशमाथी त्रण सारां छे."

हवे बीज वाववानुं मुहूर्त्त कहे छे.—

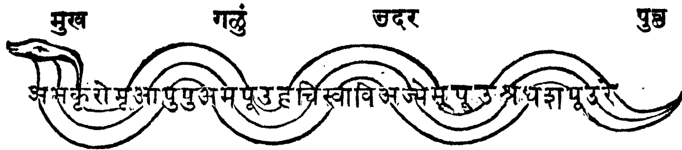
बीजोप्तौ प्रतिषिद्धानि पूर्वा भरणीद्वयम् ।
सार्पादित्यश्रुतिज्येष्ठाविशाखावारुणान्यपि ॥ ७७ ॥

अर्थ—बीज वाववामां पूर्वा ३, भरणी, कृत्तिका, अश्लेषा, पुनर्वसु, श्रवण, ज्येष्ठा, विशाखा अने शतभिषक्, आटलां नक्षत्रो निषिद्ध छे, एटले अशुभ छे. ते सिवायनां बीजां सर्वे शुभ छे; परंतु "उपर कहेला हळचक्रमां शुभ होय एवुं नक्षत्र लेवुं" एम रत्नमाला भाष्यमां कह्युं छे. विशेष आ प्रकारे छे.—

"स्थाप्योऽहिः सूर्यभुक्ताद्भात्रिनाड्येकान्तरक्रमात् ।
मुखे त्रीणि गले त्रीणि भानि द्वादश चोदरे ॥ १ ॥
वेदाः पुच्छे बहिः पञ्च दिनभाच्च फलं वदेत् ।
इवेरुमञ्जनमन्नाप्तिः क्रमान्निष्कणतेतिभीः ॥ २ ॥"

त्रिनाडीवाळो सर्प स्थापवो. तेमां सूर्ये भोगवीने मूकेला नक्षत्रथी आरंभीने अनुक्रमे एक एक आंतरावाळां नक्षत्रो मूकवां. तेमां मुखमां त्रण, कंठमां त्रण, उदरमां बार, पुच्छमां चार अने पांच बहार. पछी इष्ट दिवसे जे नक्षत्र होय तेने आश्रीने आ प्रमाणे फळ कहेवुं. तेमां जो इष्ट नक्षत्र मुखनां त्रण नक्षत्रमांथी होय तो ते दिवसे वावेलुं विष थाय एटले धान्यनी वृद्धि थाय नहीं, गळानां त्रणमांथी होय तो अंजन एटले अंगारनी वृष्टि थाय, उदरनां बारमांथी होय तो अन्ननी वृद्धि थाय, पुच्छनां चारमांथी होय तो कण रहितपणुं (बगसर) थाय एटले के अनाज पाके नहीं, अने बहारनां पांच नक्षत्रोमांथी होय तो मूषकादिक ईतिनो भय थाय.

त्रिनामीक सर्प स्थापना.—



आ प्रमाणे रत्नमाळा भाष्यमां कह्युं छे. तेमज व्यवहारप्रकाशमां पण कह्युं छे के—

"अर्कभुक्ताष्टमात्रीणि द्वादशाच्च त्रयं शुभम् ।
बीजोऽसौ षोडशात्रीणि एकविंशात्तथा त्रयम् ॥ १ ॥"

"सूर्ये भोगवेला नक्षत्रथी गणतां आठमा नक्षत्रथी त्रण नक्षत्रो शुभ छे, बारमाथी त्रण शुभ छे, सोळमाथी त्रण अने एकवीशमाथी त्रण सारां छे. अर्थात् आ बार नक्षत्रो शुभ छे. बीजां अशुभ छे."

कृषिने माटे ज नक्षत्र आश्री शुभाशुभ फळ कहे छे.—

कृषिरूचे सूर्यर्क्षादिषु ५कु १ रसे ६ न्दू १ ग्नि ३ भू १ रसे ६ न्दु १ युगैः ४ ।
असुख १ सुख २ मध्य ३ लाभा ४ रति ५ रति ६ मध्या ७ र्थ ८ दुःख ९ कृत्क्रमशः ७९

अर्थ—सूर्यना नक्षत्रथी आरंभीने प्रथमनां पांच नक्षत्रोमां कृषि करी होय तो ते कृषि असुखकारक छे, त्यारपछीना एक नक्षत्रमां करी होय तो ते सुखकारक छे, त्यारपछीनां छ नक्षत्रमां मध्यम छे, त्यारपछीनुं एक नक्षत्र लाभकारक छे, त्यारपछीनां त्रण नक्षत्रो अरति (असुख)कारक छे, त्यारपछीनुं एक नक्षत्र रति (सुख)-कारक छे, त्यारपछीनां छ नक्षत्रो मध्यम छे, त्यारपछीनुं एक लक्ष्मी आपनार छे, अने त्यारपछीनां चार दुःखकारक छे.

अहीं कृषिना चक्रमां शनि नरनी जेम नरनो आकार नथी कह्यो तोपण जाणवो, तेथी सूर्यना नक्षत्रथी आरंभीने मुख विगेरे नव अवयवोमां अठ्यावीश नक्षत्रो आ प्रमाणे स्थापवां.

कृषि नरनी स्थापना.—

मुखे	५	असुख
दक्षिण करे	१	सुख
पादद्वये	६	मध्यम
वाम करे	१	लाभ
उदरे	३	अरति

१ भरणी नक्षत्रमां रहेला सूर्यनी कल्पना करी छे, तेथी अश्विनी भुक्त थयुं, माटे अश्विनीथी आरंभ कर्यो छे.

मस्तके	१	रति
नेत्रद्वये	६	मध्यम
गुदे	१	लक्ष्मी
गुह्ये	४	दुःख

जळाशय नवुं करवानुं मुहूर्त्त कहे छे.—

जलाशयं न कुर्वीताश्विनीभरणीमिश्रभैः ।
आजपादश्रुतिस्वातिभाग्यदारुणभैस्तथा ॥ ७० ॥

अर्थ—वाव, कूवा, तळाव विगेरे जळाशय खोदाववानुं मुहूर्त्त अश्विनी, भरणी, मिश्र (विशाखा अने कृत्तिका), पूर्वाभाद्रपद, श्रवण, स्वाति, पूर्वाफाल्गुनी अने दारुण एटले अश्लेषा, ज्येष्ठा, मूळ अने आर्द्रा, ए नक्षत्रोमां करवुं नहीं.

हवे वृक्ष वाववानुं मुहूर्त्त कहे छे.—

न वृक्षरोपणं कुर्यात्क्रूरार्द्रादित्यवह्निभैः ।
अश्लेषामारुतज्येष्ठाधनिष्ठाश्रवणैरपि ॥ ७१ ॥

अर्थ—क्रूर नक्षत्रो (त्रण पूर्वा, भरणी अने मघा), आर्द्रा, पुनर्वसु, कृत्तिका, अश्लेषा, स्वाति, ज्येष्ठा, धनिष्ठा अने श्रवण, आ नक्षत्रोमां वृक्षनुं आरोपण करवुं नहीं.

हवे नृत्य करवानुं तथा शीखवानुं अने मदिरापाननुं मुहूर्त्त कहे छे.—

नृत्तं मैत्रे स्याद्धनिष्ठाद्वये वा,
हस्तज्येष्ठापुष्यपौष्णोत्तरे ३ वा ।
संधानाद्यं नाचरेत् किं च मुक्त्वा,
धिष्ण्यं क्रूरं दारुणं वारुणं वा ॥ ७२ ॥

अर्थ—अनुराधा, धनिष्ठा, शतभिषक्, हस्त, ज्येष्ठा, पुष्य, रेवती अने त्रण उत्तरा, आटलां नक्षत्रमां नृत्य (नाटक) करवानो तथा शीखवानो आरंभ कराय छे. तथा भरणी, त्रण पूर्वा, मघा, अश्लेषा, ज्येष्ठा, मूळ, आर्द्रा अने शतभिषक्, आ नक्षत्रो सिवाय बीजां नक्षत्रोमां मदिरा विगेरेनुं आचरण (पान) न करवुं.

आ त्रीजा विमर्शमां आटलां उपयोगी कार्योना नामपूर्वक तेमनां मुहूर्त्तो कह्यां. आ सिवाय बीजां पण शुभाशुभ कार्यो छे, तेमनुं संक्षेपथी वर्णन पूर्वभद्रना मतने अनुसारे करीए छीए.—

"रित्ततिहि असुहजोगे कूरविलग्गाइ कूरवारे अ ।
आयरह कसिणपक्खे असुहे अन्नत्थ विवरीअं ॥ १ ॥"

अशुभ कार्यो रिक्ता तिथिमां, अशुभ योगमां, क्रूर लग्नादिकमां, क्रूर वारमां अने कृष्णपक्षमां करवा लायक छे, अने अन्यत्र एटले शुभ कार्योमां एथी विपरीत जाणवुं.

'जे लग्न क्रूर छ वर्गवाळुं, क्रूर ग्रहे अध्यास करेलुं, अथवा क्रूर ग्रहे जोयेलुं होय तेमज (आदि शब्द होवाथी) तीक्ष्ण, उग्र अने मिश्र नक्षत्रो क्रूर ग्रहे अध्यास करेलां होय, अथवा पात अने उपग्रहादिकवडे हणायेलां होय तेवा समये अशुभ कार्य करवामां आवे छे. मूळ गाथामां "कूरवारे अ" अहीं च शब्द होवाथी क्रूर वारमां, क्रूर होरामां तथा क्रूर करण एटले विष्टि विगेरेमां, ए रीते जाणवुं. अन्यत्र विपरीत जाणवुं. एटले के शुभ कार्यमां तिथि विगेरे सर्वे शुभ ज लेवानां छे. लग्न पण शुभ छ वर्गवाळुं, शुभ ग्रहोए अध्यासित अने शुभ ग्रहोए जोयेलुं लेवुं. नक्षत्रो पण कार्यने अनुसारे चर, लघु, मृदु अने ध्रुव तथा सौम्य ग्रहोए अध्यासित लेवानां छे. आ कार्योमां लग्ननो कांइ आग्रह नथी, केमके—"लग्नं विवाहे दीक्षायां प्रतिष्ठायां च शस्यते" "विवाहमां, दीक्षामां अने प्रतिष्ठामां लग्न लेवुं शुभ छे." एम आगल कहेवाना छे, परंतु जेओ आ उपरनां शुभ कार्योमां पण लग्ननो आदर करवा इच्छे छे, तेमने माटे ज आ (त्रीजा) विमर्शमां मौंजी-बंधनथी आरंभीने अग्निना आधान पर्यंतनां कार्योमां तथा आवता (चोथा) विमर्शमां यात्रामां अने गृहनुं निवेशन तथा प्रवेश करवामां सूत्रकारे ज (मूळ ग्रंथकारे ज) लग्ननुं बळ लेवानुं कह्युं छे, अने जे कार्योमां लग्ननुं बळ लेवानुं कह्युं नथी, तेओमां आ प्रमाणे जाणवुं.—

प्रथम गर्भाधान विषे कहे छे.—

शुक्रेज्ययोर्बलवतोः शेषेष्वबलेषु पुंप्रसवयोगे ।
द्विपदे लग्ने शीर्षोदयिनि च गुरुशुक्रयुतदृष्टे ॥ १ ॥
यद्वा त्रिकोणकेन्द्रस्थितयोरनयोः स्वजन्मलग्ने वा ।
लग्नोपचये चन्द्रे ऋतौ सुतार्थी व्रजेद्भार्याम् ॥ २ ॥

शुक्र अने गुरु बळवान् होय, बीजा ग्रहो बळवान् न होय, पुंप्रसव नामनो योग होय, लग्न बे पादनुं (मिथुन कन्या तुला धन कुंभ) तथा शीर्षोदयी (मीन) होय अने गुरु तथा शुक्र सहित होय अथवा गुरु अने शुक्र देखता होय अथवा गुरु अने शुक्र त्रिकोण के केन्द्रमां रह्या होय अथवा पोताना जन्मना लग्नमां रह्या होय, अने चंद्र लग्नमां के उपचयस्थानमां रह्यो होय त्यारे पुत्रना अर्थी पुरुषे ऋतुना दिवसोमां (प्रथमना चार दिवस वर्जीने) स्त्री प्रत्ये गमन करवुं.

पुंप्रसव नामनो योग जातकमां आ प्रमाणे कह्यो छे.—

विषमर्क्षे विषमनवांशसंस्थिता गुरुशशांकलग्नार्काः ।
पुंजन्मकराः समभेषु योषितां समनवांशगताः ॥ १ ॥

बलिनौ विषमेऽर्कगुरू नरं स्त्रियं समगृहे कुजेन्दुसिताः ।
लग्नाद्विषमोपगतः शनैश्चरः पुत्रजन्मकरः ॥ २ ॥

पुरुषना गुरु, चंद्र अने लग्ननो सूर्य विषम नक्षत्रमां अने विषम नवांशमां रहेला होय तथा स्त्रीना (गुरु, चंद्र अने लग्ननो सूर्य) सम नक्षत्रमां अने सम नवांशमां रह्या होय तो ते पुत्रना जन्मने करनारा छे. अर्थात् आ पुंप्रसव योग कहेवाय छे. (१) पुरुषने लग्नथी विषम स्थाने रहेला सूर्य अने गुरु बळवान् छे, अने स्त्रीने सम स्थानमां रहेला मंगळ, चंद्र अने शुक्र बळवान् छे, (अर्थात् पुत्रने उत्पन्न करनारा छे,) अने लग्नथी विषम स्थाने रहेलो शनि पण पुत्रना जन्मने करनारो छे.

। इति गर्न्नाधानम् । १

हवे सीमंत विषे कहे छे.—

सीमन्तकर्म पुरुषे लग्नेऽंशे च त्रिकोणकेन्द्रस्थे ।
जीवे त्रिकोणकेन्द्रव्ययाष्टमेष्वशुजरहितेषु ॥ ३ ॥

पुरुष लग्नमां (विषम लग्नमां) तथा पुरुष (विषम) नवांशमां, त्रिकोणमां के केंद्र-स्थानमां गुरु रह्यो होय तथा त्रिकोणमां, केंद्रमां, बारमा के आठमा स्थानमां कोइ अशुज ग्रहो न होय त्यारे सीमंतकर्म कराय छे.

। इति सीमन्तः । २

हवे जातकर्म तथा नाम करण विषे कहे छे.—

गुरौ जृगौ वा केन्द्रस्थे मिश्रतीक्ष्णोग्रवर्जिजे ।
जातकर्म शिशोः कुर्यान्नामविन्यसनं तथा ॥ ४ ॥

मिश्र, तीक्ष्ण अने उग्र नक्षत्र वर्जित अन्य नक्षत्रमां, तथा गुरु अथवा शुक्र होय त्यारे बाळकनुं जातकर्म तथा नाम करण थाय छे.

। इति जातकर्म ३ नामस्थापने ४ ।

हवे कर्णवेधनुं मुहूर्त्त कहे छे.—

कर्णवेधः शुजे लग्ने सौम्यग्रहविलोकिते ।
क्रूरोज्झिते च लाजत्रिसंस्थैः सौम्यग्रहैः शुजः ॥ ५ ॥

सौम्य ग्रहोए जोयेला तथा क्रूर ग्रहे रहित एवा शुज लग्नमां तथा सौम्य ग्रहो अगीयारमा के त्रीजा स्थानमां रह्या होय त्यारे बाळकनो कर्णवेध थाय छे.

। इति कर्णवेधः । ५

हवे अन्न प्राशननुं मुहूर्त्त कहे छे.—

अन्नप्राशनलग्ने मूर्त्त्यादिस्थे ग्रहे फलमेवम् ।

क्षीणे चन्द्रे भिक्षुः संपूर्णे सत्रदश्च यज्वा स्यात् ।
ज्ञेज्यसितैर्लग्नस्थैर्नीरुक् क्रूरैर्महाव्याधिः ॥ ६ ॥
निधनत्रिकोणकेन्द्रान्त्यगैः फलं तद्वदेव तनुगेषु ।
लग्नात् षष्ठाष्टमगश्चन्द्रोऽनिष्टः शुभयुतोऽपि ॥ ७ ॥

अन्न प्राशनना लग्नमां प्रथमादिक स्थानमां रहेला ग्रहोनुं फळ आ प्रमाणे छे.—लग्नमां क्षीण चंद्र होय तो ते (बाळक) भिक्षुक थाय, संपूर्ण चंद्र होय तो दातार तथा यज्ञ करनार याज्ञिक थाय, लग्नमां बुध, गुरु अने शुक्र रह्या होय तो नीरोगी थाय, क्रूर ग्रह रह्या होय तो महाव्याधि थाय, सर्वे ग्रहो (कोइ पण ग्रह) आठमे स्थाने, त्रिकोणमां, केंद्रमां के बारमा स्थानमां रह्या होय तो तेनुं फळ तनु भुवन (लग्न) नी जेवुं ज जाणवुं. तथा लग्नथी छठे तथा आठमे स्थाने रहेलो चंद्र शुभ ग्रहे युक्त होय तोपण ते अनिष्ट छे.

। इति अन्नप्राशनम् । ६

हवे क्षौरनुं मुहूर्त्त कहे छे.—

क्षौरं शुभकरमिष्टैः केन्द्रस्थैर्नो शुभं ग्रहैः क्रूरैः ।
द्वादशधनत्रिकोणाष्टगैर्भवेदसुखवृद्धिकरम् ॥ ८ ॥

केंद्रस्थानमां सौम्य ग्रहो रह्या होय तो तेमां क्षौर कराववुं शुभकारक छे, अने क्रूर ग्रहो केन्द्रमां रह्या होय तो ते अशुभ छे. तथा सर्व ग्रहो बारमुं, बीजुं, त्रिकोण अने आठमुं, आटलां स्थानमां रह्या होय तो असुख (दुःख)नी वृद्धि करे छे.

। इति क्षौरम् । ७

हवे चौलकर्मनुं मुहूर्त्त कहे छे.—

चूडा शुभाय क्षुरकर्मभेषु, सौम्येषु केन्द्रे म्रियते कुजेऽस्त्रात् ।
क्षीणे क्षयायोडुपतौ ज्वराय, भानुः सुतस्तस्य च पंगुतायै ॥ ९ ॥

क्षौरकर्मनां नक्षत्रोमां तथा सौम्य ग्रहो केन्द्रस्थानमां रह्या होय ते वखते चूडाकर्म शुभ छे, केंद्रस्थानमां मंगळ रह्यो होय तो शस्त्रथी मरण थाय, केंद्रमां क्षीण चंद्र रह्यो होय तो ते क्षय (नाश)ने माटे छे, केंद्रमां सूर्य रह्यो होय तो ते ज्वरने माटे छे, अने केंद्रमां शनि रह्यो होय तो ते पंगुपणानी प्राप्तिने माटे छे.

। इति चौलकर्म । ८

हवे विद्या तथा शिल्पना आरंभनुं मुहूर्त्त कहे छे.—

सौम्यैर्दशमोपगतैर्लग्ने चन्द्रात्मजे गुरौ वापि ।
विद्याशिल्पारंभौ जी[illegible] चन्द्रे ॥ १० ॥

सौम्य ग्रहो दशमा स्थानमां रह्या होय, बुध अथवा गुरु लग्नमां रह्या होय, तथा

गुरु के बुधना वर्गमां चंद्र रह्यो होय त्यारे विद्या अने शिल्पनो आरंभ करवो शुभ छे.

॥ इति विद्या ए शिल्पारंभौ १० ॥

हवे नाटक तथा काव्यना आरंभ विषे कहे छे.—

बुधे विलग्ने शशिनि ज्ञराशौ गुरुवीक्षिते ।
हिबुकस्थैः शुभैर्नृत्यं काव्यं चारभ्यते बुधैः ॥ ११ ॥

लग्नमां बुध रह्यो होय, बुधनी राशिमां चंद्र रह्यो होय अने तेना पर गुरुनी दृष्टि पडती होय तथा शुभ ग्रहो चोथा स्थानमां रह्या होय त्यारे डाह्या पुरुषो नृत्य तथा काव्यनो आरंभ करे छे.

॥ इति नाट्य ११ काव्यारंभौ १२ ॥

हवे मंत्रादिक ग्रहण करवानो समय कहे छे.—

शीतांशौ बुधराशिस्थे शुभेषूदयवर्त्तिषु ।
मंत्रादिग्रहणं कार्यं हित्वा पापग्रहोदयम् ॥ १२ ॥

चंद्र बुधनी राशिमां रह्यो होय, शुभ ग्रहो उदयमां वर्त्तता होय, अने पाप ग्रहनो उदय न होय त्यारे मंत्रादिक ग्रहण करवुं.

॥ इति मंत्रादिग्रहणं १३ ॥

हवे वेतालमंत्रादिकना साधवानुं मुहूर्त्त कहे छे.—

पित्र्यैशयाम्यमूलेन्दुभेषु शुद्धेऽष्टमेऽपि च ।
वेतालसिद्धिः पाताले भृगौ ज्ञे कुंभलग्नगे ॥ १३ ॥

मघा, भरणी, मूल अने मृगशिरमां आठमुं स्थान शुद्ध होय त्यारे तथा चोथा स्थानमां शुक्र होय अने कुंभ लग्नमां बुध रह्यो होय त्यारे वेताल मंत्रादिक सिद्ध थाय छे.

॥ इति वेतालमंत्रादिसाधनम् ॥ १४

हवे धर्मना आरंभनुं तथा नंदी मांडवानुं मुहूर्त्त कहे छे.—

हिबुकेऽर्के गुरौ लग्ने धर्मारंभो रवेर्दिने ।
गुरुज्ञलग्नवर्गे वा शुभारंभास्तयोर्बले ॥ १४ ॥

सूर्य चोथा स्थानमां रह्यो होय अने लग्नमां गुरु रह्यो होय त्यारे रविवारने दिवसे धर्मनो आरंभ करवो, अथवा गुरु, बुध अने लग्नना वर्गमां अथवा ते (रवि अने गुरु)-नुं बळ होय त्यारे शुभ कार्यना आरंभ करवा.

॥ इति धर्मारंभ १५ नन्द्यादिके ॥ १६

हवे दीक्षानुं मुहूर्त्त कहे छे.—

मोक्षार्थिनां च दीक्षा स्थिरोदये कर्मगे त्रिदशपूज्ये
पापैर्धर्मप्राप्तैर्बलहीनैः प्रव्रजितयोगे ॥ १५ ॥

स्थिर लग्नना उदयमां गुरु दशमे स्थाने रह्यो होय, पाप ग्रहो नवमा स्थानमां रह्या होय अने बळहीन (निर्बळ) होय तथा प्रव्रजित योग होय त्यारे मोक्षना अर्थीए दीक्षा ग्रहण करवी. चार, पांच के तेथी पण वधारे ग्रहो एक स्थानमां रह्या होय त्यारे प्रव्रजित योग कहेवाय छे. तेमज जन्मवखते जे राशिमां चंद्र होय, ते राशिना स्वामीने बीजा ग्रहो जोता न होय, पण ते (स्वामी) शनिने जोतो होय, त्यारे प्रव्रजित योग थाय छे. अथवा तो ते राशिना स्वामीने शनि जोतो होय त्यारे पण प्रव्रज्या योग कहेवाय छे.

। इति दीक्षा । १७

हवे आयुष्यनां कार्यो आश्री कहे छे.—

पूर्णे चन्द्रे वेश्म ४ गेऽर्केऽम्बर १० स्थे, जीवे लग्ने वाक्पतेर्वासरे च ।
श्रीमन्त्यायुष्याणि कार्याणि कार्याण्युक्तस्तस्मिन्नेव राज्याभिषेकः ॥ १६ ॥

परिपूर्ण चंद्र चोथा स्थाने रह्यो होय, सूर्य दशमे स्थाने रह्यो होय अने गुरु लग्नमां रह्यो होय त्यारे गुरुवारने दिवसे लक्ष्मीवाळां आयुष्यनां कार्यो करवां, अने आ मुहूर्त्तमां ज राज्याभिषेक करवानुं पण कह्युं छे.

। इति आयुष्यकार्याणि । १८

हवे वस्त्र ग्रहण करवानुं मुहूर्त्त कहे छे.—

वस्त्रग्रहणं कुर्यात् क्रूरैस्त्यक्ताष्टमान्तिमैर्लग्ने ।
उपचयभेषु च सद्भिर्दृष्टेष्विन्दावुपचयस्थे ॥ १७ ॥

क्रूर ग्रहो आठमा के बारमा स्थानमां रहेला न होय, लग्नमां अने उपचयस्थानमां रहेला ग्रहो उपर शुभ ग्रहोनी दृष्टि पडती होय तथा चंद्र उपचयस्थानमां रह्यो होय त्यारे नवा वस्त्रनुं ग्रहण करवुं.

। इति वस्त्रव्यापारः । १९

औषधनो आरंभ करवा विषे कहे छे.—

औषधसेवा विहिता शुभाय बलवत्सु सौम्यखेटेषु ।
निधनान्त्यसप्तमरिपुत्यक्ते क्रूरे विना रिष्टम् ॥ १८ ॥

सौम्य ग्रहो बळवान् होय, क्रूर ग्रहो आठमे, बारमे, सातमे अने छठे स्थाने रह्या न होय, तथा रिष्ट योग न होय त्यारे औषधनुं सेवन कर्युं होय तो ते शुभकारक छे. (रिष्ट योगो जातकमां कह्या छे, ते जाणवा.)

। इति औषधसेवा । २०

हवे रोगथी मुक्त थयेलाने स्नान करवानुं मुहूर्त्त कहे छे.—

लग्ने चरे केन्द्रगते च जीवे, क्रूरे दिने रिक्ततिथौ कृशेन्दौ ।
केन्द्रत्रिकोणोपगतैश्च पापैः, स्नानं हितं रोगविमुक्तिकाले ॥ १९ ॥

चर लग्नमां केंद्रमां गुरु रह्यो होय, क्रूर वार होय, रिक्ता तिथि होय, चंद्र कृश होय अने पाप ग्रहो केंद्र अने त्रिकोण (नवमुं अने पांचमुं स्थान)मां होय त्यारे रोगथी मुक्त थयेलाने स्नान करवुं हितकारक छे.

। इति नीरुक्स्नानम् । २१

नृपादिकनी सेवा करवानुं मुहूर्त्त कहे छे.—

भौमे दिवाकरे वा दशमायगते शुभग्रहविलग्ने ।
विद्यायुधोपजीवी योनिवशादाश्रयेदीशम् ॥ २० ॥

मंगळ अथवा रवि दशमा के अगीयारमा स्थानमां होय अने लग्नमां कोइ शुभ ग्रह होय त्यारे प्रथम कहेला योनिवैरनो त्याग करीने विद्याजीवी तथा शस्त्रजीवीए स्वामीनो आश्रय करवो.

। इति नृपादिसेवा । २२

हवे पशुकर्म विषे कहे छे.—

लग्नस्थिते शुभे शुद्धेऽष्टमे धिष्ण्ये स्वयोनिके ।
रक्षा वृद्धिः क्रयश्चापि पशूनां शोभनो भवेत् ॥ २१ ॥

लग्नमां शुभ ग्रह होय अने आठमुं स्थान शुद्ध होय (कोइ ग्रहो न होय) त्यारे पोतानी (पशुनी) योनिवाळां ज नक्षत्रमां पशुओनुं रक्षण, वृद्धि अने क्रय पण शुभकारक थाय छे.

। इति पशुकर्म । २३

हवे खेतीकर्म तथा बीज अने वृक्षना वाववा विषे कहे छे.—

दौर्बल्ये पापानां शुक्रेन्दुबले गुरौ विलग्नस्थे ।
चन्द्रे जलराशिस्थे कुर्यात्कृषिकर्मबीजवृक्षोप्तीः ॥ २२ ॥

पाप (क्रूर) ग्रहो दुर्बल होय, शुक्र अने चंद्र बळवान् होय, गुरु लग्नमां रह्यो होय अने चंद्र जळ राशि (कर्क, मकर, कुंभ, मीन)मां रह्यो होय त्यारे कृषिनुं कर्म, बीजनुं अने वृक्षनुं आरोपण करवुं शुभ छे.

। इति कृषिकर्म २४ बीज २५ वृक्षोप्तयः २६ ।

जळाशयोनां कार्य करवा विषे कहे छे.—

तोयानां कर्माणि प्रोक्तानि बुधोद्गमे गुरोरुदये ।
चन्द्रे जलचरराशौ ख १० स्थसिते दुर्बलैरशुभैः ॥ २३ ॥

बुध अने गुरुनो उदय होय, चंद्र जळचर राशिमां रह्यो होय, शुक्र दशमा स्थानमां

रह्यो होय अने अशुभ ग्रहो दुर्बळ होय त्यारे वाव, कूवा, तळाव विगेरे जळाशयोनां कार्यो करवां शुभ छे.

। इति जलाश्रयादि । २७

दुकान मांडवानुं मुहूर्त्त कहे छे.—

शुभदा यद्व्योमचरैः सौम्यैर्लग्नाभ्रवित्तलाभगतैः ।
क्रूरैर्व्ययाष्टवर्जे विपणिः सेन्दौ सिते लग्ने ॥ २४ ॥

सौम्य ग्रहो लग्नमां, दशमा, बीजा अने अगीयारमा स्थानमां होय, क्रूर ग्रहो बारमा के आठमा स्थानमां न होय अने चंद्र तथा शुक्र लग्नमां रह्या होय त्यारे नवी दुकान मांडवी शुभदायक छे.

। इति विपणिः । २८

धनने निधानमां मूकवुं अथवा कोइने देवुं ए विगेरे धनना प्रयोगनुं मुहूर्त्त कहे छे.—

वित्तप्रयोगकालश्चरोदये पुत्रधर्मकेन्द्रेषु ।
शुभयुक्तेष्वथ निधने ग्रहरहिते शोभनः प्रोक्तः ॥ २५ ॥

चर लग्नमां पांचमुं, नवमुं अने केन्द्रस्थान शुभ ग्रहोए युक्त होय अने आठमुं स्थान ग्रह रहित होय त्यारे वित्त (धननो) प्रयोग (न्यासादिक) शुभ कह्यो छे.

। इति वित्तप्रयोगः । २९

हवे करीयाणांना क्रय विक्रयनुं मुहूर्त्त कहे छे.—

दशमैकादशे लग्ने वित्तकेन्द्रत्रिकोणगैः ।
शुभैः पण्यस्य कर्मोक्तं वर्जयित्वा घटोदयम् ॥ २६ ॥

पोतानी जन्मराशिथी अथवा जन्मलग्नथी दशमे, अगीयारमे लग्ने, बीजे, केंद्रस्थाने अने त्रिकोण एटले नवमे तथा पांचमे स्थाने शुभ ग्रहो रह्या होय त्यारे पण्य-भांड (करीयाणां)नो क्रय विक्रय शुभ छे, परंतु एक कुंभ लग्ननो त्याग करवो. (कुंभ लग्न न होवुं जोइए.)

। इति क्रयविक्रयौ । ३०

हवे रसना संग्रह करवा विषे तथा चोरी करवा विषे कहे छे.—

चन्द्रोदये तद्दिवसे केन्द्रेज्ये रससंग्रहः ।
स्तेयस्य समयो लग्ने बुधे भौमे नभःस्थिते ॥ २७ ॥

लग्नमां चंद्र रह्यो होय अने गुरु केंद्रस्थानमां रह्यो होय त्यारे रस (घी, तेल विगेरे)नो संग्रह करवो शुभकारक छे. लग्नमां बुध होय अने दशमा स्थानमां मंगळ होय त्यारे चोरी करवाथी लाभ थाय छे.

। इति रससंग्रह ३१ स्तेये ३२ ।

हवे सामान्य रीते कहे छे.—

व्ययनैधनसंशुद्धौ सदृष्टोपचयोदये ।
सर्वारंभेषु संसिद्धिश्चन्द्रे चोपचयस्थिते ॥ २८ ॥

बारमुं अने आठमुं स्थान शुद्ध होय (कोइ ग्रहो न होय) तथा इष्ट पुरुषना जन्मलग्नथी अथवा जन्मनी राशिथी उपचयस्थानमां एटले ३–६–१० अने ११ मा स्थानमां रहेली राशिओ लग्नमां रही होय तथा उपचयस्थानमां चंद्र रह्यो होय त्यारे आरंभेलां सर्व शुभ कार्यनी सिद्धि थाय छे.

प्रायः शुभा न शुभदा निधनव्ययस्था,
धर्मान्त्यधीनिधनकेन्द्रगताश्च पापाः ।
सर्वार्थसिद्धिषु शशी न शुभो विलग्ने
सौम्यान्वितोऽपि निधनं न शिवाय लग्नम् ॥ २९ ॥

आठमा अने बारमा स्थानमां रहेला शुभ ग्रहो पण प्राये करीने शुभ फळने देनारा नथी, तथा नवमा, बारमा, पांचमा, आठमा अने केंद्र (१–४–७–१०)स्थानमां रहेला क्रूर ग्रहो पण शुभदायक नथी. तथा चंद्र शुभ ग्रहो सहित होय तो पण ते लग्नमां सर्व कार्यनी सिद्धमां शुभकारक नथी. तेमज आठमुं स्थान लग्न होय एटले के इष्ट पुरुषना जन्मलग्नथी अथवा जन्मराशिथी आठमुं लग्न होय तो ते कोइ पण कार्यमां लेवा योग्य नथी.

हवे क्रूर कार्यने आश्रीने कहे छे.—

अभिचारविधिर्बलवांश्चन्द्रे क्रूरस्य योगवर्गस्थे ।
रिपुनिधने लग्नस्थे रिष्टयोगे बुधे बलिनि ॥ ३० ॥

हणवाने इच्छेला शत्रुना जन्मलग्नथी अथवा जन्मराशिथी आठमी राशि लग्नमां रही होय, रिष्ट योगमां बुध बळवान् होय अने चंद्रने क्रूर ग्रहनो योग होय अथवा क्रूर ग्रहना वर्गमां चंद्र रहेलो होय त्यारे [1]अभिचारनो प्रयोग बळवान् (सिद्धिकारक) छे. इत्यादि.

आ द्वारनां सर्व कार्योमां जेटलां निरवद्य (पाप रहित) कार्यो छे, तेटलां कार्यो शुभने इच्छता पुरुषोए आदरवा योग्य छे, अने जेटलां कार्यो धर्मने बाधा करनारां छे, तेटलां पापथी भय पामनार पुरुषोए त्याग करवा योग्य छे. तथा पाप व्यापारमां प्रवर्तेला पुरुषो पासे तेवां कार्योनी प्ररूपणा पण करवी नहीं.

। इति कार्यद्वारम् । ७

॥ इति श्रीमति आरंभसिद्धिवार्त्तिके कार्यपरीक्षात्मकस्तृतीयो विमर्शः ॥ ३

---

१ मंत्रादिकना प्रयोगथी शत्रुनो नाश करवो ते.

। अथ चतुर्थो विमर्शः ।

। अथ गमद्वारम् । ८

हवे गमद्वार कहे छे, तेमां प्रथम प्रस्थान विधि कहे छे.—

प्रस्थानमन्तरिह कार्मुकपञ्चशत्याः,
प्राग्धनुर्दशकतः परतश्च भूत्यै ।
सामान्य १ माण्डलिक २ भूमिभुजां क्रमेण,
स्यात् पञ्च १ सप्त २ दश ३ चात्र दिनानि सीमा ॥ १ ॥

अर्थ—प्रस्थान एटले यात्राना मुहूर्त्तने साधवा माटे आगळथी जे करवामां आवे छे ते (पस्तानुं), आ प्रस्थान दश धनुषथी उपरांत अने पांचसो धनुषनी अंदर, एटलुं दूर करवाथी शुभ छे. तेना समयनी सीमा सामान्य माणसोने १, मांडलिक राजाने २ तथा पृथ्वीपतिने अनुक्रमे पांच, सात अने दश दिवसनी छे.

यात्रामां जे तिथि, वार अने नक्षत्र कहेवामां आवशे, ते ज आ प्रस्थानमां पण जाणवां. ते प्रस्थान राजा तथा आचार्य विगेरेए पोतानी जाते ज करवानुं छे. तेमां छत्र, धनुष, खड्ग, शय्या, आसन, आयुध, बख्तर, दर्पण विगेरे प्रस्थाननी वस्तुओ तथा अक्ष-माळा अने पुस्तक विगेरे वस्तुओ चंदनपूजादिक पूर्वक स्थापवी. श्वेत वस्त्रादिक पण स्थापवां, परंतु कालुं वस्त्र, जीर्ण वस्त्र विगेरे स्थापवुं नहीं. तेमज शंख, मदिरा, औषध, लवण, तेल, गोळ, जोडा विगेरे तथा बीजी पण जीर्ण वस्तुओ स्थापवी नहीं. ते प्रस्थान नजीकमां नजीक दश धनुष उपर अने वधारेमां वधारे पांचसो धनुष सुधीमां मूकवुं. अहीं चोवीश आंगळनो एक हाथ, अने चार हाथनुं एक धनुष ए धनुषनुं प्रमाण जाणवुं. वृद्ध परंपरा एवी छे के प्रस्थान दक्षिण बाजुए मूकवुं. आ प्रस्थान पृथ्वीपतिने—मोटा राजाने दश दिवस सुधी पहोंचे छे, एटले के प्रस्थान कर्या पछी एक स्थान दश दिव-सनुं उल्लंघन न करवुं, पण दश दिवसनी अंदर आगळ प्रयाण करवुं. ते ज प्रमाणे मांड-लिक राजाए सात दिवसनी अंदर प्रयाण करवुं, अने बीजा सामान्य मनुष्योए पांच दिवसनी अंदर प्रयाण करवुं. कदाच कोइ कारणथी वधारे वखत एक स्थाने रहेवुं पडे अथवा प्रस्थाननी वस्तु राखी मूकवी पडे तो फरीथी बीजुं मुहूर्त्त लइने प्रस्थान करेला स्थाननी आगळ चालवुं, पण प्रथमना मुहूर्त्तना बळथी चालवुं नहीं.

विशेष ए छे जे कोइक स्थाने एटले शत्रु राजादिकना स्थाने जवाना उद्देश (इरादा)-थी ते स्थान प्रत्ये सारा लग्न मुहूर्त्ते चालेला राजा विगेरे घणां प्रयाणो चालीने पछी

(वचमां) कोइ एक प्रदेशमां वधारे मुदत रहे तो ते बाबतमां अन्यना मतो आ प्रमाणे छे.—"जो कोइ स्थाने त्रण दिवस सुधी रहे तो पछी आगळ सारा मुहूर्त्तमां बळ लइने ज चालवुं." एम गौतम कहे छे. "पांच दिवस रहे तो फरीथी मुहूर्त्त लेवुं." एम अत्रि कहे छे. "सात दिवस रहे तो बीजुं मुहूर्त्त लेवुं." एम वामन कहे छे. लल्ल पण कहे छे के—

"योधानामवि(नु)रोधेन तोयेन्धनवशेन वा ।
त्र्यादिरात्रोषितां सेनां पुनर्भद्रेण योजयेत् ॥ १ ॥"

"योधाओना अनुसरवावडे करीने (तेओनी इच्छाथी) अथवा जळ अने इंधनना कारणथी त्रण, पांच के सात दिवस सुधी रहेली सेनाने फरीथी कल्याण साथे जोडवी एटले के प्रयाण वखते फरीथी शुभ मुहूर्त्त लेवुं."

परंतु आ सर्वे मतो अयोग्य छे, केमके "प्रथम सारुं मुहूर्त्त निश्चय करीने चाले पछी घेर न आवे त्यांसुधी तेनुं ते ज लग्न-मुहूर्त्त चाले छे एम घणानो मत छे." ए प्रमाणे रत्नमाला भाष्यमां कह्युं छे. तथा एक सारा मुहूर्त्ते तथा शुभ लग्ने चालेलाए एक ज यात्रा करीने पाछा फरवुं, पण प्रथमना लग्न मुहूर्त्तना बळे करीने ज बीजी यात्रा पण न करवी. ते विषे लल्ल कहे छे के—"संसाध्यैकां यात्रां वीर्यादवहीयते ग्रहः सर्वः" । "एक यात्राने सिद्ध करीने सर्व ग्रहो बळहीन थाय छे." वहाणना प्रस्थानने आश्रीने व्यवहारसारमां आ प्रमाणे लख्युं छे.—

"रेवत्यां तु समुत्थानं श्रेष्ठं स्वामिहितावहम् ।
अश्विन्यां गतगामित्वं नौर्भवेद्बहुरत्नभृत् ॥ १ ॥
अनुराधामृगे चैव धनिष्ठाहस्तवैष्णवे ।
प्रस्थापयेत्ततो नावं सर्वकामसमृद्धये ॥ २ ॥
पूर्वाफल्गुनिसौम्ये च हस्तचित्रासु वैष्णवे ।
वादित्रमंगलैश्चापि पोतं संचारयेज्जले ॥ ३ ॥"

"रेवती नक्षत्रमां वहाण तैयार करवुं श्रेष्ठ छे तथा स्वामीने हितकारक छे. अश्विनीमां ते (वहाण)मां करीयाणां भरवाथी वहाण घणां रत्नोथी पूर्ण थाय छे, अनुराधा, मृगशिर, धनिष्ठा, हस्त, श्रवण, एटलां नक्षत्रोमां वहाणनुं प्रस्थान करवुं ए सर्व कामनी सिद्धिने माटे छे, तथा पूर्वाफाल्गुनी, मृगशिर, हस्त, चित्रा, अने श्रवण नक्षत्रमां वाजित्र मंगळे करीने वहाणने जळमां चलाववुं ए शुभकारक छे." मूळ श्लोकमां सीमा शब्द लख्यो छे तेथी पांचमे विगेरे दिवसे चालवुं ज जोइए एवो नियम कर्यो छे.

हवे यात्रामां शुभ एवां नव नक्षत्रोमांनां कयां नक्षत्रोमां प्रस्थान करेलो पुरुष पांच दिवस पहेलां पण चाली शके ? ते कहे छे.—

श्रुतौ तदह्नरन्येद्युर्धनिष्ठापुष्यपौष्णभे ।
तृतीये मैत्रमृगयोर्हस्ते तुर्येऽहनि व्रजेत् ॥ २ ॥

अर्थ—जो श्रवण नक्षत्रमां प्रस्थान कर्युं होय तो ते ज दिवसे प्रस्थानना स्थानथी आगळ चालवुं, धनिष्ठा, पुष्य अने रेवतीमां प्रस्थान कर्युं होय तो बीजे दिवसे प्रयाण करवुं, अनुराधा के मृगशिरमां प्रस्थान कर्युं होय तो त्रीजे दिवसे प्रयाण करवुं, अने हस्त नक्षत्रमां प्रस्थान कर्युं होय तो चोथे दिवसे चालवुं. अवशेषथी अश्विनी अने पुनर्वसुमां प्रस्थान कर्युं होय तो पांचमे दिवसे अवश्य चालवुं जोइए. ए ज प्रमाणे सात दिवस अने दश दिवसने विषे पण संप्रदाय प्रमाणे आगळना दिवसोमां प्रयाणनो नियम करी लेवो.

हवे प्रयाणना समयनी शुद्धि कहे छे.—

यात्रा दिनतिथितारावलशुद्धौ मृगकरानुराधासु ।
आश्विनपौष्णधनिष्ठाश्रुत्यादित्यद्वये श्रेष्ठा ॥ ३ ॥

अर्थ—दिवस, तिथि अने ताराबळनी शुद्धि होय तथा मृगशिर, हस्त, अनुराधा, अश्विनी, रेवती, धनिष्ठा, श्रवण, पुनर्वसु अने पुष्य, ए नक्षत्रोमांनुं कोइएक होय त्यारे यात्रा (प्रयाण) श्रेष्ठ छे.

दिवसनी शुद्धि हर्षप्रकाशमां आ प्रमाणे कही छे.—

"रयछन्न १ मभ्भछन्नं २ पयंरूपवणं ३ तहासनिग्घायं ४ ।
सुरधणु ५ परिवेस ६ दिसादाहाइ ७ जुअं दिणं दुट्ठं ॥ १ ॥"

"आकाश धूळथी व्याप्त होय १, आकाश वादळांथी व्याप्त होय २, प्रचंड पवन वातो होय ३, वज्रघात थतो होय (गडगडाट थता होय) ४, आकाशमां इन्द्रधनुष खेंच्युं होय ५, चंद्र तथा सूर्यने फरतुं कुंडाळुं थयेल होय ६, तथा दिशाओ बळती होय ७, तो ते दिवस दुष्ट छे एम जाणवुं. अहीं वर्षाऋतु विना आवां चिह्नो थतां होय तो ज दुष्ट दिवस जाणवो. एम सर्वत्र जाणवुं. आ चिह्नोथी रहित एवो दिवस शुद्ध जाणवो."

अथवा तो सौम्य वारोए करीने दिवसनी शुद्धि जाणवी. ते विषे व्यवहारसारमां कह्युं छे के—

"गमनेऽर्कादयो वाराः क्रमशः कुर्वते फलम् ।
नैःस्व्यं १ धनं २ रुजं ३ द्रव्यं ४ जयं ५ चैव श्रियं ६ वधम् ७ ॥ १ ॥"

"प्रयाणने विषे रवि विगेरे वारो अनुक्रमे आ प्रमाणे फळने आपे छे.—निर्धनता १, धन २, रोग ३, धन ४, जय ५, लक्ष्मी ६ अने वध—नाश ७."

"राजादिकने प्रयाणमां रविवार पण शुभ छे," एम व्यवहारप्रकाशमां कह्युं छे. तथा

हर्षप्रकाशमां कहेल छे के—"पडिवइनवमट्ठमिचउदसीसु गमणंकरे न बुहवारे" एकम, नोम, आठम अने चौदसे गमन करवुं, पण बुधवारे गमन न करवुं. अथवा वारनी शुद्धि यतिवल्लभमां आ प्रमाणे कही छे.—

"चैत्राद्या द्विगुणा मासा वर्त्तमानदिनैर्युताः ।
सप्तभिस्तु हरेद्भागं यच्छेषं तद्दिनं भवेत् ॥ १ ॥
श्रीदिनः १ कलहश्चैव २ नन्दनः ३ कालकर्णिका ४ ।
धर्मः ५ क्षयो ६ जय ७ श्चेति दिना नामसदृक्फलाः ॥ २ ॥"

"चैत्रादिक मासथी गणतां जेटलामो मास चालतो होय तेने बमणा करवा, तेमां रविवारादिकथी गणतां चालतो दिवस जेटलामो होय तेटला उमेरवा. पछी तेने साते भागवा. जेटला शेष रहे तेटलामो ते दिवस अनुक्रमे आ प्रमाणे जाणवो—श्रीदिन १, कलह २, नंदन ३, कालकर्णिका ४, धर्म ५, क्षय ६ अने जय ७. आ दिवसोनुं शुभाशुभ फळ पोताना नाम प्रमाणे जाणवुं."

तिथिमां पक्ष, छिद्र, अवम, फल्गु, दग्ध अने क्रूर ए नामनी तिथिनो त्याग करवाथी तिथिनी शुद्धि कहेवाय छे, पूर्णिमा पण त्याज्य छे. ते विषे व्यवहारसारमां कह्युं छे के—"पूर्णिमायां न गन्तव्यं यदि कार्यशतं भवेत्" "सो कार्य होय तोपण पूर्णिमाने दिवसे प्रयाण करवुं नहीं.

तारानी शुद्धि माटे "जन्म तारा आधान तारा" विगेरे प्रथम कह्युं छे, ते प्रमाणे जाणवुं. यात्रामां तारानुं बळ अवश्य ग्रहण करवा योग्य छे. नक्षत्रोमां अभिजित् पण यात्रामां श्रेष्ठ छे. ते विषे लल्ल कहे छे के—"अभिजिति कृतप्रयाणः सर्वार्थान् साधयेन्नियतं" "अभिजितमां प्रयाण करनार सर्व कार्यने अवश्य साधे छे.." वळी दिनशुद्धिमां आ प्रमाणे विशेष कह्युं छे के—

"दसमि तेरसि पंचमि बीअगो, भिगुसुउ गमणेऽतिसुहावहो ।
गुरु पुणव्वसु पुस्स विसेसउ, सयभिसा अणुराह बुहे तहा ॥ १ ॥"

"गमनमां दशमी, तेरस, पांचम, बीज ने शुक्रवार अति शुभकारक छे. पुनर्वसु, पुष्य अने गुरुवार विशेषे करीने शुभकारक छे. तथा शतभिषक् अने अनुराधा बुधवारे शुभकारक छे."

तथा चंद्र संबंधी गोचरनुं, शिव भुजग आदि दिवस रात्रि मुहूर्त्तोनुं, अने लग्नबल होय तो मुहूर्त्त ग्रहण करवुं.

"पहि कुसलु लग्गि तिहिं कज्जसिद्धि लाभं मुहुत्तउ होइ ।
रिक्खेणं आरुग्गं चंदेणं सुक्खसंपत्ती ॥ १ ॥"

"शुभ लग्नथी मार्गमां कुशल होय. शुभ तिथिथी कार्यसिद्धि थाय. शुभ मुहूर्त्तथी लाभ थाय. शुभ नक्षत्रथी आरोग्य थाय. अनुकूल चंद्रथी सुखप्राप्ति थाय."

तथा "शुभ लग्ने करीने सर्वे तिथ्यादिकना गुणो पमाय छे." एम लल्ल कहे छे.

हवे प्रयाणमां मध्यम अने निंद्य नक्षत्रो कहे छे.—

मध्या तु ध्रुवपूर्वाज्येष्ठाद्वयवारुणेषु यात्रा स्यात् ।
निन्द्यार्द्राभरणीद्वयचित्रात्रयसार्पपैत्रेषु ॥ ४ ॥

अर्थ—ध्रुव नक्षत्र (रोहिणी अने त्रण उत्तरा), पूर्वा त्रण, ज्येष्ठा, मूळ अने शतभिषकमां यात्रा मध्यम फळवाळी छे, अने आर्द्रा, भरणी, कृत्तिका, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अश्लेषा अने मघा, आटलां नक्षत्रोमां यात्रा करवी निंद्य-अशुभ छे. "आ निंद्य नक्षत्रोमां प्रयाण कर्युं होय तो ते कदापि पाछो आवतो नथी," एम व्यवहारसारमां कह्युं छे. नारचंद्रमां तो आ प्रमाणे कह्युं छे के—"ज्येष्ठा अने मूळमां यात्रा करवी श्रेष्ठ छे, चित्रा, स्वाति, श्रवण अने धनिष्ठामां मध्यम छे, तथा त्रण उत्तरामां निंद्य छे.' विशेष आ प्रमाणे जाणवुं.—

"अशुभे भे शुभे घस्रे दिवा यात्रादि साधयेत् ।
शुभे भे त्वशुभे घस्रे रात्रौ यात्रादि साधयेत् ॥ १ ॥"

"अशुभ नक्षत्र होय अने शुभ दिवस होय तो दिवसने विषे प्रयाणादिक करवुं, तथा नक्षत्र शुभ होय अने दिवस अशुभ होय तो प्रयाणादिक रात्रिए करवुं," कारण के—"नक्षत्रं बलवद्रात्रौ दिने बलवती तिथिः" । "रात्रिए नक्षत्र बळवान् होय छे, अने तिथि दिवसे बळवान् होय छे," एम लल्ल कहे छे.

हवे नक्षत्रने आश्रीने यात्रामां दिनांशनो नियम कहे छे.—

न दिवाद्ये ध्रुवमिश्रैस्तीक्ष्णैर्मध्येऽथ लघुभिरन्त्येंऽशे ।
अंशेष्विति रात्रेरपि मैत्रो १ ग्र २ चरै ३ र्न भैर्यात्रा ॥ ५ ॥

अर्थ—दिवसना त्रण भाग करवा, तेमां पहेला भागमां ध्रुव अने मिश्र नक्षत्र होय तो यात्रा न करवी, बीजा भागमां तीक्ष्ण नक्षत्र होय अने त्रीजा भागमां लघु नक्षत्र होय तो यात्रा न करवी. ए ज रीते रात्रिना पण पहेला भागमां मैत्र नक्षत्र होय, बीजामां उग्र होय अने त्रीजामां चर नक्षत्र होय त्यारे यात्रा (प्रयाण) न करवी. तेना फळ विषे लल्ल कहे छे के—

"धनहानिर्मृत्युर्वा नियतो भंगः पराजयश्चैव ।
यस्मादेभिः कालैः प्रायेण विवर्जयेत्तस्मात् ॥ १ ॥"

"जेथी करीने आ उपर कहेला काळे प्रयाण कर्युं होय तो प्राये करीने धननी हानि,

मृत्यु, अवश्य जंग अथवा पराजय थाय छे,तेथी करीने ए नक्षत्रो ए काळे वर्जवा योग्य छे."

आ उपर कहेला काळे पण प्रयाण थइ शके, तथा आगळ कहेवाशे एवा परिघमां पण प्रयाण थइ शके. एवां नक्षत्रो कहे छे.—

सर्वदिग्द्वारकौ पुष्यहस्तौ मैत्राश्विनीयुतौ ।
तावेव सर्वकालीनौ मृगश्रुतिसमन्वितौ ॥ ६ ॥

अर्थ—पुष्य, हस्त, अनुराधा अने अश्विनी, ए नक्षत्रो सर्व (आठे) दिशामां द्वार (मुख)वाळां छे, एटले के आ नक्षत्रोमां परिघ के नक्षत्र दिक्शूळ होतो नथी. नारचंद्रमां कह्युं छे के श्रवण अने रेवती पण सर्व दिशामां द्वारवाळां छे. पुष्य, हस्त, मृगशिर अने श्रवण, ए नक्षत्रो सर्वकालीन (सर्व काळवाळां) छे, एटले के आ नक्षत्रोमां उपरनो (पांचमो) श्लोक गणवो नहीं अर्थात् आ नक्षत्रो होय तो उपरनो अशुज्ञ काळ पण शुज्ञ गणवो.

दिनशुद्धिमां तो दिग्यात्रामां छ नक्षत्रोने सर्व दिशामां सर्वकालीन कह्यां छे.—

"सवदिसि सवकालं रिद्धिनिमित्तं विहारसमयम्मि ।
पुस्सस्सिणि मिग हत्था रेवइ सवणा गहेअबा ॥ १ ॥"

"पुष्य, अश्विनी, मृगशिर, हस्त, रेवती अने श्रवण, ए छ नक्षत्रो सर्व दिशामां सर्वकालीन छे, तेमने विहारसमये समृद्धिना निमित्ते ग्रहण करवां, एटले के ए नक्षत्रोमां प्रयाण करवाथी समृद्धि मळे छे."

हवे यात्रामां दिशानी शुद्धि कहेवा माटे परिघ कहे छे.—

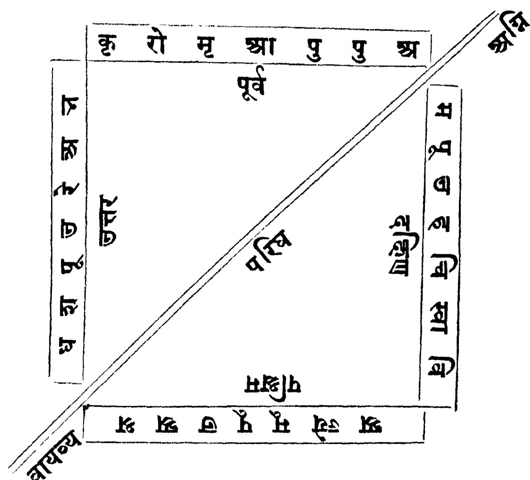
सप्त सप्त गमने वसुरुक्षादुत्तराप्रभृतिदिक्षु शुज्ञानि ।
वह्निवायुपरिघोऽत्र न लंघ्यो, मध्यमानि तु मिथः स्वदिशोः स्युः ७

अर्थ—उत्तर दिशाथी आरंजीने चारे दिशामां धनिष्ठा नक्षत्रथी सात सात नक्षत्रो गमन करवामां शुज्ञ छे. आ गमनमां अग्नि अने वायव्य कोणनो परिघ उल्लंघन करवा योग्य नथी अने पोतानी बे दिशाउनां नक्षत्रो परस्पर स्व कहेवाय छे, ते गमनमां मध्यम छे.

धनिष्ठा नक्षत्रथी आरंजीने सात सात नक्षत्रो उत्तर विगेरे चारे दिशामां गमन करवाने विषे शुज्ञ छे, एटले के आ सात सात नक्षत्रो उत्तरादिक दिशाना द्वारवाळां छे.— धनिष्ठाथी सात नक्षत्रो उत्तर द्वारवाळां छे, तेथी ते नक्षत्रोमां उत्तर दिशानुं प्रयाण शुज्ञ छे. ए रीते चारे दिशामां जाणवुं. स्थानांग सूत्र अने चंद्रप्रज्ञप्तिनी वृत्ति विगेरेमां लख्युं छे के—"धनिष्ठानी जेम कृत्तिकाथी आरंजीने, मघाथी आरंजीने अने अनुराधाथी आरंजीने सात सात नक्षत्रो अनुक्रमे पूर्व, दक्षिण अने पश्चिम दिशाना द्वारवाळां छे, तेथी ते ते नक्षत्रोमां ते ते दिशामां यात्रा करवी शुज्ञ छे."

अहीं सप्त रेखावाळा चक्रनी जेम पूर्वादिक चार दिशामां कृत्तिकाथी सात सात नक्षत्रो स्थापवां, अने अग्नि तथा वायव्य खूणामां लांबो परिघ करवो.

परिघ यंत्र.



आ अग्नि अने वायव्य खूणानी वच्चेनो रेखारूप परिघ उल्लंघन करवा योग्य नथी, एटले के धनिष्ठा विगेरे चौद नक्षत्रोमां उत्तर अने पूर्वमां ज जवुं, अने मघा विगेरे चौद नक्षत्रोमां दक्षिण अने पश्चिममां ज गमन करवुं, पण उत्तर अने पूर्वना द्वारवाळां नक्षत्रमां दक्षिण के पश्चिममां गमन न करवुं इत्यादि. तेमां पण परस्पर स्वजनरूप नक्षत्रो के जे परिघना एक भागमां (उत्तर पूर्वमां अने दक्षिण पश्चिममां) जे नक्षत्रो रहेलां छे तेनी बन्ने दिशानां ते ते नक्षत्रो यात्रामां मध्यम छे, एटले शुभ पण नथी तेमज अशुभ पण नथी. तात्पर्य ए छे जे धनिष्ठादिक सात नक्षत्रोना कृत्तिकादिक सात नक्षत्रो स्वजन छे, अने ते (स्वजन)नी दिशा पूर्व छे, तेथी ते (पूर्व)मां गमन करवामां धनिष्ठादिक सात नक्षत्रो मध्यम छे, ए रीते कृत्तिकादिक सात नक्षत्रोना धनिष्ठादिक सात नक्षत्रो स्वजन छे अने तेनी दिशा उत्तर छे, तेथी उत्तरमां गमन करवामां कृत्तिकादिक सात नक्षत्रो मध्यम छे. ए रीते ज बीजी बे दिशामां जाणी लेवुं.

अहीं कोइ शंका करे के—आ परिघ कहेवाथी दिशाओ आश्री नक्षत्रनो नियम कह्यो,

पण विदिशा (खूणा)उमां गमन करवा विषे नक्षत्रनो शो नियम थयो ? तेनो जवाब ए छे जे—पूर्व द्वारनां नक्षत्रोमां अग्नि कोण तरफ गमन करवुं, दक्षिण द्वारनां नक्षत्रोमां नैर्ऋत्य खूणामां गमन करवुं, पश्चिम द्वारवाळामां वायव्य तरफ अने उत्तर द्वारवाळामां ईशान तरफ गमन करवुं. आ रीते विदिशाउ दिशाउने अनुसरे छे, माटे तेने आश्रीने पण नियम प्रगट ज छे. दैवज्ञ वल्लभ पण कहे छे के—"यायात् पूर्वद्वारभैरग्निकाष्टां प्रादक्षिण्येनैवनाशाविपूर्वाः" "पूर्व द्वारनां नक्षत्रोमां अग्नि खूणा तरफ जवुं, ए रीते बीजी विदिशाउ पण प्रदक्षिण क्रमे करीने जाणवी." पूर्णभद्र तो आ नियम साथे आ प्रमाणे विशेष कहे छे.—

"स्वामिनः सप्त भौमाद्याः क्रमतः कृत्तिकादिषु ।
प्राच्यादौ तत्सनाथेषु भेषु यात्रा महाफला ॥ १ ॥"

"कृत्तिकादिक सात नक्षत्रना अनुक्रमे मंगळथी आरंभीने चंद्र पर्यंत सात स्वामीउ छे. ए रीते मघादिक विगेरेमां पण मंगळथी आरंभीने ज स्वामीउ जाणवा. तेमां कृत्तिका अने मंगळवारे पूर्व दिशामां गमन करवुं एम ते ते नक्षत्रोमां ते ते वारे ते ते दिशामां गमन करवाथी महाफळ प्राप्त थाय छे."

"प्राच्यादिषु चरन् भानुः सप्तके कृत्तिकादिके ।
वितनोति दिशामस्तं यात्रा तासु कृता श्रिये ॥ २ ॥"

"कृत्तिकादिक सात सात नक्षत्रोमां पूर्वादिक दिशाउने विषे चालतो सूर्य दिशाउने अस्त करे छे, तेथी ते दिशाउमां करेली यात्रा (गमन) लक्ष्मीने माटे छे."

हवे परिघनो अपवाद तथा नक्षत्र शूळ कहे छे.

उल्लंघ्यः परिघोऽपि लग्नबलतः शूलं तु भानां सदा,
हेयं तच्च पुनः सुरेश्वरदिशि ज्येष्ठाम्बुविश्वोडुभिः ।
राधावैष्णववासवाजपदभैर्याम्यां प्रतीच्यां पुन-
र्ब्राह्म्या मूलयुजा तथोत्तरदिशि स्यादर्यमर्क्षेण च ॥ ८ ॥

अर्थ—लग्नना बळथी परिघनुं पण उल्लंघन करवुं, एटले के शत्रुसैन्यनुं आगमन विगेरे एकांतिक (आवश्यक) कार्योमां गमन करवानी दिशानुं मुख शुद्ध होय—यात्रानुं लग्न ग्रहना बळथी युक्त होय त्यारे परिघनुं उल्लंघन करवामां दोष नथी, परंतु नक्षत्र शूळ सदा त्याग करवा लायक छे, एटले के शूळ नक्षत्र होय तो लग्ननी शुद्धि छतां पण गमन न करवुं, कारण के नक्षत्र शूळनो दोष शुद्ध लग्नथी पण नाश पामतो नथी. ते विषे व्यवहारप्रकाशमां कह्युं छे के—"त्यजेल्लग्नेऽपि शुद्धर्क्षे शूलर्क्षे नास्ति निर्वृतिः ।" "लग्न शुद्ध

छतां पण शूळ नक्षत्र वर्जवा योग छे, केमके शूळ नक्षत्रमां गमन करवाथी पाछुं अवातुं नथी." ते नक्षत्र शूळ आ प्रमाणे छे.—

ज्येष्ठा, पूर्वाषाढा अने उत्तराषाढा ए पूर्व दिशामां नक्षत्र शूळ छे. दक्षिणमां विशाखा, श्रवण, धनिष्ठा अने पूर्वाभाद्रपद ए नक्षत्र शूळ छे. पश्चिममां रोहिणी अने मूळ नक्षत्र शूळ छे. तथा उत्तर दिशामां उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र शूळ छे. (आ नक्षत्र दिक्शूळ कहेवाय छे.)

पूर्णभद्र तो आ प्रमाणे नक्षत्र दिक्शूळ कहे छे.—

"पूवाइ जिठऽसाढा धणिठ पुवभद्द दाहिण दिसाए ।
रोहिणि मूलऽवराए विसाह पुवफग्गुणुत्तरउ ॥ १ ॥"

"पूर्व दिशामां ज्येष्ठा, पूर्वाषाढा अने उत्तराषाढा नक्षत्र शूळ छे, दक्षिणमां धनिष्ठा अने पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र शूळ छे, पश्चिममां रोहिणी अने मूळ नक्षत्र शूळ छे, तथा उत्तरमां विशाखा अने पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र शूळ छे." "पश्चिम दिशामां पुष्य अने उत्तरमां हस्त नक्षत्र शूळ छे," एम नारचंद्रमां कह्युं छे. यतिवल्लभमां तो नक्षत्र कील आ प्रमाणे कहे छे.—

नक्षत्र कील विषे.

"ज्येष्ठा १ भद्रपदा पूर्वा २ रोहिण्यु ३ त्तरफल्गुनी ४ ।
पूर्वादिषु क्रमात्कीला गतस्यैतेषु नागतिः ॥ १ ॥
औत्सुक्याद्यदि पूर्वोक्तदंष्ट्रलंघनवर्जने ।
असमर्थस्तदावश्यं दिक्कीलान् वर्जयेदिमान् ॥ २ ॥"

"पूर्वमां ज्येष्ठा, दक्षिणमां पूर्वाभाद्रपद, पश्चिममां रोहिणी अने उत्तरमां उत्तराफाल्गुनी, ए नक्षत्र कील कहेवाय छे. आ नक्षत्र कीलमां जो गमन करे तो ते पाछो आवे नहीं. जो कदाच कार्यनी उत्सुकताथी पूर्वे कहेला दंष्ट्रना उल्लंघनने वर्जी न शके तो अवश्य आ दिक्कीलने वर्जवा."

लोकमां तो आ प्रमाणे कहेवाय छे.—

"उत्तर हत्था दक्खिण चित्ता, पुवा रोहिणि सुणि रे पुत्ता ।
पच्छिम सवणा म करिस गमणा, हरि हर बंभ पुरंदर मरणा ॥ १ ॥"

"हे पुत्र ! सांभळ. हस्त नक्षत्रमां उत्तर तरफ, चित्रामां दक्षिण तरफ, रोहिणीमां पूर्व तरफ अने श्रवणमां पश्चिम तरफ गमन करीश नहीं, केमके तेमां गमन करवाथी हरि, हर, ब्रह्मा अने इंद्र जेवानुं पण मरण थाय."

हवे वारने आश्रीने दिक्शूळ तथा विदिक्शूळ कहे छे.—

शूलं सोमे शनौ च प्राग्गुरौ दक्षिणतस्त्यजेत् ।
रवौ शुक्रे च वारुण्यामुत्तरेण कुजज्ञयोः ॥ ए ॥

आग्नेय्यादिविदिक्शूलं क्रमादादित्यजीवयोः १ ।
शीतांशुशुक्रयो २ र्भौममन्दयो ३ र्ज्ञस्य ४ च त्यजेत् ॥ १० ॥

अर्थ—सोम अने शनिवारे पूर्व दिशामां शूळ होय, गुरुवारे दक्षिणमां, रवि तथा शुक्रवारे पश्चिममां अने मंगळ तथा बुधवारे उत्तरमां दिक्शूळ होय. दिक्शूळ सन्मुख होय तो त्यां गमन करवुं नहीं. रवि अने गुरुवारे अग्निमां शूळ होय, सोम अने शुक्रवारे नैर्ऋत्यमां शूळ होय, मंगळ अने शनिवारे वायव्यमां शूळ होय, तथा बुधवारे ईशानमां शूळ होय. आ विदिक्शूळ कहेवाय छे.

दिक्शूळनुं कोष्टक		विदिक्शूळनुं कोष्टक.	
पूर्व	सोम, शनि.	अग्नि	रवि, गुरु.
दक्षिण	गुरु.	नैर्ऋत्य	सोम, शुक्र.
पश्चिम	रवि, शुक्र.	वायव्य	मंगळ, शनि.
उत्तर	मंगळ, बुध.	ईशान	बुध.

अवश्यना कार्य माटे दिक्शूळ तथा विदिक्शूळमां जवुं पडे तो तेने माटे विधान कहे छे.—

दिक्शूलध्वंसि वन्देत चन्दनं १ दधि २ मृत्तिकाम् ३ ।
तैलं ४ पिष्टं ५ च सर्पिश्च ६ खलं ७ चार्कादिषु क्रमात् ॥ ११ ॥

अर्थ—रवि विगेरे वारमां अनुक्रमे चंदन १, दहीं २, माटी ३, तेल ४, आटो ५, घी, ६ अने खोळ ७, ए चीजोनुं वंदन (तिलक) करवुं, तेथी दिक्शूळ तथा विदिक्शूळनो नाश थाय छे, एटले के रविवारे चंदननुं तिलक करवुं, सोमवारे दहींनुं तिलक करवुं विगेरे.

हवे योगिनी कहे छे.—

स्याद्योगिनी शक्र १ कुबेर २ वह्नि ३-
रक्षो ४ऽन्तका ५ प्पत्य ६ निले ७ शदिक्षु ।
यातुर्न भव्या प्रतिपन्नवम्या-
दितो विना पश्चिमवामभागौ ॥ १२ ॥

अर्थ—पडवाथी (एकमथी) आरंभीने तथा नोमथी आरंभीने अनुक्रमे पूर्व १, उत्तर २, अग्नि ३, नैर्ऋत्य ४, दक्षिण ५, पश्चिम ६, वायव्य ७ अने ईशान, ८ दिशा-

उमां योगिनी होय छे. ते योगिनी जनार माणसने जे दिशामां जवुं होय ते तरफ जतां पछवाडे अथवा डाबी बाजुए रहेती होय तो सारी, अने सन्मुख तथा जमणी बाजु आवती होय तो ते अशुभ जाणवी.

अहीं पडवाथी आरंभीने एक एक तिथि लेतां आठम सुधीमां एक आवृत्ति थाय छे, बीजी आवृत्ति नोमथी लेतां पखवाडीयाना अंत सुधी लइए तो सात ज तिथि रहे छे, अने दिशाओ तो आठ छे, तो ते शी रीते करवुं ? तेनुं समाधान ए छे जे नोमथी पूर्णिमा सुधीनी सात तिथिओ अने आठमी अमावास्यानी तिथि लेवी, तेथी पूर्णिमाए वायव्यमां अने अमावास्याए ईशानमां योगिनी होय. एम बीजी आवृत्तिमां पण दरेक दिशामां एक एक तिथि आवी जाय छे. पूर्णभद्र पण कहे छे के—

"पू १ उ २ अ ३ नै ४ द ५ प ६ वा ७ ई ८ दिसिसु पडिवइ नवमीउ जोइणिआ।
वायवि पुन्निमाए ईसाणे अमावसाइ तहा ॥ १ ॥"

"पूर्व १, उत्तर २, अग्नि ३, नैर्ऋत्य ४, दक्षिण ५, पश्चिम ६, वायव्य ७ अने ईशान ८, ए आठ दिशाओमां अनुक्रमे पडवेथी अने नोमथी तिथिओने विषे योगिनी थाय छे, तेमां पूर्णिमाए वायव्य खूणामां अने अमावास्याए ईशान खूणामां योगिनी आवे छे."

योगिनीनुं कोष्टक

दिशा	तिथि.
पूर्व	१–९
उत्तर	२–१०
अग्नि	३–११
नैर्ऋत्य	४–१२
दक्षिण	५–१३
पश्चिम	६–१४
वायव्य	७–१५
ईशान	८–३०

मतांतरे योगिनीनुं कोष्टक.

दिशा.	कृष्णपक्षनी तिथि	शुक्लपक्षनी तिथि.
पूर्व	१–६–११	१–६–११
दक्षिण	२–७–१२	२–७–१२
पश्चिम	३–८–१३	३–८–१३
उत्तर	४–९–१४	४–९–१४
अधो दिशि	१०	५–१५
ऊर्ध्व दिशि	५–१५	१०

केटलाएक आचार्यो आ प्रमाणे योगिनी कहे छे—कृष्णपक्षनी एकमथी चोथ सुधी पूर्वादिक चार दिशामां योगिनी होय छे, अने पांचमे ऊर्ध्व दिशामां होय छे, छठथी नोम सुधी पूर्वादिक चार दिशाओमां अने दशमे अधो दिशामां होय छे, अगीयारशथी चौदश सुधी पूर्वादिक चार दिशामां अने अमावास्याए ऊर्ध्व दिशामां योगिनी होय छे. एज रीते शुक्लपक्षमां पण जाणवुं. तफावत एटलो छे के शुक्लपक्षमां पांचमे अधो दिशामां, दशमे ऊर्ध्व दिशामां अने पूर्णिमाए अधो दिशामां योगिनी होय छे.

(ते कोष्टक पण उपर आप्युं छे.) जे दिवसे जे दिशामां योगिनी होय ते दिशा, तथा ते दिशानी दक्षिण बाजुनी विदिशाना हाथमां कातर छे तेथी ते विदिशा, तथा तेनी मावी बाजुनी विदिशाना हाथमां खपर छे तेथी ते विदिशा, आ त्रणे दिशाउ युद्धादिकमां पाछळ रही होय तो ज ते शुभ छे. व्यवहारप्रकाशमां पण कह्युं छे के—

"योगिनी देवी पृष्ठे दक्षिणवामे स्थिता विजयदात्री ।
संमुखसंस्था युद्धे पराजयं नाशमाधत्ते ॥ १ ॥"

"योगिनी देवी पछवामे, दक्षिण बाजुए तथा मावी बाजुए रही होय तो ते युद्धमां विजयने आपनारी छे, अने सन्मुख रही होय तो ते पराजयने तथा मृत्युने आपे छे."

गमनादिक कार्य अवश्यनुं होय तो गमन वखते योगिनीनी मात्र दृष्टिने ज सन्मुख तजवी. तेनी सन्मुख दृष्टि नारचंद्रमां आ प्रमाणे कही छे.—

"ऊर्ध्वं तिथिमित १५ नाड्यो दश चाधो १० वाम १० दक्षिणे १० पार्श्वे ।
घटिका पञ्चदशापि १५ च योगिन्याः संमुखी दृष्टिः ॥ १ ॥"

"योगिनी ऊर्ध्व दिशामां पंदर घमी छे, अधो दिशामां दश घमी छे, वाम (मावी) बाजुए दश घमी छे, जमणी बाजुए दश घमी छे, अने सन्मुख दृष्टि पंदर घमी छे."

वळी तत्काळयोगिनी पण अवश्य त्याग करवा लायक छे. ते तत्काळयोगिनी दिनशुद्धिमां आ प्रमाणे कही छे.—

"दिणदिसि धुरि चउघमिआ पुरउ पुवुत्तदिसिसु अणुकमसो ।
तक्कालजोइणी सा वज्जेअवा पयत्तेणं ॥ १ ॥"

"दिवसनी दिशामां प्रथमनी चार घमी योगिनी रहे छे, अने पछी अनुक्रमे पछीनी दिशाउमां चार चार घमी रहे छे, ते तत्काळयोगिनीने प्रयत्नवमे वर्जवी, एटले के— जे दिवसे जे तिथि होय ते तिथिनी जे दिशा कही होय ते दिशामां प्रातःकाळे चार घमी सुधी योगिनी रहे छे, अने त्यारपछी उपर कहेला अनुक्रम प्रमाणे बाकीनी दिशाउमां योगिनी रहे छे. जेमके—एकमने दिवसे पूर्व दिशामां पहेली चार घमी (अर्ध प्रहर) योगिनी रहे छे, बीजी चार घमी उत्तरमां, त्रीजी चार घमी अग्नि खूणामां, ए रीते अनुक्रमे ईशान खूणा सुधी अर्ध अर्ध प्रहरो गणवा. बीजने दिवसे पहेलो अर्ध प्रहर उत्तर दिशामां, बीजो अर्ध प्रहर अग्नि खूणामां, ए रीते गणतां आठमो अर्ध प्रहर पूर्व दिशामां आवे छे. ए प्रमाणे रात्रि दिवसमां थइने आठे दिशामां बबे वखत योगिनी फरे छे.

हवे पाश तथा काळनुं स्वरूप कहे छे.—

पाशो मासस्येष्टस्तिथिरष्टहृतावशिष्ट ऐन्द्र्यादौ ।
तत्संमुखस्तु कालः स तु दक्षिण एव सौख्याय ॥ १३ ॥

अर्थ—मासनी तिथिउने आठे जाग लेतां बाकी जे वधे ते (तिथि)ने पूर्वमां मूकवी. त्यारपछीनी तिथिउं अनुक्रमे अग्नि विगेरे दिशाउंमां मूकवी. ते तिथिए ते दिशामां पाश छे एम जाणवुं, अने ते (पाश)नी सन्मुख काळ जाणवो. ते काळ जमणी बाजुए शुज छे.

अहीं कृष्णपक्षनी एकमथी मासनो आरंज जाणवो. मासनी तिथि त्रीश छे, तेथी तेनो आठे जाग लेतां बाकी छ वधे छे, तेथी कृष्णपक्षनी छठने दिवसे पूर्व दिशामां पाश छे, सातमे अग्नि खूणामां पाश जाणवो, एम अनुक्रमे गणतां चौदशे ऊर्ध्व दिशिमां अने अमावास्याए अधो दिशिमां पाश जाणवो. पछी शुक्ल एकमे पूर्वमां, ए रीते गणतां शुक्ल दशमे अधो दिशिमां, पाछो अगीयारशे पूर्वमां, ए रीते गणतां कृष्णपक्षनी पांचमे अधो दिशिमां पाश आवे छे. आ प्रमाणे त्रण वखत आवर्तन करवाथी मास पूर्ण थाय छे.

। पाशनी स्थापना ।

पूर्व	अग्नि	दक्षिण	नैर्ऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	ऊर्ध्व	अधः
कृष्ण ६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	३०
शुक्ल १	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
११	१२	१३	१४	१५	कृष्ण १	२	३	४	५

पाशनी सन्मुखनी दिशाए काळ जाणवो, एटले ऊर्ध्व अने अधः ए बे दिशा विना बाकीनी आठ दिशामां पोतपोतानी पाश दिशाथी पांचमी पांचमी दिशाए काळ होय छे. ज्यारे ऊर्ध्व दिशिए पाश होय त्यारे अधो दिशिए काळ जाणवो, अने ज्यारे अधो दिशिए पाश होय त्यारे ऊर्ध्व दिशिए काळ जाणवो, केमके ए बे दिशानुं सन्मुखपणुं ए ज प्रमाणे होय छे. दिनशुद्धिमां कह्युं छे के—

"पुव्वाइ दस दिसाहिं कमेण सिअ पडिवयाइ हुइ पासो ।
तस्संमुहो अ कालो गमणे दुन्नि वि संमुह वज्जे ॥ १ ॥"

"पूर्वादिक दश दिशाउंमां अनुक्रमे शुक्लपक्षनी एकमथी आरंजीने पाश होय छे, अने तेनी सन्मुख काळ होय छे. ते बन्ने गमनमां सन्मुख वर्जवा योग्य छे."

। काळनी स्थापना ।

पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	पूर्व	अग्नि	दक्षिण	नैर्ऋत्य	अधः	ऊर्ध्व
कृष्ण ६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	३०
शुक्ल १	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
११	१२	१३	१४	१५	कृष्ण १	२	३	४	५

गमन करनारनी डाबी बाजुए पाश होय अने जमणी बाजुए काळ होय तो ते शुभ छे. ते विषे दिनशुद्धिमां कह्युं छे के—

"कुज्जा विहारि वामो पासो कालो अ दाहिणउ"

"विहार (गमन)मां पाशने डाबी बाजु करवो अने काळने जमणी बाजु करवो." वास्तुशास्त्रना विद्वानो तो आ प्रमाणे कहे छे.—"शुक्लपक्षनी एकमथी चार तिथिउमां पूर्व, अग्नि विगेरे चार दिशामां पाश होय छे अने पांचमे ऊर्ध्व दिशिमां पाश होय छे. त्यारपछी छठथी चार तिथि सुधी पश्चिम, वायव्य विगेरे चार दिशामां पाश होय छे अने दशमे अधो दिशिए होय छे. त्यारपछी अगीयारशथी चार तिथि सुधी पूर्व, अग्नि विगेरे चार दिशामां पाश होय छे, अने पूर्णिमाए ऊर्ध्व दिशिए होय छे. पछी कृष्णपक्षनी एकमथी चार तिथि सुधी पश्चिम, वायव्य विगेरे चार दिशामां पाश होय छे, अने पांचमे अधो दिशिए होय छे. ए ज प्रमाणे त्रीजी वार पण गणवुं, अने पाशनी सन्मुख दिशामां सदा काळ रहेलो छे." आ प्रमाणे तेउनो मत होवाथी पूर्णा तिथिए गृहादिकनुं खात मुहूर्त्त अने ध्वजारोपण विगेरे तेउ करवाने इच्छता नथी, कारण के अधो दिशिए अथवा ऊर्ध्व दिशिए पाश के काळ अवश्य होय ज छे.

वार आश्रीने पाश तथा काळ ज्योतिषसारमां आ प्रमाणे कह्या छे.—

"दिणवारं पुव्वाई कमेण संहारि जत्थ ठाणि सणी ।
कालं तत्थ विआणसु तस्संमुह पास जाणइ इगे ॥ १ ॥"

जे दिवसे जे वार होय ते वारथी आरंभीने अनुक्रमे साते वारो पूर्वादिक दिशाउमां अनुक्रमे मूकवा. तेमां जे दिशामां शनिवार आवे ते दिशामां काळ छे एम जाणवुं, अने तेनी सन्मुखनी दिशामां पाश जाणवो, एम केटलाक कहे छे. अहीं ईशान विनानी सात दिशाउ गणवानी छे, कारण के ते ईश्वरनुं घर छे, माटे त्यां काळनो प्रवेश थइ शकतो नथी, एम तेउ कहे छे. आउना मतमां वार आश्रीने ज काळ तथा पाश थाय छे, पण तिथिने आश्रीने थता नथी.

हवे राहुचार कहे छे.—

राहुरसंमुखवामोऽष्टसु यामार्द्धेष्वहर्निशं द्युमुखात् ।
क्रमशः षष्ठ्यां षष्ठ्यामिष्टः प्राच्यादिषु प्रचरन् ॥ १४ ॥

अर्थ—दिवसना प्रारंभथी एटले सूर्योदयथी आरंभीने दिवस अने रात्रि आठ आठ अर्ध प्रहरोमां अनुक्रमे पूर्वादिक छठी छठी दिशाए फरतो राहु असन्मुख अने वाम भागे रहेलो इष्ट—शुभ छे. अर्थात् गमन करनारनी पछवाडे अथवा डाबी बाजुए होय तो ते शुभकारक छे. राहु रात दिवस चाले छे. ते प्रातःकाळथी आरंभीने पूर्वादिक छठी छठी दिशामां

चाले छे, एटले के पहेला अर्ध प्रहरे पूर्व दिशामां चाले छे, बीजा अर्ध प्रहरे तेनाथी छठी दिशामां एटले वायव्य खूणामां चाले छे. त्रीजा अर्ध प्रहरे तेनाथी छठी एटले दक्षिण दिशाए चाले छे. ए प्रमाणे आठ अर्ध प्रहर सुधी छठी छठी दिशा लेवी. तेवी ज रीते रात्रे पण आठ अर्ध प्रहरमां पण छठी छठी दिशा जाणवी. ते विषे हर्षप्रकाशमां कह्युं छे के—

"जामद्धे राहुगई पू १ वा २ दा ३ ई ४ प ५ अ ६ उ ७ ने ८ दिसिसु" ॥

"सूर्योदयथी आरंभीने अर्ध अर्ध प्रहरे राहुनी गति अनुक्रमे पूर्व १, वायव्य २, दक्षिण ३, ईशान ४, पश्चिम ५, अग्नि ६, उत्तर ७ अने नैर्ऋत्य ८ दिशामां होय छे."

पूर्वादिक दिशाओ अवळी प्रदक्षिणाथी गणीए तो चोथी चोथी दिशाए राहुनी गति जाणवी. ते विषे नारचंद्रमां कह्युं छे के—

"अष्टासु प्रथमाद्येषु प्रहरार्द्धेष्वहर्निशम् ।
पूर्वस्या वामतो राहुस्तुर्यां तुर्यां व्रजेद्दिशम् ॥ १ ॥"

"प्रथमादिक आठ अर्ध प्रहरोमां रात दिवस पूर्व दिशाथी डाबी बाजुने क्रमे चोथी चोथी दिशामां राहु गति करे छे, एटले के पहेला अर्ध प्रहरे पूर्वमां, बीजा अर्ध प्रहरे तेथी अवळी चोथी दिशा वायव्यमां, त्रीजे अर्ध प्रहरे तेथी अवळी चोथी दिशाए एटले दक्षिणमां राहुनी गति छे. ए रीते आठे अर्ध प्रहर गणवा तथा ए ज रीते रातना पण आठे अर्ध प्रहर गणवा.

राहुचार स्थापना—

ईशान ४ उत्तर ७ वायव्य २ अर्ध प्रहर	पूर्व १ अर्ध प्रहर ८ पश्चिम ५	अग्नि ६ दक्षिण ३ नैर्ऋत्य ८

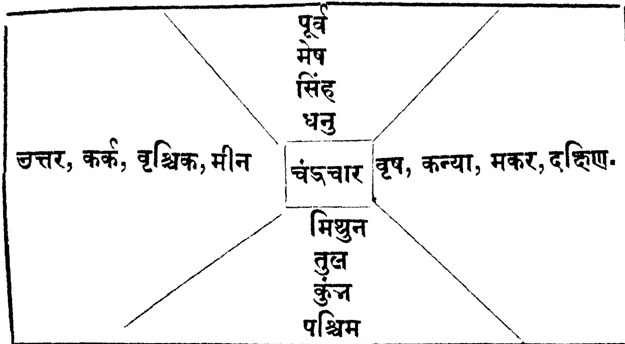
हवे चंद्रचार कहे छे.—

चन्द्रश्चरति पूर्वादौ क्रमात्त्रिर्दिक्चतुष्टये ।
मेषादिष्वेष यात्रायां संमुखस्त्वतिशोभनः ॥ १५ ॥

अर्थ—चंद्र मेषादिक बारे राशिओमां पूर्वादिक चार दिशाओमां अनुक्रमे त्रण वार चाले छे. आ चंद्र प्रयाणमां सन्मुख होय तो ते अत्यंत शुभ छे.

मेष राशिमां रहेलो चंद्र पूर्वमां होय छे, वृषमां रहेलो चंद्र दक्षिणमां, मिथुननो चंद्र पश्चिममां अने कर्कनो चंद्र उत्तरमां होय छे. ए प्रमाणे सिंहादिक चार अने धनादिक चार राशिना चंद्रने पण पूर्वादिक चारे दिशिमां अनुक्रमे जाणवो.

चंद्रचार स्थापना—



दिनशुद्धिमां तो शुक्रनी जेम चंद्रनुं पण त्रण प्रकारे सन्मुखपणुं ग्रहण करवानुं कह्युं छे.—

"उदयवसा १ अहवा दिसि २ दारभवसउ ३ हवइ ससी समुहो ।
सो अभिमुहो पहाणो गमणे अमिआइं वरिसंतो ॥ १ ॥"

"चंद्र जे दिशामां उदय पामे छे ते उदयना वशथी १ अथवा जे दिशामां जाय छे ते दिशाना वशथी २ अथवा जे दिशाना द्वारवाळा नक्षत्रने पाम्यो होय ते दिशाद्वार नक्षत्रना वशथी ३, आ त्रण प्रकारे सन्मुख होय छे. ते सन्मुख तथा जमणो गमनने विषे अमृतने वरसतो एवो प्रधान अति शोभाकारक छे."

नारचंद्रमां चंद्रचारनुं फळ आ प्रमाणे कह्युं छे.—

"जयाय दक्षिणो राहुर्योगिनी वामतः स्थिता ।
पृष्ठतो द्वयमप्येतच्चन्द्रमाः संमुखः पुनः ॥ १ ॥"

"जमणो राहु जयने माटे छे, डाबी बाजु रहेली योगिनी पण जयकारक छे, ते बन्ने पछवाडे रह्या होय तो शुभ छे, अने चंद्रमा सन्मुख होय तो शुभ छे."

मूळ श्लोकमां "अतिशोभनः" "घणो सारो" एम कह्युं छे, तेथी जमणी बाजुमां रहेलो पण चंद्र शुभ छे एम सूचवन करे छे. ते विषे नारचंद्र टिप्पणीमां कह्युं छे के—

"संमुखीनोऽर्थलाभाय दक्षिणः सर्वसंपदे ।
पश्चिमः कुरुते मृत्युं वामश्चन्द्रो धनक्षयम् ॥ १ ॥"

"गमन करतां चंद्र सन्मुख होय तो द्रव्यनो लाभ थाय, जमणी बाजु होय तो सर्व संपत्ति मळे, पाछळ होय तो मृत्यु करे अने डाबी बाजुए रह्यो होय तो धननो क्षय करे."

हवे रविचार कहे छे.—

रविर्द्वौ द्वौ तु पूर्वादौ यामौ रात्र्यन्त्ययामतः ।

यात्रास्मिन् दक्षिणे वामे प्रवेशः पृष्ठगे द्वयम् ॥ १६ ॥

अर्थ—सूर्य रात्रिना छेल्ला पहोरथी आरंभीने बबे पहोर पूर्वादिक चार दिशामां चाले छे, तेमां प्रयाणसमये सूर्य जमणी बाजुए होय तो शुभ छे, डाबी बाजुए होय तो प्रवेशमां शुभ छे, अने पाछळ होय तो प्रयाण तथा प्रवेश बन्नेमां शुभ छे.

रात्रिनो छेल्लो प्रहर तथा दिवसनो पहेलो प्रहर ए बे प्रहर सुधी सूर्य पूर्व दिशामां चाले छे. दिवसना मध्यना बे पहोर सुधी दक्षिण दिशामां रहे छे, दिवसनो छेल्लो प्रहर अने रातनो पहेलो पहोर ए बे पहोर सुधी पश्चिममां चाले छे, तथा रात्रिना मध्यना बे पहोर सुधी उत्तर दिशामां रहे छे.

नारचंद्रमां तो सर्व ग्रहोने उदयसमयथी आरंभीने भ्रमण करवाना वशथी (गतिने आश्रीने) आठे दिशानो स्पर्श कहेलो छे. ते आ प्रमाणे.—

"स्वस्योदयस्य समयात्पूर्वयामा(म्या)दितः क्रमात् ।
संचरन्ति ग्रहाः सर्वे सर्वकालं दिगष्टके ॥ १ ॥"

"सर्वे ग्रहो पोतपोताना उदयसमयथी आरंभीने पूर्व, दक्षिण विगेरेना क्रमे करीने सर्वदा आठे दिशाओमां गति करे छे."

सूर्य जमणी बाजुए रह्यो होय तो ते समयनुं प्रयाण शुभकारक छे. ते विषे लल्ल कहे छे के—

"न तस्याङ्गारको विष्टिर्न शनैश्चरजं भयम् ।
व्यतिपातो न दुष्येच्च यस्यार्को दक्षिणस्थितः ॥ १ ॥"

"जेना प्रयाणमां सूर्य जमणी बाजुए रह्यो होय तेने अंगारक नडतो नथी, विष्टिनो पण दोष लागतो नथी, शनिथी उत्पन्न थयेलो भय लागतो नथी, तथा व्यतिपात पण दुषित करतो नथी."

तेथी करीने ज नक्षत्रसमुच्चयमां पण कह्युं छे के—

"पूर्वाह्णे चोत्तरां गच्छेत्प्राच्यां मध्यंदिने तथा ।
दक्षिणामपराह्णे तु पश्चिमामर्धरात्रके ॥ १ ॥"

"दिवसना पहेला भागमां उत्तर दिशा तरफ प्रयाण करवुं, मध्याह्नसमये पूर्व दिशामां प्रयाण करवुं, सायंकाळे दक्षिणमां प्रयाण करवुं, अने अर्धी रात्रिए पश्चिममां

प्रयाण करवुं." आ रीते प्रयाण करवाथी सूर्य जमणी बाजुए ज रहे छे ए आ श्लोकनुं तात्पर्य छे.

लग्न फरीथी पण चंद्र अने सूर्यना वारनी अनुकूळता ज कहे छे के—

"रविशशिकरप्रदीप्तां मकरादावुत्तरां च पूर्वां च।
याथाच्च कर्कटादौ याम्यामाशां प्रतीचीं च ॥ १ ॥
अयनानुकूलयानं हितमर्केन्द्वोर्द्वयोरसंपत्तौ।
द्युनिशं प्रगृह्य यायाद्विपर्यये क्लेशवधबन्धाः ॥ २ ॥"

"मकरादिकमां सूर्य अने चंद्रनां किरणोथी प्रदीप्त थयेली उत्तर तथा पूर्व तरफ प्रयाण करवुं, अने कर्कादिकमां दक्षिण तथा पश्चिम दिशामां प्रयाण करवुं. सूर्य अने चंद्र ए बेउनी अप्राप्ति होय तो अयनने अनुकूळ प्रयाण हितकारक छे, एटले रात्रि दिवसने ग्रहण करीने गमन करवुं. तेथी उलटुं करवाथी क्लेश, वध अने बंधन थाय छे." अहीं भावार्थ ए छे जे—"ज्यारे सूर्य अने चंद्र मकरादिक छ राशिमां एटले उत्तरायणमां होय त्यारे पूर्वमां तेमज उत्तरमां सर्वदा (रात दिवस) गमन करवुं, अने ज्यारे कर्कादिक छ राशिमां एटले दक्षिणायनमां होय त्यारे दक्षिण अने पश्चिममां सर्वदा गमन करवुं, पण सूर्य अने चंद्र जो एक अयनमां न होय तो अनुक्रमे दिवसे अने रात्रिए गमन करवुं, एटले के ज्यारे सूर्य उत्तरायणमां होय त्यारे दिवसना भागमां उत्तर तथा पूर्वमां गमन करवुं, अने ज्यारे सूर्य दक्षिणायनमां होय त्यारे दिवसना भागमां दक्षिण अने पश्चिममां गमन करवुं. ए ज प्रमाणे चंद्र उत्तरायणमां होय त्यारे रात्रिए उत्तर तथा पूर्वमां गमन करवुं अने दक्षिणायनमां होय त्यारे रात्रिए दक्षिण अने पश्चिममां गमन करवुं. एथी उलटुं करवाथी अशुभ छे, एटले के सूर्य अने चंद्र मकरादिकमां रह्या होय त्यारे जो दक्षिण अने पश्चिममां गमन करे, तथा कर्कादिकमां रह्या होय त्यारे जो उत्तर अने पूर्वमां गमन करे, तथा सूर्य मकरादिकमां रह्यो होय त्यारे दिवसना भागमां जो दक्षिण अने पश्चिममां गमन करे, अने चंद्र कर्कादिकमां रह्यो होय त्यारे जो रात्रिए उत्तर के पूर्वमां गमन करे तो गमन करनारने वध, बंध विगेरे दोष प्राप्त थाय छे.

हवे रविचारने ज हंस (वायु)नी गति (स्वरोदय)वडे विशेष प्रकारे कहे छे.—

हंसेऽन्तरा विशति दक्षिणतोऽथ पृष्ठे,
कृत्वा रविं प्रवहनाग्निपदं पुरश्च।
सिद्धयै व्रजेदथ विजेतुमना विपक्ष-
पक्षं स्वतस्तु विदधीत वितानपक्षे ॥ १७ ॥

अर्थ—प्राण वायु नासिकामां प्रवेश करतो होय ते वखते सूर्यने (सूर्यनी दिशाने) जमणी बाजुए अथवा पछवाडे राखीने जे नासिकानी नाडी वधारे चालती होय ते तरफनुं पगलुं प्रथम मूकीने प्रयाण करवुं ते सिद्धिने माटे छे. शत्रुने जीतवानी इच्छावाळाए पोतानी जे तरफनी नाडी वहेती न होय ते तरफ शत्रु पक्षने करवो.

अध्यात्मशास्त्रनी रीते हंस ए प्राण वायु कहेवाय छे. ते प्राण वायु नासिकामां प्रवेश करतो होय त्यारे प्रयाण करवुं, पण बहार नीकळतो होय ते वखते प्रयाण करवुं नहीं. प्राण वायुनी गति आगति विषे अध्यात्मने जाणनारा आ प्रमाणे कहे छे.—

"षट्शतान्यधिकान्याहुः सहस्राण्येकविंशतिम् ।
अहोरात्रे नरे स्वस्थे प्राणवायोर्गमागमः ॥ १ ॥"

"मनुष्य स्वस्थ होय त्यारे एक रात्रि दिवसमां थइने प्राण वायुनुं गमन आगमन (श्वासोच्छ्वास) एकवीश हजार अने छसो थाय छे, एम कहे छे."

जे तरफनी नाडी चालती होय ते तरफनुं पगलुं एटले डाबी चालती होय तो डाबुं अने जमणी चालती होय तो जमणुं पगलुं आगळ करीने कार्यनी सिद्धि माटे गमन करवुं. ते विषे विवेकविलासमां कह्युं छे के—

"दक्षिणे यदि वा वामे यत्र वायुर्निरन्तरः ।
तं पादमग्रतः कृत्वा निस्सरेन्निजमन्दिरात् ॥ १ ॥
न हानिकलहोद्वेगाः कंटकैर्नापि छिद्यते ।
निवर्त्तते सुखेनैव क्षुद्रोपद्रववर्जितः ॥ २ ॥
दूरदेशे विधातव्यं गमनं तुहिनद्युतौ ।
अभ्यर्णदेशे दीप्ते तु तरणाविति केचन ॥ ३ ॥"

"जमणी अथवा डाबी जे नासिकामां वायु निरंतर संचार करतो होय ते तरफनो पग आगळ करीने पोताना घरमांथी नीकळवुं. (१). ते रीते प्रयाण करवाथी हानि, क्लेश के उद्वेग थता नथी, कंटकवडे पण छेदातो नथी एटले के मार्गमां कांटो सरखो पण वागतो नथी, तथा क्षुद्र उपद्रवो रहित सुखेथी ज पाछो फरे छे—आवे छे. (२). केटलाएक कहे छे के दूर देशमां जवुं होय तो चंद्र नाडी एटले डाबी नासिका चालती होय त्यारे ते तरफनो पग आगळ करीने चालवुं, अने समीप देशमां जवुं होय तो सूर्य नाडीने आगळ करीने जवुं एटले जमणी नासिकामां प्राण वायु चालतो होय त्यारे जमणो पग प्रथम मूकीने चालवुं. (३) (डाबी नासिकाने चंद्र नाडी कहे छे, जमणी नासिकाने सूर्य नाडी कहे छे तथा बन्ने समान चालती होय तो सुषुम्णा नाडी कहे छे.)

स्वरोदयने जाणनारा आचार्यो आ प्रमाणे विशेष कहे छे के—"जमणी नाडीमां प्राण

वायु प्रवेश करतो होय त्यारे विषम (१–३–५–७–९) पगले चालवुं अने पश्चिम तथा दक्षिण दिशामां न चालवुं, अने डाबी नाडी प्राण वायुवडे पूर्ण थइ होय त्यारे सम (२–४–६–८–१०) पगले चालवुं, अने ते वखते पूर्व तथा उत्तर दिशा तरफ न जवुं."

आ प्रमाणे प्राण वायु विगेरेनी शुद्धि होय त्यारे जिनेश्वरनी प्रदक्षिणा करीने जवाथी विशेषे करीने सर्व कार्यनी सिद्धि थाय छे. ते विषे यतिवल्लभमां कह्युं छे के—

"प्राणप्रवेशे वहनाडिपादं, कृत्वा पुरो दक्षिणमर्कबिम्बम् ।
प्रदक्षिणीकृत्य जिनं च याने, विनाप्यहःशुद्धिमुशन्ति सिद्धिम् ॥ १ ॥"

"प्राण वायु नासिकामां प्रवेश करतो होय त्यारे जे तरफनी नाडी चालती होय ते तरफनो पग आगळ मूकीने तथा सूर्यने (सूर्यनी दिशाने) जमणी बाजु राखीने तथा जिनेश्वरनी प्रदक्षिणा करीने प्रयाण करे तो दिवसनी शुद्धि नहीं छतां पण कार्यसिद्धि थाय छे."

प्रयाणना उपलक्षणथी प्रवेश करवामां पण आ सर्व विधि ज जाणवो. ते विषे दिनशुद्धिमां कह्युं छे के—

"पुन्ननाडि दिसा पायं अग्गे किच्चा सया विऊ ।
पवेसं गमणं कुज्जा कुणंतो साससंगहं ॥ १ ॥"

"श्वासनो संग्रह करीने एटले प्राण वायु नासिकामां प्रवेश करतो होय त्यारे पूर्ण नाडी तरफना पगने आगळ करीने विद्वान् पुरुषोए सर्वदा प्रवेश अने गमन करवुं."

शत्रुने जीतवानी इच्छावाळाए पोताना वायुसंचारवाळा पार्श्वथी डाबी बाजुए शत्रुने राखवो, एटले के जे तरफ वायु चालतो न होय ते तरफ शत्रुने राखवो के जेथी ते सुखेथी जीताय छे. अर्थात् इष्ट जन होय तो तेने पूर्ण अंग तरफ राखवो, एटले के जे तरफ श्वास चालतो होय ते तरफ इष्ट जनने राखवो. ते विषे विवेकविलासमां कह्युं छे के—

"अरिचौराधमर्णाद्या अन्येऽप्युत्पातविग्रहाः ।
कर्त्तव्याः खलु रिक्तांगे जयलाभसुखार्थिभिः ॥ १ ॥
गुरुबन्धुनृपामात्या अन्येऽपीप्सितदायिनः ।
पूर्णांगे खलु कर्त्तव्याः कार्यसिद्धिमभीप्सता ॥ २ ॥"

"शत्रु, चोर, देणदार विगेरे तथा बीजा पण उत्पात करनाराने जय, लाभ अने सुखने इच्छता पुरुषोए रिक्तांगे करवा, एटले जे तरफ प्राण वायु चालतो न होय ते तरफ करवा-(१). अने कार्यसिद्धिने इच्छता पुरुषे गुरु, बंधु, राजा, प्रधान विगेरे तथा बीजा पण इष्ट वस्तुने आपनार जनोने पूर्णांगे करवा, एटले जे तरफनी नाडी चालती होय ते तरफ

करवा."(२) अहीं पण "सूर्यने (सूर्यनी दिशाने) जमणी बाजु अथवा पछवाडे राखवो." ए अर्थ समजवो. ते विषे यतिवल्लभमां पण कह्युं छे के—

"वहनाडिगतो वाच्यो दक्षिणेऽर्केऽर्थलब्धये ।
रिक्तनाडीगतः शत्रुर्जीयते पृष्ठगे रवौ ॥ १ ॥"

"सूर्यने जमणी बाजुए राखीने चालती नाडी तरफनो प्रथम पग मूकी गमन करे तो द्रव्यनी प्राप्ति थाय, अने सूर्यने पछवाडे राखीने शत्रुने रिक्त (खाली) नाडी तरफ राखे तो ते शत्रुनो पराजय थाय छे."

हवे शुक्रचार कहे छे.—

शुक्रस्तु यत्रोदयति भ्रमन् वा, यां याति यद्द्वारकमेति भं वा ।
इत्थं त्रिधा तद्दिशि संमुखः स्यात्त्याज्यस्तु तत्रोदयसंमुखीनः ॥ १८ ॥

अर्थ—शुक्र जे दिशामां उदय पामे छे अथवा फरतो फरतो जे दिशामां जाय छे, अथवा जे दिशाना द्वारवाळा नक्षत्रने पामे छे ते दिशामां सन्मुख होय छे, एटले के ते शुक्र आ त्रण रीते सन्मुख कहेवाय छे. तेमां (ते त्रणमां) उदय सन्मुख शुक्र तजवा योग्य छे.

शुक्र पूर्व अथवा पश्चिम जे दिशामां उदय पामे छे ते दिशामां जनारा मनुष्यने ते सन्मुख होय छे. अथवा जेम सूर्यने फरवाना (गतिना) वशथी चारे दिशानो स्पर्श कह्यो छे, तेम शुक्र पण भमतो भमतो जे जे दिशामां जाय छे ते ते दिशामां जनार माणसने ते शुक्र सन्मुख होय छे. अथवा जे मेषादिक चार चार राशिओ अने पूर्वादिक चार चार दिशाउ, तेमने विषे भ्रमण करतां प्राप्त थयेलो शुक्र ते ते दिशामां जनारने सन्मुख होय छे. अथवा परिघचक्रमां कहेली रीत प्रमाणे जे दिशाना द्वारवाळुं नक्षत्र होय, ते नक्षत्रमां आवेलो शुक्र पण ते ते दिशामां जनारने सन्मुख होय छे. आ रीते त्रण प्रकारे शुक्र सन्मुख होय छे तोपण शुक्रनी उदयनी दिशा के जे पूर्व के पश्चिम ज होय छे ते ज त्याग करवा योग्य छे. विशेष ए छे जे जमणी बाजुए रहेलो पण शुक्र तजवा योग्य छे. ते विषे नारचंद्रमां कह्युं छे के—

"अग्रतो लोचनं हन्ति दक्षिणो ह्यशुभप्रदः ।
पृष्ठतो वामतश्चैव शुक्रः सर्वसुखावहः ॥ १ ॥"

"शुक्र सन्मुख होय तो नेत्रनो नाश थाय, जमणी बाजुए होय तो अशुभ फळ आपे, तथा पाछळ अथवा डाबी बाजुए होय तो सर्व सुखने करनार थाय छे."

केटलाक आ प्रमाणे कहे छे.—

"पौष्णाश्विनीपादमेकं यदा वहति चन्द्रमाः ।
तदा शुक्रो भवेदन्धः संमुखं गमनं शुभम् ॥ १ ॥"

"रेवती (आखुं) अने अश्विनीना पहेला पाद सुधी ज्यारे चंद्रमा होय छे त्यारे शुक्र अंध होय छे, माटे ते वखते सन्मुख शुक्र होय तोपण ते दिशामां गमन करवुं शुभ छे." केटलाएक आ श्लोकनुं पूर्वार्द्ध आ प्रमाणे कहे छे—"अश्विन्या वह्निपादान्तं यावच्चरति चन्द्रमाः"। "ज्यारे अश्विनी, भरणी तथा कृत्तिकाना पाद सुधी चंद्रमा होय छे त्यारे शुक्र अंध छे विगेरे."

तथा लल्ल कहे छे के—

"काश्यपेषु विसिष्ठेषु भृग्वत्र्याङ्गिरसेषु च ।
भारद्वाजेषु वात्स्येषु प्रतिशुक्रं न विद्यते ॥ १ ॥
एकग्रामे पुरे वापि दुर्भिक्षे राष्ट्रविभ्रमे ।
विवाहे तीर्थयात्रायां वत्सशुक्रौ न चिन्तयेत् ॥ २ ॥
स्वभवनपुरप्रवेशे देशानां विभ्रमे तथोद्वाहे ।
नववध्वागमने च प्रतिशुक्रविचारणा नास्ति ॥ ३ ॥"

"काश्यप, विसिष्ठ, भृगु, अत्रि, अंगिरस, भारद्वाज अने वत्स ए सात ऋषिओना मतमां त्रणे प्रकारना शुक्रनो निषेध नथी. एक गाममां, पुरमां, दुकाळमां, राज्यना उपद्रवमां, विवाहमां अने तीर्थयात्रामां, आटले स्थळे वत्स अने शुक्रनो विचार करवो नहीं. पोताना घरमां एटले स्वाभाविक रीते घरमां प्रवेश करवो होय त्यारे सन्मुख शुक्रनो विचार करवो नहीं, पण नवा घरमां प्रवेश करवो होय त्यारे तो त्रणे प्रकारना शुक्रनो त्याग करवो जोइए एम आगळ कहेशे. तथा पुरप्रवेशमां, देशावरोमां जाव आव करवामां, विवाहमां, नवी वहुने तेडी लाववामां, आटले स्थळे त्रणे प्रकारना शुक्रनो विचार करवो नहीं. अर्थात् सन्मुख शुक्रनो त्याग करवो."

तथा शुक्रनी बाल्यावस्थामां, वृद्धावस्थामां, नीचपणामां, अस्तपणामां, वक्रगतिपणामां अने बीजा ग्रहथी पराजय पामेलो होय त्यारे ए विगेरेमां यात्रा करवी अशुभ छे, केमके—"यात्रामां शुक्र बळवान् लेवो" एम कह्युं छे. तथा रत्नमाळामां पण कह्युं छे के—

"नीचगे ग्रहजितेऽथ विलोमे, भार्गवे कलुषितेऽस्तमिते वा ।
प्रस्थितो नरपतिः सबलोऽपि, क्षिप्रमेव वशमेति रिपूणाम् ॥ १ ॥"

"शुक्र नीच स्थानमां रह्यो होय, बीजा ग्रहवडे जीतायो होय, वक्र थयो होय, कलुष थयो होय एटले बाळ के वृद्ध होय, तथा अस्त पाम्यो होय, ते वखते जो राजाए प्रयाण कर्युं होय तो ते बळवान् छतां पण तत्काळ शत्रुने वश थइ जाय छे."

शुक्रना उदय अने अस्तना दिवसनी संख्या स्वाभाविक रीते आ प्रमाणे नारचंद्र टिप्पणीमां कहेली छे.—

"प्राच्यां भृगुर्जलधितत्त्व २५४ दिनानि तिष्ठे-
त्तत्रास्तगस्तु नयनाद्रि ७२ दिनान्यदृश्यः ।
तिष्ठेच्च षोडशकृतिं २५६ दिवसान् प्रतीच्या-
मस्तं गतस्त्विह सयक्ष १३ दिनान्यदृश्यः ॥ १ ॥"

"पूर्व दिशामां उदय पामेलो शुक्र २५४ दिवस सुधी रहे, त्यारपछी अस्त पामे, ते ७२ दिवस सुधी अदृश्य रहे. त्यारपछी पश्चिम दिशामां उदय पामे, ते २५६ दिवस सुधी रहे, अने त्यारपछी अस्त पामे, ते १३ दिवस सुधी अदृश्य रहे."

"पोताना जन्मनक्षत्रनो स्वामी अस्त पाम्यो होय ते वखते पण यात्रा करवी अशुभ छे," एम दैवज्ञवल्लभमां कह्युं छे.

हवे शुक्रचारना फळमां मतांतर कहे छे.—

प्रतिशुक्रं त्यजन्त्येके यात्रायां त्रिविधं बुधाः ।
तस्मात्प्रतिकुजं कष्टं ततोऽपि प्रतिसोमजम् ॥ १९ ॥

अर्थ—केटलाएक पंडितो यात्रामां त्रणे प्रकारथी सन्मुख (प्रतिकूळ) शुक्रनो त्याग करे छे. ते (प्रतिकूळ शुक्र) थकी प्रतिकूळ मंगळ वधारे कष्टकारक छे, तेथी ते पण त्रणे प्रकारनो तजवो, तेनाथी पण प्रतिकूळ बुध वधारे कष्टकारी छे, तेथी ते पण त्रणे प्रकारनो तजवो.

आ मत पण आ ग्रंथकार आचार्यने संमत छे, तेथी करीने पूर्व श्लोकमां मात्र उदय सन्मुख शुक्रनो त्याग करवानुं कह्युं छे, ते उतावळना कार्यमां जाणवुं. घणी उतावळ न होय तो शक्ति प्रमाणे त्रणे प्रकारनुं सन्मुखपणुं तजवा योग्य छे एम जाणवुं. ते विषे दैवज्ञवल्लभमां पण कह्युं छे के—

"धनिष्ठादिकमश्लेषापर्यन्तं भगणं भृगुः ।
यदा चरति नोदीचीं न प्राचीं च तदा व्रजेत् ॥ १ ॥
मघादिश्रवणान्तानि भानि शुक्रो यदा चरेत् ।
नापाचीं न प्रतीचीं च तदा गच्छेज्जिजीविषुः ॥ २ ॥"

"ज्यारे शुक्र धनिष्ठाथी अश्लेषा सुधीना नक्षत्रमां रह्यो होय त्यारे उत्तर अथवा पूर्व दिशामां जीववानी इच्छावाळाए प्रयाण करवुं नहीं, अने ज्यारे शुक्र मघाथी श्रवण सुधीनां नक्षत्रमां रह्यो होय त्यारे दक्षिण के पश्चिम दिशामां जीववानी इच्छावाळाए प्रयाण करवुं नहीं."

शुक्र थकी मंगळ अने मंगळथी पण बुध वधारे कष्टकारक छे, ते विषे दैवज्ञवल्लभमां कह्युं छे के—

"प्रतिशुक्रेऽपि निर्गच्छेदनुकूलो बुधो यदि ।
गतः प्रतिबुधे नान्यैः शक्यते रक्षितुं ग्रहैः ॥ १ ॥"

"जो बुध अनुकूळ होय तो त्रण प्रकारे शुक्र प्रतिकूळ छतां पण प्रयाण करवुं, अने जो प्रतिकूळ बुधमां प्रयाण कर्युं होय तो तेने बीजा ग्रहो रक्षण करवाने शक्तिमान नथी." "शुक्रनी ज जेम मंगळ तथा बुध पण सन्मुख रहेला अथवा जमणी तरफ रहेला होय तो ते तजवा योग्य छे" एम त्रिविक्रम कहे छे. "बुध सन्मुख होय तो ज तेने तजवो" एम रत्नमाला भाष्यमां कह्युं छे.

हवे वत्सचार कहे छे.—

वत्सः प्राच्यादिषूदेति कन्यादित्रित्रिगे रवौ ।
प्रवासवास्तुद्वारार्चाप्रवेशाः संमुखेऽत्र न ॥ २० ॥

अर्थ—कन्या संक्रांतिथी आरंभीने त्रण त्रण संक्रांतिमां रहेलो सूर्य होय त्यारे पूर्वादिक चार दिशामां अनुक्रमे वत्स उदय पामे छे, एटले के कन्या, तुल अने वृश्चिक संक्रांति होय त्यारे पूर्व दिशामां वत्सनो उदय होय, धन, मकर अने कुंभ संक्रांतिमां दक्षिण दिशाए, मीन, मेष अने वृष संक्रांतिमां पश्चिम दिशाए अने मिथुन, कर्क अने सिंह संक्रांतिमां उत्तर दिशाने विषे वत्सनो उदय होय छे. आ वत्स सन्मुख होय एवी रीते प्रवास (प्रयाण) करवो नहीं, घर विगेरेनुं द्वार मूकवुं नहीं, तथा जिनेश्वरादि प्रतिमानो धनिकना घरमां प्रवेश कराववो नहीं.

नारचंद्र टिप्पणीमां वत्सनुं शरीर आ प्रमाणे कह्युं छे.—

"वपुरस्य शतं हस्ताः शृंगयुगं षष्टि संयुता त्रिशती ।
पन्नाभिपुच्छशिरसां भूप १६ नव ९ त्रि ३ शर ५ करमानम् ॥ १ ॥"

"आ वत्सनुं शरीर सो हाथ उंचुं छे, तेनां बन्ने शींगडां ३६० हाथ लांबां छे, पग सोळ हाथ, नाभि नव हाथ, पूंछडुं त्रण हाथ अने मस्तक पांच हाथनुं छे."

वत्सचार संबंधी विशेष ज्योतिषसारमां आ प्रमाणे कह्युं छे.—

"पंच १ दिक् २ तिथि ३ सत्रिंश ४ तिथि ५ दिक् ६ शर ७ वासरान् ।
वत्सस्थितिर्दिक्चतुष्के प्रत्येकं सप्तभाजिते ॥ १ ॥"

"चारे दिशामांनी प्रत्येक दिशाना सात सात भाग करवा. तेमां पहेला भागमां वत्सनी स्थिति पांच दिवसनी छे, बीजामां दश, त्रीजामां पंदर, चोथामां त्रीश, पांच-

मामां पंदर, छठ्ठामां दश अने सातमा भागमां पांच दिवसनी स्थिति छे, एटले के आटला आटला दिवस ते ते भागमां अनुक्रमे वत्स रहे छे.”

वत्सचार तथा वत्सनी स्थितिनुं चक्र—

पूर्व

५ ५ | १० | १५ | ३० | १५ | १० | ५ ५

कन्या तुला वृश्चिक

उत्तर: १० | १५ | ३० | १५ | १०
मिथुन कर्क सिंह

धन मकर कुंभ
दक्षिण: १० | १५ | ३० | १५ | १०

मीन मेष वृष

५ ५ | १० | १५ | ३० | १५ | १० | ५ ५

पश्चिम

आ वत्सने केटलाक आचार्यो “वास्तु” एवे नामे पण कहे छे.

हवे वत्सचारनुं फळ कहे छे.—

संमुखोऽयं हरेदायुः पृष्ठे स्याद्धननाशनः ।
वामदक्षिणयोः किं तु वत्सो वाञ्छितदायकः ॥ २१ ॥

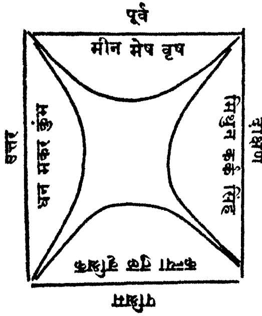
अर्थ—आ वत्स सन्मुख रह्यो होय तो आयुष्य हरे छे, पाछळ होय तो धननो नाश करे छे, पण डाबी तथा जमणी बाजु रह्यो होय तो ते वांछितने आपनार थाय छे.

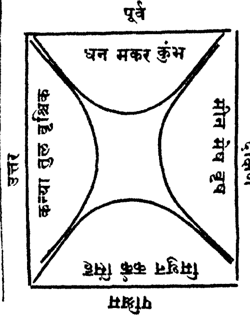
बीजा आचार्यो वत्सनी ज जेम सूर्य विगेरे सर्वे ग्रहोनां घरो आ प्रमाणे कहे छे.—

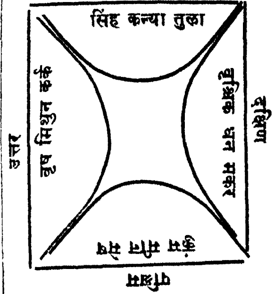
“मीनादित्रयमादित्यो वत्सः कन्यादिकत्रये ।
धन्वादित्रितये राहुः शेषाः सिंहादिकत्रये ॥ १ ॥”

“सूर्य मीनथी आरंभीने त्रण त्रण संक्रांति सुधी अनुक्रमे पूर्वादिक दिशामां रहेलो छे, वत्स कन्या संक्रांतिथी आरंभीने, राहु धन संक्रांतिथी आरंभीने अने बाकीना ग्रहो सिंह संक्रांतिथी आरंभीने पूर्वादिक दिशामां रहेला छे.

रविचार चक्र	राहुचार चक्र	चंद्र, मंगळ, बुध, गुरु, शुक्र, शनिचार चक्र







वत्सचार चक्र उपर आप्युं छे.

अहीं प्रसंगोपात्त शिवचार लखे छे.—

"मेषेऽर्काद्युत्तरादौ दिशि विदिशि शिवो मासमेकं तथा द्वौ,
संहृत्या[1] संस्थितो विभ्रमति भृशमहोरात्रमध्ये तु सृष्ट्या[2] ।
अध्यर्धे नाडिके द्वे दिशि विदिशि घटीपञ्चकं चैष तिष्ठन् ।
चन्द्रादेः प्रातिकूल्यं हरति किरति शं दक्षिणपृष्ठगोऽसौ ॥ १ ॥"

"मेष राशिमां रहेला सूर्यथी उत्तरादिक दिशामां उत्क्रमथी फरे छे. दिशामां एक मास तथा विदिशामां बे मास सुधी रहे छे. ते शिव एक दिवस रात्रिमां अहने बे वार अनुक्रमे भ्रमण करे छे, तेथी दरेक दिशामां ते शिव अढी अढी घडी रहे छे, अने दरेक विदिशामां पांच पांच घडी रहे छे. भावार्थ ए छे के मेषनो सूर्य होय त्यारे प्रथम अढी घडी शिव उत्तर दिशामां होय, पछी पांच घडी ईशानमां, पछी अढी घडी पूर्वमां एम एक अहोरात्रमां बे वखत फरे छे. पछी वृष तथा मिथुनना सूर्य होय त्यारे बे मास प्रथम पांच घडी वायव्यमां, पछी अढी घडी उत्तरमां एम क्रमे भ्रमण करे छे. पछी कर्कमां प्रथम पश्चिममां आ प्रमाणे जाणवुं. आ शिव जमणी बाजु अथवा पाछळना भागमां रह्यो होय तो चंद्रादिकनी प्रतिकूळतानो नाश करे छे तथा सुख आपे छे. चंद्रादिके करीने ताराउनी तथा तेनी अवस्थाउनी पण प्रतिकूळतानो नाश करे छे एम जाणवुं.

---

१ उत्क्रमथी. २ क्रमथी. १ डाबी बाजुने क्रमे. २ जमणी बाजुने क्रमे.

शिवचार चक्र.

ईशान घडी २॥ / ईशान घडी २॥	पूर्व मकरेऽर्कः घडी २॥	अग्नि घडी २॥ / अग्नि घडी २॥
उत्तर मेषेऽर्कः घडी २॥		दक्षिण तुलार्कः घडी २॥
घडी २॥ वायव्य / वायव्य घडी २॥	कर्केऽर्कः घडी २॥ पश्चिम	नैर्ऋत्य घडी २॥ / नैर्ऋत्य घडी २॥

आ शिवचक्रनी स्थापना स्थूळ प्रमाणवाळी छे. सूक्ष्म प्रमाणवाळी तो आ प्रमाणे छे—

संक्रान्तेराद्यघस्रे स्वदिशि शर ५ पलान्येष भुक्त्वा भ्रमाभ्यां,
पश्चात्सृष्ट्या तटस्थां दिशमटति दशैवं पलान्यन्यघस्रे ।
वृद्धिः पञ्चोत्तरैवं प्रतिदिवसमहो तावदेतस्य यावत्,
संक्रान्तेरन्त्यघस्रे स्थितिरधिककुजं साधनाडीद्वयं स्यात् ॥ २ ॥

"संक्रांतिने पहेले दिवसे शिव पोतानी दिशामां बे भ्रमणे करीने पांच पळ भोगवे छे, एटले के दिवस अने रात्रिमां थइने शिव बे वार भ्रमण करे छे, तेमां पहेला भ्रमणमां पोतानी दिशामां अढी पळ शिव रहे छे अने बीजा भ्रमणमां पण बीजा अढी पळ रहे छे. ए प्रमाणे संक्रांतिने पहेले दिवसे बे भ्रमणे करीने शिव पोतानी दिशामां पांच पळ रहे छे. त्यारपछी सृष्टिना क्रमे बीजी दिशामां जाय छे. ए ज रीते बीजे दिवसे पण बीजी पांच पळो भोगववाथी दश पळ थइ (ए रीते त्रीजे दिवसे पण पांच पळो भोगववाथी पंदर पळ थइ). एज रीते दरेक दिवसे पांच पांच पळनी वृद्धि करतां छेवट संक्रांतिने छेल्ले दिवसे एटले त्रीशमे दिवसे शिवने पोतानी दिशामां दोढसो पळ एटले अढी घडीनी स्थिति थाय छे." त्यारपछी फरीथी संहारे करीने बीजी दिशामां पण आवेला शिवनो आ प्रमाणे ज क्रम जाणवो.

शिवचारनुं फळ आ प्रमाणे छे.—

"विवादे शत्रुहनने रणे झगटके तथा ।
द्यूते चैव प्रवासे वाऽवाम पृष्ठे शिवे जयः ॥ ३ ॥

स्वराश्च शकुना दुष्टा भद्राग्रहबलं तथा ।
दिग्दोषा योगिनीमुख्या अभयाः स्युः शुभे शिवे ॥ ४ ॥"

"वादविवादमां, शत्रुने हणवामां, रणसंग्राममां, झगडामां, द्यूतमां तथा प्रवासमां शिव जमणो अथवा पाछळ होय तो ते जय आपनार छे. अशुभ स्वरोदय, अशुभ शकुन, भद्रा, अशुभ ग्रहोनुं बळ अने योगिनी विगेरे दिशाओना दोषो, ए सर्वे शिव शुभ होय तो निर्भयकारक छे." तथा—

"सूर्यराश्यादितः सव्ये लग्नं तत्कालसंभवम् ।
पृष्ठदक्षिणगं कृत्वा जयेद्युद्धे न संशयः ॥ १ ॥"

"सूर्यनी राशिने आदि करीने एटले सूर्य जे राशिमां होय ते राशिने पूर्व दिशामां मूकीने त्यां सृष्टिने क्रमे (सवळी–जमणी बाजुने क्रमे) तत्काळ संभवतुं जे लग्न आवे एटले ते वखते जे लग्न वर्ततुं होय तेने पाछळ अने जमणी बाजुए राखीने युद्ध करे तो जय पामे. तेमां कांइ पण संशय नथी."

। इति यात्रायां समयशुद्धिः दिक्शुद्धिश्च ।

आ प्रमाणे यात्रामां समयनी शुद्धि अने दिशानी शुद्धि कही.

हवे यात्रामां ज चेष्टा निमित्त विगेरेनी शुद्धि कहे छे.

उत्सवमशनं स्नानं प्रगुणं चोपेक्ष्य मंगलमशेषम् ।
असमापिते च सूतकयुगेऽङ्गनर्तौ च नो यायात् ॥ २२ ॥

अर्थ—कौमुदी विगेरे उत्सव, भोजन, रोगथी मुक्त थयानुं अथवा सामान्य स्नान अने विवाह तथा पुत्रनुं अन्नप्राशन विगेरे सर्व मांगलिक कार्योनी तैयारी होय ते वखते तेनुं उल्लंघन करीने तथा जन्म के मरणनुं सूतक समाप्त कर्या विना तथा ऋतुवाळी भार्या होय त्यारे प्रयाण करवुं नहीं.

अवमन्य माननीयान्निर्भर्त्स्य स्त्रीं च कमपि संताड्य ।
बालमपि रोदयित्वा जिजीविषुर्नैव निर्गच्छेत् ॥ २३ ॥

अर्थ—जीववानी इच्छा राखनारे मानवा योग्य (पूज्य) मनुष्यनी अवगणना करीने, स्त्रीनी तर्जना (तिरस्कार) करीने, कोइने पण ताडन करीने (मारीने), तथा बाळकने रोवडावीने गमन करवुं ज नहीं.

अहीं लल्लनुं आ प्रमाणेनुं वचन लक्षमां राखवा योग्य छे.—

प्रमत्तो व्याधितो भीतः श्रान्तः क्रुद्धो बुभुक्षितः ।
अध्वानं न प्रपद्येत क्लीबवेषस्तथैव च ॥ १ ॥

रात्रौ तु मैथुनं कृत्वा प्रभाते योऽभिगच्छति ।
यात्राकालेऽथवा प्राप्ते मैथुनं यो निषेवते ॥ २ ॥
यो वा प्रस्थानके गत्वा पुनर्गृहमुपागतः ।
इत्येवमादिचेष्टाभिः सिद्धिर्नास्त्यभिगच्छतः ॥ ३ ॥"

"उन्मत्त थयेलो, व्याधिग्रस्त, भय पामेलो, थाकी गयेलो, क्रोध पामेलो, भूख्यो थयेलो तथा नपुंसकना वेषने धारण करेलो, आवा पुरुषे मार्गमां प्रयाण करवुं नहीं. रात्रे मैथुन करीने प्रातःकाळे जे प्रयाण करे छे, अथवा प्रयाण करवानो समय प्राप्त थये जे मैथुनने सेवे छे, अथवा जे प्रस्थान करेले स्थळे जइने पाछो घेर आवे छे, ए विगेरे चेष्टाए करीने प्रयाण करे तेने कार्यसिद्धि थती नथी."

क्षुतगृहकलहज्वलनौतुयुद्धदुर्वचनवसनसंगाद्यम् ।
अशुभं यात्रावसरे शुभमपि शकुनागमाद्विन्द्यात् ॥ २४ ॥

अर्थ—छींक थइ होय, घरमां कंकास थयो होय, घरमां अग्नि लाग्यो होय, बिलाडानुं अथवा पाडा विगेरेनुं युद्ध थतुं होय, दुर्वचन एटले "जइश नहीं, मरी जइश" एवा अमंगळ शब्द बोलाता होय, वस्त्रनो छेडो बारणा विगेरेमां भराइ गयो होय तथा मस्तक अथडायुं होय, ठेस वागवाथी अथवा बीजा कारणथी गतिनी स्खलना थइ होय, आवी चेष्टाओ प्रयाणसमये थइ होय तो शुभ अथवा अशुभनो विचार करीने प्रयाण करवुं अथवा न करवुं. आ सिवाय शकुनना शास्त्रमांथी कहेली चेष्टा विगेरे जाणवुं.

भास्करव्यवहारमां आ प्रमाणे विशेष कह्युं छे.—

"रिक्तोऽनुकूलः कुंभोऽम्भःपूरणाय प्रयोजितः ।
विद्यार्थिचौरवणिजां प्रयाणेऽतीव सिद्धिदः ॥ १ ॥"

"विद्यार्थी, चोर अने वणिकना प्रयाणमां जो कोइ माणस खाली अने अनुकूळ घडो पाणी भरवा लइ जतो होय अने ते माणस प्रयाणमां साथे थयो होय तो कार्यनी सिद्धि थाय, एटले के जेम ते घडो पूर्ण भराइने पाछो आवशे, तेम प्रयाण करनार पण पूर्ण थइने पाछो आवशे एम जाणवुं." तथा रत्नमाळामां कह्युं छे के—

"आद्ये विरुद्धे शकुने प्रतीक्ष्य,
प्राणान्नृपः पञ्च च षट् च यायात् ।
अष्टौ द्वितीये द्विगुणास्तृतीये,
व्यावृत्त्य नूनं गृहमभ्युपेयात् ॥ १ ॥"

"राजाने प्रयाण वखते पहेलुं शकुन अशुभ थयुं होय तो पांच अने छ एटले अगीयार प्राण सुधी राह जोइने पछी प्रयाण करवुं, बीजी वखत पण अशुभ शकुन थाय तो

द्विगुण आठ एटले सोळ प्राण सुधी विलंब करीने पछी चालवुं, अने त्रीजी वार पण अपशकुन थाय तो पाछा फरीने घेर ज आववुं."

आ सिवाय बीजां शकुनो शकुननां आगम (शास्त्र)थी एटले वसंतराज विगेरेनां करेलां शास्त्रोथी जाणवां. अर्थात् बीजा आचार्योए पोतपोताना ग्रंथोमां यात्राना अधिकारमां प्रयाणने योग्य एवां शकुनो पण विस्तारथी कह्यां छे, अमे तो अहीं तेनुं प्रस्तुत (प्रसंग) नहीं होवाने लीधे तथा शकुननां शास्त्रथी पण तेना ज्ञाननो संभव होवाथी कह्यां नथी.

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य अने शूद्र ए चारे वर्णोने साधारण यात्राना विधिने कहीने हवे शत्रुना विजयना प्रयोजनवाळुं नृपादिकनुं प्रयाण चाळीश श्लोकोवडे कहे छे, तेमां प्रथम दुष्ट निमित्तोनो परिहार करे छे.—

आकालिकीषु विद्युद्गर्जितवर्षासु वसुमतीनाथः ।
उत्पातेषु च भौमान्तरिक्षदिव्येषु न प्रवसेत् ॥ २५ ॥

अर्थ—राजाए अकाळे थती एटले गर्भ के वर्षाऋतु विना थती वीजळी, गर्जना तथा वृष्टिने विषे प्रयाण न करवुं, अहीं राजाए करीने सामंतादिक तथा आचार्यादिक पण जाणवा. तथा भौम, अंतरिक्ष अने दिव्य उत्पातोमां प्रयाण न करवुं. अहीं भौम उत्पात एटले भूमिकंप विगेरे, तथा जे चर पदार्थोनुं स्थिर थवापणुं अने स्थिर पदार्थोनुं चल स्वभावपणुं अथवा पुष्प फळादिकनो विकार ए सर्व भौम एटले भूमिना उत्पात जाणवा. अंतरिक्ष (आकाश)ना उत्पात उल्कापात, निर्घात (आकाशमां गडगडाट), पवननुं तोफान, गंधर्व नगर, इन्द्रधनुष, रातो ऐरावण हाथी, परिवेष[1], दंड, परिघ विगेरे जाणवा. तथा दिव्य उपद्रवो एटले चंद्र के सूर्यनुं ग्रहण, ग्रह तथा नक्षत्रनो विकार अने केतुनुं दर्शन ए विगेरे जाणवा. मूळ श्लोकमां च शब्द छे तेथी राहु अने योगिनी (जोगणी) विगेरेनो पण विचार करवो. "आवा समयमां सात दिवस सुधी प्रयाण करवुं नहीं" एम दैवज्ञवल्लभ कहे छे. "एक दिवस तो अवश्य तजवो" एम सारंग कहे छे. "केतु जोयो होय तो सोळ दिवस सुधी प्रयाण न करवुं, पण चैत्र के वैशाख मासमां जोयो होय तो ते शुभ छे" एम वराह कहे छे.

हवे यात्राने योग्य एवुं लग्न कहे छे.—

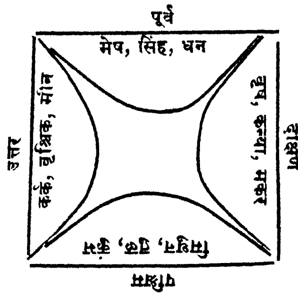
यातव्यं दिग्मुखे लग्ने सिद्धौ शीर्षोदये तथा ।
एतद्विलोमयोर्जातु यात्रा यातुर्न सिद्धये ॥ २६ ॥

---

१ चंद्र सूर्य विगेरेनी फरतुं कुंडाळुं.

अर्थ—मेषादिक राशिउं अनुक्रमे पूर्वादि चार दिशाउंना ईश छे, ते ज प्रमाणे सिंहादिक चार तथा धन्वादिक चार राशिउं पूर्वादिक दिशाउंना ईश छे एम पूर्वे कह्युं छे. ते राशिउं ते ते दिशाना मुखवाळी छे एम ज्योतिर्विंदो कहे छे, तेथी दिग्मुख लग्नमां तथा शीर्षोदयी लग्नमां प्रयाण करवाथी कार्यसिद्धि थाय छे अने तेथी उलटुं एटले उत्तर के पूर्व मुखनुं लग्न होय त्यारे अनुक्रमे दक्षिण के पश्चिममां गमन करवुं अने दक्षिण के पश्चिम मुखवाळा लग्नमां अनुक्रमे उत्तर के पूर्वमां गमन करवुं तथा पृष्ठोदय लग्नमां गमन करवुं ए सिद्धिने माटे नथी. विशेष ए छे के यात्रामां लग्न प्राये चर ज ग्रहण करवुं.

लग्ननुं दिग्मुख चक्र.



लल्ल कहे छे के—"अनिष्टदं दिक्प्रतिलोमलग्नं, पृष्ठोदये वाञ्छितकार्यनाशः"। "प्रतिलोम (उलटी) दिशामां लग्न होय अने गमन करे तो अनिष्ट फळ मळे तथा पृष्ठोदयी लग्नमां गमन करे तो इच्छित कार्यनो नाश थाय."

जन्मलग्ने शुभा यात्रा जन्मराश्युदये तु न ।
तयोश्चोपचयस्थेषु राशिष्विष्टा परेषु न ॥ २७ ॥

अर्थ—यात्रा करनार नृपादिकने जन्मलग्नमां यात्रा करवी शुभ छे, आथी करीने एवुं सूचव्युं के—प्रथम जन्मनुं लग्न जाणीने पछी यात्रानुं लग्न आपवुं जोइए, ते विना लग्न आपवुं नहीं, कारण के जन्मलग्न जाणीने दशा, आयुष्य अने ग्रहनुं बळ जोइने आपेलुं यात्रादिकनुं मुहूर्त्त फळदायक थाय छे. रत्नमाळामां कह्युं छे के—

"अज्ञातजन्मनोऽप्यन्यैर्यानं योज्यमिति स्मृतम् ।
प्रश्नलग्ननिमित्ताद्यैर्विज्ञाते सदसत्फले ॥ १ ॥"

"जन्मलग्न जाणवामां न होय तोपण प्रश्नलग्न अने निमित्त विगेरे अन्य चेष्टाए करीने शुभाशुभ फळ जाणीने प्रयाणनुं मुहूर्त्त आपवुं एम कह्युं छे."

जन्मराशिना उदयमां यात्रा करवी शुभ नथी, एटले के जन्ममां जे ठेकाणे चंद्र होय ते जन्मराशि कहेवाय छे. ते जन्मराशिनुं ज लग्न होय तो तेमां यात्रा करवी शुभ नथी. रत्नमाळामां तो "जन्मराशिना लग्नमां पण यात्रा करवी शुभ छे" एम कह्युं छे. ते जन्मलग्न अने जन्मराशिनी अपेक्षाए उपचयस्थानमां एटले ३-६-१० अने ११ मा स्थानमां रहेली राशिओ यात्रामां शुभ छे. ते सिवाय बीजा स्थानमां होय तो तेमां यात्रा करवी शुभ नथी. विशेष ए छे जे—"शत्रुनी जन्मराशि के जन्मलग्न अथवा ते बन्नेना स्वामी तत्काळना लग्नथी चोथे के सातमे स्थाने होय त्यारे पण यात्रा करवाथी जय थाय छे, अने जो शत्रुनी जन्मराशि अने जन्मलग्ननां उपचयस्थानो चोथे के सातमे स्थाने होय तोपण जय थाय छे," एम रत्नमाळामां कह्युं छे.

पापैरस्तांबुगैर्दृष्टे युते वा जन्मलग्नभे ।
सौम्यग्रहैस्तु नैवं चेत्तदा यातुः पराभवः ॥ २८ ॥

अर्थ—जे कोइ स्थानमां रहेली जन्मलग्ननी राशि यात्रालग्नना सातमा ने चोथा स्थानमां रहेला पापग्रहोए करीने युक्त होय अथवा तेमनी दृष्टि पडती होय, तथा ते ज जन्मलग्ननी राशि सातमा ने चोथा स्थानमां रहेला सौम्य ग्रहोए करीने युक्त के दृष्ट न होय तो (तेवे वखते) प्रयाण करनारनो पराभव थाय. अर्थात् पापग्रहनी जेम सौम्य ग्रहोए युक्त अथवा दृष्ट होय तो पराभव न थाय. विशेष ए छे जे—यात्राने समये जन्मकुंडळी संबंधी आठमुं तथा छठुं स्थान क्रूर अने सौम्य ग्रहोए सहित होय तो ते अशुभ छे. ते विषे दैवज्ञवल्लभमां कह्युं छे के—"वधः प्रयातुस्त्वरिभिः प्रसूतौ, रंध्रारिभे क्रूरशुभान्विते चेत्" । "जन्मनुं आठमुं अने छठुं स्थान जो क्रूर अने शुभ ग्रहोए युक्त होय तो ते वखते शत्रु तरफ प्रयाण करनारनो वध थाय छे."

अष्टमं स्वेन्दुलग्नाभ्यां ताभ्यां षष्ठमथ द्विषः ।
तद्राशिनाथयुक्तं वा लग्नं यातुरनर्थकृत् ॥ २९ ॥

अर्थ—जन्मकाळना चंद्रथी अने जन्मकाळना लग्नथी जे आठमुं लग्न ते यात्रामां तजवा योग्य छे अने ते बन्नेथी जे छठुं लग्न होय ते पण तजवा लायक छे. तथा शत्रुना जन्मलग्नथी अने जन्मराशिथी छठे स्थाने रहेली जे राशि ते जो लग्नमां होय तो तेने पण तजवी. तेमज जन्मराशिथी अने जन्मलग्नथी जे आठमी अने छठी राशि होय तथा शत्रुना जन्मलग्नथी अने जन्मराशिथी जे छठी राशि होय ते छए राशिओना स्वामीए करीने युक्त एवुं जे लग्न ते पण यात्रामां तजवा लायक छे. आ सर्व प्रकारनुं लग्न प्रयाण करनारने अनर्थकारक छे. आ विषे दैवज्ञवल्लभमां कह्युं छे के—

"जन्मर्क्षे १ लग्नाष्टमराशिलग्ने २, षष्ठोदये ४ शत्रुजलग्नतो वा ६।
तद्राशिनाथै ६ रथवोदयस्थैः, करोतु यात्रां विषजक्षणं वा ॥ १ ॥"

"जन्मराशि तथा जन्मलग्नथी आठमी राशिनुं लग्न होय, अथवा शत्रुनी जन्मराशि अने जन्मलग्नथी छठ्ठुं स्थान लग्ननुं होय, अथवा ते सर्वेना स्वामीए करीने युक्त लग्न होय तो तेवा समये प्रयाण करो अथवा विषनुं जक्षण करो, ते बन्ने समान छे."

कर्कवृश्चिकमीनानामुदयेऽंशे च न व्रजेत्।
मूर्त्तिस्थेऽह्र्बले रात्रौ रात्रिवीर्येऽह्नि च ग्रहे ॥ ३० ॥

अर्थ—कर्क, वृश्चिक अने मीननुं लग्न होय अथवा तेनो नवांश होय ते वखते प्रयाण करवुं नहीं. तथा यात्राना लग्नमां रहेलो ग्रह जो दिवसे बळवान् होय तो रात्रे प्रयाण करवुं नहीं अर्थात् दिवसे प्रयाण करवुं अने ते ग्रह जो रात्रे बळवान् होय तो दिवसे प्रयाण करवुं नहीं अर्थात् रात्रे प्रयाण करवुं.

कर्क अने वृश्चिक ए बे कीट (कीडा) छे, तेथी तेमनुं यात्रामां असमर्थपणुं छे, माटे ते बे वर्जवा अने मीन लग्नमां प्रयाण कर्युं होय तो वक्र मार्गे जटकी जटकीने कार्य सिद्ध कर्या विना ज पाछो आवे छे. ते विषे रत्नमाळामां कह्युं छे के—

"वक्रः पन्था मीनलग्नेऽंशके वा, कार्यासिद्धौ स्यान्निवृत्तिश्च तत्र"।

"मीनना लग्नमां अथवा नवांशमां प्रयाण कर्युं होय तो वक्र मार्गमां ज एटले अवळे मार्गे जवाय छे, अने कार्यनी सिद्धि कर्या विना पाछुं अवाय छे." तथा "घडो (कुंज) खाली छे, तेथी कुंजनुं लग्न तथा नवांश पण तजवा योग्य छे" एम पण रत्नमाळामां कह्युं छे.

सिद्ध्यै सौम्येशलग्नानि नौयानं जललग्नेष्वपि।
जानीयाल्लोकतश्चात्र राशीनां वश्यतां मिथः ॥ ३१ ॥

अर्थ—सौम्य स्वामीना लग्नमां प्रयाण करवाथी कार्यसिद्धि थाय छे, अने वहाणनुं प्रयाण जळचर राशिना लग्नमां अथवा तेना नवांशमां पण कार्यसिद्धिने माटे छे, अने वहाण पूर्ण थवाथी विघ्नरहितपणुं तथा लाज ए बन्ने थाय छे. तथा अहीं राशिओनुं परस्पर वशपणुं लोकथी जाणवुं. ते विषे दैवज्ञवल्लजमां कह्युं छे के—

"चतुष्पदा द्व्यंह्रिवशा विसिंहाः, सरीसृपश्चाम्बुचराश्च जक्ष्याः।
सिंहस्य वश्या विसरीसृपाः स्युरूह्यं जनोक्तव्यवहारतोऽन्यत् ॥ १ ॥
स्थलाम्बुसंजूतसरीसृपाख्या, जवन्ति वश्या बलिनां स्वकानाम्।
समा द्युसंस्था विषमान् जजन्ते, वश्या रजन्यां विषमाः समानाम् ॥ २ ॥"

"मेष, वृष, सिंह, धनुषनो पाछलो अर्ध जाग तथा मकरनो पहेलो अर्ध जाग, आटलां

चतुष्पद कहेवाय छे, मिथुन, कन्या, तुला, कुंभ अने धनुषनो पहेलो अर्ध भाग, आटला मनुष्य छे, कर्क, मीन अने मकरनो पाछलो अर्ध भाग, आटलां जळचर छे, अने एक वृश्चिक सरीसृप एटले वृश्चिक. हवे श्लोकना अर्थ आ प्रमाणे छे—सिंह सिवायनां चतुष्पदो मनुष्यने वश्य छे, वृश्चिक अने जळचरो मनुष्यना भक्ष्य (भक्षण करवा लायक) छे. वृश्चिक विनाना सर्वे सिंहने वश छे, बीजुं मनुष्यमां कहेला व्यवहारथी जाणवुं एटले के वृश्चिकने सिंह पण वश्य छे. सर्वे पुरुष राशिओ कन्याने वश्य छे, तथा धनुषने सर्वे वश्य छे विगेरे (१). जो बन्ने राशि परस्पर स्थळचर, जळचर के वृश्चिक होय त्यारे ते बन्नेनी मध्ये जे बळवान् होय तेने बीजो एटले दुर्बळ वश्य होय छे. जेम मेष वृषने वश्य छे, मीन अने कर्क मकरने वश्य छे. वृश्चिकने बीजो निर्बळ वृश्चिक वश्य होय छे. बन्ने मेष के बन्ने वृष विगेरे बन्ने एक ज होय तोपण वृश्चिकनी जेम बळनुं अधिकपणुं विचारीने वश्यपणुं जाणवुं. इष्ट लग्न दिवसे के रात्रिए होय छे. तेमां जो दिवस होय तो सम राशिओ विषम राशिने वश्य होय छे अने रात्रि होय तो विषम राशिओ सम राशिओने वश्य होय छे. आनुं फळ आगळ कहेशे."

जन्मकाले शुभैर्युक्ता द्वितीयास्तरणेश्च ये ।
निष्क्रूरा निर्विकाराश्च ते लग्ने राशयः शुभाः ॥ ३२ ॥

अर्थ—जे राशिओ जन्मकाळे शुभ ग्रहोए युक्त होय, तथा जे राशिओ रविथी बीजी होय, आ सूर्यथी बीजी राशिनी जातकमां "वेशि" एवी संज्ञा (नाम) कही छे. "सूर्याद्वितीयमृक्षं वेशिः" "सूर्यथी बीजुं लग्न वेशि कहेवाय छे," एम कह्युं छे, तथा जे राशिओ निष्क्रूर एटले जन्मकाळे जे राशिमां क्रूर ग्रह न होय एवी होय, तथा जे निर्विकार होय एटले के क्रूर ग्रहे भोगवेली राशि सविकार अने चंद्रे भोगवेली होय ते निर्विकार कहेवाय छे. जन्मकाळे आवी राशिओ होय तो ते यात्राना लग्नमां शुभ जाणवी.

यच्च वश्यं स्वलग्नेन्द्वोर्न च वश्यं द्विषस्तयोः ।
शत्रोरेवाष्टमं ताभ्यां लग्नं यातुर्जयावहम् ॥ ३३ ॥

अर्थ—जे यात्रानुं लग्न पोताना जन्मलग्नने तथा जन्मराशिने वश्य होय, अने शत्रुना जन्मलग्नने तथा जन्मराशिने वश्य न होय, वळी ते यात्रालग्न शत्रुना जन्मलग्न अने जन्मराशिथी आठमे होय, तो ते लग्न यात्रा करनारने जय आपनारुं छे.

आ प्रमाणे आठ श्लोकोवडे यात्राने योग्य लग्न कह्युं. हवे "जत्ता छवग्गसुद्धीए" "यात्रा छ वर्गनी शुद्धिए करीने करवी योग्य छे" एम हर्षप्रकाशमां कह्युं छे, माटे यात्राने योग्य एवा होरादिक पांच वर्ग कहे छे.—

विमुक्ताक्रान्तभोग्यानि राश्यर्द्धान्युष्णरश्मिना ।
ऊर्ध्वतिर्यगधोमुख्यो होराः स्युरुदयावधि ॥ ३४ ॥

अर्थ—जे होरा सूर्ये भोगवीने मूकी दीधी होय ते ऊर्ध्वमुखी कहेवाय छे, जे भोगवाती होय ते तिर्यग्मुखी कहेवाय छे अने जे हजु हवे भोगववानी छे ते अधोमुखी कहेवाय छे. त्यारपछीनी बीजी त्रण होराने ए ज रीते अनुक्रमे ऊर्ध्वमुखी, तिर्यग्मुखी अने अधोमुखी जाणवी, त्यारपछीनी पण त्रण ए ज रीते जाणवी. ए प्रमाणे त्रण त्रण होराने अनुक्रमे उदय सुधी एटले सूर्योदय सुधी ते ते नामवाळी जाणवी. अथवा उदय सुधी एटले लग्नमां अधिकार करेली होरा सुधी जाणवी. आ प्रमाणे त्रण प्रकारनी होरानी कल्पना करवी. तेथी करीने एक दिवस रात्रिमां थइने चोवीश होरा होवाथी तेमना त्रण त्रण प्रकार गणवाथी आठ वखत आवृत्ति थाय छे.

हवे त्रण प्रकारनी होरानुं फळ कहे छे.—

जयमूर्ध्वमुखी होरा विपदस्तिर्यगानना ।
अधोमुखी रणे यातुर्भङ्गं दिशति लग्नगा ॥ ३५ ॥

अर्थ—लग्नमां रहेली ऊर्ध्वमुखी होरा युद्धमां जयने आपे छे, तिर्यग्मुखवाळी आपत्तिने आपे छे, अने अधोमुखी होरा नाशने आपे छे. अर्थात् लग्नमां ऊर्ध्वमुखी होरा आवे ते वखते प्रयाण करवाथी जय थाय छे.

हवे द्रेष्काण विषे कहे छे.—

द्रेष्काणः फलरत्नाढ्यः शुभनाथः शुभेक्षितः ।
शुभोऽशुभस्तु सास्त्राहिपावकः (पाशकः) पापवीक्षितः ॥ ३६ ॥

अर्थ—दरेक राशिमां त्रण त्रण द्रेष्काण होवाथी बारे राशिना मळीने छत्रीश द्रेष्काण होय छे. तेमां जे द्रेष्काण फळ, रत्न तथा उपलक्षणथी पुष्प, भांड (वासण) विगेरेथी युक्त होय, सौम्य स्वामीवाळो होय, सौम्य स्वामीए पूर्ण (चार पाद) दृष्टिए जोयेलो होय, तेमज सौम्य आकारवाळो होय, ते द्रेष्काण जो यात्राना लग्नमां होय तो ते शुभ छे, अने जे द्रेष्काण यात्रालग्नमां अस्त्र, सर्प अने अग्निए करीने युक्त होय अथवा पाश एटले बंधने करीने युक्त होय, तथा क्रूर ग्रहे जोयेलो होय तेमज उपलक्षणथी क्रूर ग्रहे युक्त होय, क्रूर स्वामीवाळो होय अथवा क्रूर आकारवाळो होय तो ते अशुभ छे. कह्युं छे के—

"द्रेष्काणाकारचेष्टागुणसदृशफलं योजयेद्बुद्धिहेतो-
र्द्रेष्काणे सौम्यरूपे कुसुमफलयुते रत्नभांडान्विते च ।

सौम्यैर्दृष्टे जयः स्यात्प्रहरणसहिते पापदृष्टे च भङ्गः,
साग्नौ दाहोऽथ बन्धः सभुजगनिगडे पापयुक्तेऽपि चाऽश्रीः ॥ १ ॥"

"वृद्धिने माटे द्रेष्काणनुं फळ तेना आकार, चेष्टा अने गुणनी सदृश जाणवुं. तेमां जो द्रेष्काण सौम्य आकारवाळो तथा पुष्प, फळ, रत्न अने भांडथी युक्त होय तथा सौम्य ग्रहे जोयेलो होय तो जय थाय छे. हथियार सहित तथा पाप ग्रहे जोयेलो होय तो भंग (नाश) थाय, अग्नि सहित होय तो दाह थाय, सर्प तथा बंधन सहित होय तो बन्धन थाय, अने पाप ग्रहे युक्त होय तो अलक्ष्मी थाय."

द्रेष्काणोनां रूपो (आकारो) बृहज्जातकमां आ प्रमाणे कह्यां छे.—

१ मेष राशिमां पहेलो द्रेष्काण पुरुषरूपे छे, तेना हाथमां परशु छे. अने ते तेणे ऊंचो करेलो छे, वळी ते काळो, रक्त नेत्रवाळो अने क्रूर छे. १. बीजो द्रेष्काण स्त्रीरूपे छे, तेने रातां वस्त्र छे, तेनुं मुख अश्वनी जेवुं छे, तेनुं मुख, ऊरु (साथळ) अने पग लांबा छे, एक पग वडे देखाय छे, तथा चतुष्पद जेवुं तेनुं मुख होवाथी ते चतुष्पद छे. २. त्रीजो द्रेष्काण पुरुष छे, क्रूर, कपिल वर्णवाळो, रातां वस्त्रवाळो तथा ऊंचो करेलो दंड हाथमां राखेलो छे. ३

२ वृष राशिमां पहेलो द्रेष्काण स्त्रीरूपे छे, तेना केश टुंका अने कपायेला छे, उदर मोटुं छे, तेनां वस्त्र तथा भूषणो अग्निथी दग्ध थयेलां छे. १. बीजो द्रेष्काण पुरुषरूपे छे, बकरा जेवा मुखवाळो छे, धान्य, क्षेत्र, वास्तु (घर), हळ अने गाडाना कर्ममां कुशळ छे, तथा ते चतुष्पद छे. २. त्रीजो द्रेष्काण पुरुष छे, तेनुं शरीर तथा पग मोटा छे. ३.

३ मिथुन राशिमां पहेलो द्रेष्काण स्त्रीरूपे छे. ते द्रेष्काणरूप स्त्री स्वरूपवान्, दीन प्रजावाळी, ऊंचा हाथवाळी, ऋतुवाळी तथा अलंकारोमां आदरवाळी छे. १. बीजो द्रेष्काण पुरुषरूपे छे. गरुडनी जेवा मुखवाळो, उद्यानमां रहेलो तथा बखतर अने धनुष बाण धारण करेलो छे, आ खग (पक्षी) छे. २. त्रीजो द्रेष्काण नररूपे छे. रत्नोथी शोभित, पंक्ति, तूण (बाणनुं भाथुं) तथा बखतरने धारण करनार अने धनुर्धारी छे. ३.

४ कर्कमां पहेलो द्रेष्काण नर छे. हाथीना जेवुं शरीर छे, अश्वनी जेवो कंठ छे, सूकर (भुंड) जेवुं मुख छे, पत्र (पांदडां) तथा मूळने धारण करनार छे, आ चतुष्पद छे. १, बीजो द्रेष्काण स्त्री छे, जुवान छे, सर्प सहित छे, अने वनमां रहेनार छे. २. त्रीजो द्रेष्काण नर छे, ते सर्पथी वींटायेलो छे. वहाणमां बेठेलो छे, तथा सुवर्णना आभरणोथी युक्त छे. ३.

५ सिंहमां पहेलो द्रेष्काण नर छे. ते शाल्मली वृक्ष पर बेठो छे, गीध, शीयाळ अने कूतरा जेवो तथा मलिन वस्त्रवाळो छे. आ खग तथा चतुष्पद छे. १. बीजो द्रेष्काण नर छे. अश्वनी आकृतिवाळो, काळुं चर्म अने कंबलने धारण करे छे, धनुर्धारी छे, तेनी नासिकानो अग्र भाग नमेलो छे. आ चतुष्पद छे. २. त्रीजो द्रेष्काण नर छे. तेनुं मुख

रींछ जेवुं छे, वानर जेवी चेष्टा करे छे, दाढी मूछवाळो छे, टुंका केशवाळो छे, तेना हाथमां दंड, फळ अने मांस छे. आ चतुष्पद छे. ३.

६ कन्यामां पहेलो द्रेष्काण स्त्रीरूपे छे. ते द्रेष्काणरूप स्त्री पुष्पोथी भरेला घडाथी युक्त छे, मलिन वस्त्रवाळी छे, ते गुरुना कुळनी इच्छा राखे छे. १. बीजो द्रेष्काण नर छे. तेना हाथमां लेखण छे, ते रंगे श्याम छे, तेने वाळ घणा छे, तेनुं मस्तक वस्त्रथी ढांकेलुं छे, तेना हाथमां विस्तारवाळुं धनुष छे. २. त्रीजो द्रेष्काण स्त्रीरूपे छे. ते द्रेष्काणरूप स्त्री गौरवर्णवाळी, उंची, धोयेलां सारां वस्त्रवाळी छे, तेना हाथमां कुंभ तथा कडछी छे, ते देवालय तरफ जाय छे. ३.

७ तुलामां पहेलो द्रेष्काण नर छे. तेना हाथमां त्राजवां छे, ते चौटामां रहेलो छे, मान तथा उन्मान करवामां चतुर छे तथा भांडनी चिंता करे छे. १. बीजो द्रेष्काण नर छे. तेनुं मुख गीध पक्षीना जेवुं छे, ते घट सहित छे, भूख्यो तथा तरस्यो छे. आ खग छे. २. त्रीजो द्रेष्काण नर छे. ते फळ अने मांसने धारण करनार छे, सुवर्णना तूण (भाथो) तथा बखतरने धारण कर्यां छे, वानरनी जेवो छे, रत्नवडे चित्र विचित्र छे, हाथमां धनुष छे तथा ते वनमां मृगोने भय पमाडे छे. आ चतुष्पद छे. ३.

८ वृश्चिकमां पहेलो द्रेष्काण स्त्रीरूपे छे. ते द्रेकाणरूप स्त्री नग्न छे, स्थानथी भ्रष्ट थयेली छे, तेना पग सर्पथी बांधेला छे, तेनुं रूप मनोहर छे, ते समुद्रमांथी कांठा तरफ आवे छे. १. बीजो द्रेष्काण स्त्रीरूपे छे. ते पतिने माटे सर्पवडे पोताना अंगने वींटे छे, तेनी आकृति काचबा अने कुंभना जेवी छे, ते स्थान तथा सुखने इच्छे छे. २. त्रीजो द्रेष्काण पुरुष छे. सिंह जेवुं तेनुं रूप छे, तेनुं नाक चीबडुं अने मुख काचबा जेवुं छे. आ काचबो तथा चतुष्पद छे. ३.

९ धनमां पहेलो द्रेष्काण नर छे. तेना हाथमां लांबुं धनुष छे, ते मनुष्य जेवा मुखवाळो अने अश्वनी जेवा शरीरवाळो छे. आ चतुष्पद छे. १. बीजो द्रेष्काण स्त्रीरूपे छे. तेनुं अंग गौरवर्ण छे, ते समुद्रमांथी रत्नो काढे छे. २. त्रीजो द्रेष्काण नर छे. ते गौरवर्णवाळो छे, हाथमां दंड राखीने बेठेलो छे, दाढी मूछवाळो छे, रेशमी वस्त्र तथा चर्मने धारण करनारो छे. ३.

१० मकरमां पहेलो द्रेष्काण नर छे. तेने शरीरे घणा वाळ छे, तेनी आकृति सूकर (भुंड) जेवी छे, तेनी दाढाउ स्थूळ छे, ते बंधनथी बंधायेलो छे, तेने रौद्र मुख छे. आ चतुष्पद छे. १. बीजो द्रेष्काण स्त्रीरूपे छे. ते श्याम, अलंकार सहित तथा कानमां लोहना आभूषणथी भूषित छे, २. त्रीजो द्रेष्काण नर छे. तेनुं अंग किन्नर जेवुं छे, तेणे तूण, बखतर अने धनुषने धारण कर्यां छे, तेणे कंबल धारण कर्यो छे, तथा स्कंध उपर रत्न जडित कुंभ उपाड्यो छे. ३.

११ कुंभमां पहेलो द्रेष्काण नर छे. ते चर्मने धारण करनार, गीध पक्षीना जेवा मुखवाळो तथा कंबल सहित छे. आ खग छे. १. बीजो द्रेष्काण स्त्रीरूपे छे. तेनां वस्त्रो मलिन छे, तेणे मस्तक पर भांड राख्यां छे, अग्निवडे शकट (गाडी) बळी जवाथी तेमांथी लोढुं ग्रहण करे छे. २. त्रीजो द्रेष्काण नर छे. ते सिंहना जेवो छे, श्याम छे, तेना कानमां वाळ छे, तेना मस्तक पर मुगट छे, तेणे छाल, पांदडां, रस अने फळ धारण करेलां छे. ३.

१२ मीनमां पहेलो द्रेष्काण नररूपे छे. तेना हाथमां हार, मोती अने शंख छे, तेणे आभूषणो पहेर्यां छे, ते नावमां बेठो छे, अने समुद्र तरे छे. १. बीजो द्रेष्काण स्त्री छे. तेनुं अंग गौर छे, ते नावमां बेठी छे, अने ते समुद्रमांथी कांठा तरफ जाय छे. २. त्रीजो द्रेष्काण नर छे. ते नग्न, भीरु अने चोर तथा अग्निथी व्याकुळ थयेलो छे, तेनुं अंग सर्पथी वींटायेलुं छे, ते गर्ता (खाडा)नी पासे रहेलो छे. आ द्रेष्काण व्याकुळ छे. ३.

आनुं फळ चिंता तथा खोवायेली वस्तुना प्रश्नमां "द्रेष्काणोए करीने (तेने अनुसरीने) चोरो कहेला छे" ए प्रकारे छे. रोगीना प्रश्नमां जो गृध्र, कोल के सर्पनो त्रिंशांश लग्नमां होय तो ते रोगीनुं मरण थाय छे. बंधनथी छूटवाना प्रश्नमां सर्पनो त्रिशांश लग्नमां आवे तो शृंखलाथी के पाशथी बंधन थाय इत्यादि. यात्राना विषयमां आ द्रेष्काणनो जेवी रीते उपयोग छे ते प्रथम कह्यो छे.

द्रेष्काणना स्वामी प्रथम कह्या छे. ते द्रेष्काण शुभ ग्रहे जोयेलो होय एम जे मूळ श्लोकमां कह्युं छे तेमां एवुं समजवुं के जे द्रेष्काण लग्नमां रहेलो छे, ते नामनी राशि यात्रानी कुंडळीमां जे स्थाने होय तेने जो शुभ ग्रहे जोयेली होय तो ते द्रेष्काण शुभ ग्रहे जोयेलो कहेवाय छे. जेमके वृषनो बीजो द्रेष्काण कन्या छे, तेनो स्वामी बुध छे, ते सौम्य छे, तेना उपर बारमा अने पहेला स्थानमां रहेला शुक्र अने गुरुनी पूर्ण दृष्टि पडे छे. ए ज रीते क्रूर स्वामीपणुं अने क्रूरदृष्टिपणुं पण जाणवुं. ए ज प्रमाणे आगळ उदयास्तनी शुद्धि विगेरे कहेवाशे, तेमां पण नवांशादिकनुं सौम्य अने क्रूर स्वामीपणुं तथा सौम्य अने क्रूर दृष्टिपणुं जाणवुं.

शन्यर्केन्दुकुजाँस्त्यक्त्वा शुभोऽन्येषां नवांशकः ।
लग्नवद्द्वादशांशस्तु त्रिंशांशस्तु नवांशवत् ॥ ३७ ॥

अर्थ—शनि, सूर्य, चंद्र अने मंगळना नवांशने छोडीने बीजाना नवांशो शुभ छे. लग्ननी जेम द्वादशांश जाणवो, अने नवांशनी जेवो त्रिंशांश जाणवो. दैवज्ञवल्लभमां कह्युं छे के—

"लग्नेऽर्कस्य नवांशे वाहननाशः कुजस्य वह्निजयम् ।
इन्दोः प्रतापहानिः शनेर्नवांशे मरणमेव ॥ १ ॥"

"लग्नमां सूर्यनो नवांश होय तो वाहननो नाश थाय, मंगळनो होय तो अग्निनो जय थाय, चंद्रनो होय तो प्रतापनी हानि थाय, अने शनिनो नवांश होय तो मृत्यु ज थाय."

लग्ननी जेम द्वादशांश जाणवो, एटले के "यातव्यं दिग्मुखे लग्ने०" श्लोक (२६ मा) थी आरंभीने "यच्च वश्यं स्वलग्नेन्द्वो०" श्लोक (३३ मा) सुधीना आठ श्लोकोमां लग्न संबंधी जे जे कह्युं छे ते सर्व द्वादशांशमां पण समजवुं. त्रिंशांशने नवांशनी जेम जाणवो, एटले के शनि अने मंगळ विना बीजा ग्रहोनो त्रिंशांश शुभ छे, सूर्य अने चंद्रने तो त्रिंशांश ज छे नहीं.

। इति षड्वर्गशुद्धिः ।

आ रीते षड्वर्गनी शुद्धि कही. हवे यात्राने विषे बार भावोने कहे छे.—

तनुः १ कोशो २ भटो ३ यानं ४ मंत्रो ५ऽरि ६ वर्त्म ७ जीवितम् ८ ।
मनः ९ कर्मा १० र्जना ११ मंत्री १२ भावाः स्युरुदयादयः ॥ ३८ ॥

अर्थ—तनु १, कोश २, भट ३, यान ४, मंत्र ५, अरि ६, वर्त्म (अध्वा–मार्ग) ७, जीवित ८, मन ९, कर्म (भाग्य–व्यापार) १०, अर्जन ११, मंत्री १२. आ उदयादिक बार भाव जाणवा. आ बार स्थानोनुं शुभाशुभ फळ ग्रहना बळथी विचाराय छे.

अहीं पूर्वे कहेली बार भावोनी विचारणा प्राये करीने सरखी ज छे, पण विशेषे करीने तो यात्रामां बार भावोने आश्रीने ग्रहनो विचार आ प्रमाणे कहे छे.—

हन्ति योधायकर्मान्यानसौम्यः कर्म चासितः ।
सौम्योऽप्यरिं सितोऽध्वानं चन्द्रश्च तनुजीविते ॥ ३९ ॥

अर्थ—क्रूर ग्रह त्रीजा, अगीयारमा अने दशमा भाव विनाना बीजा सर्व भावोने हणे छे. अर्थात् ३–११–१० भावोने पुष्ट करे छे. तेमां पण शनि दशमा भावने पण हणे छे, अर्थात् बीजा भावोने तो हणे छे ज. केवळ त्रीजा अने अगीयारमा भावने ज पुष्ट करे छे. सौम्य ग्रह पण एटले गुरु, शुक्र, बुध अने चंद्र छठा भावने हणे छे, अने बीजा सर्व भावोने पुष्ट करे छे. क्रूर ग्रह तो क्रूर होवाथी छठा स्थानने हणे छे ज एम अपि शब्दथी ज सिद्ध थाय छे. अहीं कोइ शंका करे छे के सर्व सौम्य ग्रहो छठा भाव सिवाय बीजा सर्व भावोने पुष्ट करे छे के तेमां कांइ विशेष छे ? ते उपर कहे छे के—एक शुक्र सातमा भावने पण हणे छे, अने चंद्र पहेला तथा आठमा भावने पण हणे छे. शुक्र अने चंद्र छठा भावने तो हणे ज छे. ते तो कह्युं ज छे, तेथी करीने आ प्रमाणे भावार्थ थयो.—

"ख १० स्थशनिवर्जमुपचयगाः क्रूराः सर्वगाः शुभाः सौम्याः।
हित्वाऽस्ते ७ सितमष्टम ८ लग्न १ गशशिनं च यात्रायाम् ॥ १ ॥"

"यात्राने विषे दशमा स्थानमां रहेला शनि विनाना सर्वे क्रूर ग्रहो उपचयस्थानमां (३–६–१०–११) रह्या होय तो ते शुभ छे. अर्थात् एक शनि दशमा स्थानमां शुभ नथी. सातमा भावमां रहेला शुक्रने तथा आठमा भावमां अने लग्नमां रहेला चंद्रने छोडीने सर्वे सौम्य ग्रहो सर्व भावमां रहेला शुभ छे."

आ रीते यात्रानी कुंडळीमां सामान्ये करीने बार भावोनो विचार कर्यो. हवे लग्नमां रहेला ग्रहोनो विचार करे छे.—

जन्मन्यनिष्टः सौम्योऽपि न लग्नस्थः शुभो ग्रहः।
तत्रेष्टदस्तु पापोऽपि यात्रालग्नस्थितः शुभः ॥ ४० ॥

अर्थ—सौम्य ग्रह पण जो जन्मसमये आठमे बारमे स्थाने रहेवाए करीने अशुभ होय, अने ते यात्राना लग्नमां पहेला स्थानमां रह्यो होय तो ते शुभ नथी, अने जे क्रूर ग्रह पण जन्मसमये छठे अगीयारमे स्थाने रहेवाए करीने शुभ होय, अने ते यात्राना लग्नमां पहेले स्थाने रह्यो होय तो ते शुभ छे. जन्मसमयना शुभाशुभ ग्रहो विस्तारथी जातकमां आप्या छे, त्यांथी जाणवा. संक्षेपथी तो आ प्रमाणे जाणवुं.—

"क्रूरास्त्रिषडायस्थाः सितेन्दुगुरवोऽन्तिमाष्टरिपुवर्जाः।
द्व्यष्टान्तिमरिपुवर्जो बुधः प्रशस्यो जननसमये ॥ १ ॥"

"जन्मसमये क्रूर ग्रहो त्रीजे, छठे अने अगीयारमे स्थाने रह्या होय तो ते शुभ छे. शुक्र, चंद्र अने गुरु ए त्रण ग्रहो बारमा, आठमा अने छठा स्थान सिवाय बीजे कोइ स्थाने रह्या होय तो ते शुभ छे. तथा बीजा, आठमा, बारमा अने छठा स्थानने वर्जीने बीजा कोइ पण स्थानमां रहेलो बुध शुभ छे."

पापोऽप्यभीष्टदो जन्मलग्नर्क्षस्वामिनोः सुहृद्।
मूर्त्तिस्थितः शुभोऽपि स्यादशुभोऽरातिरेतयोः ॥ ४१ ॥

अर्थ—पहेला स्थानमां रहेलो पापग्रह पण जो जन्मलग्नना स्वामीनो तथा जन्मराशिना स्वामीनो मित्र होय तो ते शुभ छे, अने शुभ ग्रह पण जन्मलग्नना स्वामीनो तथा जन्मराशिना स्वामीनो शत्रु होय तो ते अशुभ छे.

सुहृद्दशापतेः १ सद्यः सफलो २ जनने बली ३।
क्रूरोऽपि त्रिविधो भद्रस्तनौ सौम्योऽपि नेतरः ॥ ४२ ॥

अर्थ—यात्रालग्नमां प्रथम स्थाने रहेलो पापग्रह पण जो दशापतिनो मित्र १,

सद्यः सफळ २ अने जन्मनो बळवान् ३, ए त्रण प्रकारमांनो कोइ पण होय तो ते सारो छे. ते सिवायनो सौम्य ग्रह पण सारो नथी.

यात्राने समये जे ग्रहनी दशा चालती होय ते ग्रह दशापति कहेवाय छे, तेनो जे मित्र ते दशापतिनो मित्र कहेवाय छे. विशेष ए छे जे यात्राने समये दशापति पण बळवान् होवो जोइए. ते विषे लल्ल कहे छे के—

"यात्रा नैव दशापतावुपहते नैवास्तगे नाबले,
नीचस्थे न च नैव वक्रिणि नृणां देया कदाचिद्बुधैः।"

"दशापति हणायेलो (पराजय पामेलो) होय, अस्त पाम्यो होय, बळहीन होय, नीच स्थाने रह्यो होय तथा वक्री थयो होय तो ते वखते पंडितोए मनुष्योने यात्रानुं मुहूर्त्त देवुं नहीं."

दशानो क्रम, तेनुं प्रमाण तथा तेनो विभाग विगेरे स्वरूप जातकादिक ग्रंथोथी जाणवुं. अहीं तेनुं प्रस्तुत नहीं होवाथी तथा ते स्वरूप अत्यंत विस्तारवाळुं होवाथी अहीं लखता नथी, परंतु ते स्थान (विषय)ने शून्य न राखवाने माटे एक वर्षनी दिनदशानुं प्रमाण अहीं स्थूळ दृष्टिए बतावीए छीए.—

"निजनामराशितः प्रभृति गण्यते वर्त्तमानसंक्रान्तेः।
गतदिवसावध्येवं दिवसदशाः स्युः क्रमादेताः ॥ १ ॥
रवी १ न्दु २ भौम ३ ज्ञ ४ शनी ५ ज्य ६ राहु ७-
सकेतु ८ शुक्रेषु ९ नखाः २० खबाणाः ५०।
अष्टाश्वि २८ षड्बाण ५६ रसाग्नि ३६ देव ३३-
देवा ३३ ति शीत्य ३४ भ्रहया ७० दशाहाः ॥ २ ॥
हानिं १ धनं २ रुजं ३ लक्ष्मीं ४ दैन्यं ५ लक्ष्मीं ६ च बन्धनम् ७।
भयं ८ श्रियं ९ चार्कादीनां दद्युर्दिनदशाः क्रमात् ॥ ३ ॥"

"पोताना नामनी राशिथी आरंभीने वर्तमान संक्रांतिना गयेला दिवसो सुधी आ प्रमाणे अनुक्रमे दिनदशा गणवी.—रविनी २० दिवस, चंद्रनी ५० दिवस, मंगळनी २८ दिवस, बुधनी ५६ दिवस, शनिनी ३६ दिवस, गुरुनी ३३ दिवस, राहुनी ३३ दिवस, केतुनी ३४ दिवस अने शुक्रनी ७० दिवस. अहीं एम समजवानुं छे के—पोताना नामनी राशिमां जे दिवसे सूर्यनी संक्रांति बेठी होय ते दिवसथी आरंभीने चालता दिवस सुधीना दिवसो गणवा. जेटला दिवसो गया होय तेमां पहेला वीश दिवस रविनी दिनदशा जाणवी, त्यारपछीना ५० दिवस चंद्रनी दिनदशा जाणवी. ए रीते अनुक्रमे गणतां इष्ट दिवसे जे ग्रहनी दिनदशा आवे ते ग्रह दशापति कहेवाय छे. ते दशापतिनुं

फळ आ प्रमाणे छे.—सूर्यनी दिनदशा हानि कर्ता छे, चंद्रनी दिनदशा धन आपनार छे, मंगळनी दशा रोग आपे छे, बुधनी दशा लक्ष्मी आपे छे, शनिनी दशा दीनता आपे छे, गुरुनी दशा लक्ष्मी आपे छे, राहुनी दशा बंधन करावे, केतुनी दशा भय उपजावे अने शुक्रनी दिनदशा लक्ष्मी आपे छे."

मूळ श्लोकमां सद्यः सफळ ग्रह कह्यो छे, तेनो अर्थ ए छे जे—जे ग्रह इष्ट दिवसे गोचरे करीने अथवा प्रतिकूळ वेधे करीने शुभ होय ते ग्रह सद्यः सफळ कहेवाय छे, अने जे ग्रह गोचरे करीने अथवा अनुकूळ वेधे करीने अशुभ होय ते सद्यः अफळ कहेवाय छे. तथा मूळ श्लोकमां जन्मनो बळवान् ग्रह कह्यो छे, तेनो अर्थ ए छे जे—जन्मकुंडळीमां जे ग्रह बळवान् एटले सर्वोत्कृष्ट बळवाळो होय ते जन्मनो बळवान् कहेवाय छे. तथा ते सिवायनो सौम्य ग्रह पण एटले के जे ग्रह वर्तमान दशाना ईशनो शत्रु होय, अथवा जे ग्रह ते वखते अफळ होय अथवा जे ग्रह जन्मकाळे निर्बळ होय तो तेवो सौम्य ग्रह पण सारो नथी.

अहीं कोइ शंका करे के—जन्मनो बळवान् ग्रह ज्यारे सारो छे त्यारे जे सर्वोत्कृष्ट बळवान् ग्रह आठमा विगेरे स्थानमां रहेवाए करीने अनिष्ट फळने आपनार छे ते पण पहेला स्थानमां ग्रहण करवा लायक थशे. आ शंकानुं समाधान ए छे के—"जन्मन्यनिष्टः सौम्योऽपि" ए उपरना चाळीशमा श्लोकवडे ज तेनो निषेध थाय छे.

तान तथा कारक संज्ञा अने तेनुं फळ कहे छे.—

जन्मकाले विधोर्यद्वाऽन्योऽन्येनोपचयस्थिताः ।
तानाख्याः सौम्यवत्क्रूरा जातकोक्ताश्च कारकाः ॥ ४३ ॥

अर्थ—जन्मकुंडळीमां ज्यां चंद्र रह्यो होय त्यांथी उपचय (३–६–१०–११)-स्थानमां जे जे ग्रहो रहेला होय तेनी चंद्रनी अपेक्षाए तान संज्ञा कहेवाय छे तथा जन्मकाळे जे जे ग्रहो एक बीजाथी उपचयस्थानमां रहेला होय तेमनी पण परस्पर तान संज्ञा कहेवाय छे, एटले के पिता पुत्र, गुरु शिष्य विगेरेनी जेम तान शब्द पण संबंधिवाचक छे, तेथी ते संबंध बन्नेमां रहेलो होवाथी दरेकनी तान संज्ञा कहेवाय छे, कारण के तान शब्दनो अर्थ एवो थाय छे के "तन्वन्ति विस्तारयंति अन्योऽन्यस्य कार्यं इति तानाः" "एक बीजाना कार्यने विस्तारे एटले करे ते तान कहेवाय छे." ए ज प्रमाणे कारक संज्ञानुं बन्नेमां रहेवापणुं अने सार्थकपणुं जाणवुं. ते तान संज्ञावाळा ग्रहो क्रूर होय तोपण सौम्य जेवा जाणवा. तथा जातकने विषे, जे ग्रहोनी कारक संज्ञा कहेली छे ते पण क्रूर होय तोपण सौम्य जेवा जाणवा.

जातकमां कारक संज्ञावाळा ग्रहो आ प्रमाणे कह्या छे.—"जे ग्रहो पोतानी राशिमां, पोताना उच्च स्थानमां अथवा पोताना त्रिकोणमां रह्या होय, ते जो केंद्रस्थानमां होय तो ते सर्वे परस्पर कारक संज्ञावाळा कहेवाय छे. तेमनी मध्ये दशमा केंद्रमां रहेलो ग्रह बीजा ग्रहोनो विशेषे करीने कारक होय छे. आ सर्वे ग्रहोनुं लग्नमां रहेल चंद्रनी दृष्टिए करीने बळवानपणुं जाणवुं. जेम कर्कनुं लग्न होय अने लग्नमां चंद्र होय त्यारे सूर्य, मंगळ, गुरु अने शनि, ए ग्रहो पोतपोताना उच्च स्थानमां रह्या सता परस्पर कारक संज्ञावाळा थाय छे. तेनी स्थापना आ प्रमाणे.—

५ / ६	४ गु. चं.	३ / २
७ श.		१ सू.
८ / ९	१० मं.	११ / १२

तथा लग्नमां जे ग्रह रहेलो होय तेना स्थानथी दशमा अने चोथा स्थानमां रहेलो कोइ पण ग्रह पोताना स्थानमां, पोताना उच्च स्थानमां के पोताना त्रिकोणमां रह्यो न होय तोपण कारक थाय छे. तथा लग्न अने केंद्र विना पण कोइ पण स्थाने रहेला ग्रहना स्थानथी जो कोइ पण ग्रह दशमा स्थानने विषे पोतानुं स्थान, पोतानुं उच्च स्थान अने पोतानुं त्रिकोण, एमांना कोइ पण एकने विषे रह्यो होय अने स्वाभाविक अथवा तात्कालिक मैत्रीए करीने युक्त होय त्यारे ते पण तेनो कारक कहेवाय छे. कह्युं छे के—

"स्वर्क्षोच्चगमूलत्रिकोणगाः, कंटकेषु यावन्त आश्रिताः ।
सर्व एव तेऽन्योऽन्यकारकाः, कर्मगस्तु तेषां विशेषतः ॥ १ ॥
कर्कटोदयगते यथोडुपे, स्वोच्चगाः कुजयमार्कसूरयः ।
कारका निगदिताः परस्परं १, लग्नगस्य सकलोऽम्बराम्बुगः ॥ २ ॥
स्वर्क्षकोणोच्चगः खेटः, खेटस्य यदि कर्मगः ।
सुहृत्तद्गुणसंपन्नः, कारकश्चापि संस्मृतः ॥ ३ ॥"

"पोताना स्थानमां, पोताना उच्च स्थानमां अने मूळ त्रिकोणमां रहेला जेटला ग्रहो कंटक (१-४-७-१०) स्थानमां रह्या होय ते सर्वे परस्पर कारक कहेवाय छे. तेमां पण दशमे स्थाने रहेला ग्रह विशेषे करीने कारक कहेवाय छे. जेमके कर्कना लग्नमां चंद्र रह्यो होय त्यारे पोताना उच्च स्थानमां रहेला मंगळ, शनि, सूर्य अने गुरु, ए चारे परस्पर कारक कहेला छे. तथा दशमा अने चोथा स्थाने रहेलो सर्व कोइ ग्रह स्वगृह, उच्च के त्रिकोणनो न होय तोपण ते लग्ननो कारक थाय छे. पोताना स्थानमां, त्रिकोणमां के उच्चमां रहेलो ग्रह जो दशमा स्थानमां होय तो ते लग्नना ग्रहनो तद्गुणने पामेलो मित्र कहेवाय छे तथा तेने कारक पण कह्यो छे."

जन्मलग्नेशयोस्तानः कारको वापि लग्नगः ।
असौम्योऽपि शुभाय स्याद्व्यस्तः सौम्योऽपि चान्यथा ॥ ४४ ॥

अर्थ—जन्मेश अथवा लग्नेशनो तान अथवा कारक जो लग्नमां रह्यो होय तो ते असौम्य (क्रूर) छतां पण शुभने माटे छे, अने ते सिवायनो सौम्य ग्रह पण अशुभ छे.

यात्रा करवानी इच्छावाळा राजादिकना जन्मसमये जे राशिमां चंद्र रह्यो होय ते राशिनो ईश जन्मेश कहेवाय छे. ते जन्मेश ग्रहनो अथवा जन्मना लग्नेश ग्रहनो जे ग्रह जन्मपत्रिमां तानरूप अथवा कारकरूप होय अने ते क्रूर होय तोपण यात्रानी लग्नपत्रिमां प्रथम स्थाने रहेलो शुभ छे, अने तेथी विपरीत एटले जे सौम्य ग्रह पण जन्मपत्रिकामां जन्मेश के लग्नेशनो तान के कारक न होय ते ग्रह यात्रानी लग्नपत्रिकामां प्रथम स्थाने रहेलो शुभ नथी. अर्थात् यात्रामां तान अने कारकनुं बळ अवश्य ग्रहण करवुं जोइए. दैवज्ञवल्लभमां कह्युं छे के—

"नायकाः स्युः प्रसूतौ ये रक्षका ये च वर्धकाः ।
ते क्रूरा अपि यात्रायां लग्नस्थाः शुभदा ग्रहाः ॥ १ ॥"

"जन्मकाळे जे ग्रहो नायक होय, जे रक्षक होय अने जे वर्धक एटले वृद्धिकारक होय ते ग्रहो क्रूर होय तोपण यात्रामां लग्न (प्रथम) स्थाने रहेला शुभ छे." आ नायक, रक्षक अने वर्धकनुं स्वरूप बृहत् जातकमांथी जाणी लेवुं.

वक्री केन्द्रेऽथ तद्वर्गो लग्ने यातुर्जयापहः ।
गतिप्रमाणवर्णैर्वा विकृतश्च नभश्चरः ॥ ४५ ॥

अर्थ—वक्री ग्रह केंद्रमां रह्यो होय अथवा ते वक्री ग्रहनो वर्ग लग्नमां रह्यो होय तो यात्रा करनारना जयनो नाश करे छे. तथा जे ग्रह गति, प्रमाण अने वर्णे करीने विकृत (विकारवाळो) होय ते पण यात्रालग्नमां प्रथम स्थाने रहेलो अशुभ छे.

सूर्य अने चंद्र वक्री होइ शकता नथी, तेथी मंगळ विगेरे कोइ पण ग्रह यात्रासमये वक्र गतिवाळो होय ते एक ज जो यात्रालग्नमां केंद्रस्थाने रह्यो होय तो ते जयनो नाश करे छे, तो पछी बे त्रण वक्री ग्रह रह्या होय तेमां तो शुं कहेवुं ? अथवा ते ज वक्री ग्रहनो वर्ग एटले होरानो असंभव होवाथी गृह (स्थान), द्रेष्काण अने नवांश विगेरेरूप वर्ग जो लग्नमां होय तो ते पण अशुभ छे, वक्र गतिना दिवसनी अने मार्गगतिना दिवसनी संख्या ज्योतिषसारमां आ प्रमाणे कही छे.—

"पणसट्ठि ६५ इक्कवीसा २१ बारसअहियं सयं च ११२ बावन्ना ५२ ।
चउतीस सयं च १३४ कमा वक्कदिणा मंगलाईणं ॥ १ ॥
सगसयपणाल ७४५ बिणवइ ९२ चुआलसय १४४ पंचसयचउवीसा ५२४ ।
दो अ सया चालीसा २४० मंगलमाईण मग्गदिणा ॥ २ ॥"

"मंगळ, बुध, गुरु, शुक्र अने शनि ए पांच ग्रहोना वक्र गतिना दिवसो अनुक्रमे ६५–२१–११२–५२ अने १३४ छे, तथा मंगलादिकना मार्गगतिना दिवसो अनुक्रमे ७४५–९२–१४४–५२४ अने २४० छे."

गति, प्रमाण अने वर्णे करीने विकृत ग्रह पण यात्रालग्नमां प्रथम स्थाने रहेलो शुभ नथी. तेमां अतिचारी ग्रह गतिए करीने विकृत कहेवाय छे. अतिचारी ग्रहनुं स्वरूप लल्ल आ प्रमाणे कह्युं छे.—

"पक्षं १ दशाहं २ त्रिपक्षी ३ दशाहं ४ मासषट्कतयी ५ ।
अतिचारः कुजादीनामेष चारस्त्वितोऽपरः ॥ १ ॥"

"मंगलादिक ग्रहोनो अतिचार अनुक्रमे पंदर दिवस, दश दिवस, त्रण पक्ष (दोढ मास), दश दिवस अने छ मास सुधी छे. त्यारपछीना दिवसो चार कहेवाय छे."

आ उपर कहेला प्रमाणथी ओछो के अधिक प्रमाणवाळो ग्रह आकाशमां जणातो होय तो ते ग्रह प्रमाणे करीने विकृत कहेवाय छे. ए ज प्रमाणे वर्णे करीने विकृत पण जाणवो. लल्ल तो कहे छे के—"जे ग्रहनुं जन्मनक्षत्र क्रूर ग्रह के उल्कापात विगेरेथी पीडा पामतुं होय ते ग्रह पण यात्रालग्नमां प्रथम स्थाने रहेलो शुभ नथी. ग्रहनां जन्मनक्षत्र आ प्रमाणे छे.—

"विशाखा १ कृत्तिका २ प्यानि ३ श्रवणो ४ भाग्य ५ मिज्यभम् ६ ।
रेवती ७ याम्य ८ मश्लेषा ९ जन्मर्क्षाण्यर्कतः क्रमात् ॥ १ ॥"

---

१ होरा चंद्र अने सूर्यनीज होय छे, ते प्रथम कही गया छे. * भर १ चित्तु २ त्तरसाढा ३ धणि ४ उत्तरफग्गु ५ जिट्ठ ६ रेवइआ ७ । सुराइ जम्मरिक्खा एएहिं वज्जमुसळ पुणो ॥ १ ॥ आ प्रमाणे प्रथम विमर्शमां छे तथा प्रथम विमर्श प्रमाणे ज लग्नशुद्धिमां तथा नारचंद्रमां पण कहेल छे, तेथी विशाखा इत्यादि उपरनो पाठ मतांतर जाणवो.

"रविनुं जन्मनक्षत्र विशाखा छे, चंद्रनुं कृत्तिका छे, मंगळनुं पूर्वाषाढा छे, बुधनुं श्रवण छे, गुरुनुं पूर्वाफाल्गुनी छे, शुक्रनुं ज्येष्ठा छे, शनिनुं रेवती छे, राहुनुं भरणी छे अने केतुनुं जन्मनक्षत्र अश्लेषा छे."

उत्तरान्तश्चरो भानोः शुभो नान्यस्तनौ ग्रहः ।
फलेन वर्गो वारश्च तनुगव्योमगोपमः ॥ ४६ ॥

अर्थ—जे ग्रह सूर्यनी उत्तरचर अथवा अन्तश्चर होय ते जो यात्रालग्नमां पहेले स्थाने रह्यो होय तो ते शुभ छे. ते सिवायनो शुभ नथी. अहीं एम जाणवुं के—इष्ट दिवसे जे स्थाने सूर्यनो उदय अने अस्त थतो होय ते स्थान सारी रीते निर्णय करीने ध्यानमां राखवुं. तथा जे स्थाने विवक्षित (कहेवाने इच्छेला) ग्रहनो उदय तथा अस्त थतो होय ते पण ध्यानमां राखवुं. पछी ते ग्रह जो सूर्यथी उत्तर दिशामां उदय अने अस्त पामतो होय तो ते ग्रह उत्तरचर कहेवाय छे, अने ते ग्रह जो सूर्यने ज स्थाने उदय अने अस्त पामतो होय तो ते अंतश्चर कहेवाय छे. आ बे जातना ग्रह यात्रा-लग्नमां प्रथम स्थाने रह्या होय तो ते शुभ छे, अने ते सिवायनो बीजो एटले सूर्यथी दक्षिणचर होय तो ते अशुभ छे. आ प्रथम स्थानना ग्रहनुं स्वरूप जो के अहीं यात्राने उद्देशीने कह्युं छे, तोपण विवाहादिक सर्व शुभ कार्यना लग्नमां पण आ रीते ज समजवुं. दैवज्ञवल्लभमां विशेष आ प्रमाणे कह्युं छे.—

"लग्नेऽर्कारौ शनेर्धाम्नि शुभावन्यत्र भंगदौ ।
शीतांशुरुदयप्राप्तः सर्वकार्येषु नाशदः ॥ १ ॥
जीवशुक्रशनिस्थाने स्थितो लग्ने जयार्थदः ।
स्थानेष्वर्केन्दुभौमानां शशिसूनुरनर्थदः (कः) ॥ २ ॥
मन्दारबुधसूर्याणां स्थानेषु शुभदो गुरुः ।
शुक्रेन्दुस्थानगो लग्ने धनयोधविनाशकः ॥ ३ ॥
सौम्यस्थाने सितः शस्तो लग्नस्थोऽन्यत्र नेष्टदः ।
छायापुत्रो रविस्थाने प्रीतिदोऽन्यत्र नाशदः ॥ ४ ॥
स्वस्थाने न शुभो मन्दो लग्नेऽन्यत्र शुभावहः ।
यात्रायां चन्द्रमाः शस्तो दिग्बलेन विवर्जितः ॥ ५ ॥"

"यात्रालग्ननी कुंडळीमां सूर्य अने मंगळ जो शनिना स्थानमां रह्या होय तो ते शुभ छे, बीजा कोइ स्थानमां होय तो नाशने करनारा छे, चंद्र उदयना स्थानमां रह्यो होय तो सर्व कार्यमां नाशने आपनारो छे, अने गुरु, शुक्र तथा शनिना स्थानमां रह्यो होय तो जय अने धनने आपनार थाय छे. सूर्य, चंद्र अने मंगळना स्थानमां बुध रह्यो होय

तो ते अनर्थने आपनारो छे. शनि, मंगळ, बुध अने रविना स्थानमां गुरु होय तो ते शुभ छे, तथा शुक्र अने चंद्रना स्थानमां रह्यो होय तो ते धन योद्धानो नाश करे छे. बुधना स्थानमां शुक्र रह्यो होय तो ते प्रशस्त (शुभ) छे, अने बीजे कोइ स्थाने रह्यो होय तो ते इष्ट वस्तुने आपनारो नथी (अशुभ छे). रविना स्थानमां राहु रह्यो होय तो ते प्रीतिने आपनार छे, अने बीजा कोइ स्थानमां रह्यो होय तो ते नाशने करनारो छे. शनि पोताने स्थाने रह्यो होय तो ते शुभ नथी, अने बीजा कोइ पण स्थानमां रह्यो होय तो ते शुभ छे. दिक्बळे करीने रहित एवो चंद्र यात्राने विषे प्रशस्त (शुभ) छे."

आ प्रमाणे साडा छ श्लोके करीने प्रथम स्थाने रहेला ग्रहोनी व्यवस्था कही. हवे मूळ श्लोकना उत्तरार्धवडे यात्रालग्नमां छ वर्ग तथा वारनो नियम कहे छे.—वर्ग एटले षड्वर्ग तथा वार एटले यात्राना दिवसनो वार, ए प्रथम स्थानमां रहेला होय तो तेनुं फळ दशमा स्थाने रहेला ग्रहनी जेवुं जाणवुं, एटले के "जन्मन्यनिष्ट" ए ४० मा श्लोकथी आरंभीने आ श्लोकना पूर्वार्ध सुधीमां कहेली रीते करीने जेवो ग्रह प्रथम स्थानमां शुभ अथवा अशुभ कहेलो होय, तेवाज ग्रहना गृह, होरा विगेरे छ वर्ग प्रथम स्थानमां रहेला होय तो ते शुभ अथवा अशुभ जाणवा, अने ए ज रीते यात्राने दिवसे वारनो पण निर्धार करवो. विशेष आ प्रमाणे छे.—

"उपचयकरस्य वर्गः क्रूरस्यापि प्रशस्यते लग्ने ।
चन्द्रो वा तद्युक्तो न तु विपरीतस्य सौम्यस्य ॥ १ ॥
उपचयकरग्रहदिने सिद्धिः क्रूरेऽपि यायिनां (नो) भवति ।
सौम्येऽप्यनुपचयकरे न भवति यात्रा शुभा यातुः ॥ २ ॥"

"उपचय करनारा क्रूर ग्रहनो वर्ग पण लग्नमां रह्यो होय तो ते शुभ छे, अथवा ते ग्रहे करीने युक्त चंद्र रह्यो होय तोपण ते शुभ छे, पण उपचय करनारो न होय एवो सौम्य ग्रहनो वर्ग लग्नमां होय तो ते शुभ नथी. उपचय करनारा ग्रहनो दिवस (वार) क्रूर होय तोपण ते यात्रा करनारने सिद्धि आपनारो छे, परंतु उपचय करनार न होय एवा सौम्य ग्रहने दिवसे यात्रा करनारनी यात्रा शुभकारक नथी," एम लल्ल कहे छे. वळी दैवज्ञवल्लभमां आ प्रमाणे कह्युं छे.—

"सौम्योऽपि न शुभं दत्ते रिपोर्वारे विलग्नपः ।
वारे मित्रस्य पापोऽपि भवेच्छुभफलप्रदः ॥ १ ॥"

"लग्ननो स्वामी सौम्य होय तोपण ते शत्रुना वारने विषे शुभ नथी, अने मित्रना वारने विषे पाप स्वामी पण शुभ फळने आपनारो छे."

वळी जेनो वार शुभ अथवा अशुभ होय तेनी होरा पण तेवी ज शुभ के अशुभ जाणवी. तेनुं फळ शौनक आ प्रमाणे कहे छे.—

"रूपं ग्रहस्य वर्गे स्वदिने द्विगुणं स्वकालहोरायाम् ।
त्रिगुणमरिवर्गयोगे फलस्य पात्यस्तृतीयांशः ॥ १ ॥"

"ग्रहनुं फळ पोताना वर्गमां सरखुं ज (पूर्ण) छे, पोताने दिवसे बमणुं छे, पोतानी काळहोरामां त्रण गणुं छे, अने शत्रुना वर्गने योगे त्रीजा भागनुं फळ मळे छे."

तथा लल्ल कहे छे के—

"बलिनः कंटकसंस्था वर्षाधिपमासदिवसहोरेशाः ।
द्विगुणशुभाशुभफलदा यथोत्तरं ते परिज्ञेयाः ॥ १ ॥"

"वर्षनो स्वामी, मासनो स्वामी, दिवसनो स्वामी अने होरानो स्वामी ए कंटक (केंद्र)-स्थानमां रह्या होय तो ते बळवान् छे, तथा तेओ उत्तरोत्तर बमणा बमणा शुभाशुभ फळने आपनारा छे."

प्रथम स्थानमां रहेला ग्रहो तथा तेना षड्वर्ग विगेरेनी व्यवस्था कही. हवे बाकीना केंद्रादिक स्थानने आश्रीने कहे छे.—

केन्द्रेषु ग्रहशून्येषु लग्ने वीर्येण वर्जिते ।
बलहीनैश्च सौम्यैः स्यादभिषेणयतो जयम् ॥ ४७ ॥

अर्थ—केंद्रस्थान ग्रहवडे शून्य होय, लग्न वीर्यवडे रहित होय तथा सौम्य ग्रहो बळहीन होय, ते वखते शत्रु तरफ लडवा माटे प्रयाण करनारने जय थाय छे.

केंद्रस्थान ग्रहशून्य होय एटले प्रथम तो केंद्रना एक पण स्थानमां कोइ पण सौम्य ग्रह होय तो ज यात्रा अथवां बीजां कार्य करवा शुभ छे. ते सिवाय शुभ नथी. जो कदाच केंद्रना कोइ पण स्थानमां कोइ पण सौम्य ग्रह न होय तो केंद्रनुं एक पण स्थान उपचयकारक क्रूर ग्रहवडे सहित होय तोपण ते शुभ छे. केंद्रनां सर्व स्थानो एक पण ग्रह रहित होय तो सर्वथा अनिष्ट थाय. ते विषे रत्नमाळामां कह्युं छे के—

"पापोऽपि कामं बलवान्नियोज्यः, केन्द्रेषु शून्यं न शिवाय केन्द्रम्" ।

"पापग्रह पण बळवान् करीने अवश्य केंद्रमां लाववो जोइए, केमके केंद्र शून्य होय तो ते कल्याणने माटे नथी."

विशेष एटलुं छे के—केंद्रमां सौम्य ग्रहो पापग्रहोए करीने सहित रह्या होय तो मोटा कष्टथी यात्रा सिद्ध थाय छे. ते विषे लल्ल कहे छे के—

"सौम्यैश्च पापैश्च चतुष्टयस्थैः, कृच्छ्रेण संसिद्धिमुपैति यात्रा" ।

"सौम्य तथा पापग्रहो केंद्रमां रह्या होय तो कष्टे करीने यात्रा सिद्धिने पामे छे."

लग्न वीर्य रहित होय एम जे मूळ श्लोकमां कह्युं तेमां एम समजवुं के सौम्य स्वामी तथा सौम्य ग्रहने अभावे करीने तथा तेमनी दृष्टिने अभावे करीने तेमज क्रूर ग्रहोना स्वामी अने ग्रहोना होवापणाथी अथवा तेमनी दृष्टि पडवाथी लग्न वीर्य रहित थाय छे.

मूळ श्लोकमां सौम्य ग्रहो बळहीन होय एम कह्युं छे. तेमां ग्रहोनुं बळहीनपणुं भुवनदीपकनी वृत्तिमां अढार प्रकारे कह्युं छे.—

"स्व १ मित्रनीचगो २ वक्रः ३ स्वराश्यस्ता ४ रिवर्गगः ५ ।
लग्नाद्वादशगः ६ षष्ठः ७ क्रूरैर्युक्तो ८ ऽथ वीक्षितः ९ ॥ १ ॥
याम्यो १० राह्वास्य ११ पुच्छस्थो १२ बालो १३ वृद्धो १४ ऽस्तगो १५ जितः १६ ।
मुथुशिले १७ मूशरिफे पापै १८ रित्यबलो ग्रहः ॥ २ ॥"

"पोताना नीच गृहमां रहेलो ग्रह निर्बळ छे १. मित्रना नीच गृहमां रहेलो ग्रह निर्बळ छे २. आ बन्ने जातनो ग्रह नीच नवांशमां रह्यो होय तोपण निर्बळ जाणवो. वक्र अथवा वक्रतामां सन्मुख थयेलो ग्रह निर्बळ छे ३. पोताना गृहनी राशिथी सातमी राशिमां रहेलो ग्रह निर्बळ छे ४. शत्रुरूप अथवा अधि शत्रुरूप ग्रहना गृह, होरा विगेरे छ वर्गमां रहेलो ग्रह निर्बळ छे ५. लग्नथी बारमे स्थाने रहेलो ग्रह निर्बळ छे. लग्नथी छठे स्थाने रहेलो ग्रह निर्बळ छे ७. क्रूर ग्रहे करीने युक्त एवो ग्रह निर्बळ छे ८. क्रूर ग्रहे जोयेलो ग्रह पण निर्बळ छे ९. कर्कादिक छ राशिरूप दक्षिणायनमां रहेलो ग्रह निर्बळ छे १०. राहुना मुखमां रहेलो ग्रह निर्बळ छे ११. राहुना पुच्छमां रहेलो ग्रह निर्बळ छे १२. राहुनुं मुख अने पुच्छ आ प्रमाणे जाणवुं.—

"यत्र ऋक्षे स्थितो राहुर्वदनं तद्विनिर्दिशेत् ।
मुखात् पञ्चदशे ऋक्षे तस्य पुच्छं व्यवस्थितम् ॥ १ ॥"

"जे नक्षत्रमां राहु रहेलो होय ते नक्षत्र राहुनुं मुख जाणवुं, अने मुखथी पंदरमुं जे नक्षत्र होय त्यां तेनुं पुच्छ रहेलुं छे."

बाळ एटले थोडा दिवसथी उदय पामेलो ग्रह निर्बळ छे १३. वृद्ध एटले अस्त थवामां सन्मुख थयेलो ग्रह निर्बळ छे, वृद्ध कहेवाथी अल्प तथा रुक्ष बिंबवाळो अने कांतिरहित एवो ग्रह पण निर्बळ जाणवो १४. अस्त एटले सूर्यना किरणोमां प्रवेश करवाथी अस्त पामेलो ग्रह निर्बळ छे १५. जीतायेलो एटले ग्रहोना युद्धमां जे ग्रह दक्षिणगामी होय ते निर्बळ छे, वराह कहे छे के शुक्र तो उत्तरगामी होय त्यारे जीतायेलो छे १६. मुथुशिल एटले शीघ्र गतिवाळो क्रूर ग्रह मंद गतिवाळा ग्रहना एक अंशमां मळ्यो होय अने वळी ज्यांसुधी ते मंद ग्रहनी पाछळ रह्यो होय त्यांसुधी ते मुथुशिल कहेवाय छे, तेनुं बीजुं नाम इथिशाल छे. आ मुथुशिल ग्रह निर्बळ होय छे १७. ज्यारे शीघ्र गतिवाळो क्रूर ग्रह मंद गतिवाळा ग्रहना एक अंशमां मळीने पछी ते अंशने उल्लं-

घन करीने आगळ जाय त्यारे ते राशि पूरी थतां सुधी मूशरिफ योग कहेवाय छे. ते पण निर्बळ छे १८. जेमके कल्पनाए करीने गुरु त्रीजा त्रिंशांशमां मंद गतिवाळो छे, ते अंशमां आवेलो सूर्यादिक क्रूर ग्रह ज्यां सुधी ते त्रीजा अंशने उल्लंघन करीने नथी जतो त्यांसुधी मुथुशिल कहेवाय छे, अने ज्यारे ते त्रीजा अंशनो त्याग करीने चोथा अंशमां जाय त्यारे राशिना अंत सुधी मूशरिफ कहेवाय छे. जो शीघ्र गतिवाळो ग्रह क्रूर ग्रहमां आवीने आ बे योगो उत्पन्न करे तो मंद गतिवाळो ग्रह निर्बळ जाणवो."

प्रश्नप्रकाशमां तो नव प्रकारे ज निर्बळता आ प्रमाणे कही छे.—

"पापः शीघ्रः १ शुभो वक्री २ बालो ३ वृद्धो ४ ऽरिभा ५ स्तगः ६ ।
नीचः ७ पापान्तरे ८ ऽष्टस्थ ९ इत्युक्तो बलवर्जितः ॥ १ ॥"

"क्रूर ग्रह शीघ्रगामी होय १, शुभ ग्रह वक्री होय २, बाळक ३, वृद्ध ४, शत्रुना स्थानमां रहेलो ५, अस्त पामेलो ६, नीच स्थाने रहेलो ७, क्रूर ग्रह साथे रहेलो ८, अने लग्नथी आठमे स्थाने रहेलो ९, आ नव प्रकारनो ग्रह निर्बळ कह्यो छे." आ प्रमाणे अन्यत्र पण संभव प्रमाणे दुर्बळता जाणवी.

दिगीशः केन्द्रगः श्रेयान् दिग्बली भालगस्तु न ।
बलिनौ जन्मलग्नेशौ केन्द्रोपचयगौ शुभौ ॥ ४८ ॥

अर्थ—दिक्पति केंद्रमां होय तो ते शुभ छे, पण दिग्बली अने सन्मुख रह्यो होय तो ते शुभ नथी. जन्मेश अने लग्नेश बळवान् होइने केंद्र के उपचयस्थानमां रह्या होय तो ते शुभ छे.

दिगीश एटले जे दिशामां जवुं होय ते दिशानो स्वामी जे कोइ ग्रह बळवान् थइने यात्रालग्नमां कोइ पण केंद्रना स्थानमां रह्यो होय तो ते शुभ छे, परंतु गमन करवा योग्य दिशानो स्वामी ग्रह लग्नमां दिग्बळी होय तो ते शुभ नथी. ग्रहोनुं दिग्बलीपणुं पूर्वे "लग्नाद्युत्क्रमकेन्द्र०" (द्वितीय प्रकाश २९) ए श्लोकमां कह्युं छे, तथा भालग एटले जवा लायक दिशानो स्वामी ग्रह लग्नमां ते ज दिशामां रहेवा वडे करीने जनारने सन्मुख थतो होय तो ते शुभ नथी. ते विषे दैवज्ञवल्लभमां कह्युं छे के—

"दिगीश्वरो ललाटस्थो यदि वा दिग्बलान्वितः ।
वधबन्धप्रदो यातुः केन्द्रगस्तु जयार्थदः ॥ १ ॥"

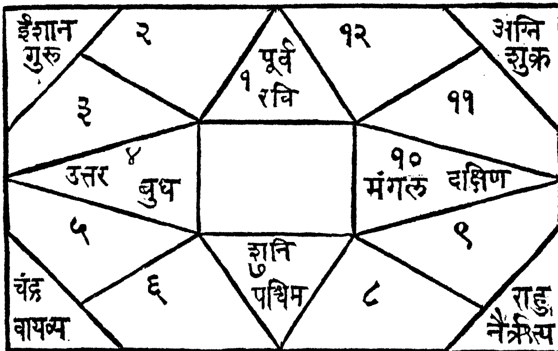
"दिशानो पति सन्मुख रह्यो होय, अथवा दिग्बळे करीने सहित होय तो प्रयाण करनारने वध बंधन करनारो थाय छे, अने केंद्रमां रह्यो होय तो जय तथा धनने आपनार थाय छे."

दिशाना पतिने सन्मुख रहेवानो प्रकार पूर्वाचार्योए आ प्रमाणे कह्यो छे.—

"लग्ने १ ज्ञानुर्व्यय १२ जव ११ गतः शुक्र आरो नज्ञः १० स्थो,
राहुर्धर्मा ९ ष्टम ८ गृहगतः सप्तमस्थो ७ ऽर्कपुत्रः ।
नीहारांशू रिपु ६ तनय ५ गो बंधु ४ गः सोमपुत्रो,
जीवस्त्रि ३ द्वि २ स्थित इति ललाटस्थिताः पूर्वतः स्युः ॥ १ ॥"

"लग्नमां (प्रथम स्थानमां) रहेलो सूर्य, बारमा अने अगीयारमा स्थानमां रहेलो शुक्र, दशमा स्थानमां रहेलो मंगळ, नवमा अने आठमा स्थानमां रहेलो राहु, सातमा स्थानमां रहेलो शनि, छठा अने पांचमा स्थानमां रहेलो चंद्र, चोथा स्थानमां रहेलो बुध अने त्रीजा तथा बीजा स्थानमां रहेलो गुरु, आ प्रमाणे पूर्वादि दिशाना अनुक्रमे रहेला ग्रहो सन्मुख कहेवाय छे."

यात्राना लग्नमां सन्मुख रहेला ग्रहनुं चक्र—



सन्मुख रहेला ग्रहनुं फळ आ प्रमाणे छे.—

"शस्त्राग्निजयं १ व्याधि २ धनक्षयो ३ बन्धनं ४ मृति ५ र्व्याधिः ६ ।
हारिः ७ सैन्यविमर्दो ८ ज्ञालगदिगधिपफलं क्रमशः ॥ १ ॥"

"पूर्व दिशानो अधिपति सन्मुख रह्यो होय तो शस्त्र अने अग्निनो जय थाय, अग्नि खूणानो स्वामी सन्मुख होय तो व्याधि थाय, दक्षिणनो स्वामी सन्मुख होय तो धननो क्षय थाय, नैर्ऋत्यनो स्वामी सन्मुख होय तो बंधन थाय, पश्चिमनो स्वामी सन्मुख होय तो मृत्यु थाय, वायव्यनो स्वामी सन्मुख होय तो व्याधि थाय, उत्तरनो स्वामी सन्मुख होय तो पराजय थाय, अने ईशाननो स्वामी सन्मुख होय तो सैन्य जांगे."

विशेष ए छे जे—"उदय पामेलो केतु अग्र जागेलो नमेलो होय अने यात्रानी दिशामां सन्मुख थयो होय तो ते शुभ छे. तथा उपचय करनार ग्रहनी दिशामां जवुं, पण अपचय करनार ग्रहनी दिशामां न जवुं." ए प्रमाणे लल्ल कहे छे.

मूळ श्लोकमां जन्मेश अने लग्नेश बळवान् कह्या छे ते आ प्रमाणे.—गंडांतमां रहेवुं, गोचरादिकनी प्रतिकूळता, गति, प्रमाण अने वर्णथी विकृतिपणुं, सूर्यथी दक्षिणगामीपणुं, पूर्वे कहेला अढार प्रकारनां दुर्बळपणांनो अभाव, छ प्रकारनां बळथी युक्तपणुं, तथा शत्रुनो पराजय करवापणुं, आटलांए करीने जन्मेश अने लग्नेश बळवान् कहेवाय छे. तथा मूळ श्लोकमां सामान्य रीते केंद्र लख्यो छे, तोपण सातमा स्थानने वर्जीने ज बीजा केंद्रस्थानमां रहेलो लग्नेश शुभ छे एम जाणवुं. विशेष ए छे जे—"जन्मेश अने लग्नेश क्रूर होय तोपण तेमने सर्व कार्यमां बळवान् करीने सौम्य ग्रह जेवा ज जाणवा.

केंद्रादिकमां रहेला ग्रहोनी व्यवस्था कही. हवे यात्रानी कुंडळीमां केवा अने कया ग्रहोए प्रयाण करनारने कयो उपाय जयकारक छे ? ते कहे छे.—

सितेज्या १ विन्दु २ रार्किज्ञतमोऽन्त्याः ३ सूर्यमंगलौ ४ ।
सामादिसाधकाः केन्द्रोपचयेषु बलोत्कटाः ॥ ४९ ॥

अर्थ—यात्राकुंडळीमां शुक्र अने गुरु बळवान् थइने केंद्र के उपचयस्थानमां रह्या होय तो साम उपाये करीने जय थाय छे, ए ज रीते चंद्र रह्यो होय तो दान उपाये करीने, शनि, बुध, राहु अने केतु रह्या होय तो भेद उपाये करीने अने सूर्य तथा मंगळ रह्या होय तो दंड उपाये करीने जय थाय छे.

साम एटले संधिना उपाये करीने जय थाय छे. अहीं करेलो संधि जे प्रकारे निश्चल थाय ते प्रकार कहे छे.—

"भाग्ये मैत्रे शीतरश्मौ स पुष्ये, द्वादश्यां वा शुक्रदृष्टे च लग्ने ।
अष्टम्यां वा तैतिलाख्ये प्रदिष्टा, पूर्वाचार्यैरत्र संधानसिद्धिः ॥ १ ॥"

"दशमा तथा चोथा स्थानमां चंद्र होय, शुक्र लग्नने जोतो होय, बारस अथवा आठमने दिवसे पुष्य नक्षत्रमां तैतिल नामा करणमां पूर्वाचार्योए संधाननी सिद्धि कथन करेली छे."

विशेष ए छे जे—ते ते ग्रहोना लग्नमां अथवा नवांशोमां तेमज वार होराने विषे पण अनुक्रमे कहेला उपाये करीने सर्व कार्यमां सिद्धि थाय छे.

हवे जेवा ग्रहना बळे शत्रुथी पहेलां प्रयाण करवुं के पछी करवुं सफळ छे ते कहे छे.—

पौरा ज्ञजीवमन्दाः स्युरपरे यायिनो ग्रहाः ।
सफला यायिभिर्यात्रा बलिभिः स्थितिरन्यथा ॥ ५० ॥

अर्थ—बुध, गुरु अने शनि ए त्रण ग्रहो पौर (स्थायी) कहेवाय छे, अने बाकीना ग्रहो यायी कहेवाय छे. तेमां जो यायी ग्रहो बळवान् होय तो शत्रुथी पहेलां ज यात्रा

करवी सफळ छे, अने स्थायी ग्रहो बळवान् होय तो पोताने स्थाने ज स्थिति करवी सफळ छे, एटले के शत्रुनी पहेलां पोते प्रयाण न करवुं. विशेष ए छे जे—"स्थायी अने यायी ग्रहो मिश्र होय एटले के बन्ने ग्रहोनुं बळवानपणुं होय तो द्वैधी भाव करवो, एटले के अर्धुं सैन्य स्थायी राखवुं अने अर्धा सैन्यने प्रयाण कराववुं. तथा सौम्य ग्रहो बळवान् होय तो संधि करवी अने क्रूर ग्रहो बळवान् होय तो युद्ध करवाथी जय थाय छे. बन्ने जातना ग्रहो निर्बळ होय तो कोइ भाग्यवान् अन्य राजानो आश्रय करवो." आ सर्व योगयात्रा ग्रंथमां कह्युं छे.

आ प्रमाणे पचीश श्लोकोए करीने यात्रानी लग्नकुंडळीनुं स्वरूप विस्तारथी कह्युं. आ स्वरूप सामान्य रीते राजादिकने माटे जाणवुं, कारण के राजाओ पण नीचेना श्लोकमां कहेला योगो न मळे तोपण केवळ लग्नना बळथी पण यात्रा करी शके छे. ते विषे लल्ल कहे छे के—

"ऐकान्तिकगन्तव्ये दैवेन निपीडिते च यातव्ये ।
केवलविलग्नयोगादपि याता सिद्धिमाप्नोति ॥ १ ॥"

"दैवयोगे अवश्य एकांते करीने यात्रा करवानी जरूर पडी होय तो केवळ लग्नना बळथी पण यात्रा करनार सिद्धिने पामे छे."

हवे शुभ तिथि, नक्षत्र, लग्न विगेरेना बळ विना पण जेवा ग्रहयोगोए करीने राजाओनी यात्रा सफळ थाय छे तेवा मात्र राजाने ज योग्य एवा यात्राने लायक ग्रहयोगो कहेवानी इच्छाथी कहे छे.—

चौराणां शकुनैर्यात्रा नक्षत्रैश्च द्विजन्मनाम् ।
मुहूर्त्तैः सिद्धयेऽन्येषां राज्ञां योगैश्च ते त्वमी ॥ ५१ ॥

अर्थ—चोरोने शकुनवडे यात्रा करवी सिद्धिने माटे छे, ब्राह्मणोने नक्षत्रनी शुद्धिए करीने यात्रा करवी शुभ छे, बीजा एटले वैश्य, शूद्र, कारीगरो विगेरेने शुभ मुहूर्त्ते करीने यात्रा करवी शुभ छे, अने राजाओने योगोवडे करीने यात्रा करवी शुभ छे, एटले के तिथि, वार अने लग्नादिकनी शुद्धि न होय तोपण राजाओने आ ग्रहयोगोमां यात्रा करवाथी कार्यसिद्धि थाय छे. दैवज्ञवल्लभमां कह्युं छे के—

"तिथि १ क्षण २ भ ३ वाराणां ४ साध्यं योगेन सिध्यति ।
तस्मात्सर्वेषु कार्येषु ग्रहयोगान् सुचिन्तयेत् ॥ १ ॥"

"तिथि, मुहूर्त्त, नक्षत्र अने वारोथी साधवा लायक कार्यो योगवडे सिद्ध थाय छे, तेथी सर्व कार्योमां ग्रहयोगनो सारी रीते विचार करवो."

अहीं कोइ शंका करे के—ग्रहयोगनो विचार करवो ते ठीक छे, परंतु लग्न बळवान् छतां पण ग्रहोनी सौम्यता अने क्रूरता यत्ने करीने विचारवानी छे, अने अहीं तो तेना विचारनो लेश पण कह्यो नथी. तेनो शो हेतु छे? आनो जवाब ए छे जे—अहीं योगनुं बळ ज प्रधानपणे कह्युं छे. जेम अन्य ओषधिना संयोगथी वत्सनाग विगेरे विष पण रसायणरूप थइने प्राणीओने जीवाडनारुं थाय छे, तेम क्रूर ग्रह पण योगना वशथी शुभदायी थाय छे. तथा जेम घी तथा मध सरखे भागे मिश्र करवाथी मृत्युने करनारुं एवुं उपविष बन्ने छे एम चरकमां कह्युं छे, ते ज रीते शुभ ग्रहो पण योगना वशथी अशुभ थाय छे, तेथी करीने मास, तिथि, वार, नक्षत्र, योग, मुहूर्त्त, चंद्र, तारा अने लग्ननुं विरुद्धपणुं छतां पण आ योगोए करीने यात्रा सफळ थाय छे एम सिद्ध मानवुं. रत्नमाळामां पण कह्युं छे के—

"तिथौ क्षणे भे करणे च वारे, योगे विलग्ने हिमगौ नृपाणाम् ।
पापेऽपि यात्रा सफलात्र योगैः,"

"तिथि, मुहूर्त्त, नक्षत्र, करण, वार, योग, लग्न अने चंद्र ए सर्वे पाप एटले अशुभ होय तोपण राजाओने योगोवडे करीने यात्रा करवी सफळ छे."

आ योगोनुं बळ एकांतिक कार्यना विषयमां जाणवुं, परंतु घणी उतावळ न होय तो मास, तिथि, नक्षत्र विगेरेनुं बळ तथा आ योगोनुं बळ एम सर्व बळ जोवुं. ते विषे भास्कर कहे छे के—"अवमाधिमासयोर्न प्रतिष्ठतेऽभीष्टसिद्ध्यर्थी । "इष्ट सिद्धिना अर्थीए क्षय मास तथा अधिक मासमां प्रयाण न करवुं." "तथापि हि कुसललग्गि" "तोपण कुशळ (शुभ) लग्न जोवुं." इत्यादि.

हवे ग्रहयोगो कहे छे.—

अर्कार्किशशिनः सिद्ध्यै राज्ञां लग्ना १ रि ६ मध्य १० गाः (१) ।
सितेज्यमन्दज्ञाराश्च लग्ना १ स्त ७ त्रि ३ सुखा २ रि ६ गाः (२) ॥ ५२ ॥

अर्थ—लग्नमां सूर्य, छठे स्थाने शनि अने दशमे स्थाने चंद्र रह्यो होय तो ते वखते राजानी यात्रा सिद्धिने माटे छे. (१). लग्नमां शुक्र, सातमा भवनमां गुरु, त्रीजे स्थाने शनि, बीजे स्थाने बुध अने छठे स्थाने मंगळ रह्यो होय तो ते शुभ छे. (२).

गुरुज्ञार्काश्च लग्न १ स्व २ भ्रातृषु ३ क्रमतः श्रिये (३) ।
लग्ना १ रि ६ गौ च जीवार्कौ जयदौ व्यष्टमे विधौ (४) ॥ ५३ ॥

अर्थ—लग्नमां गुरु होय, बीजा भावमां बुध होय अने त्रीजा भावमां सूर्य होय तो

१ शुक्रः इति प्रत्यन्तरे.

ते लक्ष्मीने माटे छे–शुभ छे. (३). लग्नमां गुरु होय, छठा भावमां सूर्य होय अने आठमा सिवाय बीजा कोइ पण भावमां चंद्र होय तो ते पण शुभ छे. (४).

मन्दारौ त्र्या ३ य ११ षट्सु ज्ञसितेज्याश्चोत्कटाः श्रिये (५) ।
केन्द्रे च बलिनौ ज्ञेज्याविन्दौ त्वापोक्लिमेऽबले (६) ॥ ५४ ॥

अर्थ—शनि अने मंगळ त्रीजे, अगीयारमे अने छठे स्थाने रह्या होय तथा बुध, शुक्र अने गुरु बळवान् थइने गमे ते स्थाने रह्या होय तो ते लक्ष्मीने माटे छे–शुभ छे. (५). बुध अने गुरु बळवान् थइने केंद्रमां रह्या होय तथा चंद्र निर्बळ थइने आपोक्लिम एटले ३–६–९–१२ मे स्थाने रह्यो होय तो ते शुभ छे. (६).

श्रिये विधुः सुखे ४ ऽस्ते ७, तु सितज्ञौ (७) व्यत्ययेन वा (८) ।
याने त्रिकोणकेन्द्रस्थाः सौम्याः षट् त्र्यायगाः परे (९) ॥ ५५ ॥

अर्थ—चंद्र चोथा भावमां रह्यो होय अने शुक्र तथा बुध सातमा भावमां रह्या होय तो ते लक्ष्मीने माटे छे. (७). अथवा विपरीतपणे होय एटले के शुक्र अने बुध चोथा भावमां होय अने चंद्र सातमा भावमां होय तो ते पण लक्ष्मीने माटे छे. (८). सौम्य ग्रहो त्रिकोण अने केंद्रमां रह्या होय तथा क्रूर ग्रहो छठे, त्रीजे अने अगीयारमे रह्या होय तो ते पण यात्रामां लक्ष्मीने माटे छे. (९).

जयाय मूर्त्तौ १ मार्त्तंडः सौम्याः स्वे २ सप्तमो विधुः (१०) ।
बृहस्पतिर्वा केन्द्रस्थः शेषेषु स्वा २ य ११ वर्त्तिषु (११) ॥ ५६ ॥

अर्थ—प्रथम भावमां सूर्य होय, बीजा भावमां सौम्य ग्रह होय अने सातमा भावमां चंद्र होय तो ते जयने माटे छे. (१०). बृहस्पति (गुरु) केंद्रमां रह्यो होय अने बाकीना ग्रहो (क्रूर तथा सौम्य सर्वे) बीजा तथा अगीयारमा भावमां होय तो ते पण जयने माटे छे. (११). आ रीते अगीयार योग थया.

यातुः प्राग्दक्षिणयोर्ज्ञसितान्तर्जयकरः सुखे चेन्दुः (१२) ।
गुरुरेकान्तर आर्के (१३) ज्ञो वा शुक्राच्च (१४) चौमाद्या (१५) ॥ ५७ ॥

अर्थ—पूर्व अथवा दक्षिणमां यात्रा करनारने चोथा भावमां रहेलो चंद्र जो बुध अने शुक्रनी मध्ये रह्यो होय तो ते जयकारक छे. (१२). पश्चिम अने उत्तर दिशामां यात्रा करनारने माटे आ योगनी अपेक्षा नथी. शनिथी[१] एकांतर गृह (स्थान)मां गुरु रह्यो होय तो ते शुभ छे. (१३). शुक्रथी एकांतर गृहमां रहेलो बुध होय तो ते शुभ

१ जे स्थाने शनि होय तेनी पछीना एक स्थानने मूकीने बीजाज स्थानमां रह्यो होय.

छे. (१४). अने मंगळथी एकांतर गृहमां रहेलो बुध पण शुभ छे. (१५). दैवज्ञवल्लभमां पण कह्युं छे के—

"भृगुजादथवा महीसुताद्बुध एकान्तरभे स्थितो यदा ।
रविजादथवा गुरुस्तदा, व्रजतो यान्त्यरयः क्षयं रणे ॥ १ ॥"

"शुक्रथी अथवा मंगळथी एकांतर राशिमां जो बुध रह्यो होय, अथवा शनिथी एकांतर राशिमां जो गुरु रह्यो होय तो ते समये यात्रा करनारना शत्रुओ युद्धमां क्षय पामे छे."

गुरुर्जयाय लग्न १ स्थः क्रूरैर्लाभ ११ नभो १० गतैः (१६)
तथा चन्द्रेऽष्टमे षष्ठे शुक्रे लग्नगतो गुरुः (१७) ॥ ५८ ॥

अर्थ—लग्नमां (पहेला भावमां) गुरु होय, अने क्रूर ग्रहो अगीयारमे तथा दशमे स्थाने होय तो ते जयने माटे छे. (१६) चंद्र आठमा भावमां होय, शुक्र छठ्ठा भावमां होय अने गुरु लग्नमां होय तोपण ते जयने माटे छे. आ सर्वे मळीने कुल १७ योगो थया.

हवे योगपिंड (योगनो समूह) कहे छे.—

सिद्धे धी ५ धर्म ९ केन्द्रेषु बुधवाक्पतिभार्गवैः ।
योगो १ ऽधियोगो २ योगाधियोग ३ श्चैक १ द्विक २ त्रिकैः ३ ॥ ५९॥

अर्थ—बुध, गुरु अने शुक्र ए त्रणमांथी एक ग्रह जो पांचमा, नवमा के केन्द्रमांना कोइ पण स्थानमां होय तो ते योग कहेवाय छे. तेवी ज रीते (ते ज स्थानोमां) जो बुध, गुरु अने शुक्रमांना बे ग्रहो रह्या होय तो अधियोग थाय छे, अने ते त्रणे ग्रहो ते ज स्थानोमां रह्या होय तो योगाधियोग थाय छे. आ त्रणेनुं फळ दैवज्ञवल्लभमां आ प्रमाणे कह्युं छे.—

"योगेन यो याति नृपोऽरिदेशं, सुखेन सोऽभ्येत्यधियोगयाता ।
प्राप्नोति कीर्तिं विजयं धनं च, योगाधियोगेन महीमशेषाम् ॥ १ ॥"

"जे राजा योगे करीने शत्रुना देश उपर प्रयाण करे छे ते सुखेथी पाछो आवे छे, अधियोगमां यात्रा करनार (राजा) कीर्ति, विजय अने धन पामे छे, तथा योगाधियोगे करीने समग्र पृथ्वी पामे छे."

अहीं आ प्रमाणे आम्नाय छे. जो बीजो कोइ यात्रानो योग मळे अथवा न मळे तोपण जो बुध, गुरु अने शुक्र ए त्रणमांथी कोइ पण ग्रह उपर गणावेलां स्थानोमांथी कोइ पण स्थाने रह्यो होय तो ते ज वखते यात्रा करवी शुभ छे, अने बे अथवा त्रणे ग्रहो उक्त स्थानमां रह्या होय तो ते घणाज उत्तम छे.

आ त्रण योगो स्थूळ दृष्टिए कह्या छे, पण सूक्ष्म दृष्टिए जोतां तो त्रणसो ने बेंता-

त्रीश ३४२ योगो थाय छे. (तेउनी अत्रे अति आवश्यकता नहीं होवाथी लख्या नथी. आ ग्रंथनी मोटी टीकामां ते सविस्तर आप्या छे.)

ग्रहनी दृष्टिनी अपेक्षा रहित उपरना योगो कह्या. हवे ग्रहनी दृष्टिनी अपेक्षाए बे योग थाय छे ते कहे छे.—

शुक्रं त्र्या ३ या ११ म्बु ४ गं पश्यन् जीवो यात्रासु केन्द्रगः ।
राज्ञां दत्ते जयं क्रूरैः कलत्रादित्रयान्यगैः ॥ ६० ॥

अर्थ—यात्रालग्नमां केंद्रस्थाने रहेलो गुरु त्रीजा, अगीयारमा अने चोथा स्थानमां रहेला शुक्रने जोतो होय तथा क्रूर ग्रहो सातमा, आठमा अने नवमा सिवायनां बीजां स्थानमां रह्या होय तो ते समये प्रयाण करनार राजानो जय थाय छे.

बुधो वपुः १ सुख ४ द्वेषि ६ व्योम १० स्थो वीक्षितः शुभैः ।
जयाय राज्ञां पापेषु लग्ना १ स्त ७ व्यय १२ वर्जिषु ॥ ६१ ॥

अर्थ—पहेले, चोथे, छठ्ठे के दशमे स्थाने रहेलो बुध शुभ ग्रहोए जोयेलो होय तथा पापग्रहो पहेला, सातमा अने बारमा सिवायना बीजां स्थानोमां रह्या होय तो ते प्रयाण करनार राजाने जय आपनारा छे.

हवे सर्व योगोनो सार कहे छे.—

इति सप्तरूपकार्द्धैः सकलश्लोकत्रयेण चोक्तेषु ।
योगेषु राजयोगेष्वपि शुभदा भूभुजां यात्रा ॥ ६२ ॥

अर्थ—आ प्रमाणे सात अर्धा श्लोकोए करीने तथा त्रण आखा श्लोकोए करीने योगो कह्या. ते सिवाय राजयोगोमां पण करेली यात्रा राजाउने शुभकारक छे. आ राजयोगो बृहत् जातकमां कह्या छे. ते पण यात्रामां उपयोगी छे.

ते राजयोगो सर्वे कार्यमां उपयोगी होवाथी अत्रे कहे छे.—

"वक्रार्कजार्कगुरुभिः सकलैस्त्रिभिश्च,
स्वोच्चेषु षोडश नृपाः कथितैकलग्ने ।
द्व्यैकाश्रितेषु च तथैकतमे विलग्ने,
स्वक्षेत्रगे शशिनि षोडश भूमिपाः स्युः ॥ १ ॥"

"शनि, मंगळ, सूर्य अने गुरु ए चारे ग्रहो पोतपोताना उच्च स्थानमां रहीने तेमांनो एक एक ग्रह लग्नमां रह्यो होय त्यारे चार राजयोगो थाय छे, ते चारे ग्रहमांना त्रण ग्रहो पोतपोताना उच्च स्थानमां रहीने ते त्रणेमांनो एक एक ग्रह लग्नमां होय त्यारे

बार राजयोग थाय छे. आ बन्ने मळीने सोळ राजयोगो थाय छे. ते ज रीते ते चार ग्रहो मांहेला बे ग्रहो उच्च स्थानमां रहीने तेमांनो एक एक ग्रह लग्नमां रह्यो होय अने चंद्र कर्कमां रह्यो होय त्यारे बार राजयोगो थाय छे, तथा ते चार ग्रहोमांथी एक एक ग्रह उच्च स्थानमां रहीने लग्नमां रह्यो होय अने कर्क राशिमां चंद्र रह्यो होय त्यारे चार राजयोगो थाय छे. आ बन्ने मळीने पण सोळ राजयोगो थाय छे, अने सर्वे मळीने बत्रीश थाय छे." ते नीचे प्रमाणे.—

मेषमां सूर्य, कर्कमां गुरु, तुलामां शनि अने मकरमां मंगळ, बाकीना ग्रहो गमे ते स्थाने होय, आ प्रमाणे ग्रहनी स्थिति होय त्यारे जो मेष लग्न होय तो पहेलो राजयोग थयो, कर्क लग्नमां बीजो राजयोग थयो, तुला लग्नमां त्रीजो अने मकर लग्नमां चोथो राजयोग थयो. हवे त्रण ग्रहो आश्रीने बार राजयोगो आ प्रमाणे छे—मेषनो सूर्य, कर्कनो गुरु, तुलानो शनि अने बीजा ग्रहो गमे त्यां होय त्यारे मेषना लग्नमां पहेलो, कर्कना लग्नमां बीजो अने तुलाना लग्नमां त्रीजो राजयोग थयो. उपला चार साथे मेळवतां सात राजयोग थया. हवे मेषनो सूर्य, कर्कनो गुरु, मकरनो मंगळ अने बीजा ग्रहो गमे त्यां होय त्यारे मेष लग्नमां पहेलो, कर्क लग्नमां बीजो अने मकर लग्नमां त्रीजो राजयोग थयो. कुल १० थया. हवे मेषनो सूर्य, तुलानो शनि, मकरनो मंगळ, बाकीना गमे त्यां होय त्यारे मेष लग्न होय तो पहेलो, तुला लग्न होय तो बीजो अने मकर लग्न होय तो त्रीजो राजयोग थतां कुल १३ राजयोग थया. हवे कर्कनो गुरु, तुलानो शनि, मकरनो मंगळ अने बीजा ग्रहो गमे त्यां होय त्यारे कर्क लग्न होय तो पहेलो, तुला लग्न होय तो बीजो अने मकर लग्न होय तो त्रीजो राजयोग थतां कुल १६ राजयोग थाय छे.

हवे बे ग्रह तथा एक ग्रहने आश्रीने सोळ योगो आ रीते थाय छे—कर्कनो चंद्र, मेषनो सूर्य, कर्कनो गुरु अने बाकीना ग्रहो गमे त्यां होय त्यारे मेष लग्न होय तो पहेलो योग अने कर्क लग्न होय तो बीजो योग. हवे मेषनो सूर्य, कर्कनो चंद्र, तुलानो शनि, बाकीना ग्रहो गमे त्यां होय त्यारे मेष लग्नमां त्रीजो अने तुला लग्नमां चोथो योग थाय. हवे मेषनो सूर्य, कर्कनो चंद्र अने मकरनो मंगळ होय त्यारे मेष लग्नमां पांचमो अने मकर लग्नमां छठो योग थाय छे. हवे कर्कमां चंद्र अने गुरु तथा तुलामां शनि होय त्यारे कर्क लग्नमां सातमो अने तुला लग्नमां आठमो योग थाय छे. हवे कर्कमां गुरु अने चंद्र तथा मकरमां मंगळ होय त्यारे कर्क लग्नमां नवमो अने मकर लग्नमां दशमो योग थाय छे. हवे कर्कमां चंद्र, तुलामां शनि अने मकरमां

मंगळ होय त्यारे तुला लग्नमां अगीयारमो अने मकर लग्नमां बारमो योग थाय छे. हवे एक ग्रहने आश्रीने चार योगो आ प्रमाणे.—कर्कनो चंद्र अने मेष लग्नमां सूर्य रह्यो होय त्यारे पहेलो, कर्कना लग्नमां चंद्र अने गुरु होय त्यारे बीजो, कर्कनो चंद्र अने तुला लग्नमां शनि होय त्यारे त्रीजो अने कर्कनो चंद्र तथा मकर लग्नमां मंगळ होय त्यारे चोथो योग थाय छे. उपरना बार सहित करतां सोळ थाय अने प्रथमना सोळ साथे करतां कुल बत्रीश राजयोगो थया.

हवे ५२८ राजयोगो थाय छे ते कहे छे.—

"वर्गोत्तमगते लग्ने चन्द्रे वा चन्द्रवर्जितैः ।
चतुराद्यैर्ग्रहैर्दृष्टे नृपा द्वाविंशतिः स्मृताः ॥ २ ॥"

"लग्न अथवा चंद्र वर्गोत्तममां रह्या होय, अने ते (लग्न अथवा चंद्र)ने चंद्र विनाना चार, पांच के छ ग्रहोए जोयेला होय त्यारे बावीश राजयोग थाय छे."

जे राशि लग्नमां होय ते राशिना ज नामनो जे नवांश ते वर्गोत्तम कहेवाय छे, अने ते ज नवांश लग्नमां आव्यो होय तो ते लग्न वर्गोत्तम कहेवाय छे. ए ज प्रमाणे चंद्रमां पण जाणवुं. लग्न के चंद्र वर्गोत्तमनो होय अने तेना पर चंद्र सिवाय बीजा चार, पांच के छ ग्रहोनी दृष्टि पडती होय तो दरेक लग्नने आश्रीने बावीश बावीश राजयोगो थाय छे. ते आ प्रमाणे.—लग्न उपर चार ग्रहोनी दृष्टि पडती होय तो पंदर भेद थाय छे, पांचनी दृष्टि पडती होय तो छ भेद अने छनी दृष्टि पडती होय तो एक भेद ए रीते बावीश भेद थाय छे, एटले के लग्नने रवि, मंगळ, बुध अने गुरु ए चार ग्रहोए जोयुं होय त्यारे पहेलो योग थाय छे. रवि, मंगळ, बुध अने शुक्र जोता होय त्यारे बीजो. रवि, मंगळ, बुध अने शनि जोता होय त्यारे त्रीजो. रवि, मंगळ, गुरु अने शुक्र जोता होय त्यारे चोथो. रवि, मंगळ, गुरु अने शनि जोता होय त्यारे पांचमो. रवि, मंगळ, शुक्र अने शनि जोता होय त्यारे छठो. रवि, बुध, गुरु अने शुक्र जोता होय त्यारे सातमो. रवि, बुध, गुरु अने शनिनी दृष्टि होय त्यारे आठमो. रवि, बुध, शुक्र अने शनिनी दृष्टि होय त्यारे नवमो. रवि, गुरु, शुक्र अने शनिनी दृष्टि होय त्यारे दशमो. मंगळ, बुध, गुरु अने शुक्रनी दृष्टि होय त्यारे अगीयारमो. मंगळ, बुध, गुरु अने शनिनी दृष्टि होय त्यारे बारमो. मंगळ, बुध, शुक्र अने शनिनी दृष्टि होय त्यारे तेरमो. मंगळ, गुरु, शुक्र अने शनिनी दृष्टि होय त्यारे चौदमो. तथा बुध, गुरु, शुक्र अने शनिनी दृष्टि होय त्यारे पंदरमो राजयोग थाय छे. हवे पांच ग्रहोनी दृष्टिए करीने छ योग आ प्रमाणे छे—रवि, मंगळ, बुध, गुरु अने शुक्रनी दृष्टि पडती होय त्यारे पहेलो राजयोग थाय छे. रवि, मंगळ, बुध, गुरु अने शनिनी दृष्टि होय त्यारे बीजो. रवि, मंगळ, बुध, शुक्र अने शनिनी दृष्टि होय त्यारे

त्रीजो. रवि, मंगळ, गुरु, शुक्र अने शनिनी दृष्टि होय त्यारे चोथो. रवि, बुध, गुरु, शुक्र अने शनिनी दृष्टि होय त्यारे पांचमो. तथा मंगळ, बुध, गुरु, शुक्र अने शनिनी दृष्टि होय त्यारे छठ्ठो राजयोग थाय छे. तथा छए ग्रहो एटले रवि, मंगळ, बुध, गुरु, शुक्र अने शनि ए छएनी दृष्टि लग्न उपर पडती होय त्यारे एक राजयोग थाय छे. आ सर्वे मळीने बावीश राजयोग थया. आ बावीश योगो मेष लग्नने वर्गोत्तम होय त्यारे थया. ए रीते वृष, मिथुन विगेरे बारे राशिना लग्नने आश्रीने बावीश बावीश राजयोगो थतां कुल २६४ राजयोग थाय छे. ए ज रीते प्रत्येक राशिमां वर्गोत्तम नवांशमां रहेला चंद्रने आश्रीने पण २६४ राजयोग थाय छे. ते बन्ने मळीने कुल ५२८ योगो थया.

हवे पांच योगो कहे छे.—

"यमे कुम्भेऽर्केऽजे गवि शशिनि तैरेव तनुगै-
र्नृयुक्सिंहालिस्थैः शशिजगुरुवक्रैर्नृपतयः ।
यमेन्दू तुंगेऽङ्गे सवितृशशिजौ षष्ठभवने,
तुलाऽजेन्दुक्षेत्रैः ससितकुजजीवैश्च नरपौ ॥ ३ ॥"

"कुंभनो शनि होय, मेषमां सूर्य होय, वृषमां चंद्र होय, मिथुनमां बुध होय, सिंहनो गुरु होय अने वृश्चिकनो मंगळ होय. आ रीते ग्रहो रहेला होय अने तेमां वळी कुंभ लग्न होय तो पहेलो योग, मेष लग्न होय तो बीजो अने वृष लग्न होय तो त्रीजो राजयोग थाय छे. तथा शनि अने चंद्र पोताना उच्च स्थानना एटले के तुलानो शनि अने वृषनो चंद्र होय अने वळी लग्नमां रह्या होय तथा कन्या राशिमां सूर्य अने बुध होय, तुलामां शुक्र होय, मेषनो मंगळ होय, अने कर्कनो गुरु होय. आ प्रकारनी ग्रहोनी स्थितिमां तुला लग्न होय तो पहेलो योग अने वृष लग्न होय तो बीजो योग. तेने पूर्वना त्रण साथे गणतां पांच राजयोग थाय छे."

हवे त्रण राजयोगो कहे छे.—

"कुजे तुङ्गेऽर्केन्द्वोर्धनुषि यमलग्ने च नृपतिः,
पतिर्भूमेश्चान्यः क्षितिसुतविलग्ने सशशिनि ।
सचन्द्रे सौरेऽस्ते सुरपतिगुरौ चापधरगे,
स्वतुङ्गस्थे भानावुदयमुपयाते क्षितिपतिः ॥ ४ ॥"

"मकरनो मंगळ होय, धनुष राशिमां सूर्य ने चंद्र होय, कोइ पण राशिमां रहेलो शनि लग्नमां होय त्यारे पहेलो राजयोग थाय छे. आ पहेला योगमां ज जो लग्नमां

मंगळ अने शनि होय तो बीजो योग थाय छे. तुलामां चंद्र अने शनि होय, धनुषमां गुरु होय अने सूर्य पोताना उच्च स्थानमां होइने एटले मेष राशिनो होइने लग्नमां रह्यो होय अर्थात् मेष राशिना लग्नमां सूर्य रह्यो होय त्यारे त्रीजो राजयोग जाणवो."

हवे फरीने बे राजयोगोने कहे छे.—

वृषे सेन्दौ लग्ने सवितृगुरुतीक्ष्णांशुतनयैः,
सुहृ ४ज्जाया ७ ख १० स्थैर्भवति नियमान्मानवपतिः ।
मृगे मन्दे लग्ने सहजरिपुधर्मव्ययगतैः,
शशाङ्काद्यैः ख्यातः पृथुगुणयशाः पुंगणपतिः ॥ ५ ॥

वृष लग्नमां चंद्र होय, सिंहनो सूर्य होय, वृश्चिकनो गुरु होय अने कुंभनो शनि होय त्यारे पहेलो राजयोग थाय छे. मकर लग्नमां शनि होय, मीननो चंद्र होय, मिथुननो मंगळ होय, कन्यानो बुध होय, धनुषनो गुरु होय अने शुक्र तथा सूर्य गमे ते स्थाने होय त्यारे बीजो योग थाय छे.

फरीने त्रण राजयोगो कहे छे.—

हये सेन्दौ जीवे मृगमुखगते भूमितनये,
स्वतुङ्गस्थौ लग्ने भृगुजशशिजावत्र नृपती ।
सुतस्थौ वक्रार्की गुरुशशिसिताश्चापि हिबुके,
बुधे कन्यालग्ने भवति हि नृपोऽन्योऽपि गुणवान् ॥ ६ ॥

धनुषने विषे गुरु अने चंद्र होय, मकरमां मंगळ होय, आ प्रमाणे ग्रहनी स्थिति होय त्यारे जो मीन लग्नमां शुक्र होय तो पहेलो अने कन्या लग्नमां बुध होय तो बीजो योग थाय छे. तथा कन्या लग्नमां बुध होय, मकरमां मंगळ अने शनि होय, धनुषमां गुरु, चंद्र अने शुक्र होय त्यारे त्रीजो गुणवान् राजयोग थाय छे.

फरीथी त्रण राजयोगो कहे छे.—

झषे सेन्दौ लग्ने घटमृगमृगेन्द्रेषु सहितै-
र्यमारार्कैर्योऽभूत्स खलु मनुजः शास्ति वसुधाम् ।
अजे सारे मूर्त्तौ शशिगृहगते चामरगुरौ,
सुरेज्ये वा लग्ने धरणिपतिरन्योऽपि गुणवान् ॥ ७ ॥

मीन लग्नमां चंद्र होय, कुंभनो शनि होय, मकरनो मंगळ होय अने सिंहनो अर्क (सूर्य) होय त्यारे ते माणस पृथ्वीनुं शासन करनार थाय छे. अर्थात् ते राजयोग कहेवाय छे. मेष लग्नमां मंगळ होय, चंद्रना गृहमां एटले कर्कमां गुरु होय त्यारे बीजो योग थाय छे. अथवा कर्क लग्नमां गुरु होय अने मेषनो मंगळ होय त्यारे त्रीजो राजयोग थाय छे.

कर्किणि लग्ने तत्स्थे जीवे चन्द्रसितज्ञैरायप्राप्तैः ।
मेषगतेऽर्के जातं विन्द्याद्विक्रमयुक्तं पृथिवीनाथम् ॥ ८ ॥

कर्क लग्नमां गुरु होय, वृषमां चंद्र, शुक्र अने बुध होय तथा मेषमां सूर्य होय त्यारे पराक्रमवमे युक्त एवा पृथ्वीनाथने थयेलो जाणवो एटले राजयोग थयो जाणवो.

मृगमुखेऽर्कतनये ननु संस्थे, जगकुलीरहरयोऽधिपयुक्ताः ।
मिथुनतौलिसहितौ बुधशुक्रौ, यदि ततः पृथुयशाः पृथिवीशः ॥ ए ॥

मकर लग्नमां शनि रहेलो होय, मेषनो मंगळ होय, कर्कनो चंद्र होय, सिंहनो सूर्य होय, मिथुननो बुध होय अने तुलानो शुक्र होय त्यारे मोटा यशने करनारो राजयोग थाय ठे.

स्वोच्चसंस्थे बुधे लग्ने जृगौ मेषूरणाश्रिते ।
सजीवेऽस्ते निशानाथे राजा मन्दारयोर्मृगे ॥ १० ॥

कन्या लग्नमां बुध होय, मिथुननो शुक्र होय, मीन राशिमां गुरु अने चंद्र होय तथा मकर राशिमां शनि अने मंगळ होय त्यारे राजयोग थाय ठे. आ सर्वे मळीने ५७ए योगो थाय ठे.

आ प्रथम जांगाना राजयोगोनुं फळ कहे ठे.—

अपि खलकुलजाता मानवा राज्यजाजः,
किमुत नृपकुलोत्थाः प्रोक्तजूपालयोगैः ।
नृपतिकुलसमुत्थाः पार्थिवा वक्ष्यमाणै-
र्जवति नृपतितुल्यस्तेष्वजूपालपुत्रः ॥ ११ ॥

आ उपर कहेला राजयोगोए करीने सामान्य कुळमां उत्पन्न थयेला माणसो पण राज्यने जोगवनारा थाय ठे, तो क्षत्रिय कुळमां उत्पन्न थयेला माणसो राजा थाय तेमां शुं कहेवुं ? तथा हवे पठी कहेवाशे एवा योगोए करीने राजकुळमां उत्पन्न थयेला माणसो राजा थाय ठे, अने बीजा कुळमां उत्पन्न थयेला माणसो राजानी तुल्य (जेवा) थाय ठे.

ते योगो आ प्रमाणे ठे.—

स्वोच्चर्क्षत्रिकोणगैर्बलिष्ठैस्त्र्याद्यैर्जूपतिवंशजा नरेन्द्राः ।
पञ्चादिजिरन्यवंशजा हीनैर्वित्तयुता न जूमिपालाः ॥ १२ ॥

बळवान् एवा त्रण के चार ग्रहो पोताना उच्च स्थानमां, पोताना गृहमां के पोताना त्रिकोणमां रहेला होय तो क्षत्रिय वंशमां उत्पन्न थयेला माणसो राजा थाय ठे, अने पांच, ठ के सात बळवान् ग्रहो उपरनां त्रण स्थानोमां रह्या होय तो सामान्य वंशमां

उत्पन्न थयेला माणसो पण राजा थाय छे, परंतु ते ग्रहो पोताना उच्च विगेरे स्थानमां रह्या छतां पण जो बळहीन होय तो तेओ धनवान् थाय छे, पण राजा थता नथी. अहीं त्रणथी सात सुधीना पांच राजयोग थाय छे.

सिंहस्थेऽर्केऽजेन्दौ लग्ने भौमे स्वोच्चे कुंभे मन्दे ।
चापं प्राप्ते जीवे राज्ञः पुत्रं विद्याद्भूमेर्नाथम् ॥ १३ ॥

मेष लग्नमां चंद्र होय, सिंह राशिनो सूर्य होय, मंगळ पोताना उच्च स्थाननो होय, कुंभनो शनि होय तथा धनुष राशिनो गुरु होय त्यारे राजवंशमां उत्पन्न थयेलो पुत्र भूमिनो नाथ थाय छे एम जाणवुं. अर्थात् राजयोग थाय छे.

फरीथी बे राजयोगोने कहे छे.—

स्वर्क्षे शुक्रे पातालस्थे धर्मस्थानं प्राप्ते चन्द्रे ।
दुश्चिक्यांगप्राप्तिप्राप्तैः शेषैर्जातः स्वामी भूमेः ॥ १४ ॥

ज्यारे कुंभ लग्न होय त्यारे जो पाताल (चोथा) स्थाने एटले वृष राशिमां शुक्र रह्यो होय, धर्मस्थानमां एटले तुला राशिमां चंद्र रह्यो होय, अने बाकीना एटले रवि, मंगळ, बुध, गुरु अने शनि ए ग्रहो त्रीजा, पहेला अने अगीयारमा स्थानमां एटले मेष, कुंभ अने धनुष राशिमां रह्या होय तो राजयोग थाय छे. वळी ज्यारे कर्क लग्न होय त्यारे जो पाताल (चोथा) स्थाने एटले तुला राशिमां शुक्र होय, मीनमां चंद्र होय अने बाकीना रवि विगेरे ग्रहो कन्या, कर्क अने वृष राशिमां होय तोपण ते राजयोग कहेवाय छे. सर्व मळीने आठ राजयोग थया.

सौम्ये वीर्ययुते तनुसंस्थे वीर्याढ्ये च शुभे सुकृतस्थे ।
धर्मार्थोपचयेष्वथ शेषैर्धर्मात्मना नृपजः पृथिवीशः ॥ १५ ॥

लग्नमां बुध बळवान् होय, नवमा स्थानमां शुक्र के गुरु बळवान् थइने रह्यो होय अने बाकीना ग्रहो नवमा, बीजा, त्रीजा, छठा, दशमा अने अगीयारमा स्थानमां रह्या होय तो क्षत्रियनो पुत्र पृथ्वीपति थाय छे, एटले राजयोग थाय छे. सर्व मळीने नव राजयोग थया.

हवे बीजा बे राजयोग कहे छे.—

वृषोदये मूर्त्तिधनारिलाभगैः शशांकजीवार्कसुताऽपरैर्नृपः ।
सुखे गुरौ खे शशितीक्ष्णदीधिती यमोदये लाभगतैर्नृपोऽपरैः ॥ १६ ॥

वृष लग्नमां चंद्र होय, मिथुनमां गुरु होय, तुलानो शनि होय अने मीनमां बीजा एटले रवि, मंगळ, बुध अने शुक्र होय तो राजयोग थाय छे. तथा लग्नमां शनि होय, चोथा स्थानमां गुरु होय, दशमा स्थानमां सूर्य अने चंद्र होय तथा अगीयारमा स्था-

नमां मंगळ, बुध अने शुक्र होय त्यारे पण राजयोग थाय छे. सर्व मळीने अगीयार राजयोग थया.

फरीने बीजा बे राजयोग कहे छे.—

मेषूरणा १० य ११ तनु १ गाः शशिमन्दजीवा,
ज्ञारौ धने सितरवी हिबुके नरेन्द्रम् ।
वक्रासितौ शशिसुरेज्यसितार्कसौम्या,
होरा १ सुखा ४ स्त ७ शुभ ९ खा १० प्ति ११ गताः प्रजेशम् ॥ १७ ॥

दशमा स्थानमां चंद्र होय, अगीयारमे शनि होय, लग्नमां गुरु होय, बीजे बुध अने मंगळ होय तथा चोथे स्थाने शुक्र अने रवि होय त्यारे राजयोग थाय छे. वळी होरामां एटले लग्नमां मंगळ अने शनि होय, चोथे चंद्र होय, सातमे गुरु होय, नवमे शुक्र होय, दशमे सूर्य होय अने अगीयारमे बुध होय त्यारे पण राजयोग थाय छे. आ सर्वे मळीने बीजा भांगामां तेर राजयोग छे.

हवे प्रसंगने अनुसरीने बीजा योगो कहे छे.—

गुरुसितबुधलग्ने सप्तमस्थेऽर्कपुत्रे
वियति दिवसनाथे भोगिनां जन्म विद्यात् ।
शुभबलयुतकेन्द्रैः क्रूरभस्थैश्च पापै-
र्व्रजति शबरदस्युस्वामितामर्थभाक् च ॥ १८ ॥

लग्नमां गुरु, शुक्र के बुध एमांनो कोइ पण होय अथवा गुरु, शुक्र के बुधनुं लग्न होय एटले के धनुष, मीन, वृष, तुला, मिथुन के कन्या राशिनुं लग्न होय, तेमज सातमे शनि होय तथा दशमे सूर्य होय, आ प्रमाणे योग होय त्यारे ते समये उत्पन्न थयेला माणसो भोगवाळा थाय छे. वळी शुभ ग्रहोनी राशिओ (उपर कही ते ज) बळवान् होय तथा केंद्रमां होय अने वळी क्रूर ग्रहो क्रूर ग्रहनी राशिमां रहेला होय त्यारे आ प्रकारना योगमां उत्पन्न थयेल माणस भीलोनो अने चोरोनो स्वामी थाय छे तथा धनवान् थाय छे. आ प्रमाणे बृहत् जातकमां कहेला राजयोगो कह्या.

हवे बीजा पण राजयोगो आ प्रमाणे छे.—

लग्ने शौरिस्तथा चन्द्रस्त्रिकोणे जीवभास्करौ ।
कर्मस्थाने भवेद्भौमो राजयोगस्तदा भवेत् ॥ १ ॥

लग्नमां शनि तथा चंद्र होय, त्रिकोणमां गुरु तथा सूर्य होय अने दशमा स्थानमां मंगळ होय त्यारे राजयोग १ थाय छे.

धने चन्द्रशनी मेषे जीवः खे राहुभार्गवौ ।
अथवा दशमे जीवबुधशुक्रास्तथा शशी ॥ २ ॥

धन राशिमां चंद्र अने शनि होय, मेषनो गुरु होय अने दशमे स्थाने राहु तथा शुक्र होय त्यारे राजयोग थाय छे. २. अथवा दशमे स्थाने गुरु, बुध, शुक्र अने चंद्र होय त्यारे पण राजयोग थाय छे. ३.

अथवा दशमे ज्ञार्कौ भौमराहू च षष्ठगौ ।
राजयोगेष्वेषु जाता राजानः स्युर्नरोत्तमाः ॥ ३ ॥

अथवा दशमे स्थाने बुध अने सूर्य होय तथा मंगळ अने राहु छठे स्थाने रह्या होय तोपण राजयोग थाय छे. ४. आ राजयोगोमां उत्पन्न थयेला उत्तम माणसो राजा थाय छे.

आदौ जीवः सितः प्रान्ते यथामध्ये निरन्तरम् ।
राजयोगं विजानीयाः कुटुम्बबलवर्द्धनम् ॥ ४ ॥

प्रथम गुरु अने छेडे शुक्र तथा मध्यमां जेम घटे तेम निरंतर ग्रहो होय तो ते राजयोग जाणवो. आ राजयोगमां कुटुंब अने बळनी वृद्धि थाय छे.

सहजस्थो यदा जीवो मृत्युस्थाने यदा सितः ।
निरन्तरं ग्रहा मध्ये राजा भवति निश्चितम् ॥ ५ ॥

त्रीजे स्थाने गुरु होय, आठमे स्थाने शुक्र होय अने बीजा ग्रहो निरंतर (आंतरा रहित) मध्य भागमां होय तो ते अवश्य राजा थाय छे. अर्थात् ए राजयोग कहेवाय छे.

आदौ जीवः पञ्चमे वा दशमे चन्द्रमा भवेत् ।
राज्यवान् स्यान्महाबुद्धिस्तपस्वी वा जितेन्द्रियः ॥ ६ ॥

पहेला अथवा पांचमा स्थानमां गुरु होय अने दशमा स्थानमां चंद्र होय तो ते राज्यवान् अने बुद्धिमान् थाय छे, अथवा जितेंद्रिय तपस्वी थाय छे.

स्वक्षेत्रस्था यदा जीवबुधसूर्यसुतास्तदा ।
जातकस्य सुदीर्घायुः संपदश्च पदे पदे ॥ ७ ॥

ज्यारे गुरु, बुध अने शनि पोतपोताना स्थानमां रह्या होय त्यारे तेवा योगमां उत्पन्न थयेलो माणस दीर्घायुष्य थाय छे तथा तेने स्थाने स्थाने संपत्ति मळे छे.

द्वितृतीये सुते धर्मे कर्मण्यपि यदा ग्रहाः ।
राजयोगं विजानीया जातस्तत्रोत्कटो भवेत् ॥ ८ ॥

बीजा, त्रीजा, पांचमा, नवमा अने दशमा स्थानमां ज्यारे ग्रहो रहेला होय त्यारे ते राजयोग जाणवो. तेमां उत्पन्न थयेलो मनुष्य उत्कृष्ट थाय छे.

धने व्यये यदा लग्ने सप्तमे भवने ग्रहाः ।
छत्रयोगस्तदा नीचकुलोऽपि नृपतिर्भवेत् ॥ ९ ॥

बीजा, बारमा, पहेला अने सातमा भवनमां ग्रहो रहेला होय त्यारे छत्रयोग थाय छे. तेमां उत्पन्न थयेलो नीच कुळवाळो पण राजा थाय छे.

सिंहे जीवस्तथा शुक्रः कन्यायां मिथुने शनिः ।
स्वक्षेत्रे हिबुके भौमः स पुमान्नायको भवेत् ॥ १० ॥

सिंह राशिनो गुरु होय, कन्यानो शुक्र होय, मिथुननो शनि होय अने चोथा स्थानमां मेष अथवा वृश्चिकनो मंगळ होय तो तेमां जन्मेलो पुरुष नायक (राजा) थाय छे.

कन्यायां शौरिचन्द्रौ च मृगे भौमो घटे तमः ।
सिंहे जीवो भवेज्जातो राजा शत्रुक्षयंकरः ॥ ११ ॥

कन्या राशिमां शनि अने चंद्र होय, मकरनो मंगळ होय, कुंभनो राहु होय तथा सिंहनो गुरु होय एवा योगमां उत्पन्न थयेलो माणस शत्रुनो क्षय करनारो राजा थाय छे.

शुक्रो जीवो रविर्भौमो धने मकरकुंभयोः ।
मीने च वत्सरे त्रिंशे जातः स्यात्सर्वकर्मकृत् ॥ १२ ॥

धन, मकर, कुंभ अने मीन राशिमां अनुक्रमे शुक्र, गुरु, रवि अने मंगळ होय तो ते योगमां उत्पन्न थयेलो माणस त्रीश वर्षनो थाय त्यारे सर्व कार्यने करनारो (समर्थ) थाय छे.

लग्ने सौरिस्तथा चन्द्रश्चाष्टमे भवने सितः ।
राजमान्यो महाकामी भोगपत्नीरतस्तथा ॥ १३ ॥

लग्नमां शनि अने चंद्र होय तथा आठमा भवनमां शुक्र होय तो ते योगमां उत्पन्न थयेलो मनुष्य राजाने मान्य थाय छे, मोटी कामनावाळो तथा भोग अने पत्नीमां आसक्त थाय छे.

मिथुने च यदा राहुः सिंहस्थो भूमिनन्दनः ।
वृश्चिके च यदा जीवः स पुमान्नृपतिर्भवेत् ॥ १४ ॥

मिथुनमां राहु होय, सिंहमां मंगळ होय अने वृश्चिकमां गुरु होय त्यारे ते योगमां उत्पन्न थयेलो माणस राजा थाय छे.

स्वगृहे च धने जीवस्तुलायां च भवेत्सितः ।
शौरिर्मकरे मिथुने चन्द्रः स्याद्राजयोगकृत् ॥ १५ ॥

पोताना गृहमां के धन राशिमां गुरु होय, तुलामां शुक्र होय, मकरमां शनि होय अने मिथुनमां चंद्र होय तो ते राजयोग करनारो छे.

युग्मे शशी वृषे जीवः सिंहे शौरिर्मृगे कुजः ।
शुक्रस्तुलायां कन्यायां बुधार्कौ राज्ययोगदाः ॥ १६ ॥

मिथुननो चंद्र, वृषभनो गुरु, सिंहनो शनि, मकरनो मंगळ, तुलानो शुक्र अने कन्याना बुध तथा सूर्य होय तो ते राजयोगने आपनारा छे.

धने शुक्रश्च जौमश्च मीने जीवस्तुले बुधः ।
नीचश्चन्द्रो रवेर्युक्तो राजयोगोऽजिधीयते ॥ १७ ॥

धननो शुक्र तथा मंगळ होय, मीननो गुरु होय, तुलानो बुध होय तथा नीचनो चंद्र सूर्ये करीने युक्त होय तो ते राजयोग कहेवाय छे.

मीने शुक्रो बुधश्चान्ते लग्ने सूर्यो धने शशी ।
सहजे च जवेज्जौमो राजयोगं प्रचक्षते ॥ १८ ॥

मीननो शुक्र होय, बारमे बुध होय, लग्नमां सूर्य होय, धनमां चंद्र होय तथा त्रीजा स्थानमां मंगळ होय तो ते राजयोग कहेवाय छे.

ज्रातृस्थाने यदा जीवो लाजस्थाने शशी जवेत् ।
उच्चेषु वा शुजाः केन्द्रे लग्ने वा जीव एककः ॥ १९ ॥

त्रीजा जवनमां गुरु होय अने अगीयारमा जवनमां चंद्र होय, अथवा उच्च स्थानमां शुज ग्रहो होय अने केंद्रमां के लग्नमां एकलो गुरु होय तो राजयोग थाय छे.

अथवा.—

सिंहे जीवस्तुलाकीटधनुर्मकरकेषु च ।
ग्रहाः स्थाने तदा जातो देशजोगी जवेन्नरः ॥ २० ॥

सिंहनो गुरु होय तथा तुला, वृश्चिक, धन अने मकरमां पोतपोताना स्थानना ग्रहो होय तेवा योगमां उत्पन्न थयेलो मनुष्य देशनो जोक्ता (स्वामी) थाय छे.

विद्यास्थाने यदा सौम्याः कर्मस्थाने च चन्द्रमाः ।
धर्मस्थाने पुनः सौम्यास्तदा राज्यं विधीयते ॥ २१ ॥

पांचमा स्थानमां सौम्य ग्रहो होय, दशमा स्थानमां चंद्र होय अने नवमा स्थानमां सौम्य ग्रहो होय तेवा योगमां उत्पन्न थयेलाने राजयोग कहेलो छे.

युग्मे वृषे मेषमीने कुंजे च मकरे ग्रहाः ।
यद्वा ज्ञगुरुशुक्रेन्दुराहवः स्युश्चतुष्टये ॥ २२ ॥

मिथुन, वृष, मेष, मीन, कुंज अने मकरमां सर्व ग्रहो रहेला होय अथवा बुध, गुरु, शुक्र, चंद्र अने राहु ए ग्रहो चतुष्टयमां एटले पहेला, चोथा, सातमा अने दशमा स्थानमां रह्या होय तो राजयोग थाय छे.

यद्वा तुर्ये सितारेन्दुगुर्वर्कशनयः स्थिताः ।
योगेष्वेतेषु ये जातास्तेषां स्याद्राजयोगिता ॥ २३ ॥

अथवा चोथा स्थानमां शुक्र, मंगळ, चंद्र, गुरु, रवि अने शनि रहेला होय तो आ योगोमां उत्पन्न थयेला मनुष्योने राजयोग थाय छे.

जन्मचतुर्थे भवने भार्गवरविराहुचन्द्रभौमेषु ।
जातो बुधयुक्तेषु च पृथ्वीपालो भवेत्पुरुषः ॥ २४ ॥

जन्मकुंडळीना चोथा भवनमां बुधनी साथे शुक्र, रवि, राहु, चंद्र के मंगळ रह्या होय तो ते योगमां उत्पन्न थयेलो पुरुष पृथ्वीपाळ (राजा) थाय छे.

जन्मचतुर्थे भवने भार्गवगुरुचन्द्रभौमशनियुक्तः ।
जातं विदधाति रविः पृथ्वीपालं न सन्देहः ॥ २५ ॥

जन्मकुंडळीना चोथा भवनमां रविनी साथे शुक्र, गुरु, चंद्र, मंगळ के शनि रह्यो होय तो ते योग पृथ्वीपाळने करनारो छे. एमां कांइ संदेह नथी.

धने व्ययेऽष्टमे षष्ठे सौम्यक्रूरा युता यदि ।
यत्नात्स पुरुषो रक्ष्य ईश्वरः कुलवर्द्धनः ॥ २६ ॥

बीजा, बारमा, आठमा अने छठा स्थानमां जो सौम्य तथा क्रूर ग्रहो साथे रह्या होय तो ते योगमां उत्पन्न थयेला पुरुषनुं यत्नथी रक्षण करवुं, कारण के ते कुळने वृद्धि पमाडनार राजा थाय छे.

तृतीये वैकादशे वा त्रिकोणे वा भवेद्यदि ।
सप्तमे वा भवेज्जीवः सुरूपो राजमानितः ॥ २७ ॥

त्रीजा, अगीयारमा, त्रिकोण (नवमा, पांचमा) के सातमा स्थानमां गुरु होय तो तेमां उत्पन्न थयेलो पुरुष सारा रूपवाळो अने राजानो मानीतो थाय छे.

गुरुर्लग्ने धने क्रूरो व्यये क्रूरो भवेत्पुनः ।
सप्तमे भवने क्रूरो धनसौभाग्यजातकम् ॥ २८ ॥

लग्नमां गुरु, धनमां क्रूर, व्ययमां (बारमामां) क्रूर अने सातमा भवनमां क्रूर ग्रह होय त्यारे ते योग धन अने सौभाग्यने वृद्धि करनारो छे. आ प्रमाणे बीजा ग्रंथमां कहेला कुल एकत्रीश राजयोगो थाय छे.

पूर्णभद्र ज्योतिषमां बे राजयोगो आ प्रमाणे कह्या छे.—

यदि सर्वग्रहदृष्टिर्लग्ने परिपतति दैवतवशेन ।
तद्भवति नृपतियोगः कल्याणपरंपराहेतुः ॥ २९ ॥
अन्योन्यस्योच्चराशिस्थौ यदि स्यातां ग्रहौ तदा ।
राजयोगं जिनाः प्राहुर्दर्शने तु महाफलम् ॥ ३० ॥

जो लग्नमां भवितव्यताना वशथी सर्व ग्रहोनी दृष्टि पडती होय तो कल्याणनी परंपरानो हेतुरूप राजयोग थाय छे. १. परस्परना बन्ने ग्रहो जो उंच राशिमां रहेला होय तो ते योगने जिनेश्वरो राजयोग कहे छे. तेमनुं परस्पर दर्शन तो महा फळवाळुं छे. २.

हवे बीजा छ योगो कहे छे.—

रविवर्जं द्वादशगैरनुफाश्चन्द्राद्द्वितीयगैः सुनुफाः ।
उभयस्थितैर्दुरधरा केमद्रुममन्यथैतेन्यः ॥ ३१ ॥

जन्मपत्रिकामां जे स्थाने चंद्र रह्यो होय ते स्थानथी बारमे स्थाने सूर्य विनानो बीजो कोइ पण ग्रह रहेलो होय तो ते अनुफा नामनो योग कहेवाय छे. चंद्रथी बीजे स्थाने जो रवि सिवाय कोइ पण ग्रह रह्यो होय तो सुनुफा नामनो योग थाय छे. चंद्रथी बारमा अने बीजा ए बन्ने स्थानोमां जो रवि सिवाय कोइ पण ग्रह रह्या होय तो ते दुरधरा योग कहेवाय छे अने अन्यथा एटले चंद्रथी बारमे तथा बीजे स्थाने रवि सिवायनो कोइ पण ग्रह रह्यो न होय तो केमद्रुम नामनो योग थाय छे.

सूर्याद्व्ययगैर्वोशिर्द्वितीयगैश्चन्द्रवर्जितैर्वेशिः ।
उभयस्थैरुभयचरी राजयोगाः षरूप्यमी ॥ ३२ ॥

जन्मपत्रिकामां सूर्य जे स्थाने रहेलो होय ते स्थानथी बारमे स्थाने चंद्र सिवाय बीजो कोइ ग्रह रह्यो होय तो वोशि नामनो योग थाय छे, अने एज रीते बीजे स्थाने कोइ ग्रह रह्यो होय तो वेशि योग थाय छे, तथा बारमा अने बीजा ए बन्ने स्थानमां चंद्र सिवायना कोइ ग्रह रह्या होय तो उभयचरी योग थाय छे. आ छए योगो राजयोग कहेवाय छे. अहीं मूळ श्लोकमांज छनी संख्या बतावी होवाथी सातमो केमद्रुम योग (उपरना श्लोकमां कहेलो चोथो योग) अधम एटले अशुभ छे एम जाणवुं. चंद्र उपर सर्व ग्रहोनी दृष्टि पडती होय तो तेज योग भग्न केमद्रुम नामनो राजयोग थाय छे. आ साते राजयोगो जातकमां कहेला छे. लल्ल तो कहे छे के—"केंद्रस्थान के चंद्रनुं स्थान कोइ पण ग्रहवडे युक्त होय तो केमद्रुम योग थतो नथी." आ प्रमाणे कुल ४० राजयोग थाय छे. यात्राना योगो सहित सर्व योगो मळीने कुल ९०६ योगो थया.

हवे मूळ ग्रंथकार चित्तनी शुद्धि सर्व निमित्तो करतां बळवान् छे ते कहे छे.—

सकलेष्वपि कार्येषु यात्रायां च विशेषतः ।
निमित्तान्यप्यतिक्रम्य चित्तोत्साहः प्रगल्भते ॥ ६३ ॥

अर्थ—सर्व कार्योमां तथा विशेषे करीने यात्रामां तो सर्व निमित्तोने उल्लंघन करीने चित्तनो उत्साहज अधिक फळदायक छे. जो के निमित्त एटले शरीरना फाबा तथा

जमणा अंगनुं फरकवुं विगेरे कहेवाय छे तथा अंगनो स्पर्श विगेरे इंगित कहेवाय छे, दुर्गा विगेरे शकुन कहेवाय छे अने लग्न विगेरे ज्योतिष कहेवाय छे तोपण अहीं अभेद कल्पनाए करीने ते सर्वे निमित्त शब्दथीज जाणी लेवां.

हवे यात्रामां दिशानो विभाग बतावे छे.—

ऐन्द्र्यादि ४ दिक्षु मातङ्ग १ रथा २ श्व ३ नरवाहनैः ४ ।
व्रजेत्क्रमेण भूपालो दिक्पालोल्लासिमानसः ॥ ६४ ॥

अर्थ—राजाए पूर्व दिशामां हस्तीवडे, दक्षिणमां रथवडे, पश्चिममां अश्ववडे अने उत्तरमां शिबिकादिकवडे दिक्पालनुं मनमां स्मरण करतां प्रयाण करवुं. अहीं दिक्पाल एटले जवानी दिशानो पति जाणवो. ते दिक्पति आ प्रमाणे छे.—"पूर्वनो इंद्र, अग्नि खूणानो अग्नि, दक्षिणनो यम, नैर्ऋत्यनो नैर्ऋत, पश्चिमनो वरुण, वायव्यनो वायु, उत्तरनो कुबेर अने ईशान खूणानो स्वामी ईशान छे." आमांनी जे दिशामां जवुं होय ते दिशाना स्वामीनुं तथा सूर्यादिक ग्रहोनुं आनंदपूर्वक ध्यान करतां प्रयाण करवुं. रत्नमाळामां पण कह्युं छे के—

"ध्यायन्नाशाधीश्वरं हृष्टचेताः, क्षोणीपालो निर्विलम्बं प्रयायात् ।"

"हर्षयुक्त चित्तथी दिशाना स्वामीनुं ध्यान करतां राजाए विलंब विनाज प्रयाण करवुं."

॥ इति गमद्वारम् । ८

॥ अथ वास्तुद्वारम् ॥ ९

आ प्रमाणे गमद्वार (यात्राद्वार) कह्युं. हवे वास्तुद्वार कहे छे.—

वास्तु नव्यं विभूत्यायुःकीर्तिकामो निवेशयेत् ।
ज्ञात्वाऽऽय १ र्क्ष २ व्ययां ३ शां ४ स्तु चन्द्र ५ ताराबले ६ अपि ॥६५॥

अर्थ—संपत्ति, आयुष्य अने कीर्तिनी कामना(इच्छा)वाळाए आय १, नक्षत्र २, व्यय ३, अंश ४, चंद्रबळ ५ अने ताराबळ जाणीने नवीन वास्तु करवुं.

घर, हाट (दुकान) अने प्रासाद विगेरे वास्तु कहेवाय छे. संपत्ति विगेरे शब्दोथी ग्रंथकारे आ प्रमाणे सूचव्युं छे.—

"कार्यसिद्धिसुखायूंषि निमित्तशकुनादिभिः ।
ज्ञात्वा प्रष्टुर्गृहारंभे कीर्तयेत् समयं सुधीः ॥"

"विद्वाने (जोशीए) पूछनार गृहस्थनी कार्यसिद्धि, सुख अने आयुष्यादिकने निमित्त तथा शकुन विगेरेवडे जाणीने गृहने आरंभ करवानो समय कहेवो."

अहीं "शकुनादिभिः" ए ठेकाणे आदि शब्द लखेलो छे तेथी अंगस्पर्शादिक ग्रहण करवा. अहीं कोइ शंका करे के अंगस्पर्श करीने शी रीते निर्णय थाय? ते उपर लघु जातकमां कह्युं छे के—

"शीर्ष १ मुख २ बाहु ३ हृदयो ४ दराणि ५ कटि ६ बस्ति ७ गुह्य ८ संज्ञानि ।
ऊरू ९ जानू १० जंघे ११ चरणा १२ विति राशयोऽजाद्याः ॥"

"शीर्ष १, मुख २, बाहु ३, हृदय ४, उदर ५, कटि ६, बस्ति ७, गुह्य ८, ऊरू ९, जानु १०, जंघा ११ अने चरण १२ आ प्रमाणे मेषथी आरंभीने मीन पर्यंत बारे राशिनां अनुक्रमे अंगो जाणवां." अहीं मेषने आरंभीने एम कह्युं छे तोपण जे तात्कालिक लग्न होय तेज मस्तक जाणवुं, अने त्यारपछी अनुक्रमे बीजां अंगो जाणवां. (एटले के कोइ गृहस्थ गृहारंभना समयने पूछवा आवे ते वखते विद्वाने प्रश्नकुंडळी करवी. तेमां जे लग्न आवे ते राशिनेज शिर गणवुं अने त्यारपछीनी राशिओने अनुक्रमे मुख विगेरे चरण पर्यंत गणवां.) त्यारपछी—

"कालपुंसो यदङ्गं तत्प्रष्टा स्पृशति चेच्छुभैः ।
युक्तं विलोकितं वापि सद्मनिर्माणमादिशेत् ॥"

"उपर प्रमाणे थयेला काळपुरुषना जे कोइ अंगने पूछनार स्पर्श करे ते अंग शुभ ग्रहोए युक्त होय अथवा तेनी दृष्टि परती होय तो ते प्रमाणे तेने गृहप्रारंभनो समय कहेवो." आ प्रमाणे दैवज्ञवल्लभमां कह्युं छे.

हवे आय विगेरेनेज कहे छे.—

ध्वजो १ धूमो २ हरिः ३ श्वा ४ गौः ५ खरो ६ हस्ती ७ ध्वांक्षः ८ क्रमात् ।
पूर्वादिबलिनोऽष्टाया विषमास्तेषु शोभनाः ॥ ६६ ॥

अर्थ—ध्वज १, धूम २, हरि (सिंह) ३, श्वा (कूतरो) ४, गो (गाय-बळद) ५, खर (गधेडो) ६, हस्ती ७ अने ध्वांक्ष (कागडो) ८ आ आठ आयो अनुक्रमे पूर्वादिक दिशाओमां बळवान् छे. तेमांना विषम आयो (एकी आयो) सारा छे.

आ आठ आयो पूर्व, अग्नि विगेरे अनुक्रमथी आठ दिशाओमां बळवान् छे, कारण के तेओ सर्वदा ते ते दिशामांज रहेला छे. कह्युं छे के—

"ईशानान्ते च दिग्भागे पूर्वादिक्रमतः स्थिताः ।
अन्योऽन्याभिमुखा ह्येते विज्ञेया वास्तुकर्मणि ॥"

"आ आयो पूर्व विगेरे दिशाना क्रमथी ईशान खूणा पर्यंत आठे दिशामां रहेला छे, तेओ वास्तुकार्यमां परस्पर सन्मुख (साम सामा मुखे) रहेला जाणवा."

आयोनी स्थापना नीचे प्रमाणे.—

काक ८	ध्वज १	धूम २
गज ७	श्री	सिंह ३
खर ६	वृष ५	श्वान ४

आ आठे आयोमां विषम एटले पहेलो, त्रीजो, पांचमो अने सातमो ए चार आयो सारा छे, तथा विरुद्ध (अशुभ) संज्ञाने लीधे विरुद्ध फळ आपनार होवाथी सम आयो एटले बीजो, चोथो, छठो अने आठमो ए चार सारा नथी. आ आठे नामो सार्थक छे एटले पोतानां नाम प्रमाणे गुणवाळां छे.

आ आयोने स्थापन (ग्रहण) करवानी व्यवस्था विवेकविलासमां आ प्रमाणे करी छे.—

"वृषं सिंहं गजं चैव खेटकर्बटकोट्टयोः ।
द्विपः पुनः प्रयोक्तव्यो वापीकूपसरस्सु च ॥ १ ॥
मृगेन्द्रमासने दद्याच्छयनेषु गजं पुनः ।
वृषं भोजनपात्रेषु छत्रादिषु पुनर्ध्वजम् ॥ २ ॥
अग्निवेश्मसु सर्वेषु गृहे वह्न्युपजीविनाम् ।
धूमं नियोजयेत् केचित् श्वानं म्लेच्छादिजातिषु ॥ ३ ॥
खरो वेश्यागृहे शस्तो ध्वांक्षः शेषकुटीषु च ।
वृषः सिंहो गजश्चापि प्रासादपुरवेश्मसु ॥ ४ ॥"

"गामडां तथा किल्लामां वृष, सिंह अने गजनो आय लेवो. वाव, कूवा अने तळावमां गजनो आय लेवो. आसनमां सिंहनो आय देवो. शय्यामां गजनो आय देवो. भोजननां पात्रोमां वृषनो आय देवो. छत्र विगेरेमां ध्वजनो आय देवो. अग्निनां सर्व गृहोमां तथा अग्निवडे आजीविका करनारनां गृहोमां धूम आय लेवो. म्लेच्छ विगेरेनां घरोमां श्वाननो आय देवो. वेश्याना घरमां खर आय देवो सारो छे. नानी झुंपडीओमां काकनो आय सारो छे. प्रासाद (चैत्य–राजमहेल) तथा नगरनां घरोमां वृष, सिंह अने गज ए त्रणे आयो शुभ छे."

हवे आयोनो विनिमय एटले एक आयने ठेकाणे बीजा कोइ आय लइ शकाय के नहीं ? तेनो नियम बतावे छे.—

१ वृषः सिंहो गजश्चैव कुण्डे कर्कटकीटयोः । इति मुहूर्तचिन्तामणिटीका ।

ध्वजः पदे तु सिंहस्य तौ गजस्य वृषस्य ते ।
एवं निवेशमर्हन्ति स्वतोऽन्यत्र वृषस्तु न ॥ ६७ ॥

अर्थ—सिंहने स्थाने ध्वज, गजने स्थाने ते बन्ने एटले ध्वज अने सिंह, वृषने स्थाने ते त्रणे एटले ध्वज, सिंह अने गज, आ प्रमाणे एकने अभावे बीजा आयो स्थापन करवा योग्य छे, पण वृष आय पोताना स्थानथी बीजे स्थाने लेवो नहीं.

जे स्थाने सिंहनो आय प्राप्त थतो होय त्यां ध्वजनो आय लइ शकाय छे अने सिंह पण लइ शकाय छे, तेमां कांइ दोष नथी. ए रीते आगळ पण जाणवुं. गजनो आय प्राप्त थयो होय त्यां गजनो अथवा तो ध्वज अने सिंहनो आय पण देवो. वृषनो आय प्राप्त थयो होय तो ते वृषनो अथवा ध्वज, गज अने सिंहनो पण आय दइ शकाय छे, पण वृषनो आय प्राप्त थयो होय तोज वृषनो आय देवो. अर्थात् बीजा आय प्राप्त थया होय त्यां वृषनो आय देवो नहीं.

आयादिक लाववानुं करण (रीत) कहे छे.—

आयो दैर्घ्यान्ययोर्घातः फलमष्टहृतेऽधिकः ।
फलमष्टगुणं भा २७ से भं तत्राष्टहृते व्ययः ॥ ६८ ॥

अर्थ—वास्तुनी लंबाइ तथा पहोळाइने गुणतां जे आवे ते फळ कहेवाय छे. फळने आठे भाग लेतां जे शेष रहे ते आय जाणवो. फळने आठे गुणीने सत्यावीशे भागतां जे शेष रहे ते नक्षत्र जाणवुं, तथा ते नक्षत्रने आठे भाग लेतां जे शेष रहे ते व्यय जाणवो.

लंबाइ अने अन्य एटले पहोळाइ ए बेनो गुणाकार करीए त्यारे फळ थाय छे. ते फळने आठे भाग देतां बाकी जे वधे ते आय जाणवो. ए शब्दार्थ थयो. भावार्थ आ प्रमाणे—लंबाइ तथा विस्तार (पहोळाइ) ए बेने परस्पर गुणवा. गुणाकार करवाथी जे संख्या आवे ते फळ कहेवाय छे. आनुं बीजुं नाम क्षेत्रफळ पण कहेवाय छे. तेज फळना आंकने आठे भागतां जे बाकी शेष रहे ते इष्ट वास्तुनो आय जाणवो, एटले के जो आठे भागतां एक बाकी रहे तो ध्वज आय अने बे बाकी वधे तो धूम आय विगेरे जाणवुं, पण जो शून्य शेष रहे तो छेल्लो ध्वांक्ष (काक) आय जाणवो. अहीं परंपरा आ प्रमाणे छे—छ जवे करीने एक आंगळ थाय छे, चोवीश आंगळनो एक हाथ अने चार हाथनो एक दंड थाय छे. तेथी करीने ज्यां दंड के हाथवडे क्षेत्रनुं माप कर्युं होय त्यां सर्वत्र अमुक आंगळ वधारीने अथवा ओछा करीने इच्छित आय लाववो, केमके जो दंड के हाथ उपर आंगळ वधारीए नहीं अथवा तेमांथी ओछा

करीए नहीं अने आखे आखा दंड के हाथज राखीए तो ते दंड अथवा हाथना आंगळ करीने तेने आठे भागीए त्यारे शून्यज शेष रहे, तेथी छेल्लो ध्वांक्ष (काक) आयज आवे अने ते आय उत्तम जातिनां घरोमां योग्य–शुभ नथी. अहीं भावना ए छे जे— लंबाइना अने पहोळाइना आंगळनो गुणाकार करवाथी क्षेत्रफळ थाय छे, एटले के ते वास्तुक्षेत्रमां सर्व मळीने तेटलाज अंगुलो होय छे, अने आय तो आठज छे, तेथी ते क्षेत्रफळना अंगुलने आठे भागतां जे आंक शेष रहे तेटलामो ध्वजादिक आय थाय छे. ते आयमां पण विषम आय श्रेष्ठ छे, पण सम आय शुभ नथी. तेथी करीने हाथनी उपर अमुक आंगळ वधारीने अथवा अमुक आंगळ ओछा करीने कोइ पण प्रकारे तेवी लंबाइ अने पहोळाइ लेवी के जे प्रकारे क्षेत्रफळने आठे भागतां विषम (एकी) आंक बाकी शेष रहे. ते विषे दैवज्ञवल्लभमां कह्युं छे के—

"न हस्तमानेन गुणान्वितं स्याद्यदा तदा तद्गणितोक्तयुक्त्या ।
प्रदाय हित्वा यदि वाऽङ्गुलानि प्रसाधयेत् क्षेत्रफलं शुभायम् ॥"

"ज्यारे केवळ हाथनाज माने करीने क्षेत्रफळ गुण युक्त न थाय त्यारे तेना गणितनी कहेली युक्तिवडे ते हाथमां अमुक अंगुल उमेरीने अथवा तेमांथी अमुक अंगुल ओछा करीने शुभ आयवाळुं क्षेत्रफळ साधवुं." अहीं "शुभ आयवाळुं" एम कह्युं ते उपलक्षण होवाथी नक्षत्रादिक पण ते गृहमां जे प्रकारे अनुकूळ थाय ते प्रकारे क्षेत्रफळ साधवुं. नक्षत्रना अनुकूळनो प्रकार आगळ "प्रारब्धं संमुखे चन्द्रे" ए ७४ मा श्लोकमां कहेवामां आवशे. अहीं वास्तुशास्त्रमां आ रीते विशेष कह्युं छे.—

"गृहेषु कर्मिहस्तेन मानं स्वामिकरेण वा ।
देवतानां तु धिष्ण्येषु कर्मिहस्तेन केवलम् ॥"

"घरोने विषे कारीगरना हाथे करीने अथवा घरधणीना हाथे करीने मान करवुं, परंतु देवताना घरमां (देवालयमां) तो केवळ कारीगरना हाथे करीनेज एटले कांबिके करीनेज मान करवुं." तथा देवालयने विषे भींतोनुं जाडपणुं क्षेत्रफळनी अंदर गणवुं अने बीजां घरोमां भींतोने क्षेत्रफळनी बहार गणवी. ते विषे व्यवहार-प्रकाशमां कह्युं छे के—

"क्षेत्रफलान्तर्भित्तीर्देवगृहेऽपि प्रकारयेद्विद्वान् ।
आक्रम्य बाह्यभूमिं क्षेत्राद्भित्तीर्नृणां गेहे ॥"

"विद्वान् पुरुषे देवालयने विषेज भींतोने क्षेत्रफळनी अंदर कराववी अने मनुष्योनां घरने विषे क्षेत्रफळनी बहारनी भूमिने ओळंगीने भींतो कराववी."

इति आयाः

हवे वास्तुनुं जन्मनक्षत्र कहे छे.—सामान्य रीते वास्तुनुं जन्मनक्षत्र कृत्तिका छे. तेने माटे व्यवहारप्रकाशमां कह्युं छे के—

"भाद्रपदतृतीयायां शनिदिवसे कृत्तिकाप्रथमपादे ।
व्यतिपाते रात्र्यादौ विष्ट्यां वास्तोः समुत्पत्तिः ॥"

"भाद्रपद मासनी त्रीज अने शनिवारने दिवसे कृत्तिका नक्षत्रना पहेला पादमां व्यतिपातना योगमां रात्रिनी आदिमां विष्टिमां वास्तुनो जन्म छे."

इष्ट वास्तुनुं जन्मनक्षत्र आ प्रमाणे आवे छे—फळने आठ गुणुं करवुं. मूळ श्लोकमां अधिक शब्द छे तेनो सर्वत्र संबंध करवो. फळने आठे गुणी सत्यावीशे भाग देतां जे अधिक शेष रहे, तेटलामुं इष्ट वास्तुनुं जन्मनक्षत्र जाणवुं. आ जन्मनक्षत्रथीज घरधणीनी साथे एटले घरधणीना जन्मनक्षत्रनी साथे षडाष्टक विगेरेनो विचार कराय छे.

उपर कहेला नक्षत्रना आंकने एटले इष्ट वास्तुनुं जन्मनक्षत्र जेटलामुं होय तेटली संख्याने आठे भाग लेतां जे बाकी शेष रहे ते (तेटलामो) व्यय जाणवो. जो आठे भाग न चाले तो ते नक्षत्रनो आंकज व्ययनो आंक जाणवो. ते व्यय त्रण प्रकारनो छे—पिशाच, यक्ष अने राक्षस. ते विषे सारंग कहे छे के—

"पैशाचस्तु समायः स्याद्राक्षसश्चाधिके व्यये ।
आयात्न्यूनतरो यक्षो व्ययः श्रेष्ठोऽष्टधा त्वयम् ॥
शान्तः १ क्रूरः २ प्रद्योतश्च ३ श्रेयान ४ थ मनोरमः ५ ।
श्रीवत्सो ६ विभवश्चैव ७ चिन्तात्मको ८ व्ययोऽष्टमः ॥"

"जे वास्तुमां व्ययनी समान (जेटलो) आय होय तो ते पैशाच व्यय कहेवाय छे, अने आय करतां व्यय अधिक होय तो ते राक्षस व्यय कहेवाय छे, तथा आय करतां व्यय ओछो होय तो ते यक्ष व्यय कहेवाय छे. तेमां आ छेल्लो यक्ष व्यय श्रेष्ठ छे. आ व्यय पण आयनी जेम आठ प्रकारनो छे. तेनां नाम आ प्रमाणे— शांत १, क्रूर २, प्रद्योत ३, श्रेयान् ४, मनोरम ५, श्रीवत्स ६, विभव ७ तथा आठमो चिंतात्मक ८.

नक्षत्रना आंकने आठे भागतां जे शेष रहे ते व्यय जाणवो एम उपर कह्युं, तेमां जो एक शेष रहे तो ते शांत व्यय जाणवो, बे शेष रहे तो क्रूर व्यय जाणवो. ए रीते गणतां शून्य शेष रहे तो छेल्लो चिंतात्मक व्यय जाणवो.

हवे अंशोने लाववानो उपाय कहे छे.—

फले व्ययेन वेश्माख्याक्षरैश्चाढ्ये त्रिभाजिते ।
अंशाः शक्रा १ न्तक २ भूपा ३ स्तेषु स्याद्धमो भ्रमः ॥ ६९ ॥

अर्थ—क्षेत्रफळना आंकमां व्ययनो आंक तथा घरना नामना अक्षरोनो आंक उमेरवो. पछी तेने त्रणे भाग देवो. भागतां जो एक शेष रहे तो शक्र (इंद्र) नामनो अंश जाणवो, बे रहे तो अन्तक (यम) अने शून्य शेष रहे तो क्ष्माप (राजा) नामनो अंश जाणवो. आ त्रणे अंशोमां यम नामनो बीजो अंश अधम—अशुभ छे.

उपर घरना नामना अक्षरो कह्या, माटे घरोनां नामोने कहे छे.—

ध्रुवं १ धन्यं २ जयं ३ नन्दं ४ खरं ५ कान्तं ६ मनोरमम् ७ ।
सुमुखं ८ दुर्मुखं ९ क्रूरं १० सुपक्षं ११ धनदं १२ क्षयम् १३ ॥ ७० ॥
आक्रन्दं १४ विपुलं १५ चैव विजयं १६ चेति षोडश ।
सम्प्रत्यमीषां पस्त्यानां प्रस्तारः प्रतिपाद्यते ॥ ७१ ॥ युग्मम् ॥

अर्थ—ध्रुव १, धन्य २, जय ३, नंद ४, खर ५, कांत ६, मनोरम ७, सुमुख ८, दुर्मुख ९, क्रूर १०, सुपक्ष ११, धनद १२, क्षय १३, आक्रंद १४, विपुल १५ अने विजय १६, ए सोळ घरोनां नामो छे. अहीं अगीयारमा सुपक्षने बदले विपक्ष एवुं नाम पण केटलाक कहे छे. हवे ए घरोना प्रस्तारने कहे छे.

आ ध्रुव विगेरे नामो सार्थक छे, तेथी करीने खर १, दुर्मुख २, क्रूर ३, क्षय ४, आक्रंद ५, ए नामवाळां घरो अशुभ छे. तेने माटे वास्तुशास्त्रमां कह्युं छे के—

"स्थैर्यं १ धनं २ जयः ३ पुत्रा ४ दारिद्र्यं ५ सर्वसंपदः ६ ।
मनोह्लादः ७ श्रियो ८ युद्धं ९ वैषम्यं १० बान्धवा ११ धनम् १२ ॥
क्षयश्च १३ मृत्यु १४ रारोग्यं १५ सर्वसंपदि १६ ति क्रमात् ।
ध्रुवादीनां फलं ज्ञेयं"

ध्रुवादिक सोळ घरोनुं अनुक्रमे आ प्रमाणे फळ जाणवुं.—स्थिरता १, धन २, जय ३, पुत्रो ४, दारिद्र्य ५, सर्व संपत्तिओ ६, मननो आह्लाद (तुष्टि) ७, लक्ष्मी ८, युद्ध ९, विषमपणुं १०, बंधुओ ११, धन १२, क्षय १३, मृत्यु १४, आरोग्य १५ अने सर्व संपत्ति १६.

हवे प्रस्तारनो प्रकार कहे छे.—

गुरोरधो लघुं न्यस्येत् पृष्ठे त्वस्य पुनर्गुरून् ।
अग्रतस्तूर्ध्ववद्देयाद्यावत्सर्वलघुर्भवेत् ॥ ७२ ॥

अर्थ—पहेली पंक्तिमां चारे गुरु लखवा. बाकीनी पंक्तिओमां पहेला गुरुनी नीचे लघु मूकवो, अने त्यारपछी उपरनी जेम पदखे गुरु मूकवा, अने जे प्रस्तारमां पाछळ

खाली स्थान रहे ते ते स्थानोमां गुरु स्थापवा. ए रीते करतां करतां छेल्लो भंग सर्व (चारे) लघुनो थाय त्यांसुधी स्थापवा अर्थात् चार अक्षरवाळा वृत्तनी जातिनी जेम अहीं सोळ भंग थाय छे. स्थापना—

ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	—	—	—	—	—	—	—	—
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	—	—	—	—	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	—	—	—	—
ऽ	ऽ	—	—	ऽ	ऽ	—	—	ऽ	ऽ	—	—	ऽ	ऽ	—	—
ऽ	—	ऽ	—	ऽ	—	ऽ	—	ऽ	—	ऽ	—	ऽ	—	ऽ	—
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६

अहीं प्रस्तारनीज जेम नष्ट अने उद्दिष्ट विगेरे पांच प्रत्यय पण सुगम छे, परंतु ग्रंथ घणो मोटो थवाना भयथी तथा अहीं तेनो उपयोग नहीं होवाथी लखता नथी.

हवे आ सोळ भांगाए करीने घरोनां ध्रुवादिक नामो उत्पन्न थाय छे, ते कहे छे.—

पूर्वादितो गृहद्वाराद्दिक्ष्वलिन्दैर्लघूदितैः ।
प्रदक्षिणस्थैर्वेश्मानि स्युर्ध्रुवादीनि षोडश ॥ ७३ ॥

अर्थ—घरना द्वारथी प्रदक्षिणाने अनुक्रमे पूर्वादिक दिशामां लघुए जणावेला अलिंदोए करीने ध्रुव विगेरे सोळ घरो थाय छे. अलिंद एटले ओशरी, गोजार, ओरडी विगेरे घरना नाना भागो जाणवा.

जे दिशामां घरनुं द्वार होय ते ते घरनी पूर्व दिशा जाणवी. त्यांथी जमणी बाजुनी दिशाने दक्षिण समजवी, तेथी जमणी पश्चिम अने तेथी जमणी उत्तर ए रीते दिशाओ जाणवी. ते विषे विवेकविलासमां कह्युं छे के—

“पूर्वादिदिग्विनिर्देश्या गृहद्वारव्यपेक्षया ।
भास्करोदयदिक् पूर्वा न विज्ञेया यथा क्षुते ॥”

“घरना द्वारनी अपेक्षाए करीने पूर्वादिक दिशाओ जाणवी, पण सूर्योदयनी दिशाने पूर्व न धारवी. छींकने विषे पण आज प्रमाणे दिशाओ धारवामां आवे छे.” दैवज्ञवल्लभमां पण कह्युं छे के—

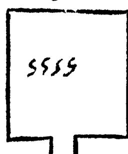
“गृहस्य मुखतः प्राचीं प्रकल्प्य तत्प्रदक्षिणम् ।
पर्यटद्भिरलिन्दैः स्युः प्रस्ताराद्वेश्मनां भिदाः ॥”

“घरना मुखथी (द्वारथी) पूर्व दिशा कल्पीने त्यांथी दक्षिण दक्षिण एटले जमणी जमणी बाजु अटन करता अलिंदोए करीने प्रस्तारने लीधे घरना प्रकारो थाय छे.”

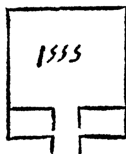
अहीं पहेला भांगामां चारे गुरु छे, माटे घरनी पूर्वादिक चारे दिशाओ आवरण रहित जाणवी, एटले के कोइ पण दिशामां अलिंद नथी एम जाणवुं, केमके जे ठेकाणे लघु

होय तेज दिशामां अलिंद होय छे; तेथी करीने ज्यां एक पण लघु नथी त्यां मात्र एक ओरडारूपज घर छे. आ घरनुं नाम ध्रुव छे. ज्यां पूर्व दिशामां अलिंद होय ते धन्य नामनुं घर जाणवुं, अने ज्यां दक्षिणमां अलिंद होय ते जय नामनुं घर जाणवुं. ए रीते ज्यां ज्यां लघु होय ते ते दिशामां लघु होवाने लीधे एक, बे के त्रण अलिंदो होय छे. सोळमा भांगामां तो चार अलिंदो होय छे. पहेला घरमां तो लघु नहीं होवाने लीधे एक पण अलिंद होतो नथी. आ सोळे घरनी स्पष्ट स्थापनाओ आ रीते छे.

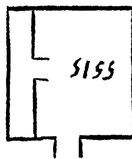
ध्रुव१



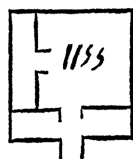
धन्य२



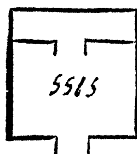
जय३



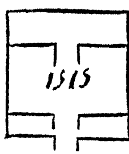
नन्द४



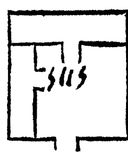
खर५



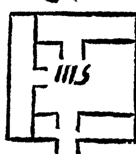
कान्त६



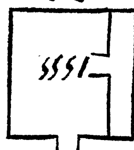
मनोरम७



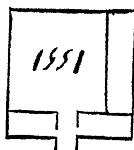
सुमुख८



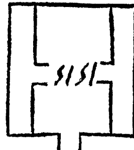
दुर्मुख९



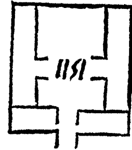
क्रूर१०



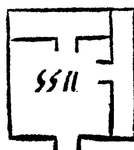
विपक्ष११



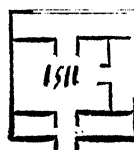
धनद१२



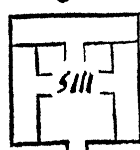
क्षय१३



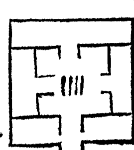
आक्रन्द१४



विपुल१५



विजय१६



आ स्थापनाओ एक ओरडावाळा घरनी छे. बे त्रण विगेरे ओरडावाळां घर करवां होय तो तेना अनेक भेदो थाय छे. एक ओरडावाळा घरना पण एकसो ने चार प्रकार संभवे छे, परंतु अहीं तो मात्र दिग्दर्शनने माटे सोळ प्रकारज कह्या छे. रत्नमालाभाष्यमां कह्युं छे के—

"वेश्मनामेकशालानां शतं स्याच्चतुरुत्तरम् ।
द्विपञ्चाशद्द्विशालानां त्रिशालानां द्विसप्ततिः ॥"

"एक शाळा(ओरडा)वाळां घरोना एकसो चार भेद थाय छे. बे शाळावाळा घरना बावन (एकसो बावन) भेद थाय छे अने त्रण शाळावाळा घरना बोंतेर (एकसो बोंतेर) भेद थाय छे."

हवे वास्तुमां चंद्रनुं बळ कहे छे.—

प्रारब्धं संमुखे चन्द्रे न वस्तुं वास्तु कल्पते ।
पृष्ठस्थे खात्रपाताय द्वयोस्तेन त्यजेद्गृही ॥ ७४ ॥

अर्थ—सन्मुख चंद्रने विषे आरंभेलुं वास्तु (घर) वसवा (रहेवा)ने लायक नथी, तथा चंद्र पाछळ छते आरंभेलुं वास्तु खातर पाडवा माटे छे, तेथी घरधणीए ते बन्ने चंद्रनो त्याग करवो.

परिघ चक्रनी जेम कृत्तिकाथी आरंभीने सात सात नक्षत्रो चारे दिशामां स्थापन करवां. पछी घरनुं जे जन्मनक्षत्र आवतुं होय ते विचारवुं. तेमां जो ते नक्षत्र घरना द्वारनी दिशामां आवे तो ते घरनी सन्मुख चंद्र छे एम जाणवुं. ते सन्मुख थयेलो चंद्र अशुभ छे, कारण के घरना आरंभमां चंद्र सन्मुख रहेलो होय तो घर करावनारनो तेमां निवास थतो नथी. तथा जो चंद्र पाछळनी भींतनी दिशाए होय तो ते चंद्र घरनी पाछळ छे एम जाणवुं. ते पण अशुभ छे, कारण के घरना आरंभवखते चंद्र पाछळ रह्यो होय तो ते घरमां चोरो घणां खातरो पाडे छे, परंतु जो बन्ने बाजुनी भींतनी दिशाए चंद्र आवतो होय तो ते सारो छे. अहीं विशेष ए छे जे-प्रासादने विषे सन्मुख चंद्र शुभने माटे छे. ते विषे वास्तुशास्त्रमां कह्युं छे के—

"प्रासादनृपसौधश्रीगृहेषु पुरतः शशी ।"

"प्रासाद (चैत्य), राजमहेल अने लक्ष्मीनां घरोने विषे सन्मुख चंद्र सारो छे." आ कारणथीज मूळ श्लोकमां गृही शब्द लख्यो छे.

॥ इति चन्द्रबलम् ॥

प्रीति षडाष्टक विगेरे राशिबळ पण तत्त्वथी चंद्रबळज छे. तारानुं बळ अहीं जुदुं कह्युं नथी, परंतु नक्षत्रो कहेवाथी ते ताराबळ पण सारी रीते जणायुं होवाथी सूचवन

कर्युं छे एम जाणवुं. ते आ रीते—गुरु शिष्यनी जेम अहीं पण त्रीजी, पांचमी अने सातमी तारा तजवा लायक छे. मात्र त्यां गुरु शिष्यनी परस्पर ताराओ गणाय छे, अने अहीं तो घरधणीनी ताराथी घरनी तारा सुधी गणवानुं छे, कारण के घरधणीनीज प्रीति इष्ट (वांछित) छे. ते विषे सारंग कहे छे के—

"गणयेत् स्वामिनक्षत्राद्यावद्धिष्ण्यं गृहस्य च ।
नवभिस्तु हरेद्भागं शेषं तारा प्रकीर्तिता ॥ १ ॥
शान्ता १ मनोरमा २ क्रूरा ३ विजया ४ कलहोद्भवा ५ ।
पद्मिनी ६ राक्षसी ७ वीरा ८ आनन्दा ९ चेति तारकाः ॥ २ ॥"

"घरस्वामीना नक्षत्रथी घरना नक्षत्र सुधी गणवुं, जे संख्या आवे तेने नवे भाग लेवो. जे अंक शेष रहे तेटलामी तारा कहेली छे. ते ताराओनां नाम आ प्रमाणे–शांता १, मनोरमा २, क्रूरा ३, विजया ४, कलहोद्भवा (कलह उत्पन्न करनारी) ५, पद्मिनी ६, राक्षसी ७, वीरा ८, अने आनंदा ९, आ ताराओ पोतानां नामनी सदृश फळ आपनारी छे."

हवे आयादिकनुं उदाहरण आपे छे.–जेम कोइ घरनी लंबाइ सात हाथ अने नव आंगळनी होय तथा पहोळाइ पांच हाथ अने सात आंगळनी होय. अहीं बन्ने हस्तना आंकने आंगळ करवा छे, माटे चोवीशे गुणवा. पछी तेमां उपरना अंगुल उमेरवा. तेम करवाथी लंबाइ १७७ आंगळ थइ अने पहोळाइ १२७ अंगुल थइ. ए बन्ने अंकनो परस्पर गुणाकार करवाथी २२४७९ आंगळनुं क्षेत्रफळ थयुं. आ क्षेत्रफळने आठे भाग लेतां शेष ७ रहे छे, तेथी ते घरनो सातमो आय गज नामनो थयो. १.

हवे नक्षत्र कहे छे–क्षेत्रफळ २२४७९ ने आठे गुणतां १७९८३२ थया. तेने सत्यावीशे भाग लेतां शेष १२ रह्या, तेथी ते घरनुं अश्विनीथी गणतां बारमुं नक्षत्र उत्तराफाल्गुनी थयुं. हवे ते घर कल्पनाए करीने पूर्वाभिमुख छे, तेथी उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र दक्षिण बाजुनी भींते आववाथी ते सारुं छे. २.

हवे तेनो व्यय आ प्रमाणे छे.–नक्षत्रनो आंक बारनो छे. तेने आठे भागतां शेष चार रहे छे. चोथो व्यय श्रेयान नामनो छे, ते शुभ छे. ३.

तेनो अंश आ प्रमाणे छे.–ते घरनुं कल्पनाए करीने ध्रुव नाम छे, तेथी तेमां बे अक्षर छे अने व्ययनी संख्या चारनी छे, ते बन्ने आंक क्षेत्रफळमां उमेरवाथी २२४८५ थाय छे. तेने त्रणे भाग लेतां शेषमां शून्य रहे छे, तेथी राजा नामनो अंश थयो, ते शुभ छे. ४.

ते घरनुं चंद्रबळ नक्षत्र कहेवाने अवसरे कही दीधुं छे ५, राशिबळ आगळ उपर कहेशे, अने ताराबळ आ प्रमाणे छे.–घरधणीनुं जन्मनक्षत्र कल्पनाए करीने धनिष्ठा छे, माटे धनिष्ठाथी गणतां उत्तराफाल्गुनी आठमी तारा थइ. ६.

हवे वास्तुनो प्रारंभ करवाना महीनाओ कहे छे.—

वैशाखे श्रावणे मार्गे पौषे फाल्गुन एव च ।
कुर्वीत वास्तुप्रारंभं न तु शेषेषु सप्तसु ॥ ७५ ॥

अर्थ—वैशाख, श्रावण, मार्गशीर्ष, पोष अने फाल्गुन मासमां वास्तुनो आरंभ करवो, पण बीजा सात मासमां आरंभ करवो नहीं. वास्तुनो आरंभ एटले सूत्रपात (दोरी नाखवी ते) तथा खात मुहूर्त्त विगेरे कार्य जाणवुं.

दैवज्ञवल्लभमां घरना आरंभ विषे मासना फळने आ प्रमाणे कहे छे.—

"शोकं १ धान्यं २ मृत्युदं ३ पञ्चतां ४ च,
स्वाप्तिं ५ नैःस्व्यं ६ संगरं ७ वित्तनाशम् ८ ।
स्वं ९ श्रीप्राप्तिं १० वह्निभीतिं ११ च लक्ष्मीं १२,
कुर्युश्चैत्राद्या गृहारंभकाले ॥"

"चैत्र मासमां घर चणाववानो आरंभ कर्यो होय तो ते शोक करावे छे १, वैशाख मास धान्यवृद्धि करे छे २, ज्येष्ठ मास मृत्युने आपे छे ३, अषाढ मास पण मृत्युने करे छे ४, श्रावण मास धननी प्राप्ति करावे छे ५, भाद्रपद मास निर्धनपणुं करे छे ६, आश्विन मास युद्ध करावे छे ७, कार्तिक मास धननो नाश करे छे ८, मार्गशीर्ष मास धन प्राप्त करे छे ९, पोष मास पण धननी प्राप्ति करे छे १०, माघ मास अग्निनो भय करे छे ११, तथा फाल्गुन मास लक्ष्मी प्राप्त करे छे १२." अहीं सर्वे मासो चांद्र एटले शुक्ल प्रतिपदाथी आरंभीने जाणवा.

हवे घरना आरंभमां संक्रांतिए करीने युक्त एवा सूर्यमासो कहे छे.

धामारभेतोत्तरदक्षिणास्यं, तुलालिमेषर्षभभाजि भानौ ।
प्राक्पश्चिमास्यं मृगकुंभकर्कसिंहस्थिते द्व्यंगगते न किञ्चित् ॥ ७६ ॥

अर्थ—तुला, वृश्चिक, मेष अने वृष ए चार संक्रांतिमां उत्तर द्वारनुं के दक्षिण द्वारनुं घर शरु करवुं. मकर, कुंभ, कर्क अने सिंह ए चार संक्रांतिमां पूर्व के पश्चिम द्वारवाळुं घर शरु करवुं. तथा द्विस्वभाव राशि एटले मिथुन, कन्या, धन अने मीन ए चार संक्रांतिमां कोइ पण घरनो आरंभ करवो नहीं, एटले के चारे दिशानां द्वारवाळुं पण घर शरु करवुं नहीं.

नारचंद्रनी टिप्पणीमां तो आ प्रमाणे लख्युं छे.—"मेष, धन अने सिंह ए त्रण संक्रांतिमां पूर्व मुखवाळा घरनो आरंभ करवाथी राजानो भय थाय छे, वृष, कन्या अने मकर संक्रांतिमां दक्षिणाभिमुखवाळा घरनो आरंभ करवाथी पुत्रादिकनुं मुत्यु थाय छे. मिथुन,

तुला अने कुंभ संक्रांतिमां पश्चिम द्वारवाळुं घर शरु करवाथी संताप विगेरे उत्पन्न थाय छे. तथा कर्क, वृश्चिक अने मीन संक्रांतिमां उत्तर द्वारवाळुं घर करवाथी कुळनो क्षय थाय छे."

हवे कइ दिशामां प्रथम खोदवानो आरंभ करवो ? ते कहे छे.—

भाद्रादित्रित्रिमासेषु पूर्वादिषु चतुर्दिशम् ।
भवेद्वास्तोः शिरः पृष्ठं पुच्छं कुक्षिरिति क्रमात् ॥ ७७ ॥

अर्थ—भाद्रपदादिक त्रण त्रण मासने विषे पूर्वादिक चार दिशाए अनुक्रमे वास्तुनुं शिर, पृष्ठ (पीठ), पुच्छ अने कुक्षि (पेट) होय छे.

अहीं वास्तु पुरुष जमणा अंगने दबावीने (जमणे पडखे) सुतेलो नागने आकारे रहेलो छे. तेमां भाद्रपद, आश्विन अने कार्तिक मासमां ते वास्तुनुं मस्तक पूर्व दिशामां छे, दक्षिण दिशामां पृष्ठ छे, पश्चिम दिशामां पुच्छ छे अने उत्तर दिशामां कुक्षि छे. मार्गशीर्ष, पोष अने माघ मासमां दक्षिण दिशाए मस्तक, पश्चिम दिशाए पृष्ठ, उत्तर दिशाए पुच्छ अने पूर्व दिशाए कुक्षि होय छे. फाल्गुन, चैत्र अने वैशाख मासमां पश्चिम दिशाए शिर, उत्तर दिशाए पृष्ठ, पूर्व दिशाए पुच्छ अने दक्षिण दिशाए कुक्षि होय छे. ज्येष्ठ, अषाढ अने श्रावण मासमां उत्तर दिशाए शिर, पूर्व दिशाए पृष्ठ, दक्षिण दिशाए पुच्छ अने पश्चिम दिशाए कुक्षि होय छे. तात्पर्य ए छे जे कुक्षिने विषेज प्रथम खोदवानो आरंभ करवो. बीजी दिशामां करवो नहीं. ते विषे दैवज्ञवल्लभमां कह्युं छे के—

"शिरः खनेन्मातृपितॄन्निहन्यात्, खनेच्च पृष्ठे भयरोगपीडाः ।
पुच्छं खनेत् स्त्रीशुभगोत्रहानिः, स्त्रीपुत्ररत्नान्नवसूनि कुक्षौ ॥"

"जो प्रथम वास्तुनुं शिर खोदे तो माता पितानो नाश थाय, पृष्ठ खोदे तो भय, रोग अने पीडा थाय, पुच्छ खोदे तो स्त्री, शुभ अने गोत्रनी (कुळनी) हानि (नाश) थाय, अने कुक्षिए खोदे तो स्त्री, पुत्र, रत्न, अन्न अने धननी प्राप्ति थाय." केटलाक आ वास्तुने ठेकाणे वत्स एवुं पण नाम कहे छे. आ वास्तुना अंग तथा दिशाना कहेवाए करीने खात विगेरेनी दिशानो नियम कह्यो, पण विदिशानो नियम वास्तुशास्त्रमां आ प्रमाणे कह्यो छे.—

"ईशानादिषु कोणेषु वृषादीनां त्रिके त्रिके ।
शेषाहेराननं त्याज्यं विलोमेन प्रसर्पतः ॥"

"वृषादिक त्रण त्रण संक्रांतिए ईशानादिक खूणाने विषे विलोम (उलटा)पणाए करीने चालता शेषनागनुं मुख त्याग करवा लायक छे. अर्थात् विलोमपणाए करीने शेषनाग त्रण त्रण मासे फरे छे, तेथी ज्यारे तेनुं मुख त्रण मास (वैशाख, ज्येष्ठ, अषाढ)

सुधी ईशानमां होय छे त्यारे अग्नि खूणामां त्रण मास सुधी नाभि होय छे, नैर्ऋत्यमां त्रण मास सुधी पुच्छ होय छे, अने वायव्य खूणो खाली होय छे. ते खाली खूणो खात विगेरेमां श्रेष्ठ छे. ज्यारे बीजा त्रण मास सुधी वायव्यमां मुख होय छे त्यारे ईशानमां नाभि, अग्निमां पुच्छ अने नैर्ऋत्य खाली होय छे. ए प्रमाणे विलोमपणाए करीने शेषनाग फरे छे. तेमां वृषादिक त्रण संक्रांति सुधी ईशानमां मुख होय छे, सिंहादिक त्रण संक्रांति सुधी वायव्यमां मुख होय छे, वृश्चिक विगेरे त्रण संक्रांति सुधी नैर्ऋत्यमां मुख होय छे, तथा कुंभादिक त्रण संक्रांति सुधी अग्निमां मुख होय छे. ए प्रमाणे—

"विदिक्त्रयं स्पृशँस्तिष्ठेत् स्ववक्त्रनाभिपुच्छकैः ।
शेषस्तत्त्रितयं त्यक्त्वा भूखातकार्यमाचरेत् ॥
नाभौ च म्रियते भार्या धनं पुच्छे मुखे पतिः ।
इति मत्वा शिलान्यासे भूखाते तत्त्रयं त्यजेत् ॥"

"शेषनाग पोतानां मुख, नाभि अने पुच्छे करीने त्रण विदिशानो स्पर्श करीने रहे छे, तेथी ते त्रणेनो त्याग करीने पृथ्वीनुं खातकर्म करवुं, केमके ते शेषनी नाभिमां खातकर्म करवाथी घरधणीनी स्त्री मरण पामे छे, पुच्छमां खोदवाथी धननो नाश थाय छे, अने मुखे खोदवाथी घरधणी मरण पामे छे. आ प्रमाणे जाणीने भूखातने विषे शिलास्थापन करती वखते ते त्रणे अवयवोनो त्याग करवो."

हवे आयादिक कहेवानुं तात्पर्य कहे छे.—

समाधिकव्ययं कर्तुः समनाम यमांशकम् ।
विरुद्धराशितारं च विनाऽन्यद्वेश्म शोभनम् ॥ १८ ॥

अर्थ—सम अथवा अधिक व्ययवाळुं, कर्तानी समान नामवाळुं, यम अंशवाळुं तथा विरुद्ध राशि अने तारावाळुं घर मूकीने बीजुं घर सारुं छे.

जे घरमां आयनी समान (जेटलो) अथवा अधिक व्यय आवतो होय तो ते घर त्याग करवा लायक छे. ए रीते सर्वत्र जाणवुं. आम कहेवाथी व्यय करतां आय अधिक होय तो ते श्रेष्ठ छे, एम जाणवुं. ते आय पण विषम (एकी) होय तो ते स्थिर होवाथी अति श्रेष्ठ छे. ते विषे लल्ल कहे छे के—"कुर्यात् स्थिराधिकायं स्वयोनिभं शुद्धतारांशम्" । "स्थिर अने अधिक आयवाळुं पोतानी योनिना नक्षत्रवाळुं तथा शुद्ध तारा अने अंशवाळुं घर करवुं." तथा जे घरनुं नाम एटले तेना अक्षरो कर्ताना नामनी तुल्य होय ते घर पण त्याग करवा लायक छे. जे घरमां यमना अंशनी उत्पत्ति थती होय, जे घरनी राशिनी साथे घरधणीनी राशिनुं शत्रु षडाष्टक के बीयाबारमुं उत्पन्न थतुं होय, तथा जे घरनी तारा घरधणीनी ताराथी त्रीजी, पांचमी के सातमी होय, तेमज मूळ श्लोकमां

च शब्द लख्यो छे, माटे जे घरनुं नक्षत्र राक्षसगणमां होय अथवा तो घरधणीना नक्षत्रनी योनि साथे विरुद्ध के बळवान् योनिवाळुं होय तो आ सर्व जातनुं घर तजवा लायक छे. ते विषे लल्ल कहे छे के—

"आयविरुद्धे भवने न सुखं षडष्टके स्थिते मरणम् ।
न धनं द्विद्वादशके नवपञ्चमके त्वपत्यमृतिः ॥ १ ॥
निधनं सप्तमतारे पञ्चमतारे च तेजसो हानिः ।
विपदस्तृतीयतारे यमांशके गृहपतेर्मृत्युः ॥ २ ॥"

"आये करीने विरुद्ध घर होय तो वसनारने सुख उपजे नहीं, षडाष्टक होय तो मरण थाय, बीयाबारमुं होय तो धननो नाश थाय, नव पंचम होय तो पुत्रनुं मरण थाय, सातमी तारा होय तो घरधणीनुं मरण थाय, पांचमी तारा होय तो तेजनी हानि थाय, त्रीजी तारा होय तो विपत्ति आवे अने यमांश होय तो गृहपतिनुं मरण थाय." अहीं नाडीवेध होय तो ते श्रेष्ठज छे, केमके नाडीवेध होय तो योनिनी विरुद्धता विगेरे दोषोनी पण अदुष्टता संभवे छे.

अहीं कोइ शंका करे के—जे घरमां बे पादनुं के त्रण पादनुं नक्षत्र होय त्यां घरनी राशि शी रीते जाणवी ? अने राशि जणाया विना षडाष्टक विगेरेनो विचार शी रीते थाय ? आनो जवाब ए छे जे—ते वखते नक्षत्रनो पाद लाववो पडे छे. तेनी रीत आ प्रमाणे व्यवहारप्रकाशमां कही छे.—

"क्षेत्रफले रद ३२ गुणिते भक्ते वस्वभ्रभूमिभिः १०८ शेषात् ।
व्येकान्नवभिः शेषं पादो लब्धं वृषाद्भगणः ॥"

"क्षेत्रफळने बत्रीशे गुणी एक सो ने आठे भाग लेवो, जे शेष रहे तेमांथी एक ओछो करी तेने नवे भाग देवो. तेमां शेष रहे ते पाद अने भागमां जे आवे ते (तेटलामो) वृष राशिथी राशि समजवो." दृष्टांत तरीके कहेला घरनुं नक्षत्र उत्तराफाल्गुनी त्रण पादवाळुं छे, तेथी तेमांज आनो भावार्थ भावीए—प्रथम आणेलुं क्षेत्रफळ २२४७९ छे, तेने बत्रीशे गुणीए त्यारे ७१९३२८ थाय. तेने एकसो ने आठे भागतां शेष ४८ रहे छे, तेमांथी एक ओछो करतां ४७ थाय. तेने नवे भाग देतां भागमां पांच आव्या, माटे वृष राशिथी पांचमी राशि कन्या छे. बाकी बे वध्या, माटे उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रनो बीजो पाद ते घरनो आव्यो. हवे घरधणीनो जन्म धनिष्ठाना उत्तरार्धमां होवाथी तेनी जन्मराशि कुंभ थइ. ते कुंभ राशि विषम (एकी) छे, तेथी कुंभथी गणतां कन्या राशि आठमी थइ, माटे ते प्रीति षडाष्टक थयुं, केमके "ओजात्स्यादष्टमे प्रीतिः" विषम राशिथी आठमी राशिवाळा साथे प्रीति षडाष्टक थाय छे." एम प्रथम कही गया छे.

हवे ब्राह्मणादिक वर्णोने आश्रीने घरना आय तथा मुख (द्वार) नी व्यवस्था कहे छे.—

क्रमाद्विप्रादिवर्णानां विषमायैर्ध्वजादिभिः ।
धीमद्भिर्धाम निर्दिष्टं प्रतीच्यादिमुखं क्रमात् ॥ ७९ ॥

अर्थ—ब्राह्मणादिक चार वर्णोने अनुक्रमे विषम एवा ध्वजादिक आये करीने अनुक्रमे पश्चिम विगेरे दिशाना द्वारवाळुं घर पंमितोए कहेलुं छे, एटले के ब्राह्मणे ध्वज आयवाळुं पश्चिम द्वारवाळुं घर करवुं, केमके ध्वज पूर्व दिशामां रहेलो छे, अने तेथी पश्चिमाभिमुख द्वार होवाथी ते ध्वज ब्राह्मणने प्रवेश करती वखते सन्मुख रहेलो छे, तेथी ते शुभने माटे छे. एज प्रमाणे सिंहना आयने विषे उत्तराभिमुख द्वारवाळुं राजाए घर करवुं, कारण के सिंह दक्षिण दिशामां रहेलो होवाथी प्रवेश करतां सन्मुख आय, माटे ते शुभ छे. एज प्रमाणे बीजाओने विषे पण जाणवुं, एटले के वैश्योए वृषना आयवाळुं पूर्वाभिमुख द्वारवाळुं घर करवुं, अने शूद्रोए गजना आयवाळुं दक्षिणाभिमुख द्वारवाळुं करवुं.

हवे आयादिकनो अपवाद कहे छे. (एटले के कये ठेकाणे आयादिक न लेवा ते कहे छे.)—

ये गृहेऽलिन्दनिर्यूहनिर्गमाद्याश्चतुर्दिशम् ।
न तेष्वायादिकं योज्यं बाह्यभूषासु वास्तुनः ॥ ८० ॥

अर्थ—घरने विषे जे अलिंद (ओंशरी, परसाळ विगेरे नाना खंड), निर्यूह एटले भींत विगेरेनी बहार नीकळेल काष्ठ विशेष एटले मर्दलक विगेरे,[1] निर्गम एटले दरवाजो द्वार विगेरे, तथा श्लोकमां आदि शब्द छे माटे प्रग्रीव एटले झरुखा, गोंख विगेरे जाणवा. आ सर्वे वास्तुनी बहार शोभारूप होवाथी तेओने विषे आयादिक ग्रहण करवा नहीं.

हवे सूत्रपात विगेरेनुं मुहूर्त्त कहे छे.—

सूत्रस्य सिद्धिर्वसुनाथहस्तमैत्रस्थिरस्वातिशतर्क्षपुष्यैः ।
न्यासः शिलायाः करपुष्यमार्गपौष्णध्रुवेषु श्रवणे च शस्तः ॥ ८१ ॥

अर्थ—धनिष्ठा, हस्त, मैत्र (चित्रा, अनुराधा, रेवती, मृगशिर), स्थिर (रोहिणी, उत्तराषाढा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद), स्वाति, शततारका अने पुष्य एटलां नक्षत्रोए करीने सूत्रनी सिद्धि थाय छे, एटले के ते नक्षत्रोमां सूत्रपात करवो. तथा शिलानुं स्थापन हस्त, पुष्य, मृगशिर, रेवती, ध्रुव (रोहिणी, त्रण उत्तरा) अने श्रवण एटलां नक्षत्रोमां प्रशस्त छे.

---

१ खीलीओ.

तिथि तथा वारनी शुद्धि तो रिक्ता विगेरेनो त्याग करवाथी स्पष्टज छे. ते विषे श्रीपतिशंभुटीकामां कह्युं छे के—

"एकादशी द्वितीया पञ्चमी सप्तमी तृतीया च ।
प्रतिपद्दशमी चेष्टा त्रयोदशी पौर्णमासी च ॥
सूर्येन्दुजीवसौम्यानां भार्गवस्य च वासरे ।
सूत्रपातादिकं कार्यं निष्पत्तिमभिवाञ्छता ॥"

"अगीयारश, बीज, पांचम, सातम, त्रीज, पडवो, दशम, तेरश अने पूनम तथा रविवार, सोमवार, गुरुवार, बुधवार अने शुक्रवार आटला तिथि वारे समृद्धिने इच्छता पुरुषे सूत्रपातादिक कार्य करवुं."

हवे घरना आरंभमां लग्नबळ कहे छे.—

चरादन्यत्र लग्नेन्द्वोः शुभैः संयुक्तदृष्टयोः ।
कर्म १० स्थितेषु सौम्येषु गेहारंभः शुभावहः ॥ ७२ ॥

अर्थ—लग्न तथा चंद्र चर थकी अन्यत्र स्थाने होय एटले के स्थिर[1] अथवा द्विस्वभाव[2]वाळुं लग्न होय अने चंद्र पण स्थिर अथवा द्विस्वभाववाळी राशिमां रह्यो होय, तथा ते बन्ने शुभ ग्रहोए युक्त अथवा तेना पर शुभ ग्रहोनी दृष्टि पडती होय, तथा सौम्य[3] ग्रहो कर्म एटले दशमे स्थाने रह्या होय तो ते वखते घरनो आरंभ शुभकारक छे.

केन्द्रत्रिकोणगैः सौम्यैः क्रूरैः शत्रुत्रिलाभगैः ।
शुभाय भवनारंभोऽष्टमः क्रूरस्तु मृत्यवे ॥ ७३ ॥

अर्थ—केन्द्रस्थाने (पहेले, चोथे, सातमे अने दशमे स्थाने) तथा त्रिकोणमां (नवमे तथा पांचमे स्थाने) सौम्य ग्रहो रह्या होय, अने क्रूर[4] ग्रहो छठे, त्रीजे के अगीयारमे स्थाने रह्या होय तो ते वखते घरनो आरंभ करवो शुभ छे, परंतु कोइ पण क्रूर ग्रह आठमे स्थाने रह्यो होय तो घरधणीना मृत्युने माटे छे.

अहीं आटलो विशेष दैवज्ञवल्लभमां कह्यो छे.—

"गुरुर्लग्ने जले शुक्रः स्मरे ज्ञः सहजे कुजः ।
रिपौ भानुर्यदा वर्षशतायुः स्याद्गृहं तदा ॥ १ ॥"

"गृहना आरंभसमये जो लग्नमां गुरु होय, जळ (१०)स्थाने शुक्र होय, स्मर (७) स्थाने बुध होय, सहज (३) स्थाने मंगळ होय अने शत्रु (६) स्थाने सूर्य होय तो ते घर सो वर्षना आयुष्यवाळुं थाय छे."

---

१ वृष, सिंह, वृश्चिक अने कुंभ. २ मिथुन, कन्या, धन अने मीन. ३ चंद्र, बुध, गुरु अने शुक्र. ४ शनि, रवि अने मंगळ.

"सितो लग्ने गुरुः केन्द्रे खे बुधो रविरायगः ।
निवेशो यस्य तस्यायुर्वेश्मनः शरदां शतम् ॥ २ ॥"

"जे घरना आरंभे लग्नमां शुक्र होय, केंद्रमां गुरु होय, दशमे स्थाने बुध होय अने आय एटले अगीयारमे स्थाने रहेलो रवि होय तो ते घरनुं आयुष्य सो शरदृतु सुधी (सो वर्षनुं) थाय छे."

"त्रिशत्रुसुतलग्नस्थैः सूर्यारेज्यसितैर्भवेत् ।
प्रारंभः सद्मनो यस्य तस्यायुर्द्वे समाशते ॥ ३ ॥"

"त्रीजे स्थाने सूर्य होय, छठे स्थाने मंगळ, पांचमे स्थाने गुरु अने लग्नमां शुक्र रहेलो होय ते वखते जे घरनो आरंभ कर्यो होय ते घरनुं आयुष्य बसो वर्षनुं थाय छे."

"व्योम्नि चन्द्रः सुखे जीवो लाभे भौमशनैश्चरौ ।
यस्य धाम्नः समाशीतिं स्थितिस्तस्य श्रिया युता ॥ ४ ॥"

"जे घरना प्रारंभवखते दशमे स्थाने चंद्र होय, सुख (४) स्थाने गुरु होय तथा लाभ (११) स्थाने मंगळ अने शनि होय तो ते घरनी स्थिति लक्ष्मी सहित एंशी वर्ष सुधी रहे छे."

"स्वोच्चस्थे लग्नगे शुक्रे १ हिबुकस्थेऽथवा गुरौ २ ।
स्वोच्चे मन्देऽथवा लाभे ३ धाम्नः सश्रीः स्थितिश्चिरम् ॥ ५ ॥"

"जे घरना प्रारंभवखते शुक्र पोताना उच्च स्थाननो थइने लग्नमां रह्यो होय, अथवा गुरु हिबुक (४) स्थाने रह्यो होय, अथवा शनि उच्च स्थाननो थइने लाभ (११) स्थाने रह्यो होय तो ते घरनी स्थिति लक्ष्मी सहित चिर काळ रहे छे एटले अमित स्थिति होय छे."

जे आ विशेषो गृहारंभना लग्नमां कहेवाय छे ते जिनालय विगेरेना प्रारंभना लग्नने विषे पण जाणवा. तथा—

"स्वर्क्षे चन्द्रे विलग्नस्थे जीवे कंटकवर्तिनि ।
भवेल्लक्ष्मीयुते धाम्नि भूरिकालमवस्थितिः ॥ ६ ॥"

"जे घरना प्रारंभे चंद्र पोताना नक्षत्रमां रहीने लग्ने रह्यो होय, तथा गुरु कंटक (१-४-७-१०) स्थाने रह्यो होय तो ते घर लक्ष्मी युक्त थाय छे, तथा तेमां चिर काळ स्थिति थाय छे. अर्थात् तेमां रहेनाराओ चिर काळ सुधी रहे छे."

"स्वमित्रोच्चगृहांशस्थैस्तद्वंश्याश्चिरमासते ।
खगैरन्यगतैरन्ये नीचगैश्चापि निर्धनाः ॥ ७ ॥"

"घरना प्रारंभसमये ग्रहो पोतानां स्थानमां, मित्रना स्थानमां तथा उच्च स्थानमां अने वळी पोताना अंशमां, मित्रना अंशमां तथा उच्च अंशमां रह्या होय तो तेमां ते

घरधणीना वंशजो चिर काळ रहे छे, अने जो तेथी अन्य स्थानोमां रह्या होय तो ते घरधणीना वंशजोथी बीजा जनो चिर काळ तेमां रहे छे, पण जो ग्रहो नीच स्थानमां रह्या होय तो तेमां वसनाराउं निर्धन रहे छे."

"अनस्तगैः सितेज्येन्दुजन्मराशिविलग्नपैः ।
स्वोच्चस्वक्षेत्रभागस्थैर्लक्ष्मीसौख्यदं गृहम् ॥ ८ ॥"

"शुक्र, गुरु, चंद्र, जन्मनो स्वामी, राशिनो स्वामी अने लग्ननो स्वामी आटला ग्रहो अस्त पामेला न होय तथा पोतानां उच्च स्थाने, पोतानां क्षेत्रमां अने पोताना अंशमां रहेला होय तो ते घर लक्ष्मी तथा सुखने आपनारुं थाय छे."

"गृहिण्यिन्दौ गृहस्थोऽर्के गुरौ सौख्यं सिते धनम् ।
विबले नाशमायाति नीचगेऽस्तंगतेऽपि च ॥ ९ ॥"

"घरना प्रारंभसमये चंद्र निर्बळ होय, नीच स्थाने रह्यो होय अथवा अस्त पाम्यो होय तो घरधणीनी स्त्री नाश पामे छे. एज रीते सूर्य निर्बळ, नीच के अस्त होय तो घरधणी नाश पामे छे. गुरु निर्बळ, नीच के अस्त होय तो सुखनो नाश थाय छे अने शुक्र निर्बळ, नीच के अस्त होय तो धननो नाश थाय छे."

आ प्रमाणे दैवज्ञवल्लभमां कह्युं छे. तथा—

"गृहेषु यो विधिः कार्यो निवेशनप्रवेशयोः ।
स एव विदुषा कार्यो देवतायतनेष्वपि ॥ १ ॥"

"घरनुं स्थापन करवानो तथा तेमां प्रवेश करवानो जे विधि कहेलो छे तेज विधि विद्वाने देवालयोने विषे पण करवो (कहेवो—जाणवो.)" एम व्यवहारप्रकाशमां कह्युं छे.

लग्नने विषे दोषने कहे छे.—

वर्णेशो दुर्बलः कुर्यादावर्षादन्यहस्तगम् ।
एकोऽपि द्यून ७ कर्म १० स्थः परांशे स्याद्यदि ग्रहः ॥ ८४ ॥

अर्थ—जो वर्णनो स्वामी दुर्बळ होय तथा सातमा अने दशमा स्थानमां रहेलो एक पण ग्रह जो बीजाना नवांशमां होय तो ते घर एक वर्षमां बीजा धणीने हाथ जाय. अहीं श्लोकना उत्तरार्धमां कहेलो एकलोज योग होय तो कहेलुं फळ अनेकांत (अनिश्चित) जाणवुं अने पूर्वार्धमां कहेलो योग होय तो अवश्य फळ मळे एम जाणवुं, पण बन्ने योगो अन्य ग्रहना नवांशमां रह्या होय तो जलदीथी घरनो नाश थाय छे.

यात्रा करीने पाछा वळेला राजादिकनो सामान्य रीते घर प्रवेश अथवा नवा घरमां प्रवेश करवानो विधि कहे छे.—

गृहप्रवेशं सुविनीतवेषः, सौम्येऽयने वासरपूर्वभागे ।
कुर्याद्विधायालयदेवतार्चां, कल्याणधीर्भूतबलिक्रियां च ॥ ७५ ॥

अर्थ—सारो विनयवाळो वेष धारण करीने कल्याणबुद्धिवाळा राजादिके सौम्य अयनमां दिवसना पहेला भागने विषे गृहदेवतानी पूजा तथा भूतने बलिदाननी क्रिया करीने गृहप्रवेश करवो.

अहीं सारो विनयवाळो वेष धारण करवो एटले के अति उद्धत वेष न करवो, पण पवित्र अने उचित वेष पहेरवो. सौम्य अयन एटले उत्तरायण जाणवुं. ते विषे कह्युं छे के—

"सौम्येऽयने कर्म शुभं विधेयं, यद्गर्हितं तत्खलु दक्षिणे च" ।

सौम्य अयन एटले उत्तरायणमां शुभ कार्य करवुं, अने जे निंदित कार्य छे ते दक्षिणायनमां करवुं. अहीं शुभ कार्यमां पण आटलो विशेष छे.—

"मासादिसंख्यानियतं सीमन्तोन्नयनादिकम् ।
याम्यायनादौ तत्सर्वं क्रियमाणं न दुष्यति ॥ १ ॥"

"जे शुभ कार्यमां मासादिकनी संख्यानोज नियम करेलो होय एवां सीमंत विगेरे सर्व कार्यो दक्षिणायनादिकमां करवाथी पण दोष नथी" एम त्रिविक्रम कहे छे. अहीं याम्यादौ–दक्षिणायनादिकमां ए ठेकाणे आदि शब्द लखेलो छे तेथी अधिक मास तथा क्षय मास पण आवां कार्योमां निंद्य नथी एम जाणवुं.

मूळ श्लोकमां दिवसनो पहेलो भाग कह्यो छे. तेनो अर्थ चढते दिवसे जाणवो. गृहदेवतानी पूजा एटले वास्तुशास्त्रमां कहेली वास्तुनी पूजा. भूतबळिदान एटले दिशाओ तथा विदिशाओमां भूतने बळिदान आपवुं ते. कल्याणबुद्धिवाळा एटले के गृहप्रवेशसमये चित्तमां सद्बुद्धि राखवी.

गृहप्रवेशमां वार तथा नक्षत्रनो नियम कहे छे.—

प्रविशेद्भस्म वारेषु हित्वार्कक्षितिनन्दनौ ।
भैश्च पुष्यध्रुवस्वातिधनिष्ठामृदुवारुणैः ॥ ७६ ॥
विधाय वामतः सूर्यं पूर्णकुम्भपुरस्सरः ।
गृहं यद्दिङ्मुखं तद्दिग्द्वारधिष्ण्ये विशेषतः ॥ ७७ ॥

अर्थ—रविवार तथा मंगळवारने वर्जीने बीजा वारोमां पुष्य, ध्रुव संज्ञावाळा (रोहिणी अने त्रण उत्तरा), स्वाति, धनिष्ठा, मृदु संज्ञावाळा (मृगशिर, चित्रा, अनुराधा अने रेवती) तथा शतभिषक् एटलां नक्षत्रोमां सूर्यने डाबी बाजु राखीने पूर्ण कुंभ सहित घरमां प्रवेश करवो. तेमां पण जे दिशाना मुखवाळुं घर होय ते दिशाना द्वारनुं नक्षत्र होय तो ते विशेष शुभ छे.

अहीं प्रवेश करती वखते गोचर अने अष्टक वर्गनी विधिए करीने चंद्र अनुकूळ होय, रिक्ता तिथि न होय तथा विष्कंजादिक कुयोग न होय ए पोतानी मेळे जाणी लेवुं. ते विषे व्यवहारप्रकाशमां कह्युं ले के—

"तारेन्दोर्बलकाले तिथावरिक्तेऽह्नि शुजदस्य।"

"तारा अने चंद्रनुं बळ होय त्यारे रिक्ताने वर्जीने बीजी तिथिमां अने शुजदायक दिवसे गृहप्रवेश करवो."

मूळ श्लोकमां रवि अने मंगळने वर्जवानुं कारण ए ले के ते बन्ने वारो रोग तथा रक्त प्रकोपने करनारा ले. वर्ज्य नक्षत्रनुं फळ दैवज्ञवल्लजमां आ प्रमाणे कह्युं ले.—

"विशाखासु राज्ञी सुतो दारुणेषु, प्रणाशं प्रयात्युग्रजेषु क्षितीशः।
गृहं दह्यते वह्निना वह्निधिष्ण्ये, चरैः क्षिप्रधिष्ण्यैश्च जूयोऽपि यात्रा ॥ १ ॥"

"विशाखामां गृहप्रवेश करवाथी राणीनो नाश थाय, दारुण नक्षत्रोमां प्रवेश करवाथी पुत्रनो नाश थाय, उग्र नक्षत्रोमां प्रवेश करवाथी राजानो नाश थाय, अग्निना नक्षत्र (कृत्तिका) मां प्रवेश करवाथी ते घर अग्निवडे बळी जाय, तथा चर अने क्षिप्र नक्षत्रोमां प्रवेश करवाथी फरी यात्रा करवी पडे ले."

मूळ श्लोकमां पूर्ण कुंज सहित प्रवेश करवानुं कह्युं एटले के जळथी जरेला कळशोने (कळशवाळी स्त्रीउने) आगळ करीने प्रवेश करवो. जे दिशाना मुखवाळुं घर होय एम जे कह्युं तेनो अर्थ ए के–पूर्व दिशानी सन्मुख घर होय तो पूर्व द्वारवाळां कृत्तिकादिक सात नक्षत्रो ले, माटे ते नक्षत्रोमां प्रवेश करवानो अधिकार ले. तेथी करीने पूर्वे कहेला गुणवाळुं पण प्रवेशनुं नक्षत्र जो घरनी सन्मुखनी दिशाना द्वारवाळुं होय तो ते अत्यंत शुज जाणवुं. विशेषमां लल्ल कहे ले के—

"सर्वग्रहैर्विमुक्तं प्रवेशजं शस्यते प्रयत्नेन।
कैश्चित्सौम्यसमेतं शुजप्रदं कीर्तितं मुनिजिः ॥ १ ॥"

"सर्व ग्रहोने लोडीने प्रयत्नवडे जो प्रवेशनुं नक्षत्र लीधुं होय तो ते वखाणवा लायक ले. केटलाक मुनिउ कहे ले के ते प्रवेशनुं नक्षत्र सौम्य (रवि, मंगळ अने शनि वर्जित) ग्रहोए करीने सहित होय तो ते शुजकारक ले."

नवा घरमां प्रवेश करवो होय तो शुक्रनुं सन्मुखपणुं तजवा योग्य ले. ते विषे त्रिविक्रमे कह्युं ले के—

"त्यजेत् कुतारां प्रस्थाने शुक्रज्ञौ गृहवेशके।
यात्रासु च नवोढस्त्रीवर्जे संमुखदक्षिणौ ॥ १ ॥"

"प्रस्थान करती वखते कुताराने वर्जवी, नवीन विवाहेल स्त्रीने लोडीने बीजाने गृहप्रवेशमां तथा यात्रामां सन्मुख के जमणी बाजुए रहेला शुक्र अने बुधने तजवा."

हवे लग्नबळ कहे छे.—

जन्मराशिविलग्नाभ्यां प्रथमोपचयस्थितम् ।
लग्नं स्थिरं तदंशश्च प्रवेशे सद्भिरिष्यते ॥ ७७ ॥

अर्थ—सत्पुरुषोए गृहप्रवेशने विषे जन्मनी राशिथी अने जन्मलग्नथी प्रथम तथा उपचयस्थानमां रहेलुं स्थिर लग्न तथा तेनो अंश (नवांश) इच्छेलो छे. अहीं प्रथम स्थान एटले जन्मराशि अने जन्मलग्नरूपज लग्न होय तो ते गृहप्रवेशमां प्रशस्य छे. ते विषे लल्ल कहे छे के—

"स्वनक्षत्रे स्वलग्ने वा स्वमुहूर्त्ते स्वके तिथौ ।
गृहप्रवेशमंगल्यं सर्वमेतत्तु कारयेत् ॥ १ ॥
क्षुरकर्म विवादं च यात्रां चैव न कारयेत् ।"

"पोताना (जन्मना) नक्षत्रमां, पोताना लग्नमां, पोताना मुहूर्त्तमां अने पोतानी तिथिमां गृहप्रवेश तथा सर्व मांगलिक कार्य कराववां, परंतु क्षौर कर्म, विवाद तथा यात्रा ए त्रण कार्य कराववां नहीं." जन्मराशि अने जन्मलग्न थकी उपचयस्थानमां (३–६–१०–११) रहेलो पण राशि प्रशस्य छे. ते विषे लल्ल कहे छे के—

"आरोग्यदो १ धनहरो २ धनदः ३ सुखघ्नः ४,
पुत्रान्तको ५ ऽरिगणहा ६ ऽथ नितम्बिनीघ्नः ७ ।
प्राणान्तकृत् ८ पिटकदो ९ ऽर्थ १० धनौघ ११ जीदो १२,
जन्मर्क्षतस्तदुदयाच्च विलग्नराशिः ॥ १ ॥"

"जन्मना नक्षत्रथी तथा तेना उदयथी लग्ननो राशि जो पहेले स्थाने होय तो आरोग्य आपे छे, बीजे होय तो धननो नाश करे छे, त्रीजे होय तो धनने आपे छे, चोथे होय तो सुखनो नाश करे छे, पांचमे होय तो पुत्रनो नाश करे, छठ्ठे होय तो शत्रुना समूहनो नाश करे, सातमे होय तो स्त्रीनो नाश करे, आठमे होय तो पोताना प्राणनो नाश करे, नवमे होय तो व्याधि करे, दशमे होय तो धनने आपे, अगीयारमे होय तो धननो समूह आपे अने बारमे होय तो जयने आपे छे."

मूळ श्लोकमां सामान्य रीते स्थिर लग्न कह्युं छे, तोपण ते स्थिर लग्न गामनुं लेवुं, पण अरण्यनुं लेवुं नहीं, एटले के वृष के कुंभ लग्नमां के तेना नवांशमां गृहप्रवेश करवो श्रेष्ठ छे, केमके ते बे लग्नज ग्रहण करवा लायक (ग्राम्य) छे. मूळमां तेनो अंश कह्यो छे ते साथे च शब्द लख्यो छे, माटे द्विस्वभाववाळा लग्न तथा अंश (नवांश) गृहप्रवेशमां दूषित नथी, केमके चर लग्न तथा चर अंशनोज दोष कह्यो छे. ते विषे लल्ल कहे छे के—

"पुनः प्रयाणं मेषे स्यान्मृत्युः कर्के तुले रुजः ।
धान्यनाशो मृगे लग्नैरंशैश्च फलमीदृशम् ॥ १ ॥"

"मेष लग्नमां के तेना अंश (नवांश)मां गृहप्रवेश करवाथी फरीने प्रयाण करवुं पडे छे, कर्कमां के तेना अंशमां गृहप्रवेश करवाथी मृत्यु थाय छे, तुला के तेना अंशमां करवाथी व्याधि थाय छे, अने मकरमां करवाथी धान्यनो नाश थाय छे. आ प्रमाणे चर लग्ननुं तथा तेना अंशनुं फळ छे."

ग्रहोनी व्यवस्था नवीन घरना स्थापन करवामां जे कही छे तेज गृहप्रवेशमां पण छे, तेथी करीने जूदी पाडीने कही नथी. ग्रहोना त्रण प्रकार ज्योतिषसारमां आ प्रमाणे कह्या छे.—

"कूरा ति छ गारसगा सोमा किंदे तिकोणगे सुहया ।
कूर छम अड असुहा सेसा मज्झिम गिहारंभे ॥ १ ॥
किंद छमंति १२ कूरा असुहा ति इगारहा सुहा सवे ।
कूरा वीआ असुहा सेस समा गिहपवेसे अ ॥ २ ॥"

"नवीन घरनो आरंभ करवामां क्रूर ग्रहो (रवि, मंगळ, शनि, राहु) त्रीजे, छठे तथा अगीयारमे स्थाने होय तो ते सारा (उत्तम) छे. सौम्य ग्रहो केन्द्र (१–४–७–१०) स्थानमां तथा त्रिकोण (९–५) स्थानमां होय तो ते सारा छे. क्रूर ग्रहो आठमे स्थाने रह्या होय तो ते अत्यंत अशुभ (अधम) छे. बाकीना ग्रहो आठमा स्थानमां रह्या होय तो ते मध्यम छे. (१) गृहप्रवेश करवामां क्रूर ग्रहो केन्द्र (१–४–७–१०) स्थानमां आठमे स्थाने तथा बारमे स्थाने होय तो ते अशुभ (अधम) छे, सर्वे ग्रहो त्रीजे तथा अगीयारमे स्थाने रह्या होय तो ते शुभ (उत्तम) छे. क्रूर ग्रहो बीजे स्थाने होय तो ते अशुभ (अधम) छे. बाकीना मध्यम छे." यंत्र नीचे प्रमाणे.—

गृहस्थापन अने गृहप्रवेशमां ग्रहोनी व्यवस्था—

	उत्तम	मध्यम	अधम
रवि	३–६–११	९–५	८–१–४–७–१०–१२–२
चंद्र	१–४–७–१०–९–५–३–११	८–२–६–१२	०
मंगळ	३–६–११	९–५	८–१–४–७–१०–१२–२
बुध	१–४–७–१०–९–५–३–११	८–२–६–१२	०
गुरु	१–४–७–१०–९–५–३–११	८–२–६–१२	०
शुक्र	१–४–७–१०–९–५–३–११	८–२–६–१२	०
शनि	३–६–११	९–५	८–१–४–७–१०–१२–२
राहु	३–६–११	९–५	८–१–४–७–१०–१२–२

विशेषमां भास्कर कहे छे के—

"रात्रौ विवाहभे शस्तः सन्मुहूर्त्ते स्थिरोदये ।
वधूप्रवेशो नैवात्र प्रतिशुक्राद्भयं विदुः ॥ १ ॥"

"रात्रे विवाहना नक्षत्रमां शुभ मुहूर्त्ते अने स्थिर लग्नमां वहुनो प्रवेश प्रशस्त छे, तेमां सामा (सन्मुख) शुक्रनो भय कह्यो नथी."

तथा रत्नमाळामां आ प्रमाणे कह्युं छे.—

"पुनर्वसौ च सूतिकागृहस्य निर्मितिः स्मृता ।
विरञ्चिविष्णुभान्तरे प्रवेशनं च तत्र तु ॥ १ ॥"

"सूतिकागृहनुं निर्माण पुनर्वसु नक्षत्रमां कह्युं छे, अने तेमां प्रवेश करवानुं अभिजित् तथा श्रवण ए बे नक्षत्रोनी वच्चे कह्युं छे. अहीं पुनर्वसु नक्षत्र लेवानुं कारण ए छे जे तेनो स्वामी देवमाता छे माटे, तथा अभिजित् अने श्रवणनी वच्चे प्रवेश करवानुं कारण ए छे जे तेमना सृष्टिकर्ता (ब्रह्मा) अने पालनकर्ता (विष्णु) स्वामी छे माटे. प्रवेश करवामां अति उत्सुकता होय तो आ बे नक्षत्रोना उदयनी (लग्ननी) वच्चे प्रवेश करवो.

॥ इति वास्तुद्वारम् ॥ ए ॥

इति श्रीमति आरंभसिद्धिवार्तिके गम १ वास्तुनिवेशप्रवेशपरीक्षात्मकश्चतुर्थो विमर्शः ॥ ४ ॥

॥ पञ्चमो विमर्शः ॥

॥ अथ विलग्नद्वारम् ॥ १० ॥

हवे दशमुं विलग्न (विवाह)द्वार कहे छे.—

लग्नं विवाहे दीक्षायां प्रतिष्ठायां च शस्यते ।
रवौ मकरकुंभस्थे मेषादित्रयगेऽपि च ॥ १ ॥

अर्थ—विवाह, दीक्षा अने प्रतिष्ठाने विषे मकर, कुंभ अने मेषादिक त्रण (मेष, वृष तथा मिथुन) संक्रांतिना सूर्य होय त्यारे लग्न (मुहूर्त्त) लेवुं ए शुभ छे.

अहीं दीक्षाए करीने उपस्थापना (वडी दीक्षा) जाणवी. प्रतिष्ठा एटले जिनबिंब, जिनप्रासाद विगेरेनी स्थापना. श्लोकमां च शब्द लख्यो छे ते नहीं कहेलाने पण ग्रहण करवा माटे छे, तेथी राज्याभिषेक अने आचार्यपदाभिषेकनुं पण ग्रहण करवुं. शुभ छे एटले अवश्य आदरवावडे करीने बहु मानेलुं छे. आ विवाहादिक कार्यो शुद्ध लग्नना बळे करीनेज करवा लायक छे, ते सिवाय करवा लायक नथी; अने बीजां कार्यो तो दिवस अने नक्षत्रनी शुद्धि होय त्यारे मात्र सारा मुहूर्त्तमां पण करवा लायक छे. अहीं

कोइ शंका करे के–"जो जन्मलग्नथीज शुभाशुभ फळ थाय छे तो आ विवाहादिकना लग्ननुं प्रबळपणुं विचारवानुं शुं प्रयोजन छे ? अने जो कदाच विवाहादिकना लग्नना बळनुंज प्रमाण होय तो पछी जातकादिक शास्त्रोनुं निरर्थकपणुं थशे." आ शंकानो जवाब आपतां आचार्य महाराज कहे छे के–"एम न बोलवुं, कारण के जातकादिकमां जे शुभाशुभ फळ कहेलुं छे ते (फळ)नी विवाहादिकना लग्नना बळथी अधिकता के न्यूनता थाय छे. जेमके जन्मनुं (जन्मलग्ननुं) फळ शुभ छतां पण दशा प्रवेशने काळे जे तत्काळनुं लग्न आवे तेमां दशानो पति (स्वामी) अने तेना मित्रादिक लग्नादिक स्थानमां रह्या होय तथा चंद्रथी मित्रस्थानमां, उच्च स्थानमां, उपचयस्थानमां अने त्रिकोणादिक स्थानमां रह्या होय तो तेनुं फळ अत्यंत शुभ कह्युं छे. ते विषे बृहज्जातकमां आ प्रमाणे कह्युं छे.—

"पाकस्वामिनि लग्नगे सुहृदि वा वर्गस्य सौम्येऽपि वा,
प्रारब्धा शुभदा दशा त्रिदशषड्लाभेषु वा पाकपे ।
मित्रोच्चोपचयत्रिकोणमदने पाकेश्वरस्य स्थित-
श्चन्द्रः सत्फलबोधनानि कुरुते पापानि चातोऽन्यथा ॥ १ ॥"

"पाकनो स्वामी एटले दशानो स्वामी लग्नस्थानमां के मित्रना स्थानमां रह्यो होय अथवा पोताना वर्ग संबंधी सौम्य ग्रह साथे रह्यो होय ते वखते आरंभ थयेली दशा शुभ फळ आपनारी जाणवी. अथवा दशानो स्वामी त्रीजे, दशमे, छठ्ठे के अगीयारमे स्थाने होय तोपण ते शुभ छे, तथा दशाना स्वामीना मित्रस्थानमां, उच्च स्थानमां, उपचयस्थानमां, त्रिकोणस्थानमां के स्त्रीभुवनमां चंद्र रह्यो होय तो ते सत्फळना बोधने करे छे, तेनाथी अन्य स्थानमां रह्यो होय तो पापने करे छे–अशुभ फळदायक छे."

वळी प्राणीओनुं जन्मलग्न अशुभ छतां पण तत्काळना विवाहादिक लग्नना बळथी शुभ पण थाय छे, माटे सर्व उपर कहेलुं निर्दोष एटले युक्ति युक्तज छे.

"विवाहादौ स्मृतः सौरः" "विवाहादिक कार्यमां सौर (सूर्य संबंधी) मास कह्यो छे." ए प्रमाणे रत्नमाळाना भाष्यमां कह्युं छे, तेथी लग्नमां सूर्यसंक्रांतिथी प्रवर्तेला सौर मासनो नियम कह्यो. हवे चांद्र (चंद्र संबंधी) मासनो नियम कहे छे.—

माघफाल्गुनयो राधज्येष्ठयोश्चापि मासयोः ।
लग्नं श्रेयः परे त्वाहुस्तद्वत्कार्तिकमार्गयोः ॥ २ ॥

अर्थ—माघ अने फाल्गुन मासमां तथा वैशाख अने ज्येष्ठ मासमां पण लग्न शुभ छे. वळी बीजा आचार्यो कार्तिक अने मार्गशीर्ष मासमां पण तेज प्रमाणे एटले शुभ लग्नने कहे छे.

आ शुक्ल प्रतिपदथी आरंभीने चांद्र मासोज ग्रहण करवा. अहीं कोइ शंका करे के ज्येष्ठ मासमां तो मिथुन संक्रांति होय छे, अने ते संक्रांति तो उपरना (पहेला) श्लोकमां पण ग्रहण करवानी कही छे, तेथी अहीं फरीथी ज्येष्ठ मासनुं ग्रहण केम कर्युं ? आ शंकानो जवाब ए छे जे—अषाढ मासमां कदाचित् मिथुन संक्रांति आवती होय तोपण सर्वथा ते अषाढ मासनो निषेध करवा माटे अहीं ज्येष्ठ मासनुं ग्रहण कर्युं छे. केटलाक आचार्योए मिथुन संक्रांति होय तो अषाढ मासनी शुक्ल दशमी सुधीनो प्रथम त्रिभाग ग्रहण करवानो कह्यो छे. ते विषे त्रिविक्रम कहे छे के—"कैश्चिदिष्टस्त्र्यंशः शुचेरपीति" "केटलाएके अषाढ मासनो पहेलो त्रिभाग पण इच्छ्यो छे." मूळ श्लोकमां कार्तिक तथा मार्गशीर्ष मास पण मतांतरे लीधा छे, परंतु ते मास अधम होवाथी तेमां हीन जातिना मनुष्योनो विवाह थइ शके छे एम जाणवुं. तेमां पण कार्तिक शुक्ल एकादशी पछीज थइ शके एम जाणी लेवुं. ते विषे व्यवहारप्रकाशमां कह्युं छे के—

"कार्तिकमासे शुद्धिर्गुरोर्विलोक्या रवेश्च चन्द्रबलम् (ले) ।
अक्रूरयुते धिष्ण्ये देवोत्थानाद्दशाहं स्यात् ॥ १ ॥"

"कार्तिक मासमां देव उठ्या (एकादशी) पछी गुरुनी तथा सूर्यनी शुद्धि जोवी. क्रूर ग्रह रहित नक्षत्रमां चंद्र बळवान् होय तो दश दिवस विवाह थइ शके".

आ उपर कहेला छ मास सिवाय बीजा बाकीना छ चंद्र मासमां लग्न ग्रहण करवुं नहीं एम सिद्ध थयुं. वळी पाकश्रीकार तो आ प्रमाणे कहे छे—"कार्तिक विगेरे त्रण त्रण मासमां अनुक्रमे चार स्थिर राशिनां लग्नो अमृतस्वभाववाळां छे. ते आ प्रमाणे—कार्तिकादिक त्रण मासमां वृष लग्न शुभ छे, माघादिक त्रण मासमां सिंह लग्न शुभ छे, वैशाखादिक त्रण मासमां वृश्चिक लग्न शुभ छे, अने श्रावणादिक त्रण मासमां कुंभ लग्न शुभ छे. आ राशिओना वर्गोत्तमना मध्यम अंशना उदयमां सर्व कार्यनी सिद्धि थाय छे.

जे वर्ष मासादिकमां लग्न ग्रहण करवामां आवतुं नथी तेने कहे छे.—

जीवे सिंहस्थे धन्वमीनस्थितेऽर्के,विष्णौ निद्राणे चाधिमासे च लग्नम् ।
नीचेऽस्तं वाते लग्ननाथेऽंशपे वा, जीवे शुक्रे वाऽस्तं गते वाऽपि नेष्टम् ॥ ३ ॥

अर्थ—बृहस्पति सिंह राशिमां रहेलो होय, सूर्य धन अथवा मीन संक्रांतिमां रहेलो होय, विष्णु सुतेला होय, अधिक मास होय, लग्ननो स्वामी अथवा अंशनो स्वामी नीच स्थाने रह्यो होय अथवा अस्त पाम्यो होय, तथा गुरु के शुक्र अस्त पाम्या होय त्यारे लग्न लेवुं इष्ट नथी.

सिंह राशिमां रहेलो बृहस्पति होय तो लग्न लेवुं इष्ट नथी. ते विषे सप्तर्षि कहे छे के—

"गुरुर्मघायां पुरुषं हन्ति भाग्ये स्थितः स्त्रियम् ।
उत्तराफल्गुनीपादे द्वयं हन्ति न संशयः ॥ १ ॥"

"मघा नक्षत्रमां रहेलो बृहस्पति पुरुषने हणे छे, पूर्वाफाल्गुनीमां रह्यो होय तो स्त्रीने हणे छे, अने उत्तराफाल्गुनीना पहेला पादमां रह्यो होय तो बन्नेने हणे छे. तेमां कांइ पण संदेह नथी. (आ सवा बे नक्षत्रो सिंह राशिनां छे.)"

"गोदावर्युत्तरतो यावद्भागीरथीतटं याम्यम् ।
तत्र विवाहो नेष्टः सिंहस्थे देवपतिपूज्ये ॥ २ ॥"

"बृहस्पति सिंह राशिमां रह्यो होय त्यारे गोदावरी नदीना उत्तर कांठाथी आरंभीने गंगा नदीना दक्षिण कांठा सुधीना वचला प्रदेशमां विवाह करवानुं इच्छयुं नथी."

केटलाएक आ प्रमाणे कहे छे.–ज्यांसुधी बृहस्पति मघा नक्षत्रने उल्लंघन न करे त्यांसुधी सिंहस्थनो दोष मोटो छे. ते विषे शौनक कहे छे के—

"पितृभे यदि सुरपूज्यो नीचर्क्षे वाऽथवाऽरिसंयुक्तः ।
कन्योढा वैधव्यं प्रयाति संवत्सरैः षड्भिः ॥ १ ॥"

"जो बृहस्पति मघा नक्षत्रमां होय, अथवा नीच राशिमां होय, अथवा शत्रुस्थान-वडे संयुक्त होय तो तेवा लग्नमां परणेली कन्या छ वर्षे विधवा थाय छे."

जो मघा नक्षत्रने उल्लंघन करी गयो होय तो तेटलो बधो दोष नथी, तेथी करीने कन्याकाळना अतिक्रमणथी, वरना लोभथी के देशना उपद्रव विगेरेना हेतुथी संपूर्ण सिंहस्थनो त्याग करवो अशक्य होय तो तेउ मघामां रहेला गुरुनोज त्याग करे छे. तेउ कहे छे के—

"बहवोऽप्येवं जगदुः सिंहारूढोऽपि वृत्रशत्रुगुरुः ।
समतिक्रान्तमघर्क्षो न विरुद्धः सर्वकार्येषु ॥ १ ॥"

"घणा आचार्यो कहे छे के इन्द्रनो गुरु बृहस्पति सिंह पर आरूढ थयो होय तोपण मघा नक्षत्रने उल्लंघन करी गयो होय तो सर्व कार्यमां विरुद्ध नथी."

पराशर कहे छे के—"सिंहमां रहेला बृहस्पतिए जो सिंहना पहेला पांच नवांशो भोगवी लीधा होय तो अमुक देशमां सिंहस्थनो दोष लागतो नथी. ते आ प्रमाणे.—

"सिंहस्थे ज्योऽनुसिंहांशाज्जाह्नवीतीरयोर्द्वयोः ।
न दुष्टो गंगयोर्मध्यदेशेषु तु स दुःखदः ॥ १ ॥"

"सिंहमां रहेलो बृहस्पति सिंहना प्रथम पांच नवांश भोगव्या पछी गोदावरीना दक्षिण कांठे तथा गंगाना उत्तर कांठे दुष्ट नथी. गोदावरी तथा गंगाजीना मध्य भागमां तो दुःखदायक छे.

वळी सप्तर्षिउ आ प्रमाणे कहे छे.—"अमुक देशमां सिंहस्थ गुरु प्रथमथीज अदुष्ट छे. ते आ प्रमाणे.—

"भागीरथ्युत्तरे तीरे गोदावर्याश्च दक्षिणे ।
विवाहो व्रतबन्धो वा सिंहस्थे ज्ये न दुष्यति ॥ १ ॥"

"सिंहस्थ गुरु होय त्यारे गंगाना उत्तर कांठे तथा गोदावरीना दक्षिण कांठे विवाह अथवा व्रतबंध (दीक्षा, उपनयन विगेरे) करवानो दोष नथी."

वळी बीजा आचार्यो आ प्रमाणे कहे छे—"मेष राशिमां सूर्य होय त्यारे जो लग्न ग्रहण कर्युं होय तो मघा नक्षत्र भोगवाइ जवाथी सिंहस्थ गुरुनो दोष नथी." तेउ कहे छे के—

"सिंहम्मि जइ जीवो मह भुत्तं होइ अह रवि मेसे ।
ता कुणह निव्विसंकं पाणिग्गहणाइ कल्लाणं ॥ १ ॥"

"सिंहस्थ गुरुए जो मघा नक्षत्र भोगवी लीधुं होय, अने मेष राशिमां सूर्य होय तो निःशंकपणे पाणिग्रहणादिक शुभ कार्यो करवां."

अहीं आ सर्वे ग्रन्थांतरोना संवादो विवाहना फळने आश्रीने देखाड्या छे, परंतु प्रतिष्ठा अने दीक्षा विगेरे सर्व कार्योमां पण आने अनुसरीनेज फळ कहेवुं. एज प्रमाणे आगळ पण जाणवुं.

मूळ श्लोकमां धन अने मीन संक्रांतिमां विवाहनो निषेध कर्यो छे. त्यां विशेष आ प्रमाणे जाणवो.—

"झषो न निन्द्यो यदि फाल्गुने स्या-
दजस्तु वैशाखगतो न निन्द्यः ।
मध्वाश्रितौ द्वावपि वर्जनीयौ,
मृगस्तु पौषेऽपि गतो न निन्द्यः ॥ १ ॥"

"जो फाल्गुन मासमां मीनना सूर्य होय तो ते निंद्य नथी, अने वैशाख मासमां पण मेष होय तो ते पण निंद्य नथी, परंतु चैत्र मासमां मीन के मेष संक्रांति होय तो ते बन्ने वर्जवा योग्य छे. तथा पोष मासमां मकर होय तोपण ते निंद्य नथी." आ विद्याधरी विलास ग्रंथमां कह्युं छे.

आ श्लोकनेज केटलाएक आ प्रमाणे बोले छे.—

"झषो न निन्द्यो यदि फाल्गुने स्या-
दजस्तु चैत्रेऽपि गतो न निन्द्यः ।
मृगस्तु पौषेण च संप्रयुक्तो,
वशिष्ठगर्गादिभिरेतदुक्तम् ॥ १ ॥"

"फाल्गुन मासमां मीन होय तो ते निंद्य नथी, मेष राशि चैत्र मासमां होय तोपण ते निंद्य नथी, मकर राशि पोष मासमां होय तो ते पण निंद्य नथी, एम वशिष्ठ, गर्ग विगेरे ऋषिओ कहे छे." आ पाठमां आटलो विशेष जाणवो के चैत्र मासने विषे पण जो मेषना सूर्य होय तो लग्न ग्रहण करवामां दोष नथी. वळी रत्नमाळाभाष्यमां तो आ प्रमाणे कह्युं छे.—

"कर्कादि राशिषट्कं च पूर्वार्धे पौषचैत्रयोः ।
अस्तमितं गुरुं शुक्रं त्यजेच्चूडादिकर्मणि ॥ १ ॥"

"कर्कथी आरंभीने धन सुधीनी छ संक्रांतिने, पोष तथा चैत्र मासना पूर्वार्ध (पहेला पखवाडीया)ने अने गुरु तथा शुक्रना अस्तने चूडादिक कर्ममां वर्जवा." अहीं पोष तथा चैत्र मासना पूर्वार्धने तजवानुं कह्युं छे तेने नहीं सहन करतो श्रीपति आ प्रमाणे कहे छे.—

"सौम्येऽयनेऽप्यविकलौ पौषचेत्रौ परित्यजेत् ।
पक्षोऽपरः शुभः कैश्चिन्न चैतद्युक्तिमद्वचः ॥ १ ॥"

"उत्तरायणने विषे पण पोष तथा चैत्र मास संपूर्ण त्याग करवा लायक छे, केटलाक आचार्योए शुक्ल पक्षने शुभ कह्यो छे, पण ते वचन युक्तिवाळुं नथी." एम दैवज्ञवल्लभमां कह्युं छे.

मूळ श्लोकमां "विष्णु सुतेला होय" एम जे कह्युं छे ते लोकरूढिए करीने जाणवुं, एटले अषाढ शुक्ल एकादशीथी कार्तिक शुक्ल एकादशी सुधीनो काळ जाणवो. मूळ श्लोकमां अधिक मास वर्जवानो कह्यो छे, ते अधिक मास आ प्रमाणे थाय छे.—कोइ पण मासनी अमावास्याने विषे एक संक्रांति बेठी होय अने बीजी संक्रांति त्यारपछीना मासनी प्रतिपदाने दिवसे बेठी होय त्यारे वच्चेनो जे संक्रांति रहित मास रह्यो ते अधिक मास कहेवाय छे. कह्युं छे के—

"एकोऽमावास्यायां भवेद्रवेः संक्रमः परो दर्शात् ।
ऊर्ध्वं जायेत यदा तदाऽधिमासः शुभेऽनिष्टः ॥ १ ॥"

"एक सूर्यनुं संक्रमण (संक्रांति) अमावास्याने दिवसे होय अने बीजुं संक्रमण आवती अमावास्या पछी होय त्यारे वच्चेनो अधिक मास थाय छे. ते अधिक मास शुभ कार्यमां अनिष्ट छे."

विशेष आ प्रमाणे छे.—

"मासद्वयेऽब्दमध्ये तु संक्रान्तिर्न यदा भवेत् ।
प्राकृतस्तत्र पूर्वः स्यादधिमासस्तथोत्तरः ॥ १ ॥"

"एकज वर्षमां ज्यारे बे मासने विषे संक्रांति न होय त्यारे पूर्वनो मास प्राकृत अने

पछीनो मास अधिक जाणवो." अहीं प्राकृत एटले प्रकृति–धर्मव्यवहार ते संबंधी अर्थात् विवाह, दीक्षा, प्रतिष्ठा विगेरे शुभ कार्यने योग्य एवो अर्थ जाणवो. एक वर्षमां बे मास अधिक होय त्यारे जो पहेलाने अधिक मास कहीए तो तेमांनो पहेलो मास धर्मकर्मना व्यवहारने योग्य छे, अने बीजो नहीं, पण बीजा मासने जो अधिक गणीए तो ते बेमांनो बीजो मास धर्मव्यवहारने योग्य जाणवो एम काळनिर्णय ग्रंथमां कह्युं छे. ब्रह्मसिद्धांतमां पण कह्युं छे के—"वर्षमध्ये मासद्वयवृद्धौ प्रथममासवृद्धौ कर्मकृदाद्योऽपरस्त्वशुभ इति" "एक वर्षमां बे मासनी वृद्धि होय त्यारे पहेला मासनी वृद्धि करीए तो पहेलो मास कर्मने लायक छे अने बीजो अशुभ छे."

मूळ श्लोकमां "अधिमासे च" अहीं च शब्द छे तेथी क्षय मास पण लग्नमां तजवा योग्य छे. ते क्षय मास आ प्रमाणे जाणवो.—ज्यारे एक संक्रांति शुक्ल प्रतिपद्‌ने दिवसे होय अने बीजी संक्रांति तेज मासनी अमावास्याने दिवसे अर्थात् अमावास्या सुधीमां होय त्यारे ते बे संक्रांतिवाळो क्षय मास कहेवाय छे. ते क्षय मास कार्तिक, मार्गशीर्ष के पोष ए त्रणमांथीज कोइ एक संभवे छे. ते विषे काळनिर्णय ग्रन्थमां कह्युं छे के.—

"असंक्रान्तिमासोऽधिमासः स्फुटं स्यात्,
द्विसंक्रान्तिमासः क्षयाख्यः कदाचित् ।
क्षयः कार्तिकादित्रये नान्यतः स्यात्,
ततो वर्षमध्येऽधिमासद्वयं स्यात् ॥ १ ॥"

"जे मासमां संक्रांति न होय ते अधिक मास कहेवाय छे, अने कोइक वखत एक मासमां बे संक्रांति होय एवो क्षय मास पण होय छे. ते क्षय मास कार्तिक विगेरे त्रण मासमांज होय छे, तथा ते वर्षमां बे अधिक मास आवे छे." तथा—

"यस्मिन्मासे न संक्रान्तिः संक्रान्तिद्वयमेव वा ।
मलमासः स विज्ञेयः सर्वकार्येषु वर्जितः ॥ १ ॥"

"जे मासमां संक्रांति न होय, अथवा जे मासमां बे संक्रांति होय ते मल मास जाणवो. आ मास सर्व कार्यमां वर्जित छे." आ प्रमाणे काठगृह्यमां कह्युं छे.

मूळ श्लोकमां "नीचेऽस्तं वेति" एटले लग्ननो तथा अंशनो स्वामी नीच स्थानमां रहेलो होय तो ते त्याग करवा योग्य छे. ते विषे प्रश्नप्रकाशमां कह्युं छे के—

"त्रि १ द्वये २ कगुणा ३ र्धबलः ४ खग उच्चग १ वक्र २ शीघ्र ३ नीचस्थः ४ ।"

"ग्रह उच्च स्थाने रह्यो होय तो तेनुं बळ त्रण गणुं होय छे, वक्र गतिवाळो होय तो तेनुं बळ बमणुं होय छे, शीघ्र गतिवाळो होय तो एक गणुं होय छे, अने नीच स्थानमां रह्यो होय तो तेनुं अर्ध बळ होय छे." परंतु अस्त पामेलो होय तो तेनुं कांइ पण बळ

नथी. मात्र एक बुध ग्रह अस्त पामेलो के उदय पामेलो होय तो ते विवाहादिकना लग्नमां समान फळवाळोज छे. कह्युं छे के—

"रविकिरणमध्यवर्ती चरति सदा सवितृमंडले शशिजः ।
तस्मान्न दोषकृत्स्यात् सोऽस्तं यातोऽपि भांशपतिः ॥ १ ॥"

"सूर्यनां किरणोना मध्यमां वर्तनारो बुध सर्वदा सूर्यमंडळमांज गति करे छे, तेथी करीने ते अस्त पामेलो होय तोपण बुध दोष करनार थतो नथी."

ग्रहोना उदय अने अस्तना दिवसनी संख्या सामान्य रीते आ प्रमाणे ज्योतिषसारमां कहेली छे.—

"छस्सयसठ ६६० छतीसा ३६ तिन्निबहुत्तर ३७२ दुएगपन्नासा २५१ ।
तिन्निबयाला ३४२ अंगारयमाई उदयदिवस कमा ॥ १ ॥
सुन्नरवि १२० सोल १६ दसणा ३२ नंद ९ बयालीस ४२ पच्छिमत्थदिणा ।
भोमाई तह पुव्वे बुहसिअ छत्तीस ३६ सगसयरी ७७ ॥ २ ॥"

"मंगळनो उदय ६६० दिवस सुधी रहे छे, बुधनो उदय ३६ दिवस रहे छे, गुरुनो उदय ३७२ दिवस, शुक्रनो २५१ अने शनिनो उदय ३४२ दिवस रहे छे (१). मंगळनो अस्त १२० दिवस सुधी रहे छे, बुधनो अस्त १६ दिवस रहे छे, गुरुनो अस्त ३२ दिवस, शुक्रनो ९ अने शनिनो अस्त ४२ दिवस रहे छे. आ सर्वे पश्चिम दिशामां अस्त पामे तेने आश्रीने दिवसोनी संख्या कही छे, पण पूर्वमां अस्त होय तो बुध ३६ दिवस अने शुक्र ७७ दिवस सुधी अस्त रहे छे. २."

ग्रहोनो उदय अने अस्त थवानो प्रकार आ प्रमाणे छे.—

"सूर्याः १२ सप्तदश १७ त्रिभूपरिमिता १३ रुद्रा ११ नवा ९ ब्धीन्दवः १४,
कालांशाः शशिनोऽभूजोर्ज्ञगुरुणः काव्यस्य मन्दस्य च"

"सूर्यना १२ त्रिंशाशने मध्ये चंद्र आवे त्यारे तेनो अस्त थाय छे, १७ त्रिंशांशने मध्ये मंगळ आवे, १३ त्रिंशांशने मध्ये बुध आवे, ११ त्रिंशांशने मध्ये गुरु आवे, ९ त्रिंशांशने मध्ये शुक्र आवे अने १४ त्रिंशांशने मध्ये शनि आवे त्यारे तेमनो अस्त थाय छे. तेटला त्रिंशांशनी बहार होय त्यारे तेमनो उदयज होय छे." एम खंडखाद्यना भाष्यमां कह्युं छे.

मूळ श्लोकमां "अस्तं वाप्ते" "लग्ननो तथा अंशनो स्वामी अस्त पाम्यो होय तो ते वर्ज्य छे" एम जे कह्युं छे ते उपलक्षण छे, तेथी करीने लग्ननो अथवा अंशनो स्वामी क्रूर ग्रहे करीने युक्त होय अथवा क्रूर ग्रहनी तेना पर दृष्टि पडती होय तोपण ते लग्न अशुभ जाणवुं.

मूळ श्लोकमां गुरु अथवा शुक्रनो अस्त होय तो ते लग्न अशुभ छे एम कह्युं. ते विषे लल्ल कहे छे के—

"अस्तमिते भृगुतनये नारी म्रियते बृहस्पतौ पुरुषः"।

"विवाहना लग्नसमये शुक्रनो अस्त होय तो स्त्री मरण पामे छे, अने गुरुनो अस्त होय तो पुरुषनुं मरण नीपजे छे."

केटलाएक आचार्यो आम पण कहे छे.—

"अभिजिद्वारुणादित्यरेवतीसंगते सति ।
तदा लोपगते जीवे विवाहादि विवर्जयेत् ॥ २ ॥"

"अभिजित्, शतभिषक्, पुनर्वसु अने रेवतीए करीने युक्त एवो गुरु होय तो ते लोपगत कहेवाय छे. ते वखते विवाहादिक शुभ कार्यने वर्जवां." अहीं आ प्रमाणे संप्रदाय छे.—बारे महीनाओ एकांतर नक्षत्रना नामे करीने चिह्नवाळा छे. जेमके अश्विनी नक्षत्रे करीने आश्विन मास, कृत्तिकावडे कार्तिक, मृगशिरवडे मार्गशीर्ष, पुष्यवडे पौष मास विगेरे. आ रीते एकांतर गणतां पण जे जे नक्षत्र वच्चे अधिक रहेलां छे ते नक्षत्रो अभिजित्, शतभिषक्, रेवती अने पुनर्वसु छे. आ नक्षत्रोमां गुरु रहेलो होय तो ते लोपगत कहेवाय छे. ते वखते लग्न ग्रहण करवुं नहीं. तथा सारंग कहे छे के—

"अस्तं गते भृगुसुते भवेद्यदि बुधोदयः ।
पुत्राष्टकस्य जननी तदोढा कन्यका भवेत् ॥ १ ॥"

"शुक्र अस्त पाम्यो होय अने जो बुधनो उदय होय तो ते वखते विवाहित थयेली कन्या आठ पुत्रनी माता थाय छे. अर्थात् ते लग्न शुभ छे."

वळी गर्ग कहे छे के—

"शशांकजो यदोदेति गुरोरस्तमनं यदि ।
पुत्राष्टकस्य जननी तदोढा कन्यका भवेत् ॥ १ ॥"

"बुधनो उदय होय अने जो गुरुनो अस्त होय तो ते वखते विवाहित थयेली कन्या आठ पुत्रनी माता थाय छे."

"शुक्रना अस्तमां दीक्षानो दोष नथी" एम दिनशुद्धि ग्रंथमां कह्युं छे. विशेषमां एम जाणवुं के जेम गुरुना अस्तमां लग्न इष्ट नथी तेज रीते गुरु नीच स्थानमां रह्यो होय तोपण ते इष्ट नथी. ते विषे विवाहपटलमां कह्युं छे के—

"वाक्पतौ मकरराशिमुपेते, पाणिपीडनविधिर्न विधेयः ।
तत्र दूषणमुशन्ति मुनीन्द्राः, केवलं परमनीचनवांशे ॥ १ ॥"

"गुरु मकर राशिमां रहेलो होय त्यारे पाणिग्रहणनो विधि करवा योग्य नथी. तेमां पण मात्र अत्यंत नीच नवांशमांज दूषण छे एम मुनींद्रो कहे छे."

"पांचज नीच नवांशोनो त्याग करवो" एम अन्य ग्रंथमां कह्युं छे. तेमां लोकरूढिए परम नीच अंश पर्यंत पहेला पांच त्रिंशांशरूप नीचांशो त्याग करेला छे. जो के लोकमां सर्वत्र मात्र पांचमो त्रिंशांशज परम नीच छे, छतां पांचमा त्रिंशांश सुधीना पांचे त्रिंशांशो वर्जवानुं कह्युं ते लोकरूढिने अनुसरीने कह्युं छे एवुं ज्योतिषशास्त्रना वेत्ताओनुं वचन छे.

मूळ श्लोकमां "जीवे सिंहस्थे" ए वचनवडे वर्षनी अने "धन्वमीनस्थितेऽर्के" ए वचनवडे मासनी शुद्धि कही. वळी कांइक मासनी शुद्धि तथा दिवस अने नक्षत्रनी शुद्धि "ज्येष्ठापत्यस्य न ज्येष्ठे" (मिश्रद्वार श्लोक ६) तथा "उद्वाहे मृगपैत्रर्क्षे" (मिश्रद्वार श्लोक ७) ए श्लोकमां कहेशे. समयनी शुद्धि आ प्रमाणे जाणवी.—रात्रिनो मध्य भाग अने दिवसना मध्य भागने विषे लग्न ग्रहण करवुं नहीं. ते विषे गदाधर कहे छे के—

"निवसति मुहूर्त्तकालो महानिशायां च दिनदले यस्मात् ।
दश पूर्वं दश परतस्तस्माद्वर्ज्याश्चरपलानि ॥ १ ॥"

"मध्य रात्रीए तथा दिवसना मध्य भागे मुहूर्त्तकाळ रहे छे, माटे ते समये प्रथमना तथा पछीना दश दश पळनो त्याग करवो."

कोइ आचार्यो एम कहे छे के—"दिवसना पाछला भागमां एटले के मध्याह्नकाळ पछी प्रतिष्ठा, विवाह विगेरेनुं लग्न आवे नहीं (शुभ नथी), अने तेथी करीनेज गृहप्रवेशना अधिकारमां "सौम्येऽयने वासरपूर्वभागे" (वास्तुद्वार श्लोक ८५) ए श्लोकमां दिवसनो पूर्व भाग लीधो छे." आ तेमनुं कहेवुं अयुक्त छे, केमके विवाहमां दिवसना पाछला भागे सूत्रकारज लग्न लेवानी आज्ञा आपवाना छे. ते बाबत "विवाहे त्वर्कार्कीं त्रिरिपुनिधनायेषु शुभदौ" (मिश्रद्वार श्लोक ३६) ए श्लोक आगळ कहेशे. वळी विवाहना लग्नमां अपराह्ण (दिवसनो पाछलो भाग) न लइए तो सूर्यनुं आठमा स्थानमां रहेवापणुं संभवतुं नथी, (अने लग्नथी सूर्य आठमे होय तो तेने शुभ कहेवामां आवशे ते शी रीते घटे ?) परंतु अपराह्णमां प्रतिष्ठादिकना लग्नने ग्रहण करवानो व्यवहार प्राये देखातो नथी अने विवाहनुं लग्न तो अपराह्णमां ग्रहण करता क्वचित् जोवामां पण आवे छे. तेथी करीने आ विषे वृद्धोज प्रमाणभूत छे.

जीर्णः शुक्रोऽहानि पञ्च प्रतीच्यां, प्राच्यां बालस्त्रीण्यहानीह हेयः ।
त्रिघ्नान्येवं तानि दिग्वैपरीत्ये, पक्षं जीवोऽन्ये तु सप्ताहमाहुः ॥ ४ ॥

अर्थ—शुक्रने पश्चिम दिशामां पांच दिवस सुधी वृद्ध जाणवो, अने पूर्व दिशामां

त्रण दिवस बाळक जाणवो, परंतु दिशाना विपरीतपणाने विषे ते दिवसो त्रण गुणा जाणवा. आ बन्ने अवस्था लग्नमां तजवा योग्य छे. गुरु बन्ने अवस्थामां एक पक्ष (पंदर दिवस) त्याग करवा योग्य छे, अने बीजा आचार्यो तो सात दिवस त्याग करवा योग्य कहे छे.

विवेचन—श्लोकमां "जीर्ण" शब्दे करीने अस्तनुं सूचन कर्युं छे, तेथी अस्त पामवानी तैयारीवाळो एवो अर्थ जाणवो. "बाळ" शब्दे करीने उदयनुं सूचन कर्युं छे अर्थात् नवो उदय पामेलो एवो अर्थ जाणवो. दिशाना विपरीतपणाने विषे एटले के जो पूर्व दिशामां अस्त थवानो होय अने पश्चिममां उदय थयो होय तो ते दिवसोने त्रण गुणा एटले पंदर अथवा नव दिवस तजवाना जाणवा, एटले के पूर्वमां उदय पामेलो शुक्र बाळ होवाथी त्रण दिवस त्याग करवो, पण पश्चिममां उदय पामे तो ते नव दिवस बाळ होवाथी तेटला दिवसो वर्जवा. तथा जो पूर्वमां अस्त पामवानो होय तो वृद्धपणाने लीधे तेना पंदर दिवस वर्जवा, पण पश्चिममां अस्त पामवानो होय तो पांच दिवस वर्जवा. मूळ श्लोकमां गुरुने पंदर दिवस तजवानुं कह्युं छे, एटले के नवो उदय पामे त्यारे ते बाळक होय छे अने अस्त पामवानी सन्मुख होय त्यारे ते वृद्ध कहेवाय छे. ते बन्ने अवस्थामां पंदर दिवस तजवा योग्य छे. "गुरु पण त्रण दिवस बाळक छे अने पांच दिवस वृद्ध छे" एम पण केटलाक कहे छे, परंतु गुरुनो पूर्व दिशामां अस्त अने पश्चिम दिशामां उदय थतो नथी. बीजाओ एटले सप्तऋषि विगेरे तो गुरु अने शुक्र ए बन्नेने बन्ने दिशामां अस्त के उदय होय तोपण सात सात दिवसनी बाल्यावस्था तथा वृद्धावस्था कहे छे. आ बन्नेनी बाल्यावस्था के वृद्धावस्था होय त्यारे लग्न लेवुं नहीं. ए तात्पर्य छे. "आ बाल्य तथा वृद्धपणानी अवस्थानी कल्पना निर्बळपणारूप तेना फळने जणाववा माटेज करेली छे, पण वास्तविक रीते तेमनी अवस्थाओ होती नथी" एम रत्नमाळाभाष्यमां कह्युं छे.

विशेष आ प्रमाणे जाणवो.—

"अरिगयनीए वक्के अत्थमिए लग्गरासि निसिनाहे ।
अबले रविगुरुसुक्के सामि अदिट्ठं चयह लग्गं ॥ १ ॥"

"लग्नराशिनो स्वामी तथा चंद्र शत्रुना स्थानमां होय, नीचना होय, वक्र होय के अस्त पामेला होय, तथा रवि, गुरु अने शुक्र निर्बळ होय, तथा स्वामीनी दृष्टि न पडती होय एवुं लग्न, आ सर्वे त्याग करवा योग्य छे." आ भंगने देनारा लग्नना दोषो सर्वत्र वर्ज्य छे.

॥ इति लग्नद्वारम् ॥ १० ॥

॥ अथ मिश्रद्वारम् ॥ ११ ॥

हवे मिश्र नामनुं अगीयारमुं द्वार कहे छे. तेमां प्रथम लग्न ग्रहण करवामां ग्रहगोचरनी शुद्धि कहे छे.—

लग्ने गुरोर्वरस्याथ ग्राह्यं चान्द्रबलं बुधैः ।
शिष्यस्थापककन्यानां जीवेन्द्वर्कबलानि च ॥ ५ ॥

अर्थ—पंडितोए लग्नवखते गुरुनुं तथा वरनुं चंद्रबळ ग्रहण करवुं. तथा शिष्य, स्थापक अने कन्याने गुरु, चंद्र अने सूर्यनां बळ ग्रहण करवां.

विवेचन—दीक्षा तथा प्रतिष्ठाना लग्नमां गुरु (आचार्य)ने अने विवाहना लग्नमां वरने चंद्रबळ होवुं जोइए. ते चंद्रबळ पूर्वे कहेला विधिए करीने राशिगोचर १, नवांशगोचर २, अष्टवर्गशुद्धि ३, शुभ तारा ४, शुभ अवस्था ५, वाम (डाबो) वेध ६, शुक्ल तथा कृष्णपक्षनो प्रारंभ ७, मित्र तथा अधिमित्रना घर (स्थान)मां रहेवुं ८, सौम्य ग्रहना स्थानमां रहेवुं ९, मित्र तथा अधिमित्रना अंशमां रहेवुं १०, सौम्य ग्रहना अंशमां रहेवुं ११, मित्र तथा अधिमित्रना ग्रहनी साथे रहेवुं १२, सौम्य ग्रहनी साथे रहेवुं १३, मित्र तथा अधिमित्रना स्थाननी दृष्टि १४, अने सौम्य ग्रहनी दृष्टि १५, आ पंदर प्रकारमांथी कोइ पण प्रकारे करीने चंद्रनी अनुकूळतारूपी बळ अवश्य ग्रहण करवुं. ते विषे कह्युं छे के—

"सर्वत्रामृतरश्मेर्बलं प्रकल्प्यान्यखेटजं पश्चात् ।
चिन्त्यं यतः शशाङ्के बलिनि समस्ता ग्रहाः सबलाः ॥ १ ॥"

"सर्वत्र (सर्व प्रकारनां लग्नमां अथवा शुभ कार्यमां) प्रथम चंद्रनुं बळ ग्रहण करीने पछी बीजा ग्रहोनुं बळ चिंतववुं, कारण के चंद्र बळवान् होय तो सर्वे ग्रहो बळवान् होय छे."

मूळ श्लोकमां शिष्य—दीक्षा लेनार अथवा पदवीने विषे जेने स्थापन करवो होय ते. स्थापक—द्रव्यनो व्यय करनार जे श्रावक विगेरे होय ते. तेमणे गुरु, चंद्र अने सूर्यनुं बळ अवश्य ग्रहण करवुं. ते विषे कह्युं छे के—

"रविशशिजीवैः सबलैः शुभदः स्याद्गोचरः"

"रवि, चंद्र अने गुरु बळवान् होय तो गोचर शुभदायी थाय छे." ग्रहोना बळना तरतमपणा विगेरेनो विभाग आ प्रमाणे छे.—

"पूर्णं २० खेटाष्टकबलमूनं पादेन १५ गोचरं प्रोक्तम् ।
वेधोत्थमर्धमानं १० पादबलं ५ दृष्टितः खचरे ॥ १ ॥"

"आठ ग्रहोनुं बळ होय तो ते पूर्ण एटले २० वसा बळ जाणवुं, गोचरनुं बळ एक पाद हीन एटले १५ वसा कहेलुं छे, वेधथी उत्पन्न थयेलुं बळ अर्धुं एटले १० वसा कह्युं छे, तथा दृष्टिथी एटले एक ग्रह पर बीजा ग्रहनी दृष्टि पडती होय तेवुं बळ एक पाद एटले पांच वसा कहेलुं छे." आ सामान्यथी सर्व ग्रहोने आश्रीने कह्युं. तेमां एक चंद्रने आश्रीने विशेष छे ते कहे छे.—

"एणाङ्के गोचरबल १ मष्टक २ तारोत्थ ३ वेध ४ पञ्जवम् ५ ।
क्रमशस्तारा १ वेधज २ पञ्जवानी ३ ह गौणानि ॥ २ ॥"

"चंद्रने विषे गोचरबळ १, अष्ट वर्गनुं बळ २, ताराथी उत्पन्न थयेलुं बळ ३, वेधनुं बळ ४ अने पञ्च (पखवाडीया)थी उत्पन्न थयेलुं बळ ५. आ पांच प्रकारनां बळमांथी अनुक्रमे तारा १, वेध २ अने पञ्चथी ३ उत्पन्न थयेलुं बळ गौण छे, एटले के आ त्रण बळ उत्तरोत्तर हीन, हीनतर अने हीनतम छे." बाकीनां पहेलां बे बळनुं स्वरूप आ प्रमाणे छे.—

"ग्रहगोचरा १ ष्टवर्गौ २ तुल्यबलौ शुद्धिकारणादनयोः ।
एकेनापि बलेन प्राप्तेन जवेत्सुशुद्धिरिह ॥ ३ ॥"

"ग्रहगोचर अने अष्ट वर्ग ए बन्ने शुद्धिनुं कारण होवाथी तुल्य बळवाळा छे. ते बेमांथी एकनुं पण बळ प्राप्त थयुं होय तो तेथी अहीं लग्नमां सारी शुद्धि थाय छे."

"चेद्गोचरान्न हि जवेत्तदाऽष्टवर्गाद्विलोक्यते शुद्धिः ।
गोचरतोऽष्टकवर्गो बलवानुद्वाहदीक्षादौ ॥ ४ ॥"

"जो गोचरथी शुद्धि न आवती होय तो अष्ट वर्गथी शुद्धि जोवी, अने विवाह तथा दीक्षादिकमां ग्रहगोचर करतां अष्ट वर्ग वधारे बळवान् छे."

"तस्मादष्टकशुद्धिर्गुरोर्विलोक्या रवेश्च चन्द्रस्य ।
निधना ८ न्त्या १२ म्बु ४ गतेष्वपि रेखाधिक्यात्सुशुद्धिः स्यात् ॥ ५ ॥"

"तेथी करीने गुरुनी, सूर्यनी अने चंद्रनी अष्टवर्गशुद्धि जोवी के जेथी करीने तेओ (गुरु, सूर्य अने चंद्र) चोथे, आठमे के बारमे स्थाने रह्या होय तोपण रेखाना अधिकपणा थकी सारी शुद्धि थाय."

"समशुद्धिरपि श्रेष्ठा शुद्धिपतेर्यदि जवेच्छुजा रेखा ।
शुद्धीशस्य न रेखा यदा तदा षड्विधादिवीर्यवतः ॥ ६ ॥"

"जो शुद्धि (लग्नशुद्धि)ना स्वामीनी रेखा शुज होय तो समान शुद्धि पण श्रेष्ठ छे, अने ज्यारे शुद्धिना स्वामीनी रेखा शुज न होय तो छ प्रकारादिक वीर्य थकी शुज जाणवी."

"मित्रग्रहस्य रेखा समरेखां शुद्धिमुत्तमां कुरुते ।
तामन्तरेण मुनिजिर्न ह्यधिकाऽपि प्रशस्यते रेखा ॥ ७ ॥"

"मित्रग्रहनी रेखा समरेखावाळी शुद्धीशनी शुद्धिने उत्तम करे छे, ते (मित्रग्रहनी रेखा) विना बीजी अधिक रेखाने पण मुनिओए वखाणी नथी, एटले के मित्रग्रहनी रेखाज प्रशंसा योग्य छे."

---

१ विमर्श पांचमो श्लोक ३६ थी जुओ.

"समशुद्ध्यामष्टकतः शुद्धिपते रेखिकामृते वेधात् ।
शुभदे ग्रहे सति शुभा शुद्धिः स्यात्प्रोच्यते विबुधैः ॥ ८ ॥"

"अष्टकथी समशुद्धिने विषे शुद्धिपतिनी रेखा न आवती होय अने वेधथी शुभदायक ग्रह आवतो होय तो ते पण पंडितोए शुभ शुद्धि कही छे."

"नवमद्विपञ्चमगतः समरेखोऽप्यधिकशुभफलः सूर्यः ।
संक्रमकालेन्दुबलात् समोऽपि सर्वत्र शुभदोऽर्कः ॥ ९ ॥"

"नवमा, बीजा अने पांचमा स्थानमां रहेलो समान रेखावाळो पण सूर्य अधिक शुभ फळ देनारो छे, अने संक्रांतिने वखते चंद्रना बळथी समान एवो पण सूर्य सर्वत्र शुभने देनारो छे."

"दशमादूर्ध्वं केवललग्नबलेन स्त्रिया विवाहः स्यात् ।
शुद्धिर्नैवालोक्या रवीज्ययोः पूजयोद्वाहः ॥ १० ॥"

"दश वर्षनी वय थया पछी कन्याना विवाह मात्र लग्ननाज बळथी थाय छे. तेमां सूर्य तथा गुरुनी शुद्धि जोवानीज नथी, परंतु ते सूर्य अने गुरु अशुद्ध होय तो तेमनी पूजावडे विवाह करवो. अर्थात् तेनी पूजा करवाथी दोषनो नाश थाय छे." आ सर्व व्यवहारप्रकाशमां कहेलुं छे.

वळी व्यवहारसारमां आ प्रमाणे कह्युं छे—

"जन्मद्विपञ्चनवमद्युनगः खरांशुः, पूजां च वाञ्छति न चाष्टचतुर्व्ययस्थः ।
जीवस्त्रिजन्मदशमारिगतस्तु पूजामिच्छेत् कदाचिदपि नाष्टचतुर्व्ययस्थः ॥ १ ॥"

"सूर्य पहेले, बीजे, पांचमे, नवमे अने सातमे स्थाने रह्यो होय तो ते पूजाने चाहे छे, एटले के पूजा करवाथी तेनी शुद्धि थाय छे, परंतु आठमे, चोथे के बारमे स्थाने रह्यो होय तो ते पूजाने चाहतो नथी, एटले के ते स्थानो अत्यंत अशुभ होवाथी तेनी पूजा करवाथी पण ते अनुकूळ थतो नथी. तेज प्रमाणे गुरु त्रीजे, पहेले, दशमे अने छठे स्थाने रह्यो होय तो ते पूजाने इच्छे छे, पण आठमे, चोथे के बारमे स्थाने रह्यो होय तो ते कदापि पूजाने इच्छतो नथी."

परंतु गर्गाचार्य तो एम कहे छे के—"गोचरविरुद्धे जीवे वैधव्यमेव, पूजा त्वप्रमाणम्" "जो गुरु गोचरवडे करीने विरुद्ध होय तो ते कन्याने विधवापणुंज थाय छे, अने तेनी जे पूजा करवी ते तो अप्रमाण छे."

हवे अवशेष रहेली मासशुद्धि, दिनशुद्धि अने नक्षत्रशुद्धि एक श्लोके करीने कहे छे.—

ज्येष्ठापत्यस्य न ज्येष्ठे मासि स्यात् पाणिपीडनम् ।
न पुनस्त्रयमप्येतन्मासाहर्भेषु जन्मनः ॥ ६ ॥

अर्थ—मोटा पुत्र-पुत्रीनुं पाणिग्रहण ज्येष्ठ मासमां करवुं नहीं, तथा आ त्रणे कार्यो जन्मना मासमां, जन्मना दिवसमां (तिथिमां) अने जन्मना नक्षत्रमां करवां नहीं.

विवेचन—मूळ श्लोकमां "ज्येष्ठ अपत्य" कह्यो छे, तेथी पुत्र तथा पुत्री बन्ने समजवां. "पाणिपीडन" (पाणिग्रहण) ए शब्दनुं उपलक्षण होवाथी बीजां शुभ कार्यो पण जाणवां. ते विषे हर्षप्रकाशमां कह्युं छे के—"सुहकज्जे वज्जे सव्वहिं पि जिट्ठस्स जिट्ठ ति" "सर्व शुभ कार्यमां ज्येष्ठ (मोटा) अपत्य (पुत्र-पुत्री)ने ज्येष्ठ मास वर्जवो." तथा—

"जेष्ठे न ज्येष्ठयोः कार्यं नृनार्योः पाणिपीडनम् ।
तयोरेकतमे(रे) ज्येष्ठे ज्येष्ठोऽपि न विरुध्यते ॥ १ ॥"

"ज्येष्ठ पुरुष अने नारी (वर-कन्या) नुं पाणिग्रहण ज्येष्ठ मासमां करवुं नहीं, परंतु ते वर कन्यामांथी जो एक ज्येष्ठ होय तो ज्येष्ठ मास पण विरुद्ध (अशुभ) नथी."

मूळ श्लोकमां त्रणे कार्यो कह्यां छे ते दीक्षा १, प्रतिष्ठा २ अने विवाह ३ समजवां. तथा "मासाहर्क्षेषु" एटले जन्म संबंधी मास, दिवस (तिथि) अने नक्षत्रने विषे विवाह विगेरे वर्जवा. अहीं विवाहमां वर कन्याना, दीक्षामां शिष्यना अने प्रतिष्ठामां स्थापकना मासादिक वर्जवा एम स्वयं जाणी लेवुं. केटलाएक कहे छे के—"जो पक्ष (पखवाडीयुं) जूदो होय तो जन्ममास पण विरुद्ध नथी. जन्मतिथि पण दिवस अने रात्रिना विभागना विपर्यासे करीने अविरुद्ध छे. (एटले के जो (तिथिनी) रात्रीए जन्म होय तो दिवस विरुद्ध नथी, अने दिवसे जन्म होय तो रात्रि विरुद्ध नथी.) जन्मनक्षत्र पण राशिनुं भिन्नपणुं होय तो ते शुभज छे, एटले अशुभ (विरुद्ध) नथी. (जेमके कृत्तिकाना पहेला पादमां जन्म होय तो ते मेष राशि छे, माटे कृत्तिकाना बीजा, त्रीजा के चोथा पादमां वृष राशि होवाथी ते त्रण पाद शुभ छे.) आ त्रणे बाबत विषे व्यवहारसारमां कह्युं छे के—

"जन्ममासि विपरीतपक्षयोर्व्यत्यये दिननिशोर्जनुस्तिथौ ।
जन्मभेऽपि किल राशिभेदतः, पाणिपीडनविधिर्न दुष्यति ॥ १ ॥"

"जन्ममासमां जो विपरीत (भिन्न) पक्ष होय, जन्मनी स्थितिमां जो दिवस रात्रिनो विपर्यय (उलटपालट) होय अने जन्मनक्षत्रमां पण जो राशिनो भेद होय तो पाणिग्रहणनो विधि दूषण पामतो नथी."

अथवा तो एक (समान) पक्षमां पण आ रीते जन्ममास पण विरुद्ध नथी—शुक्ल पंचमीने रोज कार्य करवानी इच्छा छे, अने शुक्ल अष्टमी जन्मतिथि छे. आ प्रमाणे होय तो दोष नथी, कारण के ते पुरुषनो जन्ममास शुक्ल अष्टमीथी शरु थाय छे, तेथी शुक्ल पंचमी तत्त्वथी भिन्न मासमांज रहेली गणाय, पण जो आथी विपरीत होय (एटले के

शुक्ल पंचमीनो जन्म होय अने शुक्ल अष्टमीए कार्य करवुं होय) तो जन्ममासनो दोष लागेज छे. आ प्रमाणे ज्योतिषना विद्वानो कहे छे. व्यवहारप्रकाशमां तो आ प्रमाणे कह्युं छे—"शुभ (सौम्य) ग्रह बळवान् थइने केन्द्रस्थानमां रह्यो होय तो जन्मनक्षत्र पण दूषित नथी. ते विषे कह्युं छे के—"नो जन्मभं च कार्यं बलिनि शुभं केन्द्रगे सौम्ये" "सौम्य ग्रह बळवान् थइने केन्द्रमां रह्यो होय तो शुभ कार्य करवुं. तेमां जन्म-नक्षत्रनो दोष नथी."

हवे दिनशुद्धिने जूदी कहे छे.—

सादिमं ग्रहणस्याहः सप्ताहं च तदग्रतः ।
त्यजेत्त्रिंशांशमेकैकं प्राक् पश्चाच्चापि संक्रमात् ॥ ७ ॥

अर्थ—आदिना दिवस सहित ग्रहणनो दिवस तथा तेनी पछीना सात एम नव दिवसो वर्जवा. तेमज संक्रांतिनी पहेलानो तथा पछीनो एक एक त्रिंशांश तजवो. अर्थात् कुल त्रण दिवस वर्जवा.

विस्तरार्थ—आदि सहित एटले चतुर्दशी सहित. केटलाएक त्रयोदशीने पण वर्जे छे. तेओ कहे छे के—

"त्रयोदशीतो दशाहं सूर्येन्दुग्रहणे त्यजेत् ।"

"सूर्य अने चंद्रना ग्रहणमां त्रयोदशीथी आरंभीने दश दिवस वर्जवा." ग्रहणनी पछीना सात दिवस वर्जवाना कह्या छे, तोपण तेमां आ प्रमाणे विशेष जाणवो.—

"सर्वग्रस्तेषु सप्ताहं पञ्चाहं स्यादलग्रहे ।
त्रिद्व्येकार्धाङ्गुलग्रासे दिनत्रयं विवर्जयेत् ॥ १ ॥"

"ग्रहणमां सर्व ग्रास (खग्रास) थयो होय तो पछीना सात दिवसो तजवा, अर्ध ग्रास थयो होय तो पांच दिवस तजवा, तथा त्रण, बे, एक के अर्ध आंगळ ग्रास थयो होय तो त्रण दिवस वर्जवा." आ अंगिरानुं वचन छे.

वळी दैवज्ञवल्लभमां आ प्रमाणे विशेष कह्यो छे.—

"राहौ दृष्टे शुभं कर्म वर्जयेद्दिवसाष्टकम् ।
त्यक्त्वा वेतालसंसिद्धिं पापदंभमयं (भयदं) तथा ॥ १ ॥"

"राहुनुं दर्शन थाय त्यारथी आठ दिवस सुधी शुभ कर्म वर्जवुं जोइए, परंतु वेताल (भूत-प्रेतादिक)नुं साधन तथा पाप अने दंभमय एवुं अशुभ कर्म (अथवा पाप देनारुं अने भय देनारुं अशुभ कर्म)विना, एटले के तेवां कर्ममां वर्जवाना नथी.

१ पापदं भयदं पाठांतर.

मूळ श्लोकमां त्रिंशांश एटले संक्रांतिना मासनो त्रीशमो भाग एटले सामान्ये करीने एक दिवस. संक्रांतिना दिवसनी पहेलानो अने पछीनो एक एक दिवस तथा संक्रांतिनो दिवस एम त्रण दिवस वर्जवा. ते विषे हरिभद्रसूरि पण कहे छे के—

"संकंतीए पुव्वं संकंतिदिणं तयग्गिमं च दिणं ।
वज्जिज्जंति०"

"संक्रांतिनो पूर्व दिवस, संक्रांतिनो दिवस अने तेनी पछीनो दिवस वर्जवो." नारचंद्रमां पण कह्युं छे के—

"त्यज संक्रमवासरं पुनः सह पूर्वेण च पश्चिमेन च ।"

"पूर्वना अने पछीना दिवस सहित संक्रांतिनो दिवस तुं तज."

"अत्यंत आवश्यक तथा उतावळना कार्यमां जो त्रण दिवसनो त्याग न थइ शके तो संक्रमणसमयनी पूर्वनी अने पछीनी सोळ सोळ घमीओ अवश्य तजवी" एम घणा आचार्योनो मत छे.

भद्रार्धयामगण्डान्तकुलिकोत्पातदूषितम् ।
दिनं तपसि राकां च स्थापने च कुजं त्यजेत् ॥ ७ ॥

अर्थ—भद्रा, अर्ध प्रहर, गंमांत, कुलिक अने उत्पाते करीने दूषित एवा दिवसनो त्याग करवो, तथा दीक्षामां पूर्णिमानो त्याग करवो, अने प्रतिष्ठामां मंगळवारनो त्याग करवो.

विवेचन—भद्रा विगेरे असाध्य दोषोए करीने लग्न पण हणाय छे एटले दूषित थाय छे. ते विषे विवाहवृंदावनमां कह्युं छे के—

"गंमान्तेषु सवैधृताबुभयतः संक्रान्तियामद्वये,
यामार्धव्यतिपातविष्टिकुलिकैर्भग्नं विलग्नं जगुः ।"

"अर्ध प्रहर, व्यतिपात, विष्टि (भद्रा) अने कुलिके करीने सहित लग्नने तथा गंमांतमां, वैधृतिमां अने संक्रांतिना पूर्वना अने पछीना बे पहोरमां रहेल लग्नने भग्न (नाश) कहे छे."

मूळ श्लोकमां उत्पात लख्यो छे ते पूर्वे वर्णन करेला पृथ्वी संबंधी विगेरे उत्पातो जाणवा. सारंग तो उत्पातमां पांच दिवस तजवानुं कहे छे. ते आ प्रमाणे—

"निर्घातोल्कामहीकंपग्रहभेदादिदर्शने ।
आ पञ्चवासरादूढा नाशमाप्नोति कन्यका ॥ १ ॥"

"निर्घात, उल्कापात, पृथ्वीकंप अने ग्रहनो भेद ए विगेरे उत्पातो जोवामां आवे त्यारथी पांच दिवस सुधीमां जो कन्या विवाहित थइ होय तो ते मृत्यु पामे छे." तथा—

"दम्पत्योः सह मरणं पाणिग्रहणोदिते केतौ ।"

"पाणिग्रहणने दिवस जो केतुनो उदय होय तो वर वहुनुं साथेज मरण थाय."

दीक्षामां पूर्णिमा तजवानुं मूळ श्लोकमां कह्युं छे, पण प्रतिष्ठामां तेनो त्याग नथी. तेने माटे नारचंद्रमां कह्युं छे के—

"त्र्येकद्वितीयपञ्चमदिनानि पक्षद्वयेऽपि शस्तानि ।
शुक्लेऽन्तिमत्रयोदशदशमान्यपि च प्रतिष्ठायाम् ॥ १ ॥"

"प्रतिष्ठामां बन्ने पक्षनी त्रीज, एकम, बीज अने पांचम एटला दिवसो शुभ छे, तथा शुक्ल पक्षनी छेल्ली (पूर्णिमा), तेरश अने दशम पण शुभ छे."

मूळ श्लोकमां स्थापने एटले सर्व प्रतिष्ठामां मंगळवार वर्ज्य छे. ते विषे रत्नमालामां कह्युं छे के—

"तेजस्विनी १ क्षेमकृ २ दग्निदाहविधायिनी ३ स्याद्वरदा ४ दृढा च ५ ।
आनन्दकृ ६ त्कल्पनिवासिनी ७ च, सूर्यादिवारेषु भवेत् प्रतिष्ठा ॥ १ ॥"

"रविवारे प्रतिष्ठा करवाथी प्रतिमानुं तथा प्रतिष्ठा करावनारनुं तेज वृद्धि पामे छे. सोमवारे करेली प्रतिष्ठा क्षेम कुशळ करनारी थाय छे, मंगळवारे करवाथी अग्निदाह करनारी थाय छे, बुधवारे वर (मनवांछित)ने आपनारी थाय छे, गुरुवारे दृढ थाय छे, शुक्रवारे आनंद करनारी थाय छे अने शनिवारे करेली प्रतिष्ठा कल्प पर्यंत एटले चंद्र सूर्य रहे त्यांसुधी स्थिर रहेनारी थाय छे. रवि विगेरेना लग्नमां तथा षड्वर्गमां पण प्रतिष्ठा करी होय तोपण तेनुं फळ आज प्रमाणे जाणी लेवुं एम रत्नमालाना भाष्यमां कह्युं छे."

मूळ श्लोकमां "स्थापने च" ए स्थळे च शब्द छे माटे दीक्षा, विवाह अने राज्याभिषेक विगेरे कार्योमां पण मंगळवारनो त्याग करवो. ते विषे यतिवल्लभमां कह्युं छे के—

"राजाभिषेके वीवाहे सत्क्रियासु च दीक्षणे ।
धर्मार्थकामकार्ये च शुभा वाराः कुजं विना ॥ १ ॥"

"राजाना अभिषेकमां, विवाहमां, शुभ क्रियामां, दीक्षामां तथा धर्म, अर्थ अने कामना कार्यमां मंगळ सिवायना बीजा वारो शुभ छे."

श्रीपतिए तो "विवाहमां रवि, मंगळ अने शनिवार दारिद्र्य तथा दौर्भाग्यने देनारा छे, अने सोमवार सपत्नी (शोक)ने आपनार छे" एम कह्युं छे. दैवज्ञवल्लभमां आ प्रमाणे विशेष कह्यो छे.—

"कृष्णपक्षे निषिद्धेषु वारधिष्ण्यक्षणादिषु ।
संकीर्णानां प्रशंसन्ति दारकर्म न संशयः ॥ १ ॥"

"संकर जातिना वर कन्यानो विवाह कृष्ण पक्षमां अने निषेध करेला वार, नक्षत्र तथा क्षणादिकमां शुभ छे, तेमां कांइ संशय नथी."

हवे नक्षत्रनो नियम कहे छे.—

उद्वाहे मृगपैत्रर्क्षे प्रतिष्ठायां तु ते उभे ।
आदित्यपुष्यश्रवणधनिष्ठाभिः समं शुभे ॥ ९ ॥

अर्थ—विवाहमां मृगशीर्ष अने मघा ए बे नक्षत्रो शुभ छे, अने प्रतिष्ठामां पुनर्वसु, पुष्य, श्रवण अने धनिष्ठा सहित ते बे एटले मृगशीर्ष अने मघा पण शुभ छे, एटले के आ छ नक्षत्रो शुभ छे.

विवेचन—अहीं प्रतिष्ठा एटले प्रस्तावथी जिनबिंब विगेरेनी प्रतिष्ठा जाणवी. बीजा देवोनी प्रतिष्ठामां तो नक्षत्रोनो नियम रत्नमालामां आ प्रमाणे कह्यो छे.—

"रोहिण्युत्तरपौष्णवैष्णवकरादित्याश्विनीवासवा-
नुराधैन्दवजीवभेषु गदितं विष्णोः प्रतिष्ठापनम् ।
पुष्यश्रुत्यभिजित्सु चेश्वरकयोर्वित्ताधिपस्कन्दयो-
र्मैत्रे तिग्मरुचेः करे निर्ऋतिभे दुर्गादिकानां शुभम् ॥ १ ॥"

"विष्णुनी प्रतिष्ठा रोहिणी, त्रणे उत्तरा, रेवती, श्रवण, हस्त, पुनर्वसु, अश्विनी, धनिष्ठा, अनुराधा, मृगशीर्ष तथा पुष्य, आटलां नक्षत्रोमां शुभ कहेली छे. महादेव अने ब्रह्मानी प्रतिष्ठा पुष्य, श्रवण अने अभिजित् नक्षत्रमां शुभ छे. कुबेर अने कार्तिकस्वामीनी प्रतिष्ठा अनुराधामां शुभ छे. सूर्यनी प्रतिष्ठा हस्त नक्षत्रमां शुभ छे, तथा दुर्गा विगेरे देवताओनी प्रतिष्ठा मूळ नक्षत्रमां शुभ छे." अहीं सूर्यनी प्रतिष्ठा हस्त नक्षत्रमां कही ते संक्षेपथी कह्युं छे. ते विषे भीमपराक्रम ग्रंथमां विस्तारथी आ प्रमाणे कह्युं छे.—

"भगधिष्ण्यचतुष्केण मैत्राहिर्बुध्नपूषभैः ।
सपुनर्वसुभिः कुर्यात् प्रतिष्ठामुष्णरोचिषः ॥ १ ॥"

"भग नक्षत्रथी चार एटले पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त अने चित्रा, तथा पुनर्वसु सहित अनुराधा, उत्तराभाद्रपद अने रेवती, आ आठ नक्षत्रोमां सूर्यनी प्रतिष्ठा करवी." उपरना श्लोकमां दुर्गादिकानां ए पदमां आदि शब्द होवाथी भूत, यक्ष, गण अने सर्प विगेरेनी प्रतिष्ठा पण मूळ नक्षत्रमां करवी. तथा—

"गणपरिवृढरक्षोयक्षभूतासुराणां, प्रथमफणिसरस्वत्यादिकानां च पौष्णे ।
श्रवसि सुगतनाम्नो वासवे लोकपानां, निगदितमखिलानां स्थापनं च स्थिरेषु॥ २ ॥"

"गण, परिवृढ, राक्षस, यक्ष, भूत, असुर, शेषनाग अने सरस्वती विगेरेनी प्रतिष्ठा रेवती नक्षत्रमां करवी. सुगत (बौद्ध)नी प्रतिष्ठा श्रवण नक्षत्रमां करवी, लोकपाळोनी प्रतिष्ठा धनिष्ठामां करवी, अने बीजा समग्र इंद्रादिक देवोनी स्थापना स्थिर (रोहिणी, उत्तराषाढा, उत्तराफाल्गुनी अने उत्तराभाद्रपद) नक्षत्रोमां करवी." तथा—

"सप्तर्षयो यत्र चरन्ति धिष्ण्ये, कार्या प्रतिष्ठा खलु तत्र तेषाम् ।
श्रीव्यासवाल्मीकिघटोद्भवानां, तथा स्मृता वाक्पतिभे ग्रहाणाम् ॥ ३ ॥"

"सप्तर्षिओ जे नक्षत्रमां चालता होय तेज नक्षत्रमां तेमनी प्रतिष्ठा करवी, तथा श्रीव्यास, वाल्मीकि अने अगस्त्यनी प्रतिष्ठा पण तेज नक्षत्रमां एटले जे नक्षत्रमां सप्तर्षि होय तेमांज करवी, तथा ग्रहोनी प्रतिष्ठा पुष्य नक्षत्रमां अने पोतपोताना वारमां करवी." अहीं सप्तर्षिओ जे नक्षत्रमां चाले छे एम कह्युं तेनो भावार्थ आ प्रमाणे छे.—

"आसन्मघासु मुनयः शासति राज्यं युधिष्ठिरे नृपतौ ।
षड्द्विकपञ्चद्वि २५२६ मितः शककालस्तस्य राज्ञश्च ॥ १ ॥
एकैकस्मिन् धिष्ण्ये शतं शतं ते चरन्ति वर्षाणाम् ।
प्रागुत्तरतश्चैते सदोदयन्ते ससाध्वीकाः ॥ २ ॥"

"युधिष्ठिर राजा राज्य करता हता त्यारे सप्तर्षिओ मघा नक्षत्रमां हता. ते राजाना शकनो काळ २५२६ वर्षनो हतो, एटले के ते राजानी पछी २५२६ वर्ष गयां त्यारे शालिवाहननो शक प्रवर्त्यो. हवे ते सप्तर्षिओ सो सो वर्षे एक एक नक्षत्रमां चाले छे, एटले के एक नक्षत्रमां तेओनी सो वर्ष सुधी स्थिति छे, तेथी करीने शकना प्रारंभे तेओ पुष्य नक्षत्रमां हता एम सिद्ध थयुं. ए सप्तर्षिओ अरुंधती सहित निरंतर ईशानमां उदय पामे छे." आ सप्तर्षिओना उदयनी व्यवस्था आ प्रमाणे छे.—

"पूर्वे भागे भगवान्मरीचिरपरे स्थितो वशिष्ठोऽस्मात् ।
तस्याङ्गिरास्ततोऽत्रिस्तस्यासन्नः पुलस्त्यश्च ॥ १ ॥
पुलहः क्रतुरिति भगवानासन्नानुक्रमेण पूर्वाद्याः ।
तत्र वशिष्ठं मुनिवरमुपस्थिताऽरुन्धती साध्वी ॥ २ ॥"

"पूर्व भागे भगवान् मरीचि रहेला छे, तथा पश्चिम भागे वशिष्ठ रहेला छे, तेनी समीपे अंगिरा, तेनी समीपे अत्रि, तेनी समीपे पुलस्त्य, तेनी समीपे पुलह अने तेनी समीपे भगवान् क्रतु रहेला छे. आ प्रमाणे समीपना अनुक्रमे करीने पूर्व पश्चिम भागे तेओ रहेला छे. तेमां वशिष्ठ मुनिवरनी समीपे साध्वी (सती) अरुंधती रहेली छे." आ सप्तर्षिनुं स्वरूप वराहसंहितामां कहेलुं छे. तथा—

"स्वतिथिक्षणनक्षत्रकरणेषु न्यसेत्सुरान् ।
वापीकूपतडागाद्यं न्यसेद्वरुणदैवते ॥ १ ॥
अहिर्बुध्नाधिपे लेप्यमारामाद्यं तथाऽनिले ।
गृहस्थापनयोगा ये तानप्यत्र विचिन्तयेत् ॥ २ ॥"

"देवोने पोतानी तिथि, क्षण, नक्षत्र अने करणमां स्थापन करवा, वाव, कूवा, तळाव विगेरेने शतभिषक् नक्षत्रमां स्थापन करवा, लेप्य मूर्तिने उत्तराभाद्रपदमां स्थापन करवी, बगीचा विगेरेने स्वाति नक्षत्रमां स्थापन करवा, तेमज घरने स्थापन करवामां जे

योगो कह्या छे ते पण अहीं विचारवा." आ प्रमाणे दैवज्ञवल्लभमां कह्युं छे. आ अन्य देवो विगेरेनी प्रतिष्ठा विगेरेनुं स्वरूप ज्योतिषना विद्वानोने संमत छे, माटे प्रसंगने लीधे लख्युं छे.

दीक्षायां त्वाश्विनादित्यवारुणश्रुतयः शुभाः ।
त्रिषु मैत्रं करं स्वातिर्मूलः पौष्णं ध्रुवाणि च ॥ १० ॥

अर्थ—अश्विनी, पुनर्वसु, शतभिषक् अने श्रवण, ए नक्षत्रो दीक्षामां शुभ छे. अनुराधा, हस्त, स्वाति, मूळ, रेवती अने ध्रुव (रोहिणी अने त्रणे उत्तरा),ए नक्षत्रो त्रणेमां एटले प्रतिष्ठा, दीक्षा अने विवाहमां शुभ छे.

विस्तरार्थ—दिनशुद्धि विगेरे ग्रंथमां पूर्वभाद्रपद अने पुष्यमां पण दीक्षा कही छे. कह्युं छे के—

"उत्तररोहिणिहत्थाणुराहसयभिसयपुव्वभद्दवया ।
पुस्सं पुणव्वसुरेवइ मूलास्सिणि सवणसाइ वए ॥ १ ॥"

"त्रणे उत्तरा, रोहिणी, हस्त, अनुराधा, शतभिषक्, पूर्वभाद्रपद, पुष्य, पुनर्वसु, रेवती, मूळ, अश्विनी, श्रवण अने स्वाति, आटलां नक्षत्रो व्रत (दीक्षा)मां शुभ छे." तथा—

"मृगचित्राधनिष्ठान्यमृदुक्षिप्रचरध्रुवैः ।
शिष्यस्य दीक्षणं कार्यं तथा मूलाजपादयोः ॥ १ ॥"

"मृगशिर, चित्रा, धनिष्ठा विना, मृदु, क्षिप्र, चर अने ध्रुव संज्ञावाळां नक्षत्रोमां यथा-मृदु (अनुराधा, रेवती), क्षिप्र (पुष्य, अभिजित्, हस्त, अश्विनी), चर (श्रवण, स्वाति, पुनर्वसु), ध्रुव (रोहिणी, त्रण उत्तरा) तथा मूळ अने पूर्वभाद्रपद, ए नक्षत्रोमां शिष्यने दीक्षा आपवी."

मूळ श्लोकमां त्रिषु लख्युं छे तेनो अर्थ प्रतिष्ठा, दीक्षा अने विवाह ए त्रणे कार्यो जाणवां. ते त्रणे कार्योनां नक्षत्रोनी स्थापना आ प्रमाणे—

जैनप्रतिष्ठा	रो०	मृ०	पु०	पु०	म०	उ० फा०	ह०	स्वा०	अनु०	मू०	उ० षा०	श्र०	ध०	उ० भा०	रे०
दीक्षा	अ०	रो०	पुन०	उ० फा०	ह०	स्वा०	अनु०	मू०	उ० षा०	श्र०	श०	उ० भा०	रे०	०	०
विवाह	रो०	मृ०	म०	उ० फा०	ह०	स्वा०	अनु०	मू०	उ० षा०	उ० भा०	रे०	०	०	०	०

विवाहनां नक्षत्रोमां विशेष कहे छे.—

स्त्रियः प्रियत्वमुद्वाहे मूलाहिर्बुध्नवैश्वभैः ।
पौष्णब्राह्ममृगैः पुंसां मिथः शेषैस्तु पञ्चभिः ॥ ११ ॥

अर्थ—मूळ, उत्तराभाद्रपद के उत्तराषाढा नक्षत्रमां विवाह थया होय तो स्त्रीनुं प्रियपणुं थाय छे, रेवती, रोहिणी अने मृगशिरमां विवाह थया होय तो पुरुषनुं प्रियपणुं थाय छे, तथा बाकीनां पांच नक्षत्रोमां विवाह थया होय तो बन्नेनुं परस्पर प्रियपणुं थाय छे.

विस्तरार्थ—स्त्रीनुं प्रियपणुं एटले के पुरुषने स्त्री जेटली वहाली लागे तेटलो पुरुष स्त्रीने वहालो न लागे, अर्थात् स्त्रीनुं सारुं सौभाग्य होय. आ मूळ विगेरे त्रण नक्षत्रो पूर्वे नक्षत्रना अधिकारमां चंद्रनी साथे उत्तरार्धना योगवाळां कह्यां छे. पुरुषनुं प्रियपणुं थाय छे एटले स्त्रीने पुरुष वहालो लागे छे, पण पुरुषने स्त्री तेवी वहाली लागती नथी, अर्थात् स्त्रीनुं तेवुं सौभाग्य न होय. आ रेवती विगेरे त्रण नक्षत्रो पूर्वार्धना योगवाळां नक्षत्रोमां गणाव्यां छे. बाकीनां पांच एटले मघा, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, स्वाति अने अनुराधा, आ पांच नक्षत्रो मध्यम योगवाळां कह्यां छे. आ अगीयार नक्षत्रोज विवाहनां होवाथी बाकीनां नक्षत्रो अहीं गणाव्यां नथी. वळी दैवज्ञवल्लभमां कह्युं छे के—

"वल्लभः स्यान्नरो नार्या बलिभिः पुरुषग्रहैः ।
स्त्रीग्रहैः पुरुषस्य स्त्री सर्वैः प्रेमोभयोरपि ॥ १ ॥"

"विवाहना लग्नमां पुरुषना ग्रहो बळवान् होय तो स्त्रीने पुरुष वधारे प्रिय लागे, अने स्त्रीना ग्रहो बळवान् होय तो पुरुषने स्त्री वधारे प्रिय लागे, तथा बन्नेना ग्रहो बळवान् होय तो परस्पर प्रेम रहे."

वर्णकाद्यं विवाहर्क्षे कुमार्या वरणं पुनः ।
स्वातिपूर्वानुराधाभिर्वैश्वत्रयहुताशभैः ॥ १२ ॥

अर्थ—वर्णक विगेरे कार्य विवाहनां नक्षत्रमां करवां, अने कुमारीनुं वरण (वेसवाळ) स्वाति, त्रण पूर्वा, अनुराधा, वैश्वत्रय (उत्तराषाढा, श्रवण अने धनिष्ठा) तथा कृत्तिका नक्षत्रमां करवुं.

विस्तरार्थ—वर्णक एटले भींत विगेरे पर चित्रनुं कर्म करवुं ते, अथवा वर वहुनुं वर्णक नामनुं मंगळकर्म छे ते. वर्णकाद्यं ए पदमां आद्य शब्द लख्यो छे, तेथी नीचेना श्लोकमां कहेलां कुसुंभादिक सर्वे विवाहनां कार्यो विवाहनांज नक्षत्रोमां करवां.

लग्नादर्वाग्न कुर्वीत त्रिषष्ठनवमे दिने ।
कुसुंभमंडपारंभवेदीवर्णयवारकान् ॥ १३ ॥

अर्थ—लग्नना दिवसनी पहेलां त्रीजे, छठ्ठे के नवमे दिवसे कुसुंभ, मंडपनो आरंभ, वेदिका, वर्णक अने यवारक (जुवारा वाववा ते) तथा उपलक्षणथी कन्यानुं वरण आदिक कार्यो करवां नहीं.

नान्ये प्रतिष्ठां जन्मर्क्षे दशमे षोडशे च भे ।
अष्टादशे त्रयोविंशे पञ्चविंशे च मन्वते ॥ १४ ॥

अर्थ—केटलाक आचार्यो प्रतिष्ठा करवा लायक प्रतिमा अने प्रतिष्ठा करावनार ए बन्नेना जन्मनक्षत्रमां जन्मनक्षत्रनुं ज्ञान न होय तो नामनक्षत्रमां तथा ते जन्मनक्षत्रथी दशमा, सोळमा, अढारमा, त्रेवीशमा अने पचीशमा नक्षत्रमां प्रतिष्ठाने मानता नथी (प्रतिष्ठा करवानी संमति आपता नथी).

श्रीहरिभद्रसूरि तो आ प्रमाणे कहे छे.—

"कारावयस्स जम्मण रिक्खं दस सोलसं तहट्ठारं
तेवीस पंचवीसं बिंबपइट्ठाइ वज्जिज्जा ॥ १ ॥"

"प्रतिष्ठा करावनारनुं जन्मनक्षत्र तथा ते जन्मनक्षत्रथी दशमुं, सोळमुं, अढारमुं, त्रेवीशमुं अने पचीशमुं, एटलां नक्षत्रो बिंबनी प्रतिष्ठामां तजवां." (अर्थात् बिंबनां जन्मादिक नक्षत्रो तजवानां कह्यां नथी.)

विशेषमां आ नक्षत्रोनी संज्ञा आ प्रमाणे छे.—

"जन्माद्यं दशमं कर्म संघातं षोडशं पुनः ।
अष्टादशं समुदयं त्रयोविंशं विनाशभम् ॥ १ ॥
मानसं पञ्चविंशं भमिति षड्भोऽखिलः पुमान् ।
जातिदेशाभिषेकैश्च नव धिष्ण्यानि भूपतेः ॥ २ ॥"

"पहेलुं नक्षत्र जन्म नामनुं छे, दशमुं कर्म नामनुं, सोळमुं संघात नामनुं, अढारमुं समुदय नामनुं, त्रेवीशमुं विनाश नामनुं अने पचीशमुं नक्षत्र मानस नामनुं छे. ए प्रमाणे समग्र पुरुष छ नक्षत्रवाळो छे. तथा जातिनक्षत्र, देशनक्षत्र अने अभिषेकनक्षत्रे करीने राजानां नव नक्षत्रो छे."

जातिनक्षत्रो आ प्रमाणे छे.—

"विप्राणांकृत्तिकापूर्वा३ राज्ञां पुष्यस्तथोत्तराः ३ ।
सेवकानां धनिष्ठैन्द्रचित्रामृगशिरांसि च ॥ १ ॥
उग्राणां भानि वायव्यमूलार्द्राशततारकाः ।
कर्षकाणां मघाः पौष्णमनुराधा विरञ्चिभम् ॥ २ ॥
वणिजामश्विनी हस्तोऽभिजिता (दा) दित्यमेव च ।
चण्डालानां श्रुतिः सार्पं यमदेवं द्विदैवतम् ॥ ३ ॥"

"ब्राह्मण जातिनां नक्षत्रो कृत्तिका तथा त्रण पूर्वा छे, राजाओनां पुष्य तथा त्रण उत्तरा छे, सेवक जातिनां धनिष्ठा, ज्येष्ठा, चित्रा अने मृगशिर छे, उग्र जातिनां स्वाति,

मूळ, आर्द्रा अने शततारका छे, कर्षक (खेडुत) जातिनां मघा, रेवती, अनुराधा अने रोहिणी छे, वणिक् जातिनां अश्विनी, हस्त, अभिजित् अने पुनर्वसु छे, तथा चंडाळ जातिनां श्रवण, अश्लेषा, भरणी अने विशाखा छे."

देशनक्षत्रो पद्मचक्रमां आप्यां छे ते जाणवां, अने राज्याभिषेकनुं जे नक्षत्र ते अभिषेकनक्षत्र जाणवुं. (ते विषे आगळ ७६ मा श्लोकमां कहेशे.)

अहीं कोइ शंका करे के—"जन्मनक्षत्रादिकनो त्याग शामाटे करवो ?" तेनो जवाब कहे छे—"प्राये करीने नक्षत्रो क्रूर ग्रहादिकवडे पीडाय छे, माटे जो इष्ट पुरुषनां जन्मनक्षत्रादिक प्रतिष्ठादिक कार्यने विषे लेवामां आवे तो ते (जन्मनक्षत्रादिक) क्रूर ग्रहादिकवडे पीडा पामवाथी ते पुरुषनुं अनिष्ट थाय छे, अने जो ते (जन्मनक्षत्रादिक) लेवामां न आवे तो ते नक्षत्र पीडा पाम्यां छतां पण अनिष्ट फळ देवामां समर्थ थतां नथी" एम शी रीते जाणवुं ? ए शंका पर जवाब आपे छे के—

"विलग्नस्थोऽष्टमो राशिर्जन्मलग्नात् सजन्मभात् ।
न शुभः सर्वकार्येषु लग्नाच्चन्द्रस्तथाष्टमः ॥ १ ॥"

"जन्मलग्नथी के जन्मनक्षत्रथी गणतां आठमो राशि जो लग्नमां रह्यो होय तो ते सर्व कार्योमां शुभ नथी, तथा लग्नथी आठमे स्थाने चंद्र होय तो ते पण शुभ नथी." इत्यादिक दैवज्ञवल्लभमां कह्युं छे.

जेम आवा प्रकारना लग्नादिक योगो घणीवार मळे छे, परंतु तेओ कांइ पण अनिष्ट फळ दइ शकता नथी, पण ज्यारे तेओ (योगो) यात्रादिकमां आवे छे त्यारे प्राये करीने अवश्य अनिष्ट फळ आपे छे. तेज प्रमाणे अहीं पण जाणवुं.

जन्मनक्षत्रादिक नवे नक्षत्रनी पीडा तथा तेमनुं फळ आ प्रमाणे कह्युं छे.—

"केत्वर्कार्किभिराक्रान्तं भौमवक्रभिदाहतम् ।
उल्काग्रहणदग्धं च नवधाऽपि न भं शुभम् ॥ १ ॥"

"केतु, सूर्य अने शनिए आक्रमण करेलुं नक्षत्र, मंगळे, वक्र ग्रहे अने भिदाए (भिन्न नक्षत्रे)हणेलुं नक्षत्र, तथा उल्कानुं नक्षत्र, ग्रहणनुं नक्षत्र अने दग्ध नक्षत्र, ए नव प्रकारनुं नक्षत्र शुभ नथी."(अर्थात् आ नक्षत्रो पीडा पामेलां—हणायेलां कहेवाय छे.)

"देहविनाशो जन्मर्क्षपीडने कर्मणश्च कर्मर्क्षे ।
उत्सवबांधवनाशौ समुदयसंघातयोर्हतयोः ॥ २ ॥"

"जन्मनक्षत्र पीडा पाम्युं होय तो शरीरनो नाश थाय, कर्मनक्षत्र पीडायुं होय तो कर्म (कार्य)नो नाश थाय, समुदयनक्षत्र हणायुं (पीडा पाम्युं)होय तो ओछवनो नाश थाय, अने संघातनक्षत्र हणायुं होय तो बंधुनो नाश थाय."

"स्वतनुविनाशो वैनाशिके हते मानसे मनस्तापः ।
कुलदेशस्त्रीनाशो जातिभदेशाभिषेकेषु ॥ ३ ॥"

"विनाशनक्षत्र हणायुं होय तो पोताना शरीरनो नाश थाय, मानसनक्षत्र हणायुं होय तो मनमां संताप (उद्वेग) थाय, जातिनक्षत्र हणायुं होय तो कुळनो नाश थाय, देशनक्षत्र हणायुं होय तो देशनो नाश थाय छे, अने अभिषेक-नक्षत्र नाश पाम्युं होय तो स्त्रीनो नाश थाय छे."

अभिषेकनक्षत्र तथा देशनक्षत्र आ प्रमाणे छे.—

"राज्याभिषेकदिवसेऽभिषेकधिष्ण्यं च देशनक्षत्रम् ।
पद्मविभागे ज्ञेयं प्रादक्षिण्येन भूमध्यात् ॥ ४ ॥"

"राज्याभिषेकने दिवसे जे नक्षत्र होय ते अभिषेकनक्षत्र जाणवुं, अने पृथ्वीना मध्य भागथी प्रदक्षिणाना क्रमे पद्मचक्रना विभागमां देशनक्षत्र जाणवुं." (एटले के पृथ्वीना मध्य भागथी जे दिशा के विदिशामां जे देश होय ते दिशा के विदिशामां पद्मचक्रने विषे जे नक्षत्रो होय ते देशनक्षत्रो जाणवां.)

पद्मचक्रनी स्थापनानी रीत आ प्रमाणे छे.—

"कर्णिकाष्टदलैराढ्ये पद्मे नाभौ दलेषु च ।
प्राच्यादिस्थेषु भानीह न्यस्याग्निभत्रयादितः ॥ ५ ॥"

"कर्णिका (नाभि) तथा आठ पांखडी सहित एक पद्म (कमळ) करवुं, तेनी नाभिने विषे तथा पूर्वादिकना अनुक्रमे रहेली पांखडीओने विषे कृत्तिकाथी आरंभीने त्रण त्रण नक्षत्रो मूकवां."

पद्मचक्र यंत्र.



"त्रितयैराग्नेय्याद्यैः क्रूरग्रहपीडितैः क्रमेण नृपाः ।
पाञ्चालो १ मागधिकः २ कालिंगश्च ३ क्षयं यान्ति ॥ ६ ॥
आवन्त्यो ४ ऽथानर्तो ५ मृत्युं चायाति सिन्धुसौवीरः ६ ।
राजा च हारहूरो ७ मद्रेशो ८ ऽन्यश्च कौणिन्दः ९ ॥ ७ ॥"

"कृत्तिकादिक त्रण नक्षत्रो जो क्रूर ग्रहवडे पीडायेल होय तो पांचाल देशनो राजा नाश पामे छे. १ एज प्रमाणे पूर्व दिशा विगेरेना अनुक्रमे रहेलां नक्षत्रो पीडायेलां होय तो अनुक्रमे मगध देशनो राजा २, कलिंगनो राजा ३, अवन्तीनो राजा ४, आनर्तनो राजा ५, सिंधुसौवीरनो राजा ६, हारहूरनो राजा ७, मद्र देशनो राजा ८, अने कोणिंद देशनो राजा ९, क्षय पामे छे." (एटले के पूर्व दिशामां रहेलां आर्द्रादिक त्रण नक्षत्रो पीडायां होय तो मगध देशनो राजा नाश पामे छे, अग्नि खूणामां रहेलां अश्लेषादिक त्रण नक्षत्रो पीडित होय तो कलिंग देशनो राजा क्षय पामे छे. ए रीते ईशान सुधी जाणवुं.) आ उपर कहेला देशो अनुक्रमे कर्णिका (नाभि)ने विषे तथा पूर्व, अग्नि, दक्षिण विगेरे आठ दिशाओनी पांखडीओने स्थाने रहेला छे, तेथी ते ते नक्षत्रो पीडायाथी ते ते देशना राजानो क्षय थाय छे. आ देशाधिपना नामनी गणतरी मात्र दिशानेज उद्देशीने करी छे, तेथी उपर प्रमाणे नव खंडवडे कल्पना करेली आ आखी पृथ्वीने विषे जे जे खंडमां जे जे देशो रहेला होय ते ते देशो (देशाधिपतिओ) ते ते नक्षत्रो पीडा पामवाथी पीडाय छे—नाश पामे छे एम जाणी लेवुं. नरपतिजयचर्यामां तो आ पद्मचक्रने ठेकाणे कूर्मस्थापना करीने पण आज भावार्थ वर्णव्यो छे. केटलाक आचार्यो जन्मनक्षत्रनीज जेम ओगणीशमुं आधान नक्षत्र पण क्रूर ग्रहवडे पीडा पाम्युं होय तो ते प्रवास आपनार होवाथी तेने वर्जे छे. आ सर्व हकीकत लल्ले रचेला रत्नकोशमां लखेली छे.

ग्रहनुं दुष्टपणुं होय तो नवांशे करीने शुद्ध एवुं पण लग्न अशुद्ध (अशुभ)ज छे, एम सप्तर्षिए कहेलुं होवाथी यथोक्त नक्षत्रोना दोषनो प्रकार कहे छे.—

क्रूरेण मुक्तमाक्रान्तं भोग्यं ग्रहणभं तथा ।
दुष्टं ग्रहोदयास्ताभ्यां ग्रहैर्भिन्नं च भं त्यजेत् ॥ १५ ॥

अर्थ—क्रूर ग्रहे मूकी दीधेलुं नक्षत्र, आक्रमण करेलुं नक्षत्र अने भोग्य नक्षत्र, तथा ग्रहणनुं नक्षत्र, ग्रहोना उदय अने अस्तवडे दोष पामेलुं नक्षत्र अने ग्रहोए भेदेलुं नक्षत्र, आटलां नक्षत्रो तजवा योग्य छे.

अहीं ग्रहनुं क्रूरपणुं स्वाभाविक जाणवुं, परंतु जेम क्षीणपणाए करीने चंद्रनुं क्रूरपणुं कह्युं छे अने पापग्रहनी साथे रहेवाथीज बुधनुं क्रूरपणुं कह्युं छे, एवुं उपाधिथी थयेलुं

क्रूरपणुं अहीं जाणवुं नहीं, तेथी अहीं ए भावार्थ थयो के जे नक्षत्र क्रूर एटले रवि, मंगळ, शनि अने राहुमांथी कोइ पण ग्रहे भोगवीने मूकी दीधेलुं होय ते नक्षत्र, तथा आक्रमण करेलुं एटले तेज क्रूर ग्रहे भोगवातुं नक्षत्र, तथा भोग्य एटले तेज क्रूर ग्रहे हमणां तरतज भोगववानुं होय ते नक्षत्र, आ त्रण नक्षत्रो तजवा योग्य कह्यां छे. तेमनां फळ आ प्रमाणे सारंग कहे छे.

"क्रूराश्रितक्रूरविमुक्तक्रूरगन्तव्यधिष्ण्येषु कुमारिकाणाम् ।
वदन्ति पाणिग्रहणे मुनीन्द्रा, वैधव्यमब्दैस्त्रिभिरत्रिमुख्याः ॥ १ ॥"

"क्रूर ग्रहे आश्रित करेलुं (भोगवातुं), क्रूर ग्रहे भोगवीने मूकी दीधेलुं अने क्रूर ग्रहे गंतव्य एटले हजु हवे भोगववानुं, ए त्रणमांथी कोइ पण नक्षत्रमां कुमारिकानुं पाणिग्रहण (विवाह) कर्युं होय तो ते कन्या त्रण वर्षनी अंदर विधवापणुं पामे छे एम अत्रि विगेरे मुनींद्रो कहे छे."

बीजा आचार्यो कहे छे के—

"भुक्तं भोग्यं च नो त्याज्यं सर्वकर्मसु सिद्धिदम् ।
यत्नात्त्याज्यं तु सत्कार्ये नक्षत्रं राहुसंयुतम् ॥ १ ॥"

"क्रूर ग्रहे भोगवेलुं तथा भोगववानुं ए बे नक्षत्रो सर्व कर्ममां सिद्धि आपनार होवाथी तजवा योग्य नथी, परंतु शुभ कार्यने विषे राहुवडे युक्त एवुं नक्षत्र अवश्य यत्नथी त्याग करवा योग्य छे."

ग्रहणनक्षत्र एटले जे दिननक्षत्रमां (दनश्या नक्षत्रमां) सूर्य के चंद्रनुं ग्रहण थयुं होय ते. ग्रहना उदय अने अस्तवडे दोष पामेलुं नक्षत्र एटले जे दिननक्षत्रमां ग्रहोनो उदय के अस्त थयो होय ते. आगमने विषे वक्रग्रहे आक्रमण करेलुं (भोगवातुं) नक्षत्र पण तजवा योग्य कह्युं छे. "विड्डुरमवहारियं" "विड्डुर नक्षत्र एटले अपहारित नक्षत्र तजवा योग्य छे." अहीं अपहारित एटले वक्र ग्रहे आक्रमण करेलुं एवो अर्थ छे. ग्रहोए भेदेलुं एटले भौम (मंगळ) विगेरे पांच ताराग्रहो कृत्तिका, रोहिणी विगेरे जे नक्षत्रोनी वच्चे भेदीने जाय छे ते ग्रहभिन्न कहेवाय छे. ते विषे लग्नशुद्धिमां कह्युं छे के— "मज्झेण गहो जस्स उ गच्छइ तं होइ गहभिन्नं" "ग्रह जेनी मध्ये थइने जाय छे ते ग्रहभिन्न कहेवाय छे." नारचंद्र टिप्पणीमां तो एम लख्युं छे के—"जेना पर ग्रहोनी डाबी तथा जमणी दृष्टि पडती होय ते ग्रहभिन्न कहेवाय छे." अहीं दृष्टि जाणवाने माटे सात रेखावाळा चक्रनी जेम कृत्तिका नक्षत्रथी आरंभीने सात सात नक्षत्रो चारे दिशामां स्थापवां. ते आ प्रमाणे—

	कृ०	रो०	मृ०	आ०	पु०	पु०	अ०	
भ०								म०
अ०								पू०
रे०								उ०
उ०								ह०
पू०								चि०
श०								स्वा०
ध०								वि०
	श्र०	अभि०	उ०	पू०	मू०	ज्ये०	अनु०	

त्यारपछी—

"यस्मिन् धिष्ण्ये स्थितः खेटस्ततो वेधत्रयं भवेत् ।
ग्रहदृष्टिप्रभावेण वामदक्षिणसम्मुखम् ॥ १ ॥
वक्रगे दक्षिणा दृष्टिर्वामदृष्टिश्च शीघ्रगे ।
भौमादिपञ्चकस्य स्यान्मध्यदृष्टिश्च मध्यमे (गे) ॥ २ ॥
राहुकेतू सदा वक्रौ सदा शीघ्रौ विधूष्णगू ।
क्रूरा वक्रा महाक्रूराः सौम्या वक्रा महाशुभाः ॥ ३ ॥
वेधद्वयं भजति धिष्ण्यमिभारिदंष्ट्रासंस्थानदिग्द्वयगतोडुगतग्रहाभ्याम् ।
एकं तथाऽभिमुखसंस्थितमध्यनासापर्यन्तभागधृतधिष्ण्यगतग्रहेण ॥ ४ ॥"

"जे नक्षत्रमां कोइ पण ग्रह रह्यो होय ते नक्षत्रथी ग्रहनी दृष्टिना प्रभावने लीधे डाबो, जमणो अने सन्मुख एवा त्रण वेध थाय छे (१). तेमां जो वक्र गतिवाळो ग्रह होय तो तेनी जमणी दृष्टि पडे छे, शीघ्र गतिवाळो होय तो तेनी डाबी दृष्टि पडे छे, अने मंगळ विगेरे पांचमांथी कोइ मध्य गतिवाळो होय तो तेनी मध्य एटले सन्मुख दृष्टि पडे छे (२). तेमां राहु अने केतु ए बे ग्रहो निरंतर वक्र गतिवाळाज होय छे, तथा चंद्र अने सूर्य ए बे निरंतर शीघ्र गतिवाळाज होय छे. तेमां जो क्रूर ग्रहो वक्र थया होय तो ते अत्यंत क्रूर जाणवा, अने सौम्य ग्रहो वक्र थया होय तो ते अति शुभ जाणवा (३). जे नक्षत्रथी सिंहनी दाढाना संस्थाननी जेम (तिरछा) बे दिशामां जे बे नक्षत्रो रहेलां होय ते बे नक्षत्रो उपर जे बे ग्रहो रहेला होय ते बे ग्रहोए करीने

प्रथमनुं नक्षत्र बे वेधने भजे (पामे) छे, तथा तेज प्रथमनुं नक्षत्र पोतानी सन्मुख रहेला मध्य नासिकाना पर्यंत भाग उपर रहेला नक्षत्र उपर जे ग्रह होय ते ग्रहे करीने त्रीजो सन्मुख वेध थाय छे (४)." आ प्रमाणे नरपतिजयचर्यामां कह्युं छे. आनुं उदाहरण आपवाथी बराबर समजाशे, माटे उदाहरण आपे छे के—कोइ कार्य मृगशिर नक्षत्रमां करवा धार्युं छे अने चित्रा नक्षत्रमां मंगळ विगेरे सात ग्रहोमांनो कोइ पण वक्री ग्रह रह्यो होय तो तेना वक्र गतिपणाने लीधे जमणी दृष्टि मृगशिर उपर पडी. तथा रेवती नक्षत्रमां सूर्यादिक सात ग्रहोमांनो कोइ पण अतिचारी (शीघ्र गतिवाळो) ग्रह होय तो तेना शीघ्र गतिपणाने लीधे डाबी दृष्टि मृगशिर उपर पडी. ए प्रमाणे बन्ने तरफथी ग्रहनी दृष्टि पडवाने लीधे ते मृगशिर नक्षत्र ग्रहभिन्न थयुं कहेवाय. वळी उत्तराषाढा नक्षत्रमां मंगळ विगेरे पांच ग्रहोमांनो कोइ पण मध्य गतिवाळो ग्रह होय तो सन्मुख दृष्टिए करीने ते मृगशिरनो त्रीजो वेध पण थयो. एज रीते बीजां नक्षत्रोना संबंधमां पण जाणवुं, परंतु आ त्रीजो सन्मुख नामनो वेध "वेधेनैकार्गलो०" ए आज विमर्शना सत्तरमां श्लोकमां कहेशे, अने बीजा बे वेधनो अहीं अधिकार छे.

अशुद्ध नक्षत्रनी शुद्धि क्यारे थाय ? ते कहे छे.—

धिष्ण्यं कार्याय पर्याप्तं चन्द्रभोगाद्ग्रहाहतम् ।
शुद्धं षड्भिर्भवेन्मासैरुपरागपराहतम् ॥ १६ ॥

अर्थ—ग्रहथी हणायेलुं नक्षत्र चंद्रवडे भोगवाया पछी शुभ कार्यने माटे पर्याप्त (योग्य)थाय छे, अने उपराग (ग्रहण)थी हणायेलुं नक्षत्र छ मासे करीने शुद्ध थाय छे.

अहीं पर्याप्त एटले योग्य थाय छे एवो अर्थ करवो. ग्रहथी हणायेलुं नक्षत्र एटले क्रूर ग्रहे भोगवीने मूकी देवाथी, भोगवातापणाथी के भोग्यपणाथी दूषित करेलुं, अथवा ग्रहोए उदय के अस्त करवाए करीने दूषित करेलुं, अथवा वक्री ग्रहे आक्रमण विगेरे करवावडे करीने दूषित करेलुं जे नक्षत्र ते. चंद्रना भोगथी एटले ग्रहे करेलो दोष दूर थया पछी जो ते नक्षत्र चंद्रे भोगव्युं होय तो ते आदरवा योग्य छे—शुभ छे. ते विषे वराह कहे छे के—

"दोषैर्मुक्तं यदा धिष्ण्यं पश्चाच्चन्द्रेण संयुतम् ।
ततः पश्चाद्विशुद्धं स्यान्नान्यथा शुभदं भवेत् ॥ १ ॥"

"दूषित नक्षत्र प्रथम तो दोषथी मुक्त थाय, अने पछी ते चंद्रवडे संयुक्त थाय—भोगवाय, त्यारपछी ते शुद्ध थाय छे, अन्यथा एटले ते पहेलां ते शुभ फळने आपनारुं थतुं नथी."

लग्न तो आ प्रमाणे कहे छे—

"तत्सूर्येन्द्वोर्भोगात्कर्मण्यत्वं प्रयाति भूयोऽपि ।
धिष्ण्यं कर्मसु शुद्धं तापनिषेकात्सुवर्णमिव ॥ १ ॥"

"ते (दूषित थयेलुं)नक्षत्र फरीथी सूर्य अने चंद्रना भोगव्या पछी शुभ कार्यने माटे योग्य थाय छे. जेम अशुद्ध सुवर्ण अग्निमां तपावीने जळमां नाख्या पछी कार्य (अलंकार)करवामां शुद्ध थाय छे तेम. अर्थात् ते नक्षत्र प्रथम सूर्यवडे तपावाय छे, अने पछी चंद्रवडे शांत कराय छे."

उपरागथी एटले चंद्र के सूर्यना ग्रहणथी हणायेलुं एटले दूषित थयेलुं जे नक्षत्र होय ते ग्रहणनक्षत्र कहेवाय छे. ते छ मास सुधी शुभ कार्यमां वर्जवा योग्य छे. केटलाक आचार्यो एम कहे छे के—ज्यांसुधी ते नक्षत्रने फरीथी सूर्य न भोगवे त्यांसुधी ते वर्जवा योग्य छे. अहीं विशेष आ प्रमाणे छे.—

"पक्षान्तरेण ग्रहणद्वयं स्याद्यदा तदाद्यग्रहणोपगं भम् ।
पक्षाद्विशुद्धं भवति द्वितीयग्रहोपगं शुध्यति मासषट्कात् ॥ १ ॥"

"एक पखवाडीयाने आंतरेज जो बे ग्रहण थतां होय तो पहेला ग्रहणथी दूषित थयेलुं नक्षत्र एक पखवाडीयाए करीने (बीजुं ग्रहण आवे त्यारे)शुद्ध थाय छे, अने बीजा ग्रहणथी दूषित थयेलुं नक्षत्र छ महीने शुद्ध थाय छे" एम सप्तर्षिओ कहे छे.

वळी जे नक्षत्रमां केतुनो उदय थयो होय तेज नजत्रमां छ मास सुधी केतु रहे छे, तेथी ते नक्षत्र पण छ मास सुधी तजवा योग्य छे. तथा जे दिननक्षत्रमां मंगळ विगेरे पांच ताराग्रह मांहेना कोइ पण बे ताराग्रहनो परस्पर भेद (वेध) थतो होय तो ते नक्षत्र पण छ मास सुधी तजवा योग्य छे. ते विषे विवाहवृन्दावनने विषे कह्युं छे के—

"यस्मिन् धिष्ण्ये वीक्षितौ राहुकेतू, भेदस्ताराखेटयोर्यत्र च स्यात् ।
आषण्मासाँस्तत्र लग्नेन्दुभाजि, भ्राजिष्णु स्यान्नो शुभं कर्म किञ्चित् ॥ १ ॥"

"जे दिननक्षत्रमां राहु अने केतु जोया होय, अने जे नक्षत्रमां मंगळादिक बे ताराग्रहनो परस्पर भेद–वेध थतो होय ते लग्नना चंद्रवडे शोभता एवा नक्षत्रमां छ मास सुधी कोइ पण शुभ कार्य कर्युं होय तो ते शोभावाळुं एटले शुभ फळदायक थतुं नथी." जे दिननक्षत्रमां सूर्य के चंद्रनुं ग्रहण थतुं होय ते नक्षत्रमां राहु जोयो कहेवाय छे, अने जे नक्षत्रमां केतुनो उदय थतो होय ते नक्षत्रमां केतु जोयेलो कहेवाय छे. अहीं कोइने शंका थाय के केतुना उदयनुं नक्षत्र शी रीते जाणी शकाय ? आ शंकाना उत्तरमां त्रिविक्रमशतकनी टीकामां लखेला श्लोको अहीं लखे छे.—

"मेषेऽर्के सति रेवत्यां यदि याति विधुंतुदः ।
भाद्रमासोत्तरार्धे स्यात् पुष्ये केतूदयस्तदा ॥ १ ॥"

"मेष संक्रांतिमां जो रेवती नक्षत्रने विषे राहु रह्यो होय तो भादरवा मासना बीजा पखवाडीयामां पुष्य नक्षत्रने विषे केतुनो उदय थाय छे. १."

"सूर्ये वृषस्थितेऽश्विन्यां यदि याति विधुंतुदः ।
आश्विनस्योत्तरार्धे तद्रोहिण्यां केतुरीक्ष्यते ॥ २ ॥"

"वृष राशिमां सूर्य रह्यो होय त्यारे जो अश्विनी नक्षत्रमां राहु रह्यो होय तो आश्विन मासना बीजा पखवाडीयाने विषे रोहिणी नक्षत्रमां केतु देखाय छे-उदय पामे छे. २."

"भरण्यां मिथुनस्थेऽर्के यदि याति विधुंतुदः ।
कार्तिकस्योत्तरार्धे तदार्द्रायां केतुदर्शनम् ॥ ३ ॥"

"मिथुन राशिमां सूर्य रह्यो होय त्यारे जो भरणी नक्षत्रमां राहु रह्यो होय तो कार्तिक मासना बीजा पखवाडीयामां आर्द्रा नक्षत्रने विषे केतुनुं दर्शन थाय छे. ३."

"कर्कस्थेऽर्के कृत्तिकायां यदि याति विधुंतुदः ।
मार्गशीर्षापरार्धे तत्केतूदयः पुनर्वसौ ॥ ४ ॥"

"कर्क राशिमां सूर्य रह्यो होय त्यारे जो कृत्तिका नक्षत्रमां राहु रह्यो होय तो मार्गशीर्ष मासना बीजा पखवाडीयामां पुनर्वसु नक्षत्रने विषे केतुनो उदय थाय छे. ४."

"सिंहेऽर्के सति रोहिण्यां यदि याति विधुंतुदः ।
पौषमासापरार्धे तदश्लेषायां शिखीक्ष्यते ॥ ५ ॥"

"सिंह संक्रांति होय त्यारे जो रोहिणी नक्षत्रमां राहु रहेलो होय तो पोष मासना बीजा पखवाडीयामां अश्लेषा नक्षत्रने विषे केतु देखाय छे-उदय पामे छे. ५."

"कन्यास्थेऽर्के मृगशीर्षे यदि याति विधुंतुदः ।
माघमासोत्तरार्धे तच्चित्रायां दृश्यते शिखी ॥ ६ ॥"

"सूर्य कन्या राशिमां रह्यो होय त्यारे जो राहु मृगशीर्ष नक्षत्रमां रह्यो होय तो माघ मासना बीजा पखवाडीयामां चित्रा नक्षत्रने विषे केतु देखाय छे. ६."

"तुलार्के सति आर्द्रायां यदि याति विधुंतुदः ।
फाल्गुनस्योत्तरार्धे स्यान्मूले केतूदयस्तदा ॥ ७ ॥"

"तुला राशिमां सूर्य होय त्यारे जो आर्द्रा नक्षत्रमां राहु रहेलो होय तो फाल्गुन मासना बीजा पखवाडीयामां मूळ नक्षत्रने विषे केतुनो उदय थाय छे. ७."

"वृश्चिकेऽर्के पुनर्वस्वोर्यदि याति विधुंतुदः ।
चैत्रमासोत्तरार्धे स्यात्स्वातौ केतूदयस्तदा ॥ ८ ॥"

"वृश्चिक राशिनो सूर्य होय त्यारे जो पुनर्वसु नक्षत्रमां राहु रहेलो होय तो चैत्र मासना बीजा पखवाडीयामां स्वाति नक्षत्रने विषे केतुनो उदय थाय छे. ८."

"धनुःस्थिते रवौ पुष्यं यदि याति विधुंतुदः ।
वैशाखस्योत्तरार्धे स्यान्मूले केतूदयस्तदा ॥ ९ ॥"

"धन राशिमां सूर्य रह्यो होय त्यारे जो पुष्य नक्षत्रमां राहु रहेलो होय तो वैशाख मासना बीजा पखवाडीयामां मूळ नक्षत्रने विषे केतुनो उदय थाय छे. ९."

"अश्लेषां मकरस्थेऽर्के यदि याति विधुंतुदः ।
ज्येष्ठमासोत्तरार्धे तज्ज्येष्ठायां दृश्यते शिखी ॥ १० ॥"

"सूर्य मकर राशिमां रह्यो होय त्यारे जो राहु अश्लेषा नक्षत्रमां रह्यो होय तो ज्येष्ठ मासना बीजा पखवाडीयामां ज्येष्ठा नक्षत्रने विषे केतु देखाय छे. १०."

"कुंभस्थेऽर्के मघाधिष्ण्यं यदि याति विधुंतुदः ।
आषाढमासोत्तरार्धे श्रुतौ केतूदयस्तदा ॥ ११ ॥"

"सूर्य कुंभ राशिमां रह्यो होय त्यारे जो राहु मघा नक्षत्रमां होय तो आषाढ मासना बीजा पखवाडीयामां श्रवण नक्षत्रने विषे केतुनो उदय होय छे. ११."

"मीनेऽर्केऽपरफल्गुन्यां यदि याति विधुंतुदः ।
श्रावणस्योत्तरार्धे तद्वारुणे दृश्यते शिखी ॥ १२ ॥"

"मीन राशिमां सूर्य रह्यो होय त्यारे जो राहु उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां होय तो श्रावण मासना बीजा पखवाडीयामां शतभिषक् नक्षत्रने विषे केतु देखाय छे—उदय पामे छे. १२."

उल्कापात अने चंद्र सूर्यना परिवेषथी दूषित थयेलुं नक्षत्र पण छ मास सुधी शुभ कार्यमां वर्जवा योग्य छे एम केटलाक आचार्यो कहे छे.

वेधैकार्गलोत्पातपातलत्ताभिधैरपि ।
दोषैरुपग्रहाद्यैश्च नक्षत्रं दुष्टमुत्सृजेत् ॥ १७ ॥

अर्थ—वेधवडे करीने एटले सात अने पांच रेखावाळा चक्रे करीने बतावेला वेधवडे दूषित थयेलुं तथा एकार्गल, उत्पात, पात अने लत्ता नामना दोषे करीने दूषित थयेलुं, तथा उपग्रहादिके करीने दूषित थयेलुं नक्षत्र शुभ कार्यमां तजवा योग्य छे.

उत्पात एटले जे दिवसे भौम विगेरे उत्पातो थया होय ते दिवसनुं नक्षत्र उत्पातवडे दूषित कहेवाय छे. श्लोकमां अपि शब्द होवाथी ग्रह युद्धादिकवडे दूषित थयेलुं नक्षत्र पण तजवा योग्य छे. आ सर्वे दोषोथी दूषित थयेलां नक्षत्रो ते ते दोषथी मुक्त थया पछी ज्यारे चंद्रवडे भोगवाइ जाय त्यारे ते शुद्ध थाय छे एम रत्नमाळाना भाष्यमां कह्युं छे.

हवे वेळा (समय)नी शुद्धि कहे छे.—

अर्केन्द्वोर्युक्तांशकराशियुतौ क्रान्तिसाम्यनामाऽयम् ।
चक्रदले व्यतिपातः पातश्चक्रे च वैधृतस्त्याज्यः ॥ १८ ॥

अर्थ—सूर्य अने चंद्रना भुक्त अंश तथा राशिने एकठा करवाथी क्रांतिसाम्य नामनो दोष थाय छे. तेमां जो ते एकठा करेला राशिनी संख्या अर्धचक्र एटले छनी आवे तो ते क्रांतिसाम्यनुं नाम व्यतिपात कहेवाय छे, अने जो चक्र एटले बारनी संख्या आवे तो तेनुं पात तथा वैधृत एवुं नाम कहेवाय छे. आ बन्ने प्रकारनो क्रांति-साम्य दोष शुभ कार्यमां तजवा योग्य छे.

विस्तरार्थ—स्पष्ट करेला सूर्य अने चंद्रने अयनांशो सहित करवा. पछी तेमां भुक्त अंश तथा राशि नाखवा. तेमां जो राशिना अंकने स्थाने छनी के बारनी संख्या आवे तो क्रांतिसाम्यनो संभव छे एम जाणवुं. ते वेळा तजवा योग्य छे. ते क्रांतिसाम्य नामनो दोष जो छनी संख्यावडे थयो होय तो तेनुं व्यतिपात एवुं नाम कहेवाय छे, अने जो बारनी संख्यावडे थयो होय तो तेनां पात अने वैधृत एवां बे नाम कहेवाय छे. अहीं तात्पर्य ए छे के—आ क्रांतिसाम्यनी वेळा निश्चयथी कही शकाती नथी, कारण के वर्षे वर्षे ते वेळा अनियमित वखते आवे छे. तेने माटे विवाहवृंदावनने विषे कह्युं छे के—

"त्रिभागशेषे ध्रुवनाम्नि चैन्द्रत्र्यंशे गते सम्प्रति संभवोऽस्य ।"

"विष्कंभादिक योगो मांहेना ध्रुव नामना योगनो त्रीजो भाग शेष रहे त्यारे अने ऐंद्र नामना योगना त्रण भाग वीती जाय त्यारे हालना समयमां आ क्रांतिसाम्य नामना दोषनो संभव छे."

त्यारपछी कोइए आम कह्युं छे.—

"पूर्वार्धे पुनरैन्द्रस्य पश्चिमार्धे ध्रुवस्य च ।"

"ऐंद्रना पहेला अर्ध भागमां अने ध्रुवना पाछला अर्धा भागमां आ क्रांतिसाम्यनो संभव छे." हमणां तो—

"ब्रह्मणश्चरणे शेषे ध्रुवस्य चरणे गते ।
तत्संभव इत्याहुर्ज्ञाः० ॥ १ ॥"

"ब्रह्मा नामना योगनो चोथो भाग शेष रहे त्यारे अने ध्रुव योगनो एक पाद (चोथो भाग) जाय त्यारे ते क्रांतिसाम्यनो संभव छे एम ज्योतिषशास्त्र जाणनाराओ कहे छे."

आ बाबत शी रीते निश्चय करवो? ते माटे कहे छे के— 'ते वखतना[1] सूर्य अने चंद्रने राशि, अंश विगेरे रूपे स्पष्ट करीने ते वर्षना अयनांशोने ते (स्पष्ट करेला सूर्य अने चंद्र)मां नाखवा. पछी ते बन्नेने एकठा करवा. तेमां जो राशिनी संख्या छ अथवा बार आवे तो क्रांतिसाम्यनो संभव छे एम जाणवुं. तेमां पण आ प्रमाणे विशेष जाणवुं.—जो छनी के बारनी संख्या पूरेपूरी एटले के अंश, कळा विगेरेने स्थाने शून्यज

1 जे वखते कार्य करवानुं होय ते वखतना.

आवे अने मात्र राशिने स्थानेज ७ के बारनी संख्या आवे तो तेज वखते क्रांतिसाम्य छे एम जाणवुं, परंतु जो ७ के बारनी संख्या उपर अंश, कळा विगेरे कांइ पण अधिक आवे तो तेटलुं क्रांतिसाम्य वीती गयुं छे एम जाणवुं, अने जो ७ के बारनी संख्याथी कांइक न्यून होय तो हवे पछी क्रांतिसाम्य थशे एम जाणवुं. क्रांतिसाम्य वीती गयाने केटलो काळ थयो अथवा केटला काळ पछी क्रांतिसाम्य थशे? ते जाणवानी इच्छा थाय तो आ रीते करवुं.—सूर्य अने चंद्रनी गतिने कळा तथा विकळारूपे स्पष्ट करीने ते बन्नेने एकत्र करी ते सर्वनी विकळा करवी. (करी राखवी.) त्यारपछी अयनांश सहित सूर्य अने चंद्रने एकत्र करी ७ अथवा बारनी संख्याथी जे कांइ अधिक राशि, अंश विगेरे होय तेमांथी पहेला राशिना अंकने छोडीने बीजा अंश विगेरेनी विकळा करवी. पछी आ विकळारूप करेला अंकने उपर विकळारूप करी राखेला गतिना अंकवडे भाग देवो. भागमां जे आवे तेटला दिवस जाणवा. शेष रहेला अंकने साठे गुणीने तेज गतिना अंकवडे भाग देवो. भागमां जे आवे तेटली घटी जाणवी. फरीथी तेज प्रमाणे शेष रहेलाने साठे गुणी तेज गतिना अंकवडे भाग देतां भागमां जे संख्या आवे तेटला पळ जाणवा. एटला दिवस, घटी अने पळ वीती गया एटले के एटला दिवस, घटी अने पळनी पहेलां क्रांतिसाम्य वीती गयुं एम जाणवुं.

परंतु जो छनी के बारनी संख्या कांइक न्यून होय तो ते सर्वने ७ अथवा बारमांथी बाद करी जे शेष रहे तेनी विकळा करवी. ते विकळाना अंकने प्रथमनीज जेम गतिनी विकळाना अंकवडे भाग देवो. भागमां जे आवे ते दिवस जाणवा. पछी पूर्वनीज जेम शेषने साठे गुणी तेने गतिनी विकळावडे भाग देवो. भागमां जे आवे ते घटी जाणवी. एज प्रमाणे फरीथी गुणाकार तथा भागाकार करी पळ काढवा. आटलो काळ गया पछी क्रांतिसाम्य आवशे, एटले के तेटला दिवस, घटी अने पळ गया पछी क्रांतिसाम्य थशे एम जाणवुं. जो पहेली वार भाग देतां भागमां कांइ न आवे तो दिवसने स्थाने शून्य जाणवुं, एटले के क्रांतिसाम्य वीत्याने अथवा आववामां एक दिवस गयो अथवा थवानो नथी, परंतु केटलीएक घडीओ अने पळोज गइ के जवानी छे, अने जो बीजी वार भाग देतां पण भागमां कांइ न आवे तो घटीने स्थाने पण शून्य जाणवुं, एटले के क्रांतिसाम्य वीत्याने अथवा थवाने घडीओ पण गइ नथी अथवा आववानी नथी, परंतु केटलाएक पळोज वीत्या के वीतवाना छे एम जाणवुं.

आनुं उदाहरण आपवाथी आ विषय बराबर समजाशे. तेथी प्रथम छनी संख्यानुं उदाहरण आपे छे.—

---

१ घटी. २ पळ.

संवत् १५१२ नी सालमां वैशाख सुदि १० गुरुवारे मघा नक्षत्रमां प्रातःकाळे घडी १ पळ ४५ समये ध्रुव योगनो पहेलो पाद पूर्ण थयो छे. ते वखते क्रांतिसाम्यनो विचार करीए छीए.—ते वखते स्पष्ट सूर्य राशि०, अंश १०, कळा ५० अने विकळा २६ छे. ते वर्षमां अयनांशो १५, कळा ३४ छे. तेने स्पष्ट सूर्यमां नाखवाथी अयनांश सहित सूर्य १-४-२४-२६ थयो. सूर्यनी गति स्पष्ट कळा ५७, विकळा ५० छे. ते वखते स्पष्ट चंद्र ४-११-२-३० छे. तेमां अयनांश १५, कळा ३४ भेळववाथी अयनांश सहित चंद्र ४-२६-३६-३०थयो. चंद्रनी गति स्पष्ट कळा ७५० छे. हवे अयनांश सहित सूर्य अने चंद्रने एकत्र करीए त्यारे ६-१-०-५६ थया, माटे आ समये क्रांतिसाम्य वीती गयुं छे. तेने वीत्याने केटलो वखत थयो? ते जाणवा माटे अंश (१)ने साठे गुणी कळा करवी एटले ६० थया. तेने फरीथी विकळा करवा माटे साठे गुणी ५६ विकळा भेळववाथी ३६५६ विकळा थइ. त्यारपछी उपर कहेली सूर्यनी स्पष्ट गति ५७ कळा अने ५० विकळा तथा चंद्रनी स्पष्ट गति कळा ७५० ए बेने एकत्र करवी. एटले कळा ८०७, विकळा ५० थइ. कळाने विकळा करवा माटे साठे गुणी ५० विकळा उमेरवाथी ४८४७० विकळा थइ. पछी पूर्वना अंक ३६५६ ने आ ४८४७० अंके भाग लेवानो छे, परंतु भाग चालतो नथी, तेथी दिवसने ठेकाणे ० आव्युं, त्यारपछी ते ३६५६ अंकने साठे गुणवाथी २१९३६० थया, तेने ते ४८४७० अंके भाग देतां ४ घटी प्राप्त थइ. शेष २५४४० ने साठे गुणी फरीथी तेज ४८४७० अंके भाग देतां ३१ पळ लाध्या, तेथी ४ घडी अने ३१ पळ पहेलां क्रांतिसाम्य वीती गयुं छे एम सिद्ध थयुं.

हवे बारनी संख्यानुं उदाहरण आ प्रमाणे.—संवत् १५१३ नी सालमां लौकिक वैशाख वदि ८ मंगळवारे धनिष्ठा नक्षत्रमां घडी १८, पळ ५४ समये ब्रह्म योगनो छेल्लो पाद अवशेष रह्यो छे. ते वखते क्रांतिसाम्यनो विचार करीए छीए.—ते वखते राशि, अंश, कळा अने विकळारूपे स्पष्ट करेलो सूर्य १-०-४१-१३ छे. तेमां अयनांश १५, कळा ३४ नाखवाथी अयन सहित सूर्य १-१६-१५-१३ थयो. रविनी गति स्पष्ट कळा ५७, विकळा ३० छे. ते वखते स्पष्ट चंद्र ९-२९-१०-५३ छे. तेमां अयनांश १५, कळा ३४ भेळववाथी १०-१४-४४-५३ थाय छे. चंद्रनी गति स्पष्ट कळा ८४२, विकळा ६ छे. हवे अयन सहित सूर्य अने चंद्रने भेळववाथी ०-१-०-६ थाय छे. अहीं पण क्रांतिसाम्य वीती गयुं छे एम जाणवुं. वीत्याने केटलो वखत थयो छे ? ते जाणवा माटे अहीं पण प्रथमनीज जेम सर्व रीत करवाथी घडी ४ आवे छे, तेथी क्रांतिसाम्य वीत्याने चार घडी थइ एम जाणवुं.

एज प्रमाणे छ अथवा बारनी संख्या कांइक न्यून होय तो क्रांतिसाम्य केटला वखत

पछी आवशे ? तेने माटे उपर कहेली रीते दिवस अने घडी विगेरे काढवा. ग्रहो अने ग्रहोनी गतिने स्पष्ट करवानो विधि (रीत) आगळ कहेवामां आवशे.

आ क्रांतिसाम्यना संभवनुं स्थान सूत्रकारे स्थूल प्रमाणथी कह्युं छे, तेथी अमे पण तेने अनुसरीने स्थूल प्रमाणनुंज विवरण कर्युं छे, परंतु कोइने सूक्ष्म दृष्टिथी जोवुं होय, जेमके क्रांतिसाम्यनो आरंभ क्यारे थयो ? ते केटला वखत सुधी रहीने क्यारे ते पूर्ण थयुं ? क्रांतिसाम्य शब्दनुं सार्थक नाम शुं ? एटले के एनुं क्रांतिसाम्य एवुं नाम केम कहेवायुं ? छ अने बारनी संख्यानी उत्पत्ति छतां पण क्रांतिसाम्य थतुं नथी ए क्यारे अने शी रीते ? क्रांतिसाम्य छतां पण ते क्यारे अने शी रीते दोषकारी न होय ? इत्यादि सूक्ष्म प्रमाणने इच्छनारे करणकुतूहल, भास्करसिद्धांत विगेरे ग्रंथो जोवा.

अहीं कोइ शंका करे छे के—तमे प्रथम एवुं कह्युं के क्रांतिसाम्यनुं स्थान मासे मासे अने वर्षे वर्षे फरे छे, तो तेने फरवाना स्थाननी कांइ पण सीमा छे के नहीं ? आ शंकानो जवाब आपतां कहे छे के—हा, छे. ते आ प्रमाणे.—

"गण्डोत्तरार्धाच्छुक्लादेः क्रान्तिसाम्यस्य संभवः ।
सार्धपञ्चसु योगेषु तत्र्यहं परिवर्जयेत् ॥ १ ॥"

"गंडना उत्तरार्धथी अने शुक्ल योगनी आदिथी आरंभीने साडा पांच योग सुधी क्रान्तिसाम्यनो संभव छे. तेना त्रण दिवस वर्जवा योग्य छे. गंड योगना उत्तरार्धथी आरंभीने (एटले गंड योगना बे पाद गया पछी) साडा पांच योग सुधी (एटले वज्र योग पूर्ण थाय त्यांसुधी) तथा शुक्ल योगने पहेलेथीज आरंभीने साडा पांच योग सुधी (एटले प्रीति योगना बे पाद पूर्ण थाय त्यांसुधी) क्रांतिसाम्यनो संभव छे. आ सिवाय बीजा योगोमां तेनो संभवज नथी, एम खंडखाद्य भाष्य विगेरेमां कह्युं छे. अर्थात् आ बे स्थाने साडा पांच योगने विषेज क्रांतिसाम्य फर्या करे छे, ए साडा पांच योगने उल्लंघन करीने बीजा कोइ पण योगमां कोइ पण वखत क्रांतिसाम्य गयुं (थयुं) नथी तेम जशे (थशे)पण नहीं. आ क्रांतिसाम्य दोषना त्रण दिवस वर्जवाना कह्या छे, एटले के हालना समयमां ब्रह्म योगनो अन्त्य पाद अने ध्रुव योगनो आद्य पाद ए बे स्थानथी पाछळ चालतुं (रहेलुं) क्रांतिसाम्य कदाचित् गयेले (पहेले) दिवसे जाय छे (थाय छे)अने आगळ चालतुं (रहेलुं) क्रांतिसाम्य कदाचित् आगळने (पछीने) दिवसे जाय छे, तेथी करीने क्रांतिसाम्यना संभवना स्थानवाळो एक दिवस अने आगळ पाछळनो एक एक दिवस एम त्रण दिवस तजवाना छे. अथवा बीजी रीते पण त्रण दिवस त्याग करवानुं आ प्रमाणे कह्युं छे—

"गत १ मेष्य २ द्वर्तमानं ३ सुख १ लक्ष्म्या २ युषां ३ क्रमात् ।
क्रान्तिसाम्यं सृजेद्धानिं त्र्यहं तेनात्र वर्ज्यताम् ॥ १ ॥"

"जे दिवसे क्रांतिसाम्य होय ते दिवसथी पहेलानो दिवस सुखनी हानि करे छे, तेनी पछीनो दिवस लक्ष्मीनी हानि करे छे, अने क्रांतिसाम्यनो दिवस आयुषनी हानि करे छे, माटे आ त्रण दिवसो वर्जवा योग्य छे."

केटलाक आचार्यो क्रांतिसाम्यवाळो एकज दिवस वर्जवानुं कहे छे, अने बीजा केटलाक तो ते दिवसे पण क्रांतिसाम्य थवानो समयज मात्र तजवानो कहे छे. तेओ कहे छे के—

"विषप्रदिग्धेन हतस्य पत्रिणा, मृगस्य मांसं सुखदं क्षताद्दते ।
यथा तथैव व्यतिपातयोगे, क्षणोऽत्र वर्ज्यो न तिथिर्न वारः ॥ १ ॥"

"जेम विष लगावेला बाणथी हणायेला मृगनुं क्षत (क्षतना स्थान) विनानुं बीजुं सर्व मांस सुखकारक छे तेम व्यतिपात (क्रांतिसाम्य) योगने विषे पण ते योगनो समयज वर्जवा योग्य छे, परंतु आखी तिथि के आखो वार वर्जवा योग्य नथी."

क्रांतिसाम्यनी वेळानो निश्चित समय तथा ते क्रांतिसाम्य केटलो वखत रहे छे तेनुं परिमाण करणकुतूहल विगेरे ग्रंथमां कहेला विधिने अनुसारे जाणवुं एम प्रथम कही गया छीए. आ क्रांतिसाम्य मोटो दोष गणाय छे. ते विषे लल्ल कहे छे के—

"खड्गाहतोऽग्निना दग्धो नागदष्टोऽपि जीवति ।
क्रान्तिसाम्यकृतोद्वाहो म्रियते नात्र संशयः ॥ १ ॥"

"खड्गथी हणायेलो, अग्निथी बळेलो अने सर्पथी डसायेलो पुरुष कदाच जीवी शके छे, परंतु क्रांतिसाम्यमां विवाहित थयेलो पुरुष मरीज जाय छे, तेमां कांइ पण संशय नथी."

आ विवाहना विषयमां तजवा योग्य अढार दोषोना संग्रहनो श्लोक आ प्रमाणे छे.

"स्युर्वेधः १ पात २ लत्ते ३ ग्रहमलिनमुडु ४ क्रूरवारा ५ ग्रहाणां,
जन्मर्क्षं ६ विष्टि ७ रर्धप्रहरक ८ कुलिको ९ पग्रह १० क्रान्त्य ११ वस्थाः १२ ।
कर्कोत्पातादि १३ घंटो १४ विगतबलशशी १५ दुष्टयोगार्गलाख्या १६,
गण्डान्तो १७ दग्धरिक्ताप्रमुखतिथि १८ रथो नामतोऽष्टादशैते ॥ १ ॥"

"वेध १, पात २, लत्ता ३, ग्रहवडे मलिन (दूषित) थयेलुं नक्षत्र ४, क्रूर वार ५, ग्रहोनुं जन्मनक्षत्र ६, विष्टि ७, अर्धप्रहर ८, कुलिक ९, उपग्रह १०, क्रांति ११, अवस्था १२, कर्क, उत्पात विगेरे १३, घंट १४, निर्बळ चंद्र १५, दुष्ट योगो तथा अर्गल योग १६, गंडांत १७ तथा दग्ध अने रिक्ता विगेरे तिथि १८, आ नामना अढार दोषो जाणवा." अहीं ग्रहवडे मलिन थयेलुं नक्षत्र एटले क्रूरेण मुक्तमाक्रान्तं० (विमर्श ५. श्लोक १५) ए श्लोकमां कहेला दोषथी दूषित थयेलुं अने वळी चंद्रना जोगववावडे हजु सुधी शुद्ध थयेलुं न होय एवुं नक्षत्र. क्रूर वारे करीने क्रूर होरा पण

अहीं जाणवी (दोषमां गणवी). ग्रहोनुं जन्मनक्षत्र भरचितुत्तरे० ए पूर्वोक्त श्लोकमां तथा विशाखाकृत्तिके० ए पूर्वोक्त श्लोकमां कहेलुं जाणवुं. अर्धप्रहर अने कुलिकना दोष माटे सारंग कहे छे के—"यामार्धेन भवेच्छोषः कुलिकेन तनुक्षयः"—"अर्धप्रहरमां कार्य करवाथी शरीरनो शोष थाय छे अने कुलिक योगमां करवाथी शरीरनो क्षय (नाश) थाय छे." तथा—

"लग्नं पञ्चचतुर्वर्गै दूष्यते क्रूरहोरया ।
अपि षड्वर्गसंशुद्धं कुलिकेन विहन्यते ॥ १ ॥"

"लग्न पांच के चार वर्गे करीने शुद्ध होय तो ते क्रूर होराए करीने दूषण पामे छे, अने छ वर्गे करीने शुद्ध होय तोपण ते कुलिके करीने हणाय छे—दूषित थाय छे" एम रत्नमालाना भाष्यमां कह्युं छे.

अहीं अर्धप्रहर अने कुलिक कहेवाए करीने काळवेळा, कंटक अने उपकुलिक पण जाणवा, तेथी ते पण शक्ति प्रमाणे त्याग करवा. उपग्रहे करीने दुष्ट रवियोगो पण अहीं जाणवा. क्रांतिए करीने सूर्यसंक्रांति तथा क्रांतिसाम्य ए बन्ने समजवा. अवस्थाए करीने चंद्रनी प्रोषित विगेरे दुष्ट अवस्थाओ जाणवी. कर्क, उत्पात विगेरे, अहीं आदि शब्द छे माटे तिथि अने नक्षत्रने आश्रीने तथा तिथि अने वारने आश्री उत्पन्न थता जे मृत्यु, काण, संवर्तक अने वज्रपात विगेरे योगो कहेला छे ते सर्वे अहीं जाणवा. घंट शब्दे करीने भामाए करीने सत्यभामानी जेम यमघंट योग जाणवो. अहीं यमघंटने जे जूदो पाडीने गणाव्यो छे ते तेनुं अति दुष्टपणुं जणाववा माटे गणाव्यो छे. ते विषे लल्ल कहे छे के—

"यमघण्टे गते मृत्युः कुलोच्छेदः करग्रहे ।
कर्तुर्मृत्युः प्रतिष्ठायां शिशुर्जातो न जीवति ॥ १ ॥"

"यमघंट योगमां जो प्रयाण कर्युं होय तो ते प्रयाण करनारनुं मरण थाय छे, विवाह कर्यो होय तो कुळनो नाश थाय छे, प्रतिष्ठा करी होय तो प्रतिष्ठा करनारनुं मरण थाय छे, अने जो बाळकनो जन्म थयो होय तो ते बाळक जीवतो नथी एटले मरण पामे छे."

निर्बळ चंद्रे करीने गोचरादिकवडे विरुद्ध (अशुभ) चंद्रने पण दूषित जाणवो, तथा कृष्णपक्षमां विरुद्ध तारा पण दूषित जाणवी. दुष्ट योगो विष्कंभ विगेरेमांना जाणवा. अर्गल एटले एकार्गल, आ योग विष्कंभ विगेरे योगोमांना कुयोगोमांज संभवे छे, तेथी तेनी साथेज भण्यो छे. गंडांते करीने विवाहवृंदावन विगेरे ग्रंथोमां कहेलो तिथ्यादिकनो संधिदोष पण जाणवो. "दग्धरिक्ताप्रमुख" आ पदमां प्रमुख—आदि शब्द लख्यो छे तेथी पक्षछिद्र, क्रूर तिथि, अवम तिथि तथा फल्गु तिथि पण जाणवी. ते विषे सारंग कहे छे के—

"सूर्योदये यथा तारा विनश्यन्ति समन्ततः ।
यथाग्निरम्बुना लग्नं तथा वृद्धिक्षये तिथिः (थेः) ॥ १ ॥"

"जेम सूर्यनो उदय थाय त्यारे चोतरफथी ताराउ नाश पामे छे, तथा जेम जळवडे करीने अग्नि उलवाइ जाय छे तेम तिथिनी वृद्धि अथवा क्षय थवाथी लग्न विनाश पामे छे."

आ उपर कहेला अढार दोषो शुद्ध नक्षत्रना बळे करीने छाया लग्न विगेरेमां ज्यारे प्रतिष्ठा के दीक्षा विगेरे कार्य करवामां आवे छे त्यारे पण अवश्य वर्जवा योग्य छे, तो पछी घटिका लग्नने विषे त्याग करवामां तो शुं कहेवुं ? अर्थात् अवश्य वर्जवाज जोइए. आ दोषोने मध्ये केटलाक दोषोनो भंगविधि पूर्वाचार्योए आ प्रमाणे कह्यो छे.—

"लग्ने गुरुः सौम्ययुतेक्षितो वा, लग्नाधिपो लग्नगतस्तथा वा ।
कालाख्यहोरा च यदा शुभा स्याद्वेधदोषस्य तदा हि भङ्गः ॥१॥"

"विवाह समये गुरु सौम्य ग्रहे युक्त होय, अथवा सौम्य ग्रहनी तेना पर दृष्टि पडती होय, अथवा लग्ननो स्वामी होय अथवा लग्नमां रहेलो होय, तथा ज्यारे काळहोरा शुभ (सारी) होय त्यारे नक्षत्रवेध नामना दोषनो भंग थाय छे, एटले के आ दोष लागतो नथी." अहीं नक्षत्रवेधनोज भंग कह्यो छे, तेथी नक्षत्रना पाद वेधरूप दोषनो भंग थतो नथी एम जाणवुं. वळी व्यवहारप्रकाशमां तो वेधने उलटो शुभ पण कह्यो छे, ते आ रीते.—

"सौम्यैश्चरणान्तरितः शुभः शुभैः केन्द्रगैर्वेधः ।"

"पादोना आंतरामां रहेला सौम्य ग्रहोए करीने वेध शुभ छे तथा शुभ (सौम्य) ग्रहो केंद्रस्थानमां रह्या होय तो वेध शुभ छे."

॥ इति वेधदोषभंगः ॥ १ ॥

"एकार्गलोपग्रहपातलत्ताजामित्रकर्तर्युदयादिदोषाः ।
लग्नेऽर्कचन्द्रेज्यबले विनश्यन्त्यर्कोदये यद्वदहो तमांसि ॥ १ ॥"

"एकार्गल, उपग्रह, पात, लत्ता, जामित्र अने कर्तरीनो उदय ए विगेरे दोषो सूर्य, चंद्र अने गुरुए करीने बळवान् लग्न होय तो नाश पामे छे. जेम सूर्यना उदये अंधकार नाश पामे छे तेम." आ प्रमाणे सप्तर्षिउ कहे छे. तथा केटलाक आचार्यो कहे छे के—

"अंगेषु बंगेषु वदन्ति पातं, सौराष्ट्रयाम्ये खचरस्य लत्ताम् ।
उपग्रहं मालवसैन्धवेषु, गण्डान्तयुक्तिं सकले पृथिव्याम् ॥ १ ॥"

"अंग तथा बंग देशमां पात दोष वर्जवानो कह्यो छे, सौराष्ट्र देश तथा दक्षिण देशमां ग्रहनी लत्ताने वर्जवानी कही छे, मालव अने सिंध देशमां उपग्रहने वर्जवानो कह्यो छे, तथा पृथ्वी पर सर्व स्थाने गंडांतने वर्जवानो कह्यो छे." वळी वामदेव तो आ प्रमाणे कहे छे.—

"लत्तां बंगालदेशे च पातं कौशलिके त्यजेत् ।
उपग्रहं गौरुदेशे वेधं सर्वत्र वर्जयेत् ॥ १ ॥"

"बंगाल देशमां लत्तानो त्याग करवो, कोशल देशमां पातनो त्याग करवो, गौरु देशमां उपग्रहनो त्याग करवो, अने वेधनो सर्व देशमां त्याग करवो."

॥ इति पात २ लत्तो ३ पग्रहै ४ कार्गलानां ५ भंगः ॥ ५ ॥

"होराः क्रूराः सौम्यवर्गाधिके स्युर्लग्ने मोघाः सौम्यवारे च रात्र्याम् ।
पापारिष्टं निष्फलं शक्तिभाजां, स्यात् षड्वर्गे लग्नगे सद्ग्रहाणाम् ॥ १ ॥"

"लग्नमां सौम्य ग्रहोनो वर्गाधिक होय तो तथा सौम्य वारोमां अने रात्रिमां क्रूर होरा निष्फळ थाय छे. लग्नमां सौम्य ग्रहोनो षड् वर्ग होय तो पुण्यवंतोने पापी ग्रहोनुं अरिष्ट निष्फळ थाय छे.

त्रिविक्रम पण कहे छे के—

"क्रूरस्य कालहोरां च क्रूरवारे दिवा त्यजेत् ।"

"क्रूरनी काळहोरा क्रूर वारने विषे दिवसे तजवी," एटले के जो दिनवार क्रूर होय अने दिवसे कार्य करवुं होय तो क्रूर होरा तजवी, परंतु जो सौम्य (शुभ) काळहोरा होय तो ते क्रूर वारना दोषनो नाश करे छे, माटे ते ग्रहण करवा योग्य छे, अने जो वारज सौम्य होय तो दिवसे अथवा रात्रिए होरा जोवानी कांइ जरुर नथी.

॥ इति सूर्येन्दुग्रहणवर्जग्रहमलिनोकु १ क्रूरवारहोरा २ दोषयोर्भंगः ॥ ७ ॥

जन्मनक्षत्रना दोषनो भंग आगळ कहेवाता कर्कादिकना भंगनी जेमज जाणवो. ८. विष्टि दोषनो भंग छे नहीं. जो कदाच तेनो भंग होय तो "विष्टिपुच्छे ध्रुवं जयः" "विष्टिना पुच्छमां कार्य करवाथी निश्चे जय थाय छे." इत्यादि जाणवुं. ए. अवस्था दोषनो भंग आगळ शिवचक्रवरू कहेवाता निर्बळ चंद्रना दोषना भंगनी जेम जाणवो.१०.

कर्क, उत्पात विगेरे दोषोनो भंग आ रीते छे.—

"अयोगास्तिथिवारर्क्षजाता येऽमी प्रकीर्तिताः ।
लग्ने ग्रहबलोपेते प्रभवन्ति न ते क्वचित् ॥ १ ॥
यत्र लग्नं विना कर्म क्रियते शुभसंज्ञकम् ।
तत्रैतेषां हि योगानां प्रभावाज्जायते फलम् ॥ २ ॥"

"तिथि, वार अने नक्षत्रथी उत्पन्न थयेला जे कुयोगो कहेला छे ते ग्रहना बळे करीने युक्त एवा लग्नने विषे कोइ पण वखत समर्थ थता नथी—बाध करी शकता नथी, परंतु ज्यां लग्न विनाज शुभ कार्य करवामां आवे त्यांज आ योगो समर्थ होवाथी तेनुं फळ थाय छे" एम व्यवहारसारमां कह्युं छे.

॥ इति कर्कोत्पातादिदोषभंगः ॥ ११ ॥

यमघंटनी दूषित घडीओ आ प्रमाणे जाणवी.—

"पनरस १ तेर २ बारस ३ एगा ४ सग ५ सत्त ६ अड ७ घडिआओ ।
जमघंटस्स उ दुट्टा रविमाइसु सत्तवारेसु ॥ १ ॥"

"रविवारथी आरंभीने सात वारोने विषे यमघंटनी दुष्ट घडीओ आ प्रमाणे जाणवी–रविवारे पंदर घडी, सोमवारे तेर घडी, मंगळवारे अढार घडी, बुधवारे एक घडी, गुरुवारे सात घडी, शुक्रवारे सात घडी अने शनिवारे आठ घडी तजवा योग्य छे." आ प्रमाणे श्रीहरिभद्र सूरिए कह्युं छे. बीजा तो एम कहे छे के—

"तिथि १५ रस ६ रुद्रा ११ म्बरगुण ३० सार्धहया ७॥ त्र्तु ६० खगुण ३० मितघटिकाः ।
त्याज्या घंटे रव्यादिष्वाद्या उत्तरास्तु शनिबुधयोः ॥ १ ॥"

"रविवारे यमघंटनी पहेली पंदर घडीओ तजवी, सोमवारे पहेली छ घडी तजवी, मंगळवारे पहेली अगीयार घडी, बुधवारे छेल्ली त्रीश घडी, गुरुवारे पहेली साडीसात घडी, शुक्रवारे पहेली साठ घडी अने शनिवारे छेल्ली त्रीश घडी तजवा योग्य छे." बाकीनी घडीओ अदुष्ट एटले अशुभ नथी.

॥ इति यमघंटदोषभंगः ॥ १२ ॥

निर्बळ चंद्रनो दोष "लग्ने गुरोर्वरस्य०" (विमर्श ५ श्लोक ५)ए श्लोकमां कहेला पंदर प्रकार मांहेला कोइ पण प्रकारे करीने चंद्रनी अनुकूळता सर्वथा न थाय तो शिवचक्रना बळे करीने हणाय छे, केमके शिवचक्र चंद्रादिकना प्रतिकूळपणाने हणे छे एम कह्युं छे. १३. विष्कंभ विगेरे योगोमां जे दुष्ट योगो छे तेमनी दुष्ट घडीओज अवश्य तजवानी छे, बीजी घडीओ तजवामां जेवी इच्छा एम कह्युं छे, माटे ते दोषनो भंग प्रगटज छे. १४. गंडांत तो लग्न, तिथि अने नक्षत्रना त्रीजा त्रीजा भागने आंतरे थाय छे, तेथी ते दोषनो भंग नथी. तथा सर्व तिथिओ, नक्षत्रो अने योगोनी संधिमां जे संधि नामनो दोष कह्यो छे तेनो भंग आ प्रमाणे छे.—

"धिष्ण्यस्यादावन्ते त्यजेच्चतस्रो घटीः करग्रहणे ।
यदि शुद्धे द्वे धिष्ण्ये विवाहयोग्ये तदा श्रेष्ठे ॥ १ ॥"

"पाणिग्रहणमां नक्षत्रनी आदिनी तथा अंतनी चार घडीओ तजवी. तेमां जो ते बन्ने नक्षत्रो विवाहने योग्य होय तो ते श्रेष्ठ छे. (अर्थात् तेनी घडीओ तजवानी जरुर नथी.)" एम व्यवहारप्रकाशमां कह्युं छे. तथा—

"गुरुर्भृगुर्वा केन्द्रे वा त्रिकोणे वा यदा भवेत् ।
भसन्धिस्तिथिसन्धिश्च योगसन्धिर्न दोषदः ॥ १ ॥
येऽन्ये सन्धिकृता दोषास्ते सर्वे विलयं ययुः ।
इति प्रोक्तं तु गर्गेण वशिष्ठात्रिपराशरैः ॥ २ ॥"

"गुरु के शुक्र जो केन्द्र के त्रिकोणस्थानमां होय तो नक्षत्रसंधि, तिथिसंधि अने योगसंधि ए दोषने देनारा थता नथी, तथा संधिए करेला जे बीजा दोषो होय ते पण नाश पामे छे, एम गर्गे, वशिष्ठे, अत्रिए अने पराशर ऋषिए कह्युं छे."

॥ इति भतिथियोगादिसन्धिदोषभंगः ॥ १५ ॥

तिथिदोषनो भंग "तिथिरेकगुणा प्रोक्ता०" (तिथिनुं फळ एक गुणुं छे) ए वचनथी स्पष्टज छे. अथवा "दिने बलवती तिथिः" (तिथिनुं बळ दिवसे होय छे), "तिथ्यर्धे तिथिफलं समादेश्यं" (तिथिना अर्धा भागमां तिथिनुं फळ कहेवुं) विगेरेथी जाणवुं. १६. तथा—

"सर्वेषां तु कुयोगानां वर्जयेद् घटिकाद्वयम् ।
उत्पातमृत्युकाणानां सप्त षट् पञ्च नाडिकाः ॥ १ ॥"

"सर्वे कुयोगोनी बबे घडी वर्जवी, उत्पात योगनी सात घडी, मृत्यु योगनी छ अने काण योगनी पांच घडी वर्जवी" एम नारचंद्रनी टिप्पणीमां कह्युं छे. केटलाएक मृत्यु योगनी बार घडीओ त्याग करवानुं कहे छे. तथा—

"यमघंटे नवाष्टौ च कालमुख्यां विवर्जयेत् ।
दग्धे तिथौ कुवारे च नाडिकानां चतुष्टयम् ॥ १ ॥"

"यमघंटनी नव घडीओ अने काळमुखीनी आठ घडीओ वर्जवी, तथा दग्ध तिथिमां अने कुवारमां चार चार घडीओ तजवी" एम पण केटलाएक कहे छे. तथा—

"कुतिहि कुवार कुजोगा विठ्ठी वि अ जम्मरिक्ख दड्ढतिही ।
मझण्हदिणाओ परं सब्बं पि सुभं भवेऽवस्सं ॥ १ ॥"

"कुतिथि, कुवार कुयोग, विष्टि, जन्मनक्षत्र अने दग्ध तिथि ए सर्वे मध्याह्न पछी अवश्य शुभ थाय छे" एम हर्षप्रकाशमां कह्युं छे. लल्ल पण कहे छे के—

"विष्ट्यामङ्गारके चैव व्यतीपातेऽथ वैधृते ।
प्रत्यरे जन्मनक्षत्रे मध्याह्नात्परतः शुभम् ॥ १ ॥"

"विष्टि, अंगारक, व्यतीपात, वैधृत, प्रत्यर (सातमी तारा) अने जन्मनक्षत्र, आ दिवसोने विषे मध्याह्न पछीनो काळ शुभ छे." अहीं "प्रत्यर" शब्दनो अर्थ सातमी तारा छे, अने तेना उपलक्षणथी त्रीजी, पांचमी अने आधान तारा पण जाणवी, तेथी करीने ते ताराओने विषे पण मध्याह्न पछीनो काळ शुभ जाणवो. आ प्रमाणे सामान्य रीते प्रतिष्ठामां घणा दोषोनो भंग कह्यो.

॥ इति सामान्येन प्रतिष्ठायां बहुदोषभंगः ॥

हवे प्रतिष्ठामां लग्नना अंशनो नियम कहे छे.—

लग्नं श्रेष्ठं प्रतिष्ठायां क्रमान्मध्यमथावरम् ।
द्व्यङ्गं स्थिरं च भूयोभिर्गुणैराढ्यं चरं तथा ॥ १९ ॥

अर्थ—जिनेश्वरनी प्रतिष्ठाने विषे द्विस्वभाव लग्न श्रेष्ठ छे, स्थिर लग्न मध्यम छे अने चर लग्न कनिष्ठ छे, परंतु ते चर लग्न जो अत्यंत बळवान् घणा शुभ ग्रहोए करीने सहित होय तो ते पण त्रीजा भांगे ग्रहण करवा लायक छे. स्थापना नीचे प्रमाणे—

द्विस्वभाव	३	६	ए	१२	उत्तम
स्थिर	२	५	८	११	मध्यम
चर	१	४	७	१०	अधम

बीजा देवोनी प्रतिष्ठामां आ प्रमाणे लग्नो जाणवां.—

"सिंहोदये दिनकरो घटभे विधाता,
नारायणस्तु युवतौ मिथुने महेशः ।
देव्यो द्विमूर्त्तिभवनेषु निवेशनीयाः,
क्षुद्राश्चरे स्थिरगृहे निखिलाश्च देवाः ॥ १ ॥"

"सिंह लग्नमां सूर्यनी स्थापना करवी, कुंभ लग्नमां ब्रह्मानी स्थापना करवी, कन्या लग्नमां विष्णुनी, मिथुन लग्नमां महादेवनी, द्विस्वभाववाळां लग्नमां देवीओनी, चर लग्नमां क्षुद्र (व्यंतर विगेरे) देवोनी अने स्थिर लग्नमां बीजा सर्व देवो (इंद्रादिक) नी प्रतिष्ठा करवी" एम रत्नमाळामां कह्युं छे. वळी लल्ल तो आम कहे छे.—

"सौम्यैर्देवाः स्थाप्याः क्रूरैर्गन्धर्वयक्षरक्षांसि ।
गणपतिगणाँश्च नियतं कुर्यात्साधारणे लग्ने ॥ १ ॥"

"सौम्य लग्नमां देवोनी प्रतिष्ठा करवी, क्रूर लग्नमां गंधर्व, यक्ष अने राक्षसनी प्रतिष्ठा करवी, तथा गणपति अने गणोनी स्थापना अवश्य साधारण लग्नमां करवी."

अंशास्तु मिथुनः कन्या धन्वाद्यार्धं च शोभनाः ।
प्रतिष्ठायां वृषः सिंहो वणिग्मीनश्च मध्यमाः ॥ २० ॥

अर्थ—प्रतिष्ठाने विषे मिथुन, कन्या अने धननो प्रथम अर्ध एटला अंशो सारा (उत्तम) छे, तथा वृष, सिंह, तुला अने मीन एटला अंशो मध्यम छे.

धन अंशनो प्रथम अर्ध एटले ते लग्ननो अढारमो अंश जाणवो. वृष विगेरे अंशोने मध्यम कह्या तेनुं कारण ए छे जे देवनुं अत्यंत पूज्यपणुं छतां पण ते अंशो देवालयना कर्ता तथा प्रतिष्ठा करनारने हानि करनारा छे. एम मध्यम कहेवाथीज सिद्ध थाय छे. बाकीना एटले मेष, कर्क, वृश्चिक, मकर अने कुंभना अंशो तथा धन अंशनो छेल्लो अर्ध भाग अधमज छे. ते विषे नारचंद्रनी टिप्पणीमां कह्युं छे के—

"मेषांशे स्थापितो देवो वह्निदाहभयावहः १ ।
वृषांशे म्रियते कर्ता स्थापकश्च ऋतुत्रये २ ।
मिथुनांशः शुभो नित्यं भोगदः सर्वसिद्धिदः ३ ॥ १ ॥ षट्पदी ॥"

"मेषांशमां देवनी प्रतिष्ठा करवाथी अग्निना दाहरूप भय उत्पन्न थाय छे १, वृषांशमां स्थापना करवाथी प्रतिष्ठाना कर्ता गुरु तथा स्थापना करनारनुं त्रण ऋतुमां एटले छ मासनी अंदर मृत्यु थाय छे २, अने मिथुनांश निरंतर शुभ छे, भोगने आपनार छे, अने सर्व सिद्धिने करनार छे ३."

"कुमारं तु हन्ति कर्कः कुलनाश ऋतुत्रये ।
विनश्यति ततो देवः षड्भिरब्दैर्न संशयः ४ ॥ २ ॥"

"प्रतिष्ठामां जो कर्कांश लीधो होय तो ते कुमारने (प्रतिष्ठा करनारना पुत्रने) हणे छे, अने त्रण ऋतुमां एटले छ मासमां तेना कुळनो नाश थाय छे. त्यारपछी छ वर्षनी अंदर देव (प्रतिमा)नो पण नाश थाय छे, तेमां संशय नथी."

"सिंहांशे शोकसंतापः कर्तृस्थापकशिल्पिनाम् ।
संजायते पुनः ख्याता लोकेऽर्चा सर्वदैव हि ५ ॥ ३ ॥"

"सिंहांशमां स्थापना करवाथी प्रतिष्ठाकारक गुरु, स्थापना करनार अने शिल्पी (कारीगर)ने शोक संताप उत्पन्न थाय छे, परंतु ते प्रतिमा सर्वदा लोकमां प्रसिद्धिने पामे छे—पूजाय छे."

"भोगः सदैव कन्यांशे देवदेवस्य जायते ।
धनधान्ययुतः कर्ता मोदते सुचिरं भुवि ६ ॥ ४ ॥"

"कन्यांशमां प्रतिष्ठा करवाथी सर्वदा देवाधिदेवने भोग (पूजा) प्राप्त थाय छे, अने प्रतिष्ठा करनार धन धान्यथी युक्त थइने चिर काळ सुधी पृथ्वी पर आनंद पामे छे."

"उच्चाटनं भवेत् कर्तुर्बंधश्चैव सदा भवेत् ।
स्थापकस्य भवेन्मृत्युस्तुलांशे वत्सरद्वये ७ ॥ ५ ॥"

"तुलांशमां प्रतिष्ठा करवाथी प्रतिष्ठाकारक गुरुनुं उच्चाटन (नाश) थाय छे, अने निरंतर तेनो बंध थाय छे, तथा बे वर्षनी अंदर प्रतिष्ठा करनारनुं मरण थाय छे."

"वृश्चिके च महाकोपं राजपीडासमुद्भवम् ।
अग्निदाहं महाघोरं दिनत्रये विनिर्दिशेत् ८ ॥ ६ ॥"

---

१ 'मेषांशे स्थापितं बिम्बं वह्निदाहभयावहं ।' इत्यपि प्रत्यन्तरे.

"वृश्चिकांशमां प्रतिष्ठा करी होय तो त्रण दिवसमां राजपीडाथी उत्पन्न थयेलो महाकोप तथा महा भयंकर अग्निनो दाह थाय एम कहेवुं."

"धन्वांशे धनवृद्धिः स्यात् सद्भोगं च सदा सुरैः ।
प्रतिष्ठापककर्तारौ नन्दतः सुचिरं भुवि ए ॥ ७ ॥"

"धनांशमां प्रतिष्ठा करवाथी धननी वृद्धि थाय छे, अने निरंतर देवो पासेथी सारा भोग प्राप्त थाय छे, तथा प्रतिष्ठा करनार अने आचार्य चिर काळ सुधी पृथ्वी पर आनंद पामे छे."

"मकरांशे भवेन्मृत्युः कर्तृस्थापकशिल्पिनाम् ।
वज्राग्न्यस्त्राद्या विनाशस्त्रिभिरब्दैर्न संशयः १० ॥ ८ ॥"

"मकरांशमां प्रतिष्ठा करी होय तो प्रतिष्ठापक आचार्य, प्रतिष्ठा करावनार तथा शिल्पीनुं मृत्यु थाय छे, तथा त्रण वर्षनी अंदर वज्रथी के शस्त्रथी तेनो (बिंबनो) नाश थाय छे, तेमां कांइ पण संशय नथी."

"घटांशे भिद्यते देवो जलपातेन वत्सरात् ।
जलोदरेण कर्ता च त्रिभिरब्दैर्विनश्यति ११ ॥ ए ॥"

"कुंभांशमां प्रतिष्ठा करी होय तो एक वर्षनी अंदर जळना पडवाथी देव (प्रतिमा) भेदाय छे—नाश पामे छे, अने प्रतिष्ठा करनार त्रण वर्षमां जलोदरना व्याधिथी नाश पामे छे."

"मीनांशे त्वर्च्यते देवो वासवाद्यैः सुरासुरैः ।
मनुष्यैश्च सदा पूज्यो विना कारापकेन तु १२ ॥ १० ॥"

"मीनांशमां प्रतिष्ठा करवाथी ते देव (प्रतिमा) इन्द्र विगेरे सुर असुरोए पूजाय छे, तथा करावनार विना बीजा सर्व मनुष्योए पण सदा पूजाय छे, अर्थात् करावनार मरण पामे छे."

रत्नमाळामां तो मंगळने वर्जीने बीजा सर्वे ग्रहोना छ वर्गो प्रतिष्ठामां शुभ कह्या छे.

हवे दीक्षाने विषे लग्नांशो कहे छे.—

व्रताय राशयो द्व्यङ्गाः स्थिराश्चापि वृषं विना ।
मकरश्च प्रशस्याः स्युर्लग्नांशादिषु नेतरे ॥ २१ ॥

अर्थ—दीक्षाने विषे, लग्नमां तथा नवमांशमां द्विस्वभाव राशिओ, वृष विनानी स्थिर राशिओ अने मकर राशि, एटली राशिओ शुभ छे. ते सिवायनी बीजी राशि शुभ नथी. अर्थात् मिथुन, सिंह, कन्या, वृश्चिक, धन, मकर, कुंभ अने मीन, ए आठ राशिओ शुभ छे, बीजी मेष, वृष, कर्क अने तुला ए चार राशिओ लग्नमां, नवांशोमां अने "आदि" शब्द कह्यो छे माटे द्वादशांशमां पण त्याग करवा लायक छे. ते विषे नारचंद्रमां कह्युं छे के—

"भृगोरुदय १ वारां २ श ३ भवने ४ क्षण ५ पञ्चके ।
चन्द्रांशो १ दय २ वारे च ३ दर्शने च ४ न दीक्षयेत् ॥ १ ॥"

"शुक्रनो उदय एटले शुक्र लग्नमां रह्यो होय १, शुक्रवार २, लग्नमां शुक्रनो नवांशो ३, शुक्रनुं भवन वृष अने तुला ४, तथा शुक्रनुं ईक्षण एटले संपूर्ण दृष्टिवडे शुक्र लग्नने के सातमा स्थानने जोतो होय ५, आ पांच वखते दीक्षा देवी नहीं. तथा चंद्रनो अंश-चंद्रनो नवांशो १, चंद्रनो उदय एटले चंद्र लग्नमां रह्यो होय २, चंद्रनो वार-सोमवार ३, तथा चंद्रनुं दर्शन ४, आ चार वखते दीक्षा लग्न देवुं नहीं." ए प्रमाणे छ वर्गनी शुद्धि जाणवी. तथा—

"जीवमन्दबुधार्काणां षड्वर्गो वारदर्शने ।
शुभावहानि दीक्षायां न शेषाणां कदाचन ॥ १ ॥"

"गुरु, शनि, बुध अने सूर्यनो षड्वर्ग, वार अने दर्शन एटले दृष्टि, एटलां दीक्षाने विषे शुभ छे, अने बीजा (चंद्र, मंगळ अने शुक्र)ना षड्वर्गादिक कदापि शुभ नथी." वळी हर्षप्रकाशमां तो वृषांश शुक्रवारे होय तोपण ते वर्गोत्तम होवाथी शुभ कह्यो छे. कह्युं छे के—

"मेसविसाणं मुत्तूण सेसरासीण पंचमे अंसे ।
न य दिक्खिज्ज जओ सो विणसइ तह तह पओगाओ ॥ १ ॥"

"मेष अने वृषना पांचमा अंश विना बीजी राशिओना पांचमा अंशमां दीक्षा देवी नहीं, कारण के ते तथा तथा प्रयोगथी नाश पामे."

हवे विवाहमां लग्न अने अंश विगेरे कहे छे.—

विवाहे नाग्रहः कोऽपि लग्नानामिह केवलम् ।
नवांशा धनुराद्यार्धयुग्मकन्यातुलाः शुभाः ॥ २२ ॥

अर्थ—विवाहने विषे लग्ननो कांइ पण आग्रह नथी. अहीं तो केवळ धननो पूर्वार्ध, मिथुन, कन्या अने तुला एटली राशिना नवांशोज शुभ छे.

आग्रह एटले अमुक लग्नो ग्रहण करवां अने अमुक लग्नो त्याग करवां एवो जे नियम ते * आग्रह कहेवाय छे. जेम प्रतिष्ठा अने दीक्षामां लग्न संबंधी नियम छे तेम विवाहमां खास नियम नथी. केवळ आ विवाहना विषयमां गमे ते लग्न हो, परंतु नवांशो तो उपर कहेलाज मनुष्य जाति होवाथी ग्रहण करवा. बीजा ग्रहण करवा नहीं. रत्नमाळाभाष्यमां कह्युं छे के—"मनुष्यांशेभ्योऽन्यत्रासती दरिद्रा च स्यात्" "मनुष्य जातिना अंशोथी अन्य अंशोमां विवाह करवाथी ते स्त्री असती अने दरिद्र थाय छे." वळी केटलाक कहे छे के—"धनुषि पराभवयुक्ता" "धनांश लग्न करवाथी

परणेली स्त्री पराजवे करीने युक्त थाय छे," परंतु ग्रंथकारना मतमां तो धननो उत्तरार्धज विरुद्ध छे, अने पूर्वार्ध तो मनुष्य जाति छे, तेथी शुज छे. वळी रत्नमाळामां तो लग्ननो पण नियम आ प्रमाणे कह्यो छे.—

"कन्या नृयुग्मं च वणिग्विलग्ने, स्थितो विवाहः शुजमादधाति ।"

"जो लग्नमां कन्या, मिथुन के तुला राशि रही होय तो तेमां करलो विवाह शुजकारक छे." आ लग्नोमां पण नवांशानो नियम उपर कह्या प्रमाणेज जाणवो. ते विषे जास्कर कहे छे के—

"निन्द्येऽपि लग्ने द्विपदांश इष्टः, कन्यादिलग्नेष्वपि नान्यजागः ।"

"लग्न निंद्य (अशुज) होय तोपण मनुष्यना नवांशाज इष्ट छे, अने कन्यादिक शुज लग्नोमां पण बीजो (मनुष्य सिवायनो) अंश इष्ट नथी." वळी व्यवहारप्रकाशमां तो आ प्रमाणे कहे छे.—

"धन्वांशो न बुधास्ते जौमास्ते नो तुलांशकः कार्यः ।
न तुलांशश्चरलग्ने देयस्तुलमकरसंस्थेन्दौ ॥ १ ॥"

"बुधनो अस्त होय तो धननो नवांशो लेवो नहीं, मंगळनो अस्त होय त्यारे तुलनो अंश देवो नहीं, अने तुल तथा मकरनो चंद्र होय त्यारे चर लग्नमां तुलनो अंश देवो नहीं."

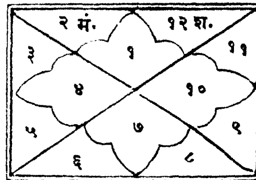
हवे सर्व (त्रणे) प्रकारनां लग्नने विषे साधारण नियम कहे छे.—

त्रिष्वपि क्रूरमध्यस्थौ शुक्रक्रूराश्रितद्युनौ ।
नेष्टौ लग्नविधू केन्द्रस्थितसौम्यौ तु तौ मतौ ॥ २३ ॥

अर्थ—त्रणे (प्रतिष्ठा, दीक्षा अने विवाह)ने विषे बे क्रूर ग्रहनी मध्यमां (वच्चे) जो लग्न के चंद्र रहेलो होय तो ते इष्ट (शुज) नथी. तथा लग्न के चंद्रथी सातमुं स्थान शुक्र के क्रूर ग्रहे आश्रित कर्युं होय तो ते पण इष्ट नथी, परंतु जो लग्न के चंद्रथी केंद्रनां चारे स्थानमां सौम्य ग्रहो रह्या होय तो ते (लग्न अने चंद्र) इष्ट छे.

त्रणेने विषे एटले प्रतिष्ठा, दीक्षा अने विवाहने विषे बे क्रूर ग्रहनी मध्यमां रहेला जो लग्न के चंद्र होय एटले के लग्ननी बन्ने बाजुए एटले बीजा अने बारमा स्थानने विषे क्रूर ग्रहो होय, अने तेज रीते चंद्रनी पण बन्ने बाजुए क्रूर ग्रहो होय तो आ बन्ने प्रकारे क्रूर कर्तरी कहेवाय छे. आ प्रत्येक क्रूर कर्तरी त्रण त्रण प्रकारनी छे—अति दुष्टा १, दुष्टा २ अने अल्प दुष्टा ३. तेमां जो धन एटले बीजा स्थानमां रहेलो क्रूर ग्रह वक्री होय, अने व्यय (बारमा)स्थानमां रहेलो क्रूर ग्रह मध्यम गतिवाळो होय तो

बन्ने बाजुथी संघट्टो थवाथी (लग्ननी साथे अथडावाथी) ते क्रूर कर्तरी अति दुष्ट कहेवाय छे. तेनी स्थापना आ प्रमाणे.—



ज्यारे व्यय (बारमा)स्थानमां रहेलो क्रूर ग्रह अतिचारवाळो (शीघ्र गतिवाळो) होय त्यारे ते क्रूर कर्तरी विशेषे करीने अति दुष्ट जाणवी, केमके तेनो संघट्टो शीघ्रपणे थाय छे माटे. १. ज्यारे धन (२) अने व्यय (१२) बन्ने स्थानमां रहेला क्रूर ग्रहो मध्य गतिवाळा होय, अथवा ते बन्ने स्थानमां रहेला क्रूर ग्रहो वक्र गतिवाळा होय तो ते क्रूर कर्तरी मध्यम दुष्ट छे, कारण के लग्नने एक बाजुथीज संघट्टो थाय छे. २. परंतु ज्यारे धन (२) स्थानमां रहेलो क्रूर ग्रह मध्यम गतिवाळो होय अने व्यय (१२) स्थानमां रहेलो वक्री होय त्यारे ते क्रूर कर्तरी अल्प दुष्ट जाणवी, कारण के ते बन्ने बाजुनी कर्तरीनो वियोग थाय छे. तेमां पण जो धन (२) स्थानमां रहेलो क्रूर ग्रह अतिचारी (शीघ्र गतिवाळो) होय तो ते विशेषे करीने अल्प दुष्ट छे, कारण के तेनो शीघ्रपणे वियोग थाय छे. ३. आनी भावना उपर आपेली स्थापनाने विषे स्वयं करी लेवी. एज प्रमाणे चंद्रनी बन्ने बाजुए क्रूर ग्रहो रहेला होय तो तेनी पण त्रणे प्रकारनी क्रूर कर्तरी जाणी लेवी. अहीं आ प्रमाणे विशेष छे—

"क्रूरग्रहस्यान्तरगा तनुर्भवेन्मृतिप्रदा शीतकरश्च रोगदः ।
शुभैर्धनस्थैरथवाऽन्त्यगे गुरौ, न कर्तरी स्यादिह भार्गवा विदुः ॥ १ ॥"

"त्रिकोणकेन्द्रगो गुरुस्त्रिलाभगो रविर्यदा ।
तदा न कर्तरी भवेज्जगाद बादरायणः ॥ २ ॥"

"बे क्रूर ग्रहनी मध्ये लग्न रह्युं होय तो ते (कर्तरी) मृत्युने करे छे, अने चंद्र रह्यो होय तो ते रोगने करे छे, परंतु धन (२) स्थानमां शुभ ग्रह रह्या होय अथवा बारमा स्थानमां गुरु रह्यो होय तो कर्तरी थती नथी एम भार्गव कहे छे. (१). ज्यारे त्रिकोणमां के केंद्रमां गुरु रह्यो होय, अने त्रीजा तथा अगीयारमा स्थानमां रवि रह्यो होय त्यारे पण कर्तरी थती नथी एम बादरायण (व्यास) कहे छे. २."

वळी जो कदाच बीजुं लग्न नहीं मळवाथी क्रूर कर्तरीनो त्याग थइ शके तेम न होय तो लग्ननी बन्ने बाजुना पंदर पंदर त्रिंशांशोनी अंदर जो क्रूर ग्रहो आवता होय तो ते

क्रूर कर्तरी अवश्य तजवा योग्य छे. एज रीते चंद्रना. विषयमां पण जाणवुं. ते विषे व्यवहारप्रकाशमां कह्युं छे के—

"पूर्वे पश्चात् पापात्तिथ्यंशा १५ घाटमध्यगश्चन्द्रः ।
वर्जयितव्या योगे यस्माद्राश्यंशरश्मियुतिः ॥ १ ॥"

"चंद्रनी पूर्वे अने पछीना पंदर अंशोनी अंदर जो पाप ग्रहरूपी कर्तरी होय तो ते वर्जवी, कारण के ते राशि अने अंशनी कळानी युति कहेवाय छे."

मूळ श्लोकमां शुक्रक्रूर० एम कह्युं छे तेनो अर्थ आ प्रमाणे छे—लग्नथी के चंद्रथी जो सातमा स्थानमां शुक्र के क्रूर ग्रह होय तो ते जामित्र नामनो दोष कहेवाय छे. ते विषे सारंग कहे छे के—

"उदयात्सप्तमसंस्थे शुक्रे सूर्येऽथवा शनौ राहौ ।
वैधव्यं क्षितितनये सप्तमगे कन्यका म्रियते ॥ १ ॥"

"लग्नथी सातमे स्थाने शुक्र, सूर्य, शनि के राहु रह्यो होय तो ते स्त्रीने विधवापणुं प्राप्त थाय छे, अने सातमे स्थाने मंगळ रह्यो होय तो ते विवाहित कन्या मरण पामे छे." तथा—

"सुक्कं १ गारय २ मंदाण ३ सत्तमे ससहरे गहिअदिक्खो ।
पीडिज्जए अवस्सं सत्थ १ कुसील्लत्त २ वाहीहिं ३ ॥ १ ॥"

"शुक्रथी सातमे स्थाने चंद्र होय तो तेवा लग्नमां दीक्षित थयेलो शस्त्रवडे अवश्य पीडा पामे छे, मंगळथी सातमो चंद्र होय तो कुशीळपणाथी पीडाय छे, अने शनिथी सातमो चंद्र होय तो व्याधिथी पीडाय छे" एम लग्नशुद्धिमां कह्युं छे. तथा—

"शुक्रार्कशनिभौमानां सप्तमेन्दौ विवाहिता ।
ससापत्न्या १ च विधवा २ निष्पुत्रा ३ स्वैरिणी ४ क्रमात् ॥ १ ॥"

"शुक्रथी सातमे चंद्र होय तेवे समये कन्यानो विवाह कर्यो होय तो ते सपत्नी (शोक्य)वाळी थाय छे, सूर्यथी सातमो चंद्र होय तो ते विधवा थाय छे, शनिथी सातमो चंद्र होय तो ते पुत्ररहित थाय छे, अने मंगळथी सातमे स्थाने चंद्र होय तो ते कुलटा थाय छे" एम दैवज्ञवल्लभमां कह्युं छे. अहीं कोइ ठेकाणे राहुने माटे कांइ विशेष कह्युं नथी, तेथी तेनुं फळ शनिनी प्रमाणे जाणवुं. विशेष ए छे के—

"द्वौ ग्रहौ यदि जामित्रे क्रूरौ सौम्यौ च संस्थितौ ।
अब्दत्रयेण दारिद्र्यं कन्या प्राप्नोति दारुणम् ॥ १ ॥"

"जो जामित्र स्थानमां बे क्रूर ग्रहो अने बे सौम्य ग्रहो रहेला होय तो ते कन्या त्रण वर्षमां भयंकर दारिद्र्य पामे छे" एम दैवज्ञवल्लभमां कह्युं छे.

मूळ श्लोकमां जे शुक्रक्रूर० कह्युं छे तेनो अपवाद मूळ श्लोकमांज केन्द्रस्थित० ए विगेरे पदोथी कहे छे.—लग्नथी अने चंद्रथी जो चारे केन्द्रस्थानमां सौम्य ग्रहो होय तो शुक्र के क्रूर ग्रहे आश्रय करेला सातमा स्थानवाळा लग्न अने चंद्र शुभ मानेला छे, एटले के कोइक वखत आदर करवा लायक पण छे. वळी सारंग तो चंद्रथी केन्द्र-स्थानमां रहेला क्रूर ग्रहनो दोष आ प्रमाणे कहे छे.—

"लग्ना १ म्बु २ सप्त ३ व्योम ४ स्थो भवेत्क्रूरग्रहो विधोः ।
आपीडा १ चैव संपीडा २ भृग्वाद्या ३ वर्तिताः ४ क्रमात् ॥ १ ॥
आत्मनो १ बन्धुवर्गस्य २ जायायाः ३ कर्मणः ४ क्रमात् ।
विनाशो जायते नूनं तद्वेलाकार्यकारिणः ॥ २ ॥"

"चंद्रथी पहेले १, चोथे २, सातमे ३ अने दशमे ४ स्थाने जो क्रूर ग्रह रह्यो होय तो ते अनुक्रमे आपीडा १, संपीडा २, भृग्वादिक ३ अने वर्तिता ४ एवे नामे कहेवाय छे. ते वेळाए कार्य करवाथी अनुक्रमे पोतानो १, बंधुवर्गनो २, स्त्रीनो ३ अने कर्मनो ४ नाश थाय छे." एटले के चंद्रथी पहेले स्थाने क्रूर ग्रह होय तो ते आपीडा कहेवाय छे, अने तेनुं फळ आत्मानो नाश छे. विगेरे.

अहीं कोइने शंका थाय के— आ स्थळे लग्न अने चंद्रना गुण तथा दोष सरखा केम कह्या ? आ शंकानो जवाब ए छे जे—

"लग्नबलाच्छरीरं चन्द्रबलान्मानसं ग्रहाः सर्वे ।
दद्युर्भावाश्रयजं शुभमशुभं वा फलं नियमात् ॥ १ ॥"

"सर्वे ग्रहो लग्नना बळथी शरीर संबंधी अने चंद्रना बळथी मन संबंधी भावना आश्रयथी उत्पन्न थतुं शुभ अथवा अशुभ फळ अवश्य आपे छे" एम व्यवहार-प्रकाशमां कह्युं छे.

हवे चंद्रथी सातमा स्थानमां रहेला क्रूर ग्रहथी उत्पन्न थता जामित्र नामना दोषनो भंग कहे छे.

गुरुर्बुधश्च शीतांशुसप्तमक्रूरदोषहृत् ।
पुष्टयेन्दुं दृशा पश्यन् लग्न१खा१०म्बु४त्रिकोण९-५गः॥ २४॥

अर्थ—लग्नमां, दशमा स्थानमां, चोथा स्थानमां के त्रिकोण (९-५)मां रहेलो गुरु अथवा बुध जो पुष्ट दृष्टिए करीने चंद्रने जोतो होय तो ते चंद्रथी सातमा स्थानमां रहेला क्रूर ग्रहथी उत्पन्न थता दोषने हरण करे छे. अहीं पुष्ट दृष्टिए करीने एटले संपूर्ण दृष्टिए अथवा त्रिपाद दृष्टिए करीने एम जाणवुं.

हवे दीक्षासमये चंद्रनी साथे रहेला बीजा ग्रहोनुं फळ कहे छे.—

दीक्षायां कुरुते चन्द्रः क्रमाद्भौमादिभिर्युतः ।
कलिं १ भियं २ मृतिं ३ नैःस्व्यं ४ विपदं ५ भूमिभृद्भयम् ६ ॥ २५ ॥

अर्थ—दीक्षासमये जो चंद्र मंगळनी साथे रह्यो होय तो ते क्लेशने करे छे, बुधनी साथे रह्यो होय तो भयने करे छे, गुरुनी साथे रह्यो होय तो मृत्युने करे छे, शुक्रनी साथे होय तो निर्धनपणुं करे छे, शनिनी साथे होय तो विपत्तिने करे छे, अने सूर्यनी साथे रह्यो होय तो ते राजभय उत्पन्न करे छे.

मंगळथी आरंभीने सूर्य सुधी अनुक्रमे क्लेश विगेरे उपर कहेलां फळो जाणवां. विशेष ए छे जे "नीचेऽस्तं वाप्ते०" (विमर्ष ५, श्लोक ३) ए ठेकाणे ग्रहोना अस्तमयना विषयमां जे काळांशो कहेला छे तेमना अर्ध भागमां जो ग्रहोनो योग होय तो ते योग दूषित छे, अने जो ते ग्रहो ते काळना अर्ध विभागने पाम्या न होय अथवा तेने उल्लंघन करी गया होय तो कहेला दोषो उत्पन्न थाय खरा, परंतु ते दोषो पाछा निवृत्ति पण पामे छे. ते विषे शौनक कहे छे के—

"योगा यथोक्तफलदाः कालार्धविभागसंश्रितानां तु ।
अप्राप्तातीतानामिच्छामात्रं फलं तेषाम् ॥ १ ॥"

"काळना अर्ध विभागने आश्रय करेला (पामेला) ग्रहोना योगो कह्या प्रमाणे फळने आपनारा होय छे, परंतु ते अर्ध विभागने पाम्या न होय अथवा तेने उल्लंघन करी गया होय तो ते योगोनुं फळ इच्छामात्रज छे."

हवे विवाह अने दीक्षा ए बन्नेनो साधारण नियम कहे छे.—

विवाहदीक्षयोर्लग्ने द्यूनेन्दू ग्रहवर्जितौ ।
शुभौ केचित्तु जीवज्ञयुक्तमिन्दुं शुभं विदुः ॥ २६ ॥

अर्थ—विवाह तथा दीक्षाना लग्नमां सातमुं स्थान तथा चंद्र ए बन्ने स्थान ग्रहे करीने रहित होय तो ते शुभ छे. केटलाएक तो गुरु अने बुधे करीने युक्त एवो चंद्र होय तो तेने शुभ कहे छे.

सातमुं स्थान ग्रहे करीने रहित होय तो ते शुभ छे. तेने माटे सप्तर्षि कहे छे के—

"वैधव्यं १ सापत्न्यं २ वन्ध्यात्वं ३ निष्प्रजत्वं ४ दौर्भाग्यम् ५ ।
वेश्यात्वं ६ गर्भच्युति ७ रर्काद्या लग्नतोऽस्तगाः कुर्युः ॥ १ ॥"

"लग्नथी सातमे स्थाने सूर्य रहेलो होय तो ते विवाहित थयेली कन्याने विधवापणुं करे छे, चंद्र रह्यो होय तो सपत्नी (शोक्य)ने करे छे, मंगळ रह्यो होय तो वंध्यापणुं करे छे, बुध रह्यो होय तो प्रजारहितपणुं (वंध्यापणुं) करे छे, गुरु रह्यो होय तो दुर्भाग्यपणुं करे छे, शुक्र रह्यो होय तो वेश्यापणुं करे छे, अने शनि रह्यो होय तो गर्भपात करे छे."

चंद्र पण एकलोज रह्यो होय तो ते शुभ छे. केटलाएक बुध अने गुरु सहित एवा चंद्रने शुभ कहे छे, कारण के तेओ बुध अने गुरु सिवायना बीजा ग्रहोनी साथे रहेला चंद्रनुं फळ आ प्रमाणे कहे छे.—

"रविणा १ सणि २ भोमेहिं ३ सुक्क ४ केऊहिं ५ राहुणा ६ ।
एगरासिगए चंदे जुइदोसो पवुच्चइ ॥ १ ॥
दरिद्दा १ समणी २ चेव मरणं ३ ससवत्तिआ ४ ।
कवालिणी अ ५ दुस्सीला ६ कमा नारी विवाहिआ ॥ २ ॥"

" चंद्र जे राशिमां (स्थानमां) रह्यो होय तेज राशिमां जो रवि १, शनि २, मंगळ ३, शुक्र ४, केतु ५ के राहु ६ रह्यो होय तो ते युति दोष कहेवाय छे. ते युति दोषमां विवाहित थयेली नारी अनुक्रमे आ प्रमाणे फळ पामे छे.—रविनी युति होय तो ते स्त्री दरिद्र थाय छे १, शनिनी युति होय तो ते साध्वी थइ जाय छे २, मंगळनी युति होय तो ते मरण पामे छे ३, शुक्रनी युति होय तो ते सपत्नीवाळी थाय छे ४, केतुनी युति होय तो ते कापालिनी (परिव्राजिका) थाय छे ५, अने राहुनी युति होय तो ते कुशीळवाळी (कुलटा) थाय छे ६."

शुक्र अने चंद्रनी युति विवाहने विषे सर्वथा त्याग करवा योग्य छे एम व्यवहारसारमां कह्युं छे, पण सत्यसूरि तो आ प्रमाणे कहे छे.—

"अन्यर्क्षेऽन्यगृहे वा कुजबुधगुरुशुक्रशौरिभिः सार्धम् ।
न भवति दोषाय शशी प्रदक्षिणं याति यदि चैषाम् ॥ १ ॥"

"अन्य नक्षत्रमां के अन्य स्थानमां मंगळ, बुध, गुरु, शुक्र के शनिनी साथे चंद्रमा रह्यो होय, अने वळी जो ते चंद्र ते मंगळादिकनी दक्षिण (जमणी) बाजुए चालतो होय तो ते चंद्र दोषने माटे नथी."

विशेषमां दैवज्ञवल्लभ कहे छे के—"द्व्याद्यैः क्रूरैर्युते चन्द्रे व्यसुः प्रव्रजितः शुभैः ।" "बे अथवा तेथी अधिक क्रूर ग्रहोए करीने अथवा सौम्य ग्रहोए करीने युक्त एवो चंद्र होय त्यारे जो दीक्षा लीधी होय तो ते मरण पामे छे."

उपर त्रेवीशमा श्लोकमां लग्नथी के चंद्रथी सातमा स्थानमां शुक्र के क्रूर ग्रह रह्यो होय तो तेने जामित्र दोष कह्यो छे, ते दोषनो मतांतरे करीने अपवाद (भंग) कहे छे.—

पञ्चपञ्चाशमेवांशं जामित्रं परमं परे ।
अंशादुज्झन्ति लग्नेन्द्वोर्गर्हितग्रहदूषितम् ॥ २७ ॥

अर्थ—केटलाक आचार्यो कहे छे के लग्न अने चंद्रनो जे अंश कार्य वखते अधि-

कार कर्यो होय ते अंशथी पंचावनमोज अंश निंदित (शुक्र के क्रूर) ग्रहे करीने दूषित होय तो ते परम जामित्र नामनो दोष छे, माटे तेनो त्याग करवो.

लग्न अने चंद्रना अधिकार करेला अंशथी पंचावनमोज अंश निंदित ग्रहे करीने युक्त होय तो ते निंदित ग्रहनाज कारणथी परम जामित्र नामनो दोष थाय छे, माटे तेनेज केटलाक आचार्यो तजे छे—तजवानुं कहे छे. भावार्थ ए छे जे—जेटलामो नवांशो लग्नने विषे अधिकार (स्वीकार) कर्यो होय तेटलामोज सातमा स्थाननी राशिमां रहेलो नवांशो पंचावनमो होय छे. तेज रीते चंद्र पण जे राशिमां जेटलामा नवांशामां होय ते राशिथी सातमी राशिनो तेटलामो नवांशो चंद्रना नवांशाथी पंचावनमो होय छे, तेथी लग्नना अंशथी अथवा चंद्रना अंशथी पंचावनमा नवांशामां जो क्रूर ग्रह के शुक्र होय तो ते परम जामित्र नामनो दोष थाय छे. जेम मेष राशिना पहेला अंशमां लग्न अथवा चंद्र होय अने तुलाना पहेला अंशमां क्रूर ग्रह के शुक्र होय, अथवा मेषना बीजा अंशमां लग्न के चंद्र होय अने तुलाना पण बीजा अंशमां क्रूर ग्रह के शुक्र होय, अथवा एज रीते त्रीजा, चोथा विगेरे अंशोमां ते ते प्रमाणे होय तो ते अवश्य तजवा योग्य छे. कह्युं छे के—

"लग्नेन्दुसंयुतादंशात् पञ्चपञ्चाशदंशके ।
ग्रहोऽन्यो यद्यसौ दोषो न गुणैरपि हन्यते ॥ १ ॥"

"लग्न के चंद्रना अधिकार करेला अंशथी पंचावनमा अंशने विषे जो कोइ ग्रह आवतो होय, अने जो ते दोषरूप थतो होय तो ते दोष बीजा गुणोए करीने पण हणातो नथी" एम दैवज्ञवल्लभमां कह्युं छे, परंतु जो पंचावनमा अंशथी न्यून अथवा अधिक अंशे शुक्र के क्रूर ग्रह होय तो ते जामित्र नामनोज दोष कहेवाय छे, पण ते परम जामित्र थतो नथी. जेमके मेष राशिना त्रीजा अंशमां लग्न के चंद्र होय, अने तुलाना पहेला के बीजा अंशमां शुक्र के क्रूर ग्रह होय त्यारे ते त्रेपनमो के चोपनमो अंश थयो, अने ज्यारे मेषना पहेला अंशमां लग्न के चंद्र होय, अने तुलाना बीजा, त्रीजा के चोथा अंशमां क्रूर ग्रह के शुक्र होय त्यारे ते मेषना पहेला अंशथी छप्पनमो, सत्तावनमो के अट्ठावनमो अंश थयो. विगेरे स्थळे केवळ जामित्र दोष थाय छे, अने आ दोष अत्यंत दुष्ट नथी एवो तेनो मत छे. आ मत घणाने पण संमत छे.

हवे प्रतिष्ठाने आश्रीने ग्रहोनी युति अने दृष्टिनुं फळ कहे छे—

स्थापने स्युर्विधौ युक्ते दृष्टे चाऽऽरादिभिः क्रमात् ।
अग्निभी १ ऋद्धि २ सिद्धार्चा ३ श्री ४ पञ्चत्वा ५ ग्निभीतयः ६ ॥ २७ ॥

अर्थ—प्रतिष्ठाने विषे जो चंद्र मंगळे करीने युक्त अथवा दृष्ट (जोयेलो) होय तो अग्निनो भय थाय १, बुधे करीने युक्त के दृष्ट होय तो समृद्धि प्राप्त थाय २, गुरुए करीने युक्त के दृष्ट होय तो सिद्धार्चा एटले प्रतिमा अधिष्ठायक देव सहित (प्रभाव-वाळी) थाय ३, शुक्रे करीने युक्त के दृष्ट होय तो लक्ष्मी प्राप्त थाय ४, शनिए करीने युक्त के दृष्ट होय तो मृत्यु थाय ५, अने रविए करीने युक्त के दृष्ट होय तो अग्निनो भय थाय ६. वळी "गुरुणा सर्वपूजिता–" "चंद्र जो गुरुए करीने युक्त के दृष्ट होय तो ते प्रतिमा सर्वने पूजवा लायक थाय छे" एम दैवज्ञवल्लभमां कह्युं छे. आ श्लोकमां सामान्यथी दृष्टि शब्द कह्यो छे, तोपण पुष्ट एटले संपूर्ण अथवा त्रिपाद दृष्टि जाणवी.

हवे सर्व शुभ कार्यनां लग्नोमां साधारण रीते तजवा योग्य समय छ श्लोके करीने कहे छे.–

जन्मराशिं जनेर्लग्नं ताभ्यामन्त्यं तथाऽष्टमम् ।
लग्नलग्नांशयोश्चेशौ लग्नात् षष्ठाष्टमौ त्यजेत् ॥ ३९ ॥

अर्थ—जन्मनी राशिने, जन्मना लग्नने, ते बन्नेथी बारमा तथा आठमा (लग्न)ने, तथा लग्न अने लग्नांशना स्वामीओ जो लग्नथी छठ्ठे के आठमे होय तो तेने तजवा.

जन्मनी राशिने तजवी एटले जन्मनी जे राशि होय ते राशि लग्नकुंडळीमां पहेला भुवनमां आववी न जोइए, अने ते जन्मराशि दीक्षामां शिष्यनी, प्रतिष्ठामां स्थापक अने शिल्प ए बन्नेनी तथा विवाहमां वर अने कन्या ए बन्नेनी तजवानी छे. ए प्रमाणे आगळ पण सर्वत्र जाणवुं. जन्मनुं लग्न अहीं वर्जवानुं कह्युं छे, परंतु नारचंद्रमां ते वर्ज्युं नथी. जन्मराशि अने जन्मलग्नथी बारमा तथा आठमा लग्नने अहीं वर्जवानां कह्यां छे ते प्रमाणे कोइए चोथाने पण वर्जवानुं कह्युं छे. ते विषे व्यवहारप्रकाशमां कह्युं छे के–

"दम्पत्योरुपचयभं जन्मर्क्षादुदयतश्च शुभलग्नम् ।
निधनं व्ययं च हिबुकं नेष्टं शेषाणि मध्यानि ॥ १ ॥"

"वर वहुनी जन्मराशिथी तथा जन्मलग्नथी उपचय (३–६–११)स्थानमां रहेली राशि जो विवाहसमये लग्नमां होय तो ते शुभ लग्न छे, अने आठमा, बारमा के चोथा स्थाननी राशि जो लग्नमां होय तो ते अशुभ छे, अने बाकीनां लग्नो मध्यम छे." तथा–

"चतुर्थद्वादशे कार्ये लग्ने बहुगुणे यदि ।
अष्टमं तु न कर्तव्यं यदि सर्वगुणान्वितम् ॥ १ ॥"

"जो चोथुं अने बारमुं लग्न घणा गुणवाळुं होय तो ते करवा लायक छे–शुभ छे, परंतु जो आठमुं लग्न सर्व गुणे करीने युक्त होय तोपण ते करवा लायक नथी" एम गर्ग कहे छे. विशेष ए छे जे—

"अष्टमर्क्षोदयोद्भूतदोषो नश्यति भावतः ।
लग्नेशाष्टमराशीशौ मिथो मित्रे यदा तदा ॥ १ ॥"

"जो लग्ननो स्वामी अने आठमी राशिनो स्वामी परस्पर मित्र होय तो आठमी राशिथी अने लग्ननी राशिथी उत्पन्न थयेलो दोष जावथी नाश पामे छे" एम बृहस्पति कहे छे.

"तथा चतुर्थं रिष्पं वा मित्रत्वेन शुभं स्मृतम् ।
गुरुणा भृगुणा केन्द्रत्रिकोणस्थेन चेक्षितम् ॥ १ ॥"

"तथा चोथुं अने बारमुं लग्न परस्पर मित्रपणाए करीने युक्त होय, अने केन्द्र के त्रिकोणमां रहेला गुरु के शुक्रनी तेना पर दृष्टि पडती होय तो ते शुभ कहेलुं छे" एम सारंग कहे छे. तथा—

"होराष्टमं जन्मगृहाष्टमं वा, लग्नं शुभं ज्ञेज्यसितेक्षितं चेत् ।"

"जो आठमी होरानुं लग्न होय के जन्मना स्थानथी आठमा स्थाननी राशिनुं लग्न होय, अने तेना पर जो बुध, गुरु के शुक्रनी दृष्टि पडती होय तो ते लग्न शुभ छे" एम केशव कहे छे. तथा—

"जन्मगृहजन्मभाभ्यामष्टमभवनं मृतिप्रदं लग्ने ।
व्ययहिबुककेन्द्रसंस्थैः शुभग्रहैः शोभनं बलिभिः ॥ १ ॥"

"जन्मनी राशिथी के जन्मना ग्रहथी आठमुं भवन जो लग्नमां होय तो ते मृत्यु आपनारुं छे, परंतु जो बारमा, चोथा के केन्द्रस्थानमां बळवान् शुभ ग्रहो होय तो ते शुभ छे" एम व्यवहारप्रकाशमां कह्युं छे.

मूळ श्लोकमां लग्नलग्नांशयोश्च ए पदमां च शब्द लख्यो छे, तेथी द्रेष्काणनो स्वामी पण लग्नथी छठ्ठे के आठमे होय तो ते पण तजवा योग्य छे. ते विषे लल्ल कहे छे के—

"लग्नस्थेऽपि गुरौ दुष्टः षष्ठस्थो लग्ननायकः ।"

"लग्नमां गुरु रह्यो होय तोपण जो लग्ननो स्वामी छठ्ठा स्थानमां रह्यो होय तो ते दुष्ट-अशुभ छे." लक्ष्मीधर पण कहे छे के—

"विलग्नाधिपतौ षष्ठे वैधव्यं स्यात्तथांशपे ।
द्रेष्काणाधिपतौ मृत्युर्विलग्ने बलवत्यपि ॥ १ ॥"

"लग्ननो स्वामी तथा नवांशानो स्वामी जो छठे स्थाने रह्यो होय तो विधवापणुं प्राप्त थाय छे, अने द्रेष्काणनो स्वामी छठे होय तो लग्न बळवान् छतां पण मृत्यु थाय छे."

लग्ननो स्वामी आठमे स्थाने होय तो ते अशुभज छे, तेथी पण (ते करतां पण) जो आठमा भवनमां रहेलो लग्ननो स्वामी लग्नना द्रेष्काणथी बावीशमा द्रेष्काणमां होय तो ते घणोज अशुभ छे. वळी जो लग्ननो स्वामी अने आठमा भवननो स्वामी एकज द्रेष्काणमां रह्या होय तो ते करतां पण अत्यंत वधारे अशुभ छे. लग्नना, नवमांशना

अने द्रेष्काणना स्वामी जो छठे के आठमे रह्या होय तो तेनुं फळ रत्नमालाभाष्यमां आ प्रमाणे कह्युं छे.—

"वर्षमासदिनैर्गेहद्रेष्काणनवमांशपाः ।
राशिमानेन दास्यन्ति फलमित्याह शौनकः ॥ १ ॥"

"छठे के आठमे स्थाने रहेलो लग्ननो स्वामी राशिने अनुसारे एटले जेटलामी राशि होय तेटली संख्यावाळा वर्षे करीने तेनुं फळ आपे छे, एज प्रमाणे द्रेष्काणनो स्वामी तेटले मासे अने नवमांशनो स्वामी तेटला दिवसे करीने फळ आपे छे एम शौनक कहे छे."

मूळ श्लोकमां षष्ठाष्टमौ कह्युं छे. तेना उपलक्षणथी बारमा स्थानमां रहेलो लग्ननो स्वामी पण शुभ नथी, तेथी करीने लग्ननो अने लग्नांशनो स्वामी छठे, आठमे के बारमे होय तो ते शुभ नथी एम सिद्ध थयुं. तेनो अपवाद आ प्रमाणे छे.—वृश्चिक लग्न के वृश्चिकनो नवमांश ग्रहण कर्यो होय तो तेनो स्वामी मंगळ जो मेष राशिमां रह्यो होय तो कांइ पण दोष नथी, केमके ते बन्नेनो स्वामी (मंगळ) एकज छे. एज रीते वृषनुं लग्न अथवा तेनो अंश ग्रहण कर्यो होय त्यारे तेनो स्वामी शुक्र जो तुलामां रह्यो होय, तथा कुंभ लग्न अथवा तेनो अंश ग्रहण कर्यो होय त्यारे तेनो स्वामी शनि जो मकरमां रह्यो होय तो बन्नेनो स्वामी एक होवाथी कांइ पण दोष नथी. कह्युं छे के—

"न वृश्चिकं हन्ति कुजोऽजवर्ती, वृषं न शुक्रोऽपि तुलाधरस्थः ।
तथैव कुंभं रविजो न हन्ति, मृगस्थितो वा तनुगं व्ययस्थः ॥ १ ॥"

"मेष राशिना लग्नमां रहेलो मंगळ वृश्चिकने हणतो नथी, तुला राशिना लग्नमां रहेलो शुक्र वृषने हणतो नथी, तथा मकर राशिरूप व्यय (१२)स्थानमां रहेलो मंगळ पहेला स्थानमां रहेला कुंभने हणतो नथी." वळी आज युक्तिए करीने मेष के तुला राशिमां जन्मलग्न के जन्मराशि होय तो ते मेष अने तुलाथी आठमा रहेला वृश्चिक अने वृष पण लग्नपणे ग्रहण करवामां आवे तो ते दोषने माटे नथी. ते विषे विवाहवृंदावनमां कह्युं छे के—

"व्यलिवृषं जननर्क्षविलग्नयोर्भवनमष्टममभ्युदितं त्यजेत् ।"

"जन्मराशि अने जन्मलग्नने विषे (मध्ये) वृश्चिक अने वृष सिवाय बीजा आठमा भवनरूप लग्न तजवा योग्य छे. अर्थात् वृश्चिक अने वृष ए बेज आठमा स्थानमां रहेला सारा छे." तथा—

"जन्मराशिजन्मलग्नाभ्यां द्वादशमष्टमं च लग्नेशं त्यजेत् ।"

"जन्मराशि अने जन्मलग्नथी बारमो अने आठमो लग्ननो स्वामी तजवा योग्य छे" एम पण रत्नमालाभाष्यमां कह्युं छे.

इन्दुक्रूरयुतं लग्नं तथा लग्नोदितांशकान् ।
अधिकांशग्रहं दूष्यगृहादर्वागपि त्यजेत् ॥ ३० ॥

अर्थ—लग्नमां चंद्र के कोइ पण क्रूर ग्रह होय तो ते लग्न तजवुं, तथा लग्नमां कहेला नवांशो जो चंद्र के क्रूर ग्रहे करीने युक्त होय तो ते पण तजवा, तथा लग्नना इष्ट अंशथी अधिक अंशमां रहेला ग्रहने (चंद्र अथवा क्रूर ग्रहने) दूषित स्थानथी पहेलां पण तजवो.

लग्नमां चंद्र तथा क्रूर ग्रहने तजवा माटे लल्ल पण कहे छे के—

"सौम्यग्रहयुक्तमपि प्रायः शशिनं विवर्जयेल्लग्ने ।
क्रूरग्रहं न लग्ने कुर्यान्नवपञ्चमधने वा ॥ १ ॥"

"लग्नमां चंद्र जो सौम्य ग्रहे करीने युक्त होय तोपण ते प्राये करीने तजवा लायक छे, (अर्थात् क्रूर ग्रहे करीने युक्त होय तो अवश्य तजवा योग्य छे,) तथा लग्नमां क्रूर ग्रहने करवो नहीं एटले तजवा योग्य छे, तेज प्रमाणे नवमा स्थानमां, पांचमा स्थानमां अने बीजा स्थानमां पण क्रूर ग्रह तजवो." तथा—

"लग्नस्थे तपने व्यालो १ रसातलमुखः कुजे २ ।
क्षयो मन्दे ३ तमो राहौ ४ केतावन्तकसंज्ञितः ५ ॥ १ ॥
योगेष्वेषु कृतं कार्यं मृत्युदारिद्र्यशोकदम् ।"

"लग्नमां सूर्य रह्यो होय तो ते व्याल योग कहेवाय छे १, मंगळ रह्यो होय तो ते रसातलमुख नामनो योग कहेवाय छे २, शनि होय तो क्षय योग ३, राहु होय तो तम योग ४ अने केतु होय तो ते अंतक नामनो योग कहेवाय छे ५. आ योगमां करेलुं कार्य मृत्यु, शोक अने दारिद्र्य आपनारुं थाय छे" एम दैवज्ञवल्लभ कहे छे.

"लग्नोदितांशकान्" एटले लग्नने विषे उदित एटले कहेला जे कन्यादिक नवांशो छे ते पण चंद्र के क्रूर ग्रहे युक्त होय तो तजवा लायक छे, एटले के जे राशिमां चंद्र के क्रूर ग्रह होय ते राशिना नामवाळो लग्नेशनो (लग्नना स्वामीनो) नवांशक पण तजवा योग्य छे. ते विषे गदाधर कहे छे के—

"यस्मिन् राशौ भवेच्चन्द्रस्तमंशं परिवर्जयेत् ।
तस्माद्भवेच्च वैधव्यमावर्षान्मुनयो जगुः ॥ १ ॥
यस्मिन् राशौ भवेत् क्रूरस्तमंशं परिवर्जयेत् ।
लग्ने मृत्युं विजानीयात् पञ्चमेऽब्दे न संशयः ॥ २ ॥"

"जे राशिमां चंद्र होय ते अंशने लग्नमां वर्जवो, कारण के तेथी एक वर्ष सुधीमां कन्याने विधवापणुं प्राप्त थाय छे एम मुनिओ कहे छे. वळी जे राशिमां क्रूर ग्रह होय

ते अंशने पण लग्नमां वर्जवो, कारण के तेथी पांचमे वर्षे मृत्यु थाय छे एम जाणवुं. तेमां कांइ पण संशय नथी."

तथा अधिकांशग्रहं एटले लग्नमां अधिकार करेलो जे अंश उदय पामेलो होय ते अंशथी अधिक एटले आगळना अंशोमां जे ग्रह रह्यो होय ते ग्रह जावरीतिए करीने आगळना स्थानमांज रहेलो कहेवाय छे, कारण के ते आगळना स्थाननुंज फळ आपे छे, तेथी आ रीतिए करीने पण ते ग्रहे ते स्थान आश्रय करातुं छतुं जो दोषने पामतुं होय तो ते पहेलाना स्थानमां रहेला ग्रहने पण तजवो जोइए. अर्थात् ते ग्रहे ते स्थान प्राप्त नथी कर्युं तोपण ते (स्थान) दूषित छे. ते विषे जास्कर कहे छे के—

"लग्नोदितांशाभ्यधिको ग्रहो यो, जावेऽग्रिमे जावफलेन स स्यात् ।
ग्रहो यदा जावफलेन याति, स्थाने निषिद्धे तमपीह जह्यात् ॥ १ ॥"

"लग्नमां कहेला अंशथी अधिक अंशमां रहेलो जे ग्रह होय ते जावफळे करीने आगळना स्थानमां छे एम गणवो, तेथी जो कोइ पण ग्रह (क्रूर ग्रह) जावफळे करीने निषिद्ध (दूषित) स्थानमां गयो होय तो तेने पण अहीं (लग्नमां) तजवो." अहीं ए जावार्थ छे के—लग्नना जे (जेटला) अंशो कहेला होय ते (तेटला) अंशोमां जे ग्रह रह्यो होय ते ग्रह तेज स्थानना फळने आपे छे, अने जे ग्रह तेटला अंशोने उल्लंघन करीने रह्यो होय ते ग्रह आगळना स्थानना फळने आपनारो होय छे. एज रीते बीजा, त्रीजा, चोथा विगेरे सर्वे स्थानोमां जाणवुं. ते विषे जास्करेज कह्युं छे के—

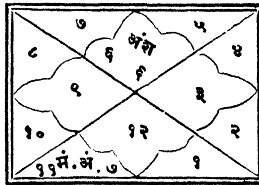
"लग्नस्य येऽंशा उदिता ग्रहो यस्तेषु स्थितः स्थानफलं स दत्ते ।
यस्तानतीतः स जवेद्द्वितीयः, स्थानेषु शेषेष्वपि चिन्त्यमेतत् ॥ १ ॥"

"लग्नना जे (जेटला) अंशो कहेला होय ते (तेटला) अंशो सुधीमां जे ग्रह रहेलो होय ते ग्रह तेज स्थानना फळने आपे छे, अने जे ग्रह ते अंशोने उल्लंघन करी गयो होय ते ग्रह बीजो (बीजा स्थानमां रहेलो) थाय छे. एज रीते बीजां सर्वे स्थानोमां जाणवुं." दैवज्ञवल्लजमां पण कह्युं छे के—

"लग्नस्थः प्रोच्यते सोऽत्र ग्रहो य उदितांशगः ।
द्वितीयोऽनुदितांशस्थः सर्वराशिष्वयं क्रमः ॥ १ ॥"

"जे ग्रह कहेला अंशोमां रहेलो होय ते ग्रह अहीं लग्नमां रहेलो कहेवाय छे, अने जे ग्रह कहेला अंशोमां रहेलो न होय अर्थात् तेने उल्लंघन करी गयो होय ते ग्रह बीजा स्थानमां रहेलो कहेवाय छे. आज क्रम सर्व राशिउने विषे जाणवो." अहीं सर्व राशिउने विषे एम जे कह्युं तेनुं तात्पर्य आ प्रमाणे छे.—लग्नमां रहेलो जेटलामो अंश कार्य वखते वर्ततो होय तेटलामोज अंश बारे स्थानोने विषे वर्ते छे एम जाणवुं, तेथी करीने जे कोइ स्थानने विषे जे ग्रह वर्तमान अंशने ओळंगीने रह्यो होय ते (ग्रह) तेनी आगळना स्थानमांज

रहेलो जाणवो. तेथी करीने "दूषितगृहादर्वागपि त्यजेत्" "दूषित स्थानथी पहेलां पण वर्जवो" एम जे मूळ श्लोकमां कह्युं तेनो आज जावार्थ (तात्पर्य) थयो. आ रीते पण आगळना स्थानमां रहेलो आ (वर्तमान) ग्रह तजवानो कह्यो होय तो तेवुं लग्न लेवुं नहीं. जेम कोइ प्रतिष्ठामां कन्या लग्न छे, अने कार्य वखते छठो मिथुनांश ग्रहण कर्यो छे, तेथी जो कुंज (लग्नथी छठी) राशिमां सातमा, आठमा विगेरे अंशोमां मंगळ रह्यो होय तो ते (ग्रह) जावरीतिए करीने मीनमां रहेलो होवाथी सातमा स्थानमांज गणाय, (अने सातमुं स्थान वर्ज्य छे,) तेथी करीने ते लग्न (कन्या लग्न) पण त्याग करवा लायक छे. तेनी स्थापना आ प्रमाणे.—



आज प्रमाणे सर्वत्र जाणवुं. अहीं कोइ शंका करे के—"ज्यारे आ जावरीतिए करीने दूषित थयेलुं स्थान तजवा योग्य कह्युं त्यारे एज रीतिए जे स्थान ग्रहे करीने शोजित होय ते स्थान आदरवा लायक पण थशे." आवी शंका करवी नहीं, केमके आवा (जाव-रीतिथी थयेला) गुणोनुं कृत्रिमपणुं होवाथी अनादर करवानेज योग्य छे. कह्युं छे के —

"नाङ्गीकारो जावजानां गुणानां, तद्दोषाणां तत्त्वतस्त्याग एव ।
जावव्यक्तावष्टमत्वं गतोऽपि, त्याज्यो लग्नात्सप्तमः सप्तसप्तिः ॥ १ ॥"

"जावरीतिथी उत्पन्न थयेला गुणोनो अंगीकार करवो नहीं, अने तेना (जाव-रीतिथी उत्पन्न थयेला) दोषोनो वास्तविक रीते त्यागज करवानो छे, तेथी करीने जावनी स्पष्टताने विषे (जावरीतिए करीने) सूर्य लग्नथी आठमा स्थानमां गयो होय तोपण ते लग्नथी सातमा स्थानमांज छे, माटे तेनो त्याग करवो." तथा—

"सप्तमस्थो यदा चन्द्रो जवेद्भावफलाष्टमः ।
न तदा दीयते लग्नं शुजैः सर्वग्रहैरपि ॥ १ ॥"

"सातमा स्थानमां रहेलो चंद्र जो जावफळे करीने आठमो थतो होय तो ते वखते सर्व ग्रहो शुज होय तोपण लग्न देवुं नहीं." तथा—

"प्रत्याख्येयः पाक्षिकोऽपीह दोषः, सम्यग्व्यापी यो गुणः सोऽनुगम्यः ।
यस्मादंशैर्देहजावाधिकः सन्न स्याद्भूत्यै जार्गवः पञ्चमोऽपि ॥ १ ॥"

"आ विवाहादिकना लग्नमां एक पक्षनो दोष पण निषेध—अनादर करवा लायक छे,

अने जे गुण सारी रीते व्यापीने रह्यो होय तेज अनुसरवा योग्य छे, जेथी करीने अंशोए करीने लग्नना भावथी अधिक थयेलो पांचमो शुक्र पण आबादीने माटे नथी (शुभ नथी). अर्थात् चोथा स्थानमां रहेलो शुक्र जो अंशोए करीने लग्नना भावथी अधिक स्थानमां एटले पांचमा स्थानमां जतो होय तोपण ते शुभ नथी." आ सर्व हकीकत विवाहने आश्रीने विवाहवृंदावनादिक ग्रंथोमां कही छे.

भवेज्जन्मनि जन्मर्क्षान्मृत्युधामनि यो ग्रहः ।
शुभोऽपि लग्नवर्त्येष सर्वकार्येषु नो शुभः ॥ ३१ ॥

अर्थ—जन्मसमये जन्मराशिथी अथवा जन्मलग्नथी आठमा स्थानमां जे ग्रह रह्यो होय ते जो कदाच शुभ होय तोपण विवाहादिक सर्व शुभ कार्यमां लग्नने विषे वर्ततो ते ग्रह शुभ नथी.

जन्मने विषे एटले जन्मसमये. जन्मर्क्षात् एटले ऋक्ष शब्दना बे अर्थ होवाथी जन्मराशिथी अथवा जन्मलग्नथी. शुभ होय तोपण अर्थात् क्रूर ग्रहनुं तो शुं कहेवुं ? वळी भास्कर तो आ प्रमाणे कहे छे.—

"जन्मर्क्षजन्मलग्नाभ्यां यौ रन्ध्रेशावथाष्टमे ।
लग्ने ताँश्च तदंशाँश्च तद्राशीनपि च त्यजेत् ॥ १ ॥"

"जन्मराशिथी तथा जन्मलग्नथी जे आठमा स्थानना स्वामी लग्नने विषे आठमे होय ते आठमाना स्वामी तथा तेना अंशो तथा ते आठमी राशिनो त्याग करवो."

शनिस्त्रिकोणकेन्द्रस्थो बलीयान् सुहृदीक्षितः ।
कुजः केन्द्रान्त्यधर्माष्टस्थितो वा भङ्गभञ्जनः ॥ ३२ ॥

अर्थ—त्रिकोणमां के केन्द्रस्थानमां रहेलो शनि अति बळवान् अने तेना मित्रवर्गे जोवायेलो (तेना पर तेना मित्रनी दृष्टि पडती) होय अथवा केन्द्रस्थानमां, बारमा स्थानमां, नवमा स्थानमां के आठमा स्थानमां रहेलो मंगळ पण अत्यंत बळवान् अने तेना मित्रवर्गे जोवायेलो होय तो भङ्गभंजन नामनो योग थाय छे. आ कुयोगनी सार्थक संज्ञा छे. अर्थात् अशुभ छे. आठमा स्थानमां रहेला मंगळनुं फळ गर्गे आ प्रमाणे कह्युं छे.—

"लग्नाद्भौमेऽष्टमगे दम्पत्योर्वह्निना मृतिः समकम् ।
जन्मनि यो वाऽष्टमगस्तस्मिँल्लग्नं गते वाऽपि ॥ १ ॥"

"मंगळ जो लग्नथी आठमा स्थानमां रह्यो होय अथवा जन्मसमये जे ग्रह आठमो होय ते ग्रह जो विवाहना लग्नमां रह्यो होय तोपण ते वर वहुनुं एक साथेज अग्निथी मृत्यु थाय छे."

रविः कुजोऽर्कजो राहुः शुक्रो वा सप्तमस्थितः ।
हन्ति स्थापककर्तारौ स्थाप्यमप्यविलम्बितम् ॥ ३३ ॥

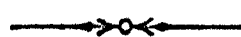
अर्थ—रवि, मंगळ, शनि, राहु अथवा शुक्र जो सातमा स्थानमां रह्या होय तो प्रतिष्ठा करनार गुरुने, प्रतिमा स्थापन करनारने अने बिंबने पण शीघ्रपणे हणे छे. आ श्लोक प्रतिष्ठाने आश्रीने जाणवो.

लग्ना १ म्बु ४ स्मर ७ गो राहुः सर्वकार्येषु वर्जितः ।
त्रिषडेकादशः शस्तो मध्यमः शेषराशिषु ॥ ३४ ॥

अर्थ—पहेला, चोथा अने सातमा स्थानमां रहेलो राहु सर्व कार्यमां वर्ज्य छे. त्रीजा, छठा अने अगीयारमा स्थानमां रह्यो होय तो ते शुभ छे, अने ते सिवाय बीजां स्थानोमां रह्यो होय तो ते मध्यम छे.

सर्व कार्यमां एटले दीक्षा, प्रतिष्ठा विगेरे (विवाह) कार्यमां. केतुने माटे नारचंद्रमां कह्युं छे के—"पहेला अने सातमा स्थानमां रहेलो तथा चंद्रे करीने युक्त एटले चंद्रनी साथे रहेलो केतु तजवा योग्य छे, त्रीजा, छठा अने अगीयारमा स्थानमां रह्यो होय तो ते ग्रहण करवा योग्य (शुभ) छे, अने बाकीनां स्थानोमां रह्यो होय तो ते मध्यम छे." आ उपरथी ए सिद्ध थयुं के—राहु जो नवमे के बारमे रह्यो होय तो ते पण श्रेष्ठ छे. अन्यथा (जो श्रेष्ठ न होय तो) केतुने त्रीजा के छठा स्थाननी प्राप्तिनो असंभव थाय.

आ रीते सामान्यथी घटिका लग्नने विषे वर्ज्य दोषो कह्या.



हवे प्रतिष्ठादिक सर्व कार्यना घटिका लग्नमां साधारण भंग आपनारी (अशुभ) ग्रहोनी संस्था (व्यवस्था) आ प्रमाणे छे.—शनि, रवि, चंद्र अने मंगळ लग्नमां रह्या होय तो ते अशुभ छे, चंद्र, मंगळ, बुध, गुरु अने शुक्र आठमा स्थानमां रह्या होय तो ते अशुभ छे, चंद्र, शुक्र, लग्ननो स्वामी अने तेना अंशनो स्वामी छठे स्थाने रह्या होय तो ते अशुभ छे, तथा सातमा स्थाने रहेला सर्वे ग्रहो अशुभ छे. ते विषे त्रिविक्रम कहे छे के—

"त्याज्या लग्नेऽब्धयो ४ मन्दात् षष्ठे शुक्रेन्दुलग्नपाः ।
रन्ध्रे चन्द्रादयः पञ्च सर्वेऽस्तेऽब्जगुरू समौ ॥ १ ॥"

"लग्नने विषे शनिथी आरंभीने चार ग्रहो (शनि, रवि, चंद्र, मंगळ) वर्ज्य छे, छठा स्थानने विषे शुक्र, चंद्र अने लग्ननो स्वामी वर्ज्य छे, आठमा स्थानमां चंद्रथी आरंभीने पांच ग्रहो (चंद्र, मंगळ, बुध, गुरु, शुक्र) वर्ज्य छे, तथा सातमा स्थानने विषे सर्वे ग्रहो वर्ज्य छे, परंतु केटलाकना मते चंद्र अने गुरु ए बे ग्रहो सातमा स्थानमां सम एटले उदासी (मध्मय) छे. अहीं राहुने शनि जेवो जाणवो."

सर्व कार्योमां शुज ग्रहनी संस्था दैवज्ञवल्लजमां आ प्रमाणे कही छे.—

"लग्नात्कुपचयस्थे ३-६-१०-११ऽर्केऽन्त्या १२ स्त ७ कर्मा १० य ११ गे विधौ ।
क्षोणीपुत्रेऽर्कपुत्रे च दुश्चिक्य ३ रिपु ६ लाज ११ गे ॥ १ ॥
त्यक्तरिध्या १२ ष्टमे ८ सौम्ये जीवेऽष्टा ८ रि ६ व्ययो १२ ज्झिते ।
सर्वकार्याणि सिध्यन्ति त्यक्तषट्सप्तमे सिते ॥ २ ॥"

"लग्नथी उपचय (३-६-१०-११) स्थानमां सूर्य रह्यो होय, बारमा, सातमा, दशमा अने अगीयारमा स्थानमां चंद्र रह्यो होय, मंगळ अने शनि त्रीजा, छठा अने अगीयारमा स्थानमां रह्या होय, बुध बारमा अने आठमा सिवाय बीजा कोइ पण स्थानमां रह्यो होय, गुरु आठमा, छठा अने बारमा सिवाय बीजा कोइ पण स्थानमां रह्यो होय, तथा शुक्र छठा अने सातमा स्थान सिवाय बीजा कोइ पण स्थानमां रह्यो होय तो सर्व कार्यो सिद्ध थाय छे." आ उत्तम अने अशुज (अधम) ए बे प्रकारनी संस्थाथी जे ग्रहो बाकी रह्या होय ते मध्यम संस्थामां जाणवा. यंत्र आ प्रमाणे—

	उत्तम.	मध्यम.	अधम.
रवि	३-६-१०-११	२-४-५-८-९-१२	१-७
चंद्र	१२-७-१०-११	३-२-४-५-९	६-८-१
मंगळ	३-६-११	२-४-५-९-१०-१२	१-७-८
बुध	१-२-३-४-५-६-७-९-१०-११	१२	८
गुरु	१-२-३-४-५-७-९-१०-११	६-१२	८
शुक्र	१-२-३-४-५-८-९-१०-११-१२	०	६-७
शनि	३-६-११	२-४-५-८-९-१०-१२	१-७
राहु	३-६-११	२-५-८-९-१०-१२	१-४-७
केतु	३-६-११	२-५-८-९-१०-१२	१-४-७

आ रीते सर्व कार्यमां सामान्य रीते ग्रहोनी संस्था छे. हवे दीक्षाना लग्नमां असाधारण (विशेष) शुज ग्रहोनी संस्थाने कहे छे.—

दीक्षायां तरणिर्धन २ त्रि ३ तनया ५ रि ६स्थः शशी द्वि २ त्रि ३ षट् ६-
व्योम १० स्थः क्षितिजूस्त्रि३षड्६दशमगो१०ज्ज्यौ व्यया १२ ष्टो ८ ज्झितौ
१-२-३-४-५-६-७-९-१०-११ ।
शुक्रोऽन्त्या १२ रि ६ सुत ५ त्रि ३ धर्म ९ धन २ गो मन्दो धन २ भ्रातृ३षट्६-
पुत्र५च्छिद्र ८ गतश्च शोजनतमः सर्वे च लाजस्थिताः ॥ ३५ ॥

अर्थ—दीक्षानी लग्नकुंमळीमां जो सूर्य बीजे, त्रीजे, पांचमे के छठे स्थाने रह्यो होय तो ते अत्यंत शुज छे, चंद्र बीजे, त्रीजे, छठे के दशमे स्थाने रह्यो होय तो ते शुज छे,

मंगळ त्रीजे, छठे के दशमे स्थाने रहेलो शुभ छे, बुध तथा गुरु बारमा तथा आठमा सिवायना १-२-३-४-५-६-७-९-१०-११ स्थानोमां रहेला शुभ छे, शुक्र बारमे, छठे, पांचमे, त्रीजे, नवमे के बीजे स्थाने रहेलो शुभ छे, तथा शनि बीजे, त्रीजे, छठे, पांचमे के आठमे रहेलो शुभ छे. वळी सर्वे ग्रहो अगीयारमे स्थाने रह्या होय तो ते शुभ छे. आ सर्वे ग्रहो उपर कहेलां स्थानोमां रह्या होय तो दीक्षाना लग्नमां श्रेष्ठ होवाथी तेउ रेखा आपनारा छे एम जाणवुं. हर्षप्रकाश विगेरे ग्रंथोमां तो ग्रहोनी उत्तमादिक त्रण प्रकारनी रचना आ प्रमाणे कही छे.—

"दु पण छ रवि ति दु छ ससी कुज ति छ दह बुह ति दु छ पण दसमो ।
किंद तिकोणे य गुरू सुक्को ति अ छ नव बारसमो ॥ १ ॥
मंदो दु पण छ अट्ठमो सुक्क विणा सव्विगारसहा सुहया ।
चंदाउ कूर सत्तम अइअसुहा दिक्खसमयम्मि ॥ २ ॥
रवि ति ३ ससि सत्त दसमो बुहेग चउ सत्त नव गुरू ति छ दो ।
सुक्को दु पंच सणि तिअ मज्झिम सेसा असुह सवे ॥ ३ ॥"

"दीक्षाने समये रवि बीजे, पांचमे अने छठे रह्यो होय, चंद्र त्रीजे, बीजे के छठे रह्यो होय, मंगळ त्रीजे, छठे के दशमे होय, बुध त्रीजे, बीजे, छठे, पांचमे के दशमे होय, गुरु केंद्र के त्रिकोण (१-४-७-१०-९-५)स्थाने होय, शुक्र त्रीजे, छठे, नवमे के बारमे होय, शनि बीजे, पांचमे, छठे के आठमे होय तथा शुक्र विना बीजा सर्वे ग्रहो अगीयारमे स्थाने होय तो आ सर्वे शुभ (उत्तम) छे. तेमज चंद्रथी सातमे स्थाने क्रूर ग्रह रह्या होय तो ते अत्यंत अशुभ छे. तथा रवि त्रीजे स्थाने रह्यो होय, चंद्र सातमे के दशमे स्थाने होय, बुध पहेले, चोथे, सातमे के नवमे स्थाने होय, गुरु त्रीजे, छठे के बीजे स्थाने होय, शुक्र बीजे के पांचमे होय अने शनि त्रीजे स्थाने होय तो ते सर्वे मध्यम छे. बाकीना सर्वे अशुभ छे." स्थापना नीचे प्रमाणे.—

	उत्तम.	मध्यम.	अधम.
रवि	२-५-६-११	३	१-४-७-८-९-१०-१२
चंद्र	२-३-६-११	७-१०	१-४-५-८-९-१२
मंगळ	३-६-१०-११	०	१-२-४-५-७-८-९-१२
बुध	३-२-६-५-१०-११	१-४-७-९	८-१२
गुरु	१-४-७-१०-९-५-११	३-६-२	८-१२
शुक्र	३-६-९-१२	२-५	१-७-४-८-१०-११
शनि	२-५-६-८-११	३	१-४-७-९-१०-१२
राहु केतु	३-६-११	२-५-८-९-१०-१२	१-४-७

अहीं आ रहस्य छे.—

"अहवावि मज्झिमबलं काऊण सणिं गुरुं च बलवंतं।
अबलं सुक्कं लग्गे तो दिक्कं दिज्ज सीसस्स ॥ १ ॥"

"अथवा तो लग्नमां शनिने मध्यम बळवाळो करीने, गुरुने बळवान् करीने तथा शुक्रने बळरहित करीने शिष्यने दीक्षा देवी" एम श्रीहरिभद्र सूरि कहे छे.

आ ग्रहो अनुक्रमे मध्यम बळवान्, उत्कृष्ट बळवान् अने हीन बळवाळा आ प्रमाणे थाय छे. बीजे, पांचमे, आठमे अने अगीयारमे स्थाने रहेलो शनि ए स्थानो पणफरनां होवाथी मध्यम बळवान् छे, अने छठुं स्थान आपोक्लिमनुं छे तोपण दिग्बळ सहित होवाथी मध्यम बळवान् छे, गुरु केन्द्रमां के त्रिकोणमां होय त्यारे ते बळवानज होय छे ए प्रगटज छे. गुरुने अगीयारमा हर्षस्थान आगळ कहेवाशे, तेथी ते स्थानमां पण ते बळवान् छे. तथा त्रीजुं, छठुं, नवमुं अने बारमुं ए स्थानो आपोक्लिमनां होवाथी त्यां रहेलो शुक्र हीन बळवाळो छे. ते विषे त्रैलोक्यप्रकाशमां कह्युं छे के—

"रूपा २० र्ध १० पाद ५ वीर्याः स्युः केन्द्रादिस्था नभश्चराः।"

"केन्द्रमां रहेला ग्रहो पूर्ण एटले वीश वसा बळवान् होय छे, पणफर स्थानमां रहेला ग्रहो मध्यम एटले दश वसा बळवान् होय छे, अने आपोक्लिम स्थानमां रहेला ग्रहो हीन बळवान् एटले पांच वसा बळवान् होय छे."

तेथी करीनेज आ उपरना ग्रहो उत्तम भंगमां स्थापन कर्या छे. बाकीना ग्रहो जे स्थानमां रहीने सर्वनी संमतिए रेखाने आपनारा छे ते पण उत्तम भंगमां दाखल कर्या छे. जे ग्रहो रेखाने आपनार छतां पण ग्रंथांतरमां तेमनो विसंवाद छे तेओने मध्यम भंगमां गण्या छे. सातमा स्थाने रहेलो चंद्र प्रस्तुत (उपरनी त्रण) गाथाने अनुसरवा माटेज मध्यम भंगमां लख्यो छे. आ बन्ने भंगथी बाकी रहेला ग्रहोने अधम भंगमां गण्या छे. अगीयारमे स्थाने रहेलो शुक्र सूत्रमां (मूळ श्लोकमां) रेखा आपनार कह्यो छे तोपण नारचंद्र, लग्नशुद्धि विगेरे ग्रंथोमां तेनो निषेध होवाथी अधम भंगमां लख्यो छे.

हवे विवाहना लग्नमां रेखा आपनारी ग्रहोनी संख्या कहे छे.—

विवाहे त्वर्कार्की त्रि ३ रिपु ६ निधना ८ येषु ११ शुभदौ,
विधुः स्वर २ त्र्या ३ येषु ११ क्षितितनय आय ११ त्रि ३ रिपु ६ गः।
बुधेज्यौ सप्ता ७ ष्ट ८ व्यय १२ विरहितावास्फुजिदरि ६-
स्मरा ७ ष्टा ८ न्त्या १२ मुक्त्वा वितनु १ सुख ४ कामे ७ ष्वथ तमः ॥ ३६ ॥

अर्थ—विवाहनी लग्नकुंडळीमां सूर्य अने शनि जो त्रीजा, छठ्ठा, आठमा के अगीया-

रमा स्थाने रह्या होय तो ते शुभ फळ आपनारा छे. चंद्र बीजा, त्रीजा के अगीयारमा स्थाने रह्यो होय तो ते शुभ छे. मंगळ अगीयारमे, त्रीजे के छठ्ठे रहेलो शुभ छे. बुध अने गुरु सातमा, आठमा अने बारमा स्थान सिवायनां (१–२–३–४–५–६–९–१०–११) स्थानोमां रहेला होय तो ते शुभ छे. शुक्र छठ्ठा, सातमा, आठमा अने बारमा स्थान सिवायनां (१–२–३–४–५–९–१०–११) स्थानोमां रहेलो होय तो ते सारो छे, अने शनि पहेला, चोथा अने सातमा स्थान सिवायनां (२–३–५–६–८–९–१०–११–१२) स्थानोमां रहेलो सारो छे.

चंद्रनुं बीजुं, त्रीजुं अने अगीयारमुं स्थान शुभ कह्युं छे. ते विषे लल्ल कहे छे के—

"यत्रेन्दुर्नायगतो न तृतीयो न द्वितीयगश्चापि ।
अनुकूलैरपि शेषैस्तल्लग्नं वर्जयेन्मतिमान् ॥ १ ॥"

"जे लग्नकुंडळीमां चंद्र अगीयारमे स्थाने रह्यो न होय अथवा त्रीजे स्थाने रह्यो न होय, अथवा बीजे स्थाने पण न रह्यो होय तो बीजा ग्रहो अनुकूळ होय तोपण तेवुं लग्न बुद्धिमाने वर्जवुं."

मूळ सूत्रमां "सप्ताष्टव्यय०" एम जे कह्युं छे तेने माटे शौनक कहे छे के—

"सप्तमगते बुधे सति सप्ताब्दान्मारयेत् पतिं कन्या ।
मासत्रयेण कन्या निधनगते पञ्चतां याति ॥ १ ॥
आयुःसौभाग्ययोर्भङ्गः पुंसां द्यूनगते गुरौ ।
भृगौ तु योषितामाह विवाहे देवलो मुनिः ॥ २ ॥"

"विवाहकुंडळीमां जो बुध सातमे स्थाने रह्यो होय तो ते कन्या पोताना पतिने सात वरस सुधीमां मारे छे, (अर्थात् तेनो पति मरण पामे छे,) अने जो बुध आठमे स्थाने रह्यो होय तो त्रण मासनी अंदर कन्या मरण पामे छे. १. वळी सातमा स्थानमां गुरु रह्यो होय तो पुरुषनां आयुष्य अने सौभाग्यनो नाश थाय छे, अने जो शुक्र सातमे स्थाने रह्यो होय तो कन्यानां आयुष्य तथा सौभाग्यनो नाश थाय छे एम देवल मुनि कहे छे."

मूळ श्लोकमां "आस्फुजित्" शब्द लख्यो छे तेनो अर्थ "शुक्र" छे. वळी मूळमां "अरिस्मराष्ट०" विगेरे कह्युं छे तेने माटे दैवज्ञवल्लभमां कह्युं छे के—

"लग्नस्थेऽपि गुरौ दुष्टो भृगुः षष्ठोऽष्टमः कुजः"

"गुरु लग्नमां होय तोपण छठ्ठो शुक्र तथा आठमो मंगळ दुष्ट छे."

मूळ श्लोकमां "वितनु०" विगेरे कह्युं छे ते विषे शौनक कहे छे के—

"लग्नस्थो वरमरणं राहुर्दिशति द्युने कनीमरणम् ।"

"राहु लग्नमां रह्यो होय तो ते वरनुं मृत्यु कहे छे, अने सातमे स्थाने रह्यो होय तो ते कन्यानुं मरण कहे छे."

"त्याज्या लग्नेऽब्धयो मन्दात्" लग्नने विषे शनिथी आरंभीने चार ग्रहो (शनि, रवि, सोम, मंगळ) वर्ज्य छे. आ श्लोकनां अपवादस्थानो कहे छे. चोथा विना बाकीनां पांचमा, सातमा, नवमा, दशमा स्थानमांथी कोइ सौम्य स्थानमां रहेलो शुभ ग्रहोए जोयेलो चंद्र रेखाने आपवावाळो छे.

हवे छठा, आठमा अने बारमा स्थाननुं अशुभपणुं होवाथी ते स्थानोमां ग्रहोनी स्थितिना निश्चयनो संग्रह कहे छे. (अर्थात् आ स्थानो अशुभ छे तोपण अमुक अमुक ग्रहो ते स्थानोए शुभ छे. ए वात कहे छे.)—

विवाहे नाष्टमाः श्रेष्ठाः पञ्च सूर्यशनी विना ।
षष्ठौ चेन्दुसितौ तद्वदन्त्येऽन्त्य इति केचन ॥ ३७ ॥

अर्थ—विवाहमां सूर्य अने शनि विनाना पांच ग्रहो आठमे स्थाने श्रेष्ठ नथी, एटले के सूर्य तथा शनि आठमे स्थाने श्रेष्ठ छे, बीजा ग्रहो श्रेष्ठ नथी. छठे स्थाने रहेला चंद्र अने शुक्र पण तेज प्रमाणे जाणवा, एटले के चंद्र अने शुक्र छठे स्थाने श्रेष्ठ नथी, अने बाकीना पांच ग्रहो श्रेष्ठज छे. वळी केटलाक कहे छे के अन्त्य एटले बारमा स्थानमां रहेलो अन्त्य ग्रह एटले केतु श्रेष्ठ नथी. आ उत्तम भंगमां ग्रहोनी संस्था जाणवी. विशेष आ प्रमाणे छे.—

"भौमे लग्नकलत्रनैधनगते शुक्रेऽरिसप्ताष्टगे,
चन्द्रे रन्ध्रविलग्नषष्ठनिरते लग्नास्तगे भास्वति ।
तद्वद्भानुसुते गुरौ निधनगे सौम्येऽष्टजामित्रगे,
जायाम्भोनिधिलग्नभाजि तमसि प्राहुर्न पाणिग्रहम् ॥ १ ॥"

"पहेला, सातमा अने आठमा स्थानमां मंगळ रह्यो होय, शुक्र छठे, सातमे के आठमे स्थाने होय, चंद्र आठमे, पहेले के छठे स्थाने होय, सूर्य पहेले के सातमे स्थाने होय, शनि पण तेज प्रमाणे एटले पहेले के सातमे स्थाने होय, गुरु आठमे स्थाने रह्यो होय, बुध आठमे के सातमे स्थाने रह्यो होय, तथा राहु सातमे, चोथे के पहेले स्थाने रह्यो होय तो ते वखते पाणिग्रहण (विवाह) कह्युं नथी." आ स्थानोए आ ग्रहो अधम छे एम यतिवल्लभमां कह्युं छे. आ बन्ने भंगथी बाकी रहेलां ग्रहो तथा स्थानो मध्यम भंगमां जाणवां. तेनी स्थापना नीचे प्रमाणे.—

विवाहकुंडळीनी ग्रहसंस्था—

	उत्तम.	मध्यम.	अधम.
रवि	३–६–८–११	२–४–५–९–१०–१२	१–७
चंद्र	२–३–११	४–५–७–९–१०–१२	१–६–८
मंगळ	३–६–११	२–४–५–९–१०–१२	१–७–८
बुध	१–२–३–४–५–६–९–१०–११	१२	७–८
गुरु	१–२–३–४–५–६–९–१०–११	७–१२	८
शुक्र	१–२–३–४–५–९–१०–११	१२	६–७–८
शनि	३–६–८–११	२–४–५–९–१०–१२	१–७
राहु–केतु	२–३–५–६–८–९–१०–११	१२	१–४–७

हवे चार श्लोके करीने विवाहना लग्नने विषे विशेष कहे छे.—

चन्द्रे च लग्ने च चरेऽङ्गनाग्रहैर्दृष्टे च केन्द्रे बलिभिः श्रिते चरैः १ ।
युग्मर्क्षगे वाऽथ विधौ विलोकिते,पापग्रहैः २ स्याद्युवतेः पतिद्वयम् ॥ ३८ ॥

अर्थ—चर एवा चंद्र अने लग्न स्त्रीना ग्रहोए जोयेल होय अने बळवान् चर ग्रहोए केन्द्रस्थाननो आश्रय कर्यो होय तो. १. अथवा मिथुन राशिमां रहेलो चंद्र पाप ग्रहोए जोयेल होय तो. २. ते स्त्रीने बे पति थाय छे.

चंद्र चर राशिमां रह्यो होय अने लग्न पण चर होय, तथा ते चंद्र अने लग्नने विषे स्त्रीना ग्रहोनी दृष्टि पडती होय, तथा केन्द्र एटले एक पण केन्द्रनुं स्थान बळवान् चर ग्रहोए एटले यायि संज्ञावाळा सूर्य, चंद्र, मंगळ अने शुक्रे अधिष्ठित होय तो एक (पहेलो) योग थाय छे. १. अथवा मिथुन राशिमां रहेलो चंद्र पाप ग्रहोए संपूर्ण दृष्टिवडे जोवायेल होय तो बीजो योग थाय छे. २. आ बेमांथी एक पण योग होय तो ते स्त्रीने बे पति थाय छे. ते विषे दैवज्ञवल्लभमां कह्युं छे के—

"चरराशौ विलग्नेन्द्वोरङ्गनाग्रहदृष्टयोः ।
बलिभिर्यायिभिः केन्द्रे भजेन्नारी पतिद्वयम् ॥ १ ॥
चन्द्रे युग्मस्थिते पापैर्दृष्टेऽन्यो योषितः पतिः ।"

"चर राशिमां रहेला लग्न तथा चंद्र स्त्रीना ग्रहोए जोयेला होय अने वळी केन्द्रस्थानमां बळवान् यायि सूर्य, चंद्र, मंगळ के शुक्र होय तो ते स्त्री बे पतिने भजे छे. १. अथवा मिथुन राशिमां रहेलो चंद्र पाप ग्रहोए जोयेल होय तोपण ते स्त्रीने बीजो पति थाय छे."

तथा—

रविचन्द्रकुजैर्नीचे १ लग्नेशे शत्रुराशिगे २ ।
निर्वीर्ये चापि जामित्रे ३ युवत्या निरपत्यता ॥ ३९ ॥

अर्थ—रवि, चंद्र अने मंगळ नीचना होय तो एक योग. १. लग्ननो स्वामी शत्रुनी राशिमां रह्यो होय तो बीजो योग. २. अथवा सातमुं स्थान वीर्य रहित होय तो त्रीजो योग. ३. आ त्रणमांथी कोइ पण योग होय तो ते स्त्री संतति रहित थाय छे. अहीं स्वामी, सौम्य ग्रहनी युति के दृष्टिनो अभाव तथा ते ग्रहोनुं क्रूर होवापणुं ए विगेरे वडे सातमा स्थाननुं वीर्य रहितपणुं जाणवुं.

तथा—

जामित्रेशः पतिः स्त्रीणां श्वशुरौ भृगुभास्करौ ।
तैरुच्चादिस्थितैस्तेषां श्रेयः स्यादन्यदन्यथा ॥ ४० ॥

अर्थ—जे ग्रह सातमा स्थाननो स्वामी होय ते स्त्रीनो पति जाणवो, तथा शुक्र अने सूर्य स्त्रीना सासु अने ससरो जाणवा. आ ग्रहो उच्च विगेरे स्थाने रह्या होय तो तेओनुं (पति विगेरेनुं) श्रेय–शुभ थाय छे, अने अन्यथा एटले उच्चादिक स्थाने न रह्या होय तो तेउनुं अश्रेय–अशुभ थाय छे.

"श्वशुरौ" एटले शुक्र सासु अने सूर्य ससरो ए बेनो एकशेष समास करवाथी "श्वशुरौ" थयुं छे. "तैः" एटले ते सातमा स्थाननो स्वामी विगेरे. "उच्चादि" एटले पोताना उच्च स्थाने रह्यो होय तो दीप्त १, पोतानी राशिमां होय तो स्वस्थ २, मित्रना स्थानमां होय तो मुदित ३, पोताना वर्गमां रह्यो होय तो शांत ४, प्रगट किरणोने धारण करतो होय तो शक्त ५, पोताना नीच स्थानने उल्लंघन करीने पोताना उच्च स्थाननी सन्मुख थयो होय तो प्रवृद्धवीर्य ६, पोताना अंशमां रह्यो छतो सौम्य ग्रहोए जोयेल होय तो अधिवीर्य ७, सूर्यथी हणायेलो होय तो विकल ८, पोताना शत्रुना स्थानमां होय तो खळ ९, ग्रहे जीतायेलो होय तो पीडित १०, अने नीच राशिमां रह्यो होय तो दीन ११. आ प्रमाणे लल्ले कहेली ग्रहोनी अगीयार अवस्थामांनी शुभ अवस्थामां रहेला सातमा स्थानना स्वामी, शुक्र अने सूर्ये करीने ते पति, सासु अने ससरानुं श्रेय–शुभ थाय छे, अने अन्यथा एटले आ अवस्थामांनी अशुभ अवस्थामां रहेला सातमा स्थानना स्वामी, शुक्र अने सूर्ये करीने अनुक्रमे ते पति, सासु अने ससरानुं अश्रेय थाय छे.

तथा—

लग्नोदितांशः स्वेशेन युतो दृष्टोऽथवा नृणाम् ।
तद्वज्जामित्रगः स्त्रीणामिष्टोऽनिष्टो विपर्यये ॥ ४१ ॥

अर्थ—लग्ननो उदितांश जो पोताना स्वामीए युक्त अथवा दृष्ट होय तो ते पुरुषो (वर)ने इष्ट-शुभ छे. वळी सातमा स्थानमां रहेलो पण तेज प्रमाणे होय तो ते स्त्रीओने इष्ट-शुभ छे, अने तेथी विपरीत होय तो अनिष्ट-अशुभ छे.

लग्नमां अधिकार करेलो जे उदयी नवांशो होय ते लग्नोदितांश कहेवाय छे. ते नवांशाना नामनी राशि कुंडळीमां कोइ पण स्थाने रही होय, परंतु जो ते पोताना स्वामीए युक्त अथवा दृष्ट होय तो ते लग्नोदितांश स्वेशयुतदृष्ट कहेवाय छे. ते पुरुषोने एटले वरने इष्ट छे. तथा लग्नमां रहेलो जेटलामो अंश उदयी छे तेटलामो सातमा स्थाननो अंश जो प्रथमनीज जेम एटले स्वेशयुतदृष्ट होय तो स्त्रीओने एटले कन्याने शुभ फळदायी छे, परंतु तेथी विपरीत एटले उदयी लग्नांश जो स्वेशयुतदृष्ट न होय तो पतिनुं मरण थाय छे, अने तेटलामो सातमा स्थाननो अंश जो स्वेशयुतदृष्ट न होय तो वहुनुं मरण थाय छे.

अहीं तात्पर्य आ प्रमाणे छे.—आ एक उदय अने अस्तनो प्रकार छे. ते विषे यतिवल्लभमां कह्युं छे के—

"लग्नोदिते तत्प्रभुणा नवांशे, दृष्टे युते वोदयशुद्धिरुक्ता ।
तत्सप्तमांशे तु कलत्रभाजि, स्वस्वामिनैवं कथितास्तशुद्धिः ॥ १ ॥"

"लग्ननो उदयी नवांशो जो तेना स्वामीए दृष्ट अथवा युक्त होय तो ते उदयशुद्धि कही छे, अने स्त्रीना (सातमा) स्थानने भजनारो तेनो सातमो अंश पोताना स्वामीए दृष्ट के युक्त होय तो ते अस्तशुद्धि कही छे." अहीं "तत्सप्तमांशे" तेनो सातमो अंश एम जे कह्युं छे तेनो अर्थ आ प्रमाणे छे.—लग्नमां जेटलामो अंश उदय पामेलो होय तेटलामो कलत्र (स्त्री) नामना सातमा स्थाननो अंश लग्नना उदितांशथी गणीए तो सातमोज थाय छे. आ एक प्रकारनी उदयशुद्धि अने अस्तशुद्धिनी रीत छे, अने बीजी रीत आगळ कहेशे, अने ते उदयास्तशुद्धिना बन्ने प्रकारो विवाहना लग्नमां अवश्य ग्रहण करवा योग्य छे.

वळी भास्कर नामना आचार्य तो तेटलामो (जेटलामो लग्नोदितांश होय तेटलामो) पांचमा स्थानमां रहेलो पुत्र नवांशो पण स्वेशयुतदृष्ट होवो जोइए एम इच्छे छे. ते कहे छे के—

"नाथायुक्तेक्षिता लग्नभार्यापुत्रनवांशकाः ।
क्रमात् पुंस्त्रीसुतान् घ्नन्ति न घ्नन्ति युतवीक्षिताः ॥ १ ॥"

"लग्नना, स्त्रीना (सातमा स्थानना) अने पुत्रना (पांचमा स्थानना) नवांशो पोत-

पोताना स्वामीए युक्त के दृष्ट न होय तो ते अनुक्रमे पुरुष (वर)ने, वहुने अने पुत्रने हणे छे, परंतु जो युक्त के दृष्ट होय तो ते तेउने हणता नथी."

हवे नव श्लोकवडे सर्व कार्यमां साधारण एवा ग्रहसंस्थारूप शुभाशुभ योगोने कहे छे.—

लाभेऽर्कारौ शुभा धर्मे श्रीवत्सो यद्यरौ शनिः १ ।

अर्धेन्दुर्विक्रमे मन्दो रविर्लाभे रिपौ कुजः २ ॥ ४२ ॥

अर्थ—जो अगीयारमा स्थानमां रवि अने मंगळ होय, नवमा स्थानमां शुभ ग्रहो (सौम्य ग्रहो) होय अने छठा स्थानमां शनि होय तो ते श्रीवत्स योग कहेवाय छे. १. अहीं "यद्यरौ" एटले "जो अरि (शत्रु) स्थानमां" एम "जो" शब्द लखवानुं आ तात्पर्य छे.—जे जे ग्रहो जे जे स्थाने नियमित कर्या छे ते ते ग्रहो ते ते स्थानेज होवा जोइए, अने बीजा ग्रहो गमे ते स्थाने होय तोपण आ योग थाय छे. ए प्रमाणे सर्व योगोमां जेम संभवे तेम जाणवुं. विक्रम (३) स्थानमां शनि होय, लाभ (११) स्थानमां रवि होय अने रिपु (६) स्थानमां मंगळ होय तो बीजो अर्धेन्दु नामनो योग थाय छे. २.

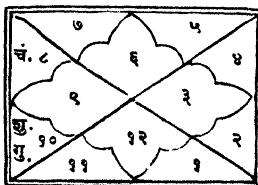
शंखः शुभग्रहैर्बन्धुधर्मकर्मस्थितैर्भवेत् ३ ।

ध्वजः सौम्यैर्विलग्नस्थैः क्रूरैश्च निधनाश्रितैः ४ ॥ ४३ ॥

गुरुर्धर्मे व्यये शुक्रो लग्ने ज्ञश्चेत्तदा गजः ५ ।

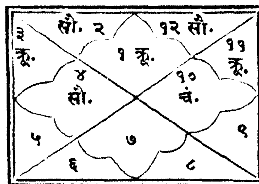
कन्यालग्नेऽलिगे चन्द्रे हर्षः शुक्रेज्ययोर्मृगे ६ ॥ ४४ ॥

अर्थ—बंधु (४) स्थानमां, धर्म (९) स्थानमां अने कर्म (१०) स्थानमां शुभ ग्रहो रह्या होय तो शंख योग थाय छे. ३. लग्नमां सौम्य ग्रहो रह्या होय अने निधन (८) स्थानमां क्रूर ग्रहो रह्या होय तो ध्वज योग थाय छे. ४. धर्म (९) स्थानमां गुरु रह्यो होय, व्यय (१२) स्थानमां शुक्र होय अने लग्नमां बुध होय तो गज योग थाय छे. ५. कन्या राशिनुं लग्न होय, अने वृश्चिक (८) राशिमां चंद्र रह्यो होय, तथा मकर राशिमां शुक्र अने गुरु रहेला होय तो हर्ष योग थाय छे. ६. अहीं हर्ष योगमां कन्या लग्ननो नियम करवाथी एवुं जणावे छे के बीजा योगोमां लग्ननो कांइ पण नियम नथी. हर्ष योगनी स्थापना नीचे प्रमाणे.—



धनुरष्टमगैः सौम्यैः पापैर्व्ययगतैर्भवेत् ७ ।
कुठारो भार्गवे षष्ठे धर्मस्थेऽर्के शनौ व्यये ८ ॥ ४५ ॥
मुशलो(लं) बन्धुगे भौमे शनावन्त्येऽष्टमे विधौ ९ ।
चक्रं च प्राचि चक्रार्धे चन्द्रात् पापशुभैः क्रमात् १० ॥ ४६ ॥

अर्थ—आठमा स्थानमां सौम्य ग्रहो रह्या होय, अने बारमा स्थानमां पाप ग्रहो रह्या होय तो धनुष् योग थाय छे. ७. छठ्ठा स्थाने शुक्र होय, धर्म (९) स्थाने सूर्य होय अने बारमे स्थाने शनि होय तो कुठार योग थाय छे. ८. बंधु (४) स्थाने मंगळ होय, बारमे स्थाने शनि होय अने आठमे स्थाने चंद्र होय तो मुशळ योग थाय छे. ९. चंद्र (कुंडळी)ना पूर्व अर्ध भागमां प्रथम चंद्र अने त्यारपछी पाप ग्रह अने शुभ ग्रह एवा क्रमथी चंद्र योग थाय छे. १०. एटले के लग्नना जेटला नवांशो उदित होय तेटला दशमा स्थानना नवांशोनी पछी प्रदक्षिणाने क्रमे गमन करतां (जतां) चोथा स्थानना तेटलाज अंशो सुधी चक्र (कुंडळी)नो पूर्वार्ध कहेवाय छे. ते पूर्वार्धमां प्रथम चंद्र मूकवो, अने त्यारपछीनां स्थानोमां प्रथम पाप ग्रह अने त्यारपछीना स्थानमां शुभ ग्रह मूकवो. ए अनुक्रमे ग्रहोनी संस्थाने विषे चक्र योग थाय छे. चक्र योगनी स्थापना—



कूर्मः पुत्रा५र्थ२रन्ध्रा८न्त्ये१२ष्वारमन्देन्दुभास्करैः ११
वापी पापैस्तु केन्द्रस्थै १२र्योगाः स्युर्द्वादशेत्यमी ॥ ४७ ॥

अर्थ—पांचमा स्थानमां मंगळ, बीजा स्थाने शनि, आठमा स्थाने चंद्र अने बारमा स्थाने सूर्य होय तो कूर्म योग थाय छे. आ प्रमाणे आ कूर्म योगमां स्थानोनो अने ग्रहोनो अनुक्रम जाणवो. ११. तथा केन्द्रमां पाप ग्रहो रह्या होय तो वापी नामनो योग थाय छे. १२. आ रीते आ बार योगो थाय छे.

रत्नमालामां गज विगेरे चार योगोनुं लक्षण आ प्रमाणे कह्युं छे.—

"तनुनवभवगैः क्रमेण योगो, बुधविबुधार्चितपङ्कुभिर्गजः स्यात् १ ।
व्ययरिपुहिबुकेषु वक्रशुक्रद्युमणिसुतैः क्रमशः कुठार एषः २ ॥ १ ॥

रविकविरविजेन्दुन्निः क्रमेण, व्ययधनषड्निधनेषु कूर्म एषः ३ ।
व्ययनिधनतनूषु मन्दचन्द्रारुणकिरणैर्मुशलं जगुर्मुनीन्द्राः ४ ॥ २ ॥"

"पहेला स्थानमां बुध, नवमा स्थानमां गुरु अने अगीयारमा स्थानमां पंगु (शनि) रह्यो होय तो गज योग थाय छे. १. बारमा स्थानमां शनि, छठा स्थानमां शुक्र अने चोथा स्थानमां बुध रह्यो होय तो कुठार योग थाय छे. २. बारमा स्थानमां सूर्य, बीजा स्थानमां शुक्र, छठा स्थानमां शनि अने आठमा स्थानमां चंद्र होय तो कूर्म योग थाय छे. ३. बारमा स्थानमां शनि, आठमा स्थानमां चंद्र अने पहेला स्थानमां सूर्य होय तो मुशळ योग थाय छे. ४. एम मुनींद्रो कहे छे."

एभ्यः श्रीवत्सपूर्वाः षट् पूर्वे सर्वेषु कर्मसु ।
श्रेयस्तमा धनुर्मुख्यास्त्वन्यथा स्युः षडुत्तरे ॥ ४७ ॥

अर्थ—आ बारे योगमांना श्रीवत्सादिक पहेला छ योगो सर्व कार्यमां अत्यंत शुन्न छे, अने धनुष् विगेरे बाकीना छ योगो अन्यथा एटले अत्यंत अशुन्न छे. विशेष आ प्रमाणे छे.—

"उदयट्ठमगे मम्मं १ नवपंचमि कूरकंटयं न्नणियं २ ।
दसमचउत्थे सल्लं ३ कूरा उदयत्थिअं छिद्दं ४ ॥ १ ॥
मम्मदोसेण मरणं कंटयदोसेण कुलक्खउ होइ ।
सल्लेण रायसत्तू छिद्दे पुत्तं विणासेइ ॥ २ ॥"

"क्रूर ग्रहो पहेले अने आठमे स्थाने रह्या होय तो मर्म नामनो दोष थाय छे. १. नवमे अने पांचमे स्थाने रह्या होय तो क्रूरकंटक कह्यो छे. २. दशमे अने चोथे स्थाने रह्या होय तो शल्य थाय छे. ३. अने पहेले तथा सातमे स्थाने रह्या होय तो छिद्र दोष थाय छे. ४. मर्म दोषे करीने पोतानुं मरण थाय छे, कंटक दोषे करीने कुलनो क्षय थाय छे, शल्य दोषे करीने राजा शत्रुरूप थाय छे, अने छिद्र दोष होय तो पुत्रनो विनाश थाय छे" एम पूर्णन्नद्र कहे छे.

आनन्द १ जीव २ नन्दन ३ जीमूत ४ जय ५ स्थिरा ६ मृता ७ योगाः ।
ज्ञगुरुसितैः प्रत्येकं द्विकत्रिकैश्चापि लग्नगतैः ॥ ४९ ॥

अर्थ—बुध, गुरु अने शुक्र ए दरेक दरेक, बबे अने त्रणे लग्नमां रह्या होय तो तेणे करीने अनुक्रमे आनंद १, जीव २, नंदन ३, जीमूत ४, जय ५, स्थिर ६ अने अमृत ७, ए सात योग थाय छे.

लग्नमां रहेला दरेक बुध, गुरु अने शुक्रे करीने अनुक्रमे आनंदादिक त्रण योग थाय छे, (एटले के लग्नमां बुध होय तो आनंद १, गुरु होय तो जीव २, अने शुक्र होय

तो नंदन ३ योग थाय छे,) लग्नमां बुध अने गुरु रह्या होय तो जीमूत ४ योग थाय छे, बुध अने शुक्र होय तो जय ५ योग थाय छे, गुरु अने शुक्र होय तो स्थिर ६ योग थाय छे, तथा लग्नमां बुध, गुरु अने शुक्र त्रणे रह्या होय तो अमृत ७ योग थाय छे. अहीं द्विकनो अर्थ बबे अने त्रिकनो अर्थ त्रण थाय छे.

योगा यथार्थनामानः सर्वेपूत्तमकर्मसु ।
ऐश्वर्यराज्यसाम्राज्यविधातारः क्रमादमी ॥ ५० ॥

अर्थ—आ साते योगो सर्व उत्तम कार्यमां यथार्थ नामवाळा होवाथी शुभ छे, तथा आ योगो अनुक्रमे ऐश्वर्य, राज्य अने साम्राज्यने करनारा छे. राजाओने जे शासन करे ते सम्राट् कहेवाय छे, तेथी साम्राज्यनो अर्थ चक्रवर्तीपणुं थाय छे. अनुक्रमे ऐश्वर्यादिकने करनारा छे एटले के एक एक ग्रहवाळो योग होय तो ऐश्वर्य आपे, बबे ग्रहनो योग होय तो राज्य आपे, अने त्रणे ग्रहनो योग होय तो साम्राज्य आपे. आ रीते सर्व (१२–४–७) मळीने त्रेवीश योग थाय छे.

हवे प्रतिष्ठाना लग्नमां रेखाने आपनारी ग्रहसंस्था कहे छे.—

प्रतिष्ठायां श्रेष्ठो रविरुपचये ३–६–१०–११ शीतकिरणः,
स्वधर्माढ्ये तत्र २–३–६–९–१०–११ क्षितिजरविजौ त्र्यायरिपुगौ ३–११–६ ।
बुधस्वर्ग्याचार्यौ व्ययनिधनवर्जौ १–२–३–४–५–६–७–९–१०–११भृगुसुतः,
सुतं यावल्लग्नान्नवमदशमायेष्वपि तथा१–२–३–४–५–९–१०–११ ॥ ५१ ॥

अर्थ—प्रतिष्ठामां सूर्य जो उपचय (३–६–१०–११)स्थानमां रह्यो होय तो ते श्रेष्ठ छे. चंद्र धन (२) अने धर्म (९) स्थान सहित पूर्वनां स्थानोमां (२–३–६–९–१०–११) रह्यो होय तो ते श्रेष्ठ छे. मंगळ अने शनि त्रि, आय अने रिपु (३–११–६) स्थानमां श्रेष्ठ छे. बुध अने गुरु व्यय (१२) तथा निधन (८) ए बे स्थान सिवाय बाकीनां (१–२–३–४–५–६–७–९–१०–११) स्थानोमां श्रेष्ठ छे. तथा शुक्र लग्नथी सुत (पांचमा) भवन सुधी (१–२–३–४–५) तथा नवमा, दशमा अने अगीयारमा स्थाने रहेलो श्रेष्ठ छे.

वळी त्रिविक्रमे भंग देनारा ग्रहो आ प्रमाणे कह्या छे.—

"लग्नमृत्युसुतास्तेषु पापा रन्ध्रे शुभाः स्थिताः ।
त्याज्या देवप्रतिष्ठायां लग्नषष्ठाष्टगः शशी ॥ १ "

आ० ४४

"पाप ग्रहो एटले रवि, मंगळ, शनि अने राहु जो पहेला, आठमा, पांचमा अने सातमा स्थानमां रह्या होय, शुभ ग्रहो आठमा स्थानमां रह्या होय, अने चंद्र पहेला, छठा के आठमा स्थानमां रह्यो होय तो आ रीतनी ग्रहसंस्था देवनी प्रतिष्ठामां तजवा योग्य छे." आथी करीने एक पण ग्रह भंग देनारा स्थानमां रह्यो होय तो रेखाए करीने अधिक एवा पण लग्नने विषे प्रतिष्ठा करवी नहीं, परंतु भंग देनार स्थान एक पण न होय अने केटलाक ग्रहो इष्ट होय तथा केटलाक ग्रहो अनिष्ट होय तोपण रेखाए करीने अधिक एवा लग्नने विषे प्रतिष्ठा करवी. वळी केटलाक आचार्योए "छठो चंद्र प्रतिष्ठामां रेखा आपनार छे" एम कह्युं छे, ते अमुक प्रकारना योगने आश्रीनेज कह्युं छे, अन्यथा प्रकारे ते रेखा आपनार थतो नथी एम जाणवुं. आ प्रमाणे त्रिविक्रमशतकनी टीकामां कह्युं छे.

वळी नारचंद्रमां तो उत्तम १, मध्यम २, विमध्यम ३ अने अधम ४ ए रीते ग्रहोनी चार भंगी कही छे. ते आ प्रमाणे.—

"त्रिरिपा १ वासुतखे २ स्वत्रिकोणकेन्द्रे ३ विरैस्मरेऽत्रा ४ ग्यर्थे ५ ।
लाभे ६ क्रूर १ बुधा २ चिंत ३ भृगु ४ शशि ५ सर्वे ६ क्रमेण शुभाः ॥ १ ॥"

"क्रूर ग्रहो (रवि, मंगळ, शनि, राहु) त्रीजे तथा छठे स्थाने शुभ छे. बुध पहेलेथी सुत स्थान सुधी (१–२–३–४–५) तथा ख (१०) स्थानमां शुभ छे. गुरु स्व (२), त्रिकोण (९–५) अने केन्द्र (१–४–७–१०) स्थानमां शुभ छे. शुक्र उपरनां सात स्थानो (२–९–५–१–४–७–१०)मांथी धन (२) अने स्मर (७) स्थान रहित एटले ९–५–१–४–१० ए पांच स्थानोमां शुभ छे. चंद्र अग्नि (३) अने अर्थ (२) स्थानोमां शुभ छे. तथा सर्वे ग्रहो लाभ (११) स्थानमां शुभ छे." वळी

"खेऽर्कः केन्द्रारिधर्मेषु शशी ज्ञोऽरिनवास्तगः ।
षष्ठेज्यः स्वत्रिगः शुक्रो मध्यमाः स्थापनक्षणे ॥ २ ॥
आरेन्द्वर्काः सुतेऽस्तारिरिष्ये शुक्रस्त्रिगो गुरुः ।
विमध्यमाः शनिर्धीखे सर्वे शेषेषु निन्दिताः ॥ ३ ॥"

"दशमे स्थाने रहेलो सूर्य, केन्द्र (१–४–७–१०), अरि (६) अने धर्म (९) स्थाने रहेलो चंद्र, छठे, सातमे अने नवमे स्थाने बुध होय, छठे स्थाने गुरु होय, शुक्र बीजे के त्रीजे स्थाने होय तो ते प्रतिष्ठाने समये मध्यम छे. मंगळ, चंद्र अने सूर्य पांचमे स्थाने रह्या होय, शुक्र छठे, सातमे के बारमे स्थाने होय, गुरु त्रीजे स्थाने होय, शनि पांचमे के दशमे स्थाने होय तो ते विमध्यम जाणवा. शेष स्थानोमां सर्वे ग्रहो अधम छे."

प्रतिष्ठाने विषे ग्रहसंस्थानो यंत्र.

	उत्तम.	मध्यम.	विमध्यम.	अधम.
रवि	३-६-११	१०	५	१-२-४-७-८-९-१२
चंद्र	२-३-११	१-४-६-७-९-१०	५	८-१२
मंगळ	३-६-११	०	५	१-२-४-७-८-९-१०-१२
बुध	१-२-३-४-५-१०-११	६-७-९	०	८-१२
गुरु	१-२-४-५-९-७-१०-११	६	३	८-१२
शुक्र	१-४-५-९-१०-११	२-३	६-७-१२	८
शनि	३-६-११	०	५-१०	१-२-४-७-८-९-१२
रा.के.	३-६-११	२-४-५-८-९-१०-१२	०	१-७

पूर्वोक्त ग्रहसंस्थाना फळने आ प्रमाणे कहे छे.—

"प्रासादभंग १ हानी २ धनं ३ स्वजन ४ पुत्रपीड ५ रिपुघाताः ६ ।
स्त्रीमृति ७ मृति ८ धर्मगमाः ९ सुख १० र्द्धि ११ शोका १२ स्तनोः प्रभृति सूर्यात् ॥ १ ॥"

"प्रतिष्ठा लग्नमां जो सूर्य पहेले स्थाने रह्यो होय तो प्रासादनो नाश थाय १, बीजे होय तो हानि थाय २, त्रीजे होय तो धन मळे ३, चोथे होय तो स्वजनने पीडा थाय ४, पांचमे होय तो पुत्रपीडा थाय ५, छठे होय तो शत्रुनो नाश थाय ६, सातमे होय तो स्त्रीनुं मरण थाय ७, आठमे होय तो पोतानुं मरण थाय ८, नवमे होय तो धर्मनो नाश थाय ९, दशमे होय तो सुख मळे १०, अगीयारमे होय तो ऋद्धि मळे ११ अने बारमे होय तो शोक थाय १२."

"कर्तृविनाश १ धनागम २ सौभाग्य ३ द्वन्द्व ४ दैन्य ५ रिपुविजयाः ६ ।
शशिनोऽसुख ७ मृति ८ विघ्ना ९ नृपपूजा १० विषय ११ वसुहानी १२ ॥ २ ॥"

"चंद्र पहेले स्थाने होय तो प्रतिष्ठा करनारनो नाश थाय १, बीजे होय तो धननी प्राप्ति थाय २, त्रीजे होय तो सौभाग्य थाय ३, चोथे होय तो युद्ध थाय ४, पांचमे होय तो दीनता थाय ५, छठे होय तो शत्रुनो जय थाय ६, सातमे होय तो असुख थाय ७, आठमे होय तो मरण थाय ८, नवमे होय तो विघ्न थाय ९, दशमे होय तो राजाथी सन्मान मळे १०, अगीयारमे होय तो विषयविकारनी हानि थाय ११ अने बारमे होय तो धननी हानि थाय १२."

"दहनं १ सुरगृहभंगो २ भूलाभो ३ रोग ४ पुत्रशस्त्रमृती ५ ।
रिपु ६ नारी ७ स्वजन ८ गुणभ्रंशा ९ रोगा १० र्थ ११ हानयो १२ भौमात् ॥ ३ ॥"

"मंगळ पहेले स्थाने होय तो प्रासाद बळी जाय १, बीजे होय तो देवनो प्रासाद भांगी जाय २, त्रीजे होय तो पृथ्वीनो लाभ थाय ३, चोथे होय तो रोग थाय ४,

पांचमे होय तो पुत्रनुं शस्त्रथी मरण थाय ५, छठे होय तो शत्रुनो नाश थाय ६, सातमे होय तो स्त्रीनो नाश थाय ७, आठमे होय तो स्वजननो नाश थाय ८, नवमे होय तो गुणनो नाश थाय ९, दशमे होय तो रोग थाय १०, अगीयारमे होय तो धननी प्राप्ति थाय ११ अने बारमे होय तो हानि थाय १२."

"चिरमहिम १ धन २ रिपुक्षय ३ सुख ४ सुत ५ परिपन्थिमरण ६ वरकन्याः ७।
शशिजेन सूरिमृत्यु ८ वसु ९ कर्मा १० भरण ११ रैनाशाः १२ ॥ ४ ॥"

"बुध पहेले स्थाने होय तो (प्रतिमानो) घणा काळ सुधी महिमा रहे १, बीजे होय तो धननो लाभ थाय २, त्रीजे होय तो शत्रुनो क्षय थाय ३, चोथे होय तो सुख मळे ४, पांचमे होय तो पुत्रप्राप्ति थाय ५, छठे होय तो शत्रुनो नाश थाय ६, सातमे होय तो श्रेष्ठ स्त्रीनी प्राप्ति थाय ७, आठमे होय तो आचार्यनुं मरण थाय ८, नवमे होय तो धन मळे ९, दशमे होय तो कार्यसिद्धि थाय १०, अगीयारमे होय तो आभूषण मळे ११ अने बारमे होय तो धननो नाश थाय १२."

"कीर्ति १ वृद्धिः २ सौख्यं ३ रिपुनाशः ४ सुतसुखं ५ स्वजनशोकः ६।
स्त्रीसुख ७ गुरुमृति ८ धन ९ लाभ १० ऋद्धयो ११ हानि १२ रमरगुरोः॥ ५॥"

"गुरु पहेले स्थाने होय तो कीर्ति वधे १, बीजे स्थाने होय तो वृद्धि थाय २, त्रीजे होय तो सुख मळे ३, चोथे होय तो शत्रुनो नाश थाय ४, पांचमे होय तो पुत्रनुं सुख मळे ५, छठे होय तो स्वजननो शोक थाय ६, सातमे होय तो स्त्रीनुं सुख मळे ७, आठमे होय तो गुरुनुं मरण थाय ८, नवमे होय तो धन मळे ९, दशमे होय तो लाभ थाय १०, अगीयारमे होय तो ऋद्धि प्राप्त थाय ११ अने बारमे होय तो हानि (मरण) थाय १२."

"सिद्धि १ धन २ मान ३ तेजः ४ स्त्रीसुख ५ दुष्कीर्तयः ६ सुताप्ति युता।
चैत्यादिसर्वहानि ७ श्चासुख ८ मितरेषु ९-१०-११-१२ पूज्यता शुक्रात्॥ ६॥"

"शुक्र पहेले स्थाने होय तो कार्यसिद्धि थाय १, बीजे होय तो धन मळे २, त्रीजे होय तो मान पामे ३, चोथे होय तो तेज वधे ४, पांचमे होय तो स्त्रीनुं सुख मळे ५, छठे होय तो अपयश मळे ६, सातमे होय तो पुत्रनी प्राप्ति तथा चैत्य विगेरे सर्वनो विनाश थाय ७, आठमे होय तो असुख थाय ८ तथा नवमे, दशमे, अगीयारमे के बारमे होय तो पूज्यपणुं प्राप्त थाय."

"पूजा १ कर्तृविघात २ भूरिविभव ३ प्रासादबन्धुक्षयाः ४,
पुत्राक्षेम ५ विपक्षरोगविलय ६ ज्ञातिप्रियाव्यापदः ७।
गोत्रप्राणविपत्ति ८ पातकपरिष्वङ्गौ ९ च कार्यक्षतिः १०,
कान्ताकाञ्चनरत्नजीवितधनं ११ मन्देन मान्द्योदयः १२ ॥ ७ ॥"

"शनि पहेले स्थाने होय तो (प्रतिमानी) पूजानो नाश थाय १, बीजे होय तो प्रतिष्ठा करनारनो नाश थाय २, त्रीजे होय तो घणो वैभव प्राप्त थाय ३, चोथे होय तो प्रासाद अने बंधुनो नाश थाय ४, पांचमे होय तो पुत्रनुं अकल्याण (मरण) थाय ५, छठे होय तो शत्रु अने रोगनो नाश थाय ६, सातमे होय तो ज्ञाति (सगा संबंधी) अने स्त्रीनुं मरण थाय ७, आठमे होय तो गोत्रना (पित्राइना) प्राणनो नाश थाय ८, नवमे होय तो पाप कर्म बंधाय ९, दशमे होय तो कार्यनी हानि थाय १० अगीयारमे होय तो स्त्री, सुवर्ण, रत्न, जीवित अने धननी प्राप्ति थाय ११ तथा बारमे होय तो मांदगीनो उदय थाय १२."

"सकललकुंमलिकासु विधुंतुदः, शनिसमानफलो हि विचार्यताम् ।"

"सर्व लग्नकुंडळीओमां राहुने शनिनी जेवा फळवाळो जाणवो."

वळी लग्न तो आ प्रमाणे कहे छे.—

"बलवति सूर्यस्य सुते बलहीनेऽङ्गारके बुधे चैव ।
मेषवृषस्थे सूर्ये क्षपाकरेऽर्चार्हती स्थाप्या ॥ १ ॥"

"सूर्यनो पुत्र (शनि) बळवान् होय, मंगळ अने बुध बळहीन होय अने मेष तथा वृष राशिमां सूर्य तथा चंद्र रह्या होय त्यारे अरिहंतनी प्रतिमानी स्थापना करवी." अहीं "मेषवृषस्थे"ने बदले केटलाएक आचार्यो "मेषमृगस्थे" एटले "मेष अने मृग राशिमां" एम कहे छे.

"बलहीने त्रिदशगुरौ बलवति भौमे त्रिकोणसंस्थे वा ।
असुरगुरौ चायस्थे महेश्वरार्चा प्रतिष्ठाप्या ॥ २ ॥"

"गुरु बळहीन होय, मंगळ बळवान् होय अथवा त्रिकोणमां रह्यो होय तथा शुक्र अगीयारमे स्थाने रह्यो होय त्यारे महेश्वर (महादेव)नी प्रतिमा स्थापन करवी."

"बलहीने त्वसुरगुरौ बलवति चन्द्रात्मजे विलग्ने वा ।
त्रिदशगुरावायस्थे स्थाप्या ब्राह्मी तथा प्रतिमा ॥ ३ ॥"

"शुक्र बळहीन होय, चंद्रनो पुत्र (बुध) बळवान् होय अथवा लग्नमां रह्यो होय तथा गुरु अगीयारमे स्थाने रह्यो होय त्यारे ब्रह्मानी प्रतिमा स्थापन करवी."

"शुक्रोदये नवम्यां बलवति चन्द्रे कुजे गगनसंस्थे ।
त्रिदशगुरौ बलयुक्ते देवीनां स्थापयेदर्चाम् ॥ ४ ॥"

"नवमीने दिवसे शुक्रनो उदय होय, चंद्र बळवान् होय, मंगळ दशमे स्थाने रह्यो होय अने गुरु बळवान् होय त्यारे देवीनी प्रतिमा स्थापवी."

"बुधलग्ने जीवे वा चतुष्टयस्थे भृगौ हिबुकसंस्थे ।
वासवकुमारयक्षेन्दुभास्कराणां प्रतिष्ठा स्यात् ॥ ५ ॥"

"बुध लग्नमां रह्यो होय, अथवा गुरु चतुष्टय (१-४-७-१०) स्थानमां रह्यो होय अने शुक्र हिबुक (४) स्थानमां रह्यो होय त्यारे इन्द्र, कार्तिकस्वामी, यक्ष, चंद्र अने सूर्यनी प्रतिष्ठा करवी."

"यस्य ग्रहस्य यो वर्गस्तेन युक्ते निशाकरे ।
प्रतिष्ठा तस्य कर्तव्या स्वस्ववर्गोदयेऽपि वा ॥ ६ ॥"

"जे ग्रहनो जे वर्ग होय ते वर्गे करीने युक्त चंद्र होय त्यारे ते ग्रहनी प्रतिष्ठा करवी, अथवा पोतपोताना वर्गनो उदय होय त्यारे करवी."

"अस्मात्कालाद्भ्रष्टास्ते कारकसूत्रधारकर्तृणाम् ।
क्षयमरणबन्धनामयविवादशोकादिकर्तारः ॥ ७ ॥"

"आ उपर कहेला समयथी रहित काळे प्रतिष्ठा करी होय तो ते ते देवो करावनार, सुथार अने करनारना क्षय, मरण, बंधन, व्याधि, विवाद अने शोक विगेरेने करनारा थाय छे."

विशेष ए छे जे—रेखा आपनारा दरेक ग्रहोए करीने सर्व कार्योमां वीश विशोपक-वाळुं लग्न थाय छे. ते आ प्रमाणे.—

"अद्धुट्ठ विसा रविणो पण ससिणो तिन्नि हुंति तह गुरुणो ।
दो दो बुहसुक्काणं सड्ढा सणिभोमराहूणं ॥ १ ॥"

"सूर्यना साडा त्रण वसा, चंद्रना पांच वसा, गुरुना त्रण, बुधना तथा शुक्रना बबे अने शनि, मंगळ तथा राहुना दोढ दोढ वसा होय छे." आ सर्व मळीने वीश वसा एटले विशोपक थाय छे."

हवे प्रतिष्ठाना लग्नमां विशेष कहे छे.

बलहीनाः प्रतिष्ठायां रवीन्दुगुरुभार्गवाः ।
गृहेश १ गृहिणी २ सौख्य ३ स्वानि ४ हन्युर्यथाक्रमम् ॥ ५२ ॥

अर्थ—जो प्रतिष्ठामां सूर्य, चंद्र, गुरु अने शुक्र बळहीन होय तो तेओ अनुक्रमे घरना स्वामीने, तेनी स्त्रीने, सुखने तथा धनने हणे छे, एटले के सूर्य बळहीन होय तो घरना स्वामीनो नाश थाय छे, चंद्र बळहीन होय तो तेनी स्त्रीनो नाश थाय छे विगेरे. अहीं बळहीन एटले पहेलां अढार प्रकारे अथवा नव प्रकारे ग्रहोनी निर्बळता कही छे ते जाणवी. अथवा तो नीच, क्रूर ग्रहे युक्त के अस्त पामेलो जे ग्रह होय ते निर्बळज कह्यो छे.

तथा—

तनु १ बन्धु ४ सुत ५ द्यून ७ धर्मेषु ९ तिमिरान्तकः ।
सकर्मसु १० कुजार्की च संहरन्ति सुरालयम् ॥ ५३ ॥

अर्थ—पहेला, चोथा, पांचमा, सातमा के नवमा स्थानमां जो सूर्य रह्यो होय अने उपरनां (पांच) स्थानोमां के दशमा स्थानमां मंगळ के शनि रह्यो होय तो ते देवालयनो नाश करे छे.

हवे सर्व कार्यमां शुभ ग्रहोनी शक्ति तथा तेना फळने कहे छे.—

सौम्यवाक्पतिशुक्राणां य एकोऽपि बलोत्कटः ।
क्रूरैरयुक्तः केन्द्रस्थः सद्योऽरिष्टं पिनष्टि सः ॥ ५४ ॥

अर्थ—बुध, गुरु अने शुक्रमांनो कोइ पण एक बलोत्कट (बलिष्ठ) होय तेमज क्रूर ग्रह तेनी साथे रहेलो न होय अने ते पोते केंद्रस्थानमां रह्यो होय तो ते तत्काळना रिष्ट योगनो नाश करे छे.

अहीं बलोत्कट कह्यो छे, तेथी ग्रहोने विषे वीश प्रकारे बळ कहेलुं छे. ते आ प्रमाणे.—

"स्व १ मित्र २ र्क्षो ३ च्च ४ मार्गस्थ ५ स्व ६ मित्रवर्गगो ७ दितः ८ ।
जयी ९ चोत्तरचारी च १० सुहृ ११ त्सौम्यावलोकितः १२ ॥ १ ॥
त्रिकोणा १३ यगतो लग्नात् १४ हर्षी १५ वर्गोत्तमांशगः १८ ।
मुथुशिलं १९ मूशरिफं २० यदि सौम्यैर्ग्रहैः सह ॥ २ ॥
सर्वयोगे भवेदेवं बलानां विंशतिर्ग्रहे ।
यावद्बलयुताः खेटास्तावद्विशोपकाः फलम् ॥ ३ ॥"

"ग्रह पोताना स्थानमां रहेलो होय १, मित्रना स्थानमां रहेलो होय २, पोताना नक्षत्रमां रहेलो होय ३, उच्च स्थाने रहेलो होय ४, मार्गमां रहेलो (मार्गी) होय ५, पोताना वर्गमां रहेलो होय ६, मित्रना वर्गमां रहेलो होय ७, उदय पामेलो होय ८, जयवाळो होय ९, उत्तरचारी होय १०, मित्रे जोयेलो होय ११, सौम्य ग्रहे जोयेलो होय १२, त्रिकोणमां रहेलो होय १३, लग्नथी अगीयारमे स्थाने रहेलो होय १४, त्रण प्रकारनो हर्षी होय १५, वर्गोत्तमना नवांशकमां रहेलो होय १८, सौम्य ग्रहनी साथे [1]मुथुशिल योग होय १९, सौम्य ग्रहनी साथे [2]मूशरिफ योग होय २०, आ सर्व योग थाय तो ग्रहने विषे वीश वसा बळ थाय. जेटला बळवाळा ग्रहो होय तेटला विशोपका (वसा) फळ जाणवुं."

उपर त्रण प्रकारनो हर्षी ग्रह कह्यो छे. तेमां ग्रहोनुं हर्षस्थान चार प्रकारे कहेलुं छे ते आ प्रमाणे.—

"गो ९ त्र्य ३ ङ्गै ६ का १ य ११ धी ५ रिष्य १२ स्थानानि भास्करादिषु ।
हर्षस्थानमिदं पूर्वं १ सर्वेषु स्वोच्चभं परम् ॥ १ ॥

---

१ 'मुथुशिल, २ मूशरिफ, आ बे योगनुं स्वरूप चतुर्थ प्रकाशना ४७ श्लोकना अर्थमां छे.

निशि सायं १ दिने २ योषित् १ पुंग्रहैश्च २ परं क्रमात् ३ ।
तुर्यं व्योम्नस्तनुं यावत्तुर्याद्यावच्च सप्तमम् ॥ २ ॥
पुंग्रहेषु तनोर्यावत्तुर्यं सप्तमतो नभः ।
स्त्रीग्रहेषु मुदः स्थानं ४ फलं तदनुमानतः ॥ ३ ॥"

"सूर्यादि साते ग्रहोने विषे अनुक्रमे नवमुं, त्रीजुं, छठुं, पहेलुं, अगीयारमुं, पांचमुं अने बारमुं, आ स्थानो प्रथम हर्षस्थान छे १. साते ग्रहोनां जे उच्च स्थान छे ते बीजुं हर्षस्थान छे २. स्त्रीरूप एवा चंद्र तथा शुक्र रात्रि तथा संध्याए होय, रवि, मंगल, गुरु आदि पुरुषरूप ग्रहो दिवसे होय तो आ ग्रहोनुं त्रीजुं हर्षस्थान छे ३. पुरुषरूप रवि, मंगळ, गुरु आदि ग्रहोने विषे चोथुं दशमाथी लग्न सुधी (१०–११–१२–१), चोथेथी सातमा (४–५–६–७) स्थानो तथा सूर्य, चंद्र तथा शुक्रादिक ग्रहोने विषे लग्नथी चोथा सुधी (१–२–३–४), सातमाथी दशमा सुधी (७–८–९–१०),आ स्थानो चोथुं हर्षस्थान छे ४, तेनुं फळ ते स्थानोना अनुसारे जाणवुं."

आमां उच्च हर्षस्थान पूर्वे कहेलुं छे, तेथी अहीं गण्युं नथी. ए रीते अहीं त्रण प्रकारनुं हर्षस्थान कह्युं. पूर्वे कहेली अगीयार अवस्थाओने मध्ये जे ग्रह शुभ अवस्थावाळो होय अथवा छ प्रकार आदि बळे करीने युक्त होय ते बळी (बळवान्) जाणवो. ए रीते अन्य स्थळे पण ग्रहोनी सबळता जाणवी.

मूळ श्लोकमां सद्यो रिष्टं एटले तत्काळनो रिष्ट योग, एटले के ते वखते (कार्य वखते) जे लग्न, तिथि, वार विगेरे होय तेमना योगे करीने जे रिष्ट योग उत्पन्न थयो होय ते. जेम मध अने घीना समान योगे करीने विष योग थाय छे. आवा रिष्ट योगनो नाश करे छे एम जाणवुं. ते रिष्ट योग आ प्रमाणे थाय छे.—

"उदयाद्गतलग्नमिति (तिं) संक्रान्तेर्भुक्तदिवसमितियुक्ताम् ।
सैकां च विधाय बुधः पृथक् पृथक् पञ्चधा न्यसेत् ॥ १ ॥
हित्वा तत्र क्रमशः तिथि १५ रवि १२ दश १० वसु ८ मुनीन् ७ भजेन्नवभिः ।
शेषाङ्कः शरसङ्ख्यो यदि भवति तदा वदेन्निपुणः ॥ २ ॥
कलह १ कृशानुभीति २ भूपभयं ३ चौरविद्रवो ४ मृत्युः ५ ।
क्रमशो भवेत् प्रतिष्ठापरिणयनादौ तदा रिष्टम् ॥ ३ ॥"

"उदयथी गयेला लग्नना प्रमाणने संक्रांतिना भुक्त (भोगवायेला) दिवसना प्रमाणवडे युक्त करी तेमां एक नाखवो. पछी बुधने जूदो जूदो पांच प्रकारे स्थापन करवो. तेमां दरेकमां अनुक्रमे १५–१२–१०–८ अने ७ उमेरवा. पछी तेने नवे भाग देवो. शेषमां जो पांच वधे तो निपुण पुरुषे रिष्ट योग कहेवो. प्रतिष्ठा अने विवाहादिकमां

तेनुं फळ आ प्रमाणे छे.—जो एक शेष रह्यो होय तो कलह थाय, बे शेष रह्या होय तो अग्निथी भय थाय, त्रण रह्या होय तो राजाथी भय थाय, चार रह्या होय तो चोरनो उपद्रव थाय अने पांच रह्या होय तो मरण थाय." आ प्रमाणे ज्योतिषसार विगेरेमां कह्युं छे. अथवा.—

"तिथिवारभलग्नाङ्कान् संमील्य न्यस्य पञ्चशः ।
रसा ६ रामा ३ मही १ नागा ८ वेदा ४ स्तेषु क्रमाद्ध्रुवाः ॥ १ ॥
क्षेप्यास्ततो ग्रहै ९ र्भागे पञ्चशेषे फलं क्रमात् ।
रुजा १ ग्नि २ क्षितिभृ ३ च्चोरभयं ४ मृत्युभयं ५ तथा ॥ २ ॥
राशिपञ्चकशेषाणां योगे तु नवभिर्हृते ।
पञ्चशेषे भवेन्नागभीतिर्लग्ने निशागते ॥ ३ ॥"

"तिथि, वार, नक्षत्र अने लग्नना अंकने एकठा करीने तेने पांच वार स्थापन करवा. तेमां अनुक्रमे छ, त्रण, एक, आठ अने चार नाखवा. त्यारपछी तेने नवे भाग देवो. भाग देतां एकथी पांच सुधी जो शेष रहे तो अनुक्रमे आ प्रमाणे फळ जाणवुं. एक शेष रहे तो व्याधि थाय, बे रहे तो अग्निथी भय थाय, त्रण रहे तो राजाथी भय थाय, चार रहे तो चोरथी भय थाय अने पांच शेष रहे तो मृत्युभय थाय. रात्रिना लग्नमां पांचे राशिमां जे शेष रहेल होय तेने एकठा करीने पछी नवे भाग लेतां जो पांच शेष रहे तो सर्पनो भय थाय.

॥ इति बुधपञ्चकदोषः ॥

मूळ श्लोकमां "पिनष्टि" एटले "(तत्काळ रिष्ट योगनो) नाश करे छे" एम कह्युं. ते विषे जातकवृत्तिमां पण एमज लख्युं छे के—"बुध, गुरु अने शुक्रना उत्कृष्ट बळे करीने तथा रिष्ट योग करनारा ग्रहो उपर तेमनी (बुध, गुरु अने शुक्रनी) पुष्ट (पूर्ण) दृष्टि पडवाथी सर्वे रिष्ट योगोनी निर्बळता थाय छे" एम कह्युं छे, तेथी अहीं पण तेज प्रकारे कह्युं.

हवे ते (बुध, गुरु अने शुक्र)नाज उच्चपणाने विषे शक्तिनुं फळ कहे छे.—

बलिष्ठः स्वोच्चगो दोषानशीतिं शीतरश्मिजः ।
वाक्पतिस्तु शतं हन्ति सहस्रं चासुरार्चितः ॥ ५५ ॥

अर्थ—बलिष्ठ अने पोताना उच्च स्थानमां रहेलो बुध एंशी दोषोने हणे छे, (एवोज) गुरु सो दोषोने हणे छे अने (एवोज) शुक्र हजार दोषोने हणे छे.

बलिष्ठ एटले सूर्यना बिंबनी साथे रहेलो न होय ए आदिए करीने अत्यंत बळवान्. आ (बलिष्ठ) तथा पोताना उच्च स्थानमां रहेलो ए बन्ने विशेषणो गुरु अने शुक्रने

पण जोडवां—जाणवां. दोषो एटले पादगत वेध, क्रांतिसाम्य विगेरे असाध्य दोषो सिवायना बीजा दोषोने हणे छे एम पोतानी मेळे जाणवुं. वळी एंशी, सो अने हजार एवा शब्दो अहीं लख्या छे ते घणा, अतिघणा अने तेथी पण घणा जाणवा, परंतु कहेली संख्यावाळाज न जाणवा. अभिप्राय ए छे के बुध, गुरु अने शुक्र बलिष्ठ अने पोताना उच्च स्थानमां रहेला होय तो प्रतिष्ठादिक कार्य करवुं शुभ छे. एज प्रमाणे आगळ पण जाणवुं.

आ त्रणे ग्रहो केंद्रमां रह्या होय तो तेनी केटली शक्ति होय ते कहे छे.—

बुधो विनार्केण चतुष्टयेषु, स्थितः शतं हन्ति विलग्नदोषान् ।
शुक्रः सहस्रं विमनोभवेषु, सर्वत्र गीर्वाणगुरुस्तु लक्षम् ॥ ५६ ॥

अर्थ—सूर्यनी साथे नहीं रहेलो बुध चारमांथी कोइ पण केंद्रस्थानमां रह्यो होय तो ते लग्नना सो दोषोने हणे छे, सूर्य विनानो शुक्र सातमा सिवाय बाकीना कोइ पण केंद्रस्थानमां रह्यो होय तो ते लग्नना हजार दोषोने हणे छे अने सूर्य विनानो गुरु सर्वत्र एटले चारमांना कोइ पण केंद्रस्थानमां रह्यो होय तो ते लग्नना लाख दोषोने हणे छे.

विनाऽर्केण सूर्य विना ए पद त्रणेनी साथे जोडवुं. विमनोभवेषु एटले सातमा स्थानने वर्जीने बाकीनां केन्द्रस्थानोमां. सर्वत्र एटले केंद्रनां चारे स्थानोमां. रत्नमालाना भाष्यमां विमनोभवेषु ए पद त्रणे ग्रहोने विषे जोड्युं छे. ते विवाह अने दीक्षाने आश्रीने अहीं पण अवश्य जोडवुं, केमके "विवाहदीक्षयोर्लग्ने द्यूनेन्दुग्रहवर्जितौ ।" "विवाह अने दीक्षाना लग्नमां सातमुं तथा चंद्रनुं स्थान ए बे स्थान ग्रहरहित होवां जोइए" एम कह्युं छे. मूळमां लाख दोषोने हणवानुं कह्युं. ते विषे कह्युं छे के—

"तिथिवासरनक्षत्रयोगलग्नक्षणादिजान् ।
सबलान् हरतो दोषान् गुरुशुक्रौ विलग्नगौ ॥ १ ॥
त्रिकोणकेन्द्रगा वाऽपि भङ्गं दोषस्य कुर्वते ।
वक्रनीचारिगा वाऽपि ज्ञजीवभृगवः शुभाः ॥ २ ॥"

"लग्नमां रहेला गुरु अने शुक्र तिथि, वार, नक्षत्र, योग, लग्न अने मुहूर्त्तथी उत्पन्न थयेला बळवान् दोषोने (पण) हणे छे. बुध, गुरु अने शुक्र जो त्रिकोण के केंद्रमां रह्या होय तो ते दोषनो नाश करे छे, तथा ते बुध, गुरु अने शुक्र वक्र होय नीचना होय अथवा शत्रुना स्थानमां रहेला होय, परंतु शुभ होय, तो ते पण दोषनो नाश करे छे." अहीं "शुभ होय तो" एम जे कह्युं तेनो भावार्थ आ प्रमाणे छे.—

"वक्रारिनीचराशिस्थः शुभकृत्प्रोच्यते गुरुः ।
स्वोच्चांशस्थः स्ववर्गस्थो भृगुणा ज्ञेन वा युतः ॥ १ ॥"

"जो गुरु वक्री होय, नीच स्थानमां रह्यो होय अथवा शत्रुना स्थानमां रह्यो होय, परंतु पोताना उच्च अंशमां रह्यो होय, पोताना वर्गमां रह्यो होय अने शुक्र के बुधनी साथे रह्यो होय तो ते शुभ कहेवाय छे" एम व्यवहारप्रकाशमां कह्युं छे.

विशेष ए छे के—अहीं दोषो बे प्रकारना जाणवा. तेमां केटलाक दोषो पोते एकलाज लग्नने हणे छे—दूषित करे छे, अने केटलाक बे त्रण मळीनेज लग्नने हणे छे, पण एकला हणी शकता नथी. तेमां एकला दोषो आ प्रमाणे छे.—

दीक्षामां पूर्णिमा तिथि १, प्रतिष्ठामां मंगळवार २, प्रतिष्ठादिकमां गुरुने चंद्रनुं बळ न होय ते ३, शिष्य अने स्थापकने गुरु, चंद्र अने सूर्य ए त्रणेनां बळ होवां जोइए ते न होय ते ४, विवाहमां वरने चंद्रनुं बळ न होय ते ५, कन्याने गुरु, चंद्र अने सूर्य ए त्रणेनां बळ होवां जोइए ते न होय ते ६, शिष्य, स्थापक, वर अने कन्याने जन्मनी राशिनुं लग्न १०, ते चारेने जन्मलग्ननुं लग्न होय ते १४, तथा ते चारेने जन्मराशिथी आठमुं लग्न १८, जन्मलग्नथी आठमुं लग्न २२, जन्मराशिथी बारमुं लग्न २६, अने जन्मलग्नथी बारमुं लग्न ३०, तेज शिष्यादिक चारेने जन्मनी राशिथी आठमा स्थानमां रहेला ग्रहोनुं तात्कालिक[1] लग्नमां (लग्नकुंडळीमां) पहेला भवनमां रहेवापणुं ३४, अथवा जन्मलग्नथी आठमा स्थानमां रहेला ग्रहोनुं तात्कालिक लग्नमां पहेला भवनमां रहेवापणुं ३८, ते चारेनां जन्मनक्षत्रो ४२, प्रतिष्ठादिक सर्व कार्यना लग्नमां क्रूर ग्रहोए भोगवीने मूकेलुं ४३, भोग्य (भोगववानुं) ४४, अने आक्रमण करेलुं नक्षत्र, ४५ अथवा ग्रहविद्ध नक्षत्र ४६, ग्रहभिन्न (ग्रहे भेदेलुं) नक्षत्र ४७, ग्रहोना उदयवडे दूषित थयेलुं ४८, तथा अस्तवडे दूषित थयेलुं ४९, वक्र ग्रहे आक्रमण करेलुं ५०, उल्कापात विगेरे उत्पातथी दूषित थयेलुं नक्षत्र ५१, लग्नगंडांत ५२, तिथिगंडांत ५३, नक्षत्रगंडांत ५४, एकार्गल ५५, विष्टि ५६, व्यतिपात ५७, वैधृत ५८, क्रांतिसाम्य ५९, संक्रांतिनी पूर्वनी तथा पछीनी सोळ घडीओ ६०, अर्धयाम ६१, कुलिक ६२, ग्रहणनुं नक्षत्र ६३, ग्रहणथी दूषित थयेला दिवसो ६४, लग्नथी ६५ चंद्रथी ६६ के ते बन्नेथी ६७ सातमे स्थाने रहेलो क्रूर ग्रह, ते त्रणेथी सातमे स्थाने रहेलो शुक्र ७०, अशुभ वार तथा होरा ७१, अशुभ स्थाने रहेला ग्रहो ७२, भावरीतिथी पण निषिद्ध स्थानमां आवता ग्रहो ७३, लग्ननी ७४, चंद्रनी अथवा ते बन्नेनी ७६ आगळ पाछळना पंदर त्रिंशांशनी मध्ये बे क्रूर ग्रहो आववाथी क्रूर कर्तरी थाय छे ते, लग्ननो स्वामी ७७, नवांशानो स्वामी ७८ अथवा ते बन्ने ७९ भावे करीने छठा होय ते, अथवा ते त्रणे भावे करीने आठमा होय ते ८२, नहीं कहेलो नवांशक ८३, आश्रितपणाए करीने

१ जे वखते कार्य करवुं होय तेज वखते.

चंद्रथी अशुद्ध थयेलुं लग्न ७४, के क्रूर ग्रहथी अशुद्ध थयेलुं लग्न ७५, अथवा तेमनो नवांशक ७७, उदयनी अशुद्धि ७७ तथा अस्तनी अशुद्धि ७९.

"एषां मध्यादेकेनापि हि दोषेण दूष्यते लग्नम् ।
द्वित्रैर्दोषैर्मिलितैर्यैर्न शुजं तानथो वक्ष्ये ॥ १ ॥"

"आ उपर गणावेला दोषोमांना एक दोषे करीने पण लग्न दूषित थाय छे. हवे जे बे त्रण दोषो मळीने लग्नने अशुज करे छे ते दोषोने हुं कहीश—कहुं छुं."

"चन्द्रस्य मृतावस्था १ यमाहिरक्षोऽग्निपः क्षणो यत्र २ ।
अवमं त्रिदिनस्पृग्वा ३ जवेत्तदा लग्नमशुजाय ॥ २ ॥"

"जे लग्नने विषे चंद्रनी मरणावस्था होय १, जे मुहूर्त्तनो यम, सर्प, राक्षस के अग्नि स्वामी होय २, तथा अवम (क्षय) अथवा त्रण दिवसने स्पर्श करनारी (फल्गु) तिथि होय तो ते लग्न अशुजने माटे छे."

"पापग्रहलत्ता १ चेदुपग्रहः २ स्याद्वरायुधः पातः ३ ।
ज्ञात्वैवं त्रिजिरेतैर्जवेत्तदा लग्नमशुजाय ॥ ३ ॥"

"जो पाप (दुष्ट) ग्रहनी लत्ता होय १, उपग्रह होय २ तथा श्रेष्ठ आयुधवाळो पात होय ३, आ प्रमाणे आ त्रण कुयोगोवडे दूषित थयेलुं लग्न होय तो ते अशुजने माटे छे."

"द्विव्ययगाश्चेत्क्रूराः १ सौम्यानां केन्द्रसंस्थितिर्न जवेत् २ ।
लग्नपतिर्दुष्टयुतो ३ जवेत्तदा लग्नमशुजाय ॥ ४ ॥"

" जो क्रूर ग्रहो बीजा के बारमा स्थानमां रह्या होय १, सौम्य ग्रहो केंद्रस्थानमां रहेला न होय २ अने लग्ननो स्वामी दुष्ट (क्रूर) ग्रहनी साथे रहेलो होय ३ तो ते लग्न अशुजने माटे छे."

"शुजदृग्हीनं लग्नं १ प्रसूतिजं नो शुजैर्युतं दृष्टम् २ ।
केन्द्रस्थाश्चेन्न शुजा ३ जवेत्तदा लग्नमशुजाय ॥ ५ ॥"

"जो शुज ग्रहनी दृष्टि रहित लग्न होय १, जन्मनी राशि शुज ग्रहोए सहित के दृष्ट न होय २ तथा केंद्रस्थानमां शुज ग्रहो न होय ३ तो ते लग्न अशुजने माटे छे." अहीं प्रसूतिजं एटले शिष्य, स्थापक, कन्या अने वरनी जन्मराशि शुज ग्रहोए युक्त अथवा दृष्ट न होय एम जाणवुं.

"रविजीवौ समरेखौ शुद्धां १ लग्नेऽपि मध्यजावफलौ २ ।
केन्द्रगतौ नो सौम्यौ ३ जवेत्तदा लग्नमशुजाय ॥ ६ ॥"

"जो सूर्य अने गुरु शुद्धिने विषे सम रेखावाळा होय १ अने लग्नने विषे पण मध्यम फळवाळा होय २, तथा केंद्रमां बे सौम्य ग्रहो रहेला न होय ३ तो ते लग्न अशुभने माटे छे."

"व्ययगः सौरो १ नवमे पापखगः सद्भिर्वियुक्तः स्यात् २ ।
भृगुसुतयुक्तश्चन्द्रो ३ भवेत्तदा लग्नमशुभाय ॥ ७ ॥"

"जो बारमा स्थानमां शनि होय १, नवमा स्थानमां शुभ ग्रह रहित एकलो पाप ग्रहज रह्यो होय २ अने चंद्र शुक्रे करीने युक्त होय ३ तो ते लग्न अशुभने माटे छे." प्रतिष्ठामां शुक्र अने चंद्रनो योग श्रेष्ठ छे, तेथी विवाहादिकमां आ योग अशुभ जाणवो.

"अन्त्यचतुर्थे लग्नं १ जन्मतिथि २ र्मास एव जन्माख्यः ३ ।
फाल्गुनमीनार्कयुति ४ र्भवेत्तदा लग्नमशुभाय ॥ ८ ॥"

"बारमुं के चोथुं लग्न होय १, जन्मनी तिथि होय २, जन्मनो मास होय ३ तथा फाल्गुन मासमां मीन संक्रांति होय ४ तो ते लग्न अशुभने माटे छे."

आ सर्वे समुदायवाळा दोषो बुध, गुरु अने शुक्र केंद्रादिक स्थानमां रह्या होय तो हणाय छे. ते विषे व्यवहारप्रकाशमां कह्युं छे के—

"हन्ति शतं दोषाणां शशिजः समुदायिनां हि केन्द्रस्थः ।
शुक्रो हन्ति सहस्रं बली गुरुर्लक्षमेकं हि ॥ १ ॥"

"केंद्रमां रहेलो बुध समुदायवाळा सो दोषोने हणे छे, बळवान् शुक्र हजारने हणे छे अने गुरु लाख समुदायी दोषोने हणे छे."

जे एकला दोषो छे ते बे प्रकारना छे—साध्य अने असाध्य. तेमां गंडांत, विष्टि, परम जामित्र अने वेध विगेरे दोषो असाध्य छे. आ दोषो होय त्यारे सर्व ग्रहोनुं बळ विगेरे विविध गुणो छतां पण लग्न ग्रहण करवा लायक नथी. कह्युं छे के—

"एकोऽपि दूषयेद्दोषः प्रवृद्धं गुणसंचयम् ।
सम्पूर्णं पञ्चगव्येन मद्यबिन्दुर्घटं यथा ॥ १ ॥"

"जेम दुध, दहीं, घी विगेरे पंच गव्ये करीने संपूर्ण भरेला घडाने एकज मदिरानुं बिंदु दूषित करे छे तेम वृद्धि पामेला गुणसमूहने एकज दोष दूषित करे छे."

जे साध्य दोषो छे तेमना प्रतिकारने बे श्लोकवडे कहे छे.—

लग्नजातान्नवांशोत्थान् क्रूरदृष्टिकृतानपि ।
हन्याज्जीवस्तनौ दोषान् व्याधीन् धन्वन्तरिर्यथा ॥ ५७ ॥

अर्थ—लग्नथी उत्पन्न थयेला, नवांशकथी उत्पन्न थयेला अने क्रूर दृष्टिए करेला पण दोषोने पहेला स्थानमां रहेलो गुरु हणे छे. जेम शरीरमां रहेला व्याधिओने धन्वंतरि हणे छे तेम.

तनौ एटले मूर्ति (पहेला) स्थानमां रहेलो अति बलिष्ठ गुरु आ दोषोने हणे छे. लग्नथी उत्पन्न थयेला एटले "जन्मराशिं जनेर्लग्नं" (विमर्श ५, श्लोक २५) ए श्लोकमां कहेला दोषोने. नवांशकथी उत्पन्न थयेला एटले जे नवांशकनो अधिकार कर्यो न होय अर्थात् निषेध कर्यो होय ए विगेरेथी उत्पन्न थयेला दोषोने. क्रूर दृष्टिए करेला एटले "स्थापने स्युर्विधौ दृष्टे युक्ते च" (विमर्श ५, श्लोक २८) ए श्लोकमां कहेला छे ते दोषोने हणे छे. आथी करीने—

"दर्शने यदि स्यादंशद्वादशकमध्यगः क्रूरः ।
इन्दोर्लग्नस्य तथा न शुभः सर्वेषु कार्येषु ॥ १ ॥"

"चंद्र अने लग्ननी दृष्टिए जो बार अंश सुधीमां क्रूर ग्रह रहेलो होय तो ते कोइ पण (शुभ) कार्यमां शुभ नथी."

आ श्लोकनो भावार्थ आ प्रमाणे छे.—पोतपोताना त्रिंशांशमां रहेला लग्न, चंद्र अने बीजा सर्वे ग्रहो तात्कालिक (जे काळे कार्य करवानुं होय ते काळना) स्पष्ट करवा. पछी जे ग्रहोए लग्न अने चंद्र देखाता होय एटले लग्न अने चंद्र उपर जे ग्रहोनी दृष्टि पडती होय ते ग्रहोना अने लग्न तथा चंद्रना भोगवायेला त्रिंशांशो बाद करवा. तेमां जो बाकी बार सुधी रहे तो क्रूर ग्रह अशुभ जाणवो, अने सौम्य ग्रह होय तो ते शुभ जाणवो. जेमके—वीशमा अंशमां रहेलो शनि आठमा अंशमां रहेला लग्न के चंद्रने जुवे छे, तेथी वीशमांथी आठने बाद करतां बाकी बार रहे छे, माटे ते अशुभ छे. ए प्रमाणे अगीयार, दश विगेरे बाकी रहे तो ते पण वर्जवा योग्य छे, परंतु बार करतां वधारे अंशमां रहेला क्रूर ग्रहनी दृष्टि दोषवाळी—वर्ज्य नथी.

मूळ श्लोकमां "क्रूर दृष्टिए करेला पण" एम पण एटले अपि शब्द लख्यो छे तेथी क्रूर ग्रहनी साथे रहेवाथी पण उत्पन्न थयेला दोषो अहीं जाणवा. ते विषे "दीक्षायां कुरुते चन्द्रः" (विमर्श ५, श्लोक २५) ए श्लोकमां कह्युं छे. व्याधीन् एटले जेम शरीरमां रहेला व्याधिओने धन्वंतरि हणे छे.

हवे शुभ ग्रहोनी दृष्टिनी केटली शक्ति होय छे ? ते कहे छे.—

लग्नात् क्रूरो न दोषाय निन्द्यस्थानस्थितोऽपि सन् ।
दृष्टः केन्द्रत्रिकोणस्थैः सौम्यजीवसितैर्यदि ॥ ५८ ॥

अर्थ—क्रूर ग्रह लग्नथी निंद्य स्थानमां रहेलो होय तोपण जो ते केंद्र के त्रिकोणमां रहेला बुध, गुरु अने शुक्रे जोयेलो होय (आ ग्रहोनी तेना पर दृष्टि पडती होय) तो ते दोषने माटे नथी.

निंद्य स्थान एटले आ पांचमा विमर्शमां "त्रिष्वपि क्रूरमध्यस्थौ" (श्लो० २३), "नवेजन्मनि जन्मर्क्षात्" (३१), "शनिस्त्रिकोणकेन्द्रस्थ" (३२), "रविः कुजोऽर्कजो राहुः" (३३), "तनुबन्धुसुतद्यून" (५३), इत्यादि श्लोकोमां कहेला ते ते दोषोनो आ अपवाद छे. "दृष्टः" एटले जोयेलो एम सामान्य रीते कह्युं छे, तोपण अहीं पुष्ट दृष्टि जाणवी. वळी जो ते क्रूर ग्रहने बुध, गुरु अने शुक्र साथे स्वाभाविक अथवा तात्कालिक मैत्री होय तो दृष्टिथी अधिक विशेष थयो एम जाणवुं. केंद्र अने त्रिकोणमां रहेला एटलुं कह्युं छे तेना उपलक्षणथी पोताना उच्च स्थानमां रहेला ए विगेरे वर्ग अत्यंत बलिष्ठ होय ते पण जाणवा. कह्युं छे के—

"कूरा हवंति सोमा सोमा दुगुणं फलं पयच्छंति ।
जइ पासइ किंदठिओ तिकोणपरिसंठिओ वि गुरू ॥ १ ॥"

"जो केंद्रमां रहेलो अथवा त्रिकोणमां रहेलो गुरु क्रूर ग्रहोने जोतो होय तो ते क्रूर ग्रहो सौम्य थइ जाय छे, अने सौम्य ग्रहोने जोतो होय तो ते बमणा शुभ फळने आपे छे."

हवे शुभ ग्रहोनी संस्थाने कहे छे.—

त्रिकोणकेन्द्रायगतैः शुभग्रहैर्विसप्तमेनासुरपूजितेन च ।
स्युः क्रूरचन्द्रै रिपुदविक्रमाऽय ११ गैः, कर्तुःश्रियः सन्निहिताश्च देवताः ॥५९॥

अर्थ—शुभ ग्रहो त्रिकोण, केंद्र अने अगीयारमां स्थाने रह्या होय, तेमां पण शुक्र सातमा सिवाय बीजां स्थानोमां रह्यो होय, तथा क्रूर ग्रहो अने चंद्र छठ्ठा, त्रीजा अने अगीयारमा स्थाने रह्या होय. आवी ग्रहसंस्था समये कार्य कर्युं होय तो कर्ताने लक्ष्मी मळे छे अने प्रतिमानी सांनिध्यमां देवता रहे छे.

सातमा स्थानने वर्जीने केंद्र अथवा त्रिकोणमां रहेलो शुक्र जाणवो. क्रूरचन्द्रैः एटले क्रूर ग्रहो अने चंद्र. ते चंद्र अने क्रूर ग्रहो प्रतिष्ठादिक लग्नमां त्रीजे, छठ्ठे अने अगीयारमे स्थाने रह्या होय तोज ते शुभ छे. अहीं आ प्रमाणे अपवाद छे.—

"पापोऽपि कर्तृजन्मेशः केन्द्रस्थः शस्यते ग्रहः ।
अशून्यानि च केन्द्राणि मूर्तौ जीवज्ञभार्गवाः ॥ १ ॥"

"कर्ताना जन्मनो स्वामी पापी—क्रूर होय तोपण जो ते ग्रह केंद्रमां रह्यो होय तो ते शुभ छे, अने केंद्रस्थान अशून्य होय तो ते वखाणवा लायक छे, तथा पहेला स्थानमां रहेला बुध, गुरु अने शुक्र शुभ छे." भावार्थ ए छे के—कर्ता एटले प्रतिष्ठा करावनार, श्रावक, दीक्षा लेनार शिष्य अथवा दीक्षा देनार गुरुना जन्मने विषे अथवा नामने विषे जे राशि होय तेनो स्वामी पापी होय तोपण जो ते केंद्रमां रह्यो होय तो शुभ छे, अने केंद्रस्थाने शुभ ग्रहो सहित होय तो ते श्रेष्ठ छे, पण शून्य होय तो ते श्रेष्ठ नथी.

मूळ श्लोकमां "संनिहिता" एटले प्रतिमाने विषे देवता सांनिध्य करे छे एटले रहे छे. आवा प्रकारना लग्न वखते प्रतिष्ठा करवी. ए तात्पर्य छे. अहीं प्रतिष्ठाने आश्रीने आ ग्रहसंस्था कही छे, परंतु आवी ग्रहसंस्था सर्व शुभ कार्यमां सिद्धि आपनारी छे एम जाणवुं.

हवे उदय अने अस्तनी शुद्धि कहे छे.—

पश्यन्नंशाधिपो लग्नं भवेदुदयशुद्धये ।
अंशास्तेऽशस्तु लग्नास्तमस्तशुद्ध्यै विलोकयन् ॥ ६० ॥

अर्थ—जो अंशाधिपति लग्नने जोतो होय तो ते उदयशुद्धिने माटे छे, परंतु अंश (नवमांश लग्न)थी सातमा स्थाननो स्वामी जो लग्नथी सातमा स्थानने जोतो होय तो ते अस्तशुद्धिने माटे थाय छे.

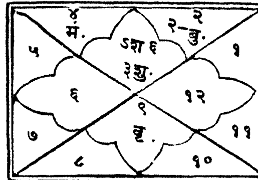
अहीं अंशाधिप अंश शब्दे करीने अहीं सर्वत्र नवांशकज ग्रहण करवो, केमके ते नवांशने विषेज उदय अने अस्तनी शुद्धि जोवाय छे. वळी "प्रभुरिह नवांशः" अहीं नवांशोज प्रभु छे एम कह्युं छे, परंतु द्वादशांश के त्रिंशांशने विषे आ शुद्धि जोवाती नथी. "उदयशुद्धये" अहीं चतुर्थी विभक्ति तादर्थ्य—तेने अर्थे एवा अर्थमां छे. एज प्रमाणे आगळ पण जाणवुं. तेथी करीने—उदय पामेलो नवांशनो स्वामी पोताना[1] स्थानमां रहीने जो लग्नने जोतो होय तो उदयशुद्धि थाय छे, केमके लग्नने जोवामां त्यां रहेला नवांशकनुं पण तेनाथी अपृथक् (अभिन्न)पणाए करीने जोवापणुं छे. अंशाधिपः ए उपलक्षण छे, तेथी करीने प्रश्नादिकना लग्नने विषे लग्ननो स्वामीज लग्नने जोतो होवो जोइए. कह्युं छे के—"शिरःशून्यं तदा लग्नं यदा स्वामी न पश्यति।" "ज्यारे लग्ननो स्वामी लग्नने जोतो न होय त्यारे ते लग्न मस्तक रहित छे एम जाणवुं." अंशास्तेशः—अस्त एटले सातमुं स्थान, तेथी करीने आवो अर्थ जाणवो के—लग्नने विषे जे राशिना नामनो नवांशक होय ते राशिथी जे अस्त—सातमुं स्थान, ते सातमानो स्वामी जो लग्नथी[2] अपेक्षाए सातमा स्थानने जोतो होय तो अस्तशुद्धि जाणवी. भावार्थ ए छे जे—कर्क लग्ननो त्रीजो कन्या नवांशक ग्रहण कर्यो होय त्यारे जो नवांशनी कन्या राशिथी सातमा स्थानमां रहेली मीन राशिनो स्वामी गुरु मेष, वृश्चिक, वृष, कन्या, तुल, मिथुन अने कर्कमांना कोइ पण स्थानमां रहीने कर्क लग्नथी सातमी मकर राशिने जोतो होय तो कर्क लग्नना कन्या नवांशकमां अस्तशुद्धि थइ जाणवी. ए रीते बीजे ठेकाणे पण जाणवुं. केटलाक आचार्यो कहे छे के—"लग्नना नवांशकनी समान नामवाळी राशि कोइ पण स्थाने रहीने पोताना स्वामीवडे जोवाती होय त्यारे उदयशुद्धि कहेवाय छे." ते विषे हरिभद्र सूरि पण कहे छे के—

१ पोताने स्थाने. २ लग्नथी.

"उदयत्थसुद्धिमिण्हिं जणामि उदउ नवंसगो इत्थ ।
तम्मि अ लग्गविइसे सनाहदिछे उदयसुद्धी ॥ १ ॥"

"हवे हुं उदय अने अस्तनी शुद्धिने कहुं छुं—इहां उदयशुद्धि नवमांशमां रही छे. ते उदयशुद्धिमां लग्नमां अंगीकार करेल नवमांशने नवमांशनो स्वामी जोतो होय तो उदयशुद्धि जाणवी."

आनुं उदाहरण ए छे जे—मिथुन लग्नने मीन नवांशक लीधो होय त्यारे ते (मीन)ना स्वामी गुरुए जो मीन राशि जोवाती होय तो उदयशुद्धि जाणवी. ए रीते सर्व ठेकाणे जाणवुं. स्थापना नीचे प्रमाणे.—



व्यवहारप्रकाशमां तो आ बन्ने प्रकारनी शुद्धिने घणी मानी छे. एटलुं तेनुं फळ उत्तम कह्युं छे. ते आ प्रमाणे.—

"अंशाधिपतेर्दृष्टिर्यदांशकेऽंशास्तपस्य जागास्ते १ ।
जागपतेर्लग्ने वाऽप्यंशास्तपतेर्विलग्नास्ते २ ॥ १ ॥
उदयास्तस्य च यदि दृष्टेः शुद्धिर्जवेद्विलग्नेऽत्र ।
कान्ताया मङ्गल्यान्यतनूनि तनौ प्रजायन्ते ॥ २ ॥"

"लग्नमां ग्रहण करेल नवमांशना स्वामीनी जो नवमांश उपर दृष्टि होय तो उदयशुद्धि. नवमांशथी सातमा स्थानना स्वामीनी दृष्टि नवमांशथी सातमा स्थान उपर होय तो अस्तशुद्धि. अथवा नवमांशना स्वामीनी लग्न उपर दृष्टि होय तो उदयशुद्धि. नवमांशथी सातमाना स्वामीनी लग्नथी सातमा स्थान उपर दृष्टि होय तो अस्तशुद्धि. अहीं लग्नने विषे जो दृष्टिथी उदय अने अस्तनी शुद्धि होय तो स्त्रीना शरीरमां घणां मांगलिक थाय छे."

यतिवल्लजमां तो आ प्रमाणे पण कह्युं छे.—

"उदयास्तांशतुल्याख्यराश्योरपि विलोकने ।
योगेऽथवा परे प्राहुरुदयास्तविशुद्धताम् ॥ १ ॥"

"उदयांश अने अस्तांशनी तुल्य नामवाळी बन्ने राशिना जोवामां अथवा योगमां केटलाक आचार्यो उदय अने अस्तनी शुद्धि कहे छे." अहीं विलोकने एटले पोत-

पोताना स्वामीए (ते बन्ने राशिने) जोयेल होय तो. योगे—उदयांश अने अस्तांशना नामवाळी बन्ने राशिओ पोतपोताना स्वामीए अधिष्ठित होय तो.

आ उदय अने अस्तनी शुद्धिना प्रकरणथी मात्र दृष्टिनुंज काम छे, तेथी ते दृष्टि पुष्ट अथवा अपुष्ट गमे ते होय तेमां कांइ पण विशेष जाणवो नहीं.

विवाहेषु द्वयोर्ग्राह्या विशुद्धिरुदयास्तयोः ।
प्रतिष्ठादीक्षयोस्तावानस्तशुद्धौ तु नाग्रहः ॥ ६१ ॥

अर्थ—विवाहने विषे उदय अने अस्त बन्नेनी शुद्धि अवश्य ग्रहण करवी, परंतु प्रतिष्ठा अने दीक्षामां अस्तनी शुद्धि माटे एटलो बधो आग्रह नथी.

ग्राह्या ए शब्दमां आवश्यक अर्थमां घ्यण् प्रत्यय थयेलो होवाथी "अवश्य ग्रहण करवी" एवो अर्थ थाय छे. अस्तशुद्धि माटे आग्रह नथी एटले के उदयशुद्धि तो सर्व कार्यना लग्नमां होवीज जोइए ए अभिप्राय छे.

आ बाबतमां हरिभद्र सूरि तो आ प्रमाणे कहे छे.—

"वयगहणपइट्ठासु उदयत्थविसुद्धिवज्जिअं पि सुहं ।
मन्नंति केइ लग्गं तं च मयं बहुमयं नेयं ॥ १ ॥"

"केटलाएक आचार्यो व्रतग्रहण (दीक्षा) अने प्रतिष्ठामां उदय अने अस्तनी शुद्धि रहित लग्नने पण शुभ माने छे. आ मत घणाने संमत छे एम जाणवुं."

आ रीते ग्रहण करवा लायक लग्ननो अने तेना नवांशादिकनो गुण दोषनी चिंता (विचार) करवापूर्वक निर्णय कर्या छतां पण ते समय क्यारे आवे छे ? ते जाणवा माटे लग्नथी काळ लाववानो प्रकार कहेवानो छे. तेमां प्रथम लग्ननुं मान (प्रमाण) कहे छे.—

मध्ये मेषझषौ पलैर्जनयनै २२७ र्मातङ्गतत्त्वै २५८ र्वृषः,
कुम्भो वा मिथुनः पुनर्मकरवत्तर्काभ्रधूमध्वजैः ३०६ ।
कर्की धन्विवदम्बराम्बुधिगुणै ३४० रभ्राब्धिरामैरलिः ३४०,
सिंहश्चाथ कनीघटौ ग्रहरदै ३२९ रुद्यन्त्यमी राशयः ॥ ६२ ॥

अर्थ—मध्य देशमां मेष अने मीन राशि २२७ पळोए करीने उदय पामे छे, वृष अने कुंभ २५८ पळोए करीने उदय पामे छे, मिथुन अने मकर ३०६ पळोए करीने उदय पामे छे, कर्क अने धन ३४० पळे, सिंह अने वृश्चिक ३४० पळे तथा कन्या अने तुला ३२९ पळोए करीने उदय पामे छे.

मध्ये एटले "हिमवद्विन्ध्ययोर्मध्यं" "हिमालय अने विंध्याचळ पर्वतनो मध्य" इत्यादि निघंटुमां कहेवाथी मध्य देशमां आ आ राशिओ आटला आटला पळोए करीने

उदय पामे छे. पळ एटले एक घडीनो साठमो भाग. एक पळनुं प्रमाण साठ गुरु अक्षरोए करीने थाय छे. ते साठ गुरु अक्षरवाळो कामक्रीडा नामनो छंद (श्लोक) होय छे. ते आ प्रमाणे.—

"देवः श्रीसर्वज्ञो विश्वश्रीशः सिद्धिस्त्रीकान्तः,
कामद्रुद्रोहाग्निर्मायादोषाभास्वान्नीरागः ।
चन्द्रश्वेतश्लोकः स्याद्वादारामाब्दो लोकार्च्यो,
वीतापायः शान्तो लोकेभ्योऽसंख्यं सौख्यं देयात् ॥ १ ॥"

"विश्वनी लक्ष्मीना स्वामी, सिद्धिरूपी स्त्रीना पति, कामदेवरूपी वृक्षनो नाश करवामां अग्नि समान, मायारूपी रात्रीनो नाश करवामां सूर्य समान, राग रहित, चंद्र जेवा उज्ज्वळ कीर्तिवाळा, स्याद्वादरूपी आराम (बाग)ने नवपल्लवित करवामां मेघ समान, त्रिभुवनना लोकने पूज्य, कष्ट रहित अने शांत एवा श्रीसर्वज्ञ देव लोकोने असंख्य सुख आपो."

एक पळना मानवाळो आवो श्लोक साठ वार बोलवाथी एक घडी थाय छे. अहीं कोइ शंका करे के—"पळना प्रमाणवाळा श्लोकनुं बोलवुं शीघ्र शीघ्रतरपणे अथवा मंद मंदतरपणे पण संभवे छे, तेथी आ कहेलुं पळनुं मान शी रीते मळतुं आवे ?" आनो उत्तर ए छे जे—"शीघ्रता अने मंदता रहित मध्यमपणे बोलवुं एज अहीं इच्छेलुं छे, केमके सर्व व्यवहारो लोकमां मध्यम प्रमाणे करीनेज प्रवर्ते छे. अथवा सूक्ष्म दृष्टिवाळाने आ बीजी रीते पण जाणवुं के—संगीतशास्त्रमां प्रसिद्ध एवा पंचमातृक नामना ताळने अविच्छिन्नपणे (एक धाराए) चोवीश वार हाथ अने मुखवडे सम्यक् प्रकारे स्पष्ट करवाथी सर्वथा प्रकारे विसंवाद विनाज एक जळपळ थाय छे." ताळनुं स्वरूप तथा तेने स्पष्ट करवानो विधि संगीतशास्त्रने जाणनाराओ पासेथी जाणवो.

मूळ श्लोकमां भनयनैः २२७ कह्या छे. तेमां आ प्रमाणे संप्रदाय छे.—

"लङ्कोदया नागतुरङ्गदस्रा २७८, गोऽङ्काश्विना २९९ रामरदा ३२३ विनाड्यः ।
क्रमोत्क्रमस्थाश्चरखंडकैः स्वैः, क्रमोत्क्रमस्थैश्च विहीनयुक्ताः ॥ १ ॥
मेषादिषण्णामुदयाः स्वदेशे, तुलादितोऽमी च षडुत्क्रमस्थाः ।"

"लंका नगरीना उदयनुं-लग्ननुं मान २७८–२९९ अने ३२३ पळोनुं छे. आ पळोने अनुक्रमे तथा उत्क्रमे स्थापन करवा. (तेथी करीने मेषथी कन्या सुधीना लग्ननुं मान थयुं. हवे तेज पाछा उत्क्रमे करीने तुलाथी मीन सुधीनुं मान जाणवुं. ते नीचेनी स्थापनाथी स्पष्ट समजाशे.) पछी जे देशना लग्ननुं मान करवुं होय ते देशना पोताना [1]चरखंडोए करीने अनुक्रमे रहेला उपरना (२७८–२९९–३२३) त्रण अंकने अनुक्रमे

१ चरखंडनी समजुती हमणांज नीचे कहेशे.

करीनेज रहित करवा (बाद करवा), अने उत्क्रमे रहेला (३२३–२ए९–२७०) त्रण अंकने उत्क्रमे करीने युक्त–सहित करवा, तेथी ते छ अंको पोताना देशमां मेषादिक छ राशिनां लग्न थयां एम जाणवुं, अने तेज छ अंको उत्क्रमे स्थापन करवाथी तुला-दिक छ राशिनां लग्न जाणवां."

लंकाना लग्नना पळोना माननी स्थापना क्रम अने उत्क्रमवडे आ प्रमाणे छे.—

मेष	२७०	मीन
वृष	२ए९	कुंभ
मिथुन	३२३	मकर
कर्क	३२३	धन
सिंह	२ए९	वृश्चिक
कन्या	२७०	तुला

आ लग्नमानना पळोमांथीज "अयनलव०" इत्यादि नीचे कहेला करणकुतूहलनी रीते करीने प्राप्त थयेला पोतपोताना देशना चरखंडोने अनुक्रमे बाद करवाथी तथा सहित करवाथी पोतपोताना देशनां लग्नमान आवे छे. ते रीत आ प्रमाणे छे.—

"अयनलवदिनैः प्राग्मेषसंक्रान्तिकाला-
भवति दिवसमध्ये या प्रभाऽक्षप्रभा सा ।
दश १० गज ८ दश १० निघ्नी सा प्रभाऽन्या त्रिभक्ता,
प्रतिगृहचरखंडानीति तज्ज्ञा वदन्ति ॥ १ ॥"

"जे दिवसे सूर्य मेष राशिमां संक्रमे छे ते दिवसनी पहेलाना अयनांशना दिवसो मूकीने पछीना दिवसे मध्याह्नसमये जे देशमां जेटली देहनी छाया थती होय ते छाया विषुवच्छाया अने अक्षप्रभा एवे नामे कहेवाय छे. ते छायाने (अंगुलनी संख्याने) त्रण वार स्थापन करी तेने अनुक्रमे १०–८ अने १० वडे गुणवी. पछी छेल्ली संख्याने त्रणवडे भाग देवो. तेम करवाथी त्रणे ठेकाणे जे संख्या आवी ते चरखंडो कहेवाय छे." तेथी करीने मध्य देशमां ५१–४१–१७ चरखंडो आवे छे. पछी उपर लंका लग्नना

---

१ एम धारो के मध्य देशमां मध्याह्ननी छाया अंगुल ५ अने व्यंगुल ८ नी छे. तेने त्रण वार स्थापन करतां ५–८, ५–८, ५–८. प्रथमने १० वडे गुणतां ५०–८० आव्या. ८० व्यंगुलने ६० वडे भाग देतां भागमां एक आव्यो, ते ५० मां उमेरतां ५१ थया. एज रीते बीजी ५–८ संख्याने आठे गुणतां ४०–६४. ६४ मांथी एकने उपर नाखतां ४१ थया. त्रीजी संख्याने तेज रीते दशे गुणतां ५१ आव्या. तेने त्रणे भाग देतां १७ आव्या, तेथी ५१–४१–१७ ए चरखंडो थया. आ देहछायानुं प्रमाण ग्रंथमां आप्युं नथी. समजुतीने माटे अनुमाने लख्युं छे.

श्लोकमां "क्रमोत्क्रमस्थाश्चरखंरुकैः स्वैः" "अनुक्रमे अने उत्क्रमे रहेला ते लंका लग्नना पळो अनुक्रमे तथा उत्क्रमे स्थापन करेला चरखंरुोवरु रहित अने सहित करवा" एम कह्युं छे, माटे जेम लंका लग्ननी त्रण राशिने अनुक्रमे (२७८-२९९-३२३) तथा उत्क्रमे (३२३-२९९-२७८) करीने स्थापन करी छे, तेज रीते चरखंरुोनी त्रण राशिने पण अनुक्रमे (५१-४१-१७) तथा उत्क्रमे (१७-४१-५१) स्थापन करवी. पछी प्रथमनां त्रण लंका लग्नोमांथी प्रथमनी त्रण चरखंरुोनी राशिने बाद करवी, अने पछीनां त्रण लग्नोमां पछीनी त्रण राशिउ नाखवी-भेळववी. तेम करवाथी मध्य देशमां मेषथी कन्या सुधीनी छ राशिउनां लग्नो थयां. तेज छ लग्नो उत्क्रमे स्थापन करवाथी तुलाने आरंभी मीन पर्यंतनां लग्नो थाय छे. तेनी स्थापना नीचे प्रमाणे.—

मध्य देशमां लग्नना माननी स्थापना—

मेष	२२७	मीन
वृष	२५८	कुंभ
मिथुन	३०६	मकर
कर्क	३४०	धन
सिंह	३४०	वृश्चिक
कन्या	३२९	तुला

तेज रीते अणहिल्लपुर पाटणमां ५३-४३-१८ चरखंरुो थाय छे. केवी रीते थाय छे? ते बतावे छे.—

"अणहिल्लपुरे तस्मिन् दिने मध्याह्नसंभवा ।
छाया विषुवती पञ्चाङ्गुला व्यङ्गुलविंशतिः ॥ १ ॥
दशादिघ्ने द्वये षष्ट्या हृतेऽथ व्यङ्गुलाङ्कके ।
लब्धं चोपरि संयोज्यं मानमेवं ततो भवेत् ॥ २ ॥"

"अणहिल्लपुर पाटणमां ते दिवसे मध्याह्नसमये विषुवती नामनी देहछाया अंगुल ५ अने व्यंगुल २० नी छे. आ बन्ने (५-२०)ने दश, आठ अने दशवरु गुणवा. व्यंगुलना अंकने साठे भाग देतां भागमां आवेला अंकने उपर अंगुलना अंकमां चरुावववो. तेम करवाथी उपर कहेलुं (५३-४३-१८) चरखंरुोनुं मान थशे." आ सर्व रीत मुहूर्त्तसारमां कही छे.

त्यारपछी आ (५३-४३-१८) चरखंरुोवरु लंकानां लग्नोनो संस्कार करवाथी अणहिल्लपुर पाटणनां लग्नो थाय छे, ते बाबत कहे छे.—

श्रीमद्गौर्जरपत्तने त्वजझषौ तत्त्वाक्षिभि २२५ गोंघटौ,
षट्तत्त्वैः २५६ शरखाग्निभिश्च ३०५ मिथुनो मार्गाननो वा पलैः ।
कर्की क्ष्मातिशयै ३४१ र्धनुर्वेदलिवत्सिंहो द्विवेदत्रिकैः ३४२,
कन्येन्दुत्रिदशै ३३१ स्तुलावदुदयं यान्तीति मेषादयः ॥ ६३ ॥

अर्थ—श्रीमत् गुर्जर देशना पाटणमां मेष अने मीन लग्न २२५ पळोए करीने उदय पामे छे, वृष अने कुंभ २५६ पळोए करीने, मिथुन अने मकर ३०५ पळोवडे, कर्क अने धन ३४१ पळोवडे, सिंह अने वृश्चिक ३४२ पळोवडे तथा कन्या अने तुला लग्न ३३१ पळोवडे उदय पामे छे, एटले के आटला आटला (उपर कहेला) पळोवडे ते ते मेषादिक लग्नो उदय पामे छे. तेनी स्थापना नीचे प्रमाणे.—

मेष	२२५	मीन
वृष	२५६	कुंभ
मिथुन	३०५	मकर
कर्क	३४१	धन
सिंह	३४२	वृश्चिक
कन्या	३३१	तुला

हवे लग्नोनुं उदय संबंधी घडीओनुं मान अने होरादिकनुं पळमान प्रसंग होवाथी लखे छे.—

लग्नानां मानं		होराणां मानं	द्रेष्काणानां मानं	नवांशानां मानं	द्वादशांशानां मानं	त्रिंशांशानां मानं
	घटी—पल	पल—अक्षर	पल-अक्षर	पल-अक्षर-व्यक्षर	पल—अक्षर	पल—अक्षर
मेष	३—४५	११२—३०	७५	२५	१८—४५	७—३०
वृष	४—१६	१२८	८५—२०	२८—२६—४०	२१—२०	८—३२
मिथुन	५— ५	१५२—३०	१०१—४०	३३—५३—२०	२५—२५	१०—१०
कर्क	५—४१	१७०—३०	११३—४०	३७—५३—२०	२८—२५	११—२२
सिंह	५—४२	१७१	११४	३८	२८—३०	११—२४
कन्या	५—३१	१६५—३०	११०—२०	३६—४६—४०	२७—३५	११— २
तुला	५—३१	१६५—३०	११०—२०	३६—४६—४०	२७—३५	११— २
वृश्चिक	५—४२	१७१	११४	३८	२८—३०	११—२४
धन	५—४१	१७०—३०	११३—४०	३७—५३—२०	२८—२५	११—२२
मकर	५— ५	१५२—३०	१०१—४०	३३—५३—२०	२५—२५	१०—१०
कुंभ	४—१६	१२८	८५—२०	२८—२६—४०	२१—२०	८—३२
मीन	३—४५	११२—३०	७५	२५	१८—४५	७—३०

विशेष आ प्रमाणे छे.—

"रेवत्युदयादश्व्यादीन्युद्गच्छन्ति जलपलैः क्रमशः ।
चित्रान्तान्यृतुनन्दै ९६ र्द्विखरूपै १०२ रष्टखावनिभिः १०८ ॥ १ ॥
शरकुभिः ११५ खद्विकुभि १२० र्युगगुणरूपै १३४ र्वसूदधिमृगांकैः १४८ ।
शशिपञ्चकुभि १५१ स्त्रिशरद्दमाभिः १५३ करविषयवसुधाभिः १५२ ॥ २ ॥
त्रीषुकुभि १५३ रष्टयुगकुभि १४८ रगचतुरेकैः १४७ षडब्धिकुभि १४६ रेवम् ।
हस्तादेः प्रतिलोमं स्वात्याद्युदये क्रमान्मानम् ॥ ३ ॥
अभिजिच्च वसुजिनै २४८ रिति ऋक्षाणामुदयपलसंस्था ।"

"रेवतीनो उदय थया पछी अश्विनीथी आरंभीने चित्रा पर्यंतनां नक्षत्रो अनुक्रमे नीचे लखेला जळपळोए करीने उदय पामे छे. अश्विनी ९६, भरणी १०२, कृत्तिका १०८, रोहिणी ११५, मृगशिर १२०, आर्द्रा १३४, पुनर्वसु १४८, पुष्य १५१, अश्लेषा १५३, मघा १५२, पूर्वाफाल्गुनी १५३, उत्तराफाल्गुनी १४८, हस्त १४७ अने चित्रा १४६ जळपळोए करीने उदय पामे छे. हस्तादिकना उत्क्रमे करीने स्वाति, विशाखा विगेरेना उदयनुं मान जाणवुं. तथा अभिजित् नक्षत्र २४८ जळपळोए करीने उदय पामे छे. आ प्रमाणे नक्षत्रोना उदयना पळोनी संस्था जाणवी." स्थापना नीचे प्रमाणे.—

रे.	९६	अ.
उ.	१०२	भ.
पू.	१०८	कृ.
श.	११५	रो.
ध.	१२०	मृ.
श्र.	१३४	आ.
उ.	१४८	पु.
पू.	१५१	पु.
मू.	१५३	अ.
ज्ये.	१५२	म.
अ.	१५३	पू.
वि.	१४८	उ.
स्वा.	१४७	ह.
	१४६	चि.
अभिजित्	२४८	

आ नक्षत्रोमां अभिजितने वर्जीने अश्विनीथी सवा बबे नक्षत्रोनुं मान मेळववाथी उपर कहेलुं राशिनुं मान थाय छे. (जेमके—अश्विनी ९६, भरणी १०२ अने कृत्ति-

काना पहेला पादना पळो २७ मेळववाथी २२५ पळ थया, तेथी घमी ३ पळ ४५ मेष राशिना लग्ननुं मान थयुं. कृत्तिकानां पाछलां त्रण पादना पळो ८१, रोहिणीना ११५ अने मृगशिरनां बे पादना पळो ६० मेळववाथी कुल पळो २५६ थया, तेथी घमी ४ पळ १६ वृष राशिनुं मान थयुं. ए रीते सर्वत्र जाणवुं.)

हवे राशिउनी विशेष संज्ञाने तथा तेना प्रमाणने कहे छे.—

द्वादशराशिर्भगणो राशिस्तु त्रिंशता भवति भागैः ।
भागे षष्टिर्लिप्ता लिप्ता षष्ट्या विलिप्ताभिः ॥ ६४ ॥

अर्थ—बार राशि मळीने एक भगण (नक्षत्रोनो समूह) कहेवाय छे. (एटले के बार राशि अने भगण ए बे नाम समान छे,) त्रीश भागे करीने एक राशि थाय छे, एक भागमां ६० लिप्ता होय छे, अने एक लिप्ता ६० विलिप्ताए करीने थाय छे.

भागनुं बीजुं नाम त्रिंशांश पण कहेवाय छे. तेनुं मान आ रीते छे.—

"लग्नानां सर्वदेशेषु यन्मानं घटिकादिकम् ।
तच्च द्विघ्नं पलाद्यं स्यान्मानं त्रिंशांशकस्य हि ॥ १ ॥"

"सर्व देशोमां लग्नोनुं जे घटिकादिक मान कह्युं छे ते बमणुं करवाथी जे संख्या आवे तेटला पळादिक त्रिंशांशनुं मान थाय छे." (कारण के एक घमीना बे त्रिंशांश होय छे, तेथी घमीने बमणी करीए तो तेटला पळ एक त्रिंशांशना थाय छे.)

लिप्तानुं बीजुं नाम कळा अने विलिप्तानुं बीजुं नाम विकळा पण छे. विशेष ए के—एक विलिप्ता (विकळा)नी साठ परम विकळा होय छे. ते परम विकळानुं बीजुं नाम अक्षर कहेवाय छे. एक अक्षरना पण साठ व्यक्षरो होय छे, परंतु ते (व्यक्षर) अत्यंत सूक्ष्म काळ होवाथी व्यवहारने योग्य नथी.

लग्नोनुं मान कह्युं. हवे सूर्यने स्पष्ट करवा माटे बारे संक्रांतिउनी अंतराल (वच्चेनी) घमीउने कहे छे.—

सङ्क्रान्त्यन्तरनाडिका अथ धृति १८ र्मेषादितोऽश्वेषुभिः५७,
भूतेभै८५ र्मुनिगोभि ९७ रष्टवसुभि ८८ र्नेत्रर्तुभि ६२ र्नै २७ स्तथा ।
अत्यष्टिश्च १७ समन्विता त्रिनवभिः ९३ खेटर्तुभिः६९ खर्तुभिः ६०,
सप्ताङ्कै ९७ र्निधिकुञ्जरै ८९ रथ धृति १८ श्चन्द्रेक्षणैश्च २१ क्रमात् ॥६५॥

अर्थ—हवे संक्रांतिनी अंतराल घमीउ मेष राशिथी अनुक्रमे आ प्रमाणे छे.—मेष अने वृष संक्रांतिनी वच्चे १८५७ घमीउ होय छे, एटले के मेष संक्रांति बेसे त्यारथी १८५७ घमीउ जाय त्यारे वृष संक्रांति बेसे, अने त्यारपछी १८८५ घमीउ जाय त्यारे मिथुन संक्रांति बेसे. अर्थात् मेष संक्रांति १८५७ घमी सुधी रहे छे, वृष संक्रांति १८८५

घमी सुधी होय छे. एज रीते मिथुननी घमीओ १०७१ छे, कर्कनी १०००, सिंहनी १०६२, कन्यानी १०२१, तुलानी १७०३, वृश्चिकनी १७६७, धननी १७६०, मकरनी १७६१, कुंजनी १७०७ अने मीननी १०२१ घमीओ छे.

सूर्यनी संक्रांति—संक्रमण बार राशिओने विषे होय छे. तेमना आंतरामां एटली एटली घमीओ होय छे. मूळ श्लोकमां "धृति" शब्द लख्यो छे, ते अढार अक्षरनी छंदोजाति छे, तेथी अढारनी संख्या जाणवी, अने "अत्यष्टि" शब्द सत्तर अक्षरनी छंदोजाति होवाथी तेनो अर्थ सत्तरनी संख्या जाणवी. मेषादिक थकी एटले मेष अने वृष संक्रांतिनी वच्चे धृति एटले १० अश्वेषुज्ञिः एटले ५१ वमे सहित एटले के अढारसोने सतावनवमे युक्त करवा तेटली घमीओ होय छे. ए रीते आगळ पण जाणवुं.

संक्रांतिओना अंतरनी जुक्तिनो यंत्र.—

मेष	१०५१	वृष	तुला	१७०३	वृश्चिक
वृष	१००५	मिथुन	वृश्चिक	१७६७	धन
मिथुन	१०७१	कर्क	धन	१७६०	मकर
कर्क	१०००	सिंह	मकर	१७६१	कुंज
सिंह	१०६२	कन्या	कुंज	१७०७	मीन
कन्या	१०२१	तुला	मीन	१०२१	मेष

हवे सूर्यने स्पष्ट करवा माटे आ उपर कहेली घमीओए करीने सूर्यने स्पष्ट करवानी रीत बतावे छे.–

स्फुटोऽथ जानुर्गतनाकिकाघ्यः, संक्रान्तितः खज्वलना ३० हताघ्यः ।
जागादिजिः स्वान्तरजुक्तिलब्धैः, राश्यादिकः स्याद्गतराशियुक्तैः ॥ ६६ ॥

अर्थ—चालती संक्रांतिनी वीती गयेली घमीओने त्रीशे गुणवी, पछी तेने उपर कहेली पोतानी अन्तरजुक्तिवमे जाग देवो. तेम करवाथी जागादिक (अंश विगेरे) आवे छे, अने गयेली राशिए युक्त करवाथी राशि विगेरेरूप सूर्य स्पष्ट थाय छे.

इष्ट (कार्य) समये चालती संक्रातिनी जेटली घमीओ गइ होय ते सर्वने एकत्र करी त्रीशे गुणवी. स्वान्तरजुक्ति–पोतानी अंतरजुक्ति अने संक्रांतिनी अंतराल घमीओ ए बन्नेनो एकज अर्थ छे. पछी पोतानी अंतरजुक्तिवमे जाग दइने अंश, कळा अने विकळारूप त्रण प्रकारनुं फळ ग्रहण करवुं (काढवुं). पछी गयेली राशिए एटले जेटली

राशिओ सूर्ये भोगवी लीधी होय तेनो अंक उपर मूकवो. एम करवाथी राशि विगेरे एटले राशि, अंश, कळा अने विकळारूप सूर्य स्पष्ट थाय छे.

उदाहरण—विक्रम संवत् १५१२ वर्षे वैशाख सुदि ७ सोमवारे पुष्य नक्षत्रमां मेष राशिमां सूर्यनी संक्रांति थया पछी सत्तरमे दिवसे कर्क लग्नना कन्या नवांशक कार्य करवामां लीधेलो छे. ते वखते मेष संक्रांतिनी ९९४ घडीओ व्यतीत थइ छे. ते आ प्रमाणे.—

सोळथी कांइक अधिक दिवसो निर्गमन थया छे, तोपण प्रथम स्थूल दृष्टिथी जोतां सूर्ये मेषना सोळ त्रिंशांशो भोगवी दीधा छे. शेष चौद त्रिंशांशो रह्या. तेना पळ १०५ थया. वृषनुं मान २५६ पळ, मिथुननुं मान ३०५ पळो तथा कर्कना पहेला बे नवांशाना पळो ७५ अने अक्षर ४६ छे, ते ४६ अर्धा उपर होवाथी एक पळ गणतां कुल पळ ७६ थया. ते सर्व पळो एकत्र करवाथी ७४२ थया. तेने ६० वडे भाग देतां भागमां १२ आव्या. ते (१२) लग्नना दिवसनी घडीओ थइ. शेष पळो २२ रह्या, तथा मेष संक्रांतिना दिवसनी शेष घडीओ २२ छे. वळी संक्रांतिना दिवस अने लग्नना दिवसनी अतन्राले सोळ दिवस होवाथी तेनी घडीओ ९६० थइ. ते सर्वने एकत्र करतां ९९४ घडी अने २२ पळ मेष संक्रांतिनी गत घडीओ थइ.

आ गत घडी ९९४ ने त्रीशे गुणतां २९८२० थया. तेने मेष अने वृष संक्रांतिनी अंतरभुक्ति जे उपर १८५७ घडीनी कही छे तेनावडे भाग देतां सोळ लाध्या. ते (१६) भाग एटले अंश कहेवाय छे. भाग देतां शेष १०८ रहे छे, तेने ६० वडे गुणी उपरना २२ पळो नाखवाथी ६५०२ थया. तेने फरीथी १८५७ वडे भाग देतां भागमां ३ लाध्या ते कळा थइ. शेष ९३१ रह्या, तेने पण ६० वडे गुणीए त्यारे ५५८६० थाय. तेने पण १८५७ वडे भाग देतां भागमां आवेला ३० विकळा थइ. शेष १५० वध्या तेनो त्याग कर्यो. आ प्रमाणे भाग (अंश), कळा अने विकळाए करीने अंशादिक सूर्य स्पष्ट थयो. पछी मूळ श्लोकमां वीती गयेली राशिए युक्त करवानुं कह्युं छे, तेथी वृष विगेरे संक्रांति होत तो गयेली राशि पूर्वे मूकात, अने राश्यादिक पण थात, परंतु अहीं तो भुक्त राशि एके नथी, तेथी राशिने स्थाने ० शून्य मूकवुं, तेथी करीने कार्यने समये स्फुट सूर्य राशि०, अंश १६, कळा ३ अने विकळा ३० थयो.

हवे स्पष्ट थयेला सूर्यथी अयनांश सहित सूर्यनुं भोग्य मान लाववानी रीत कहे छे.—

---

१ एक त्रिंशांशाना ७॥ पळ छे तेथी, जुओ उपर त्रिंशांशाना माननो कोठो.

गणितविदुपदेशात्तत्र दत्त्वाऽयनांशान् ,
पुनरपि भगणार्धं ६ रात्रिलग्ने तु दद्यात् ।
अथ हृत उदयस्त्रिर्भुक्तशेषैर्लवाद्यै-
रुपरि च खगुणा ३० प्तः स्यात्पलास्तमार्कभोग्यम् ॥ ६७ ॥

अर्थ—गणितना जाणनारना उपदेशथी आवेला अयनांशोने ते स्पष्ट करेला सूर्यमां नाखवा, परंतु जो रात्रिनुं लग्न होय तो तेमां फरीथी भगणार्ध एटले ६ भेळववा. (तेम करवाथी अयनांश सहित सूर्य थाय छे.) (हवे सूर्यनुं भोग्य मान लाववानी रीत कहे छे.—) अथ एटले सायनांश सूर्य कर्या पछी (करवाथी) जे राशिनो उदय होय तेना पळोने त्रण वार स्थापन करी ते दरेकने भुक्तथी शेष रहेला लव (अंश) विगेरेवडे गुणवा. (पछी छेल्ला बे अंकने उत्क्रमथी साठे भाग दइ दइने उपर चढाववा.) उपर जे अंक आवे तेने त्रीशे भागतां जे लाधे तेटला पळो सूर्य भोग्य कहेवाय छे.

तत्र एटले स्पष्ट करेला सूर्यमां ते वर्षना अयनांशो नाखवा. अहीं एकला अयनांशोज कह्या छे, तोपण कळादिक पण नाखवी एम समजवुं, केमके ते कळादिक पण अयनांशरूपज छे. ए रीते सर्वत्र जाणवुं, पण जो रात्रिने विषे लग्न होय तो ते राशिमां फरीथी छ उमेरवा. आम करवाथी उपर जे राशि (मेषादिक) आवे ते भुक्त जाणवी, अने जे राशि तेनी पछीनी होय ते उदय कहेवाय छे. ते उदय राशिनुं जे पळरूप मान कह्युं होय ते पळोने त्रण वार स्थापन करवा. हवे ते भुक्त राशिनी उपरांत जे अंश, कळा अने विकळा होय ते भुक्त कहेवाय छे, माटे तेने बाद करतां जे अंश, कळा अने विकळा आवे तेणे करीने त्रण वार स्थापन करेलुं ते लग्ननुं मान (उदय राशिनुं पळरूप मान) अनुक्रमे गुणवुं. छेल्ला बे अंकने साठे भाग दइ दइने पहेला पहेलानी संख्यामां नाखवाथी जे संख्या पहेला अंकमां थाय तेने त्रीशे भाग देतां जेटला लाधे तेटला पळवाळुं अर्क भोग्य थाय छे. बाकी रहेला अंकने साठे गुणी त्रीशे भाग देतां उपरना पळ उपरांत अक्षरो पण आवे छे.

हवे उदाहरणमां घटावतां पहेलां प्रथम अयनांश लाववा माटे गणितना ज्ञानवाळानो उपदेश बतावे छे.—विक्रम संवत् ५७९ मा वर्षथी आरंभीने तथा शालिवाहनना ४४४ मा वर्षथी आरंभीने १४०४ वर्ष सुधी दरेक वर्षे एक कळा, एक विकळा अने वीश परम विकळा वृद्धि पामे छे. ६० कळाए करीने एक अयनांश थाय छे, तेथी करीने

१४०४ वर्षे करीने २३ अंशो, ५५ कळा अने बार विकळा वधे छे. ए प्रमाणे अयनांशनी वृद्धि कहेली छे. पछी तेज क्रमे करीने हानि पामता ते अयनांशो तेटलांज एटले १४०४ वर्षे करीने खाली थइ जशे. ए प्रमाणे वारंवार ते अयनांशोनी वृद्धि अने हानि जाणवी. लग्नमां, क्रांतिसाम्यमां अने चर लाववामां आ अयनांशोनो उपयोग छे. कह्युं छे के—

"अयनांशाः सदा देया लग्ने क्रान्तौ चरागमे ।"

"लग्नमां, क्रांतिसाम्यमां अने चर लाववामां हमेशां अयनांशो देवा."

हवे उदाहरणमां लीधेला इष्ट काळने विषे अयनांशो लाववा माटे आ रीत छे.—

"आषाढे विक्रमं नन्दसप्तेषू ५७९ नं त्रिधा कु १ भू १ ।
नखै २० र्निघ्नं भजेत् षष्ट्या लब्धे स्युरयनांशकाः ॥ १ ॥"

"अषाड मासथी शरु थता विक्रम संवतमांथी ५७९ बाद करी बाकी रहे तेने त्रण वार स्थापन करवा. पछी ते त्रणेने अनुक्रमे १–१–२० वडे गुणवा. पछी तेने छेल्ला अंकथी साठे भाग दइ दइने पूर्व पूर्व अंकमां नाखवाथी अयनांशो थाय छे."

भावार्थ ए छे के—चैत्र मासथी शालिवाहननो शक शरु थाय छे. तेमां १३५ नाखवाथी विक्रम संवत् थाय छे. ते संवत् अषाड मासथी शरु थाय छे. ते स्थापन करवो. ते संवत् प्रकृत उदाहरणमां १५१२ छे. तेमांथी ५७९ बाद करतां शेष ९३३ रहे छे. आ अंकने त्रण वार स्थापन करी तेने अनुक्रमे १–१–२० वडे गुणवा. (तेथी ९३३–९३३–१८६६० थाय छे) तेने छेल्लेथी साठे भाग दइ दइने उपर उपर चडाववाथी १५ अंश, ५३ कळा अने ४४ विकळा थइ. आ अयनांशनुं मान १५१२ मा वर्षमां सूक्ष्म दृष्टिथी आवे छे, परंतु दरेक वर्षे कांइक अधिक एवी एक एक कळाज वधे छे. एवुं स्थूळ मानज घणा ज्योतिर्विदोने संमत छे, तेथी अमे पण स्थूळ मानज अहीं लइए छीए, तेथी करीने १५१२ मा वर्षे १५ अंश अने ३४ कळा आवे छे. आ अयनांशने स्पष्ट करेला सूर्यमां नाखवाथी अंश ३१, कळा ३७ अने विकळा ३० थाय छे. हवे दरेक राशिनुं मान ३० अंशज होय छे, तेथी आ अयनांशनी अपेक्षाए करीने जोतां सूर्ये आखी मेष राशि भुक्त थइ गइ, अने वृष राशिनो १ अंश, ३७ कळा अने ३० विकळा पण भुक्त थइ एम सिद्ध थयुं. स्थापना—१–१–३७–३०. आ सायन अथवा सायनांश एटले अयनांश सहित सूर्य थयो.

हवे प्रकृत उदाहरणमां वृषनो उदय छे. तेनुं मान २५६ पळो छे. तेने त्रण वार स्थापना करवा—२५६–२५६–२५६. पछी सूर्ये भोगवेला मानमांथी अंशादिकनी अपेक्षाए शेष अंशादिक काढीए (एटले के अंश १, कळा ३७ अने विकळा ३० काढीए)

त्यारे अंश २७, कळा २२, विकळा ३० रहे. आ त्रण अंकवडे उपरनी त्रण राशिओ अनुक्रमे गुणतां ७१६७–५६३२–७६०० थाय छे. तेने साठे भाग दइ दइने पूर्व पूर्वनी राशिमां नाखवाथी ७२६४ थाय छे. तेने ३० वडे भाग देतां २४२ पळो लाध्या. आ सूर्य भोग्य पळमान आगळ पर उपयोगमां आवशे, माटे स्थापी राखवुं.

हवे इष्ट लग्ननुं भुक्त लाववावडे करीने इष्ट समयने स्पष्ट करवा माटे कहे छे.—

इष्टाद्भुक्तनवांशकैर्दशगुणैस्त्रयाप्तैर्लवाद्यं फलं,
लग्नं सायनमूर्ध्वराशिसहितं सैकप्रवृत्त्यंशकम् ।
तद्भुक्तेन लवादिना तदुदयः क्षुण्णो हृतास्त्रिंशता,
भास्वद्भोग्यवदान्तरोदययुतः कालः पलात्मा भवेत् ॥ ६७ ॥

अर्थ—इष्ट लग्नना भुक्त नवांशोने दशे गुणी त्रणे भाग देतां जे अंशादिक फळ आवे ते लग्न जाणवुं. तेने अयन सहित करवुं. पछी उपर (पहेलां) राशि सहित (गयेली राशि सहित) करवुं. पछी एक प्रवृत्त्यंश सहित करवुं. तेटला अंशादिक भुक्त थया, ते भुक्तवडे ते (लग्न)ना उदयने गुणवो. पछी तेने त्रीशे भाग देवो. पछी ते सूर्य भोग्य अने आंतरोदय सहित करीए त्यारे तेटला पळरूप इष्ट समय स्पष्ट थाय छे.

लग्नमां जे नवांशक इष्ट होय तेनी पहेलां जेटला नवांशक गया होय तेने दशे गुणी त्रणे भागवा. जे लाधे ते अंश, कळा अने विकळारूप त्रण प्रकारनुं फळ थाय छे. तेनेज लग्न जाणवुं. ते लग्नने अयन सहित तथा व्यतीत थयेली राशि सहित करीने तेमां एक प्रवृत्त्यंश एटले अधिकार करेला नवांशकनो त्रीजो भाग नाखवो, परंतु प्रतिष्ठा अने विवाहमां जो धनुष् राशिनो नवांशक लीधो होय तो तेमां नवांशकना त्रीजा भागनुं पण अर्ध नाखवुं, केमके ते कार्यमां धनुषना नवांशकनो पहेलो अर्ध भागज शुभ छे. आ रीते करवाथी जेटला अंश, कळा अने विकळा थाय तेटला भुक्त जाणवा. ते भुक्त एवा अंश, कळा अने विकळावडे करीने इष्ट लग्ननुं पळरूप मान त्रण वार स्थापन करीने गुणवुं. पछी तेने प्रथमनी जेम साठे भाग दइ दइने पूर्व पूर्वमां नाखी उपरनो (पहेलो) जे एक आवे तेने त्रीशे भाग देतां जे पळ अने अक्षररूप मान आवे ते इष्ट लग्ने भुक्त (भोगवेलुं) कहेवाय छे. तेनी अंदर पूर्वे आवेलुं सूर्य भोग्य नाखवुं, तथा सूर्ये आक्रमण करेली राशिनी अने इष्ट लग्ननी अंतराले जेटलां लग्नो रह्यां होय तेनां पळरूप मानोने पण तेमां नाखवां. आ रीते करवाथी जे अंक आवे तेटला पळोए करीने सूर्योदय पछी इष्ट लग्ननो इष्ट अंश आवे छे.

उदाहरण—प्रकृत उदाहरणमां कर्क लग्ननो त्रीजो कन्या नवांशक ग्रहण कर्यो छे, तेथी इष्ट एवा कन्या नवांशकनी पहेलां बे नवांशो व्यतीत थया छे, माटे

बेने दशे गुणतां वीश थया. तेने त्रणे भागतां ६ त्रिंशांशो लाध्या अने शेष $\frac{2}{3}$ रह्या, एटले के जेटला त्रण भागे करीने एक त्रिंशांशक थाय तेटला बे भाग, तेथी करीने अंश ६ अने कळा ४० थाय छे, कारण के एक एक (दरेक) त्रिंशांशनी ६० कळाओ होवाथी बे त्रिभागे करीने [1]४० कळाओज थाय छे. आ लग्न थयुं. तेने अयन सहित करवुं छे, माटे अयनांश १५ अने कळा ३४ भेळववी. (२२-१४ थाय छे.) तथा जेटली राशिओ व्यतीत थइ होय तेटलो अंक राशिने स्थाने मूकवो. ते अहीं कर्क लग्न ग्रहण करेलुं होवाथी त्रणनो अंक आवशे, तथा अंशना अंकमां एक प्रवृत्त्यंश अने ७ कळा नाखवी, कारण के दरेक नवांशकमां त्रण त्रिंशांशो अने वीश कळाओ होय छे. तेनो त्रीजो भाग तेटलोज (१-७) थाय छे, तेथी करीने त्रण राशिओ व्यतीत थइ अने चोथी कर्क राशिना २३ अंशो अने २१ कळाओ पण व्यतीत थइ, तेथी (३-२३-२१) एटलुं भुक्त थयुं. अहीं भुक्त (व्यतीत थयेली) राशिनो उपयोग नथी, तेथी तेणे भुक्त एटले चालता कर्क लग्नवडे भुक्त एवा अंश २३ कळा २१ वडे तेनो उदय एटले अहीं प्रकृत होवाथी कर्कनो उदय ३४१ पळना स्वरूपवाळो छे तेने बे वार स्थापन करीने गुणवो. जो विकळा होत तो त्रण वार स्थापन करीने त्रीजो अंक विकळावडे पण गुणात, पण अहीं तो विकळा नथी, तेथी बे वार स्थापन करवानुं कह्युं छे. आ रीते करवाथी (३४१ ने बे वार २३ अने २१ वडे गुणवाथी) ७८४३-७१६१ थाय छे. बीजा अंकने ६० वडे भाग देतां भागमां ११९ आव्या. तेने प्रथमना अंकमां नाखवाथी ७९६२ थया. तेने त्रीशे भागतां २६५ पळो लाधी. शेष १२ रह्या तेने ६० वडे गुणी ३० वडे भाग देतां अक्षर २४ लाध्या. आ पळ २६५, अक्षर २४ कर्क लग्ननुं भुक्त थयुं. तेने सूर्यना भोग्य सहित तथा आंतरोदयना लग्नना पळो सहित करवुं छे, तेथी अहीं सूर्यना भोग्य पळो २४२ छे, अने आंतरोदय तो मिथुनज छे. तेनुं मान ३०५ पळो छे. ते त्रणेने एकत्र करवाथी ८१२ पळो एटले के १३ घडी अने ३२ पळो थया. आटलो वखत सूर्योदयथी जाय त्यारे कर्क लग्ननो कन्या नवांशक आवे छे.

अहीं विशेष आ प्रमाणे छे.—

"द्वयोर्नवांशयोः शुद्धिः प्रतिष्ठायां विलोक्यते ।
आद्येऽधिवासना बिम्बे द्वितीये च शलाकिका ॥ १ ॥
संस्थाप्य लग्नमानं गुणयेन्मध्यनवांशकैः ।
नवभिस्तु हृते भागे लब्धेऽन्तरपलागमः ॥ २ ॥"

"प्रतिष्ठामां बे नवांशकनी शुद्धि होवी जोइए. तेमां पहेला नवांशकमां बिंबनी

---

१ बे त्रिंशांशनी १२० कळा थइ तेनो त्रीजो भाग ४० थाय.

अधिवासना करवी, अने बीजामां अंजनशलाका करवी. ते शुद्धि जोवानी रीत आ प्रमाणे—लग्ननुं मान स्थापन करीने तेने मध्य (वच्चे)ना नवांशकोवडे गुणवुं. पछी तेने नववडे भाग देवाथी जे लाधे ते अंतर पळो आवे छे."

अहीं मात्र कल्पित उदाहरण आ प्रमाणे जाणवुं.—प्रतिष्ठामां आज कर्क लग्ननो त्रीजो कन्या नवांशक अने आठमो कुंभ नवांशक ग्रहण करवाना छे, तेथी कुंभ नवांशकनी पहेलां कन्यादिक पांच नवांशको छे, माटे कर्क लग्ननुं मान जे ३४१ छे तेने पांचे गुणीए त्यारे १७०५ थाय छे. तेने नवे भाग देतां भागमां १०९ पळो (एटले घडी ३ पळ ९) आवे छे. तेने त्रीजो कन्या नवांशक ग्रहण करवा माटे स्पष्ट करेला १३ घडी अने ३२ पळरूप काळमां नाखवाथी घडी १६, पळ ४१ थया. आटलो वखत जाय त्यारे कुंभना नवांशकनी वेळा आवे छे.

हवे लग्नना अंश (नवांशक)नो समय स्पष्ट करवा माटे अयनांशनी अपेक्षा विना बीजो प्रकार कहे छे. अथवा तो.—

संक्रान्तिराशेर्गतनाडिकाघ्ने, माने दिवा निश्यथ सप्तमस्य ।
संक्रान्तिभोगेन हृते तदीयत्र्यंशान्विते शेषमिहार्कभोग्यम् ॥ ६९ ॥

अर्थ—दिवसे लग्न होय तो संक्रांतिनी राशिनुं मान गयेली घडीओवडे गुणवुं, अने रात्रिए लग्न होय तो सातमी राशिनुं मान गयेली घडीओवडे गुणवुं. पछी तेने संक्रांतिनी भुक्तिवडे भाग दइ तेमां तेज राशिनो त्रीजो भाग नाखवो. शेष रहे ते अहीं सूर्य भोग्य जाणवुं.

दिवसनुं लग्न होय तो सूर्यसंक्रांतिनी राशिनुं मान संक्रांतिना समयथी आरंभीने लग्नना समय सुधीमां जेटली घडीओ गइ होय तेटली घडीओवडे गुणवुं. रात्रिनुं लग्न होय तो सूर्यसंक्रांतिनी राशिथी जे सातमी राशि होय तेनुं मान गुणवुं. त्यारपछी पोतानी (संक्रांतिनी) अंतरभुक्तिवडे तेने भाग देवो. भागमां जे आवे तेमां प्रस्तुत राशिनो त्रीजो भाग जूदो पाडीने नाखवो. तेम करवाथी जे थाय ते सूर्य भुक्त कहेवाय छे. ते सूर्य भुक्तने सूर्यसंक्रांतिनी राशिमांथी बाद करवुं. जे शेष रहे ते सूर्य भोग्य कहेवाय छे.

जेमके प्रकृत उदाहरणमांज दिवसना लग्नमां सूर्यसंक्रांतिनी राशि मेष छे. तेनुं मान २२५ छे. संक्रांतिना समयनी पछी अने लग्ननी पहेलां जे गयेली घडीओ ९९४ छे ते बन्नेनो गुणाकार करतां २२३६५० थया. तेने पोतानी अंतरभुक्ति १०५७ वडे भाग लेतां १२० पळ लाध्या. त्यारपछी सूर्यसंक्रांतिनी राशिना माननो त्रीजो भाग तेमां नाखवो, एटले के अहीं मेषनुं मान २२५ छे, तेने त्रणे भागतां ७५ लाध्या. ते पूर्वना १२० मां

नाखवाथी १९५ थया. आ सूर्य भुक्त थयुं. सूर्यसंक्रांतिनी राशि मेषना मानरूप २२५ पळमांथी ते १९५ बाद करीए त्यारे बाकी ३० पळो रहे. आ सूर्य भोग्य थयुं. आ प्रमाणे दिवसना लग्नमां जाणवुं. हवे रात्रिनुं लग्न होय त्यारे सूर्यसंक्रांतिनी राशिथी सातमी राशिनो सूर्य भुक्त घमीओ साथे गुणाकार, तेनी अंतरभुक्तिवमे भागाकार विगेरे सर्व सूर्यसंक्रांतिनी राशिनी प्रमाणेज करवुं.

भुक्तेऽथ लग्नस्य तदंशकाच्च, दद्यात्त्रिभागावुदयप्रवृत्त्योः ।
तल्लग्नभुक्तं च तथाऽर्कभोग्यं, कालोऽन्तरालोदययुक् पलात्मा ॥ ७० ॥

अर्थ—त्यारपछी तेना अंशनी (इष्ट नवांशक)नी पहेलां लग्नना भुक्तमां उदय अने प्रवृत्तिना त्रिभागो नाखवा. ते लग्न भुक्त कहेवाय छे. त्यारपछी ते लग्न भुक्त तथा सूर्य भोग्यने अंतरालना उदय सहित करवाथी जे आवे तेटला पळोवाळो काळ इष्ट लग्ननो छे एम जाणवुं.

अथ–त्यारपछी तदंशकात् एटले इष्ट नवांशकनी, पहेलां लग्नना भुक्तने विषे उदय अने प्रवृत्तिना त्रिभागो नाखवा एवो संबंध छे. भावार्थ आ प्रमाणे छे.—अधिकार करेला नवांशकनी पहेलां जेटलुं लग्ननुं भुक्त होय तेने स्पष्ट करीने तेने विषे तेज लग्ननो त्रिभाग अने प्रवृत्त्यंश नामना तेज नवांशकना त्रिभागने नाखवा. त्यारपछी ते लग्न भुक्त, पूर्वे आणेलुं सूर्य भोग्य अने अंतराल लग्ननुं पळमान ए त्रणेने एकत्र करवां. जेटला पळो आवे तेटला पळोए करीने सूर्योदय पछी इष्ट लग्ननो इष्ट नवांशक आवे छे.

जेमके—अहीं कर्कनुं मान ३४१ छे. तेने नववमे भाग देवाथी ३८ पळो एक नवांशकनुं मान थयुं. हवे अहीं इष्ट नवांशक (कन्या नामनो) त्रीजो छे, तेनी पहेलां बे नवांशो गया छे, तेथी ३८ ने बमणा करतां ७६ पळो थया. आटलुं ते लग्न भुक्त थयुं. त्यारपछी तेमां कर्क लग्नना मान ३४१ ने त्रणे भाग देतां ११४ पळो लाध्या. आ उदयनो त्रिभाग थयो. तेने लग्न भुक्त ७६ पळोमां नाखवाथी १९० थया. त्यारपछी जे नवांकश ग्रहण कर्यो छे तेनुं मान ३८ पळनुं छे, तेनो त्रिभाग १२ पळ थाय छे. ते पण तेमां (१९० मां) नाखवाथी २०२ थया. पछी सूर्य भोग्य पळो ३०, तथा सूर्यसंक्रांतिनी (मेष) राशिने अने इष्ट लग्न (कर्क)ने अंतराले वृष अने मिथुन छे. तेमनुं मान २५६–३०५ छे. सर्वनी स्थापना —२०२–३०–२५६–३०५ आ सर्वे एकत्र करवाथी ७९३ पळो थया. तेने ६० वमे भाग देतां घमी १३ पळ १३ लाध्या. आटलो काळ सूर्योदयथी जाय त्यारे कन्या नवांशक आवे छे. आ बीजी रीत होवाथी पळोमां पूर्वनी करतां फारफेर आव्यो तेमां कांइ दोष नथी. एम बीजे ठेकाणे पण जाणवुं.

आ प्रमाणे लग्नने आश्रीने समय लाववानी रीत कही. हवे तेनी प्रतीतिने माटे बे श्लोके करीने समयने आश्रीने लग्न लाववानी रीत बतावे छे.—

त्यक्त्वार्कभोग्यं च पलात्मकालाद्भागादिभोग्यं तरणौ निदध्यात् ।
क्रमेण शेषानुदयान् विशोध्य, राशीन्न्यसेत्तत्प्रमितांश्च भानौ ॥ ७१॥

अर्थ—पळरूप करेला काळमांथी सूर्य भोग्य बाद करवुं. पछी अंशादिक भोग्यने सूर्यमां नाखवुं. पछी अनुक्रमे शेष उदयोने शोधी (बाद करी) तेटली राशिओने सूर्यमां नाखवी.

कोइक माणस घडी, पळ विगेरे इष्ट काळ बोलीने प्रश्न करे के—"ए वखते कयुं लग्न, अंश विगेरे छे." ते वखते तेणे कहेली घडी विगेरे सर्वना पळो करवा. पछी ते पळरूप करेला काळमांथी सूर्य भोग्य जेटला पळो होय तेटला बाद करवा. पछी अयनांशो सहित स्पष्ट करेला सूर्ये जे राशि आक्रांत करी होय ते राशिनुं शेष रहेलुं जे अंश, कळा अने विकळारूप सूर्य भोग्य होय तेने सूर्यमां अने सायनांश स्पष्ट करेला सूर्यमांज नाखवुं, एटले के ते राशि संपूर्ण करीने लखवी. त्यारपछी ते पळरूप करेला काळमांथी सूर्ये आक्रांत करेली राशिनी पछीनां पळरूप लग्नो (पछीनां लग्नोना पळो) जेटलां नीकळे तेटलां काढीने तेटली राशिनो अंक सूर्यना अंकमां नाखवो.

शेषादथ खगुण ३० गुणादविशुद्धोदयहृतादवाप्तेन ।
भागादिना सनाथो दिननाथो निरयनांशको लग्नम् ॥ ७२ ॥

अर्थ—त्यारपछी शेषने ३० वडे गुणवा. पछी तेने अशुद्ध उदय (लग्न)वडे भाग देतां प्राप्त थयेला (लाधेला) अंशादिकवडे सूर्यने सहित करवो. पछी ते सूर्यने अयनांश रहित करवो. एम करवाथी लग्न आवशे.

त्यारपछी (एटले पळरूप लग्नो काढ्या पछी) शेष रहेला एटले के जे शेषमांथी लग्न शोधी न शकाय (राशि काढी न शकाय) तेवा शेषने ३० वडे गुणवा. तेने अशुद्ध (नहीं शोधेला–नहीं बाद करेला) लग्नना मानवडे भाग देतां जे अंश, कळा अने विकळा लाधे तेने सूर्यमां नाखवा. पछी तेमांथी अयनांशो बाद करवा. शेष रहे ते इष्ट काळे स्पष्ट लग्न अने नवांशक थया.

आ उदाहरण पहेला प्रकारमां भावे छे.—कोइए घडी १३, पळ ३२ कह्या. तेना पळो कर्या त्यारे ८१२ पळो थया. तेमांथी सूर्य भोग्य २४२ पळो बाद कर्या. शेष ५७० रह्या. हवे अयनांशो सहित करेलो स्पष्ट सूर्य राशि १–१–३७–३० छे. तेमां वृष राशिनुं

शेष मान अंश २७, कळा ११, विकळा ३० नाखवुं, तेथी सूर्य राशि २–०–०–० थयो. पछी पळरूप करेलो काळ ५७० छे, तेमांथी सूर्याक्रांत वृष राशिनी पछीनी मिथुन राशिनुं ३०५ पळोनुं मान काढी शकाय छे, तेथी एक राशि सूर्यमां नाखवाथी ते सूर्य राशि ३–०–०–० थयो. पछी ५७० मांथी (मिथुनना पळो) ३०५ काढी लेतां शेष २६५ रहे. तेमांथी कर्क राशिनुं मान ३४१ पळो काढी शकाता नथी, तेथी ते शेषने ३० वडे गुणवाथी ७९५० थया. तेने अशुद्ध (नीकळी नहीं शकेला–बाद करी शकाया नहीं एवा) कर्कना मानपळो ३४१ वडे भाग देतां अंश २३, कळा १७, विकळा ४९ एम त्रण प्रकारनुं फळ लाध्युं. तेने सूर्यमां नाख्युं, तेथी राशि ३–२३–१७–४९ थया. तेमांथी अयनांशो १५ अंश, ३४ कळा बाद करवाथी शेष लग्न ३–७–४४–४९ रह्युं, एटले के कर्क राशिना ७ अंश, ४४ कळा अने ४९ विकळा भुक्त–भोगवाया छे एम सिद्ध थयुं. हवे एक एक नवांशकमां त्रण त्रिंशांश अने चोथा त्रिंशांशनी २० कळाओ होय छे, तेथी ६ अंशो अने ४० कळाओ काढी लेवाथी बे नवांशो गया कहेवाय. बाकी एक अंश अने सात कळाओ प्रवृत्तिने माटे आपेली हती, ते छे एम जाणवुं. बे त्रण कळाओ वधारे होय तेमां कांइ दोष नथी, केमके लग्ननी कळाओ अत्यंत सूक्ष्म छे, तेथी तेटलो फेर आवेज.

विशेषमां स्थूळ दृष्टिथी दिवसे काळने आश्रीने लग्न अने अंश (नवांशक) लाववानी रीत आ प्रमाणे छे.—

"अष्टांशं प्रति धीवेदाः ४५ संक्रान्तेर्गतवासराः ।
तदैक्यादग्निरामा ३० सं लग्नमाक्रान्तराशितः ॥ १ ॥
शेषे षष्टिहते भक्ते द्विशत्या लब्धमंशकः ।
होराद्युक्ताङ्कभक्तेऽत्र होराद्यमपि लभ्यते ॥ २ ॥"

"अष्टांश (याम) प्रत्ये ४५ पळोनो एक ध्रुवक थाय छे. हवे इष्ट काळने ध्रुवके गुणी तेमां संक्रांतिना गयेला दिवसो उमेरवा. पछी तेने ३० वडे भाग देवो. जे लाधे ते संक्रांतिनी राशिथी लग्न जाणवुं. पछी शेषने ६० वडे गुणी २०० वडे भाग देतां जे लाधे ते नवांशक जाणवो, तथा ६० वडे गुणेला अंकने होरादिकना अंकवडे भाग देवाथी होरादिक पण प्राप्त थाय छे."

अष्टांश एटले याम (प्रहर–पहोर). दरेक याम प्रत्ये ४५ पळोनो ध्रुवक होय छे, तेथी पहेलो याम पूर्ण थाय त्यारे ४५ अने बीजो याम पूर्ण थाय त्यारे ९०, ए प्रमाणे ध्रुवकनी उत्पत्ति छे. जे वखते जेटलुं दिनमान होय ते वखते ते दिनमाननो जे चोथो भाग थाय ते एक एक याममुं मान जाणवुं, तेथी एक यामना माननी घडीओए विभक्त

४५ ध्रुवकथी जे प्राप्त थाय तेज दरेक घमी प्रत्ये ध्रुवक जाणवो. जेमके अहीं मेष संक्रांतिमां सूर्य आव्या पछी सत्तरमे दिवसे दरेक याम पोणी आठ आठ घमीनो छे, तेनी दरेक घमी प्रत्ये लगजग छ पळनो एक ध्रुवक त्रिराशिनी रीते आवे छे, ते आ रीते.—ते दिवसे एक यामनुं मान घमी ७ अने पळ ४२ छे. तेना पळ करीए त्यारे ४६२ थाय छे, तेथी जो ४६२ पळोए करीने ४५ पळोनो एक ध्रुवक होय तो एक घमी एटले ६० पळे करीने केटलो ध्रुवक थाय ? ए त्रिराशिनी स्थापना—४६२–४५–६०. अहीं मध्य राशिने छेल्ला राशि साथे गुणतां २७०० थया. तेने पहेली राशिए जाग देतां पळो ५ अने अक्षर ५० थया. जो के आटलुं प्रमाण थयुं, तोपण ६ पळमां जराकज छेवुं होवाथी परिपूर्ण ६ पळ जाणवा, तेथी चालता उदाहरणमां १२ घमी छे, तेने ६ वमे गुणतां ७० थाय. तेमां उपरना ३२ पळो छे, माटे तेनी अपेक्षाए त्रण पळो नाखवाथी ७१ थया. तेमां संक्रांतिना गत (वीतेला) दिवसो १६ नाखवाथी ए७ थया. तेने ३० वमे जाग देतां जागमां ३ आव्या, शेष ७ रह्या, माटे ३ लग्न वीती गयां अने चोथा कर्क लग्नना ७ त्रिंशांश पण गया. हवे नवांशक लाववानी इच्छा थाय तो ७ ने ६० वमे गुणतां ४२० थया. तेने २०० वमे जाग देतां २ लाध्या, अने शेष २० रह्या, तेथी नवांशक २ गया, अने त्रीजा कन्या नवांशकनी २० कळाओ पण गइ, एम जाणवुं. "होरादि०" एटले ६० वमे गुणेला अंकने होरादिकना अंक जे ए००–६००–१५०–६० छे तेवमे पृथक् पृथक् जाग देवाथी होरा, द्रेष्काण, द्वादशांश अने त्रिंशांश पण थाय छे. नवांशकनुं प्रजुपणुं (बळवानपणुं) होवाथी तेने जूदो कह्यो छे. आ रीते करवाथी कळा सुधीनुंज मान स्पष्ट थाय छे, पण विकळा आवी शकती नथी, अने तेथीज आ रीत स्थूल कही छे.

अहीं कोइने शंका थाय के—"जो सर्वत्र नवांशकनुंज प्रजुपणुं होय तो शामाटे लग्नोना अने ग्रहोना त्रिंशांशो स्पष्ट कर्या छे ?" आनो उत्तर ए छे जे—"त्रिष्वपि क्रूरमध्यस्थौ" (५–२३) ए श्लोकमां लग्न अने चंद्रने विषे पंदर त्रिंशांशनी मध्ये क्रूर ग्रह रह्या होय तो क्रूर कर्तरी थाय छे, ए विचार कह्यो छे, तेथी करीने "दर्शने यदि स्यादंशद्वादशकमध्यगः क्रूरः" (५–५७ अर्थमां) ए श्लोकमां लग्न अने चंद्रनी उपर क्रूर ग्रहनी दृष्टिनो विचार कह्यो छे, माटे त्रिंशांशनो आवे स्थाने उपयोग कहेलोज छे. (निष्फळ नथी). तेमज लग्नने विषे जे षड्वर्ग होय ते क्रूर ग्रह संबंधी छे के सौम्य ग्रह संबंधी छे ? आ ग्रह स्ववर्गमां रहेलो छे के अन्य वर्गमां रहेलो छे ? इत्यादि विचारमां पण तेनो उपयोग छे.

शंका—कळा विगेरेने जे स्पष्ट करवानी रीत कही तेनो क्यां उपयोग छे ?

उत्तर—ज्यारे कळानो अंक साठनी अपेक्षाए अर्ध (३०) करतां वधारे होय त्यारे ते आखो गणीने त्रिंशांशमां भेळवाय छे अने एज प्रमाणे विकळा पण त्रीशथी अधिक होय तो कळामां एक नाखवामां आवे छे तथा जातक विगेरे ग्रंथोमां अंशायु, पिंडायु, दशा अने अंतर्दशा विगेरे लाववामां कळा विगेरेनी स्पष्टतानो विशेष उपयोग छे, माटे अहीं तेनो वधारे विस्तार करता नथी.

आ प्रमाणे दिवसे लग्नना अंशो लाववानी रीत कही. हवे रात्रिने विषे ते लाववानी रीत बतावे छे.—

"रात्रौ तु मूर्ध्नि यद्धिष्ण्यं तस्मान्नक्षत्रमष्टमम् ।
उदेति पूर्वस्यां तेन लग्नोदयविनिर्णयः ॥ १ ॥"

"रात्रिए जे नक्षत्र माथे (मध्यमां) होय तेनाथी आठमुं नक्षत्र पूर्व दिशामां उदय पामे छे, तेणे करीने लग्नना उदयनो निर्णय करवो."

तथा रेवतीनो उदय थया पछी अश्विनीनो उदय थाय त्यांसुधी अश्विनीनाज चारे पाया उदय पामे छे. एज रीते अश्विनीनो उदय थया पछी भरणीनो उदय थाय त्यांसुधी भरणीनाज चारे पायानो उदय थाय छे. ए प्रमाणे मस्तक पर रहेला नक्षत्रना पायानी कल्पनाए करीने उदय पामेलो नवांशक पण निश्चय करवो. आ प्रमाणे लग्ननुं स्पष्टीकरण कर्युं.

हवे प्राये करीने दिवसे काळनुं ज्ञान शंकु छायाने आधीन छे, तेथी करीने काळ थकी छाया अने छायाथी काळ आणीने बतावे छे. तेमां प्रथम सूक्ष्म रीते दिनमान लाववानी रीत आ प्रमाणे छे.

"दत्तायनांशा रविभुक्तभागाः, पलेन गुण्या दिनवृद्धिहान्योः ।
षष्ट्याप्तिलब्धं घटिकाद्यमेतत्स्यादाढ्यमूनं प्रथमद्युमानात् ॥ १ ॥"

"सूर्ये भोगवेला अंशोमां अयनांशो नाखवा. पछी तेने दिवसनी वृद्धि अथवा हानिना पळोवडे गुणवा. तेने ६० वडे भाग देवाथी जे घडी विगेरे लाधे ते संक्रांतिना पहेला दिवसना मानमां नाखवा अथवा ओछा करवा."

इष्ट दिवसने विषे सूर्ये पोते आक्रमण करेली राशिना जेटला त्रिंशांशो भोगव्या होय तेमां ते वर्षना अयनांशो नाखी तेने उपर (प्रथम) जे राशि आवी होय ते राशि संबंधी पूर्वे कहेला कर्केत्यादि (पत्र १७)ने आधारे दिननी वृद्धि अथवा हानिना जे पळो होय तेवडे गुणी साठे भागतां जे लाधे ते घडी विगेरेने रसद्विनाढ्य (१–१५ ना अर्थमां पत्र १७) इत्यादि श्लोकमां कहेला मुख्य अहर्मान (दिनमान)मां मकरादिक

छ राशिमां सूर्य होय तो नाखवा, अने कर्कादिक छ राशिमां सूर्य होय तो तेमांथी बाद करवा. एम करवाथी स्पष्ट दिनमान आवशे. ते दिनमानने साठ घडीना प्रमाणवाळा रात्रि दिवसना मानमांथी शोधीए त्यारे शेष रहेलुं रात्रिमान स्पष्ट थाय छे. आ दिनमान तथा रात्रिमान कुलिकने स्पष्ट करवो ए विगेरेमां उपयोगी छे.

उदाहरण—अहीं-इष्ट दिवसे मेष राशिनो सूर्य थया पछी सत्तरमे दिवसे प्रातःकाळे घडी १३ पळ ३२ समये "स्फुटोऽथ भानुः" (५–६६) इत्यादि रीतिए करीने स्पष्ट करेला सूर्यवडे भोगवायेला अंशो १६, कळा ३, विकळा ३० थइ छे. तेमां अयनांश १५, कळा ३४ नाखवाथी राशि १, अंश १, कळा ३७, विकळा ३० थाय छे. अहीं अयनांश सहित करेला सूर्ये मेष राशि संपूर्ण भोगवी, तथा वृष राशिनो अंश १, कळा ३७, विकळा ३० पण भोगवी एम सिद्ध थयुं, तेथी अहीं वृष राशि संबंधी दिवसनी वृद्धि पळ २, अक्षर ५२ छे, तेथी अंशादिक अंको गोमूत्रिकानी रीते वे स्थाने स्थापन करी एक स्थाने २ वडे अने वीजे स्थाने ५२ वडे गुणवाना छे.

स्थापना—

२	५२
१	१
३७	३७
३०	३०
गुणवाथी	
२	
७४	५२
६०	१९२४
	१५६०

छेल्ला (१५६०) अंकने ६० वडे भाग देतां भागमां २६ आव्या, तेने उपर (१९२४) मां नाख्या त्यारे १९५० थया. आ राशिने पहेली राशिना नीचला अंक ६० मां नाखवाथी २०१० थया. तेने ६० वडे भाग देतां ३३ लाध्या. तेने उपरना (५२) अंकमां नाखवाथी ८५ पळ थया. तेमां पहेली राशिमां सम पंक्तिए रहेला अंक ७४ मां नाखवाथी १५९ थया. तेने ६० वडे भाग देतां शेष ३९ अक्षर रह्या, अने भागमां २ पळ आव्या, तेने उपरना वे पळमां नाखवाथी पळो ४ थया. तेने ६० वडे भाग देतां भाग चालतो नथी, माटे घडीने स्थाने शून्य आवी. स्थापना—घडी ०, पळो ४, अक्षर ३९. आ राशिने वृषना पहेला दिवसना अहर्मान घडी ३१, पळ ४६ मां नाखवाथी घडी ३१,

पळ ५०, अक्षर ३९ थया. आ ते दिवसनुं स्पष्ट मान थयुं, तथा ते दिवसनी रात्रिनुं मान घडी २८, पळो ९, अक्षर २१ थाय छे. (६० मांथी ३१–५०–३९ बाद करवाथी.)

हवे एज मानथी मध्य छाया लाववानी रीत कहे छे.—

"ज्येष्ठाद्दिनाद्दिनं शोध्यं शेषाद्दशगुणात्स्वतः ।
त्यजेत्सप्तशरैः ५७ र्लब्धं सूर्यैः १२ र्मध्यांह्यः स्मृताः ॥ १ ॥"

"मोटा दिनमानमांथी इष्ट दिवसनुं दिनमान बाद करवुं. बाकी रहेलाने दशे गुणवा. पछी तेने ५७ वडे भाग देवो. जे लाधे तेने १२ वडे भाग देवो. जे लाधे ते मध्याह्नना पाद (पांया–पगलां) जाणवा.";

इष्ट दिवसनुं अहर्मान (दिनमान) मोटा अहर्मानमांथी दूर करवुं. शेष रहे तेने दशे गुणवा. त्यारपछी "स्वतः" एटले तेज अंकने नीचे मूकी ५७ वडे भाग देतां जे लाधे ते मुख्य अंकमांथी बाद करवुं. जो भाग न चाले अने ५७ नी अपेक्षाए उपरनो अंक अर्धथी अधिक होय तो एक आखो ग्रहण करीने मुख्य अंकमांथी बाद करवो. त्यारपछी तेने १२ वडे भाग देवो. जे लाधे ते मध्याह्ननी छायाना पाद जाणवा, अने शेष रहे ते अंगुल जाणवा.

जेमके—अहीं इष्ट दिनमान (घडी ३१, पळ ५०, अक्षर ३९) ने मोटा दिनमान घडी ३३, पळ ४८ मांथी बाद कर्युं त्यारे घडी १, पळ ५७, अक्षर २१ रह्या. आ शेष होवाथी तेने दशवडे गुणी ६० वडे भाग दइ दइने उपर उपर नाखवाथी नीचे (शेष) ३३ रह्या अने उपर (भागमां) १९ आव्या. आ (१९)ने ५७ वडे भागी शकाशे नहीं. तेमज ५७ नी अपेक्षाए अर्धथी अधिक पण नथी, तेथी ते रीत कर्या विनाज ते (१९)ने बारे भाग देतां १ पाद लाध्यो. शेष अंगुल ७ अने ३३ व्यंगुल थया. आ प्रमाणे इष्ट दिवसनी मध्याह्न छाया थइ.

हवे आ मध्याह्न छायाथी इष्ट काळनी छाया लाववानी रीत कहे छे.—

"खमही कर २१० हतदिवसे विहृते वाञ्छितपलैर्द्युगतशेषैः ।
लब्धं मध्यपदैर्युग्‌ नग ७ रहितं स्यात् पदछाया ॥ १ ॥
शेषमर्क १२ गुणं कृत्वा वाञ्छितैस्तु पलैर्हृतम् ।
लब्धमङ्गुलसंज्ञं स्यादेवं छायाङ्गुलागमः ॥ २ ॥"

"इष्ट दिनमानने २१० वडे गुणवुं. तेने वांछित[1] दिनना (मध्याह्न पहेलां होय तो) गयेला पळोए अथवा (मध्याह्न पछी होय तो) शेष पळोए भाग देवो. जे लाधे तेने

---

१ वांछित (इष्ट) दिवसनी जेटली घडी तथा पळ होय ते सर्वना पळ करवा.

मध्याह्ननी छायाना पादे करीने युक्त करी तेमांथी ७ बाद करतां जे रहे ते पाद छाया जाणवी. भाग देतां जे शेष रह्या होय तेने बारे गुणी तेज वांछित पळोए भाग देवो. जे लाधे ते अंगुल (शेष रहे ते व्यंगुल) थाय छे. आ प्रमाणे छायाना अंगुल (अने व्यंगुल) आवे छे."

उदाहरण—इष्ट दिवसनुं दिनमान घडी ३१, पळ ५०, अक्षर ३९ छे, ते सर्वने २१० वडे गुणवाथी ६५१०, १०५००, ८१९० थया. तेने ६० वडे भाग दइ दइ उपर उपर नाखवाथी नीचे (छेल्ले) ३०, तेनी उपर (पहेलां) १६, अने तेनी पण उपर ६६८७ थया. पछी "द्युगत" एटले दिवसनो पूर्व भाग होय तो गयेला पळोवडे अने दिवसनो पाछलो भाग होय तो शेष (बाकी रहेला) पळोवडे भाग देवो एम कह्युं छे, तेथी अहीं प्रथम आणेली घडी १३, पळ ३२ छे तेना पळो ८१२ थया. आ ८१२ वडे तेनो (६६८७) भाग देवो. भागमां ८ आव्या, ते पाद थया. शेष १९१ रह्या. तेने १२ वडे गुणी नीचेना १६ नाखवाथी २३०८ थया. तेने ८१२ वडे भाग देतां भागमां २ अंगुल लाध्या. शेष ६८४ रह्या. तेने व्यंगुल लाववा माटे ६० वडे गुणी नीचेना ३० भेळववाथी ४१०७० थया. तेने पण ८१२ वडे भाग देतां भागमां ५० व्यंगुल आव्या. शेष ४७० रह्या तेनो त्याग करवो,(अथवा अर्ध उपर होवाथी ५० मां एक वधारी ५१ व्यंगुल करवा,) तेथी पाद ८, अंगुल २, व्यंगुल ५० (५१) थया. तेमां मध्याह्ननी छायाना पाद १, अंगुल ७, व्यंगुल ३३ नाखवाथी पाद ९, अंगुल १०, व्यंगुल २३ (२४) थया. पादना अंकमांथी ७ बाद करतां पाद २, अंगुल १०, व्यंगुल २३ (२४) थया. आ सात अंगुलनी शंकु छाया १३ घडी अने ३२ पळ समये थइ एम सिद्ध थयुं.

हवे तेनी प्रतीतिने माटे एज छायाथी आ काळ लावे छे.—

"साद्रि ७ शङ्कुपदैरर्क १२ गुणैर्मध्याङ्गुलोनितैः ।
द्विवेद ४२ घ्ने दिने भक्ते द्युगतं शेषमाप्यते ॥ १ ॥"

"शंकुना पादमां ७ उमेरी बारे गुणी अंगुल करवा. (तेमां उपर वधेला अंगुल पण नाखवा.) पछी मध्याह्ननी छायाना अंगुल करी तेमांथी बाद करवा. जे शेष रहे तेणे करीने इष्ट दिवसना दिनमानने (घडी, पळ अने अक्षरने) ४२ वडे गुणीने भाग देवो. जे आवे ते गयेलो दिवस जाणवो एटले तेटली घडी अने पळ दिवस चड्यो छे एम जाणवुं."

जेमके—अहीं शंकुना पाद २ छे, तेमां ७ नाखवाथी ९ थया. तेने बारे गुणवाथी

---

१ आ ८ मां मध्याह्ननी छाया नाखी तेमांथी ७ बाद करवाना छे. ते शेषनी रीत बताव्या पछी कहेशे.

१०८ अंगुल थया. तेमां उपर वधेला अंगुल १० नाखवाथी ११८ थया. हवे मध्याह्ननी छाया पाद १, अंगुल ७ छे, तेना अंगुल करवाथी १९ थया. ते १९ ने ११८ मांथी बाद करतां ९९ रह्या. हवे ते दिवसना दिनमानना त्रण अंकने पृथक् पृथक् ४२ वडे गुणी ६० वडे भाग दइ दइने उपर उपर नाखवाथी नीचे ४२, तेनी उपर २८, अने तेनी पण उपर १३३७ आवे छे. तेने ९९ वडे भाग देतां १३ घडी लाधी. शेष ५० रह्या. तेने ६० वडे गुणी तेमां नीचेना २८ भेळववाथी ३०२८ थया. तेने ९९ वडे भाग देतां पळ ३० लाध्या. शेष ५८ रह्या. तेने ६० वडे गुणी नीचेना ४२ नाखवाथी ३५२२ थया. तेने पण ९९ वडे भाग देतां अक्षर ३५ लाध्या. शेष ५७ रह्या. ते (५७) ९९ नी अपेक्षाए अर्धाधिक होवाथी अक्षरमां एक वधार्यो, तेथी अक्षर ३६ थया. आ (३६) पण ६० नी अपेक्षाए अर्धाधिक होवाथी पळमां एक वधार्यो, तेथी पळ ३१ थया, तेथी करीने २ पाद, १० अंगुल अने २४ व्यंगुलनी छाया होय त्यारे १३ घडी अने ३१ पळ जेटलो दिवस चडेलो होय एम सिद्ध थयुं, अने दिवसना पाछला भागमां जो आ छाया लइए तो तेटला घडी, पळ दिवस बाकी रह्यो छे एम जाणवुं. आ बीजी रीत होवाने लीधे एक बे पळनो फरक पडे तेमां कांइ पण दोष नथी एम जाणवुं. आ रीते प्रसंगने लीधे छाया अने काळ लाववानी रीत कही.

हवे प्रकृत होवाथी ग्रहोनुं अने तेमनी गतिनुं स्पष्टीकरण कहे छे.—

"गतेष्टनाड्यो गुणिताः खखेभैः, ८००-६००-४००-२०० सर्वर्क्षनाडीविहृताः कलाद्यम् ।
भुक्तर्क्षयुक्तं सकला ग्रहाः स्युः, षष्ठ्या हृतेष्वष्टशतेषु भुक्तिः ॥ १ ॥"

"इष्ट दिवसे जे ग्रह होय तेनी गयेली घडीओ ८००—६००—४०० के २०० वडे गुणवी. त्यारपछी तेने नक्षत्रनी सर्व घडीओवडे भाग देवो. जे आवे ते कळादिक जाणवा. पछी तेमां भोगवाइ गयेली नक्षत्रोनी कळाओ नाखवी. ते कळा पण ८००—६००—४०० के २०० होय छे. पछी तेने ६० वडे भाग देतां जे आवे ते अंशादिक जाणवा. (आ रीते ग्रहो स्पष्ट थाय छे.) पछी ८०० विगेरेने साठे गुणी नक्षत्रनी सर्व घडीओवडे भाग देवाथी ते ग्रहोनी गति आवे छे."

---

१ उपर दिनमान घडी ३१, पळ ५०, अक्षर ३९ लखेला छे. गणितनी रीते पण तेटलाज थाय छे, परंतु अहीं घडी ३१—५०—४१ लइने गणित कर्युं होय तेम जणाय छे. अन्यथा गणित मळतुं आवतुं नथी. प्रथमना गणितमां ३९ ने बदले अर्धाधिक वधेला करीने ४० तो थइ शके छे. तेने बदले ४१ अक्षर लीधा, तेनुं कारण बीजी रीत होवाथी तेटलो फरक लेवामां अडचण नथी एम धारवुं योग्य छे.

आ श्लोकनुं भाष्य आ प्रमाणे छे.—

"इष्टात्प्राग्गतनाड्योऽष्टशताद्यैर्गुणितास्ततः ।
सर्वर्क्षघटिकाभक्ताः कलाद्याः स्युरिति स्फुटम् ॥ १ ॥
भुक्तर्क्षाष्टशत्यादिप्रमाणसहितास्ततः ।
षष्टिभक्तेऽंशकादि स्याच्छेषे षष्टिगुणे ततः ॥ २ ॥
सर्वर्क्षघटिकाभक्ते लब्धं स्याद्विकलादिकम् ।
एवं स्पष्टा ग्रहाः सर्वे कर्तव्या गणकोत्तमैः ॥ ३ ॥"

"इष्ट ग्रहनी पहेलां जेटली घडीओ गइ होय तेने आठसो विगेरे वडे गुणवी. त्यारपछी नक्षत्रनी सर्व घडीओवडे भाग देवो, भाग देतां जे आवे ते कळादिक स्पष्ट रीते आवे छे. त्यारपछी भोगवायेलां नक्षत्रोनुं जे आठसो विगेरे प्रमाण छे तेने ते कळाओमां नाखवुं. पछी तेने ६० वडे भाग देतां जे लाधे ते अंशादिक जाणवा. तथा ते ८०० विगेरेने ६० वडे गुणी नक्षत्रनी सर्व घडीओवडे भाग देवो. जे लाधे ते कळा अने शेष रहे ते विकळारूप ते ग्रहोनी गति स्पष्ट थाय छे. आ रीते गणित जाणनाराओए सर्वे ग्रहो स्पष्ट करवा."

अहीं आठसो विगेरे कह्युं छे तेनो अर्थ आ प्रमाणे छे.—आखा नक्षत्रनी गत नाडीओवडे गुणवा होय तो ते आखा नक्षत्रनो भोगवटो आठसो कळानो छे, माटे आठसो-वडे गुणाकार करवो, अने ज्यां नक्षत्रना त्रण पादनी, बे पादनी के एक पादनी गत नाडीओ इष्ट होय त्यां अनुक्रमे छसो, चारसो अने बसोवडे गुणाकार करवो एम जाणवुं. नक्षत्रनी सर्व घडीओवडे भाग देवानुं कह्युं त्यां पण आखा (चार पादवाळा) नक्षत्रनी, त्रण पादवाळा, बे पादवाळा के एक पादवाळा नक्षत्रनी सर्व घडीओवडे ते ते ठेकाणे भागाकार जाणवो. एज प्रमाणे भोगवायेलां नक्षत्रोना आठसो विगेरे प्रमाणे करीने सहित करवानुं कह्युं छे, त्यां पण एक, बे के त्रण पाद भोगवाइ गयानो संभव होय त्यारे पण अनुक्रमे २००–४०० के ६०० कळाओनो लाधेली कळाओमां प्रक्षेप करवो एम जाणवुं. "ऋक्ष" शब्दनो अर्थ "राशि" पण थइ शके छे, तेथी ते ग्रहे जेटली राशिओ भोगवी होय ते राशिनो अंक पण माथे (उपर) लखवो.

आज अर्थ स्पष्टपणे कहे छे.—

"इन्दोर्गुण्या गता घट्योऽष्टशत्या प्रतिभं सदा ।
भौमसूर्यज्ञशुक्राणां गुण्या अष्टशतादिभिः ॥ १ ॥
शनिवाक्पतिराहूणां द्विशत्या पादगत्वतः ।
गता घट्यो हता भांह्रिघट्यासं स्यात्कलादिकम् ॥ २ ॥

राहोर्वामगतित्वेन लब्धा या विकलाः कलाः ।
शोध्यास्ता द्विशतीमध्याच्छेषं भोग्यकला इह ॥ ३ ॥"

"चंद्रनी गत घडीओने ८०० वडे गुणवी. मंगळ, सूर्य, बुध अने शुक्रनी गत घडीओ ८०० विगेरे वडे गुणवी. एक पादमां रहेला होवाथी शनि, गुरु अने राहुनी गत घडीओ २०० वडे गुणवी. पछी तेने नक्षत्रना पादनी सर्व घडीओवडे भाग देवाथी जे लाधे ते कळादिक भुक्त थाय छे, परंतु राहु वाम गतिवाळो होवाथी जे कळा विकळा लाधे ते बसोमांथी बाद करवी. जे बाकी रहे ते भोग्य कळादिक थाय छे."

चंद्रनी गत घडीओ ८०० वडे गुणवानी कही तेनुं कारण ए छे जे—सर्वत्र चंद्रनो चार (गति) नक्षत्रनी अपेक्षाए करीनेज टीपणामां लख्यो होय छे. मंगळ विगेरेने आठसो विगेरेथी गुणवानुं कह्युं तेनुं कारण ए के—भौमादिकनो चार टीपणामां नक्षत्रनी अपेक्षाए तेमज राशिनी अपेक्षाए पण लखेलो होय छे, तथा शनि विगेरेनो चार तो नक्षत्रना एक पादनीज अपेक्षाए लखेलो होय छे, तेथी एक पादनी अपेक्षाएज तेओनी वर्तना करवी, एटले के नक्षत्रना एक पादनी गयेली इष्ट घडीओ २०० वडे गुणतां जे आवे तेने नक्षत्रना एक पादथी बीजा पादमां जतां वच्चे जेटली घडीओ होय ते सर्व घडीओवडे भाग देवो. जे कळादिक लाधे ते भुक्त थाय छे, परंतु राहुनी वाम गति होवाथी जे लाधे ते २०० मांथी बाद करवी. शेष रहे ते राहुए ते पादनुं भोग्य थयुं एम जाणवुं. पछी तेमां भोग्य नक्षत्रनी ८०० विगेरे घडीओ नाखवी. अहीं राशिओ पण जेटली भोग्य होय तेज उपर लखवी. आ प्रमाणे सूर्यादिक ग्रहोनी वर्तना कोइ वखत एक पादनी अपेक्षाए अने कोइ वखत बे त्रण पादनी अपेक्षाए पण करवामां आवे छे. मात्र आज रीतिए करीने सूर्यादिक सात ग्रहो भुक्तनी अपेक्षाए स्पष्ट थाय छे, अने राहु तो भोग्यनी अपेक्षाए स्पष्ट थाय छे. जो राहुनी राशिना अंकमां ६ नाखीए तो केतु पण भोग्यनी अपेक्षाएज स्पष्ट थाय छे.

(ग्रहोनी गति लाववानी रीत—) उपरना प्रथम श्लोकमां "षष्ट्या हतेष्वष्टशतेषु भुक्तिः" (आठसोने साठे गुणतां भुक्ति आवे छे.) आ ठेकाणे "सर्वर्क्षनाडीविहृतेषु" (नक्षत्रनी सर्व घडीओवडे भाग दीधेला एवा आठसो) एटलुं अध्याहार छे, तेथी करीने तेनो आवो अर्थ थाय छे.—आठसोने अथवा संभव प्रमाणे छसो, चारसो के बसोने साठे गुणी नक्षत्रनी सर्व घडीओवडे अथवा संभव प्रमाणे त्रण, बे के एक पादनी घडीओवडे भाग देवाथी जे बे फळ आवे तेटली कळा विकळारूप ग्रहोनी दिवस संबंधी गतिनुं मान जाणवुं.

हवे अहीं तत्काळ (इष्ट काळ)ना नव ग्रहोने स्पष्ट करीने उदाहरण बतावे छे. तेमां सूर्य तो प्रथमज स्पष्ट करी बताव्यो छे, परंतु तेनी गति कही नथी, तेथी तेनुं बारे संक्रांतिमां अनुक्रमे कळा विकळारूप दिवसनी गतिनुं मान प्राये करीने आ प्रमाणे होय छे.—

"वस्वर्था निधयो ५८-९ नवेषुसधृति ५९-१८ द्विः षट्शरं ५६-५६ त्र्यूनिका,
षष्टिर्द्वादश ५७-१२ कुञ्जरेषुगगनं ५८-० चैकोनषष्टिर्हयाः ५९-७ ।
षष्टिर्विश्वयुता ६०-१३ कुषट् च सगुणा ६१-३ कङ्कं द्वियुग्विंशतिः ६१-२२,
कङ्कं सन्निधि ६१-९ षष्टिका युगयुगं ६०-२२ खेटेषु धृत्या युतम् ५९-१८ ॥ १ ॥"

"मेष राशिनी संक्रांतिमां सूर्यनी गति कळा ५८, विकळा ९ होय छे, एजरीते वृष—५९–१८, मिथुन—५६–५६, कर्क—५७–१२, सिंह—५८–०, कन्या—५९–७, तुला—६०–१३, वृश्चिक—६१–३, धन—६१–२२, मकर—६१–९, कुंभ—६०–२२, मीन—५९–१८."

ते दिवसे चंद्र पुष्य नक्षत्र (तथा कर्क राशि)मां छे. तेनी गत घडीओ कार्य वखते १७ छे. तेने ८०० वडे गुणतां १३६०० थया. तेने पुष्यनी सर्व घडीओ ६६ वडे भाग देतां लाधेली कळा २०६, विकळा ३, शेष ४२. आ (४२) ६६ नी अपेक्षाए अर्धाधिक होवाथी विकळा ४ थइ. पछी पुनर्वसुना छेल्ला पादनी २०० कळाओ उपरनी कळा (२०६) मां नाखवाथी कळा ४०६ थइ. तेने ६० वडे भाग देतां लाध्या अंश ६, कळा ४६, विकळा ४. भुक्त राशि त्रण होवाथी तेने उपर लख्यो, तेथी ते वखते स्पष्ट चंद्र राशि ३–६–४६–४ थयो. तेनी गति कळा ७२७, विकळा १६ छे.

ते दिवसे मंगळ उत्तरभाद्रपदमां (तथा मीन राशिमां) छे. ते वखते गत घडीओ १४९ छे. ते आ रीते—उत्तरभाद्रपदमां मंगळ ४४. ते दिवसनी शेष घडीओ १६, कार्यना दिवसनी घडीओ १३ अने वच्चेना बे दिवसनी घडीओ १२० छे, ते सर्व मळवाथी १४९ थाय छे. तेने ८०० वडे गुणवाथी ११९२०० थाय छे. तेने नक्षत्रनी सर्व घडीओ १०२२ वडे भागवाथी कळा ११६, विकळा ३८ थाय छे. पूर्वभाद्रपदना छेल्ला पादनी २०० कळाओ उपरनी कळाओमां नाखवाथी ३१६ थाय छे. तेने ६० वडे भाग देतां अंश ५, कळा १६, विकळा ३८ थइ. गत राशि ११ नो अंक उपर मूकवाथी स्पष्ट मंगळ राशि ११–५–१६–३८ थयो. तेनी गति कळा ४६, विकळा ५८ छे.

ते दिवसे बुध वृष राशिमां कृत्तिका नक्षत्रमां छे. ते वखते गत घडीओ १७० छे. ते आ रीते.—वृषमां बुध २३. ते दिवसे शेष घडीओ ३७, कार्यना दिवसनी घडीओ १३,

वच्चेना बे दिवसनी घडीओ १२०, ते सर्व मळी १७० थाय छे. तेने कृत्तिकाना त्रण पादज वृषमां रहेला होवाथी ६०० वडे गुणतां १०२००० थया. त्यारपछी तेने वृषे बु० थी आरंभीने रोहि० बु० त्यांसुधीना त्रण पादनी जे घडीओ छे ते सर्व घडीओ ४५७ छे. तेवडे भाग देतां कळा २२३, विकळा ११, शेष ३१३ रह्या. ते ४५७ नी अपेक्षाए अर्धाधिक होवाथी विकळा १२ थइ. कळाओने ६० वडे भाग देतां अंश ३ लाध्या. तेनी उपर भुक्त राशि १ मूकवाथी स्पष्ट बुध १-३-४३-१२ थया. तेनी गति ६०० ने ६० वडे गुणी त्रण पादनी घडीओ ४५७ वडे भाग देतां कळा ७८, विकळा ४६ आवे छे.

ते दिवसे गुरु आर्द्राना पहेला पादमां छे. ते वखते गत घडीओ २७६ छे. ते आ रीते.—रौद्रे प्र० गु० ३७. ते दिवसनी शेष घडीओ २३, कार्यना दिवसनी घडीओ १३ अने वच्चेना चार दिवसनी घडीओ २४० मळीने २७६ थाय छे. तेने गुरु एक पादमां रहेल होवाथी २०० वडे गुणतां ५५२०० थया, तेने आर्द्राना पहेला पादनी सर्व भोग घडीओ ११९२ वडे भाग देतां कळा ४६, विकळा १८ थइ. कळामां अर्धा मृगशिरनी कळा ४०० नाखवाथी ४४६ कळा थइ. तेने ६० वडे भाग देतां अंश ७ लाध्या. उपर भुक्त बे राशि मूकवाथी स्पष्ट गुरु २-७-२६-१८ थयो. तेनी गति लाववा माटे २०० ने ६० वडे गुणी आर्द्राना एक पादनी सर्व घडीओ (११९२) वडे भाग देतां कळा १०, विकळा ४ थइ.

ते दिवसे शुक्र पूर्वभाद्रपदमां छे. ते वखते गत घडीओ ५४१ छे. ते आ रीते.— "पू. भ. सित" पूर्वभाद्रपद शुक्र १२. ते दिवसनी शेष घडीओ ४८, इष्ट दिन घडीओ १३ तथा वच्चेना आठ दिवसनी घडीओ ४८० मळी ५४१ थाय छे. तेने पूर्वभाद्रपदना त्रण पाद कुंभना होवाथी ६०० वडे गुणतां ३२४६०० थाय छे. तेने "मीने सि०" मीनना शुक्र तेनी पहेलांनी सर्व घडीओ ५८२ वडे भाग देतां कळा ५५७ विकळा ४४ थइ. कळामां छ भुक्त नवांशकनी कळा १२०० नाखवाथी कळा १७५७, विकळा ४४ थइ. तेने ६० वडे भाग देतां अंशो २९ लाध्या. उपर १० राशि देवाथी स्पष्ट शुक्र राशि १०-२९-१७-४४ थयो. तेनी गति कळा ६१, विकळा ५१ थाय छे.

ते दिवसे वक्र शनि अनुराधाना चोथा पादमां छे. ते वखते गत घडीओ १४७७ छे. ते आ रीते.—"पुनरनु० च श०" ३६. ते दिवसनी शेष घडीओ २४, इष्ट दिन घडीओ १३ अने वच्चेना २४ दिवसनी घडीओ १४४० मळवाथी १४७७ थाय छे. तेने शनि एक पादमां रहेलो होवाथी २०० वडे गुणतां २९५४००. तेने चोथा पादनी सर्व भोग घडीओ ४१०२ वडे भाग देतां कळा ७०, विकळा ३८ थइ. तेने शनि वक्र होवाथी २०० मांथी

बाद करतां कळा १२९, विकळा २२ रही. तेमां चार नवांशकनी कळा ८०० नाखवाथी कळा ९२९ थइ. तेने ६० वडे भाग देतां अंश १५ लाध्या. उपर ७ राशि देवाथी स्पष्ट शनि राशि ७–१५–२९–२२ थयो. तेनी गति कळा २, विकळा ५२ छे.

ते दिवसे राहु चित्राना छेल्ला पादमां छे. ते वखते गत घडीओ १२८३ छे. ते आ रीते.—चित्रा० च० रा० ५०. ते दिवसनी शेष घडीओ १०, कार्य दिन घडीओ १३ अने वच्चेना २१ दिवसनी घडीओ १२६० मळी १२८३ थाय छे. तेने राहु एक पादमां रहेलो होवाथी २०० वडे गुणतां २५६६०० थया. तेने चित्राना छेल्ला पादनी सर्व भोग घडीओ ३७७४ वडे भाग देतां कळा ६७, विकळा ५९ थइ. तेने २०० मांथी बाद करतां कळा १३२, विकळा १ रही. कळामां कन्या राशिमां रहेला चित्राना त्रीजा पादनी २०० कळाओ नाखवाथी ३३२ कळा थइ. तेने ६० वडे भाग देतां अंश ५ लाध्या. उपर ६ राशि देवाथी भोग्यनी अपेक्षाए स्पष्ट राहु ६–५–३२–१ थयो. तेनी गति कळा ३, विकळा ११ आवे छे.

राहुनी राशिना अंकमां ६ नाखवाथी स्पष्ट केतु राशि ०–५–३२–१ थाय छे. तेनी गति राहु प्रमाणे जाणवी.

ते काळना स्पष्ट करेला नव ग्रहोनी तथा तेमनी गतिनी स्थापना.—

रवि	चंद्र	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
०	३	११	१	२	१०	७	६	०
१६	६	५	३	७	२९	१५	५	५
३	४६	१६	४३	२६	१७	२९	३२	३२
३०	४	३८	१२	१८	४४	२२	१	१
५८	७२७	४६	७८	१०	६१	२	३	३
९	१६	५८	४६	४	५१	५२	११	११

अहीं कोइने शंका थाय के—ग्रहोने अने तेनी गतिने स्पष्ट करवानुं शुं फळ? तेनो जवाब आ छे.—प्रथम कार्यने समये स्पष्ट करेला ग्रहना काळ पछी अने बीजुं कार्य जे वखते करवुं होय ते वखतनी पहेलां जेटली घडीओ गइ होय ते घडीओने बे वार स्थापन करवी. पछी तेने कळा विकळारूप प्रतिदिननी गतिवडे अनुक्रमे गुणवी. पछी तेने साठे भागतां जे कळादिक लाधे तेने प्रथमना कार्यनी वेळाए स्पष्ट करेला ग्रहोने मध्ये नाखवा, पण जो वक्री ग्रह होय तो तेमांथी अने भोग्यनी अपेक्षाए स्पष्ट करेला राहुमांथी बाद करवा. तेम करवाथी बीजा कार्यनी वेळाए ग्रहो स्पष्ट थाय छे.

उदाहरण—पूर्वे कहेलाज वर्ष, मास अने पक्षनी (१९५२ ना वैशाख सुदि) १३ ने दिवसे हस्त नक्षत्रमां सूर्य छते ८ घडी दिवस चडे ते समये कोइए कार्य करवा धार्युं छे, तेथी आ वेळा अने पूर्वे कहेली वेळानुं अंतर ३५५ घडीनुं छे. ते आ रीते—पूर्वे वैशाख सुदि ७ ने दिवसे १३ घडीओ कहेली छे, माटे ते दिवसनी शेष घडीओ ४७ रही, तथा हस्तना सूर्यवाळा दिवसनी (सुदि १३ नी)८ घडीओ छे, तथा वच्चेना पांच दिवसनी घडीओ ३०० थइ. ते सर्व मळी ३५५ घडीओ थइ. हवे मेषमां रहेला सूर्यनी गति कळा ५८, विकळा ९ छे. तेवडे बे वार स्थापन करेला ३५५ ने गुणवा. स्थापना—३५८ । ३५५ गुणतां २०५९० / ३१९५ नीचेना अंकने ६० वडे भाग देतां ५३ लाध्या, तेने उपरना अंकमां नाखवाथी २०६४३ थया. तेने ६० वडे भाग देतां कळा ३४४ लाधी. शेष विकळा ३ रही. एज प्रमाणे बीजा चंद्रादिक ग्रहोनी कळा विकळा लावीए त्यारे ते आ प्रमाणे थाय छे.—

	रवि	चंद्र	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
कळा	३४४	४३०२	२७७	४६६	५९	३६५	१६	१८	१८
विकळा	३	५९	५३	२	३३	५६	५७	५०	५०

आ कळा विकळावडे संस्कार करेला पूर्वना ग्रहो बीजा कार्य समये आवा प्रकारना थाय छे.—

रवि	चंद्र	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
०	५	११	१	२	११	७	६	०
२१	१८	९	११	८	५	१५	५	५
४७	२९	५४	२९	२५	२३	१२	१३	१३
३३	३	३१	१४	५१	४०	२५	११	११

हवे जे ग्रहो तरतज वक्र थया होय अथवा वक्र थवानी तैयारीमां होय, तथा मार्गीभूत (मार्गे रहेला) होय अथवा मार्गनी सन्मुख होय तेमनुं स्पष्टीकरण कहे छे.

"वक्राग्रपश्चिमे भुक्ता भोग्या मार्गाग्रपश्चिमे ।
अन्तरांशकला ग्राह्यास्तासां सीमा च सर्वभम् ॥ १ ॥
वक्रादूर्ध्वं फलं लब्धं भुक्तभागौघतस्त्यजेत् ।
सभोग्यभुक्तभागौघात्याज्यं मार्गादितः फलम् ॥ २ ॥"

१–३४४ ने ६० वडे भाग देतां ५ अंश आव्या. ते १६ मां नाखवाथी २१ थया. शेष ४४ कळा रही ते ३ मां नाखता ४७ थइ. शेष रहेली ३ विकळा ३० मां नाखवाथी ३३ विकळा थइ.

"वक्र थयेला ग्रहनी पछीनी अने पहेलांनी भुक्त एवी अने मार्गी थयेला ग्रहनी पछीनी तथा पहेलांनी भोग्य एवी अंतरांश कळाओ ग्रहण करवी, अने ते सर्व कळाओनी जे सीमा ते सर्वभ कहेवाय छे. १. वक्री थया पछी लाधेलुं जे फळ ते भुक्त अंश–कळाना समूहमांथी बाद करवुं, अने मार्गी थया पछी ते लाधेलुं फळ भोग्य सहित करेला भुक्त अंश–कळाना समूहमांथी बाद करवुं."

आ बे श्लोकोनुं भाष्य आ प्रमाणे छे.—

"वक्रात् पूर्वगता नाड्यो हताः स्वर्क्षकलादिभिः ।
सीमान्तसर्वभघटीविभक्ताः स्युः स्फुटं कलाः ॥ ३ ॥
शेषे षष्टिगुणे सर्वर्क्षलब्धे विकलागमः ।
भुक्तर्क्षयुक्ते तत्राङ्के षष्टिभक्तेऽंशकादिकम् ॥ ४ ॥
वक्रपश्चादपीत्थं स्यात्सीमाधीष्ण्येऽग्रतः स्थिते ।
लब्धं फलं पुनस्त्याज्यं भुक्तभागौघतस्तदा ॥ ५ ॥
मार्गात् पूर्वगता धट्यो गुण्या भोग्यकलादिभिः ।
शेषं प्राग्वद्भोग्ययुक्तभुक्तांशेभ्यः फलं त्यजेत् ॥ ६ ॥
मार्गपश्चात्तु रूढ्येति वक्रिमार्गिग्रहाः स्फुटाः ।"

"वक्रीनी पहेलां गयेली कळाओ पोताना नक्षत्रनी कळाओए गुणवी. तेने सीमान्तनी सर्व नक्षत्रनी घडीओए भाग देवाथी स्फुट कळाओ थाय छे. शेषने ६० वडे गुणी सर्व नक्षत्रनी घडीओए भाग देतां विकळा आवे छे. पछी ते अंकने भुक्त नक्षत्रनी घडीओ सहित करीने ६० वडे भाग देतां अंशादिक आवे छे. हवे वक्री थया पछी पण एज प्रमाणे सीमा नक्षत्र आगळ रहे छते करवुं, परंतु ते वखते भुक्त अंशोना समूहथी लाधेला फळने बाद करवुं. हवे मार्गी थयानी पूर्वे गयेली घडीओ भोग्य कळादिके करीने गुणवी. बीजुं प्रथमनी जेम भोग्य सहित करेला भुक्त अंशोमांथी फळने बाद करवुं, परंतु मार्गी थया पछी तो रूढिथी जाणवुं. आ प्रमाणे वक्री अने मार्गी ग्रहो स्फुट थाय छे."

आ श्लोकोनी व्याख्या आ प्रमाणे छे.—वक्राग्रपश्चिमे एटले ग्रहनुं वक्रपणुं थवा पछी अने पहेलां. मार्गाग्रपश्चिमे एटले मार्गी थया पछी अने पहेलां. अन्तरांशकला ग्राह्याः एटले जेम स्वाभाविक गतिवाळा ग्रहने स्पष्ट करवा माटे गयेली इष्ट घडीओने ८०० कळावडे गुणवानुं कह्युं छे तेम अहीं (गयेली इष्ट घडीओने) वक्री अने मार्गी थवाना

१ आनी रीत आगळ टीकाना विस्तारथी जणाशे.

समये टीप्पणमां लखेला भुक्त अंशो अने कळाओए करीने गुणवी. विशेष (तफावत) ए के वक्री थयेला ग्रहनी बन्ने तरफनी (पछीनी अने पहेलांनी) भुक्त कळाए करीने अने मार्गी थयेला ग्रहनी बन्ने तरफनी भोग्य कळाए करीने गुणाकार करवो. तासां सीमा च सर्वजं एटले प्रस्तावने लीधे तासां–ते सर्व नाडीओ (घडीओ)ने. भावार्थ ए छे जे–जेम बीजे ठेकाणे सर्वे नक्षत्रनी घडीओवडे भाग देवानो कह्यो तेम इष्ट समये ते ग्रहे आक्रमण करेलुं नक्षत्र के तेनो पाद जे वखते स्पर्श्यो होय त्यारथी आरंभीने वक्री के मार्गी थाय त्यांसुधीनी अथवा वक्री के मार्गी थवाना समयथी आरंभीने बीजा नक्षत्रमां के तेना पादमां संक्रमण थाय त्यांसुधीनी जे सर्व घडीओ होय ते घडीओवडे भाग देवो. त्यारपछी वक्रादूर्ध्वं एटले जो वक्री थया पछी ग्रहने स्पष्ट करवानो होय तो जे कळादिक फळ लाधेलुं होय ते वक्री थवाना समये टीप्पणमां लखेला भुक्त अंश अने कळादिकमांथी बाद करवुं, अने वक्री थया पहेलां ग्रह स्पष्ट करवानो होय तो गयेली इष्ट घडीओने कहेली रीत प्रमाणे भुक्त कळावडे गुणी तथा सर्व घडीओवडे भाग दइ जे लाधे तेने भुक्त नक्षत्रनी कळाए युक्त करवुं, ए रीत सुगमज छे. मार्गादितः एटले के जो मार्गी थया पहेलां ग्रहने स्पष्ट करवानो होय तो मार्गी थवाने समये टिप्पनकमां लखेला भुक्त अंशो अने कळाओमां तेनीज भोग्य कळादिक मेळवीने पछी ते एकंदर थयेला अंकमांथी लाधेली कळादिक बाद करवी, अने मार्गी थया पछी ग्रहने स्पष्ट करवो होय तो रूढिए करीने करवो. एटले के—जेम स्वाभाविक गतिवाळा ग्रहोनी कळाओ लावीने तेमां भुक्त नक्षत्रनी कळाओ मेळवाय छे तेज रीते ते मेळवणी अहीं पण करवी. आ प्रमाणे वक्री अने मार्गी थयेला तथा वक्री अने मार्गी थवानी सन्मुख थयेला ग्रहो स्पष्ट थाय छे. आनुं उदाहरण बुध अने शुक्रने आश्रीने लखे छे, कारण के प्राये करीने आ बे ग्रहो घणी वार वक्री अने मार्गी थाय छे.

तेमां वक्री थया पछीनी रीत आ प्रमाणे करवी.—

वृष राशिमां वक्री थयेला बुधनुं गणित आ प्रमाणे छे.—वक्री थयेला दिवसनी शेष घडीओ २६, लग्नना दिवसनी घडीओ १० तथा अंतराळना (वच्चेना) चार दिवसोनी घडीओ २४० ए सर्व मळीने २७६ थइ. आ अंक जूदो राखी मूकवो. हवे बुध जे दिवसे वक्र थयो ते दिवसे वृष राशिनुं भुक्त काढवा माटे टिप्पनकमां जोयुं तो अंश २५, कळा ४४ छे. ते सर्वने कळारूप करतां १५४४ कळा थइ. तेमांथी कृत्तिकाना त्रण पाद अने रोहिणीना चारे पादनी मळी १४०० कळाओ बाद करीए त्यारे शेष १४४ रहे छे. आ मृगशीर्षनुं भुक्त आव्युं. आटलावडे "वक्राग्रपश्चिमेऽन्तरांशकला भुक्ता ग्राह्याः"—

"वक्रीनी पछीनी तथा पहेलांनी भुक्त अंश कळाओ ग्रहण करवी." एटलानी व्याख्या पूरी थइ. त्यारपछी आ १४४ मृगशिरना भुक्तवडे पूर्वे आणेली २७६ गत इष्ट घडीओने गुणवाथी ३९७४४ थाय छे. त्यारपछी टिप्पनकमां जोवुं, अने वक्रीना दिवसथी आरंभीने रोहिणीमां बुध ७ घडी होय त्यांसुधीनी सर्व घडीओ एकत्र मेळववी. ते आ रीते.–वक्रीना दिवसनी शेष घडीओ २६, रोहिणीमां आवेलो बुध घडी ७, तथा अंतराळना ६ दिवसनी घडीओ ३६० मळी ३९३ थइ. आ सर्व नक्षत्रनी घडीओवडे पूर्वे कहेला अंक ३९७४४ ने भाग देतां भागमां कळा १०१ आवी अने शेष विकळा ८ रही. आने पूर्वे कहेला मृगशिरना भुक्त १४४ मांथी बाद करीए त्यारे कळा ४२, विकळा ५२ रहे छे. आटलाए करीने "वक्रादूर्ध्वं फलं लब्धं भुक्तभागौघतस्त्यजेत्—" "वक्रीनी पछी जे फळ लाध्युं तेने भुक्त अंशना समूहमांथी बाद करवुं." एटलानी व्याख्या पूरी थइ. पछी ते कळा ४२, विकळा ५२ ने कृत्तिकाना त्रण पादनी अने रोहिणीना चारे पादनी मळी १४०० घडीओमां नाखवाथी १४४२ कळा अने ५२ विकळा थइ. कळाने ६० वडे भाग देतां भागमां २४ अंशो आव्या. ते उपर भुक्त राशि एक देवाथी स्पष्ट बुध राशि १–२४–२–५२ थयो.

हवे ते बुधनी गति आ प्रमाणे लाववी.—आठसोने ठेकाणे अहीं १४४ नो अंक छे, तेने ६० वडे गुणी सर्व नक्षत्रनी घडीओ ३९३ वडे भाग देतां कळा २१, विकळा ५९ थइ. आ वक्र थया पछी लग्नने दिवसे बुधनी गति आवी. गतिने स्पष्ट करवानुं फळ प्रथमनी जेमज जाणवुं. विशेष ए के—आ गतिवडे गत इष्ट घडीओने पूर्वे कहेली रीत प्रमाणे गुणवाथी जे कळादिक फळ लाधे ते बीजा कार्यसमये पूर्व कार्यना समयना ग्रहोमांथी बाद करीए त्यारे बीजा कार्यसमयना ग्रहो स्पष्ट थाय छे.

हवे वक्र थया पहेलांनी वर्तना आ प्रमाणे.—पुनर्वसुमां शुक्र घडी ५९ छे. ते दिवसनी पछीने बीजे दिवसे १० घडी पछी लग्न लीधेलुं छे, तेथी लग्नना दिवसनी घडी १० अने पुनर्वसुमां शुक्र आव्यो ते दिवसनी शेष घडी १ मळी ११ घडीओ थइ. त्यारपछी शुक्र क्यारे वक्र थशे ? ते माटे टिप्पनकमां जोवुं. त्यारे लग्नना दिवसनी पछी वक्री शुक्र घडी ४९, अंश २१, कळा १० ए प्रमाणे टिप्पनकमां लखेलुं जोयुं. तेमां अंश विगेरेनी कळा करवाथी १२७० थइ. तेमांथी मृगशिरना बे पादनी अने आर्द्राना चारे पादनी मळी १२०० कळाओ बाद करतां शेष कळा ७० रही. आ पुनर्वसुनुं भुक्त थयुं. आटलावडे "वक्रादग्रे पूर्वं चान्तरांशकला भुक्ता ग्राह्याः"—"वक्रनी पछीनी अने पहेलांनी भुक्त अंतरांश कळा (वच्चे रहेला अंश–कळा) ग्रहण करवी." एटलानी व्याख्या थइ. त्यारपछी आ पुनर्वसुनी भुक्त कळा ७० वडे गत इष्ट घडीओ ११ ने गुणतां

૭૭૦ थइ. त्यारपढी फरीथी टिप्पनकमां जोवाथी पुनर्वसुमां शुक्र आव्यो ते दिवसनी शेष घमी ૧, वक्र दिवसनी घमीउं ૪૯ अने अंतराळना पांच दिवसनी घमीउं ૩૦૦ मळीने ૩૫૦ थइ. आ सर्व नक्षत्रनी घमीउं थइ. तेवमे पूर्वे कहेला ૭૭૦ ने जाग देतां कळा ૨ अने विकळा [1]૧૨ आवी. आटलुं लग्नसमये शुक्रे पुनर्वसुनुं जुक्त थयुं, तेथी तेने मृगशिरना बे पादनी तथा आर्द्राना चारे पादनी मळी ૧૨૦૦ कळामां नाखवाथी कळा ૧૨૦૨ अने विकळा ૧૨ थइ. कळाने ૬૦ वमे जाग देतां जागमां ૨૦ अंशो लाध्या. तेनी उपर बे राशि देवाथी लग्नवेळाए स्पष्ट शुक्र राशि ૨–૨૦–૨–૧૨ थयो.

हवे तेनी गति आ प्रमाणे.—आठसोने स्थाने अहीं ૭૦ नो अंक ढे, तेने ૬૦ वमे गुणी सर्व नक्षत्रनी कळा ૩૫૦ वमे जाग देतां कळा ૧૨, विकळा ૦ आवी. आ वक्र थया पहेलां लग्नने दिवसे शुक्रनी गति थइ. आ गतिवमे गुणवाथी जे कळादिक फळ आवे ते पूर्व काळना ग्रहोमां मेळववुं.

हवे मार्गी थया पहेलांनी वर्तना आ प्रमाणे.—रोहिणीमां बुध घमी ૭ ए प्रमाणे लखेलुं होवाथी जणाता दिवसनी पढी आठमे दिवसे पांच घमी गया पढी लग्न लीधेलुं ढे, तेथी लग्नना दिवसनी घमी ૫, रोहिणीमां बुध आव्यो ते दिवसनी शेष घमीउं ૫૩ अने अंतराळना सात दिवसनी घमीउं ૪૨૦ मळीने ૪૭૮ घमीउं थइ ते गत इष्ट घमीउं जाणवी. त्यारपढी टिप्पनकमां जोयुं तो लग्नना दिवसनी पढी सातमे दिवसे मार्गी बुध घमी ૪૫, अंश ૧૩, कळा ૧૩, विकळा ૮ ए प्रमाणे लखेलुं जोयुं. त्यारपढी ते अंशादिकने कळारूप करवाथी ૭૯૩ कळा अने ૮ विकळा थइ. आ टिप्पनकमां लखेलुं अंशादिक बुधे वृष राशिनुं जुक्त थयुं एम जाणवुं, अने जोग्य तो कळा ૧૦૦૬, विकळा ૫૨ ढे, माटे आ जोग्यवमे गत इष्ट घमीउं ૪૭૮ बे स्थाने स्थापन करी अनुक्रमे गुणवी. स्थापना—१००६/४७८. आटलाए करीने "जोग्या मार्गाग्रपश्चिमे"—"मार्गीनी पहेलांनी अने पढीनी जोग्य कळा गुणवी" एम कहेलुं होवाथी जोग्य कळाउंज गत इष्ट घमीउं साथे गुणवा माटे ग्रहण करी ढे. तेने अनुक्रमे गुणवाथी ४८०८६८/२४८५६ थयुं. नीचेना अंकने ૬૦ वमे जाग देतां जागमां आवेला ૪૧૪ उपरना अंकमां नाखवाथी ૪૮૧૨૮૨ थया. त्यारपढी रोहिणीमां बुध आव्यो ते दिवसनी शेष घमीउं ૫૩, मार्गी बुध थयो ते दिवसनी शेष घमीउं ૪૫ तथा अंतराळना चौद दिवसनी घमीउं ૮૪૦ ए सर्व मळीने ૯૩૮ थइ. आ सर्व नक्षत्रनी घमीउं थइ, तेना वमे पूर्वे कहेला ૪૮૧૨૮૨ ने जाग देतां कळा ૫૧૩ लाधी. शेष विकळा ૬ रही. आटलुं फळ लाध्युं. त्यारपढी लग्नना दिवसथी आठमे दिवसे टिप्पनकमां लखेलो मार्गी

---

१ बाकी रहेला ७० ने ६० वडे गुणी ३५० वडे भाग देतां १२ विकळा आवे छे.

बुध अंश १३, कळा १३, विकळा ८ छे, तेनी कुल कळा ७९३, विकळा ८ रूप वृष राशिनुं जे भुक्त थयुं छे तेने भोग्य कळा १००६, विकळा ८ सहित करवाथी १८०० कळा थाय छे, तेमांथी पूर्वे लाधेलुं फळ कळा ५१३, विकळा ६ बाद करवी, केमके "सभोग्यभुक्तभागौघात्त्याज्यं मार्गादितः फलं"—"भोग्य सहित करेला भुक्त अंशादिकना समूहथी मार्गीना लाधेला फळनो त्याग करवो" एम कहेलुं छे, तेथी ते बाद करतां कळा १२८६ अने विकळा ५४ रही. कळाने ६० वडे भाग देतां अंश २१, कळा २६, विकळा ५४ आवी. आटलुं मार्गी थया पहेलां लग्नने दिवसे बुधे वृष राशिनुं भुक्त थयुं. तेना उपर एक राशि देवाथी स्पष्ट बुध राशि १–२१–२६–५४ थयो.

तेनी गति आ प्रमाणे.—१००६–५२. तेमां पहेला अंकने ६० वडे गुणी सर्व नक्षत्रनी घडीओ ९३८ वडे भाग देतां कळा ६४, विकळा १३ आवी. आ रीतवडे प्राप्त थयेलुं कळादिक पूर्वना ग्रहोमांथी बाद करवुं.

हवे मार्गी थया पछी आ प्रमाणे वर्तना करवी.—मार्गी बुध जे दिवसे थयो ते दिवसे ४५ घडीए थयेलो होवाथी ते दिवसनी शेष घडीओ १५, लग्नना दिवसनी घडीओ ७ तथा अंतराळना छ दिवसनी घडीओ ३६० सर्व मळीने ३८२ थइ. आ गत इष्ट घडीओ थइ, तेने बे वार स्थापन करवी. पछी मार्गी बुध घडी ४५, अंश १३, कळा १३, विकळा ८, ए प्रमाणे टिप्पनकमां लखेलुं छे, अने तेथी शेष रहेली भोग्य कळा १००६, विकळा ५२ छे, तेने उपरनी गत इष्ट घडीओ ३८२ वडे गुणवी, केमके "भोग्या मार्गाग्रपश्चिमे"—"मार्गीनी पहेलांनी तथा पाछळनी भोग्य घडीओ ग्रहण करवी" एम कह्युं छे, तेथी तेने गुणतां ३८४६२३–४ थया. त्यारपछी फरीथी टिप्पनकमां जोतां मार्गी थया पछी १४ दिवसे मृगशिरमां बुध ४७ लखेलो जोयो, तेथी करीने बुधना मार्गी थवाना दिवसनी शेष घडीओ १५, मृगशिरमां बुधना आववाना दिवसनी घडीओ ४७ तथा अंतराळना तेर दिवसनी घडीओ ७८० ए सर्व मळी ८४२ घडीओ थइ. आ सर्व नक्षत्रनी घडीओ थइ. आना वडे पूर्वे कहेला अंक ३८४६२३ ने भाग देतां कळा ४५६, विकळा ४८ थइ. कळाने ६० वडे भाग देतां अंश ७ लाध्या. शेष कळा ३६ अने विकळा ४८ रही. आ अंकमां मार्गी थवाना दिवसे लखेला अंश १३, कळा १३ अने विकळा ८ उमेरवी, केमके "मार्गपश्चात्तु रूढ्या"—"मार्गी थया पछीनी वर्तना होय तो रूढि प्रमाणे करवुं एटले के उमेरवा" एम कह्युं छे, माटे ते उमेरतां अंश २०, कळा ४९, विकळा ५६ थाय छे. आटलुं प्रमाण लग्नसमये बुधे वृष राशिनुं भुक्त थयुं. तेना उपर एक राशि देवाथी स्पष्ट बुध राशि १–२०–४९–५६ थयो.

तेनी गति आ प्रमाणे.—१००६–५२. तेमां पहेला अंकने ६० वडे गुणी सर्व नक्ष-

भनी घडीओ ७४२ वडे भाग देवाथी कळा ११ तथा विकळा ३२ आवी. आ रीते आवेलुं कळादिक फळ पूर्वे आणेला ग्रहोमां भेळववुं. आ रीते बीजा ग्रहोनी वर्तना पण उपर कह्या प्रमाणे पोतानी बुद्धिथी करवी. आ सर्व गणित ज्योतिर्विदोने निरंतर उपयोगी होवाथी तथा प्रसंग होवाथी देखाड्युं छे.

हवे विवाहमां गोधूलिक लग्न कहे छे.—

सन्ध्यालग्नमपि श्रेयो गोखुरोत्खातधूलिभिः ।
गोपानां हीनवर्णानां प्राच्यां च स्यात्करग्रहे ॥ ७३ ॥

अर्थ—गोवाळना, नीच वर्णना अने पूर्व देशमां रहेनारना विवाहमां गायनी खरीए उडाडेली धूळवडे जणातुं संध्या लग्न पण श्रेय (शुभ) छे.

सूर्यना अस्त वखते सूर्यनुं अर्ध बिंब देखातुं होय त्यारथी आरंभीने गायनी खरीथी उडेली धूळ ज्यांसुधी शांत न थइ होय त्यांसुधी गोधूलिक लग्ननो समय होय छे, तेथी करीनेज अहीं श्लोकमां "धूलिभिः" एम कह्युं छे. अर्थात् ज्यांसुधी तारा न देखाय त्यांसुधी जाणवुं. जो सूर्य वादळांथी ढंकायेल होय तो प्रपुन्नाट नामनी ओषधिना पत्रनुं मळी जवुं, पक्षीओना समूहनो कोलाहल थवो तथा तेमनुं पोतपोताना माळा तरफ जवा माटे उत्सुकपणुं ए विगेरे चिह्नोवडे लग्नसमयनो निर्णय करवो. मूळ श्लोकमां "श्रेयो"-शुभ छे एम कह्युं ते लोकरूढिथी कह्युं छे. तथा "हीनवर्णानां" एटले नीच वर्ण ए शब्द सामान्य रीते कह्यो छे, कारण के गदाधर कहे छे के—

"घटिकालग्नाभावेऽङ्गीकार्यं गोरजोऽपि विप्रैश्च ।"

"घटिका लग्नने अभावे ब्राह्मणोए गोरज (गोधूलिक) लग्न पण अंगीकार करवुं.'

हवे गोधूलिक लग्नमां केटली शुद्धि होवी जोइए ते कहे छे.—

शीतद्युतिं षष्ठमथाष्टमं च, भद्रार्धयामौ कुलिकं च हित्वा ।
विनाऽपि लग्नांशखगानुकूल्यं, गोधूलिकं प्राग्रहरं वदन्ति ॥ ७४ ॥

अर्थ—छठो तथा आठमो चंद्र, भद्रा, अर्धयाम अने कुलिकने छोडीने लग्ननो नवांशक अने नक्षत्रनी अनुकूळता न होय तोपण गोधूलिक लग्नने श्रेष्ठ कहे छे.

लग्नथी छठे के आठमे चंद्र होय तो ते कन्याना मृत्युने देनार छे तथा "मंगळ पण पहेला के आठमा स्थानमां रह्यो होय तो ते पतिना मृत्युने करनार होवाथी तजवा योग्यज छे" एम सारंग कहे छे. अर्धयाम तथा कुलिकने तजवाना लख्या छे, तेथी

एवुं सूचवन थाय छे के गोधूलिक लग्नमां गुरु अने शनिवार तजवाना छे, कारण के ते दिवसे अनुक्रमे अर्धयाम अने कुलिकनी उत्पत्ति छे. (गुरुवारे अर्धयाम अने शनिवारे कुलिक थाय छे.) केशवार्क तो आ प्रमाणे कहे छे.—

"सार्के शनौ चिरविचित्रशिखण्डिसूनौ, तत्केवलं कुलिकयामदलोपलम्भात् ।"

"शनिवारे सूर्य छतां गोधूलिक लग्न करवुं, केमके सूर्यास्त पछी कुलिक योग थाय छे, तथा गुरुवारे सूर्यास्त पछी करवुं, कारण के ते पहेलां अर्धयाम योग थाय छे."

मूळमां खग शब्द लख्यो छे तेनो अर्थ ग्रहो थाय छे. तेमनी अनुकूळता विना पण एम मूळमां लख्युं छे तोपण क्रांतिसाम्य विगेरे मोटा दोषो अवश्य त्याग करवा योग्य छे. तेने माटे व्यवहारप्रकाशमां कह्युं छे के—

"क्रूरैर्युतनक्षत्रं व्यतिपातं वैधृतिं च संक्रान्तिम् ।
क्षीणं चन्द्रं ग्रहणभशनिगुरुदिनक्रान्तिसाम्यानि ॥ १ ॥
दम्पत्योरष्टमभं लग्नात् षष्ठाष्टमं च शीतांशुम् ।
रविजीवयोरशुद्धिं विवर्ज्य गोधूलिकं शुभदम् ॥ २ ॥
गोधूलिकापरिणयने येषां केन्द्रोपगः शुभो न मृतौ ।
भौमो नोदयनिधने तेषां सौख्यानि नान्येषाम् ॥ ३ ॥"

"क्रूर ग्रहवडे युक्त नक्षत्र, व्यतिपात, वैधृति, संक्रांति, क्षीण चंद्र, ग्रहण नक्षत्र, शनिवार, गुरुवार, क्रांतिसाम्य, लग्नथी स्त्री पुरुषने आठमुं नक्षत्र, छठो के आठमो चंद्र तथा रवि अने गुरुनी अशुद्धि, आटलांने वर्जीने गोधूलिक लग्न शुभदायक छे. गोधूलिकना विवाहमां जेउने केन्द्रमां शुभ ग्रह होय अने मृत्यु (८) स्थानमां शुभ ग्रह न रह्यो होय, तथा उदय (१) अने निधन (८) स्थानमां मंगळ रहेलो न होय तेमने सुख छे, बीजाने नथी."

मूळ श्लोकमां "प्राग्रहरं" एटले बीजा दोषोए आ (गोधूलिक) जीती शकाय तेवुं नथी, माटे प्रधान-श्रेष्ठ छे. ते विषे सारंग कहे छे के—

"जामित्रं न विचिन्तयेद्ग्रहयुतं लग्नाच्छशाङ्कात्तथा,
नो वेधं न कुवासरं न च गतं नागामि भं पाप्मभिः ।
नो होरां न नवांशकं न च खगान्मूर्त्यादिभावस्थितान्,
हित्वा चन्द्रमसं षडष्टमगतं गोधूलिकं शस्यते ॥ १ ॥"

"जामित्र (७) स्थाननो[1] विचार करवो नहीं, लग्नथी तथा चंद्रथी ग्रहवडे युक्तपणुं

---

१ जामित्र स्थान शुद्ध छे के अशुद्ध छे ? तेनो विचार करवो नहीं. ए रीते सर्वत्र जाणवुं.

विचारवुं नहीं, वेधनो विचार करवो नहीं, अशुभ दिवसनो विचार करवो नहीं, क्रूर ग्रह साथे रहेला अने रहेशे एवा नक्षत्रनो विचार करवो नहीं, होरानो विचार करवो नहीं, नवांशकनो विचार करवो नहीं, तथा मूर्त्ति (१०) आदिक स्थानोमां रहेला ग्रहोनो पण विचार करवो नहीं. मात्र छठा अने आठमा चंद्रनो त्याग करवाथीज गोधूलिक लग्न प्रशस्य–शुभ छे."

आ श्लोकमां जो के छठा आठमा चंद्रनो त्यागज अपेक्षित छे, बीजुं कांइ पण अपेक्षित नथी एम कह्युं छे, तोपण आ प्रमाणे जाणवुं.—गोधूलिक लग्न लीधुं होय तोपण विवाहनुंज नक्षत्र अने तेनी शुद्धि होवी जोइए, तथा वर्ष, मास, पक्ष अने दिवसनी शुद्धि पण अवश्य होवी जोइए.

अहीं कोइ शंका करे के—जो बीजा दोषोए नहीं जीती शकाय एवुं होवाथी गोधूलिक लग्न प्रधान छे तो पूर्वे कहेलां लग्नादिकनां फळोनुं अप्रधानपणुं थशे? उत्तर—खरी वात छे, केमके उल्लंघन न करी शकाय एवा कुळ अने देशना धर्मने अनुसरवाथी कोइ वार ते लग्नादिक फळोने अप्रधानपणानी प्राप्ति आवे तोपण ते अनिष्ट नथी–इष्टज छे. कह्युं छे के—

"न शास्त्रदृष्ट्या विदुषां कदाचिदुल्लंघनीयाः कुलदेशधर्माः।
देशे गतोऽप्येकविलोचनानां, निमील्य नेत्रं निवसेन्मनीषी ॥ १ ॥"

"विद्वानोए कोइ वखत पण शास्त्रनी दृष्टिने लीधे कुळ, देश अने धर्मनुं उल्लंघन करवुं नहीं, केमके डाह्यो माणस एक नेत्रवाळाना देशमां गयो होय तो तेणे त्यां पोतानुं एक नेत्र बंध करीनेज वसवुं जोइए."

आ रीते अमुक कुळ अने देशमां गोधूलिकनुंज प्रधानपणुं छे, परंतु लग्नादिकना फळनुं प्रधानपणुं नथी, तेथी कांइ पण दोष आवतो नथी. वळी अमुक कुळ अने देशना धर्म मात्र गोधूलिकनाज विषयवाळा छे एम नथी, परंतु ग्रहगोचरादिक विषयवाळा पण छे. जेमके—विवाहमां नागरलोको छठा आठमा विगेरेने गणता (अपेक्षा राखता) नथी, भार्गवना वंशजोमां भाद्रपद शुक्ल दशमने दिवसेज विवाह करवानी रीत छे, आ कुळधर्म छे. देशधर्मो आ प्रमाणे छे. जेमके—गौड देशना लोको गोचरवडे श्रेष्ठ एवा सूर्यनी अपेक्षा राखे छे अने गुरुनी अष्टक वर्गे करीने अपेक्षा करे छे. दक्षिणना लोको गुरुने गोचरवडे करीने श्रेष्ठ इच्छे छे अने सूर्यने अष्टक वर्गे करीने श्रेष्ठ इच्छे छे. लाट देशना लोको सूर्यने तथा गुरुने अष्टक वर्गे करीने तथा गोचरवडे

करीने श्रेष्ठ कह्या छे. मालव देशना लोकोने गोचर प्रमाणरूप नथी, परंतु अष्टक वर्गज प्रमाण छे. बीजा देशोमां गोचर तथा अष्टक वर्ग बन्ने प्रमाण छे.

हवे पूर्वे कहेला छाया लग्ननी जेवाज बळवाळा ध्रुव लग्नने कहे छे.—

स्युर्दीक्षास्थापनादीनि ध्रुवचक्रे तिरःस्थिते ।
ऊर्ध्वे खातध्वजोछ्रायप्रायाणि प्रायशः श्रिये ॥ ७५ ॥

अर्थ—ध्रुवचक्र तिरछुं रह्युं होय त्यारे दीक्षा, स्थापना विगेरे कार्यो शुभदायक छे, अने खात, ध्वजारोपण विगेरे उंचाइ जेवां कार्यो ध्रुवचक्र ऊर्ध्व रह्युं होय त्यारे प्राये करीने कल्याणने माटे छे.

स्थापना एटले प्रतिष्ठा. आदि शब्दथी बीजुं पण स्थिर कर्म जाणवुं. तिरः एटले तिरछुं. ऊर्ध्वे एटले उंचुं रहे छते. ध्रुवनी चोतरफ रहेलुं शृंखलक (चक्र) झाबुं भमतुं भमतुं एक रात्रि दिवसमां बे वार तिरछुं अने बे वार ऊर्ध्व आवे छे. तेथी करीने—

"तिर्यगूर्ध्वं स्थिते चक्रे तत्प्रान्तगततारके ।
समसूत्रे यदा स्यातां ध्रुवलग्नं भवेत्तदा ॥ १ ॥"

"ध्रुवचक्र तिरछुं अने ऊर्ध्व रहे छते ज्यारे तेना छेडा पर रहेला बे ताराउ सरखी लाइनमां आवे त्यारे ध्रुव लग्न थाय छे."

ते ध्रुव लग्नना समयनो अतिसूक्ष्म दृष्टिए करीने अथवा ध्रुवने फरवाना यंत्रवडे करीने निश्चय करवो, अने स्थूळ दृष्टिए तो पूर्वाचार्योए आ प्रमाणे निर्णय कर्यो छे.—

"उदए महाधणिछाण उड्ढं अणुराहकित्ति धुव तिरिउ त्ति"

"मघा अने धनिष्ठानो उदय होय त्यारे ध्रुव ऊर्ध्व होय छे, अने अनुराधा तथा कृत्तिकानो उदय होय त्यारे ध्रुव तिरछुं होय छे."

परंतु नक्षत्रनुं उदयप्रमाण बराबर स्पष्ट रीते दृष्टिगोचर थइ शकतुं नथी, तेथी मस्तक पर (माथे–आकाशना मध्यमां) रहेला नक्षत्रनी अपेक्षाए ध्रुव लग्ननुं स्वरूप कहेवाय छे, ते आ प्रमाणे—अश्लेषा अने श्रवण नक्षत्र मस्तक परथी उतरतां होय त्यारे ध्रुव तिरछुं होय छे, तथा भरणी अने विशाखा नक्षत्र मस्तक परथी उतरतां होय त्यारे ध्रुव ऊर्ध्व होय छे. तथा—

"स्यादूर्ध्वो मृगकर्के तु समस्तिर्यक् तुलाजयोः ।
यथा तथा तु शेषेषु लग्नेषु स्याध्ध्रुवं ध्रुवः ॥ १ ॥"

"मकर अने कर्क राशिनुं लग्न होय त्यारे ध्रुव ऊर्ध्व होय छे, तथा तुला अने मेष राशिनुं लग्न होय त्यारे ते तिरछुं होय छे, अने बीजां लग्नो होय त्यारे ते अवश्य गमे ते रीते–अनियमित होय छे."

"ते ध्रुव लग्ननो समय ते काळे जे लग्ननो उदय होय तेना नवांशक जेटलोज होय छे," एम केटलाक कहे छे. वळी बीजा कहे छे के-"ते नवांशकनो मात्र मध्यना त्रिभाग जेटलोज होय छे." आ ध्रुव लग्ननुं तिरछापणुं तथा ऊर्ध्वपणुं रात्रिने आश्रीनेज कहेवाय छे, परंतु दिवसने आश्रीने कहेवातुं नथी, कारण के दिवसे तो ते सूर्यनां किरणोथी लुप्त थाय छे.

मूळ श्लोकमां "प्रायाणि" एम प्राय शब्द लखेलो होवाथी यात्रादिक कार्य पण ग्रहण करवुं. ते माटे कह्युं छे के—

"पृष्ठतो वा रविं कृत्वा गच्छेद्दक्षिणगं तथा ।
उत्तानपादपुत्रस्य शेखरे चोर्ध्वसंस्थिते ॥ १ ॥"

"उत्तानपादना पुत्र (ध्रुव)नुं शेखर (मस्तक) ऊर्ध्व रहेलुं होय त्यारे सूर्यने पाछळ करीने अथवा दक्षिण (जमणो) करीने प्रयाण करवुं."

हर्षप्रकाशमां पण ध्रुव लग्न कह्युं छे ते आ प्रमाणे.—

"जइ पुण तुरियं कज्जं हविज्ज लग्गं न लब्भए सुद्धं ।
ता छायाधुवलग्गं गहिअव्वं सयलकज्जेसु ॥ १ ॥"

"जे कार्य जलदी करवा लायक होय अने शुद्ध लग्न न मळतुं होय तो समग्र कार्यमां छाया लग्न अने ध्रुव लग्न ग्रहण करवां."

हवे अहीं प्रसंगोपात्त राजादिकना अभिषेकनुं मुहूर्त कहे छे.—

अभिषिक्तो महीपालः श्रुतिज्येष्ठा लघुध्रुवैः ।
मृगानुराधापौष्णैश्च चिरं शास्ति वसुन्धराम् ॥ ७६ ॥

अर्थ—श्रवण, ज्येष्ठा, लघु (पुष्य, अभिजित्, हस्त, अश्विनी), ध्रुव (रोहिणी, त्रण उत्तरा), मृगशिर, अनुराधा अने रेवती नक्षत्रमां राजाने अभिषेक कर्यो होय तो ते चिर काळ सुधी पृथ्वीनुं राज्य करे छे. आ तेर नक्षत्रो अभिषेकनां छे.

सबलत्वे जन्मदशालग्नेशानां कुजार्कयोरपि च ।
राज्ञां शुभोऽभिषेकः सितगुरुशशिनां च वैपुल्ये ॥ ७७ ॥

अर्थ—जन्मेश, दशेश, लग्नेश, मंगळ अने सूर्य आटला ग्रहोनुं सबळपणुं होय, तथा शुक्र, गुरु अने चंद्रनुं विपुलपणुं होय त्यारे राजानो अभिषेक करवो शुभ छे.

जन्मवखते जे राशिमां चंद्र होय ते राशिनो ईश जन्मेश कहेवाय छे, अभिषेकने वखते जे ग्रहनी दशा होय ते दशेश कहेवाय छे, तथा जन्मवखते लग्ननो जे पति होय ते लग्नेश कहेवाय छे. विपुलपणुं एटले घणा दिवसथी उदय थयेलो होवाथी मोटां बिंबनुं होवापणुं तथा सारां-घणां किरणवाळापणुं.

भूत्यै स्वस्वत्रिकोणो १ च्च २ गृह ३ मित्रर्क्ष ४ गैर्ग्रहैः ।
अभिषेको न नीचारिक्षेत्रगास्तमितैः पुनः ॥ ७७ ॥

अर्थ—पोताना त्रिकोणमां, पोताना उच्च स्थानमां, पोताना स्थानमां अने पोताना मित्रना स्थानमां ग्रहो रहेला होय त्यारे अभिषेक करवो ए भूति–आबादीने माटे छे (शुभ छे), परंतु ग्रहो नीच के शत्रुना स्थानमां रहेला होय के अस्त पामेला होय तो ते शुभ नथी.

अहीं "स्वस्व" पोतपोतानुं" ए शब्द त्रिकोण विगेरे चारे शब्दमां जोडवो. आ ग्रहो आवी रीतना होय तोज अभिषेक करवो श्रेष्ठ छे. ते विषे कह्युं छे के—

"सुहृत्रिकोणस्वगृहोच्चसंस्थाः, श्रियं च कीर्तिं च दिशन्ति खेटाः ।
अस्तंगताः शत्रुभनीचगा वा, भयाय शोकाय भवन्ति राज्ञाम् ॥ १ ॥"

"मित्र, त्रिकोण, स्वगृह अने उच्च स्थानमां रहेला ग्रहो लक्ष्मीने तथा कीर्तिने आपे छे, अने अस्त पामेला होय के शत्रुना स्थानमां रह्या होय के नीच स्थानमां रह्या होय तो ते राजाने भयने माटे तथा शोकने माटे थाय छे."

मूळ श्लोकमां (त्रिकोण विगेरेमां रहेला) "ग्रहो होय" एम सामान्य रीते कह्युं छे तोपण विशेषे करीने गुरु, चंद्र अने शुक्र, तथा जन्मवार, दशानो वार, लग्नेशनो वार अने दिनवार ग्रहण करवा. ते माटे लल्ल कहे छे के—

"विशेषाज्जन्मलग्नेशदशेशदिनभर्तृषु ।
यस्मात्तस्मात्प्रयत्नेन सौस्थ्यमेषां प्रकल्पयेत् ॥ १ ॥"

"जे कारण माटे जन्मनो स्वामी, लग्ननो स्वामी, दशानो स्वामी अने दिननो स्वामी (अभिषेकने विषे) विशेष उपयोगी छे ते कारण माटे ते ग्रहोनुं सुस्थपणुं (सारां स्थानोमां रहेवापणुं) प्रयत्नवडे करवुं."

ताराबले शशिबले शुद्धौ तिथिवारधिष्ण्ययोगानाम् ।
त्रिषडायस्थैः पापैः सौम्यैस्त्र्यायत्रिकोणकेन्द्रगतैः ॥ ७९ ॥

अर्थ—तारानुं बळ अने चंद्रनुं बळ होय त्यारे तथा तिथि, वार, नक्षत्र अने योगनी शुद्धि होय त्यारे, त्रीजे, छठे अने अगीयारमे स्थाने पाप ग्रहो रह्या होय, अने सौम्य ग्रहो त्रीजे, अगीयारमे, त्रिकोणमां अने केन्द्रमां रह्या होय त्यारे राज्याभिषेक करवो शुभ छे.

तारा अने चंद्र ए बन्नेनुं बळ राज्याभिषेकमां अवश्य ग्रहण करवुं, तेथी करीने शुक्ल-

पक्ष तथा कृष्णपक्षनी अपेक्षाए बन्नेनुं बळ लेवुं एवो अर्थ करवो नहीं. दग्धा अने रिक्ता विगेरेने त्याग करवाथी तिथिनी शुद्धि कहेवाय छे, सौम्य वार लेवाथी वारनी शुद्धि थाय छे, क्रूर ग्रहे आक्रमण करेला नक्षत्र विगेरेनो त्याग करवाथी नक्षत्रनी शुद्धि जाणवी, तथा दुष्ट योग अने उपयोगने वर्जवाथी योगनी शुद्धि थाय छे. "त्र्याय"– "त्रीजे, छठे" अहीं उपलक्षणथी धन (बीजुं) स्थान पण सौम्य ग्रहोवडेज सहित होवुं जोइए. सामर्थ्यथी एम पण जणाय छे के–आठमुं अने बारमुं ए बे स्थान शून्य होय तोज ते सारां छे, कारण के ते बे स्थानोमां शुभ के अशुभ कोइ पण ग्रह रह्यो होय तो ते अनिष्ट आपनारज छे.

जन्मर्क्षोडुपचयभे स्थिरेऽथ शीर्षोदयेऽथवा भवने ।
सौम्यैर्विलोकितयुते न तु पापैर्नृपमभिषिञ्चेत् ॥ ७० ॥

अर्थ—जन्मनी राशिथी उपचयस्थानमां, अथवा स्थिर लग्नमां, अथवा शीर्षोदयी (माथेथी उदय पामनार) लग्नमां, अने ते लग्न सौम्य ग्रहोए जोयेल तथा युक्त होय, पण क्रूर ग्रहोए दृष्ट के युक्त न होय तेवा लग्नमां राजानो अभिषेक करवो शुभ छे.

जे पुरुषने अभिषेक करवानो होय तेनी जन्मनी राशिथी उपचयस्थानमां रहेलुं लग्न होय, अथवा स्थिर राशिनुं लग्न होय, अथवा शिर्षोदयी राशिवाळुं लग्न होय. "न तु पापैः" एटले के क्रूर ग्रहोए जोयल अथवा युक्त न होय.

यमार्कयोस्त्र्या ३ य ११ गयोर्गुरौ तु, सुखा ४ म्बर १० स्थे नृपतिः स्थिरश्रीः ।
यद्वा त्रिकोणोद–५दयगे १ सुरेज्ये, शुक्रे नभः १० स्थे क्षितिजे रिपु ६ स्थे ॥७१॥

अर्थ—शनि अने सूर्य त्रीजे के अगीयारमे स्थाने रह्या होय, अने गुरु चोथे के दशमे स्थाने रह्यो होय तो ते (राज्याभिषिक्त) राजानी लक्ष्मी स्थिर थाय छे, अथवा तो गुरु नवमा, पांचमा के पहेला स्थानमां रह्यो होय, शुक्र दशमा स्थानमां होय अने मंगळ छठे स्थाने होय तोपण ते राजा स्थिर लक्ष्मीवाळो थाय छे. अहीं यमनो अर्थ शनि छे.

अभिषिक्तो बलीयोभिर्ग्रहैः केन्द्रत्रिकोणगैः ।
क्रूरः पापैः शुभैः सौम्यो मिश्रैः साधारणो भवेत् ॥ ७२ ॥

अर्थ—केन्द्र अने त्रिकोणमां रहेला बळवान् क्रूर ग्रहोए अभिषेक करायेलो राजा क्रूर थाय छे, तेवाज शुभ ग्रहोए करीने सौम्य अने मिश्र ग्रहोए करीने साधारण थाय छे.

जो त्रिकोण अने केन्द्रमां रहेला बळवान् ग्रहो सर्वे क्रूर होय तो राजा क्रूर थाय छे, सर्वे शुभ ग्रहो होय तो राजा सौम्य थाय छे, अने जो मिश्र होय एटले के केटलाक ग्रहो क्रूर होय अने केटलाक सौम्य होय तो साधारण एटले अत्यंत क्रूर के सौम्य न थाय. वळी "विधुगुरुशुक्रैः सार्कैः" आ श्लोक जे उपनयनना अधिकारमां कह्यो छे ते अहीं पण जाणवो.

हवे अभिषेकमां मोटा दोषने कहे छे.—

चन्द्रे सौम्येऽपि वाऽन्यस्मिन् रिपु ६ रन्ध्र ८ स्थिते ग्रहैः ।
क्रूरैर्विलोकिते मृत्युरभिषिक्तस्य निश्चितः ॥ ८३ ॥

अर्थ—चंद्र अथवा बीजो कोइ पण सौम्य ग्रह छठे के आठमे स्थाने रह्यो होय अने तेना पर क्रूर ग्रहोनी पूर्ण दृष्टि पडती होय ते वखते अभिषेक करेला राजानुं अवश्य मरण थाय छे. अहीं "विलोकिते" एटले पुष्ट (पूर्ण) दृष्टिए जोयेलो एवो अर्थ छे.

अभिषेकनी वेळाए तनु (१) विगेरे स्थानोमां पाप ग्रहो रहेला होय तेनुं फळ कहे छे.—

रोगी तनु १ स्थैरधनो धनाऽन्त्यगैर्दुःखी च पापैर्नृपतिस्त्रिकोण ९–५ गैः ।
पदच्युतोऽस्ता ७ म्बु ४ गतैर्मृति ८ स्थितैरल्पायुराकाश १० गते स्त्वकर्मकृत् ८४

अर्थ—अभिषेक वखते पाप ग्रहो जो पहेला स्थानमां रह्या होय तो ते राजा रोगी रहे छे, बीजा अने बारमा स्थानमां रह्या होय तो निर्धन थाय छे, त्रिकोण (९–५) मां रह्या होय तो दुःखी थाय छे, सातमे के चोथे रह्या होय तो पदभ्रष्ट (राज्यभ्रष्ट) थाय छे, आठमे रह्या होय तो अल्प आयुष्यवाळो थाय छे, अने दशमा स्थानमां रह्या होय तो ते अकर्मकर थाय छे. अकर्मकर एटले अकिंचित्कर अर्थात् उद्यम रहित थाय छे.

इति वक्तव्यता येयं भूपालस्याभिषेचने ।
आचार्यस्याभिषेकेऽपि सा सर्वाप्यनुवर्तते ॥ ८५ ॥

अर्थ—आ प्रमाणे राजाना अभिषेकमां जे आ वक्तव्यता (व्यवस्था) कही छे ते सर्वे आचार्यना अभिषेकमां पण जाणवी.

श्लोकमां अपि शब्द होवाथी बीजा पण (उपाध्यायादिक) पदना स्थापनने विषे पण आ व्यवस्था जाणवी, तेथी करीने राज्याभिषेक अने सूरिपदादिकमां आ प्रमाणे कुंडळी सिद्ध थाय छे.—

	उत्तम	मध्यम
रवि	३-११	१-२-४-५-६-७-८-९-१०-१२
चंद्र	१-२-३-४-५-७-९-१०-११	६-८-१२
मंगळ	३-६-११	१-२-४-५-७-८-९-१०-१२
बुध	१-२-३-४-५-७-९-१०-११	६-८-१२
गुरु	१-२-३-४-५-७-९-१०-११	६-८-१२
शुक्र	१-२-३-४-५-७-९-१०-११	६-८-१२
शनि	३-११	१-२-४-५-६-७-८-९-१०-१२
राहु	३-६-११	१-२-४-५-७-८-९-१०-१२

दैवज्ञवल्लभमां विशेष ए छे जे.—

"राजयोगाः खयोगाश्च चन्द्रयोगास्तथायुषः ।
सर्वेऽप्यत्र विकल्प्याः स्युर्वास्तुलग्नगुणाश्च ये ॥ १ ॥"

"राजयोगो, खयोगो, चंद्रयोगो तथा आयुष्यना योगो अने वळी जे वास्तु लग्नना गुणो छे ते सर्वे अहीं विचारवा—ग्रहण करवा," एटले के पूर्वे कहेला राजयोगो, खयोगो एटले सूर्यने बीजा ग्रहो साथे जे संयोग थवो ते खयोगो, चंद्रने बीजा ग्रहो साथे जे संयोग थवो ते चंद्रयोगो कहेवाय छे, आयुष्यना योगो एटले पूर्वे जे अरिष्ट योगो कहेला छे तेमने नाश करनारा जे योगो छे तेउ आयुष्यने हितकारक होवाथी आयुष्यना योगो कहेवाय छे. आ सर्वेनुं स्वरूप जातकथी जाणवुं. अत्र एटले अभिषेकना लग्नमां विचारवा. वास्तु लग्नना गुणो पूर्वे कहेला छे ते जाणवा.

वळी सर्व ग्रहोना बळे करीने युक्त एवुं लग्न न मळे तो सर्वे कार्योमां आ प्रमाणे जाणवुं.—

"पञ्चभिः शस्यते लग्नं ग्रहैर्बलसमन्वितैः ।
चतुर्भिरपि चेत्केन्द्रे त्रिकोणे वा गुरुर्भृगुः ॥ १ ॥"

"बळे करीने युक्त एवा पांच ग्रहोए करीने लग्न वखाणवा लायक छे. अथवा जो केंद्रमां के त्रिकोणमां गुरु अने शुक्र होय तो बळे करीने युक्त एवा चार ग्रहोए करीने पण ते लग्न प्रशस्य छे."

अहीं "पांच ग्रहोए करीने" एम कह्युं छे तोपण आ प्रमाणे विशेष जाणवो.— गुरु, सूर्य अने चंद्र ए त्रणमांथी एकनुं पण बळ न होय अने बीजा पांच बळवान् होय तोपण ते लग्न आदर करातुं नथी, एटले प्रशस्य नथी एम रत्नमालाभाष्यमां कह्युं छे. वळी केटलाएक कहे छे के—

"त्रयः सौम्यग्रहा यत्र लग्ने स्युर्बलवत्तराः ।
बलवत्तदपि ज्ञेयं शेषैर्हीनबलैरपि ॥ १ ॥"

"जे लग्नमां त्रण सौम्य ग्रहो अत्यंत बळवान् होय ते लग्न पण बीजा ग्रहो हीन बळवाळा छतां पण बळवान् छे एम जाणवुं."

॥ इति एकादशं मिश्रद्वारम् ॥ ११

हवे समग्र ग्रंथना अर्थनुं समर्थन करे छे.—

इत्युक्तखेटबलशालिनि दोषमुक्ते,
लग्ने शुभैश्च शकुनैः शशिनः प्रवाहे ।
कार्याणि भूमिजलतत्त्वगतौ कृतानि,
निर्दम्भमाभ्युदयिकीं प्रथयन्ति लक्ष्मीम् ॥ ७६ ॥

अर्थ—आ प्रमाणे कहेला ग्रहोना बळे करीने शोभता अने दोषे करीने रहित एवा लग्नने विषे शुभ शकुन जोइने चंद्र नाडी वहेती होय त्यारे तेमां पण पृथ्वी तत्त्व के जळ तत्त्वनी गति होय त्यारे (तेवा समये) करेलां कार्यो दंभ रहित अभ्युदयनी लक्ष्मीने विस्तारे छे.

खेऽटन्ति—आकाशमां गति करे ते खेट कहेवाय छे, अहीं अट् धातुथकी अच् प्रत्यय थयो छे, अने "तत्पुरुषे कृति०" ए सूत्रथी सप्तमी विभक्तिनो अलुक् थवाथी खेट शब्द सिद्ध थयो छे. खेट एटले ग्रहो, तेमनुं बळ. आम कहेवाथी तिथि विगेरेनुं बळ पण जाणवुं. दोषमुक्ते एटले मोटा दोष रहित, कारण के सर्वथा निर्दोष लग्न घणा दिवसोए करीने पण मळी शकतुं नथी, तेथी थोडा दोषवाळुं अने घणा गुणवाळुं लग्न ग्रहण करीने कार्यो करवां, परंतु सर्वथा निर्दोष लग्न आवशे त्यारे कार्य करशुं एम धारीने घणो विलंब करवो नहीं, कारण के धन, यौवन अने आयुष्यनी स्थिरता छे नहीं. एवो अहीं अभिप्राय छे. कह्युं छे के—

"यस्मादशेषगुणसंपदहोभिरल्पैर्होराविदाऽपि गणकेन न लभ्यतेऽत्र ।
तस्मादनल्पगुणसंयुतमल्पदोषं, लग्नं नियोज्यमखिलेष्वपि मङ्गलेषु ॥ १ ॥"

"जेथी करीने समग्र गुणनी संपदावाळुं लग्न होराने जाणनार गणक (जोशी) पण थोडा दिवसमां मेळवी शकतो नथी तेथी करीने सर्व शुभ कार्यमां घणा गुणवाळुं तथा अल्प दोषवाळुं लग्न ग्रहण करवुं."

"स्वल्पो नानर्थकृद्दोषो लग्ने बहुगुणे भवेत् ।
तोयबिन्दुरिव क्षिप्तः समिद्धे कृष्णवर्त्मनि ॥ २ ॥"

"सळगता अग्निमां नाखेला जळना बिंदुनी जेम घणा गुणवाळा लग्नने विषे ओछो दोष अनर्थ करनार थतो नथी."

मूळ श्लोकमां शकुन जोवानुं कह्युं छे ते शकुन जांघिक–जासुद विगेरे छे. शकुननुं प्रधानपणुं व्यवहारप्रकाशमां आ प्रमाणे कह्युं छे.—

"नक्षत्रस्य मुहूर्त्तस्य तिथेश्च करणस्य च ।
चतुर्णामपि चैतेषां शकुनो दण्डनायकः ॥ १ ॥"

"नक्षत्र, मुहूर्त्त, तिथि अने करण, ए चारेनो दंडनायक शकुन छे."

अहीं शकुनना संबंधमां अंगनुं फरकवुं, मननी प्रसन्नता ए विगेरे निमित्त पण जाणवां. आ शुभ शकुनादिके करीने लग्ननी शुद्धिनो निर्णय करी तेवा लग्नने ग्रहण करवाथी कार्य करनारनो जय थाय छे. लल्ल पण कहे छे के—

"अपि सर्वगुणोपेतं न ग्राह्यं शकुनं विना ।
लग्नं यस्मान्निमित्तानां शकुनो दण्डनायकः ॥ १ ॥"

"लग्न सर्व गुणोए करीने युक्त होय तोपण शकुन विना ते ग्रहण करवुं नहीं, कारण के सर्व निमित्तनो दंडनायक शकुन छे."

मूळ श्लोकमां "शशिनः प्रवाहे–" "चंद्र नाडी वहेती होय त्यारे" एम कह्युं छे. ते विषे अध्यात्म शास्त्रमां डाबी अने जमणी नासिका अनुक्रमे चंद्र अने सूर्य नामनी छे, तेथी करीने—

"सार्धं घटीद्वयं नाडिरेकैकार्कोदयाद्वहेत् ।
अरघट्टघटीभ्रान्तिन्यायान्नाड्योः पुनः पुनः ॥ १ ॥
शतानि तत्र जायन्ते निःश्वासोच्छ्वासयोर्नव ।
खखषट्कुकरैः २१६०० सङ्ख्याऽहोरात्रे सकले पुनः ॥ २ ॥
षट्त्रिंशद्गुरुवर्णानां या वेला भणने भवेत् ।
सा वेला मरुतो नाड्या नाड्यां सञ्चरतो लगेत् ॥ ३ ॥"

"जेम अरघट्ट (रेंट)नी घडीओ अनुक्रमे एक पछी एक फर्या करे छे तेम आ चंद्र अने सूर्य नाडीमांनी एक एक (दरेक) नाडी सूर्योदयथी आरंभीने अढी अढी घडी वहेती रहे छे. (एटले सूर्योदयने आरंभीने अढी घडी सुधी चंद्र नाडी वहे छे, पछीनी अढी घडी सुधी सूर्य नाडी वहे छे, पछीनी अढी घडी चंद्र नाडी वहे छे विगेरे.) ते दरेक नाडीमां नवसो उच्छ्वास निःश्वास थाय छे, तेथी करीने एक रात्रि दिवसमां थइने कुल २१६०० उच्छ्वास निःश्वास थाय छे. छत्रीश गुरु अक्षरो बोलतां जेटलो वखत लागे छे तेटलो वखत एक नाडीमांथी बीजी नाडीमां संचार करता वायुने लागे छे.

(एटले के एक नाडीमांथी बीजी नाडीमां जतां वायुने तेटली वार लागे छे, अर्थात् तेटलो वखत बन्ने नासिकामां समान वायु रहे छे.)"

तेमां वाम (डाबी) नासिका पेसता वायुए करीने पूर्ण थाय त्यारे सर्वे शुभ कार्यनो आरंभ करवो. कह्युं छे के—

"लाभे दानेऽध्ययने गुरुदेवाभ्यर्चने विषविनाशे ।
पुरमन्दिरप्रवेशे गमागमादौ शुभा वामा ॥ १ ॥"

"लाभमां, दानमां, भणवामां, गुरु अने देवनी पूजामां, विष उतारवामां, नगर अने घरमां प्रवेश करती वखते तथा जवा आववामां वाम नाडी शुभ छे." तथा—

"पूजाद्रव्यार्जनोद्वाहे दुर्गाद्रिसरिदाक्रमे ।
गमागमे जीविते च गृहक्षेत्रादिसंग्रहे ॥ १ ॥
क्रये विक्रयणे दृष्टौ सेवायां विद्विषो जये ।
विद्यापट्टाभिषेकादौ शुभेऽर्थे च शुभः शशी ॥ २ ॥"

"पूजामां, द्रव्य उपार्जन करवामां, विवाहमां, तथा किल्लो, पर्वत अने नदीने उल्लंघन करवामां, जवा आववामां, जीवितमां, घर क्षेत्र विगेरे लेवामां, क्रय विक्रयमां, दृष्टिमां, सेवामां (नोकरी रहेवामां), शत्रुनो जय करवामां, विद्याना आरंभमां अने राज्याभिषेकमां ए विगेरे शुभ कार्यमां चंद्र एटले चंद्र नाडी (वाम नाडी) शुभ छे."

मूळ श्लोकमां "भूमिजलतत्त्वगतौ—" "पृथ्वी तत्त्व अने जळ तत्त्वनी गति होय त्यारे" एम कह्युं छे. ते विषे कह्युं छे के—

"वायोर्वह्नेरपां पृथ्व्या व्योम्नस्तत्त्वं वहेत्क्रमात् ।
वहन्त्योरुभयोर्नाड्योर्ज्ञातव्योऽयं क्रमः सदा ॥ १ ॥"

"वहन थइ (चालती) बन्ने नाडीमां वायु, अग्नि, जळ, पृथ्वी अने आकाशनुं तत्त्व अनुक्रमे वहे छे—चाले छे. आवो क्रम निरंतर जाणवो."

ए पांचे तत्त्वोनो प्रवाह (गति—वहेवुं ते) आ प्रमाणे छे.—

"ऊर्ध्वं वह्निरधस्तोयं तिरश्चीनः समीरणः ।
पृथ्वी मध्यपुटे व्योम सर्वगं वहते पुनः ॥ १ ॥"

"अग्नि तत्त्व उंचे वहे छे, जळ तत्त्व नीचे वहे छे, वायु तत्त्व तिरछुं वहे छे, पृथ्वी तत्त्व मध्य पुटमां वहे छे अने आकाश तत्त्व सर्वव्यापक थइने वहे छे."

तेनुं प्रमाण आ रीते छे.—

"पृथ्व्याः पलानि पञ्चाश ५० च्चत्वारिंश ४० त्तथाम्भसः ।
अग्नेस्त्रिंश ३० त्तथा वायोर्विंशति २० र्नभसो दश १० ॥ १ ॥"

"पृथ्वी तत्त्वनुं प्रमाण पळ ५० छे, जळ तत्त्वनुं ४० छे, अग्निनुं ३०, वायुनुं २० अने आकाश तत्त्वनुं प्रमाण १० पळनुं छे."

आ रीते एक एक नाडीनुं प्रमाण १५० पळो थाय छे. आ प्रमाणे वाम नाडी वहेती होय त्यारे पण ज्यारे पृथ्वी तत्त्व के जळ तत्त्व होय त्यारे शुभ कार्य करवुं, परंतु अग्नि, वायु अने आकाश तत्त्वमां करवुं नहीं. कह्युं छे के—

"तत्त्वाभ्यां भूजलाभ्यां स्याच्छान्ते कार्ये फलोन्नतिः ।
दीप्तास्थिरादिके कृत्ये तेजोवाय्वम्बरैः शुभम् ॥ १ ॥
पृथ्व्यप्तेजोमरुद्व्योमतत्त्वानां चिह्नमुच्यते ।
आद्ये स्थैर्यं स्वचित्तस्य शैत्यकामोद्भवौ परे ॥ २ ॥
तृतीये कोपसंतापौ तुर्ये चञ्चलता पुनः ।
पञ्चमे शून्यतैव स्यादथवा धर्मवासना ॥ ३ ॥"

"पृथ्वी अने जळ तत्त्ववडे शांत कार्य कर्युं होय तो फळनी उन्नति थाय छे. (शांत कार्यमां आ बे तत्त्व शुभ छे.) दीप्त, अस्थिर विगेरे कार्य अग्नि, वायु अने आकाश तत्त्ववडे करवुं शुभ छे. हवे पृथ्वी, जळ, तेज, वायु अने आकाश ए पांच तत्त्वोनुं चिह्न कहे छे—पहेला पृथ्वी तत्त्वमां कार्य करवाथी पोताना चित्तनी स्थिरता थाय छे, बीजा जळ तत्त्वमां शीतळता अने कामदेवनो उदय थाय छे, त्रीजा तेज तत्त्वमां क्रोध अने संताप थाय छे, चोथा वायु तत्त्वमां मननी चंचळता थाय छे तथा पांचमा आकाश तत्त्वमां मननी शून्यताज थाय छे अथवा तो धर्मनी वासना थाय छे."

तथा—

"श्रुत्योरङ्गुष्ठकौ मध्याङ्गुल्यौ नासापुटद्वये ।
सृक्वणोः प्रान्त्यकोपान्त्याङ्गुली शेषे दृगन्तयोः ॥ १ ॥
न्यस्यान्तस्तु पृथिव्यादितत्त्वज्ञानं भवेत् क्रमात् ।
पीत १ श्वेता २ रुण ३ श्यामै ४ र्बिन्दुभिर्निरुपाधि खम् ॥ २ ॥
पीतः कार्यस्य संसिद्धिं बिन्दुः श्वेतः सुखं पुनः ।
भयं सन्ध्यारुणो ब्रूते हानिं भृङ्गसमद्युतिः ॥ ३ ॥
जीवितव्ये जये लाभे सस्योत्पत्तौ च कर्षणे ।
पुत्रार्थे युद्धप्रश्ने च गमनागमने तथा ॥ ४ ॥
पृथ्व्यप्तत्त्वे शुभे स्यातां वह्निवातौ च नो शुभौ ।
अर्थसिद्धिः स्थिरोर्व्यां तु शीघ्रमम्भसि निर्दिशेत् ॥ ५ ॥"

"बे कानमां बे अंगुठा, बे नासापुटमां बे मध्य (वचली) आंगळी, बे ओष्ठ उपर

(इरूपचीमां) टचली तथा तेनी पासेनी ए बबे आंगळीउं तथा नेत्रना प्रांत जागमां शेष (अंगुठा पासेनी) बे आंगळीउं राखीने अंतःकरणमां ध्यान करवाथी पृथ्व्यादिक तत्त्वोनुं ज्ञान अनुक्रमे आ प्रमाणे थाय छे.—पीत—पीळो—वर्ण जासे तो पृथ्वी तत्त्व, श्वेत जासे तो जळ तत्त्व, अरुण—रातोजासे तो तेज तत्त्व, श्याम जासे तो वायु तत्त्व अने बिंदु एटले कांइ पण न जासे तो उपाधि रहित आकाश तत्त्व छे एम जाणवुं. पीत[1] वर्ण कार्यनी सिद्धिने कहे छे, बिंदु तथा श्वेत वर्ण सुखने कहे छे, संध्या जेवो रातो वर्ण जयने कहे छे, जमरा सरखी कांतिवाळो श्याम वर्ण हानिने कहे छे. जीवितमां, जयमां, लाजमां, धान्यनी उत्पत्तिमां, खेतीमां, पुत्रने अर्थे, युद्धना प्रश्नमां तथा जवा आववामां पृथ्वी अने जळ तत्त्व शुज छे, अग्नि अने वायु तत्त्व शुज नथी. पृथ्वी तत्त्वमां कार्य करवाथी अर्थनी सिद्धि स्थिर थाय छे, अने जळ तत्त्वमां कार्य जलदी सिद्ध थाय छे, एम जाणवुं.

वळी—

"षोडशाङ्गुलिका पृथ्वी १ जलं तु द्वादशाङ्गुलम् २ ।
तेजश्चाष्टाङ्गुलं ३ वायुश्चतुरङ्गुलको मतः ४ ॥ १ ॥
नैकमप्यङ्गुलं व्योम ५ वहतीति विनिर्णयः ।"

" पृथ्वी तत्त्व सोळ आंगळ वहे छे १, जळ तत्त्व बार आंगळ वहे छे २, तेज तत्त्व आठ आंगळ वहे छे ३, वायु तत्त्व चार आंगळ वहे छे ४ अने आकाश तत्त्व एक आंगळ पण वहेतुं नथी. ए प्रमाणे निर्णय करेलो छे." एटले के ज्यारे नासिकानो वायु नासिकानी बहार वहेतो छतो सोळ आंगळ सुधी आकाशने व्यापे छे त्यारे पृथ्वी तत्त्व छे एम सर्वत्र जाणवुं. अथवा तो आ वाक्यनी बीजी रीते पण व्याख्या थइ शके छे, ते आ प्रमाणे—दोष रहित लग्नने विषे पृथ्वी अने जळ तत्त्वनी गति होय त्यारे एवो संबंध करवो, एटले के शुद्ध लग्न होय तोपण ज्यारे पृथ्वी के जळ तत्त्व होय त्यारे शुज कार्य करवुं, परंतु अग्नि, वायु के आकाश तत्त्वमां करवुं नहीं.

कह्युं छे के—

" पृथ्वी राज्यं १ जलं वित्तं २ वह्निर्हानिं ३ समीरणः ।
उद्वेगं ४ गगनं दत्ते पञ्चतां ५ सर्वलग्नतः ॥ १ ॥"

"सर्व कार्यना लग्नने विषे पृथ्वी तत्त्व लीधुं होय तो ते राज्यने आपे छे १, जळ तत्त्व धनने आपे छे २, अग्नि तत्त्व हानि करे छे ३, वायु तत्त्व उद्वेग उपजावे छे ४ अने आकाश तत्त्व मरण आपे छे ५.

आ तत्त्वोनी उत्पत्तिनो प्रकार आ प्रमाणे छे.—

---

१ पीत वर्णे पृथ्वी तत्त्व छे, तेमां कार्य करवाथी ते कार्य सिद्ध थाय छे एम सर्वत्र जाणवुं.

"त्रिंशांशं पञ्चधा हन्याद्दशा १० ष्ट ८ षड् ६ युगा ४ श्वि २ भिः ।
भू १ जला २ ग्न्य ३ निल ४ व्योम्नां ५ समर्क्षे जायते मितिः ॥ १ ॥
द्व्य २ ब्ध्य ४ ङ्ग ६ वसु ८ दशभि १० स्तत्त्रिंशांशकाहतिः ।
खा १ निला २ ग्नि ३ जले ४ लाना ५ मोजराशौ मितिः स्मृता ॥ २ ॥"

"सम राशिमां त्रिंशांशने पांच प्रकारे स्थापीने ते दरेकने अनुक्रमे १०–८–६–४–२ वडे गुणवाथी अनुक्रमे पृथ्वी, जळ, अग्नि, वायु अने आकाश तत्त्वनुं प्रमाण थाय छे. तेज रीते विषम राशिमां त्रिंशांशने २–४–६–८–१० वडे गुणवाथी अनुक्रमे आकाश, वायु, अग्नि, जळ अने पृथ्वी तत्त्वनुं प्रमाण थाय एम कह्युं छे.

आ बे श्लोकनो अर्थ आ प्रकारे छे.—लग्नना पळोनो जे त्रीशमो भाग ते त्रिंशांश कहेवाय छे. जेमके मेष लग्नना पळो २२५ छे, तेनो त्रिंशांश पळ ७ अक्षर ३० आवे छे. आ त्रिंशांशने पांच वार स्थापन करी विषम राशि होवाथी तेने २–४–६–८–१० वडे गुणवाथी अनुक्रमे आकाश विगेरे तत्त्वोनुं मान आवे छे अने सम राशि होय तो १०–८–६–४–२ वडे गुणवाथी अनुक्रमे पृथ्वी विगेरे तत्त्वोनुं मान आवे छे. अथवा तो जे लग्नना जेटला पळो होय ते पळोने प्रथम १५ वडे भाग देवो. भागमां जे आवे तेने विषम राशि होय तो अनुक्रमे १–२–३–४–५ वडे गुणवाथी आकाश विगेरे तत्त्वोनुं मान आवे छे, अने सम राशि होय तो ५–४–३–२–१ वडे गुणवाथी अनुक्रमे पृथ्वी विगेरे तत्त्वोनुं मान आवे छे. एम करवाथी जे थाय छे ते नीचे स्थापनावडे स्पष्ट करी बतावे छे.—

मेषमान पळ २२५	वृषमान पळ २५६
त्रिंशांश पळ ७ अक्षर ३०	त्रिंशांश पळ ८ अक्षर ३२
आकाश तत्त्व पळ १५	पृथ्वी तत्त्व घडी १ पळ २५ अक्षर २०
वायु तत्त्व पळ ३०	जळ तत्त्व घडी १–८–१६
अग्नि तत्त्व पळ ४५	तेज तत्त्व पळ ५१–१२
जळ तत्त्व घडी १	वायु तत्त्व पळ ३४–८
पृथ्वी तत्त्व घडी १ पळ १५	आकाश तत्त्व पळ १७–४

मिथुनमान पळ ३०५	कर्कमान पळ ३४१
त्रिंशांश पळ १० अक्षर १०	त्रिंशांश पळ ११ अक्षर २२
आकाश पळ २०–२०	पृथ्वी घडी १–५३–४०
वायु पळ ४०–४०	जळ घडी १–३०–५६
तेज घडी १–१	तेज घडी १–८–१२
जळ घडी १–२१–२०	वायु पळ ४५–२८
पृथ्वी घडी १–४१–४०	आकाश पळ २२–४४

સિંહમાન પળ ૩૪૨
ત્રિંશાંશ પળ ૧૧ અક્ષર ૨૪
આકાશ પળ ૨૨–૪૮
વાયુ પળ ૪૫–૩૬
તેજ ઘડી ૧–૮–૨૪
જળ ઘડી ૧–૩૧–૧૨
પૃથ્વી ઘડી ૧–૫૪

કન્યામાન પળ ૩૩૧
ત્રિંશાંશ પળ ૧૧–૨
પૃથ્વી ઘડી ૧–૫૦–૨૦
જળ ઘડી ૧–૨૮–૧૬
તેજ ઘડી ૧–૬–૧૨
વાયુ પળ ૪૪–૮
આકાશ પળ ૨૨–૪

તુલામાન પળ ૩૩૧
ત્રિંશાંશ પળ ૧૧–૨
આકાશ પળ ૨૨–૪
વાયુ પળ ૪૪–૮
તેજ ઘડી ૧–૬–૧૨
જળ ઘડી ૧–૨૮–૧૬
પૃથ્વી ઘડી ૧–૫૦–૨૦

વૃશ્ચિકમાન પળ ૩૪૨
ત્રિંશાંશ પળ ૧૧–૨૪
પૃથ્વી ઘડી ૧–૫૪
જળ ઘડી ૧–૩૧–૧૨
તેજ ઘડી ૧–૮–૨૪
વાયુ પળ ૪૫–૩૬
આકાશ પળ ૨૨–૪૮

ધનમાન પળ ૩૪૧
ત્રિંશાંશ પળ ૧૧–૨૨
આકાશ પળ ૨૨–૪૪
વાયુ પળ ૪૫–૨૮
તેજ ઘડી ૧–૮–૧૨
જળ ઘડી ૧–૩૦–૫૬
પૃથ્વી ઘડી ૧–૫૩–૪૦

મકરમાન પળ ૩૦૫
ત્રિંશાંશ પળ ૧૦–૧૦
પૃથ્વી ઘડી ૧–૪૧–૪૦
જળ ઘડી ૧–૨૧–૨૦
તેજ ઘડી ૧–૧
વાયુ પળ ૪૦–૪૦
આકાશ પળ ૨૦–૨૦

કુંભમાન પળ ૨૫૬
ત્રિંશાંશ પળ ૮–૩૨
આકાશ પળ ૧૭–૪
વાયુ પળ ૩૪–૮
તેજ પળ ૫૧–૧૨
જળ ઘડી ૧–૮–૧૬
પૃથ્વી ઘડી ૧–૨૫–૨૦

મીનમાન પળ ૨૨૫
ત્રિંશાંશ પળ ૭–૩૦
પૃથ્વી ઘડી ૧–૧૫
જળ ઘડી ૧
તેજ પળ ૪૫
વાયુ પળ ૩૦
આકાશ પળ ૧૫

આ રીતે દરેક લગ્નમાં પાંચ પાંચ તત્ત્વો અનુક્રમે તથા ઉત્ક્રમે હોય છે. વિશેષ એ છે જે—પૃથ્વી અને જળ તત્ત્વના પળો પણ જો છ વર્ગવડે શુદ્ધ કે પાંચ વર્ગવડે શુદ્ધ હોય તો તે અત્યંત શુભ છે. તે આ પ્રમાણે—મેષ લગ્નમાં સાતમા તુલા અંશના પહેલા ૧૮ પળોમાં લગ્નની અશુદ્ધિ હોવાથી પાંચ વર્ગની શુદ્ધિ છે અને પૃથ્વી તત્ત્વ છે, તથા મેષ લગ્નમાં નવમા ધન અંશના છેલ્લા ૧૮ પળોમાં પાંચ વર્ગની શુદ્ધિ અને પૃથ્વી તત્ત્વ છે. ૧. વૃષ

लग्नमां त्रीजा मीन अंशना पहेला ७ पळोमां छ वर्गनी शुद्धि अने पृथ्वी तत्त्व छे, तथा वृष लग्नमां पांचमा वृष अंशना पहेला १४ पळोमां छ वर्गनी शुद्धि अने जळ तत्त्व छे. २. मिथुन लग्नमां छठा मीन अंशना पहेला ८ पळोमां छ वर्गनी शुद्धि अने जळ तत्त्व छे, अने पांच वर्गनी शुद्धि तो द्वादशांशनी अशुद्धि होवाथी आखा नवांशकमां छे. ३. कर्क लग्नमां पहेला कर्क अंशना पहेला २८ पळोमां छ वर्गनी शुद्धि अने पृथ्वी तत्त्व छे, तथा कर्क लग्नमां त्रीजा संपूर्ण कन्या अंशमां छ वर्गनी शुद्धि अने पृथ्वी तत्त्व छे. ४. सिंह लग्नमां छठा कन्या अंशमां दश पळ पछी २८ पळोमां लग्ननी अशुद्धि होवाथी पांच वर्गनी शुद्धि अने जळ तत्त्व छे. ५. कन्या लग्नमां त्रीजा मीन अंशमां नव पळ पछीनी २७ पळोमां छ वर्गनी शुद्धि अने पृथ्वी तत्त्व छे. ६. तुला लग्नमां आठमा वृष अंशमां पहेला १८ पळोमां छ वर्गनी शुद्धि अने पृथ्वी तत्त्व छे, तथा तुला लग्नमां नवमा मिथुन अंशमां छेल्ला २७ पळोमां छ वर्गनी शुद्धि अने पृथ्वी तत्त्व छे. ७. वृश्चिक लग्नमां चोथा तुला अंशमां पहेला २८ पळोमां लग्ननी अशुद्धि होवाथी पांच वर्गनी शुद्धि अने जळ तत्त्व छे. ८. धन लग्नमां छठा संपूर्ण कन्या अंशमां द्रेष्काणनी अशुद्धि होवाथी पांच वर्गनी शुद्धि अने जळ तत्त्व छे, तथा धन लग्नमां सातमा तुला अंशमां छेल्ला ए पळोमां द्वादशांशनी अशुद्धि होवाथी पांच वर्गनी शुद्धि अने पृथ्वी तत्त्व छे, तथा धन लग्नमां नवमा धन अंशमां पहेला ए पळोमां द्वादशांशनी अशुद्धि होवाथी पांच वर्गनी शुद्धि अने पृथ्वी तत्त्व छे. ए. मकर लग्नमां पांचमा वृष अंशमां पहेला १६ पळोमां लग्ननी अशुद्धि होवाथी पांच वर्गनी शुद्धि अने जळ तत्त्व छे. १०. कुंभ लग्नमां छठा वृष अंशमां छेल्ला २० पळोमां लग्ननी अशुद्धि होवाथी पांच वर्गनी शुद्धि अने जळ तत्त्व छे, तथा कुंभ लग्नमां आठमा वृष अंशनी छेल्ला १४ पळो अने नवमा मिथुन अंशना पहेला ७ पळो कुल २१ पळोमां लग्ननी अशुद्धि होवाथी पांच वर्गनी शुद्धि अने पृथ्वी तत्त्व छे. ११. मीन लग्नमां पहेला कर्क अंशमां पहेला १८ पळोमां छ वर्गनी शुद्धि अने पृथ्वी तत्त्व छे, तथा मीन लग्नमां त्रीजा २५ पळवाळा संपूर्ण कन्या अंशमां छ वर्गनी शुद्धि अने पृथ्वी तत्त्व छे. १२.

मूळ श्लोकमां "कृतानि"–"करेलां कार्यो" एम लख्युं छे. ते विषे वृद्धो कहे छे के– दीक्षा, प्रतिष्ठा, तीर्थयात्रा, पदवी आरोपण विगेरे कार्योने मध्ये जे कोइ कार्यमां जे नक्षत्र, जे वार अने जे तिथिनो अधिकार कर्यो होय ते सर्व सारी रीते शुद्ध जोइने रवि योग अने सिद्धियोगादिक सहित प्रथम दिनशुद्धि अने पछी लग्नशुद्धि अने त्यारपछी नवांश-शुद्धि जोवी. सर्वथा प्रकारे शुद्ध लग्न न मळी शके अने कार्य अवश्य करवानुं होय तो शुभ दिनशुद्धिमां, छाया लग्नमां, ध्रुव लग्नमां, विजय मुहूर्त्तमां के शुभ चोघडीयामां कार्य करवुं ए समग्र ग्रंथनुं रहस्य छे.

मूळ श्लोकमां "प्रथयन्ति" लख्युं छे, एटले के आ प्रमाणे करेलां कार्यो सर्व प्रकारना उदयने विस्तारे छे.

इति श्रीमति आरंभसिद्धिवार्तिके विलग्न १ मिश्र २ द्वारपरीक्षात्मकः
पञ्चमो विमर्शः संपूर्णः ॥ ५ ॥

आ रीते श्री आरंभसिद्धिना वार्तिक—टीकामां विलग्न १ अने मिश्र २ द्वारनी परीक्षावाळो पांचमो विमर्श संपूर्ण थयो.

"श्रीसूरीश्वरसोमसुन्दरगुरोर्निःशेषशिष्याग्रणी-
गच्छेन्द्रः प्रभुरत्नशेखरगुरुर्देदीप्यते सांप्रतम् ।
तच्छिष्याश्रवहेमहंसरचितस्यारंभसिद्धेः सुधी-
श्रृङ्गाराभिधवार्तिकस्य बुधभाः ५ सङ्ख्यो विमर्शोऽभवत् ॥ १ ॥"

"हालमां सूरीश्वर श्री सोमसुंदर गुरुना सर्व शिष्योमां मुख्य अने गच्छना स्वामी प्रभु—पूज्यरत्नशेखर गुरु अत्यंत देदीप्यमान वर्ते छे. तेमना आज्ञाधीन शिष्य श्री हेमहंसे रचेला आ आरंभसिद्धिना सुधीश्रृंगार नामना वार्तिकनो पांचमो विमर्श संपूर्ण थयो.

"विमर्शैः पञ्चभिः प्रेष्ठविषयैरिव संवृतम् ।
न कस्याह्लाददायीदं सुधीश्रृङ्गारवार्तिकम् ॥ २ ॥"

"उत्तम पांच विषयोनी जेम पांच विमर्शोए करीने संवरेलुं आ सुधीश्रृंगार नामनुं वार्तिक कोने आह्लाद आपनार न होय ? अर्थात् सर्वने हर्ष उत्पन्न करनारुं छे."

"बहुज्योतिःशास्त्रात्मकमणिसुवर्णापणगणात्,
मया सारं सारं द्युतिमयमुपादाय किमपि ।
सुधीश्रृङ्गारोऽयं व्यरचि रुचिरः सैष सुधियां,
करे कण्ठे कर्णे हृदि च सुषमां पल्लवयतु ॥ ३ ॥"

"घणां ज्योतिःशास्त्ररूप मणि अने सुवर्णनी दुकानोना समूहथकी कांइक कांतिमय सार सार वस्तु लइने आ मनोहर सुधीश्रृंगार (विद्वानोनो अलंकार) रच्यो छे, तेथी ते आ विद्वानोना हाथमां, कंठमां, कानमां अने हृदयमां सुख उत्पन्न करो."

॥ अथ प्रशस्तिः ॥

"श्रीमच्चन्द्रकुले पुराऽजनि जगच्चन्द्रो गुरुर्यस्तपा-
चार्यख्यातिमवाप तीव्रतपसा तस्यान्वयेऽजायत ।
प्रौढः श्रीवरदेवसुन्दरगुरुस्तत्पट्टपूर्वागिरेः,
श्रृङ्गे श्रीप्रभुसोमसुन्दरगुरुर्भानुर्नवीनोऽभवत् ॥ ४ ॥"

"पहेलां श्रीमान् चंद्र कुळने विषे श्री जगच्चंद्र नामना गुरु (आचार्य) उत्पन्न थया हता के जेओ तीव्र तपवडे तपाचार्यनी ख्याति पाम्या हता. तेमना वंशमां मोटा प्रभाववाळा श्री वरदेवसुंदर नामना गुरु (आचार्य) थया, अने तेनी पाटरूपी उदयाचळ पर्वतना शिखर उपर श्री सोमसुंदर नामना गुरु नवीन सूर्यरूप थया," कारण के—

"भानोर्भानुशतानि षोडश लसन्त्येकत्र मास्याश्विने,
यच्छिष्यास्तु ततोऽधिका अपि महीमुद्द्योतयन्ते सदा ।
तस्याहं चरणावुपासिषि चिरं श्रीमत्तपागच्छप-
क्षोणीविश्रुतसोमसुन्दरगुरोश्चारित्रिचूडामणेः ॥ ५ ॥"

"सूर्यने मात्र एक आश्विन मासमांज सोळसो किरणो विलास पामे छे, परंतु जेमना तेथी पण वधारे शिष्यो निरंतर पृथ्वीने उद्योत करे छे ते साधुओमां चूडामणि समान, श्री तपा गच्छना नायक अने पृथ्वी पर प्रख्यात थयेला श्री सोमसुंदर गुरुना बे चरणोनी में चिर काळ सेवा करी छे."

"मारिर्येन निवारिताऽसुरकृता संसूत्र्य शान्तिस्तवं,
सूरिः श्रीमुनिसुन्दराभिधगुरुर्दीक्षागुरुः सैष मे ।
यस्य श्यामसरस्वतीतिबिरुदं विख्यातमुर्वीतले,
गुर्वीं श्रीजयचन्द्रसूरिगुरुरप्याधात्प्रसत्तिं स मे ॥ ६ ॥"

"जेमणे असुरे उत्पन्न करेली मरकी शांतिस्तव रचीने निवारी, तेओ आ श्री मुनिसुंदर सूरि नामना गुरु मारा दीक्षागुरु छे, तथा जेमनुं श्याम–काळी सरस्वती नामनुं बिरुद पृथ्वी पर प्रसिद्ध छे ते श्री जयचंद्र सूरि नामना गुरुए पण मारा पर मोटी प्रसन्नता धारण करी छे."

"साम्प्रतं तु जयन्ति श्री-रत्नशेखरसूरयः ।
नानाग्रन्थकृतस्तेऽपि, पूर्वाचार्यानुकारिणः ॥ ७ ॥"

"हमणां तो पूर्वना आचार्योनी सदृश तथा विविध ग्रंथोने रचनारा तेओ प्रसिद्ध श्री रत्नशेखर नामना सूरि जयवंता वर्ते छे."

"एतानाचार्यहर्यक्षान्, प्रत्यक्षानिव गौतमान् ।
वीतमायं स्तुवे स्फीत–श्रीतपागच्छनायकान् ॥ ८ ॥"

"जाणे प्रत्यक्ष गौतमस्वामीज होय एवा अने आचार्योने मध्ये सिंह समान आ वृद्धि पामेला श्री तपा गच्छना नायकोनी हुं निष्कपटपणे स्तुति करुं छुं."

वळी.—

"एकोऽप्यनेकशिष्याणां, यश्चित्ताब्जान्यबोधयत् ।
तं श्रीचारित्ररत्नं भो ! भजोरत्नसमं स्तुमः ॥ ९ ॥"

"जेणे एकलाएज अनेक शिष्योनां चित्तरूपी कमळो विकसित कर्यां छे ते सूर्य समान श्री चारित्ररत्नने अमे स्तवीए छीए."

"चिन्मयानां मयाऽमीषामृषीणां सुप्रसादतः ।
हेमहंसाभिधानेन वाचनाचार्यतायुजा ॥ १० ॥
श्रीमद्विक्रमवत्सरे मनुतिथौ १५१४ शुक्लद्वितीयातिथौ,
नक्षत्रे गुरुदैवते गुरुदिने मासे शुचौ सुन्दरे ।
आशापल्लिपुरे पुरः प्रतिनिधेः श्रीमद्युगादिप्रभो-
र्ग्रन्थः सैष समर्थितः प्रथयतादाद्यं पुमर्थं सताम् ॥ ११ ॥"

"ज्ञानवाळा आ ऋषिओ (मुनिओ)नी अत्यंत कृपाथी हेमहंस नामना में वाचनाचार्ये श्रीमद्विक्रम संवत् १५१४ ना सुंदर एवा अषाढ मासमां शुक्ल पक्षनी बीज ने गुरुवारे पुष्य नक्षत्रमां आशापल्लि नामना नगरमां श्रीयुगादि प्रभुनी प्रतिमानी पासे आ ग्रंथ रच्यो छे, ते सत्पुरुषोना पहेला पुरुषार्थ—धर्मनो विस्तार करो."

"इति श्रीतपागच्छपुरन्दरश्रीसोमसुन्दरसूरिश्रीमुनिसुन्दरसूरिश्रीजयचन्द्रसूरिप्रमुखश्रीगुरुसाम्प्रतविजयमानश्रीगच्छनायकश्रीरत्नशेखरसूरिचरणकमलसेविना महोपाध्यायश्रीचारित्ररत्नगणिप्रसादप्राप्तविद्यालवेन वाचनाचार्यश्रीहेमहंसगणिना स्वपरोपकाराय संवत् १५१४ वर्षे आषाढशुक्लद्वितीयायां निर्मितमिदं सुधीश्रृङ्गाराख्यं श्रीआरंभसिद्धिवार्तिकं सर्वथा सावद्यवचनविरतैः सुविहिताचार्यवर्यैर्वाच्यमानं चिरं नन्दतात् ॥"

आ प्रमाणे श्री तपा गच्छना इंद्र श्री सोमसुंदर सूरि, श्री मुनिसुंदर सूरि, श्री जयचंद्र सूरि विगेरे श्री गुरु महाराजाओ अने हालमां विजय पामता श्री गच्छनायक श्री रत्नशेखर सूरिना चरणकमळने सेवता अने महोपाध्याय श्री चारित्ररत्न गणिना प्रसादथी जेने विद्यानो लेश प्राप्त थयो छे एवा वाचानाचार्य श्री हेमहंसगणिए स्व–परना उपकार माटे संवत् १५१४ आषाढ सुदि बीजने दिवसे रचेलुं आ सुधीश्रृंगार नामनुं आरंभसिद्धिनुं वार्तिक सर्वथा प्रकारे सावद्य वचनथी विरति पामेला श्रेष्ठ सुविहिताचार्योए वंचातुं चिर काळ आनंद पामो.

हवे ग्रंथकार पोताना अभिप्रायने प्रगट करे छे.—

"विद्यारम्भतपःक्रियाप्रभृतिकप्रारम्भवर्जं समे-
ऽप्यारम्भा अशुभाः शुभाश्च नियतं सावद्यतादूषिताः ।

सर्वारम्भविधेश्च सिद्धिकरणादारम्भसिद्ध्याह्वयो,
ग्रन्थोऽयं तत एव चाप्रकटनायोग्यो विशूकात्मसु ॥ १ ॥"

"विद्यारंभ अने तपस्यानी क्रिया विगेरे आरंभोने वर्जीने बीजा सर्वे शुभ अने अशुभ आरंभो अवश्य पापव्यापारवडे दोष पामेलाज छे, तेथी करीनेज सर्वे आरंभोनी सिद्धि करवाथी आ आरंभसिद्धि नामनो ग्रंथ निर्दय हृदयवाळा मनुष्यो पासे प्रगट करवो योग्य नथी."

"येन श्रीप्रभुसोमसुन्दरगुरोः काले कलौ जङ्गम-
श्रीमत्तीर्थकरस्य चारु सुचिरं सेवा कृता तस्य मे ।
एतज्ज्योतिषवार्तिकप्रणयनं नो युज्यते सर्वथा,
ग्रन्थोऽयं तदपीह येन विधिना जातस्तदाकर्ण्यताम् ॥ २ ॥"

"आ कलि काळने विषे जंगम तीर्थंकररूप पूज्य श्री सोमसुंदर गुरुनी जेणे सारी रीते चिर काळ सुधी सेवा करी छे एवा मारे आ ज्योतिष शास्त्रना वार्तिकनी रचना करवी ए सर्वथा प्रकारे योग्य नथी, तोपण आ ग्रंथ जे विधिए करीने उत्पन्न थयो छे ते सांभळो."

"केचित्केचिदपि क्वचित्क्वचिदपि ग्रन्थे विशेषा मया,
दृष्टा ज्योतिषगोचराः किल समुच्चेतुं च ते चिन्तिताः ।
प्रक्रान्तश्च समुच्चयो रचयितुं संवर्धमानः पुनः,
सोऽर्थैरेव शनैः शनैः समभवद्ग्रन्थानुरूपाकृतिः ॥ ३ ॥"

"ज्योतिष संबंधी केटलाक विशेषो कोइक ग्रंथमां तथा केटलाक विशेषो बीजा कोइक ग्रंथमां में जोया, अने ते विशेषोने एकत्र करवानो में विचार कर्यो, अने पछी समूहरूप करवाने आरंभ कर्यो, त्यारे ते अर्थवडे वृद्धि पामीने धीमे धीमे एक ग्रंथने आकारे थइ गयो."

"प्राप्तः सोऽयमचिन्तितामपि यदा ग्रन्थस्य रीतिं तदा,
चित्तेऽचिन्ति मया धिया निपुणया सम्यग्विचार्यायतिम् ।
निःशूकैर्यतिभिस्तथा गृहिभिरप्यादास्यतेऽसौ यदा,
सावद्यप्रथितेर्बताधिकरणं संपत्स्यतेऽलं तदा ॥ ४ ॥"

"ज्यारे आ ग्रंथ नहीं चिंतवेली ग्रंथनी पद्धति (आकार)ने पाम्यो त्यारे में चित्तमां निपुण बुद्धिथी सारी रीते परिणाम (उत्तरकाळ)नो विचार कर्यो के निःशूक एवा मुनिओए तथा गृहस्थीओए ज्यारे आ ग्रंथ ग्रहण कराशे त्यारे आ ग्रंथ सावद्यना विस्तार (समूह)ना अधिकरणने अत्यंत पामशे ए खेदकारक छे.

" तेनैतस्य जलावमज्जनविधिर्ग्रन्थस्य निर्माप्यते,
नोत्सर्पत्यधिकाधिकाधिकरणस्फातिर्यथाऽस्मादिति ।
तत्कर्तुं तु न शक्यते स्म विविधग्रन्थोञ्छवृत्त्या हृता,
गच्छेऽत्र स्थितिमावहन्तु कथमप्येते विशेषा इति ॥ ५ ॥"

" तेथी करीने आ ग्रंथनो जळने विषे मज्जनविधि करुं के जेथी करीने आ ग्रंथ थकी अधिकाधिक अधिकरणनी वृद्धि न थाय, परंतु तेम करवुं पण शक्य नथी, कारण के आ विषयो विविध ग्रंथोमांथी उंछ वृत्तिए करीने एकत्र करेला छे, तेथी आ विशेषो कोइ पण प्रकारे आ गच्छमांज स्थितिने करो."

" एतस्मादभिसन्धितः परिहृताम्भोमज्जनः सज्जनाः,
सोऽयं ग्रन्थ उपागमत्करतले युष्माकमायुष्मताम् ।
सत्याप्योऽथ तथा कथञ्चन यथाऽऽरम्भप्रथाकारणं,
धर्म्याणामपि कर्मणां प्रणयने जात्वेष नो जायते ॥ ६ ॥"

" हे सज्जनो ! आ अभिप्रायथी त्याग कर्युं छे जळने विषे मज्जन जेनुं एवो आ ग्रंथ तमारा आयुष्यवंतना हाथमां प्राप्त थयो छे, तेथी कोइ पण रीते तथा प्रकारे आ ग्रंथ सफळ करवो के जेथी कोइ पण वखत आ ग्रंथ धर्म संबंधी कार्यो करवामां पण आरंभना विस्तारनुं कारण न थाय.

" खड्गः खण्डनहेतवे खलजनस्यादीयते धीयते,
नो सम्यग्यदि सोऽपि सौवधनिकोच्छेदाय तज्जायते ।
वेतालोऽपि विधेयतामपि गतो यत्रापि तत्रापि चेत्,
संयोज्येत यथा तथा ननु तदा स्वं साधकं बाधते ॥ ७ ॥
एवं ज्योतिषशास्त्रमेतदखिलं सावद्यसज्जात्मनां,
चैत्यादेरपि चेन्मुहूर्त्तकथने व्यापार्यते साधुभिः ।
तत्तेषामनवद्यभाषणमयं याति व्रतं सर्वथा,
लिप्यन्तेऽपि च पातकेन महता ते शास्त्रकर्त्रा समम् ॥ ८ ॥"

" खळ पुरुषोना नाशने माटे खड्ग ग्रहण करवामां आवे छे. तेने जो सारी रीते धारण न कर्युं होय तो ते पण पोताना स्वामी (धारण करनार)नाज नाशने माटे थाय छे. वळी वश थयेलो पण वेताळ जो ज्यां त्यां (जे ते कार्यमां) जेम तेम जोडवामां आवे तो ते पोताना साधकनेज बाध (पीडा) करे छे. तेज रीते आ समग्र ज्योतिष शास्त्र जो सावद्य व्यापारमां सज्ज थयेला गृहस्थीओने चैत्यादिकनां मुहूर्त्त

कहेवामां पण साधुओए व्यापार कराय तो तेओनुं सत्य भाषणमय बीजुं व्रत सर्वथा प्रकारे नाश पामे छे, अने तेओ शास्त्रकार सहित मोटा पापवडे पण लींपाय छे. "

" नन्वेवं यदि जैनचैत्यरचनाश्रीतीर्थयात्रादिनः,
पुण्यस्यापि मुहूर्त्तमात्रमपि भिर्नो देयमित्युच्यते ।
तत्पुण्योपचयः कथं नु भविता गार्हस्थ्यभाजां नृणां,
नानाग्रामनिवासिनामथ यतेः स्यात्पुण्यलाभः कथम् ॥ ९ ॥ "

" अहीं कोइ शंका करे के–जो जिनेश्वरनुं चैत्य बनाववुं, तीर्थयात्रा करवी विगेरे पुण्य कार्यनुं मुहूर्त्त मात्र पण साधुओए न देवुं एम तमोए कहेवाय छे, तो भिन्न भिन्न गामोमां वसनार गृहस्थाश्रमी माणसोने पुण्यनी वृद्धि शी रीते थशे ? अने साधुने पण पुण्यनो लाभ शी रीते थाय ?" उत्तर.—

" पुण्यं स्यादनुमोदनैव यतिनां चैत्यादिनिर्मापणे,
मौहूर्त्ताः पुनरर्पयन्ति गृहिणामुद्वाहनादाविव ।
चैत्याद्येऽपि मुहूर्त्तमद्भुततरं संवादमेषां पुन–
र्ज्योतिर्ज्ञा यतयो दिशन्त्यखिलमप्येवं सुयुक्तं भवेत् ॥ १० ॥ "

" चैत्यादिक कराववामां यतिओने अनुमोदनावडेज पुण्य थाय छे, परंतु गृहस्थीओने विवाहादिकनी जेम चैत्यादिकने विषे पण अत्यंत अद्भुत (शुभ) मुहूर्त्त तो जोशीओज आपे छे, किंतु ए जोशीओना समग्र संवादने ज्योतिष जाणनारा यतिओ बतावी शके छे. आ रीते करवाथी सर्व युक्तियुक्त थाय छे. "

" एवं सत्यपि कर्मगौरववशाद्यः पातकाभीलुकः,
शास्त्रस्यास्य बलेन वक्ष्यति जने मूढो मुहूर्त्तादिकम् ।
तस्यैवैतदघं पतिष्यति शिरस्यारम्भसंभारजं,
नैतद्ग्रन्थविधायिनस्तु मम तत्संबन्धलेशोऽपि हि ॥ ११ ॥ "

" आम छतां पण भारे कर्मना वशथी पापना भय रहित जे कोइ मूढ (यति) आ शास्त्रना बळे करीने लोकमां मुहूर्त्तादिकने कहेशे तो आरंभना समूहथी उत्पन्न थतुं आ पाप तेनाज मस्तक पर पडशे, परंतु आ ग्रंथने करनारा मने ते पापना अथवा आरंभना संबंधनो लेश पण नथी. "

" तस्मात्तत्त्वमिदं वदामि तदिदं शास्त्रं रहो भण्यतां,
शिष्याणामपि भाण्यतामवगतास्ते चेदघाद्भीरवः ।
पर्यायान् परिवर्धयन्तु च बुधाः सर्वेऽपि बोधस्य ते,
यस्मात्केवलमेतदेव हि फलं मेऽभीष्टमेतत्कृतेः ॥ १२ ॥ "

" तेथी हुं आ रहस्यने कहुं छुं के—आ शास्त्र एकांतमां वांचो-भणो, तथा पोताना शिष्योने पण जो तेमने पापथी भीरु जाण्या होय तो सुखेथी भणावो, अने ते सर्वे पंडितो ज्ञानना पर्यायोने वृद्धि पमाडो, कारण के आ कृतिनुं मात्र एज फळ मने इष्ट छे. " तेथी करीने—

" ज्ञानांशोपचयैकपेशलफलप्रस्फूर्त्तये वार्तिकं,
कुर्वाणेन मया शुभाशयवशाद्यत्पुण्यकर्मार्जितम् ।
दिष्ट्या तेन भवे भवे भवतु मे सज्ज्ञानलाभोदयो,
यस्मादद्भुतधाम शाश्वतचिदानन्दं पदं प्राप्यते ॥ १३ ॥ "

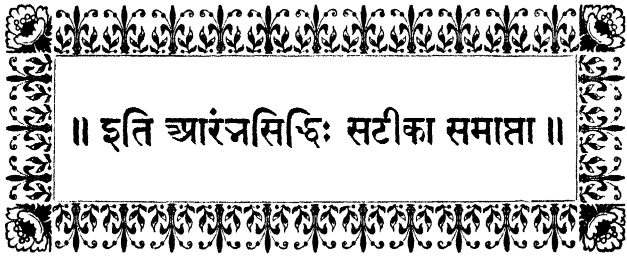
ज्ञानना पर्यायोनी वृद्धिरूप एक सुंदर फळनी स्फुर्तिने माटेज आ वार्तिकने रचतां में शुभ परिणामना वशथी जे कांइ पुण्य कर्म उपार्जन कर्युं होय ते पुण्यवडे मने भव भवने विषे सत् ज्ञानना लाभनो उदय थजो, के जे ज्ञानथी अद्भुत धामवाळुं शाश्वतुं चिदानंद (मोक्ष) पद मने प्राप्त थाय. "

आ प्रमाणे ग्रंथकारना पोताना अभिप्रायने सूचवनारां आ काव्यो (श्लोको) वांचीने तत्त्वज्ञानीओए उपदेश करेला मार्गना अनुष्ठान माटे यत्न करवो. इति शम्.

॥ इति प्रशस्तिः ॥

॥ इति आरंभसिद्धिः सटीका समाप्ता ॥




॥ इति आरंभसिद्धिः सटीका समाप्ता ॥

॥ श्रीहरिभद्राचार्यकृता ॥

। लग्नशुद्धिः ।

। लग्नशुद्धिः ।

अवितहसव्वाएसं नमिउं चोवीसमं जिणवरेसं ।
वुच्छामि समासेणं लग्गं सुगुरूवएसेणं ॥ १ ॥

जेनो सर्व आदेश सत्य छे एवा श्री चोवीशमा जिनेश्वरने नमीने सद्‌गुरुना उपदेशथी संक्षेपमां लग्ननी शुद्धि कहुं छुं. १.

कज्जं कुणंतयाणं सुहावहो जोइसम्मि जो भणिउं ।
कालविसेसो लग्गं कज्जं पुण बहुविहं जइ वि ॥ २ ॥
तह वि हु इह लोगुत्तरदिक्खोवट्ठावणापइट्ठाउं ।
अहिगिच्च लग्गसुधिं भणिज्जमाणं निसामेह ॥ ३ ॥

कार्य करनारने माटे ज्योतिष शास्त्रमां जे काळविशेष सुखकारक कहेलो छे ते लग्न कहेवाय छे. जो के कार्य घणां प्रकारनां छे, तोपण अहीं दीक्षा, उपस्थापना अने प्रतिष्ठा ए त्रण लोकोत्तर कार्यने आश्रीने हुं लग्ननी शुद्धि कहुं छुं ते तमे सांभळो॥२-३.

सा पुण इह विन्नेया गोअरसुद्धीइ दिवससुद्धीए ।
तस्समयउदयपत्तस्स तह वि लग्गस्स सुद्धीए ॥ ४ ॥

अने ते लग्नशुद्धि अहीं गोचरनी शुद्धिथी तथा दिवसनी शुद्धिथी जाणवी, तथा ते समयमां उदय पामेला लग्ननी शुद्धिथी पण लग्नशुद्धि थाय छे. (अर्थात् गोचरशुद्धि, दिवसशुद्धि अने लग्नशुद्धि ए त्रण द्वार छे) ४. इति द्वारम्

गुरुससिरविणो बलिणो दिक्खोवट्ठावणासु सीसस्स ।
जइ तो गोअरसुद्धी गुरुणो वि हु ससिबले संते ॥ ५ ॥

जो दीक्षा तथा उपस्थापनामां शिष्यने गुरु, चंद्र अने रवि बळवान् होय अने आचार्यने पण चंद्र बळवान् होय तो गोचरशुद्धि जाणवी. ५.

बिंबपइट्ठाइ पुणो कारावयसावयस्स बलिएसु ।
गुरुससिसूरेसु भवे गोअरसुद्धि त्ति बिंति बुहा ॥ ६ ॥

अने बिंबप्रतिष्ठामां प्रतिष्ठा करावनार श्रावकने गुरु, चंद्र अने रवि बळवान् होय तो गोचरशुद्धि थाय एम पंडितो कहे छे. ६.

दो २ पंच ५ सत्त ७ नवमि ए क्कारसमो ११ जम्मरासिणो जीवो ।
पढम १ ति ३ छ ६ सत्त ७ दसमे १० क्कारसमो ११ ससहरो बलवं ॥७॥

जन्मनी राशिथी गुरु बीजे, पांचमे, सातमे, नवमे अने अगीयारमे होय तो ते बळवान् जाणवो, चंद्र बन्ने पक्षमां पहेले, त्रीजे, छठ्ठे, सातमे, दशमे अने अगीयारमे होय तो ते बळवान् जाणवो. ७.

दो २ पंच ५ नवमगो ए विहु सियपक्खेसो रवी उ ति छ दसमो ।
इक्कारसमो अ बली सेसठाणेसु ते अबला ॥ ८ ॥

शुक्लपक्षमां जन्मराशिथी चंद्र बीजे, पांचमे अने नवमे होय तो बळवान् छे, जन्मराशिथी सूर्य त्रीजे, छठ्ठे, दशमे अने अगीयारमे होय तो बळवान् छे अने बाकीनां स्थानोमां होय तो ते निर्बळ छे. ८.

सियपक्खे चंदबलं असिए ताराबलं पि गहियव्वं ।
तं पुण ति ३ पंच ५ सत्तम ७ ताराउ मुत्तु सेसा उ ॥ ए ॥

शुक्लपक्षमां चंद्रनुं बळ लेवुं, अने कृष्णपक्षमां तारानुं बळ पण ग्रहण करवुं. तेमां पण त्रीजी, पांचमी अने सातमी ताराने मूकीने बाकीनी ताराउ लेवी. ए.

पढमा जम्मणि रिक्खे तत्तो दसमम्मि इगुणवीसे अ ।
बीआ तप्परएसुं तिसु एवं जाव नव तारा ॥ १० ॥

पहेली तारा जन्मनक्षत्रमां मूकवी, एटले के जन्मनुं नक्षत्र ए पहेली तारा गणवी. तेनी नीचे दशमी तारा मूकवी अने तेनी नीचे उंगणीशमी तारा मूकवी. पछी पहेली तारानी पछी बीजी, त्रीजी एम अनुक्रमे नव सुधी मूकवी, दशमीनी पछी अगीयार, बार एम अढार सुधी मूकवी अने उंगणशमीनी पासे वीश, एकवीश एम सत्यावीश सुधी मूकवी. ए त्रणे लाइननी त्रीजी त्रीजी, पांचमी पांचमी अने सातमी सातमी ताराउ अशुभ होवाथी शुभ कार्यमां लेवी नहीं. १०.

जम्मं १ संपइ २ विप्पइ ३ खेमा ४ पच्चरय ५ साहणा ६ निहणा ७ ।
मित्ता ८ अइमित्ता ए वा तारा नेआ असिअ पक्खे ॥ ११ ॥

ते कृष्णपक्षमां ताराउनां नाम अनुक्रमे आ प्रमाणे जाणवां.—जन्म १, संपद् २, विपद् ३, क्षेमा ४, प्रत्ययरा (यमा) ५, साधना ६, निधना ७, मित्रा ८ अने अतिमित्रा ए. एज प्रमाणे दशमी ताराथी अने उंगणीशमी ताराथी पण अनुक्रमे आ नामोज जाणवां. ११.

जइ नो नज्जइ जम्मण रासी तो गणह नामरासीउ ।
अवकहडाचक्काउ सा नज्जइ तं पुण पसिद्धं ॥ १२ ॥

जो जन्मराशि जाणवामां न होय तो नामराशिथी गणवुं, अने ते नामराशि अवकहडा चक्रथी जाणवी. ते चक्र प्रसिद्ध छे. १२.

॥ इति गोचरशुद्धिः ॥ १ ॥

॥ अथ दिनशुद्धिः ॥ २ ॥

सुहमास १ वार २ तिहि ३ रिक्ख ४ जोग ५ करणे ६ दिणम्मि सगुणंमि ७ ।
निद्दोसे ८ तह निद्दोस ए सगुणरिक्खंमि १० दिणसुद्धी ॥ १३ ॥

दिनशुद्धिमां आ प्रमाणे दश द्वार छे—शुभ मास १, शुभ वार २, शुभ तिथि ३, शुभ नक्षत्र ४, शुभ योग ५, शुभ करण ६, सगुण दिवस ७, निर्दोष दिवस ८, निर्दोष नक्षत्र ए अने सगुण नक्षत्र १०. १३.

मिग्गसिराई मासठ चित्त पोसाहिए वि मुत्तु सुहा ।
जइ न गुरू सुक्को वा बालो वुड्ढो य अत्थमिउ ॥ १४ ॥

मार्गशीर्ष मासथी आरंभीने आठ मास शुभ छे, तेमां पण चैत्र, पोष अने अधिक मास वर्जीने सारा छे. तेमां पण जो गुरु के शुक्र बाळक, वृद्ध के अस्त पामेलो न होवो जोइए. १४.

दस १० तिन्नि ३ दिणे बालो पणदिण ५ पक्खं १५ च भिगुसुउ वुड्ढो ।
पच्छिमपुव्वासु कमा गुरु वि जहसंभवं एवं ॥ १५ ॥

शुक्र पश्चिम दिशामां उदय पाम्यो होय तो उदयथी दश दिवस सुधी बाळ जाणवो, अने पूर्व दिशामां उदय पाम्यो होय तो त्रण दिवस बाळ जाणवो तथा पश्चिम दिशामां अस्त पामे तो अस्त पाम्या पहेलाना पांच दिवस वृद्ध जाणवो, अने पूर्व दिशामां अस्त पामवानो होय तो ते पहेलां पंदर दिवस वृद्ध जाणवो. एज रीते गुरु पण जेम संभवे तेम जाणवो. १५. । इति मासाः ।

आइच्च बुह विहप्फइ सणिवारा सुंदरा वयग्गहणे ।
बिंबपइट्ठाइ पुणो विहप्फई सोम बुह सुक्का ॥ १६ ॥

रवि, बुध, बृहस्पति (गुरु) अने शनि एटला वार व्रतग्रहणमां (दीक्षामां) शुभ छे, तथा बिंबप्रतिष्ठामां बृहस्पति, सोम, बुध अने शुक्रवार शुभ छे. १६. इति वाराः ।

मुत्तुं चउदसि पनरसि नवमट्ठमि छट्ठि बारसि चउत्थी ।
सेसा उ वयग्गहणे गुणावहा दुसु वि पक्खेसु ॥ १७ ॥

बन्ने पक्षनी चौदश, पूर्णिमा अने अमावास्या, नोम, आठम, छठ, बारश अने चोथ एटली तिथि वर्जीने बीजी तिथिओ व्रतग्रहणमां शुभ छे. १७.

सियपक्खे पडिवय बीअ पंचमी दसमि तेरसी पुन्ना ।
कसिणे पडिवय बीआ पंचमि सुहया पइट्ठाए ॥ १८ ॥

प्रतिष्ठामां शुक्लपक्षनी एकम, बीज, पांचम, दशम, तेरश अने पूनम तथा कृष्णपक्षनी एकम, बीज अने पांचम एटली तिथिओ शुभ छे. १८.

सव्वे वि वारतिहिओ सुहया सइ सिद्धिजोगसब्भावे ।
चंदंमि उवचयंमि न उण नट्ठम्मि खीणे वा ॥ १९ ॥

सर्वे वारो अने तिथिओ सिद्धियोग होय तो शुभ छे, परंतु चंद्र उपचय होय अने नष्ट के क्षीण न होय तो. १९.

सियपडिवयाउ दस दिण चंदो मज्झिमबलो मुणेयव्वो ।
तत्तो अ उत्तमबलो अप्पबलो तइय दसमम्मि ॥ २० ॥

शुक्लपक्षनी एकमथी दश दिवस सुधी चंद्र मध्यम बळवाळो जाणवो, त्यारपछीना दश दिवस उत्तम बळवाळो जाणवो अने त्रीजा दश दिवस सुधी अल्प बळवाळो जाणवो. २०. इति तिथयः ।

उत्तर रोहिणि हत्थाणुराह सयभिसय पुव्वभद्दवया ।
पुस्स पुणव्वसु रेवइ मूलस्सिणि सवण साइ वए ॥ २१ ॥

त्रणे उत्तरा, रोहिणी, हस्त, अनुराधा, शतभिषक्, पूर्वाभाद्रपद, पुष्य, पुनर्वसु, रेवती मूळ, अश्विनी, श्रवण अने स्वाति, आटलां नक्षत्रो व्रतग्रहणमां (दीक्षामां) शुभ छे. २१.

मह मियसिर हत्थुत्तर अणुराहा रेवई सवण मूलं ।
पुस्स पुणव्वसु रोहिणि साइ धणिट्ठा पइट्ठाए ॥ २२ ॥

मघा, मृगशिर, हस्त, त्रणे उत्तरा, अनुराधा, रेवती, श्रवण, मूळ, पुष्य, पुनर्वसु, रोहिणी, स्वाति अने धनिष्ठा, एटलां नक्षत्रो प्रतिष्ठामां शुभ छे. २२.

कारावयस्स जम्मणरिक्खं दस सोलसं तहऽठारं ।
तेवीसं पंचवीसं बिंबपइठ्ठाइ वज्जिज्जा ॥ २३ ॥

बिंबप्रतिष्ठाने विषे प्रतिष्ठा करावनारनुं जन्मनक्षत्र, दशमुं, सोळमुं, अढारमुं, त्रेवीशमुं अने पचीशमुं नक्षत्र वर्जवुं. २३. इति नक्षत्राणि ।

पढमो छठ्ठो नवमो दसमो तह तेरसो अ पन्नरसो ।
सत्तरसेगुणवीसो सत्तावीसो असुह जोगो ॥ २४ ॥

विष्कंभादिक २७ योगोमांथी पहेलो, छठ्ठो, नवमो, दशमो, तेरमो, पंदरमो, सत्तरमो, ओगणीशमो अने सत्यावीशमो एटला योगो अशुभ छे. २४.

छठ्ठो छ ६ दसमो पण ५ पढमो नवमो अ पंच ५ घडिआउ ।
तीसं ३० सत्तावीसो नव ९ तेरसमो अ पन्नरसो ॥ २५ ॥
सव्वं ६० सत्तरसेगुणवीसो वज्जो अवस्समन्ने उ ।
जोगा सव्वे वि सुहा नायव्वा सव्वकज्जेसु ॥ २६ ॥

छठ्ठा योगनी प्रथमनी छ घडीओ शुभ कार्यमां अवश्य तजवी, दशमा योगनी पांच घडीओ, पहेलानी अने नवमानी पांच घडीओ, सत्यावीशमानी त्रीश घडी, तेरमा अने पंदरमानी नव घडीओ. २५. तथा सत्तरमा अने ओगणीशमा योगनी सर्व एटले साठे घडीओ अवश्य वर्जवी. बाकीना सर्व योगो सर्व कार्यमां शुभकारी जाणवा. २६. इति योगः ।

विठ्ठिं विवज्जिऊणं पाएण सुहाइं सव्वकरणाइं ।

एक विष्टिने वर्जीने बाकीनां सर्वे करणो प्राये शुभकारी छे. इति करणानि ।

आणंदयरं च दिणं सगुणं तह सिद्धिजोगजुअं ॥ २७ ॥

सगुण दिवस होय अने सिद्धि योगवडे युक्त होय तो ते आनंदकर जाणवो. २७.

हवे सिद्धि योगनुं स्वरूप कहे छे.

सिअ १ बुह २ कुज ३ सणि ४ गुरुणो ५ पंचसु पढमासु छठ्ठि कुज सुक्का ६ ।
सत्तमि बुहे ७ अठमि सूरमंगला ८ नवमि सणिससिणो ९ ॥ २८ ॥
दसमि गुरु १० इक्कारसि गुरुसुक्का ११ बारसी बुहो अ सुहो १२ ।
तेरसि मंगलसुक्का १३ चोदसि सणि १४ पंचदसि जीवो १५ ॥ २९ ॥

एकम ने शुक्रवार होय, बीज ने बुधवार होय, त्रीज ने मंगळवार होय, चोथ ने शनिवार होय, पांचम ने गुरुवार होय, छठ ने मंगळ के शुक्र होय, सातम ने बुध होय, आठम ने रवि के मंगळ होय, नोम ने शनि के चंद्र होय. २८. दशम ने गुरु होय, अगीयारशने गुरु के शुक्र होय, बारश ने बुध होय, तेरश ने मंगळ के शुक्र होय, चौदश ने शनि होय तथा पूनम ने गुरु होय तो ते सिद्धि योग कहेवाय छे. ते सर्व कार्यमां शुभ छे. २९. इति तिथिवारसिद्धियोगाः ।

हत्थुत्तर ४ मूलाइं ५ रविणो सिद्धाइं पंच रिक्खाइं ।
रोहिणि १ मिअसिर २ पुस्सा ३ णुराह ४ सवणाइं ५ सोमेणं ॥३०॥

रविवारे हस्त, त्रण उत्तरा अने मूळ ए पांच नक्षत्रोमांनुं कोइ होय तो सिद्धि योग थाय छे. सोमवारे रोहिणी, मृगशीर्ष, पुष्य, अनुराधा अने श्रवण होय तो सिद्धि योग थाय छे. ३०.

उत्तरभद्दवय १ स्सिणि २ रेवइ ३ रिक्खाइं तिन्नि भोमेणं ।
कित्तिय १ रोहिणि २ मिअसिर ३ पुस्स ४ अणुराहा य ५ पंच बुहे ३१

मंगळवारे उत्तराभाद्रपद, अश्विनी अने रेवती ए त्रण नक्षत्र होय, बुधवारे कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिर, पुष्य, अनुराधा ए पांच नक्षत्र होय तो सिद्धि योग जाणवो. ३१.

अस्सिणि १ पुस्स २ पुणव्वसु ३ अणुराहा ४ रेवई अ ५ गुरुवारे ।
सत्तम पढमिक्कारस रेवइ अणुराह सवण सिए ॥ ३२ ॥

गुरुवारे अश्विनी, पुष्य, पुनर्वसु, अनुराधा अने रेवती होय, शुक्रवारे पुनर्वसु, अश्विनी, पूर्वाफाल्गुनी, रेवती, अनुराधा अने श्रवण होय तो सिद्धि योग थाय छे. ३२.

रोहिणि १ सवणं २ साई ३ सणिणा इय रिक्खवार सुह जोगा ।
अन्ने वि एवमाइ वित्थरगंथेसु जाणिज्जा ॥ ३३ ॥

शनिवारे रोहिणी, श्रवण के स्वाति होय तो सिद्धि योग थाय छे. आ प्रमाणे नक्षत्र अने वारथी थता शुभ योगो छे. आ विगेरे बीजा पण योगो विस्तारवाळा ग्रंथोथी जाणी लेवा. ३३. ॥ इति नक्षत्रवारसिद्धियोगाः ॥ इति सिद्धियोगाः ॥

हवे कुमार योग कहे छे.

अस्सिणि १ रोहिणि २ मूलं ३ हत्थ ४ पुणव्वसु ५ विसाह ६ मह ७ सवणा ८ ।
भद्दवया वि अ पुव्वा ए मंगल १ सिअ २ बुह ३ ससी ४ वारा ॥ ३४ ॥

दसमी १ छट्ठि २ कारसि ३ पडिवय ४ पंचमि ५ तिहीणमन्नयरा ।
एसो कुमारजोगो रिक्खतिहीवारजोगम्मि ॥ ३५ ॥

अश्विनी, रोहिणी, मूळ, हस्त, पुनर्वसु, विशाखा, मघा, श्रवण अने पूर्वाभाद्रपद ए नक्षत्रोमांनुं कोइ एक नक्षत्र होय अने मंगळ, शुक्र, बुध अने सोम एमांनो कोइ पण वार होय तथा दशम, छठ, अगीयारश, एकम अने पांचम एमांनी कोइ एक तिथि होय तो आ रीते नक्षत्र, तिथि अने वारना योगथी कुमार नामे योग थाय छे. ३५. इति कुमारयोगः ।

घरवेसमित्तयाधम्मसिप्पविज्जाइया सुहा भावा ।
कायव्वा एएणं विरुद्धजोगं विवज्जित्ता ॥ ३६ ॥

गृहप्रवेश, मित्रता, धर्म, शिल्पविद्या विगेरे शुभ कार्यो विरुद्ध योगने वर्जीने आवा शुभ योगमां करवां. ३६.

। इति सगुणदिनम् । ७

रयछन्नयाइ १ संकंतिगहणदड्ढाइआ य दिणदोसा २ ।
तह दिवसवारनक्खत्त असुहजोग ३ ऽद्धपहराई ४ ॥ ३७ ॥

रजश्छन्नादिक १, संक्रांति, संक्रांतिदग्ध अने ग्रहणदग्ध तिथि विगेरे दिवसना दोष २, दिवस, वार अने नक्षत्रथी थता अशुभ योग ३, तथा अर्धप्रहरादिक ४, ए चार वर्ज्य द्वार कहे छे. ३७.

रयछन्न १ मब्भछन्नं २ पयंडपवणं ३ तहा समुग्घायं ४ ।
सुरधणु ५ परिवेस ६ दिसादाहाइ ७ जुअं दिणं दुट्ठं ॥ ३८ ॥

रजश्छन्न एटले आकाश रजथी-धूळथी भराइ गयुं होय १, आकाश वादळांथी छवाइ गयुं होय २, प्रचंड पवन वातो होय ३, समुद्घात एटले मोटा मोटा पडछंदा जेवा अवाज थता होय ४, आकाशमां इंद्रधनुष देखातुं होय ५, परिवेस एटले चंद्र तथा सूर्यनी फरतुं जे कुंडाळुं थाय छे ते ६, तथा दिशादाह एटले सर्व दिशाओ बळती होय एवो देखाव थतो होय, आ विगेरे उत्पातवडे युक्त एवो दिवस दुष्ट—अशुभ छे. ३८. इति रजश्छन्नद्वारम् । (१)

संकंतीए पुव्वं संकंतिदिणं तयग्गिमं च दिणं ।
वज्जिज्जा तह संकंति दड्ढतिहिउ अ एआउ ॥ ३९ ॥

सूर्य संक्रांति जे दिवस बेसती होय तेनी पहेलांनो एक दिवस, तेनी पछीनो एक दिवस अने तेज एक दिवस एम ए त्रण दिवस तथा संक्रांतिए करीने दग्ध तिथिओ आ आगळ गाथामां कहे छे तेने शुभ कार्यमां वर्जवी. ३९.

दग्ध तिथि कहे छे.

धणुमीणगए बीआ विसे अ कुंभे अ तह चउत्थीए ।
कक्कमेसे छठी अठमि मिहुणो अ कन्ने अ ॥ ४० ॥
विछियसीहे दसमी तुले अ मयरे अ बारसी भणिया ।
एआ दढतिहीउ वज्जेअव्वा पयत्तेणं ॥ ४१ ॥

धन के मीननी संक्रांतिमां बीज दग्ध तिथि कहेवाय छे. वृष के कुंभ संक्रांतिमां चोथ, कर्क के मेष संक्रांतिमां छठ, मिथुन के कन्या संक्रांतिमां आठम ४०. वृश्चिक के सिंह संक्रांतिमां दशम तथा तुला के मकर संक्रांतिमां बारश ए तिथिउ दग्ध तिथि कहेवाय छे. ते शुभ कार्यमां प्रयत्ने करीने वर्जवी. ४१.

ससिसूराणं गहणं जंमि दिणंमि तमाइउ काउं ।
सत्तदिणाइं वज्जह ताइं जउ गहणदढाइं ॥ ४२ ॥

चंद्र अथवा सूर्यनुं ग्रहण जे दिवस थयुं होय ते दिवसथी आरंभीने सात दिवस वर्जवा, कारण के ते ग्रहण दग्ध कहेवाय छे. ४२. । इति संक्रांतिदग्धग्रहणदग्धतिथयः ॥ इति दिनद्वारम् । (२)

सूरे बारसि सोमे इगारसी दसमि मंगले वज्जा ।
नवमि बुहे गुरु अठमि सत्तमि सुक्कम्मि सणि छठी ॥ ४३ ॥

बारश ने रविवार होय, अगीयारश ने सोमवार होय, दशम ने मंगळ होय, नोम ने बुध होय, आठम ने गुरु होय, सातम ने शुक्र होय तथा छठ ने शनिवार होय तो ते वर्ज्य छे, कारण के ते कर्क योग कहेवाय छे. ४३. । इति कर्कयोगः ।

ससिसूरदिणे सत्तमि तइआ सुक्कम्मि छठि गुरुवारे ।
पडिवय तइया य बुहे विवज्जियाउ सुहे कज्जे ॥ ४४ ॥

सोम के रविवारे सातम होय, शुक्रवारे त्रीज होय, गुरुवारे छठ होय, बुधवारे पडवो के त्रीज होय तो ते शुभ कार्यमां वर्ज्य छे, केमके ते संवर्तक योग कहेवाय छे. ४४. इति संवर्त्तकयोगः ।

जिठा मह्रा विसाह्रा अणुराह्रा रविदिणम्मि वज्जिज्जा ।
आसाढाउ डुन्निय तह य विसाह्रा उ सोमम्मि ॥ ४५ ॥

रविवारने दिवसे जो ज्येष्ठा, मघा, विशाखा के अनुराधा होय तो ते वर्ज्य छे, सोमवारे पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा के विशाखा होय तो ते वर्ज्य छे. ४५.

सयभिस अद्द धणिठा मंगलवारम्मि पुव्वभद्दवया ।
मूलऽस्सिणि भरणी रेवईउ वज्जिज्ज बुहवारे ॥ ४६ ॥

मंगळवारे शतभिषक्, आर्द्रा, धनिष्ठा के पूर्वाभाद्रपद होय, बुधवारे मूळ, अश्विनी भरणी के रेवती होय तो ते पण वर्ज्य छे. ४६.

रोहिणि मिअसिर अद्दा सयभिसयाउ विहप्फइदिणम्मि ।
रोहिणिमहअसिलेसापुस्साइं सुहाइं नो सुक्के ॥ ४७ ॥

गुरुवारे रोहिणी, मृगशिर, आर्द्रा के शतभिषक् होय, शुक्रवारे रोहिणी, मघा, अश्लेषा के पुष्य होय तो ते सुखकारक नथी. ४७.

उत्तरफग्गुणि हत्थो चित्ताऽऽसाढा डुगं च एयाइं ।
पंच वि नक्खत्ताइं सणिवारे वज्जिअव्वाइं ॥ ४८ ॥

शनिवारे उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, पूर्वाषाढा के उत्तराषाढा ए पांच नक्षत्रमांनुं कोइ एक होय तो ते वर्जवा योग्य छे. ४८. इति वारनक्षत्राशुभयोगाः ।

वज्जिज्ज भरणि चित्ता उत्तरसाढा तहेव य धणिठा ।
उत्तरफग्गुणि पुस्सं रेवइ सुराइसु कमेणं ॥ ४९ ॥

रविवारे भरणी होय, सोमवारे चित्रा होय, मंगळवारे उत्तराषाढा होय, बुधवारे धनिष्ठा होय, गुरुवारे उत्तराफाल्गुनी होय, शुक्रवारे पुष्य होय अने शनिवारे रेवती होय तो ते वर्जवा योग्य छे. ४९ । इति ग्रहजन्मनक्षत्राशुभयोगः । इति अशुभयोगद्वारम् । (३)

अद्धपहरो कुलीउ उवकुलिउ असुहकालहोरा य ।
एए वि हु दिणदोसा वज्जेअव्वा सुहे कज्जे ॥ ५० ॥

अर्धप्रहर, कुलिक, उपकुलिक अने अशुभ काळहोरा ए पण दिवसना दोषो छे, ते शुभ कार्यमां तजवा योग्य छे. ५०.

कुज सिअ रवि बुह सणि ससि गुरुवारेसु विवज्जणिज्जो य ।
अद्धप्पहरो बि २ ति ३ चउ ४ पंच ५ छ ६ सत्त ७ ठमो ८ कमसो ॥५१॥

मंगळवारे बीजो अर्धप्रहर तजवा योग्य छे, शुक्रवारे त्रीजो, रविवारे चोथो, बुधवारे पांचमो, शनिवारे छठो, सोमवारे सातमो अने गुरुवारे आठमो अर्धप्रहर (अर्धो पहोर) तजवा योग्य छे. ५१.

दिणवाराउ जइमा सणिगुरुणो तइयमद्धपहरेसु ।
कुलिउ तह उवकुलिउ जहसंखेणं मुणेयव्वो ॥ ५२ ॥

इष्ट दिवसना वारथी जेटलामो शनिवार होय तेटलामा अर्धप्रहरने कुलिक योग जाणवो अने इष्ट दिवसना वारथी जेटलामो गुरुवार होय तेटलामा अर्धप्रहरने उपकुलिक जाणवो. आ बन्ने योग अशुभ छे. ५२.

आ सु बु सो स गु मं तंवलयं जाणाहि कालहोर त्ति ।
अड्ढाइज्जा घडिया दिणवाराउ गणसु पढमं ॥ ५३ ॥

रविवारे पहेली होरा रविनी, बीजी शुक्रनी, त्रीजी बुधनी, चोथी सोमनी, पांचमी शनिनी, छठी गुरुनी, सातमी मंगळनी ए रीते वलयाकारे छठे छठे वारे गणतां दरेक वारे चोवीश चोवीश होरा होय छे. जे वारे गणवी होय ते वारे पहेली पोतानीज होरा गणवी. ते दरेक होरा अढी घडीनी होय छे. ५३. इति अर्द्धप्रहरादिद्वारम् । (४)

। इति मूलद्वारेषु निर्दोषमिति द्वारम् । ८

संझागयं १ धूमिय २ मालिंगिय ३ दड्ढ ४ विद्ध ५ सोवग्गहं ६ ।
लत्ता ७ पाए ८ क्कग्गल ९ दूसिअं इअ उडुरिक्खाइं ॥ ५४ ॥

संध्यागत १, धूमित २, आलिंगित ३, दग्ध ४, विद्ध ५, सोपग्रह ६, लता ७, पात ८ अने एकार्गल ९, आ नव योगथी दूषित थयेलां दुष्ट नक्षत्र तजवा योग्य छे. ५४.

संझागयं १ रविगयं २ विड्डेरं ३ सग्गहं ४ विलंबं च ५ ।
राहुहयं ६ गहभिन्नं ७ विवज्जए सत्त नक्खत्ते ॥ ५५ ॥

संध्यासमये उदय पामेलुं नक्षत्र १, सूर्य साथे रहेलुं २, विड्वर ३, ग्रह सहित ४, विलंबी ५, राहुथी हणायेलुं ६, ग्रहथी भेदायेलुं ७, ए सात नक्षत्रो शुभ कार्यमां तजवा योग्य छे. ५५.

संझागयंमि कलहो आइच्चगए न होइ निव्वाणी ।
विड्डेरे परविजउं सगहंमि अ विग्गहो होइ ॥ ५६ ॥
दोसो असंगयत्तं होइ कुजुत्तं विलंबिनक्खत्ते ।
राहुहयम्मि अ मरणं गहभिन्ने सोणिअग्गालो ॥ ५७ ॥

संध्यागत नक्षत्रमां कार्य करवाथी कलह थाय, सूर्यगतमां करवाथी निवृत्ति थाय नहीं, विड्डरमां करवाथी सामानो विजय छे, ग्रह सहितमां करवाथी विग्रह (लडाइ) थाय. ५६ । सूर्ये भोगवीने मूकेल एवा विलंबी नक्षत्रमां करवाथी असंगतिपणुं (विवाद) थाय छे, राहुथी हणायेला नक्षत्रमां कार्य करवाथी मरण थाय अने ग्रहथी भेदायेला नक्षत्रमां कार्य करवाथी लोहीनुं वमन थाय. ५७.

अत्थमणे संझागय १ रविगय जहिअं ठिउं उ आइच्चो २ ।
विड्डेरमवद्दारिय ३ सग्गहं कूरग्गहठिअं तु ४ ॥ ५८ ॥
रविरिक्ख पिठउं जं विलंबि ५ राहुहयं जहिं गहणं ६ ।
मझेणं जस्स गहो वच्चइ तं होइ गहभिन्नं ७ ॥ ५९ ॥

सूर्यास्तसमये जे नक्षत्र पूर्व दिशामां उगतुं होय ते संध्यागत कहेवाय छे १, जे नक्षत्रमां सूर्य रहेलो होय ते नक्षत्र रविगत कहेवाय छे २, जे नक्षत्र वक्री ग्रहे अधिष्ठित होय ते विड्डर कहेवाय छे ३, जे नक्षत्र क्रूर ग्रहे अधिष्ठित होय ते ग्रह सहित कहेवाय छे ४, ५८ । सूर्यना नक्षत्रनी पाछळ जे नक्षत्र होय ते विलंबी नक्षत्र कहेवाय छे ५, जे नक्षत्रमां ग्रहण थयुं होय ते नक्षत्र राहुथी हणायेलुं कहेवाय छे (आ ग्रहणनुं नक्षत्र ज्यांसुधी सूर्यवडे न भोगवाय त्यांसुधी अशुभ छे) ६, तथा जे नक्षत्रनी मध्ये कोइ पण ग्रह रहेलो होय ते ग्रहभिन्न—ग्रहथी भेदायेलुं नक्षत्र कहेवाय छे ७. ५९ । इति संध्यागतादीनि ७ ।

सणिमंगलाण पुरो धूमिय २ मालिंगियं च तज्जुत्तं ३ ।
आलिंगियस्स पच्छा जं रिक्खं तं भवे दड्ढं ४ ॥ ६० ॥

शनि अने मंगळनी सन्मुख जे नक्षत्र होय ते धूमित कहेवाय छे २, अने शनि के मंगळथी युक्त जे नक्षत्र होय ते आलिंगित कहेवाय छे ३, तथा आलिंगितनी पाछळ जे नक्षत्र होय ते दग्ध कहेवाय छे ४. ६०.

तिरियं सत्तसलाया उड्ढाउं सत्त ताण मझेणं ।
उवरिमपढमसलागाण कित्तिया तयणु सेसाणि ॥ ६१ ॥

दाउं नक्खत्ताइं दिज्ज गहे तद्दिणंमि जो जत्थ ।
तो जोइज्जा वेहं गणयवरो य चंदरिक्खस्स ॥ ६२ ॥
जइ एगसलागाए एक्कदिसिं हुज्ज चंदनक्खत्तं ।
बीअदिसाए हुज्जा को वि गहो तो भवे वेहो ॥ ६३ ॥

तिरछी (आमी) सात शलाका—लीटीउ करवी, तथा उभी पण सात शलाका करवी, तेनी मध्ये उपरनी प्रथम शलाकाने छेडे कृत्तिका मूकवुं, त्यारपछी बाकीनां नक्षत्रो अनुक्रमे मूकवां. ६१. पछी जे दिवसे कार्य करवानुं होय ते दिवसे जे ग्रहो जे नक्षत्रमां होय ते ग्रहो ते नक्षत्रमां मूकवा. पछी चंद्र नक्षत्रनो (इष्ट नक्षत्रनो) वेध गणकवरे (जोशीए) जोवो. ६२. ते आ रीते—जे चंद्र नक्षत्र (इष्ट नक्षत्र) एक शलाका पर एक दिशामां होय तेनी सामी दिशाए तेज शलाका पर कोइ पण ग्रह होय तो ते वेध कहेवाय छे. ६३.

उत्तरसाढापाए चउत्थए सवणपढमघडिआसु ।
चउसु य अभिईं तत्थ ठिए गहे रोहिणी वेहो ॥ ६४ ॥

उत्तराषाढानुं चोथुं पाद अने श्रवणनी प्रथमनी चार घडी, आटलो समय अभिजित् नक्षत्र छे, तेमां कोइ ग्रह रह्यो होय तो रोहिणी नक्षत्रनी साथे तेनो वेध थाय छे. ६४.

पंच ठ चउदस ठार इगुणवीस डुवीस तेवीसे ।
चउवीसमे अ रिक्खे उवग्गहो सूररिक्खाउ ॥ ६५ ॥

सूर्यना नक्षत्रथी पांचमुं, आठमुं, चौदमुं, अढारमुं, उगणीशमुं, बावीशमुं, त्रेवीशमुं अने चोवीशमुं जे नक्षत्र होय ते उपग्रह कहेवाय छे. ६५ ।इति उपग्रहद्वारम् ।

रवि मंगल गुरु सणिणो डुवालसं १२ तइय ३ छठ ६ अठमयं ८ ।
निअरिक्खाउ कमेणं रिक्खं लत्तंति अग्गिमयं ॥ ६६ ॥

रवि पोताना नक्षत्रथी आगळना बारमा नक्षत्रने लात मारे छे, मंगळ त्रीजाने, गुरु छठाने अने शनि आठमाने लात मारे छे. ६६.

बुह सुक्क राहु पुन्निमससिणो पिठेण निययरिक्खस्स ।
सत्तम ७ पंचम ५ नवमं ९ बावीसइमं २२ च लत्तंति ॥ ६७ ॥

बुध पोताना नक्षत्रथी पाछळना सातमा नक्षत्रने लात मारे छे, शुक्र पांचमाने, राहु नवमाने अने पूर्णिमानो चंद्र पोताना नक्षत्रथी पाछळना बावीशमा नक्षत्रने लात मारे

छे, अर्थात् बुध पोताना नक्षत्रथी आगळना त्रेवीशमा नक्षत्रने, शुक्र पचीशमाने, राहु एकवीशमाने अने चंद्र आठमा नक्षत्रने लात मारे छे. ६७. इति लत्ताद्वारम् ।

अस्सेस मद्दा चित्ता अणुराहा सवण रेवई होइ ।
जइमा रविरिक्खाउ पाउ अस्सिणीइ तइमंमि ॥ ६८ ॥

सूर्यना नक्षत्रथी अश्लेषा, मघा, चित्रा, अनुराधा, श्रवण अने रेवती, आ नक्षत्रो जेटलामां होय, अश्विनी नक्षत्रथी गणतां तेटलामुं नक्षत्र पात नामे कहेवाय छे. जेमके सूर्यनुं नक्षत्र कृत्तिका छे. तेनाथी अश्लेषा सातमुं छे, तो अश्विनीथी सातमुं नक्षत्र पुनर्वसु छे, माटे ते पुनर्वसु पात कहेवाय छे. तथा मघा आठमुं छे, चित्रा बारमुं छे, अनुराधा पंदरमुं छे, श्रवण वीशमुं छे अने रेवती पचीशमुं छे, माटे अनुक्रमे पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, स्वाति, पूर्वाषाढा अने पूर्वाभाद्रपद ए नक्षत्रो पात कहेवाय छे. ए रीते सर्वत्र जाणवुं. ६८. बीजी रीत नीचे प्रमाणे छे.

आइच्चो जत्थ ठिउ तत्तो अणुराह जइमिया होइ ।
तत्तो छठे छठे दस बीए पंचमे पाउ ॥ ६९ ॥

सूर्य जे नक्षत्रमां रह्यो होय ते नक्षत्रथी अनुराधा जेटलामुं होय, अश्विनीथी गणतां तेटलामुं नक्षत्र पात जाणवुं. त्यांथी पाछुं जे छठ्ठुं होय ते पात जाणवुं. त्यांथी वळी जे छठ्ठुं होय ते पात, त्यांथी जे दशमुं होय ते पात, त्यांथी जे बीजुं होय ते पात अने त्यांथी जे पांचमुं होय ते पात जाणवुं. जेमके कृत्तिका नक्षत्रनो सूर्य होय तो कृत्तिकाथी अनुराधा पंदरमुं छे, तेथी अश्विनीथी गणतां पंदरमुं जे स्वाति ते पात थयुं. स्वातिथी छठ्ठुं पूर्वाषाढा पात थयुं. पूर्वाषाढाथी छठ्ठुं पूर्वाभाद्रपद पात थयुं. तेथी दशमुं पुनर्वसु, तेथी बीजुं पुष्य अने तेथी पांचमुं उत्तराफाल्गुनी पात थयुं. एटले उपली रीत प्रमाणेज मळतुं आव्युं. ६९. अहीं अभिजित् गणवानुं नथी एटले सत्यावीश नक्षत्र गणवां.

पढमो छठो नवमो दसमो तह तेरसो अ पन्नरसो ।
सत्तरसे गुणवीसो सत्तावीसो अ एयाणं ॥ ७० ॥
जो जोगो तस्संखं रिक्खं जइमं हविज्ज रविरिक्खा ।
तइमे ससिरिक्खे अस्सिणीइउ इक्कग्गलो होइ ॥ ७१ ॥

विष्कंभादिक सत्यावीश योगमांनो पहेलो, छठो, नवमो, दशमो, तेरमो, पंदरमो, सत्तरमो, ओगणीशमो अने सत्यावीशमो एटला योगमांनो जे योग (शूळ) जेटलामो (९) होय अश्विनीथी तेटलामी (९) संख्यावाळुं नक्षत्र (अश्लेषा) रविना नक्ष-

अथी (पूर्वाषाढाथी) गणतां जेटलामुं (१०) थाय तेटलामुं (१०) अश्विनीथी चंद्रनुं नक्षत्र (ज्येष्ठा) होय तो एकार्गल थाय छे. ७०–७१.

एकार्गलनी बीजी रीत आ प्रमाणे छे.—

तिरियं तेरस रेहा एक्का तम्मज्झगामिणी उड्ढं ।
काऊणं चक्कमिणं सिररिक्खं दिज्ज तस्स सिरे ॥ ७२ ॥
विसमे जोगे इक्कं अट्ठावीसं समंमि दिज्जाहि ।
अद्धी कयंमि तंमि उ जं तं इह मुणसु सिररिक्खं ॥ ७३ ॥
अस्सिणि अणुराहा वि य मियसिर मूलो पुणव्वसू पुस्सो ।
असलेस महा चित्ता विक्खंभाईसु सिररिक्खा ॥ ७४ ॥

आडी तेर रेखा करवी, तेमनी मध्ये एक ऊभी रेखा करवी, ए प्रमाणे चक्र करीने तेना मस्तक पर शिर नक्षत्र देवुं, पछी बीजां नक्षत्रो अनुक्रमे मूकवां. शिर नक्षत्र कयुं समजवुं? तेनी रीत आ प्रमाणे—विष्कंभादिक (अशुभ) योगोमांनो जे योग इष्ट दिवसे होय ते योग जो विषम (एकी) होय तो तेमां एक उमेरवो अने बेकी होय तो तेमां अठ्यावीश उमेरवा. पछी तेने अर्धा करवा. जे शेष रहे तेटलामु नक्षत्र शिर नक्षत्र जाणवुं एटले के तेटलामुं नक्षत्र मस्तक पर मूकवुं. तेनां नाम आ प्रमाणे छे.—विष्कंभ योग होय तो मस्तक पर अश्विनी आवे, अतिगंड होय तो अनुराधा आवे, शूळ होय तो मृगशिर, गंड होय तो मूळ, व्याघात होय तो पुनर्वसु, वज्र होय तो पुष्य, व्यतिपात होय तो अश्लेषा, परिघ होय तो मघा अने वैधृति होय तो चित्रा नक्षत्र मस्तक पर आवे छे. (शुभ योगमां एकार्गल थतोज नथी.) ७२–७३–७४.

सिररिक्खाउ कमेणं सत्तावीसं पि दिज्ज रिक्खाइं ।
रेहासु तासु कमसो रिक्खेसु अ ठवसु ससिसूरे ॥ ७५ ॥
एक्काए रेहाए जइ दुन्नि वि हुंति चंद आइच्चा ।
एक्कग्गलो हु एवं जायइ नक्खत्तदोस त्ति ॥ ७६ ॥

पछी मस्तकना नक्षत्रथी अनुक्रमे ते रेखाउं उपर अनुक्रमे सत्यावीश नक्षत्रो मूकवां. पछी ते नक्षत्रो उपर ज्यां संभवे त्यां सूर्य अने चंद्र मूकवा. ७५. हवे जो एकज रेखा उपर सामसामा सूर्य अने चंद्र बन्ने आव्या होय तो ते एकार्गल योग थयो जाणवो. आ नक्षत्रनो दोषरूप छे. ७६. इति एकार्गलद्वारम् ।

। इति मूलद्वारेषु निर्दोषनक्षत्रद्वारम् । ए

सगुणं पुण विन्नेयं रिक्खं रविजोगसंजुअं तं च ।
रविरिक्खाउ चउत्थं ४ छ ६ न्नव ए दस १० तेरसं १३ वीसं २० ॥ ७७ ॥

सूर्यना नक्षत्रथी चोथुं, छठुं, नवमुं, दशमुं, तेरमुं अने वीशमुं नक्षत्र जो होय तो रवि योग जाणवो. ते रवि योगवडे युक्त एवा नक्षत्रने सगुण नक्षत्र जाणवुं. ७७.

॥ इति सगुणनक्षत्रद्वारम् ॥ १०

॥ इति दिनशुद्धिः ॥ २

इत्तो वि लग्गसुद्धी सा पुण छवग्गसुद्धिउ होइ १ ।
उदयत्थसुद्धिउ २ तह जहुत्तगहबलगुणेणं च ३ ॥ ७८ ॥

हवे लग्नशुद्धि कहीए छीए. ते (लग्नशुद्धि) छ वर्गनी शुद्धिवडे होय छे १, उदय अने अस्तनी शुद्धिवडे होय छे २, तथा यथोक्त ग्रहबळना गुणवडे होय छे. ३. ७८.

गिह १ होरा २ दिक्काणा ३ नव ४ बारस ५ तीस ६ अंसया य जहिं ।
सोमग्गहाण तणपा छवग्गसुद्धी तहिं लग्गे ॥ ७९ ॥

लग्नना गृह १, होरा २, द्रेष्काण ३, नवांश ४, द्वादशांश ५ अने त्रिंशांश ६, ए छएना स्वामी जो सौम्य ग्रह होय तो ते षड्वर्गशुद्धि कहेवाय छे. ७९.

जइ पुण छवग्गसुद्धी संभवइ न चेव कह वि लग्गम्मि ।
तो पंचवग्गसुद्धी विसुद्धिहेऊ वि लग्गस्स ॥ ८० ॥

जो कदाच कोइ पण प्रकारे लग्नमां छ वर्गनी शुद्धि न संभवे तो पांच वर्गनी शुद्धि पण लग्ननी शुद्धिनुं कारणरूप छे. ८०.

एसा य बारसन्हं लग्गाणं जंमि तीसइ विभागे ।
संभवइ तयं वुच्छं लग्गपमाणं कहेऊणं ॥ ८१ ॥

प्रथम लग्ननुं प्रमाण कहीने पछी आ लग्नशुद्धि बार लग्नोमां जे त्रिंशांशमां संभवे छे ते हुं कहीश. ८१.

दोइगुणवीस दोएगवन्न सय तिन्नि तिजुअ तेआला ।
सगयाल सत्ततीसा मेसाइ पला कमुक्कमउ ॥ ८२ ॥

मेष लग्नना २१९ पळ छे, वृषना २५१ पळ छे, मिथुनना ३०३, कर्कना ३४३, सिंहना ३४७ अने कन्याना ३३७ पळ छे, तेथी उत्क्रमे बीजी छ राशिना जाणवा, एटले के

तुलाना ३३७, वृश्चिकना ३४७, धनना ३४३, मकरना ३०३, कुंजना २५१ अने मीनना २१९ पळ छे. ७२.

विस १४ मयराण १४ चउद्से अठमए मीण ८ कक्क ८ कन्नाणं ८ ।
न्नायम्मि बारसे विछियस्स १२ कुंजस्स छवीसे २६ ॥ ७३ ॥
चउवीसमे तुलाए २४ मेसस्सिगवीसमंमि न्नागम्मि २१ ।
सीहस्स ठारसमे १८ धणमिहुणाणं च सत्तरसे १७ ॥ ७४ ॥
इय तीसइन्नागेसु छव्वग्गो हुंति पंचवग्गो वा ।
सोमग्गहाण तणउ हियइछियकज्जसिद्धिकरो ॥ ७५ ॥

वृष अने मकरनुं लग्न होय तो तेनो १४ मो त्रिंशांश, मीन, कर्क अने कन्या लग्न होय तो तेनो आठमो त्रिंशांश, वृश्चिक लग्नो बारमो त्रिंशांश, कुंत्र लग्नो छवीशमो, तुला लग्नो चोवीशमो, मेष लग्नो एकवीशमो, सिंह लग्नो अढारमो अने धन तथा मिथुननुं लग्न होय तो तेना सत्तरमा त्रिंशांशमां छ वर्गनी अथवा पांच वर्गनी शुद्धि होय छे. तेमां जो सौम्य ग्रहो स्वामीउ होय तो ते हृदयना इछित कार्यनी सिद्धि करनार थाय छे. ७३–७४–७५.

अन्ने नवंसगं चिय एगं घित्तूण सोमगहतणयं ।
पन्नणंति लग्गसुद्धिं विणा वि छव्वग्गसुद्धीए ॥ ७६ ॥

केटलाएक आचार्यो छ वर्गनी शुद्धि न होय तोपण सौम्य ग्रह जेनो स्वामी होय एवा एक नवांशनेज ग्रहण करीने लग्नी शुद्धि कहे छे. ७६.

गिह होराई लग्गे गहस्स जं जस्स संतिअं होइ ।
तं संपइ पयमत्थं वुछं अबुहाण बोहत्थं ॥ ७७ ॥

लग्नने विषे गृह तथा होरा विगेरेने तथा जे लग्नो जे स्वामी होय तेने हवे अज्ञात जनना बोधने माटे हुं प्रगटपणे कहुं छुं. ७७.

कुजसुक्कबुहिंदुरविबुहसियकुजगुरुसणीसणीगुरूणं ।
मेसाईआ उ बारस लग्गाण घराइं जहसंखं ॥ ७८ ॥

मंगळ १, शुक्र २, बुध ३, चंद्र ४, रवि ५, बुध ६, शुक्र ७, मंगळ ८, गुरु ९, शनि १०, शनि ११ अने गुरु १२ ए मेष आदिक बार लग्नना ग्रहो अनुक्रमे छे. ७८.

। इति गृहम् ।

लग्गस्सद्धं होरा सा पढमा दिणयरस्स विसमम्मि ।
बीआ य तहिँ ससिणो विवज्जएणं समे लग्गे ॥ ८९ ॥

लग्ननो अर्ध भाग होरा कहेवाय छे. तेमां मेष, मिथुन विगेरे विषम (एकी) राशिमां पहेली होरा सूर्यनी अने बीजी होरा चंद्रनी छे, अने वृष, कर्क विगेरे सम राशिमां तेथी विपरीत एटले पहेली होरा चंद्रनी अने बीजी सूर्यनी छे. ८९. इति होरा ।

दिक्काणो अ तिभागो सो पढमो निययरासिअहिवइणो ।
बीओ पंचमपहुणो तइओ पुण नवमगिहवइणो ॥ ९० ॥

द्रेष्काण ए लग्ननो त्रीजो भाग छे. तेमां पहेलो द्रेष्काण पोतानी राशिना स्वामीनो होय, बीजो तेथी पांचमी राशिना स्वामीनो अने त्रीजो नवमा स्थान (राशि)ना स्वामीनो होय छे. ९०. इति द्रेष्काणः ।

मेसे मेसाईआ विसंमि मयराइया नवंसाओ ।
मिहुणम्मि तुलाईया कक्के कक्काइया हुंति ॥ ९१ ॥
पुण मेसमयरतुलकक्कडाइया चउसु सीहमाईसु ।
एवं धनुहाईसु वि नवंसया हुंति नायव्वा ॥ ९२ ॥

मेष लग्नमां मेषने आदि लइने नव नवांशो गणवा, वृषमां मकरथी गणवा, मिथुनमां तुलाथी अने कर्कमां कर्कथी गणवा. ९१. एज रीते सिंह विगेरे चार राशिमां अने धनु विगेरे चार राशिमां अनुक्रमे मेष, मकर, तुला अने कर्कथी आरंभीने नव नव नवांशो गणवा. ९२. इति नवांशाः ।

बारसभागो पयडो सो पढमो निअरासिणो होइ ।
बीओ बीयस्स उ जाव बार बारसस्स भवे ॥ ९३ ॥

दरेक राशिमां बार बार द्वादशांश होय छे. तेमां पहेलो द्वादशांश पोतानी राशिनोज होय, बीजो पछीनीज राशिनो होय, एम अनुक्रमे गणतां बारमो द्वादशांश पोत-पोतानी राशिथी बारमी राशिनो आवे छे. ९३. इति द्वादशांशाः ।

कुजसणिगुरुबुहसुक्का पण ५ पण ५ अड ८ सत्त ७ पंच ५ अंसाणं ।
विसमे तीसंसं पहू विवज्जएणं समे लग्गे ॥ ९४ ॥

दरेक राशिमां त्रीश त्रीश त्रिंशांश होय छे. तेमां विषम राशिमां पहेला पांच त्रिंशांशोनो स्वामी मंगळ छे, बीजा पांचनो शनि छे, त्यारपछीना आठनो गुरु छे, त्यार-

पछीना सातनो बुध अने त्यारपछीना (छेल्ला) पांच त्रिंशांशोनो स्वामी शुक्र छे, अने सम राशिमां एथी विपरीत जाणवुं, एटले के ५-५-८-७-५ अंशोना स्वामी अनुक्रमे शुक्र, बुध, गुरु, शनि अने मंगळ जाणवा. ९४. इति त्रिंशांशाः ।

ससहरगुरुबुहसुक्का सोमा सामन्नउं मुणेयवा ।
सेसा य हुंति कूरा तज्जुअ बुह खीणससिणो अ ॥ ९५ ॥

चंद्र, गुरु, बुध अने शुक्र ए चार ग्रहो सामान्य रीते सौम्य जाणवा, अने बाकीना (रवि, मंगळ, शनि) क्रूर जाणवा, तथा ते क्रूर ग्रहे सहित बुध होय तो ते क्रूर जाणवो अने क्षीण चंद्रने पण क्रूर जाणवो. ९५.

। इति षड्वर्गशुद्धिः ।

उदयत्थसुद्धिमिन्हिं जणामि उदउं नवंसगो इत्थ ।
तम्मिय लग्गविइन्ने सनाहदिठे उदयसुद्धी ॥ ९६ ॥

हवे उदयास्तनी शुद्धि कहुं छुं. इहां ते लग्नमां वर्त्ततो जे नवमांश होय तेनो स्वामी लग्नने देखे ते उदयशुद्धि जाणवी. ९६.

लग्गे नवंसगो जो तस्सत्तमठाण अहिवई पिछे ।
लग्गा सत्तमठाणं जइ तो इह अत्थसुद्धि त्ति ॥ ९७ ॥

लग्नमां जे नवांशक होय तेनाथी सातमा स्थाननो स्वामी जो लग्नथी सातमा स्थानने जुए तो अहीं ते अस्तशुद्धि कहेवाय छे. ९७.

वयगहणपइठासु उदयत्थविसुद्धि वज्जिअं पि सुहं ।
मन्नंति केइ लग्गं तं च मयं बहुमयं नेह ॥ ९८ ॥

व्रतग्रहण (दीक्षा) तथा प्रतिष्ठादिकमां उदयास्तनी विशुद्धि विना पण केटलाएक लग्नने शुभ माने छे, पण ते मत घणाने संमत नथी. ९८.

इह उदयत्थविसुद्धी गहदिठीए विणा न संजवइ ।
एएण पसंगेणं गहदिठी संपवक्खामि ॥ ९९ ॥

आ उदयास्तनी शुद्धि ग्रहनी दृष्टि जाण्या विना संभवती नथी, तेथी आ प्रसंगे हुं ग्रहनी दृष्टि कहुं छुं. ९९.

सठाणाउ दसमं ठाणं तइयं च पायदिठीए ।
पिछंति गहा नवमं सपंचमं अद्ध दिठीए ॥ १०० ॥

पउणाए दिठीए चउत्थयं अठमं च पिछंति ।
सव्वाए सत्तमयं सुहासुहफलं च दिठिसमं ॥ १०१ ॥

सर्व ग्रहो पोताना स्थानथी दशमा तथा त्रीजा स्थानने एक पाद दृष्टिए जुए छे, नवमा तथा पांचमा स्थानने बे पाद दृष्टिए जुए छे, चोथा तथा आठमा स्थानने पोणी एटले त्रण पाद दृष्टिए जुए छे, अने सातमा स्थानने सर्व एटले चार पाद दृष्टिए जुए छे. आ सर्वनुं शुभाशुभ फळ दृष्टिनी जेवुं जाणवुं. १००–१०१. इति उदयास्तशुद्धिः ।

लग्गस्स गहा बलिणो हवंति ते जत्थ संठिया ठाणे ।
तं वुछं दिरकाए पढमं पछा पइठाए ॥ १०२ ॥

ते लग्नना ग्रहो जे स्थाने रहीने बळवान् होय छे ते प्रथम हुं दीक्षाने आश्रीने कहुं छुं, अने पछी प्रतिष्ठाने आश्रीने कहीश. १०२.

दिरका लग्गे दो पंच छठ इक्कारसो रवि सुहउ ।
चंदो बीउ तइउ छठो इक्कारसो तहय ॥ १०३ ॥

दीक्षा लग्नमां रवि बीजे, पांचमे, छठ्ठे के अगीयारमे होय तो ते शुभ छे, चंद्र बीजे, त्रीजे, छठ्ठे के अगीयारमे शुभ छे. १०३.

तइउ छठो दसमो इक्कारसमो कुजो बुहो अ सुहो ।
लग्गगउ चउ पंच सत्तम नव दसमगो अ गुरू ॥ १०४ ॥

मंगळ अने बुध लग्नथी त्रीजे, छठ्ठे, दशमे के अगीयारमे होय तो शुभ छे, गुरु पहेले चोथे, पांचमे, सातमे, नवमे के दशमे शुभ छे. १०४.

तइउ छठो नवमो डुवालसो सुंदरो भवे सुक्को ।
बीउ पंचमउ अठमो अ इक्कारसो अ सणी ॥ १०५ ॥

शुक्र त्रीजे, छठ्ठे, नवमे के बारमे होय तो सारो, अने शनि बीजे, पांचमे, आठमे के अगीयारमे होय तो शुभ छे. १०५.

उपर कहेलानेज संक्षेपथी कहे छे.—

डुपणछठो डुतिछठे तिछदसि तिछदसि तिकोणकिंदेसु ।
तिछनवबारसि डुपणठ सविइगारेसियं मुत्तुं ॥ १०६ ॥

लग्नथी रवि बीजे, पांचमे, छठ्ठे सारो, चंद्र बीजे, त्रीजे, छठ्ठे शुभ, मंगळ त्रीजे, छठ्ठे, दशमे सारो, बुध त्रीजे, छठ्ठे, दशमे सारो, गुरु त्रिकोण एटले नवमे, पांचमे तथा केंद्र

एटले पहेले, चोथे, सातमे अने दशमे सारो, शुक्र त्रीजे, छठे, नवमे अने बारमे सारो, तथा शनि बीजे, पांचमे अने आठमे सारो. शुक्रने छोडीने सर्वे ग्रहो अगीयारमे स्थाने सारा. १०६.

गुरु बुह संसिसूराणं छवग्गो इह सुहो न सेसाणं ।
जा उण छवग्गसुद्धी पुव्वुत्ता सा पइठाए ॥ १०७ ॥

गुरु, बुध, चंद्र (शनि) अने रविनो छ वर्ग (छ वर्गनी शुद्धि) अहीं (दीक्षामां) शुभ छे, पण बीजा ग्रहोनी शुद्धि शुभ नथी. तथा पूर्वे जे छ वर्गनी शुद्धि कही छे ते प्रतिष्ठा आश्रीने छे. १०७.

अहवा वि मज्झिमबलं काऊण सणिं गुरुं च बलवंतं ।
अबलं शुक्कं लग्गे तो दिक्खं दिज्ज सीसस्स ॥ १०८ ॥

अथवा तो लग्नमां शनिने मध्यम बळवाळो करीने, गुरुने बळवान् करीने तथा शुक्रने निर्बळ करीने शिष्यने दीक्षा देवी. १०८.

दु पण छ अठेक्कारस ठाणे मज्झिमबलो सणी होइ ।
लग्गगउ चउ सत्तम दसमो अ गुरू भवे बलवं ॥ १०९ ॥

बीजे, पांचमे, छठे, आठमे अने अगीयारमे स्थाने रहेलो शनि मध्यम बळवाळो होय छे, अने गुरु पहेले, चोथे, सातमे तथा दशमे होय तो ते बळवान् छे. १०९

छठो दुवालसो तह अबलो सुक्को सुहो वयग्गहणे ।
दो तइय पंच छठिक्कारसमो तह बुहो सुहउ ॥ ११० ॥

तथा छठो अने बारमो शुक्र निर्बळ छे. ते व्रतग्रहणमां शुभ छे, तथा बुध बीजे, त्रीजे, पांचमे, छठे के अगीयारमे होय तो ते शुभ छे. ११०.

तइए छठे दसमे इक्कारसमम्मि मंगले लग्गे ।
दिक्खं पत्तो सत्तो जायइ बहुनाण तव जुत्तो ॥ १११ ॥

त्रीजे, छठे, दशमे के अगीयारमे मंगळ होय एवा लग्नने विषे दीक्षित थयेल सत्त्व (साधु) बहु ज्ञान अने तपवडे युक्त थाय छे. १११.

सुक्कंगारयमंदाण सत्तमे ससहरे गहियदिक्खो ।
पीडिज्जए अवस्सं सत्थदुसीलत्तवाहीहिं ॥ ११२ ॥

शुक्र, मंगळ अने शनिथी सातमे चंद्र होय अने जो दीक्षा लीधी होय तो शस्त्र, दुःशीलपणुं अने व्याधिवडे अवश्य ते पीडाय छे. ११२.

---

१ गुरु बुह सणि सूराणं इति प्रत्यन्तरे.

इय दिक्खाकुंमलिया दिसिमित्तं दंसिआ मए एवं ।
वुच्छं इउ पइठाकुंमलियमहं समासेणं ॥ ११३ ॥

आ प्रमाणे दीक्षानी कुंमळी में दिग्मात्र देखाडी छे. हवे प्रतिष्ठाकुंमळीने संक्षेपथी कहुं छुं. ११३.

गुरुबुहसुक्का सुहया लग्गगया मज्झिमो ससी लग्गे ।
सूरंगारयसणिणो वज्जेयव्वा पयत्तेणं ॥ ११४ ॥

गुरु, बुध अने शुक्र लग्नमां रह्या होय तो ते शुभ छे, चंद्र रह्यो होय तो ते मध्यम छे अने रवि, मंगळ अने शनिने लग्नमां प्रयत्नथी वर्जवा, एटले के तेउ अशुभ छे. ११४

गुरुबुहससिणो सुहया बीए ठाणम्मि मज्झिमो सुक्को ।
कज्जस्स विणासयरा दिणयरसणिमंगला बीआ ॥ ११५ ॥

बीजा स्थानमां गुरु, बुध अने चंद्र रह्या होय तो ते शुभ छे, शुक्र होय तो ते मध्यम छे अने सूर्य, शनि अने मंगळ कार्यनो विनाश करनारा छे, एटले के तेउ अशुभ छे. ११५.

तइयम्मि सुहा रविससिबुहभोमसणिच्चरा न संदेहो ।
मज्झिमउ सुरमंती सुक्को उ असुंदरो तइउ ॥ ११६ ॥

त्रीजा स्थानमां रहेला रवि, चंद्र, बुध, मंगळ अने शनि शुभ छे, तेमां कांइ पण संदेह नथी. गुरु होय तो ते मध्यम छे अने शुक्र अशुभ छे. ११६.

लग्गाउ चउत्थगया गुरुबुहसुक्का सुहावहा भणिया ।
मज्झत्थो अ चउत्थो चंदो सेसा गहा असुहा ॥ ११७ ॥

लग्नथी चोथा स्थानमां रहेला गुरु, बुध अने शुक्रने शुभावह कह्या छे, चोथे स्थाने रहेलो चंद्र मध्यम छे अने बाकीना एटले रवि, मंगळ अने शनि अशुभ छे. ११७.

रविससिकुजसुक्कसणी पंचमठाणम्मि मज्झिमा नेआ ।
बुहगुरुणो पुण दुन्नि वि सव्वत्थपसाहया तत्थ ॥ ११८ ॥

लग्नथी पांचमे स्थाने रवि, चंद्र, मंगळ, शुक्र अने शनि होय तो ते मध्यम जाणवा, अने बुध तथा गुरु ए बे ग्रहो पांचमे स्थाने होय तो सर्व अर्थना साधक छे. ११८.

रविससिकुजगुरुसणिणो छट्ठे ठाणम्मि संठिआ सुहया ।
सुक्कबुहा पुण छट्ठा मज्झिमया हुंति नायव्वा ॥ ११९ ॥

छठे स्थाने रहेला रवि, चंद्र, मंगळ, गुरु अने शनि शुभकारक छे, अने शुक्र तथा बुध छठे स्थाने होय तो ते मध्यम जाणवा. ११९.

सत्तमठाणम्मि गुरु सुहउं सियससिबुहा य मज्झत्था ।
सणिसूरमंगला पुण वज्जेअव्वा पयत्तेणं ॥ १२० ॥

सातमे स्थाने गुरु शुभ छे, शुक्र, चंद्र अने बुध मध्यम छे, तथा शनि, सूर्य अने मंगळ सर्व प्रयत्ने वर्जवा योग्य छे—अशुभ छे. १२०.

आइच्च सोममंगल बुहगुरुसुक्का विवज्जणिज्जाउं ।
अट्ठमठाणम्मि ठिया (गया) सणिच्छरो मज्झिमो भणिउं ॥ १२१ ॥

आठमा स्थाने रहेला सूर्य, चंद्र, मंगळ, बुध, गुरु अने शुक्र वर्जवा योग्य छे अने शनिने मध्यम कह्यो छे. १२१.

नवमम्मि सुहा भणिया सुक्कगुरू मज्झिमा य बुहससिणो ।
वज्जेयव्वा य सया सणिमंगलदिणयरा नवमा ॥ १२२ ॥

नवमे स्थाने शुक्र अने गुरु शुभ कह्या छे, बुध अने चंद्र मध्यम कह्या छे, अने नवमे स्थाने रहेला शनि, मंगळ अने रवि वर्जवा योग्य छे. १२२.

बुहगुरुसुक्का तिन्नि वि दसमम्मि हवंति कज्जसिद्धिकरा ।
ससिसणिणो मज्झत्था असुहा रविमंगला दुन्नि ॥ १२३ ॥

दशमे स्थाने रहेला बुध, गुरु अने शुक्र ए त्रणे कार्यनी सिद्धि करनारा छे, चंद्र अने शनि मध्यम छे, अने रवि तथा मंगळ ए बे अशुभ छे. १२३.

सूराईया सत्त वि इक्कारसगा उ कज्जसिद्धिकरा ।
बारसमा पुण सव्वे विन्नेया अत्थहाणिकरा ॥ १२४ ॥

रवि विगेरे साते ग्रहो अगीयारमा होय तो कार्यनी सिद्धि करनारा छे, अने बारमे स्थाने होय तो ते सर्वे कार्यनी हानि करनारा छे. १२४.

हवे रवि विगेरे साते ग्रहोना शुभ स्थाननो संग्रह अनुक्रमे कहे छे.—

छट्ठे दुगे अ छट्ठे आइम पण दसमयम्मि अति अट्ठे ।
चउ नव दसगे ति छगे सव्वेगारे न बारसमे ॥ १२५ ॥

रवि छठ्ठे स्थाने होय तो सारो छे, चंद्र बीजे स्थाने, मंगळ छठे स्थाने, बुध पहेलां पांच एटले पहेले, बीजे, त्रीजे, चोथे, पांचमे अने दशमे, गुरु त्रीजुं अने आठमुं मूकीने

अर्थात् पहेले, बीजे, चोथे, पांचमे, छठे, सातमे, नवमे अने दशमे स्थाने शुभ, शुक्र चोथे, नवमे अने दशमे, अने शनि त्रीजे अने छठे सारो छे. सर्व ग्रहो अगीयारमे स्थाने सारा छे अने बारमे स्थाने अशुभ छे. १२५.

अथवा.

अहवा इग डुग चउ पंच नवम दसमा सुहा सोमा ।

कूरा छठा चंदो बीउ सव्वे वि इक्कारा ॥ १२६ ॥

अथवा तो सौम्य ग्रहो (चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र) पहेले, बीजे, चोथे, पांचमे, नवमे अने दशमे स्थाने शुभ छे, क्रूर ग्रहो (रवि, शनि, मंगळ) छठे स्थाने शुभ छे, चंद्र बीजे स्थाने शुभ छे, तथा सर्व ग्रहो अगीयारमे स्थाने शुभ छे. १२६.

इय बिंबपइठा सूरिठवण रायाभिसेअ वीवाहे ।

अन्ने वि य सुहकज्जेसुं कुंडलिया कज्जसिद्धिकरा ॥ १२७ ॥

आ प्रमाणेनी कुंडळी बिंबप्रतिष्ठा, सूरिपदनी स्थापना, राजाभिषेक, विवाह अने बीजां पण शुभ कार्योमां कार्यनी सिद्धि करनारी छे. १२७.

जइ पुण तुरियं कज्जं हविज्ज लग्गं न लब्भए सुद्धं ।

तो धुवपयछायाई निच्चं लग्गं गहेयव्वं ॥ १२८ ॥

जो कदाच शीघ्रताथी कार्य करवुं होय अने शुद्ध लग्न न मळतुं होय तो ध्रुव अने पदछायादिके करीने हमेशनुं लग्न ग्रहण करवुं. १२८.

तिरियं ठियम्मि धुवए करिज्ज दिक्खा पइठमाईयं ।

उद्धठियम्मि तम्मि य कुणसु धयारोवणप्पमुहं ॥ १२९ ॥

ध्रुवने तिरछो (आडो) राखीने दीक्षा अने प्रतिष्ठादिक कार्य करवां, अने ते ध्रुव ऊर्ध्व (ऊभो) रह्यो होय तो ध्वजारोपण आदि कार्य करवां. १२९. इति ध्रुवलग्नं ।

तणुछायाइपयाइं सणिससिसुक्केसु अद्धनव लिज्जा ।

अठ बुहे नव भोमे सत्तिक्कारस गुरुरवीसु ॥ १३० ॥

शनि, सोम अने शुक्रवारे शरीरनी छायाना साडाआठ पगलां लेवां, बुधवारे आठ, मंगळवारे नव, गुरुवारे सात अने रविवारे अगीयार पगलां लेवां. ते वखते शुभ कार्य करवुं. १३०.

एयं छायालग्गं बुहेहिं सवुत्तमं समक्खायं ।

सव्वविसुद्धे वि दिणे सुहावहं सव्वकज्जेसु ॥ १३१ ॥

आ गाया लग्नने विद्वानोए सर्वोत्तम कह्युं छे, अने सर्व विशुद्ध दिवसे पण आ लग्न सर्व कार्यमां सुखकारक छे. १३१.

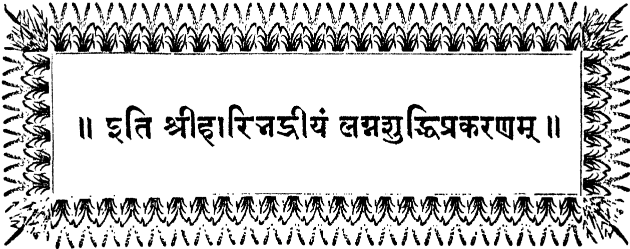
इय सुंदरे वि लग्गे सुहसउणबलेण कुणसु किच्चाइं ।
अहव निमित्तबलेणं वयणमिणं हारिभद्दं ति ॥ १३२ ॥

आ प्रमाणे सुंदर लग्नने विषे पण शुभ शकुनना बळे करीने अथवा शुभ निमित्तना बळे करीने कार्यो करवां. ए प्रमाणे चौदसो चुमाळीश ग्रंथकर्ता श्री हरिभद्र सूरि-महाराजनुं वचन छे. १३२.

इय तिविहसुद्धिजुत्तं तीए विउत्तं च संसियं लग्गं ।
जं किंचि इह अजुत्तं वुत्तं सोहिंतु तं विउसा ॥ १३३ ॥

आ प्रमाणे त्रण प्रकारनी शुद्धिथी युक्त तथा त्रण अशुद्धिथी वियुक्त (रहित) एवुं लग्न कह्युं. अहीं जे कांइ अयोग्य कह्युं होय ते विद्वानोए शोधवुं. १३३.

॥ इति श्रीहारिभद्रीयं लग्नशुद्धिप्रकरणम् ॥



॥ रत्नशेखरसूरिविरचिता ॥

। दिनशुद्धिः ।

॥ अथ रत्नशेखरसूरिविरचिता ॥

॥ दिनशुद्धिः ॥

जोइमयं जोइगुरुं वीरं नमिऊण जोइदीवाउ ।
दिणसुद्धि दीविअमिणं पयमत्थं चेव पयडेमि ॥ १ ॥

ज्योतिषमय अने ज्योतिषना गुरुरूप श्रीमहावीर स्वामीने नमस्कार करीने ज्योतिषरूपी दीवा थकी आ प्रगट अर्थवाळा दिनशुद्धि नामना दीपकने हुं प्रगट करुं छुं. १.

प्रथम वारना अधिपतिउने तथा तेनी सौम्य विगेरे संज्ञाने कहे छे.

रविचंदभोमबुहगुरुसुक्कसणीया कमेण दिणनाहा ।
चं सु गु सोमा मं स र कूराय बुहो सहायसमो ॥ २ ॥

रवि, चंद्र, जौम, बुध, गुरु, शुक्र अने शनि ए अनुक्रमे वारोना स्वामी छे. तेमां चंद्र, शुक्र अने गुरु ए त्रण सौम्य छे, मंगळ, शनि अने रवि ए त्रण क्रूर छे, तथा बुध सहायनी जेवो छे, एटले के सौम्य ग्रह साथे रह्यो होय तो सौम्य छे, अने क्रूर साथे रह्यो होय तो क्रूर छे, तथा एकलोज होय तो ते सौम्यज छे. २.

हवे वारने विषे होराउने कहे छे.—

चं स गु मं र सु बु वलयकमसो दिणवारमाइ उ किच्चा ।
सड्ढघमी दोमाणा होराहिव पुन्नफलजणया ॥ ३ ॥

अढी घमीनी एक होरा होवाथी एक रात्रि दिवसमां चोवीश होरा आवे छे. ते होराउना स्वामी आ प्रमाणे छे.—चंद्र, शनि, गुरु, मंगळ, रवि, शुक्र अने बुध आ वलयाकारना अनुक्रमथी दिवसना वारने प्रथम करीने अढी घमीना प्रमाणवाळी होराना अधिपतिउ छे, एटले के सोमवारे पहेली होरा चंद्रनी, बीजी शनिनी, त्रीजी गुरुनी, चोथी मंगळनी, पांचमी रविनी, छठी शुक्रनी अने सातमी बुधनी. पछी आठमी चंद्रनी, नवमी शनिनी एम अनुक्रमे चोवीशे होराना स्वामीउ जाणवा. एज रीते शनिवारे पहेली होरा शनिनी, बीजी गुरुनी, त्रीजी मंगळनी एम गणतां सातमी चंद्रनी, पछी फरीने आठमी शनिनी विगेरे. ए रीते जे दिवसे जे वार होय ते वारना नामनी पहेली होरा गणीने त्यारपछीना आ वलयमां गणावेला अनुक्रमे स्वामीउ जाणवा. आ होराना स्वामीउ वारना पूर्ण फळने आपनारा छे, एटले के सौम्य ग्रहनो

वार अने सौम्य ग्रहनी होरा ए बन्नेमां करेलुं कार्य संपूर्ण शुभ फळ आपे छे. (होरानो अधिपति सारो न होय तो वारनुं फळ $\frac{3}{4}$ मळे छे, एम अन्य ग्रन्थोमां कह्युं छे.) ३.

हवे वारनी प्रवृत्ति क्यारे थाय छे ? ते कहे छे.—

विछिअकुंभाइतिए निसिमुहि विसधणुहि कक्कितुलिमझे ।
मकमिहुण कन्नसिंहे निसि अंते संकमइ वारो ॥ ४ ॥

वृश्चिक अने कुंभादिक त्रण एटले कुंभ, मीन अने मेष आ चार संक्रांतिमां वारनी प्रवृत्ति रात्रिना प्रारंभे थाय छे, वृष, धन, कर्क अने तुला ए चार संक्रांतिमां रात्रिना मध्य समये वारनी प्रवृत्ति थाय छे, तथा मकर, मिथुन, कन्या अने सिंह ए चार संक्रांतिमां रात्रिने अंते वार प्रवर्ते छे. ४.

हवे वारने आश्रीने सुवेळाने कहे छे.—

चउघडिअ सुवेला एग दो छच्च सूरे, पण इग अठ सोमे अठ चऊ सत्त भोमे।
छ तिअ अठ बुहंमी पंच दो सत्त जीवे, छ अ डिग चउ सुक्के तिन्नि सत्तठ पंच॥

रविवारे पहेलुं, बीजुं अने छट्ठुं ए त्रण चोघडीयां सुवेळा कहेवाय छे, सोमवारे पांचमुं, पहेलुं अने आठमुं चोघडीयुं सुवेळा छे, मंगळवारे आठमुं, चोथुं अने सातमुं, बुधवारे छट्ठुं, त्रीजुं अने आठमुं, गुरुवारे पांचमुं, बीजुं अने सातमुं, शुक्रवारे छट्ठुं, आठमुं, पहेलुं अने चोथुं, तथा शनिवारे त्रीजुं, सातमुं, आठमुं अने पांचमुं चोघडीयुं सुवेळा छे. ५.

हवे कुलिक, कंटक, उपकुलिक तथा काळवेळाने कहे छे.—

रविबुहसुक्का सत्तउ हायंता कुलिअ कंट उवकुलिआ ।
अठ ति छ इग चउ सग दो सूराइसु कालवेलाउ ॥ ६ ॥

रविवारे सातमो अर्धप्रहर (चोघडीयुं) कुलिक योग कहेवाय छे, बुधवारे सातमो अर्धप्रहर कंटक योग कहेवाय छे, अने शुक्रवारे सातमो अर्धप्रहर उपकुलिक योग कहेवाय छे. त्यारपछीना वारे एक एक अर्धप्रहरनी हानि करीने कुलिक, कंटक अने उपकुलिक योग कहेवा. ते नीचेना यंत्रथी जाणवा.

योग	रवि	सोम	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	
कुलिक	७	६	५	४	३	२	१	अर्धप्रहर.
कंटक	३	२	१	७	६	५	४	अर्धप्रहर.
उपकुलिक	५	४	३	२	१	७	६	अर्धप्रहर.

रविवारे आठमो अर्धप्रहर काळवेळा कहेवाय छे, सोमवारे त्रीजो अर्धप्रहर, मंगळवारे छठो, बुधवारे पहेलो, गुरुवारे चोथो, शुक्रवारे सातमो अने शनिवारे बीजो अर्धप्रहर काळवेळा कहेवाय छे. ६.

हवे वर्ज्य अर्धप्रहर तथा गमनादिकमां वर्ज्य दिशाने कहे छे.—

ता चउजुअ अद्धपहरा तेसिं सोलट्ठदुतीसदुइगचऊ ।
चउसट्ठी मज्झपला हेया पुव्वाउ दिसि छट्ठी ॥ ७ ॥

उपर कहेली काळवेळामां चार जेळवीए तो ते वर्ज्य अर्धप्रहर थाय छे, अने ते वर्ज्य अर्धप्रहरना मध्यना रविवारथी अनुक्रमे सोळ, आठ, बत्रीश, बे, एक, चार, अने चोसठ पळो पूर्वादिक छठी छठी दिशाए यात्रादिकमां वर्जवा योग्य छे. ते नीचेना यत्रथी जाणवुं. ७.

	रवि	सोम	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	
काळवेळा	८	३	६	१	४	७	२	अर्धप्रहर.
वर्ज्य अर्धप्रहर	४	७	२	५	८	३	६	
अर्धप्रहरना मध्य पळो	१६	८	३२	२	१	४	६४	
यात्रादिकमां वर्जवा.	पूर्व	वायव्य	दक्षिण	ईशान	पश्चिम	अग्नि	उत्तर	

॥ इति वाराः ॥

हवे तिथिद्वार कहे छे. तेमां प्रथम तिथिओनां नंदादिक नामो कहे छे.—

नंदा भद्दा य जया रित्ता पुन्ना य तिहि सनामफला ।
पडिवइ छट्ठि इगारसि पमुहा उ कमेण नायव्वा ॥ ८ ॥

नंदा, भद्रा, जया, रिक्ता अने पूर्णा ए नामनी तिथिओ पोतानां नामने सदृश फळ आपनारी छे. तेमां पडवो, छठ अने अगीयारश ए नंदा कहेवाय छे. एज अनुक्रमे भद्रादिक संज्ञा पण जाणवी. ते यंत्रथी जाणवी. ८.

	नंदा	भद्रा	जया	रिक्ता	पूर्णा
तिथि	१	२	३	४	५
तिथि	६	७	८	९	१०
तिथि	११	१२	१३	१४	१५

शुभ कार्यमां वर्ज्य तिथिओ.—

छट्ठी रित्तट्ठमी बारसी अ अमावसा गयतिही उ ।
वुड्ढतिहि कूरदड्ढा वज्जिज्ज सुहेसु कम्मेसु ॥ ९ ॥

छठ, रिक्ता (४-९-१४), आठम, बारश, अमावास्या, क्षय तिथि, वृद्धि तिथि, क्रूर तिथि अने दग्ध तिथि, आटली तिथिओ शुभ कार्यमां वर्जवा योग्य छे. ९.

मेसाइ चउसु चउरो तिही कमेणं च पुन्न सव्वेसु ।
एवं परउ सकूररासि असुहा तिही वज्जा ॥ १० ॥

मेषादिक चार संक्रांतिमां कोइ क्रूर ग्रह होय तो अनुक्रमे पहेली चार तिथिओ पूर्णा तिथि सहित वर्ज्य छे. ए रीते आगळ पण जाणवुं, एटले के मेष संक्रांतिमां क्रूर ग्रह होयतो एकम अने पांचम वर्जवा योग्य छे, वृष संक्रांतिमां क्रूर ग्रह होय तो बीज अने पांचम, मिथुन संक्रांतिमां क्रूर ग्रह होय तो त्रीज अने पांचम तथा कर्क संक्रांतिमां क्रूर ग्रह होय तो चोथ अने पांचम वर्जवा योग्य छे. एज रीते सिंह, कन्या, तुला अने वृश्चिक संक्रांतिमां क्रूर ग्रह होय तो अनुक्रमे छठ, सातम, आठम अने नोम ए तिथिओ पूर्णा तिथि दशम सहित वर्ज्य छे. एज प्रमाणे धन, मकर, कुंभ अने मीन संक्रांतिमां पण क्रूर ग्रह होय तो अनुक्रमे अगीयारश, बारश, तेरश अने चौदश ए तिथिओ पूर्णिमा सहित वर्जवा योग्य छे. एवी रीते क्रूर ग्रहो सहित राशिओनी अशुभ तिथिओ शुभ कार्यमां वर्ज्य छे. १०.

सूर्यदग्धा तिथिओ.—

छग चउ अट्ठमि छट्ठी दसमट्ठमि बार दसमि बीया उ ।
बारसि चउत्थि बीआ मेसाइसु सूरदड्ढदिणा ॥ ११ ॥

मेष राशिनी संक्रांतिमां छठ दग्धा तिथि छे, वृष संक्रांतिमां चोथ, मिथुनमां आठम, कर्कमां छठ, सिंह संक्रांतिमां दशम, कन्या संक्रांतिमां आठम, तुला संक्रांतिमां बारश, वृश्चिक संक्रांतिमां दशम, धन संक्रांतिमां बीज, मकर संक्रांतिमां बारश, कुंभ संक्रांतिमां चोथ अने मीन संक्रांतिमां बीज ए सूर्यदग्धा तिथिओ कहेवाय छे. ११.

। यंत्रम् ।

धन मीन संक्रांतिमां २, वृष कुंभ संक्रांतिमां ४
मेष कर्क संक्रांतिमां ६, कन्या मिथुन संक्रांतिमां ८
वृश्चिक सिंह संक्रांतिमां १०, मकर तुला संक्रांतिमां १२

॥ इति तिथिद्वारम् ॥

हवे करणद्वार कहे छे.—

सउणि चउप्पय नागा किंत्थुग्घा किण्ह चउद्दसि निसाओ ।
थिरकरण तीस घडिआ परओ चलकरण एयाइं ॥ १२ ॥

बव-बालव-कोलव-तेतिलक्ख गर-वणिअ-विट्ठिनामाणो ।
पायं सव्वे वि सुहा एगा विट्ठी महापावा ॥ १३ ॥

शकुनि, चतुष्पाद, नाग अने किंस्तुघ्न ए चार करणो स्थिर छे. ते दरेक त्रीश त्रीश घडीनां होय छे. तेमां पहेलुं शकुनि कृष्ण चतुर्दशीनी रात्रे होय छे, बीजुं चतुष्पाद अमावास्याने दिवसे होय छे, त्रीजुं नाग अमावास्यानी रात्रिए होय छे अने चोथुं किंस्तुघ्न शुक्लपक्षना प्रतिपद्ने दिवसे होय छे, त्यारपछी चर करणोनां नाम आ प्रमाणे छे.—बव, बालव, कौलव, तैतिल, गर, वणिज अने विष्टि. प्राये आ सर्वे (स्थिर अने चर) करणो शुभ छे, पण एक विष्टि महा पापा—महादुष्ट छे. १२–१३.

विष्टि क्यारे होय छे ते कहे छे.—

किण्हे पक्खे दिणे भद्दा सत्तमी अ चउद्दसी ।
रत्तिं दसमि तीआए सुक्के एगदिणुत्तरा ॥ १४ ॥

कृष्णपक्षमां सातम अने चौदशना दिवसने विषे भद्रा (विष्टि) होय छे अने दशम तथा त्रीजनी रात्रिए भद्रा (विष्टि) होय छे. अने शुक्लपक्षमां एक दिवस पछी आवे छे, एटले के आठम अने पूनमना दिवसे तथा अगीयारश अने चोथनी रात्रिए भद्रा होय छे. १४.

भद्रा कइ तिथिए कया पहोरमां कइ दिशाए सन्मुख होय ते कहे छे.—

चउद्दसी अट्ठमि सत्तमीए राका चउत्थी दसमीइ भद्दा ।
एगारसी तीअ कमा दिसाहिं तस्संखजामे भिमुहाऽतिपावा॥१५॥

चौदशे पहेला पहोरमां पूर्व दिशाए भद्रा सन्मुख होय छे, आठमे अग्नि खूणामां बीजे पहोरे सन्मुख होय छे, सातमे त्रीजा पहोरे दक्षिण दिशामां, पूर्णिमाए चोथा पहोरे नैर्ऋत्य खूणामां, चोथे पांचमे पहोरे पश्चिम दिशामां, दशमे छठ्ठे पहोरे वायव्य खूणामां, अगीयारशे सातमे पहोरे उत्तर दिशामां अने त्रीजे आठमे पहोरे ईशान खूणामां भद्रा सन्मुख होय छे. आ सन्मुख भद्रा अति दुष्ट छे. १५.

यंत्र

तिथि	प्रहर	दिशा
१४	१	पूर्व
८	२	अग्नि
७	३	दक्षिण
१५	४	नैर्ऋत्य
४	५	पश्चिम
१०	६	वायव्य
११	७	उत्तर
३	८	ईशान

भद्रानां अंग तथा तेनुं फळ कहे छे.—

पण डुग दस पण पण तिअ विठ्ठिघडी वयण कंठ उरु नाही ।
कडि पुछगा य सिद्धी खय निस्स कुबुद्धि कलह विजयकरा ॥१६॥

विष्टि (भद्रा) पहेली पांच घडी सुधी पोताना मुखमां रहे छे, त्यारपछी बे घडी कंठमां रहे छे, त्यारपछी दश घडी उरुमां रहे छे, त्यारपछी पांच घडी नाभिए रहे छे, त्यारपछी पांच घडी कटीए रहे छे अने छेल्ली त्रण घडी पुछमां रहे छे. जो भद्रा मुखमां रही होय ते वखते यात्रादिक शुभ कार्य करवामां आवे तो कार्यनी सिद्धि थाय छे, कंठे रही होय तो क्षय (नाश) करनारी थाय छे, उरुमां रहेली होय तो निर्धन करे छे, नाभिमां रही होय तो खराब बुद्धि करे छे, कटीमां रही होय तो क्लेश करावे छे अने पुछे रही होय तो विजयने करनारी थाय छे. १६.

हवे करणनी अवस्थाओ बतावे छे.—

किंत्थुग्घ सउणि कोलव उद्धकरण तिन्नि तिन्नि सुत्ताइं ।
तेइल नाग चउप्पय पण सेस निविठ्ठकरणाइं ॥ १७ ॥

किंस्तुघ्न, शकुनि अने कौलव ए त्रण करणो उभेलां होय छे, तैतिल, नाग अने चतुष्पद ए त्रण करणो सूतेलां होय छे, तथा बाकीनां पांच करणो (बव, बालव, गर, वणिज अने विष्टि) बेठेलां छे. १७.

॥ इति करणद्वारम् ॥

हवे नक्षत्रो कहे छे.—

अश्विनी १, भरणी २, कृत्तिका ३, रोहिणी ४, मृगशीर्ष ५, आर्द्रा ६, पुनर्वसु ७, पुष्य ८, अश्लेषा ९, मघा १०, पूर्वाफाल्गुनी ११, उत्तराफाल्गुनी १२, हस्त १३, चित्रा १४, स्वाति १५, विशाखा १६, अनुराधा १७, ज्येष्ठा १८, मूळ १९, पूर्वाषाढा २०, उत्तराषाढा २१, अभिजित् २२, श्रवण २३, धनिष्ठा २४, शतभिषक् २५, पूर्वाभाद्रपद २६, उत्तराभाद्रपद २७ अने रेवती २८. आ अठ्यावीश नक्षत्रो छे.

हवे दरेक नक्षत्रनी केटली ताराओ होय ? ते कहे छे.—

ति ति छ पण ति एग चऊ ति छ पण डु डु पणिग एग चउ चउरो ।
ति इगार चउ चउ तिगं ति चउ सयं डु डुग बत्तीसं ॥ १८ ॥
इअ रिक्खाणं कमसो परिअरतारामिई मुणेयवा ।
तारासमसंखागा तिही वि रिक्खेसु वज्जिज्जा ॥ १९ ॥

नीचेना यंत्र परथी तारानी संख्याउं जाणवी.

नक्षत्र	तारा	नक्षत्र	तारा	नक्षत्र	तारा	नक्षत्र	तारा
अश्विनी	३	पुष्य	३	स्वाति	१	अभिजित्	३
भरणी	३	अश्लेषा	६	विशाखा	४	श्रवण	३
कृत्तिका	६	मघा	५	अनुराधा	४	धनिष्ठा	४
रोहिणी	५	पूर्वाफाल्गुनी	२	ज्येष्ठा	३	शतभिषक्	१००
मृगशीर्ष	३	उत्तराफाल्गुनी	२	मूळ	११	पूर्वाभाद्रपद	२
आर्द्रा	१	हस्त	५	पूर्वाषाढा	४	उत्तराभाद्रपद	२
पुनर्वसु	४	चित्रा	१	उत्तराषाढा	४	रेवती	३२

आ प्रमाणे अनुक्रमे नक्षत्रोना परिवारभूत ताराउंनुं प्रमाण जाणवुं. तारानी समान संख्यावाळी तिथि पण आ नक्षत्रोमां वर्जवा योग्य छे, एटले के अश्विनी नक्षत्र त्रीजने दिवसे होय तो ते वर्ज्य छे, रोहिणी नक्षत्र पांचमने दिवसे होय तो ते वर्ज्य छे. इत्यादि. अहीं शतभिषकनी सो ताराउं तथा रेवतीनी बत्रीश ताराउं छे, तेथी तेने तिथिनी संख्या पंदरे भाग लेतां बाकी दश अने बे रहे छे, माटे शतभिषक् नक्षत्र दशमने दिवसे होय अने रेवती नक्षत्र बीजने दिवसे होय तो ते वर्ज्य छे एम समजवुं. १८–१९.

अभिजित् नक्षत्रनी समज तथा तेनी आवश्यकता—

उ-खा अंतिमपायं सवणपढम घडिअ चउ अभीइठिई ।
लत्तोवग्गहवेहे एगग्गलपमुहकज्जेसु ॥ २० ॥

उत्तराषाढानो छेल्लो (चोथो) पाद अने श्रवणनी पहेली चार घडी आटला समय सुधी अभिजित् नक्षत्रनी स्थिति होय छे, अने लत्ता, उपग्रह, वेध तथा एकार्गल ए विगेरे कार्योमां तेनी जरुर पडे छे. २०.

नक्षत्रोना अक्षरोनो यंत्र.—

चु चे चो ला अश्विनी
लि लु ले लो भरणी
अ इ उ ए कृत्तिका
उं व वि वु रोहिणी
वे बो क कि मृगशिर
कु घ ङ छ आर्द्रा
के को ह हि पुनर्वसु
हु हे हो डा पुष्य

डि डु डे डो अश्लेषा
म मि मु मे मघा
मो ट टि टु पूर्वाफाल्गुनी
टे टो प पि उत्तराफाल्गुनी
पु ष ण ठ हस्त
पे पो र रि चित्रा
रु रे रो ता स्वाति.
ति तु ते तो विशाखा.

न नि नु ने अनुराधा.
नो य यि यु ज्येष्ठा.
ये यो ज्ञ ज्ञि मूळ.
ज्ञु ध फ ढ पूर्वाषाढा.
ज्ञे ज्ञो ज जि उत्तराषाढा.
जु जे जो ख अभिजित्

खि खु खे खो श्रवण.
ग गि गु गे धनिष्ठा.
गो स सि सु शतभिषक्.
से सो द दि पूर्वाभाद्रपद.
डु श फ थ उत्तराभाद्रपद.
दे दो च चि रेवती.

॥ इति नक्षत्रपादाक्षराणि ॥

हवे कइ राशिमां केटलां नक्षत्रो आवे ? ते कहे छे.—

कित्ति मिग पुण असेसा उ-फ चि विसा जिठ उ-ख धणी पू-भा।
रेवइ अ एग डु ति चउ पायंता बार रासि कमा ॥ २१ ॥

कृत्तिकाना पहेला पादना अंत सुधी मेष राशि होय छे, मृगशीर्षना बे पादना अंत सुधी वृष राशि होय छे, पुनर्वसुना त्रीजा पादना अंत सुधी मिथुन अने अश्लेषाना चोथा पादना अंत सुधी कर्क राशि होय छे. एज प्रमाणे उत्तराफाल्गुनीना एक पाद सुधी सिंह, चित्राना बे पाद सुधी कन्या, विशाखाना त्रण पाद सुधी तुला, ज्येष्ठाना चार पाद सुधी वृश्चिक, उत्तराषाढाना एक पाद सुधी धन, धनिष्ठाना बे पाद सुधी मकर, पूर्वाभाद्रपदना त्रण पाद सुधी कुंभ अने रेवतीना चार पाद सुधी मीन राशि होय छे. २१. तेनुं यंत्र.—

१ मेष—अश्विनी ४, भरणी ४, कृत्तिका १.
२ वृष—कृत्तिका ३, रोहिणी ४, मृगशीर्ष २.
३ मिथुन—मृगशीर्ष २, आर्द्रा ४, पुनर्वसु ३.
४ कर्क—पुनर्वसु १, पुष्य ४, अश्लेषा ४.
५ सिंह—मघा ४, पूर्वाफाल्गुनी ४, उत्तराफाल्गुनी १.
६ कन्या—उत्तराफाल्गुनी ३, हस्त ४, चित्रा २.
७ तुला—चित्रा २, स्वाति ४, विशाखा ३.
८ वृश्चिक—विशाखा १, अनुराधा ४, ज्येष्ठा ४.
९ धन—मूळ ४, पूर्वाषाढा ४, उत्तराषाढा १.
१० मकर—उत्तराषाढा ३, श्रवण ४, धनिष्ठा २.
११ कुंभ—धनिष्ठा २, शतभिषक् ४, पूर्वाभाद्रपद ३.
१२ मीन—पूर्वाभाद्रपद १, उत्तराभाद्रपद ४, रेवती ४.

॥ इति नक्षत्रराशयः ॥

हवे चंद्रनी बार अवस्थाउं कहे छे.—

गय हरिअ मया मोया हासा किड्डा रई सयणमसणं ।
तावा कंपा सुत्था ससिवत्था बार नामफला ॥ २२ ॥

दरेक राशिमां रहेला चंद्रनी बार अवस्था होय छे ते आ प्रमाणे—गता १, हृता २, मृता ३, मोदा ४, हासा ५, क्रीडा ६, रति ७, शयन ८, अशन ९, तापा १०, कंपा ११ अने स्वस्था १२. आ बार चंद्रनी अवस्थाउं पोतपोताना नामनी सदृश फळने आपनारी छे. २२.

चंद्रनी बार अवस्था होवाथी दरेक राशिना बार बार अंशो थया. तेने आश्रीने शुभाशुभ फळ कहे छे.—

पइरासि बारसंसा असुहा उ चए जउं सुहो वि ससी ।
एयाहिं हवइ असुहो सुहाहिं असुहो वि होइ सुहो ॥ २३ ॥

दरेक राशिना बार बार अंशो छे. तेमां जे अशुभ अंशो छे ते शुभ चंद्र होय तोपण वर्जवा, कारण के ए अशुभ अंशोए करीने सारो चंद्र पण अशुभ थाय छे, अने अशुभ चंद्र पण शुभ अंशोए करीने शुभ थाय छे. २३.

दाहिणुच्चो समो चंदो उत्तरुच्चो हलोवमो ।
धणु वक्को अ सुलाभो मेसासु कमुक्कमा ॥ २४ ॥

सूर्य संक्रांतिमां नवीन उदय थयेल चंद्र अनुक्रमे करीने तथा उत्क्रमे (उलटा क्रमे) करीने दक्षिण दिशामां उंचो होय, सम होय, उत्तर दिशामां उंचो होय, हळ सदृश होय, धनुष जेवो वांको होय शूळ सदृश होय ते श्रेष्ठ छे, अर्थात् मेष तथा मीन संक्रांतिमां दक्षिण दिशामां उंचो होय, वृषभ अने कुंभमां सम होय, मिथुन अने मकरमां उत्तर तरफ उंचो होय, कर्क अने धनमां हळ समान होय, सिंह अने वृश्चिक संक्रांतिमां धनुष समान वांको होय, कन्या अने तुला संक्रांतिमां नवीन उदय थयेल चंद्र शूळ सदृश होय ते श्रेष्ठ जाणवो. बीजा काळमां अशुभ छे. २४.

॥ इति चन्द्रबलम् ॥

हवे ताराबळने कहे छे.—

जम्मा कम्मं च आहाणं तारा अठ्ठ अंतरे ।
सस्सनामफला सवा अंतरा इअ नामिआ ॥ २५ ॥

संपई आवई खेमा जामा साहण निहणा ।
मित्ती परममित्ती अ दुठ्ठा ति सग पंचमा ॥ २६ ॥
जम्माहाणा विवज्जिज्जा गमे एयाहिं वाहिउं ।
कठ्ठेण जीवई किण्हे पक्खे चंदुत्तरा इमा ॥ २७ ॥

सत्यावीश ताराउने त्रण लाइनमां मूकवी. तेमां पहेली लाइनमां प्रथम जन्म, बीजी लाइनमां प्रथम कर्म अने त्रीजीमां प्रथम आधान एम आठ आठ ताराउने आंतरे ताराउनी संज्ञा जाणवी. ते पोतपोताना नामनी सदृश फळ आपे छे. हवे आंतरानी आठ आठ ताराउनी संज्ञा आ प्रमाणे छे (२५)—संपद् १, आपद् २, क्षेमा ३, यामा ४, साधना ५, निर्धना ६, मैत्री ७ अने परम मैत्री ८. (उपरनी एक एकने साथे गणीए त्यारे नव नव थाय छे.) तेमां त्रीजी, सातमी अने पांचमी ताराउ दुष्ट छे. २६. तेनो यंत्र नीचे प्रमाणे.—

जन्म	संपद्	आपद्	क्षेमा	यामा	साधना	निर्धना	मैत्री	परम मैत्री
कर्म	॥	॥	॥	॥	॥	॥	॥	॥
आधान	॥	॥	॥	॥	॥	॥	॥	॥

आमांथी जन्म अने आधान ए बे ताराउ गमनमां तजवा योग्य छे. त्रीजी, पांचमी, सातमी, जन्म अने आधान आ तारामां व्याधि थइ होय तो ते महाकष्टे जीवी शके छे, एटले के प्राये मरणज थाय. कृष्णपक्षमां आ ताराउनुं बळ चंद्र करतां अधिक होय छे.२७.

॥ इति ताराबलम् ॥

हवे रवि योग कहे छे.—

चउ छठ्ठ नवम दसमं तेरस वीसं च सूररिक्खाउं ।
ससिरिक्खं होइ तया रविजोगो असुहसयदलणो ॥ २८ ॥

सूर्यना नक्षत्रथी चंद्रनुं नक्षत्र जो चोथुं, छठुं, नवमुं, दशमुं, तेरमुं के वीशमुं होय तो ते रवि योग कहेवाय छे. आ योग सेंकडो अशुभने नाश करनार छे.२८.इति रवियोगः

कुमार योग—

सोमे भोमे बुहे सुक्के अस्सिणाइं बिइंतरा ।
पंचमी दसमी नंदा सुहो जोगो कुमारउ ॥ २९ ॥

सोम, मंगळ, बुध के शुक्रवारे अश्विनी, रोहिणी विगेरे बबे आंतरावाळां (अ. रो. पुन. म. ह. वि. मू. श्र. पू-भा.) नक्षत्रमांनुं कोइ एक होय तथा पांचम, दशम के नंदा (एकम, छठ अने अगीयारश)मांनी कोइ पण तिथि होय तो कुमार योग छे. ते योग शुभ छे. २९.

राज योग—

सूरे सुक्के बुहे जोमे जद्दा तीया य पुन्निमा ।
बिंतरा जरणीमुक्खा राजजोगो सुहावहो ॥ ३० ॥

रवि, शुक्र, बुध के मंगळवारे जद्रा (बीज, सातम अने बारश), त्रीज के पूर्णिमा होय तथा जरणी, मृगशिर विगेरे बबे आंतरावाळां (ज. मृ. पुष्य. पू-फा. चि. अनु. पू-षा. ध. उ-जा.) नक्षत्रोमांथी कोइ पण होय तो ते राज योग कहेवाय छे. ते सुखकारक छे. ३०.

स्थविर योग—

थविरो गुरु सणि तेरसि रित्तठमि कित्तिआ ङुगंतरिआ ।
रुअछेआणसणाई अपुण(णो)करणं इहं कुज्जा ॥ ३१ ॥

गुरुवारे के शनिवारे तेरश, रिक्ता (चोथ, नोम अने चौदश) के आठम होय अने कृत्तिकाथी आरंजीने बबे आंतरावाळां (कृ. आ. अश्ले. उ-फा. स्वा. ज्ये. उ-षा. श. रे.) नक्षत्रोमांथी कोइ पण होय तो ते स्थविर योग कहेवाय छे. आ योगमां व्याधिनो छेद (नाश) अने अनशन विगेरे फरीथी नहीं करवानां कार्यो करवामां आवे छे. ३१.

हवे यमल तथा त्रिपुष्कर योग कहे छे.—

मंगल गुरु सणि जद्दा मिग चित्त धणिठिआ जमलजोगो ।
कित्ति पुण उ-फ विसाहा पू-ज उ-खाहिं तिपुक्करउ ॥ ३२ ॥

मंगळ, गुरु के शनिवारे जद्रा तिथि (२-७-१२) होय तथा मृगशिर, चित्रा अने धनिष्ठा नक्षत्र होय तो ते यमल नामनो योग थाय छे. तथा तेज वार अने तेज तिथिए जो कृत्तिका, पुनर्वसु, उत्तराफाल्गुनी, विशाखा, पूर्वाजाद्रपद के उत्तराषाढा होय तो त्रिपुष्कर योग थाय छे. ३२.

पंचक योग.

पंचग धणिठ अद्धा मयकिअवज्जिज्ज जामदिसिगमणं ।
एसु तिसु सुहं असुहं विहिअं ङु ति पण गुणं होइ ॥ ३३ ॥

धनिष्ठाना अर्ध जागथी रेवति पर्यंत (ध. श. पू-जा. उ-जा. रे.) पंचक कहेवाय छे. आ योगमां मृतक कार्य तथा दक्षिण दिशामां गमनने वर्जवुं. आ त्रणे योगमां करेलुं शुज तथा अशुज कार्य अनुक्रमे बमणुं, त्रण गुणुं अने पांच गुणुं थाय छे. ३३.

विष्कंभादिक २७ योगो—

१ विष्कंभ	८ धृति	१५ वज्र	२२ साध्य
२ प्रीति	९ शूल	१६ सिद्धि	२३ शुभ
३ आयुष्मान्	१० गंड	१७ व्यतीपात	२४ शुक्ल
४ सौभाग्य	११ वृद्धि	१८ वरीयान्	२५ ब्रह्मा
५ शोभन	१२ ध्रुव	१९ परिघ	२६ ऐन्द्र
६ अतिगंड	१३ व्याघात	२० शिव	२७ वैधृति.
७ सुकर्मा	१४ हर्षण	२१ सिद्ध	

वर्जवाना योगो—

पण छस्सग नव घडिआ विक्खंभ डुगंड सूल वाघाएं ।
परिहद्धदिणं वज्जे विहिइ विईपाय सयलदिणं ॥ ३४ ॥

विष्कंभनी पांच घडीओ शुभ कार्यमां वर्ज्य छे, गंड अने अतिगंडनी छ घडीओ, शूळनी सात घडीओ अने व्याघातनी नव घडीओ वर्ज्य छे. परिघनो अर्ध दिवस वर्ज्य छे तथा वैधृति अने व्यतीपातनो आखो दिवस वर्ज्य छे. ३४.

आनंदादिक २८ उपयोगनी उत्पत्ति तथा तेनुं फळ.—

अस्सिणि मिग अस्सेसा हत्थ णुराहा य उत्तरासाढा ।
सयभिसकमेण एए सूराइसु हुंति मुहरिक्खा ॥ ३५ ॥
निअवारे निअरिक्खे मुहगणिए जत्तिमं ससीरिक्खं ।
तावंतिमोवओगो आनंदाई सनामफलो ॥ ३६ ॥

अश्विनी, मृगशिर, अश्लेषा, हस्त, अनुराधा, उत्तराषाढा अने शतभिषक्, आ नक्षत्रो अनुक्रमे रवि आदि वारोने विषे मुख नक्षत्रो होय छे, एटले के रविवारे अश्विनी, सोमवारे मृगशिर, मंगळवारे अश्लेषा, बुधवारे हस्त, गुरुवारे अनुराधा, शुक्रवारे उत्तराषाढा अने शनिवारे शतभिषक् मुख नक्षत्र कहेवाय छे. ३५. हवे पोताने वारे पोतानुं नक्षत्र मुख नक्षत्रथी गणवुं. गणतां जेटलामुं चंद्र नक्षत्र (पोतानुं नक्षत्र) आवे तेटलामो आनंदादिक उपयोग जाणवो. ते उपयोगो पोताना नामनी सदृश फळ आपनारा छे. उदाहरण—रविवारे रोहिणी नक्षत्र होय तो ते अश्विनीथी गणतां चोथुं आवे छे, तेथी आनंदादिकनो चोथो शुभ उपयोग थयो विगेरे. ३६.

आनंदादिक २८ उपयोगनां नाम.

१ आनंद	८ श्रीवत्स	१५ बुंपक	२२ मुशळ
२ काळदंड[1]	९ वज्र	१६ प्रवास	२३ गज
३ प्राजापत्य[1]	१० मुद्गर	१७ मरण	२४ मातंग
४ शुभ	११ छत्र	१८ व्याधि	२५ क्षय
५ सौम्य	१२ मित्र	१९ सिद्धि	२६ क्षिप्र
६ ध्वांक्ष	१३ मनोज्ञ	२० शूळ	२७ स्थिर
७ ध्वज	१४ कंप	२१ अमृत	२८ वर्धमान

हवे वारने आश्रीने शुभ तिथिर्ड कहे छे.—

नवमेगठमी सूरे सोमे बीआ नवमिआ।
नोमे जया य छही अ बुहे न्नद्दा तिही सुहा ॥ ३७ ॥
गुरु एगारसी पुन्ना सुक्के नंदा य तेरसी।
सणिंमि अठमी रित्ता तिही वारेसु सोहणा ॥ ३८ ॥

रविवारे नोम, एकम अने आठम ए तिथिर्ड शुभ छे. सोमवारे बीज अने नोम शुभ छे. मंगळवारे जया (३–८–१३) अने छठ शुभ छे. बुधवारे नद्दा तिथि (२–७–१२) शुभ छे. ३७. गुरुवारे अगीयारश अने पूर्णा (५–१०–१५) शुभ छे. शुक्रवारे नंदा (१–६–११) अने तेरश शुभ छे. तथा शनिवारे आठम अने रिक्ता तिथि (४–९–१४) शुभ छे. ३८.

हवे वारने आश्रीने शुभ नक्षत्रो कहे छे.—

रेवस्सिणी धणिठा य पुण पुस्स तिउत्तरा।
सूरे सोमंमि पुस्सो अ रोहिणी अणुराहया ॥ ३९ ॥
भोमे मिगं च मूलं च अस्सेसा रेवई तहा।
बुहे मिगसिरं पुस्सा सेसा सवण रोहिणी ॥ ४० ॥
जीवे हत्थ स्सिणी पू–फ विसाहाडुग रेवई।
सुक्के उ–फा उ–खा हत्थं सवणाणु पुणस्सिणी ॥ ४१ ॥
सणिंमि सवणं पू–फा महा सयभिसा सुहा।
पुव्वत्ततिहिसंजोगे विसेसेण सुहावहा ॥ ४२ ॥

---

१ मुहूर्त्त चिंतामणिमां त्रीजो धूम्र अने चोथो प्राजापत्य एटलो आ साथे फरक छे.

रविवारे रेवती, अश्विनी, धनिष्ठा, पुनर्वसु, पुष्य के त्रण उत्तरा (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपद) होय, सोमवारे पुष्य, रोहिणी के अनुराधा होय. ३९. मंगळवारे मृगशिर, मूळ, अश्लेषा के रेवती होय, बुधवारे मृगशिर, पुष्य, अश्लेषा, श्रवण के रोहिणी होय. ४०. गुरुवारे हस्त, अश्विनी, पूर्वाफाल्गुनी, विशाखा द्विक (विशाखा अने अनुराधा) के रेवती होय, शुक्रवारे उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, हस्त, श्रवण, अनुराधा, पुनर्वसु के अश्विनी होय. ४१. तथा शनिवारे श्रवण, पूर्वाफाल्गुनी, मघा के शतभिषक् होय तो ते शुभ छे. तेमां पण उपर कहेली शुभ तिथिनो संयोग होय तो विशेषे करीने शुभ छे. ४२.

अमृतसिद्धि योग—

हत्थं मिग स्सिणी चेवाणुराहा पुस्स रेवई ।
रोहिणी वारजोगेणामिअसिद्धिकरा कमा ॥ ४३ ॥

रविवारे हस्त नक्षत्र होय, सोमवारे मृगशिर होय, मंगळवारे अश्विनी, बुधवारे अनुराधा, गुरुवारे पुष्य, शुक्रवारे रेवती अने शनिवारे रोहिणी होय तो ते अमृतसिद्धि योग थाय छे. ते अत्यंत शुभ छे. ४३.

उत्पात, मृत्यु, काण अने सिद्धि योग विषे.—

वारेसु कमसो रिक्खा विसाहाइ चऊ चऊ ।
उप्पायमच्चुकाणाक्ख सिद्धिजोगावहा भवे ॥ ४४ ॥

रवि आदिक वारोमां अनुक्रमे विशाखा विगेरे चार चार नक्षत्रो मूकवां. तेम करवाथी अनुक्रमे उत्पात, मृत्यु, काण अने सिद्धि योगो थाय छे. ते नीचेना यंत्रथी जाणवुं. ४४.

	रवि	सोम	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उत्पात	विशाखा	पूर्वाषाढा	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उत्तराफाल्गुनी
मृत्यु	अनुराधा	उत्तराषाढा	शतभिषक्	अश्विनी	मृगशिर	अश्लेषा	हस्त
काण	ज्येष्ठा	अभिजित्	पूर्वाभाद्रपद	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा
सिद्धि	मूळ	श्रवण	उत्तराभाद्र०	कृत्तिका	पुनर्वसु	पूर्वाफाल्गुनी	स्वाति.

यमघंट तथा ग्रह जन्मनक्षत्र.

म वि आ मू कि रो ह सूराइसु वज्जणिज्ज जमघंटा ।
भ चि उ–ख ध उ–फा जे रे इअ असुहा जम्मरिक्खा य ॥४५॥

रविवारे मघा, सोमवारे विशाखा, मंगळवारे आर्द्रा, बुधवारे मूळ, गुरुवारे कृत्तिका, शुक्रवारे रोहिणी अने शनिवारे हस्त होय तो यमघंट थाय छे. ते अशुभ छे. तथा भरणी, चित्रा, उत्तराषाढा, धनिष्ठा, उत्तराफाल्गुनी, ज्येष्ठा अने रेवती ए सात रवि आदिक

वारना जन्मनक्षत्र छे ते पण अशुभ छे, एटले के रविवारे भरणी नक्षत्र होय तो ते दिवसे शुभ कार्य करवुं नहीं विगेरे. ४५.

कर्क योग—

गुरि सयभिस सणि उत्तरसाढा एया विवज्जए पायं ।
बारसि एगेगहीणा सूराइसु कक्कजोगु चए ॥ ४६ ॥

गुरुवारे शतभिषक् होय अने शनिवारे उत्तराषाढा होय तो ते प्राये वर्ज्य छे. तथा बारशथी एक एक तिथि हीन करी रवि आदिक वारने विषे होय तो ते कर्क योग थाय छे. ते अशुभ छे, एटले के रविवारे बारश होय, सोमवारे अगीयारश होय, मंगळवारे दशम होय, एम गणतां छेवटे शनिवारे छठ होय तो कर्क योग थाय छे. ते त्याग करवो. ४६.

हवे वारने आश्रीने अशुभ तिथिउ कहे छे.—

छठि सत्तमि इगार चउद्दसी सूरि सोमि सग बार तेरसी ।
मंगले इग इगारसी बुहे वज्जए इग चउद्दसी जया ॥ ४७ ॥
छठि चउत्थि सहभद्दया गुरु सुक्कि बीअ सह तीइ रित्तया ।
पुन्न सत्तमि सणिंमि सव्वहा वज्जए इअ तिही विसेसउ ॥ ४८ ॥

रविवारे छठ, सातम, अगीयारश अने चौदश अशुभ छे. सोमवारे सातम, बारश अने तेरश, मंगळवारे एकम अने अगीयारश, बुधवारे एकम, चौदश अने जया (३-८-१३) ए तिथिउ वर्जवा योग्य छे. ४७. गुरुवारे छठ, चोथ अने भद्रा (२-७-१२), शुक्रवारे बीज, त्रीज अने रिक्ता (४-९-१४) तथा शनिवारे पूर्णा (५-१०-१५) अने सातम ए तिथिउ विशेषे करीने सर्वथा वर्ज्य छे. ४८.

॥ इति योगाः ॥

हवे त्रण प्रकारनुं गंडांत तथा तेनुं फळ कहे छे.—

चरमाइमतिहिलग्गरिक्ख मझेगअद्धदोघडिआ ।
तिदुसत्तंतरि मुत्तुं पुणो पुणो तिविह गंडंतं ॥ ४९ ॥
नठं न लब्भए अत्थं अहिदठो न जीवई ।
जाउ वि मरई पायं पत्थिउ न निअत्तई ॥ ५० ॥

छेल्ली अने पहेली तिथिने मध्ये (वच्चे), छेल्ला अने पहेला लग्नने मध्ये तथा छेल्ला अने पहेला नक्षत्रने मध्ये अनुक्रमे एक, अर्ध अने बे घडीनुं गंडांत आवे छे. त्यारपछी तिथिमां त्रण त्रणने आंतरे, लग्नमां बबेने आंतरे अने नक्षत्रमां सात सातने आंतरे बबे तिथ्यादिकनी वच्चे तेटलाज प्रमाणवाळुं गंडांत होय छे, तेथी दरेकने आश्रीने त्रण

त्रण वार गंमांत आवे छे. ते नीचेना यंत्रथी जाणवुं. ४९. गंमांतमां नाश पामेली वस्तु फरी प्राप्त थती नथी, सर्पथी रूसायो होय तो ते जीवतो नथी, कोइ बाळकनो जन्म थयो होय तो ते प्राये जीवतो नथी तथा परदेश गयो होय ते पाछो आवतो नथी. ५०.

त्रण प्रकारना गंमांतनुं यंत्र.—

नाम	बेनी वच्चे	बेनी वच्चे	बेनी वच्चे	घमी.
तिथि गंमांत	१५–१	५–६	१०–११	एक घमी.
लग्न गंमांत	मीन–मेष	कर्क–सिंह	वृश्चिक–धन	अर्ध घमी.
नक्षत्र गंमांत	रेवती–अश्विनी	अश्लेषा–मघा	ज्येष्ठा–मूळ	बे घमी.

वज्रपात योग—

बीआणुराह तीआ तिगुत्तरा पंचमीइ महरिक्खं ।
रोहिणि छठी करमूल सत्तमी वज्जपाउं यं ॥ ५१ ॥

बीजने दिवसे अनुराधा होय, त्रीजने दिवसे त्रण उत्तरा (उत्तराषाढा, उत्तराफाल्गुनी अने उत्तराभाद्रपद)मांथी कोइ एक होय, पांचमने दिवसे मघा नक्षत्र होय, छठने[1] दिवसे रोहिणी होय तथा सातमे हस्त के मूळ होय तो वज्रपात योग थाय छे. ते योग अशुभ छे. ५१.

हवे मृतक अवस्थावाळां नक्षत्रोने कहे छे.—

मूलद्दसाइचित्ता असेससयभिसय कित्तिरेवइआ ।
नंदाए भद्दाए भद्दवया फग्गुणी दो दो ॥ ५२ ॥
विजयाए मिग सवणा पुस्स[2]स्सिणि भरणि जिठ रित्ताए ।
आसाढदुग विसाहा अणुराह पुणव्वसु महा य ॥ ५३ ॥
पुन्नाइकरधणिठा रोहिणि इअ मयगवत्थरिक्खाइं ।
नंदिपइठापमुहे सुहकज्जे वज्जाए मइमं ॥ ५४ ॥

नंदा तिथिए मूळ, आर्द्रा, स्वाति, चित्रा, अश्लेषा, शतभिषक्, कृत्तिका के रेवती होय, भद्रा तिथिए बे भाद्रपद (पूर्वा तथा उत्तरा) अने बे फाल्गुनी (पूर्वा तथा उत्तरा) होय. ५२. विजया (जया) तिथिए मृगशिर, श्रवण, पुष्य, अश्विनी, भरणी के ज्येष्ठा होय, रिक्ता तिथिए बे आषाढा (पूर्वा तथा उत्तरा), विशाखा, अनुराधा, पुनर्वसु के मघा होय. ५३. अने पूर्णा तिथिए हस्त, धनिष्ठा के रोहिणी होय तो आ सर्व

१ नारचंद्रमां चोथने रोहिणी वज्रपात कहेल छे. २ पुव्व इति प्रत्यंतरे.

मृतक अवस्थावाळां नक्षत्रो कहेवाय छे, माटे तेमां मतिमान पुरुषे दीक्षा, नंदी, प्रतिष्ठा विगेरे शुभ कार्य वर्जवा योग्य छे. ५४.

नक्षत्रोनी तीक्ष्ण उग्र विगेरे संज्ञा तथा तेनुं फळ कहे छे.—

जिठ्ठदाऽसेस मूलं च तिक्खा रिक्खा विआहिआ ।
मिऊणि मिग चित्ता य रेवई अणुराहया ॥ ५५ ॥
पुस्सो अ अस्सिणी हत्थं अभिई लहुआ इमे ।
उग्गाणि पंच रिक्खाणि तिपुव्वा भरणी महा ॥ ५६ ॥
चरा पुणव्वसू साई सवणाइतिअं तहा ।
धुवाणि पुण चत्तारि उत्तराणि अ रोहिणी ॥ ५७ ॥
विसाहा कित्तिआ चेव दो अ मिस्सा विआहिआ ।
तिक्खे तिगिच्छं कारिज्जा मिऊ गहणधारणे ॥ ५८ ॥
लहू चरे सुहारंभो उग्गरिक्खे तवं चरे ।
धुवे पुरपवेसाई मिस्से संधिकिअं करे ॥ ५९ ॥

ज्येष्ठा, आर्द्रा, अश्लेषा अने मूळ एटलां नक्षत्रो तीक्ष्ण कह्यां छे. मृगशिर, चित्रा, रेवती अने अनुराधा एटलां मृदु कह्यां छे. ५५. पुष्य, अश्विनी, हस्त अने अभिजित् आ नक्षत्रो लघु छे. त्रण पूर्वा (पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढा, पूर्वाभाद्रपद), भरणी अने मघा ए पांच नक्षत्रो उग्र छे. ५६. पुनर्वसु, स्वाति अने श्रवणादि त्रण (श्रवण, धनिष्ठा अने शतभिषक्) ए चर छे. त्रण उत्तरा (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा अने उत्तराभाद्रपद) अने रोहिणी ए चार ध्रुव छे. ५७. विशाखा अने कृत्तिका ए बे मिश्र कह्यां छे. तेमां तीक्ष्ण नक्षत्रोमां औषध शरु करवुं सारुं छे. वस्तुनुं ग्रहण तथा धारण मृदु नक्षत्रमां कराय छे. ५८. लघु नक्षत्रमां शुभ कार्यनो आरंभ करवो. उग्र नक्षत्रमां तप करवो. ध्रुव नक्षत्रमां नगरप्रवेशादिक करवा. तथा मिश्र नक्षत्रमां संधिनुं कार्य करवुं. ५९.

प्रस्थान करवा विषे—

दसधणु उवरिं सयपंच मज्झि पत्थाणि जाव दिण तिचऊ ।
थायव्वं लग्गतिहीखणरिक्खससीबलं घित्तुं ॥ ६० ॥

लग्न, तिथि, क्षण, नक्षत्र अने चंद्रनुं बळ ग्रहण करीने दश धनुषथी उपर अने पांचसो धनुषनी अंदर प्रस्थान स्थापवुं. ते प्रस्थान त्रण चार दिवस सुधी रही शके छे. ६०.

प्रयाणमां शुभ लग्नादिकनुं फळ कहे छे.—

पहि कुसलु लग्गि तिहि कज्ज सिद्धि लाजं मुहूत्तउं होइ।
रिक्खेणं आरोग्गं चंदेणं सुक्ख संपत्ती ॥ ६१ ॥

लग्न सारुं होय तो मार्गमां कुशळता रहे छे, तिथि सारी होय तो कार्यनी सिद्धि थाय छे, मुहूर्त्त सारुं होय तो लाभ थाय छे, नक्षत्र सारुं होय तो शरीरे आरोग्यता रहे छे अने चंद्र सारो होय तो सुख संपत्ति मळे छे. ६१.

प्रयाणमां शुभ तिथि तथा तेनुं फळ कहे छे.—

पाडिवए पडिवत्ती नत्थि विवत्ती भणंति बीआए।
तइआइ अत्थसिद्धी विजयंगी पंचमी भणिआ ॥ ६२ ॥
सत्तमिआ बहुलगुणा मग्गा निक्कंटया दसमिआए।
आरुग्गिआ इगारसि तेरसि रिउणो निविज्जिणइ ॥ ६३ ॥

पडवाने दिवसे प्रयाण करवाथी मार्गमां प्रतिपत्ति थाय, बीजने दिवसे प्रयाण करवाथी विपदाउ न आवे, त्रीजे प्रयाण करवाथी अर्थनी सिद्धि थाय छे, पांचमे विजय थाय छे. ६२. प्रयाणमां सातम बहु गुणवाळी कही छे, दशमे प्रयाण करवाथी मार्ग निष्कंटक (शत्रु रहित) थाय छे, अगीयारशे प्रयाण करवाथी आरोग्यता रहे छे तथा तेरशे प्रयाण करवाथी शत्रुने जीते छे. ६३.

प्रयाणमां वर्ज्य तिथिउ.—

चाउदसिं पन्नरसिं वज्जिज्जा अट्ठमिं च नवमिं च।
छट्ठिं चउत्थिं बारसिं च डुन्हं पि पक्खाणं ॥ ६४ ॥

बन्ने पखवाडीयांनी चौदश, पूनम (अमास), आठम, नोम, छठ, चोथ अने बारश एटली तिथिउ प्रयाणमां वर्ज्य छे. ६४.

तिथि अने नक्षत्रने योगे प्रयाणमां शुभ वार कहे छे.—

दसमि पंचमि तेरसि बीअगो भिगुसुउ गमणेऽतिसुहावहो।
गुरु पुणव्वसु पुस्स विसेसउ सयभिसा अणुराह बुहे तहा ॥ ६५ ॥

शुक्रवारे दशम, पांचम, तेरश के बीज होय तो ते दिवस प्रयाणमां अति सुखावह छे. गुरुवारे पुनर्वसु के पुष्य नक्षत्र होय तो ते प्रयाणमां विशेष सुखावह छे. तथा बुधवारे शतभिषक् के अनुराधा होय तो ते पण सुखावह छे. ६५.

प्रयाणमां सामान्य शुभ दिवस कहे छे.—

सव्वदिसि सव्वकालं सिद्धिनिमित्तं विहारसमयंमि।
पुस्सस्सिणि मिग हत्था रेवइ सवणा गहेयव्वा ॥ ६६ ॥

सर्व दिशामां सर्व काळे सिद्धिने निमित्ते विहार (प्रयाण) समये पुष्य, अश्विनी, मृगशिर, हस्त, रेवती के श्रवण एटलां नक्षत्र ग्रहण करवां. ६६.

हवे प्रयाणमां अशुभ दिवसो कहे छे.—

वज्जे वारतिअं कूरं पडिवाय चउद्दसी ।
नवमट्ठमी इमाहिं तु बुहो वि न सुहो गमे ॥ ६७ ॥

प्रयाणमां रवि, मंगळ अने शनि ए त्रणे क्रूर वारने तजवा, तथा बुधवारने दिवसे जो पडवो, चौदश, नोम के आठम होय तो ते बुधवार पण गमनमां शुभकारक नथी. ६७.

हवे प्रयाणमां शुभ, मध्यम अने अशुभ नक्षत्रो गणावे छे.—

पुस्सस्सिणिमिगसिररेवइअं हत्था पुणव्वसू चेव ।
अणुराहजिट्ठमूलं नव नक्खत्ता गमणसिद्धा ॥ ६८ ॥
रोहिणी तिन्नि उ पुव्वा सवणधणिट्ठा य सयभिसा चेव ।
चित्ता साई एए नव नक्खत्ता गमणि मज्झा ॥ ६९ ॥
कित्तिभरणिविसाहा अस्सेसमहउत्तरातिअं अद्दा ।
एए नव नक्खत्ता गमणे अइदारुणा भणिया ॥ ७० ॥

पुष्य, अश्विनी, मृगशिर, रेवती, हस्त, पुनर्वसु, अनुराधा, ज्येष्ठा अने मूळ, ए नव नक्षत्रो गमनमां सिद्धिदायक छे. ६८. रोहिणी, त्रण पूर्वा (पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढा, पूर्वाभाद्रपद), श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषक्, चित्रा अने स्वाति, ए नव नक्षत्रो गमनमां मध्यम छे. ६९. कृत्तिका, भरणी, विशाखा, अश्लेषा, मघा, त्रण उत्तरा (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपद) अने आर्द्रा, ए नव नक्षत्रो गमनमां अत्यंत दारुण कह्यां छे. ७०.

प्रयाणमां नक्षत्रने आश्रीने अशुभ समय—

धुवेहि मिस्सेहि पभायकाले, उग्गेहि मझन्हि लहू परन्हे ।
मिऊ पओसे निसिमझि तिक्खे, चरे निसंते न सुहो विहारो ॥७१॥

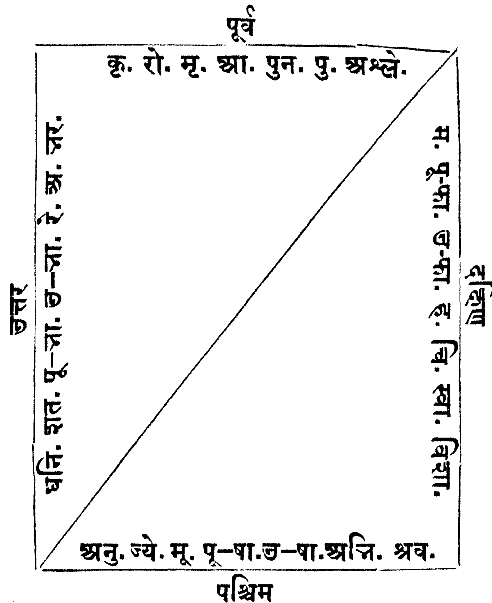
ध्रुव अने मिश्र नक्षत्रोमां प्रभातकाळे, उग्र नक्षत्रमां मध्याह्नकाळे, लघु नक्षत्रमां अपराह्नकाळे, मृदु नक्षत्रमां प्रदोषकाळे, तीक्ष्ण नक्षत्रमां मध्यरात्रिए अने चर नक्षत्रमां रात्रिने अंते (परोढीए) विहार (प्रयाण) करवो ते शुभ नथी. ७१.

हवे परिघनुं स्वरूप तथा तेनो उल्लंघननो निषेध कहे छे.—

पुव्वाइसु सग सग कित्तिआइ दिसि रिक्ख सदिसि हुंति सुहा ।
घरदिसि मघा वायग्गि परिहरेहा न लंघिज्जा ॥ ७२ ॥

पूर्वादिक चार दिशाओमां अनुक्रमे कृत्तिकाथी आरंभीने सात सात नक्षत्रो मूकवां. ते दिशानां नक्षत्रो कहेवाय छे. हवे प्रयाणमां स्वदिशिनुं नक्षत्र शुभकारक छे. पूर्व दिशानां नक्षत्रोमां उत्तरमां गमन करवुं, तथा उत्तर दिशानां नक्षत्रोमां पूर्वमां गमन करवुं. ए घरदिशि कहेवाय छे. तेमज दक्षिण दिशानां नक्षत्रोमां पश्चिम तरफ गमन करवुं अने पश्चिम दिशानां नक्षत्रोमां दक्षिण तरफ गमन करवुं ते पण घरदिशि कहेवाय छे. ते घरदिशिनां नक्षत्रोमां गमन करवुं ते मध्यम छे. वायु खूणाथी आरंभीने अग्नि खूणा सुधी आडी परिघनी रेखा छे ते परिघ रेखानुं उल्लंघन करवुं नहीं. १२.

परिघ यंत्र—



हवे दिक्शूळ तथा विदिक्शूळ कहे छे.—

सूलं पुव्विं सणी सोमो दाहिणाए दिसा गुरू ।
पच्छिमाइ रवी सुक्को उत्तराए कुजो बुहो ॥ १३ ॥
ईसाणे अ बुहो मंदो अग्गीई अ गुरू रवी ।
नेरइए ससी सुक्को भूमो वाए विवज्जए ॥ १४ ॥

शनिवारे अने सोमवारे पूर्व दिशामां शूळ होय छे, गुरुवारे दक्षिणमां शूळ होय छे, रवि अने शुक्रवारे पश्चिम दिशामां, मंगळ अने बुधे उत्तर दिशामां शूळ होय छे. ७३. बुधवारे अने शनिवारे ईशान खूणामां शूळ होय छे, गुरुवारे अने रविवारे अग्नि खूणामां शूळ होय छे, सोम अने शुक्रवारे नैर्ऋत्य खूणामां तथा मंगळवारे वायव्य खूणामां शूळ होय छे. ते बन्ने शूळ वर्जवा योग्य छे, एटले के जे दिशामां अथवा विदिशामां शूळ होय ते दिशा अथवा विदिशामां प्रयाण करवुं नहीं. ७४.

कारणे दिक्शूळमां अथवा विदिक्शूळमां जवुं पडे तो नीचेना पदार्थोनुं तिलक करीने जवाथी शूळनो दोष नथी. ते कहे छे.—

चंदणं दहि मट्टी अ तिल्लं पिठं तहा पुणो ।
तिल्लं खलं च चंदिज्जा सूराई सूलमुत्तरो ॥ ७५ ॥

रविवारे चंदन, सोमवारे दहीं, मंगळवारे माटी, बुधवारे तेल, गुरुवारे पिष्ट (आटो), शुक्रवारे तेल अने शनिवारे खोळनुं तिलक करीने प्रयाण करवुं. तेम करवाथी शूळ उत्तम (शुभ) थाय छे. अर्थात् शूळनो दोष लागतो नथी. ७५.

हवे दिशाने आश्रीने नक्षत्रशूळ कहे छे.—

उदयदिसि नसूलं दो असाढा य जिठा, धणिसवणविसाहा पूव्व नद्दा जमाए।
अह वरुणदिसाए रोहिणीपुस्समूलं, सुरगिरि दिसिहत्थोफग्गुणीदोविसाहा

बे अषाढा (पूर्वाषाढा अने उत्तराषाढा) तथा ज्येष्ठा नक्षत्र होय तो पूर्व दिशामां नक्षत्रशूळ थाय छे. धनिष्ठा, श्रवण, विशाखा अने पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र होय तो दक्षिण दिशामां नक्षत्रशूळ थाय छे. रोहिणी, पुष्य अने मूळ नक्षत्र होय तो पश्चिम दिशामां नक्षत्रशूळ होय छे, तथा हस्त, बे फाल्गुनी (पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी) अने विशाखा होय तो उत्तर दिशामां नक्षत्रशूळ होय छे. आ नक्षत्रशूळ पण प्रयाणमां शुभ नथी. ७६.

हवे वत्स कहे छे.—

मीणाइतिसंकंती पच्छिमाइसु उग्गइ। वच्छो गमे पवेसे वि न सुहो पिठि संमुहो

मीन विगेरे त्रण संक्रांतिमां पश्चिमादिक दिशामां वत्स उगे छे, एटले के मीन, मेष अने वृष संक्रांतिमां पश्चिम दिशाए उगे छे, मिथुन, कर्क अने सिंह संक्रांति होय त्यारे उत्तरमां उगे छे, कन्या, तुला अने वृश्चिक संक्रांति होय त्यारे पूर्वमां उगे छे, तथा धन, मकर अने कुंभ संक्रांति होय त्यारे वत्स दक्षिणमां उगे छे. ते वत्स प्रयाणसमये तथा प्रवेशसमये पण सन्मुख के पछवाडे होय तो ते सारो नथी, अर्थात् वाम (डाबे) तथा दक्षिण (जमणे) भागे होय तो ते सारो छे. ७७.

हवे योगिनी (जोगणी) कहे छे.—

इगनवगाइकमा तिहि पुव्वुत्तरअग्गिनेरदाहिणए ।
पच्छिमवाईसाणो जोइणि सा वामपिट्ठि सुहा ॥ ७८ ॥

एकम अने नोम विगेरे तिथिना क्रमे करीने पूर्व, उत्तर, अग्नि, नैर्ऋत्य, दक्षिण, पश्चिम, वायव्य अने ईशानमां योगिनी होय छे. ते प्रयाणसमये वाम जागे अथवा पछवाडे होय तो शुभ छे. ७८.

योगिनी यंत्र.—

दिशा	पूर्व	उत्तर	अग्नि	नैर्ऋत्य	दक्षिण	पश्चिम	वायव्य	ईशान
तिथि	१–९	२–१०	३–११	४–१२	५–१३	६–१४	७–१५	८–३० (अमास)

हवे तत्काळनी योगिनी कहे छे.—

दिणदिसि धुरि चउघडिया परउ पुव्वुत्तदिसिहि कमसो ।
तक्कालजोइणी सा वज्जेयव्वा पयत्तेण ॥ ७९ ॥

जे दिशाए जे दिवसे योगिनी होय ते दिवसे ते दिशाए पहेली चार घडी तत्काळ योगिनी रहे छे. त्यारपछी पूर्वनी गाथामां कहेली दिशाना अनुक्रमे दरेक दरेक दिशाए चार चार घडी फरती फरे छे. ते तत्काळ योगिनी प्रयत्ने करीने एटले अवश्य वर्जवा योग्य छे. ७९.

राहुविचार.—

उदयत्थमणा चउ चउ घडियाइं राहु पुव्वदिसि तत्तो ।
सिद्धीए दिसि छहिं गउ सुहो पुट्ठिदाहिणउ ॥ ८० ॥

दररोज सूर्यना उदयसमये अने अस्तसमये राहु पहेली चार चार घडी पूर्व दिशामां होय छे. त्यारपछी सिद्धिने माटे छठी छठी दिशाए चार चार घडी रहे छे, एटले के सूर्योदयथी पहेली चार घडी सुधी पूर्वमां, बीजी चार घडी वायव्यमां, त्रीजी चार घडी दक्षिणमां, चोथी चार घडी ईशानमां, पांचमी चार घडी पश्चिममां, छठी चार घडी अग्नि खूणामां, सातमी चार घडी उत्तरमां अने आठमी चार घडी नैर्ऋत्यमां. त्यारपछी पाछी छठी दिशाए एटले पूर्वमां अस्तसमये आवे छे. आ राहु प्रयाणसमये पछवाडे तथा दक्षिण (जमणी) बाजुए रह्यो होय तो ते सारो छे. ८०.

शिवविचार.—

चित्तुत्तरिगडुमासा दिसि विदिसि विसिट्ठि सिवु तउ उदया ।
सिट्ठि अढाई पणि घडि दिसि विदिसिं पुट्ठिमुट्ठि सुहो ॥ ८१ ॥

शिव चैत्र मासथी उत्तर दिशाने आरंभीने संहारक्रमे (उत्क्रमवडे) दिशामां एक मास, विदिशिमां बे मास ए प्रमाणे सूर्योदयसमये होय छे, एटले के चैत्रमां उत्तर दिशाए, वैशाख अने ज्येष्ठमां वायव्य खूणे, अषाढ मासमां पश्चिम दिशाए, श्रावण अने भाद्रपदमां नैर्ऋत्य खूणाए, आश्विन मासमां दक्षिण दिशाए सूर्योदयसमये होय छे इत्यादि. जे मासमां जे दिशा विदिशामां कहेल छे त्यांथी आठे दिशामां क्रमे करी दरेक दिशामां अढी घडी अने विदिशामां पांच घडी ए प्रमाणे फरे छे. तात्पर्य ए छे के चैत्र मासमां सूर्योदयसमये प्रथम अढी घडी उत्तरमां, पछी पांच घडी ईशानमां, पछी अढी घडी पूर्वमां इत्यादि क्रमे फरे छे. वैशाख तथा ज्येष्ठ मासमां प्रथम पांच घडी वायव्य खूणे, पछी अढी घडी उत्तरमां ए क्रमथी सदा फरे छे. आ शिव प्रयाणसमये पाछळ अथवा जमणो होय ते शुभकारक छे. ७१. शिवयंत्र आ प्रमाणे—

वायव्य वैशाक ज्येष्ठ घडी ५	उत्तर चैत्र घडी २॥	ईशान माघ फाल्गुन घडी ५
पश्चिम अषाढ घडी २॥	शिवचक्र	पूर्व पोष घडी २॥
श्रावण भाद्रपद घडी ५ नैर्ऋत्य	आश्विन घडी २॥ दक्षिण	अग्नि कार्तिक मार्गशीर्ष घडी ५

रविविचार.—

रवि रत्तिअंतपहराउ पुव्वाइसु दुन्नि दुन्नि पहर कमा ।
दाहिणपुठि विहारे वामो पुठि पवेसि सुहो ॥ ७२ ॥

रात्रिना छेल्ला पहोरथी बबे पहोर सुधी रवि पूर्वादिक चार दिशाउमां होय छे, एटले के रात्रिनो छेल्लो तथा दिवसनो पहेलो ए बे पहोर सुधी रवि पूर्वमां होय छे. पछी बीजो तथा त्रीजो प्रहर दक्षिणमां, चोथो तथा पांचमो प्रहर पश्चिममां, छठो तथा सातमो प्रहर उत्तरमां, पछी आठमो प्रहर रात्रिना अंतनो होवाथी पूर्वमां आवे छे. आ रवि प्रयाणमां दक्षिण (जमणो) तथा पाछळ सारो छे, अने प्रवेशमां डाबो तथा पाछळ सारो छे. ७२.

चंद्रविचार.—

उदयवसा अहवा दिसिदारजवसउं हवे ससीउदउं ।
सो अभिमुहो पहाणो गमणे अमिआइं वरसंतो ॥ ७३ ॥

उदयना वशथी अथवा दिशि द्वारना नक्षत्रना वशथी (सवा बे दिवसे जे चंद्र जूदी जूदी राशिमां जाय छे ते) चंद्रनो उदय कहेवाय छे. अमृतने वरसावतो ते चंद्र प्रयाणमां सन्मुख होय तो ते प्रधान (सारो) छे. ७३.

शुक्रविचार.—

जहिं उग्गइ जहिं दिसि भमइ जहिं च दारजिठाइ ।
तिहुं परिसंमुह सुक्क पुण उदउ जि इक्कु गणइ ॥ ७४ ॥

शुक्र जे दिशामां उगे छे, जे दिशामां भमे छे अने जे द्वारनी सन्मुख रहे छे ते त्रणे प्रकारे शुक्र सन्मुख कहेवाय छे, परंतु एक उदयने आश्रीनेज गणाय छे. अर्थात् उदयने आश्रीने शुक्रनी सन्मुखता प्रयाणसमये वर्जवी. ७४.

पाश तथा काळ विषे.—

सियपडिवयाउ पुव्वाइसु पासु दसदिसिहिं कालु तयभिमुहो ।
कुज्जा विहारि वामो पासो कालो उ दाहिणउं ॥ ७५ ॥

शुक्लपक्षना पडवाथी आरंभीने अनुक्रमे पूर्वादिक दश दिशामां पाश होय छे, एटले के सुदि पडवाए पूर्वमां, बीजे अग्निमां, त्रीजे दक्षिणमां ए रीते गणतां आठमे ईशानमां, नोमे ऊर्ध्व दिशामां अने दशमे अधो दिशामां, पछी अगीयारशे पूर्वमां, एम फरीने गणतां वद पांचमे अधो दिशामां पाश आवे, अने त्रीजी वार वद छट्ठे पूर्वमां ए रीते गणतां वद अमावास्याए अधो दिशामां आवे. जे दिशाए पाश होय तेनी सन्मुखनी दिशाएज काळ होय छे. प्रयाणसमये पाशने वाम (डाबो) करवो अने काळने दक्षिण (जमणो) करवो. ७५.

हंस (नाडी) विचार.—

पुन्ननाडिदिसापायं अग्गे किच्चा सया विऊ ।
पवेसं गमणं कुज्जा कुणंतो साससंगहं ॥ ७६ ॥

पूर्ण नाडीनी दिशाना पगने आगळ करीने एटले नसकोरानी जे बाजुमां श्वास परिपूर्ण वहेतो होय ते बाजुना पगने आगळ करीने विद्वान् पुरुषे श्वासने रुंधीने सदा **प्रवेश अने गमन करवुं.** ७६.

॥ इति प्रस्थानम् ॥

हवे चैत्य संबंधी मुहूर्त्तो कहे छे.—

चेइअसुअं धुवमिउकरपुस्स धणिठसयभिसासाई ।
पुस्सतिउत्तर-रे-रो-करमिगसवणे सिलनिवेसो ॥ ८७ ॥

चैत्यनुं खात ध्रुव, मृदु, हस्त, पुष्य, धनिष्ठा, शतभिषक् अने स्वाति नक्षत्रमां करवुं, तथा पुष्य, त्रण उत्तरा (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपद), रेवती, रोहिणी, हस्त, मृगशिर अने श्रवण एटलां नक्षत्रोमां शिलास्थापन करवुं. ८७.

सतभिसपुस्सधणिठा मिगसिरधुवमिउ अएहिं सुहवारे ।
ससि गुरुसिए उइए गिहे पवेसिज्ज पडिमाउ ॥ ८८ ॥

शतभिषक्, पुष्य, धनिष्ठा, मृगशिर, ध्रुव अने मृदु, ए नक्षत्रोमां शुभ वारे तथा चंद्र गुरु अने शुक्रनो उदय होय त्यारे प्रतिमाने घरमां प्रवेश कराववो. ८८.

तिपुव्वमूलभरणी विसाहा, सेसा महा किंत्ति अहोमुहाई ।
रेवस्सिणी हत्थपुणाणुचित्ता, जिठामिगं साइ तिरिछगा य॥ ८९ ॥
तिउत्तरद्दासवणत्तिअं च उड्ढमुहो रोहिणिपुस्सजुत्ता ।
भूमीहराई गमणागमाई धयावरोवाइ कमेण कुज्जा ॥ ९० ॥

त्रण पूर्वा (पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढा, पूर्वाभाद्रपद), मूळ, भरणी, विशाखा, अश्लेषा, मघा अने कृत्तिका, आटलां नक्षत्रो अधोमुख कहेवाय छे. रेवती, अश्विनी, हस्त, पुनर्वसु, अनुराधा, चित्रा, ज्येष्ठा, मृगशिर अने स्वाति, एटलां नक्षत्रो तिरछां कहेवाय छे. ८९. त्रण उत्तरा (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपद), आर्द्रा, श्रवणत्रिक (श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा), रोहिणी अने पुष्य, एटलां नक्षत्रो ऊर्ध्वमुख कहेवाय छे. तेमां भूमिगृह (भोंयरा) विगेरे अधोमुख नक्षत्रमां करवा लायक छे, गमन आगमन विगेरे तिरछा नक्षत्रमां करवालायक छे अने ध्वजरोपण विगेरे कार्यो ऊर्ध्वमुख नक्षत्रोमां करवा लायक छे. ९०.

॥ इति चैत्यनिवेशः ॥

हवे प्रतिमानुं नाम पाडती वखते शुं शुं जोवानुं छे ? ते कहे छे.—

छठमत्तं तह रिक्खजोणी, वग्गठ नाडीगयरिक्खभावं ।
विसोवगा देवगणाइ एवं, सव्वं गणिज्जा पडिमाभिहाणे ॥ ९१ ॥

षडाष्टक, नक्षत्रयोनि, वर्गाष्टक, नाडीगत नक्षत्रभाव, विंशोपक अने देवगणादिक, ए सर्वे प्रतिमानां नाम पाडवामां जोवानां छे. ९१.

प्रथम षडष्टक कहे छे.—

विसमा अट्ठमे पीई समाउ अट्ठमे रिऊ ।
सत्तुछट्ठमं नामरासिहिं परिवज्जए ॥ ९२ ॥
बीयबारसंमि वज्जे नवपंचमगं तहा ।
सेसेसु पीई निद्दिट्ठा जइ डुच्चागहमुत्तमा ॥ ९३ ॥

विषम राशि १-३-५-७-९-११ थी आठमी राशिना स्वामीउने प्रीति होय छे. सम राशि २-४-६-८-१०-१२ थी आठमी राशिने शत्रुभाव छे. ते शत्रुभाव भगवंतनी राशिथी प्रतिमा कारापकनी नामराशि सुधी गणीने वर्जवो. ९२. बीजी अने बारमी राशिना तथा नवमी अने पांचमी राशिउना स्वामीने परस्पर प्रीति न होय तो ते पण अवश्य वर्जवी. शेष राशिमां प्रीति कहेली छे. ९३.

हवे नक्षत्रयोनि वेर कहे छे.—

आसगयमेससप्पा सप्पासबिडालमेसमज्जारा ।
आखुडुगगवीमहिसी वग्घो महिसी पुणो वग्घो ॥ ९४ ॥
मिगमिगकुक्कर वानर नउलडुगं वानरो हरितुरंगो ।
हरिपसुकुंजर एए रिक्खाण कमेण जोणीउ ॥ ९५ ॥

अश्विनी विगेरे नक्षत्रोनी अनुक्रमे आ प्रमाणे योनिउ छे.—अश्विनीनी योनि अश्व छे, भरणीनी योनि हाथी छे, कृत्तिकानी मेष, रोहिणीनी सर्प, मृगशिरनी पण सर्प, आर्द्रानी श्वान, पुनर्वसुनी बिलाडो, पुष्यनी मेष, अश्लेषानी बिलाडो, मघानी उंदर, पूर्वाफाल्गुनीनी उंदर, उतराफाल्गुनीनी गाय, हस्तनी भेंश, चित्रानी वाघ, स्वातिनी भेंश, विशाखानी वाघ, अनुराधानी मृग, ज्येष्ठानी मृग. ९४. मूळनी कूतरो, पूर्वाषाढानी वानर, उत्तराषाढानी नोळीयो, अभिजितनी नोळीयो, श्रवणनी वानर, धनिष्ठानी सिंह, शतभिषकनी अश्व, पूर्वाभाद्रपदनी सिंह, उत्तराभाद्रपदनी पशु-गो अने रेवतीनी योनि हाथी छे. ९५.

गयसीहमस्समहिसं कपिमेसं साणहरिणऽहिनउलं ।
गोवग्घ बिडालुंदर वेरं नामेसु वज्जिज्जा ॥ ९६ ॥

हाथी अने सिंह, अश्व अने पाडो, वानर अने मेष, श्वान अने हरण, सर्प अने नोळीयो, गाय अने वाघ तथा बिलाडो अने उंदर, आउने परस्पर वेर होय छे, माटे

नाम पाडवामां आ वेर वर्जवुं, एटले के प्रतिमाना नामनी अने प्रतिमा जरावनारना नामनी जे योनि होय ते बन्नेने जो परस्पर वेर होय तो तेवुं नाम वर्जवुं. ९६.

॥ इति नक्षत्रयोनिवैरम् ॥

हवे वर्गाष्टक कहे छे.—

गरुडो बिडालसीहो कुक्कुरसप्पो अ मूसगो हरिणो ।
मेसो अडवग्गपइ कमेण पुण पंचमे वेरं ॥ ९७ ॥

अ वर्ग (सर्वे स्वर)नो पति गरुड छे । क वर्गनो पति बिलाडो छे । च वर्गनो पति सिंह छे । ट वर्गनो पति कूतरो छे । त वर्गनो पति सर्प छे । प वर्गनो पति उंदर छे । य वर्ग (य र ल व)नो पति हरण छे । तथा श वर्ग (श ष स ह)नो पति मेष (घेटो) छे । अकारादि आठ वर्गना गरुडादि आठ स्वामीओ छे तेमने क्रमे करीने पोताना वर्गपतिथी पांचमे पांचमे वेर छे. ते वर्गवेर पण वर्जवुं. ९७.

हवे नाडीमां रहेलां नक्षत्रना जावने कहे छे.—

असिणाइतिनाडीए इगनाडिगयं सुहं जवे रिक्खं ।
गुरुसीसाणं तारा वज्जिज्ज तिपंचसत्ततया ॥ ९८ ॥

अश्विनी विगेरे नव नव नक्षत्रोनी त्रण नाडी (लाइन) करवी, तेमां गुरु अने शिष्यनुं नक्षत्र एकज नाडीमां आव्युं होय तो ते शुज छे. वळी गुरु अने शिष्यनी त्रीजी, पांचमी अने सातमी तारा आवती होय तो ते वर्ज्य छे. ९८.

नाडीयंत्र स्थापना.—



हवे विंशोपक कहे छे.—

सिद्धसाहगधुरक्खर वग्गंके कमुक्कमिण अठविजत्ते ।
सेस अद्धकय लद्धविसो अ पढिमाउ खलु अग्गगएणं ॥ ९९ ॥

सिद्ध (गुरु) अने साधक (शिष्य)ना नामना पहेला अक्षरनो जे वर्गांक होय ते बन्ने आंकने क्रमे तथा उत्क्रमे (उलटा सुलटा) मूकवा, पछी तेने आठे जाग देवो.

बाकी जे शेष रहे तेने अर्ध करतां जे संख्या आवे तेटला विंशोपक (वसा) पहेला वर्गांकवाळा पासे बीजो वर्गांकवाळो मागे. जेमके गुरुना नामनो पहेलो अक्षर द एटले पांचमो वर्ग छे, अने शिष्यना नामनो पहेलो अक्षर प एटले छठो वर्ग छे. तेने क्रमे करीने मूकवाथी ५६ थाय, तेने आठे भाग देतां शेष कांइ पण रहेतुं नथी, माटे पहेला वर्गांकवाळा गुरु पासे बीजा वर्गांकवाळो शिष्य कांइ पण मागतो नथी एम समजवुं. हवे तेज आंकने उत्क्रमे मूकवाथी ६५ थाय छे, तेने आठे भाग देतां बाकी एक शेप रहे छे, तेने अर्ध करतां अर्धो विंशोपक आवे छे, माटे पहेला आंकवाळा शिष्य पासे बीजा आंकवाळा गुरु अर्ध विंशोपक मागे एम समजवुं. ९९.

हवे देवगणादिक कहे छे.—

देवस्सिणिपुणपुस्सा करसाइमिगाणुसवणरेवइआ ।
मणुअ तिपुव्वतिउत्तर रोहिणि भरणी अ अद्दा य ॥ १०० ॥
कित्तिअविसाहचित्ता धणिजिठाऽसेसतिन्नि डुग रक्खा ।
सगणे पीई नरसुर मज्झा सेसा पुणो असुहा ॥ १०१ ॥

अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, स्वाति, मृगशिर, अनुराधा, श्रवण अने रेवती, आ नव नक्षत्रो देवगण छे. त्रण पूर्वा, त्रण उत्तरा, रोहिणी, भरणी अने आर्द्रा, आ नव नक्षत्रो मनुष्यगण छे. १००. तथा कृत्तिका, विशाखा, चित्रा, धनिष्ठाद्विक एटले धनिष्ठा अने शतभिषा, ज्येष्ठाद्विक एटले ज्येष्ठा अने मूळ तथा अश्लेषाद्विक एटले अश्लेषा अने मघा, आ नव नक्षत्रो राक्षसवर्ग छे. तेमां गुरु शिष्यादिकनां बन्ने नामोनां नक्षत्रो एकज गणमां होय तो परस्पर घणी प्रीति रहे, एकनो मनुष्यवर्ग अने बीजानो देववर्ग होय तो मध्यम प्रीति रहे, ते सिवायना वर्ग होय तो ते अशुभ छे. १०१.

॥ इति प्रतिमाधारणागतिः शिष्यनामकरणं च ॥

हवे विद्यारंभ विषे कहे छे.—

गुरू बुहो अ सुक्को अ सुंदरा मज्झिमो रवी ।
विज्जारंभे ससी पावो सणी भोमा य दारुणा ॥ १०२ ॥
मिगसिर–अद्दा–पुस्सो तिन्नि उ पुव्वा उ मूलमस्सेसा ।
हत्थो चित्ताइ तहा दस वुड्ढिकराइं नाणस्स ॥ १०३ ॥

विद्यारंभमां गुरु, बुध अने शुक्र सुंदर छे, रविवार मध्यम छे, सोमवार पापी (दुष्ट) छे अने शनि तथा मंगळ अतिभयंकर (अति दुष्ट) छे. १०२. मृगशिर, आर्द्रा, पुष्य,

त्रण पूर्वा (पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढा, पूर्वाभाद्रपद), मूळ, अश्लेषा, हस्त अने चित्रा, आ दश नक्षत्रो ज्ञाननी वृद्धि करनारां छे. १०३.

लोचकर्म विषे.—

पुणव्वसु अ पुस्सो अ सवणो अ धणिठिया ।
एएहिं चउहिं रिक्खेहिं लोअकम्माणि कारए ॥ १०४ ॥
कित्तिआहिं विसाहाहिं महाहिं भरणीहि अ ।
एएहिं चउहिं रिक्खेहिं लोअकम्माणि वज्जए ॥ १०५ ॥

पुनर्वसु, पुष्य, श्रवण अने धनिष्ठा, आ चार नक्षत्रोमां लोचकर्म करवुं शुभ छे. १०४. कृत्तिका, विशाखा, मघा अने भरणी, आ चार नक्षत्रोमां लोचकर्म वर्ज्य छे. (अर्थात् आ आठ सिवायनां बीजां नक्षत्रो मध्यम छे.) १०५.

कर्णवेध तथा राजाना दर्शननां नक्षत्रो.—

मिग–अणु–पुण–पुस्सा जिठ–रेवऽस्सिणीआ,
सवण–कर–सचित्ता सोहणा कन्नवेहे ।
कर–सवणऽणुराहा–रेव–पुस्सऽस्सिणीआ,
मिग–धणि–धुव–चित्ता दंसणे भूवईणं ॥ १०६ ॥

मृगशिर, अनुराधा, पुनर्वसु, पुष्य, ज्येष्ठा, रेवती, अश्विनी, श्रवण, हस्त अने चित्रा, एटलां नक्षत्रो कर्णवेधमां सारां छे. हस्त, श्रवण, अनुराधा, रेवती, पुष्य, अश्विनी, मृगशिर, धनिष्ठा, ध्रुव (रोहिणी, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपद) अने चित्रा, ए नक्षत्रो राजाना दर्शनमां शुभ छे. १०६.

वस्त्रधारण.—

सूरे जिन्नं ससी अद्दं मलिणं सणि धारिअं ।
भोमे दुक्खावहं होइ वत्थं सेसेहिँ सोहणं ॥ १०७ ॥

नवुं वस्त्र रविवारे धारण करवाथी (पहेरवाथी) जलदी जीर्ण थाय छे, सोमवारे पहेरवाथी आर्द्र (भीनुं) रहे छे, शनिवारे धारण करवाथी मलिन रहे छे, मंगळवारे पहेरवाथी दुःखकारक थाय छे, अने बीजा (बुध, गुरु अने शुक्र) वारे नवुं वस्त्र पहेरवुं सारुं छे. १०७.

नवां पात्र वापरवा विषे.—

मिग–पुस्सऽस्सिणी हत्थाऽणुराहा चित्त–रेवई ।
सोमो गुरु अ दो वारा पत्तवावारणे सुहा ॥ १०८ ॥

मृगशिर, पुष्य, अश्विनी, हस्त, अनुराधा, चित्रा अने रेवती, ए नक्षत्रो तथा सोम अने गुरु, ए बे वारो नवां पात्र वापरवामां सारां छे. १०८.

गयेली वस्तु पाछी आववा विषे.—

जामाइमुहा चउ चउ असिणाई काण चिबड सज्जंऽधा ।
डुसु वत्त जाइ सज्जे अंधे लब्भइ गयं वत्थु ॥ १०९ ॥

दक्षिण दिशाने आरंभीने चार दिशामां अश्विनीथी आरंभीने चार नक्षत्रो अनुक्रमे मूकवां. ए रीते अठ्यावीश नक्षत्रो मूकवां. ते अनुक्रमे काणां, चीबडां, सज्ज (देखतां) अने आंधळां कहेवाय छे. तेमां काणां अने चीबडां नक्षत्रमां वस्तु गइ होय तो तेनी वातो थया करे अर्थात् मळवानी आशा रहे के न रहे, सज्ज नक्षत्रमां गइ होय तो ते वस्तु जायज अर्थात् पाछी आवे नहीं, अने आंधळां नक्षत्रमां गइ होय तो ते पाछी आवे छे. जे दिशानुं नक्षत्र होय ते दिशामां ते वस्तु गइ छे एम पण जाणवुं. १०९.

नक्षत्रोनो यंत्र.—

काणां	चीबडां	देखतां	आंधळां
अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी
मृगशिर	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य
अश्लेषा	मघा	पूर्वाफाल्गुनी	उत्तराफाल्गुनी
हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूळ	पूर्वाषाढा
उत्तराषाढा	अभिजित्	श्रवण	धनिष्ठा
शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उत्तराभाद्रपद	रेवती
वस्तु दक्षिणमां गइ छे	वस्तु पश्चिममां गइ छे	वस्तु उत्तरमां गइ छे	वस्तु पूर्वमां गइ छे.

गयेली वस्तु जोवानी बीजी रीत.—

रविरिक्खा छब्बाला बारस तरुणा नव परे थेरा ।
थेरे न जाइ तरुणेहिं जाइ बाले भमइ पासे ॥ ११० ॥

सूर्यना नक्षत्रथी छ नक्षत्रो बाळक कहेवाय छे, त्यारपछीनां बार नक्षत्रो जुवान कहेवाय छे अने त्यारपछीनां नव वृद्ध कहेवाय छे. तेमां वृद्ध नक्षत्रमां गयेली वस्तु जाय नहीं (पाछी आवे), जुवान नक्षत्रमां गइ होय तो गयेली वस्तु जाय (पाछी आवे नहीं), अने बाळ नक्षत्रमां गइ होय तो ते पासेज भमे छे, एटले के छेटे जाय नहीं. ११०.

सर्पदंश विषे.—

विसाहा–कित्तिआऽऽसेसा मूलऽद्दा भरणी महा ।
एयाहिं अहिणा दट्ठो कट्ठेणावि न जीवइ ॥ १११ ॥

विशाखा, कृत्तिका, अश्लेषा, मूळ, आर्द्रा, भरणी अने मघा, ए नक्षत्रोमां जो सर्पदंश थयो होय तो ते कष्टे करीने पण (कोइ पण प्रकारे) जीवे नहीं. १११.

रोगनी शांति जोवा विषे.—

पुण–पुस्स उ–फा उ–भ रोहिणीहिं रोगोवसम सत्तदिणे ।
मूलऽस्सिणि कित्ति नवमे सवण–भरणि–चित्त–सयभिसेगदसे ११२
धणि–कर–विसाहिं पक्खे मह वीसइमे उ–खा मिगे मासे ।
अणुराह–रेवइ चिरं तिपुव्व जिट्ठऽद्द–सेस–साइ–मिइ ॥ ११३ ॥

पुनर्वसु, पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद अने रोहिणी, ए नक्षत्रोमां व्याधि थयो होय तो सात दिवसे तेनी शांति थाय छे, मूळ, अश्विनी अने कृत्तिकामां थयो होय तो नव दिवसे शांति थाय छे, श्रवण, भरणी, चित्रा अने शतभिषामां थयो होय तो अगीयार दिवसे शांति थाय छे. ११२. धनिष्ठा, हस्त अने विशाखामां थयो होय तो पखवाडीये शांति थाय छे, मघामां थयो होय तो वीश दिवसे शांति थाय छे, उत्तराषाढा अने मृगशिरमां थयो होय तो एक मासे शांति थाय छे, अनुराधा अने रेवतीमां थयो होय तो चिर काळे शांति थाय छे, तथा त्रण पूर्वा (पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढा, पूर्वाभाद्रपद), ज्येष्ठा, आर्द्रा, अश्लेषा अने स्वातिमां व्याधि थयो होय तो ते मरणज पामे छे. ११३.

औषध शरु करवानां नक्षत्रो.—

चरलहु मिउमूले रोगनिन्नासहेऊ, हवइ खलु पउत्तं ओसहं वाहिआणं ।

चर, लघु, मृदु तथा मूळ, एटलां नक्षत्रोमां व्याधिवाळाने औषध आप्युं होय तो ते रोगना नाशनो हेतु थाय छे.

रोगथी मुक्त थयेलाना स्नान विषे.—

भिगु–ससि पुण–जिट्ठाऽसेस–साइ–महाहिं,
न य कहवि विहेयं रोगमुत्ते सिणाणं ॥ ११४ ॥

शुक्रवारे के सोमवारे तथा पुनर्वसु, ज्येष्ठा, अश्लेषा, स्वाति अने मघा, एटलां नक्षत्रमां रोगथी मुक्त थयेला मनुष्ये कोइ पण प्रकारे स्नान करवुं नहीं. (एटले माथे पाणी रेडवुं नहीं.) ११४.

मृत्यु जोवा विषे.—

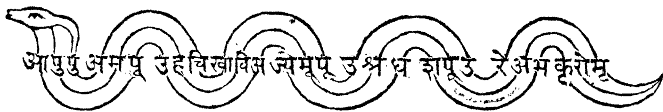
नामनक्खत्तमकिंदू एकनाडीगया जया ।
तया दिणे भवे मच्चू मन्नहा जिणभासिअं ॥ ११५ ॥

नामराशिनुं नक्षत्र, सूर्य अने चंद्र ए त्रणे ज्यारे एक नाडीमां आवे त्यारे तेज दिवसे मृत्यु थाय छे. एम जिनेश्वरनुं वचन छे ते कदापि अन्यथा न होय. ११५.

आई अद्दा मिगं अंते मज्झे मूलं पइट्ठिअं ।
रविंदूजम्मनक्खत्तं तिविद्धो न हु जीवई ॥ ११६ ॥

प्रथम आर्द्रा नक्षत्र मूकवुं, छेल्लुं मृगशिर मूकवुं अने मध्यमां मूळ मूकवुं. पछी सूर्य, चंद्र अने जन्मनुं नक्षत्र ए त्रणेनो वेध थाय तो ते जीवे नहीं. ११६.

स्थापना.—



मृतकार्यमां वर्ज्य नक्षत्रो.—

धुवमिस्सुग्गनक्खत्ता मूलऽद्दा अणुराहया ।
पंचगाई रवी भोमा मयकज्जे विवज्जिया ॥ ११७ ॥

ध्रुव, मिश्र अने उग्र नक्षत्रो, तथा मूळ, आर्द्रा अने अनुराधा ए नक्षत्रो, तथा पंचकादिक (पंचक, यमल अने त्रिपुष्कर) ए योग, तथा रवि अने मंगळ ए वारो मृतकार्यमां वर्ज्य छे. ११७.

दो पणयालमुहुत्ते तीसमुहुत्तेगपुत्तलं काउं ।
नेरइअ दाहिणाए मडा परिट्ठावणं कुज्जा ॥ ११८ ॥

पीस्तालीश मुहूर्त्तनां संजोगीयां नक्षत्रमां बे अने त्रीश मुहूर्त्तनां संजोगीयां नक्षत्रमां एक पुतलुं करीने नैर्ऋत्य के दक्षिण दिशामां ते पुतळानी महा परिष्ठापना करवी, एटले अग्नि संस्कार करवो. ११८.

तिन्नेव उत्तराइं पुणव्वसु रोहिणी विसाहा य।
एए छ नक्खत्ता पणयालमुहुत्तसंजोगा ॥ ११९ ॥
सयभिस-भरणी साई अस्सेस-जिट्ठऽद्द छच्च नक्खत्ता।
पनरस-मुहुत्तजोगा तीसमुहुत्ता पुणो सेसा ॥ १२० ॥

त्रण उत्तरा (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपद), पुनर्वसु, रोहिणी, विशाखा, ए छ नक्षत्रो पीस्तालीश मुहूर्त्तनां संयोगीयां कहेवाय छे. ११९. शतभिषा, भरणी, स्वाति, अश्लेषा, ज्येष्ठा अने आर्द्रा, ए छ नक्षत्रो पंदर मुहूर्त्तनां संयोगीयां कहेवाय छे, बाकीनां पंदर नक्षत्रो त्रीश मुहूर्त्तनां संयोगीयां कहेवाय छे. १२०.

॥ इति मृतक्रिया ॥

हवे दीक्षा तथा प्रतिष्ठा विषे कहे छे.—

मास-दिण-रिक्खसुद्धिं मुणिऊणं सिद्धछायधुवलग्गे।
बारंगुलम्मि सुद्धे दिक्खपइट्ठाइअं कुज्जा ॥ १२१ ॥

मास, दिवस अने नक्षत्र ए त्रणेनी शुद्धि जाणीने सिद्ध छाया अथवा ध्रुव लग्न होय त्यारे अथवा बार आंगळना शंकुनी छाया शुद्ध होय त्यारे दीक्षा तथा प्रतिष्ठा विगेरे शुभ कार्यो करवां. १२१.

हरिसयण अकम्मण अहिअमास गुरिसुक्कि अत्थि सिसुवुड्ढे।
ससि नट्ठे न पइट्ठा दिक्खा सुक्कऽत्थि वि न दुट्ठा ॥ १२२ ॥

हरि शय्यामां सुता होय एटले चतुर्मासमां, अधिक मासमां, गुरु शुक्रनो अस्त होय त्यारे, गुरु शुक्रनी बाल्यावस्था के वृद्धावस्था होय त्यारे तथा चंद्रनो नाश (अस्त) होय त्यारे प्रतिष्ठा तथा दीक्षा करवी नहीं. तेमां शुक्रना अस्तमां दीक्षा दुष्ट नथी, एटले के मात्र शुक्रनो अस्त होय तो दीक्षा देवामां दोष नथी. १२२.

अवजोगकुलिअभद्दा उक्काई जत्थ तं दिणं वज्जे।
संकंति साइदिणतिह गहणे इगु आइ सग पच्छा ॥ १२३ ॥

अवजोग, कुलिक, जद्रा (विष्टि) तथा उल्कापात विगेरे जे दिवसे होय ते दिवसने वर्जवो. संक्रांतिनो दिवस, तेनी पहेलानो एक दिवस अने तेनी पछीनो एक दिवस एम त्रण दिवस वर्जवा. तथा (सूर्य चंद्रना) ग्रहणमां पहेलानो एक दिवस, एक ग्रहणनो दिवस अने त्यारपछीना सात दिवस एम नव दिवस वर्जवा. १२३.

सुद्धतिही सुहवारे सिद्धाऽमियराजजोगपमुहाइं ।
जत्थ हवंति सुहाइं सुहकज्जे तं दिणं गिज्झं ॥ १२४ ॥

शुद्ध तिथि अने शुज्ञ वारने दिवसे ज्यारे सिद्धि योग, अमृत योग अने राज योग विगेरे शुज्ञ योगो होय ते दिवस शुज्ञ कार्यमां ग्रहण करवो. १२४.

हत्थऽणुराहा-साई सवणुत्तर-मूलरोहिणी पुस्सा ।
रेवइ-पुणवसु इअ दिक्खपइट्ठा सुहा रिक्खा ॥ १२५ ॥

हस्त, अनुराधा, स्वाति, श्रवण, त्रण उत्तरा, मूळ, रोहिणी, पुष्य, रेवती अने पुनर्वसु, आटलां नक्षत्रो दीक्षा अने प्रतिष्ठामां शुज्ञ छे. १२५.

अस्सिणि-सयजिस-पु-जा एसु वि दिक्खा सुहा विणिद्दिट्ठा ।
मह-मिग-धणि-पइट्ठा कुज्जा वज्जिज्ज सेसाइं ॥ १२६ ॥

उपर कह्यां उपरांत अश्विनी, शतजिषा अने पूर्वाजाद्रपद, एटलां नक्षत्रोमां पण दीक्षा आपवी सारी कही छे. तथा मघा, मृगशिर अने धनिष्ठा, ए नक्षत्रोमां पण प्रतिष्ठा करवी, बाकीनां नक्षत्रो वर्ज्य छे. १२६.

कारावगस्स जम्मे दसमे सोलसमेऽट्ठारसे रिक्खे ।
तेवीसे पणवीसे न पइट्ठा कह वि कायव्वा ॥ १२७ ॥

प्रतिष्ठा करावनारना जन्मनुं, दशमुं, सोळमुं, अढारमुं, त्रेवीशमुं अने पचीशमुं, आटलां नक्षत्रो सारां होय तोपण तेमां सर्वथा प्रतिष्ठा करवी नहीं. १२७.

संझागयं रविगयं विड्डेरं सग्गहं विलंबं च ।
राहुहयं गहजिन्नं वज्जए सत्त नक्खत्ते ॥ १२८ ॥

शुज्ञ नक्षत्र पण संध्यागत होय, सूर्यगत होय, विड्वर होय, ग्रह सहित होय, विलंबित होय, राहुथी हणायुं होय के ग्रहथी जेदायुं होय, आ सात प्रकारनां नक्षत्रो वर्जवा लायक छे. १२८.

अत्थमणे संझागय रविगय जत्थ ठिउ अ आइच्चो ।
विड्डेरमवद्दारिय सग्गह कूरग्गहठिअं तु ॥ १२९ ॥
आइच्च पिठउ ऊ विलंबि राहुहयं जहिं गहणं ।
मझेण गहो जस्स उ गच्छइ तं होइ गहभिन्नं ॥ १३० ॥
संझागयम्मि कलहो होइ विवाउ विलंबि नरकत्ते ।
विड्डेरे परविजउ आइच्चगए अनिव्वाणं ॥ १३१ ॥
जं सग्गहम्मि कीरइ नरकत्ते तत्थवि ग्गहा होइ ।
राहुहयम्मि मरणं गहभिन्ने सोणि उग्गालो ॥ १३२ ॥

सूर्य अस्त समये जे नक्षत्र पूर्वमां ऊगे छे ते संध्यागत कहेवाय छे. जे नक्षत्रमां सूर्य रह्यो होय ते रविगत (सूर्यगत) नक्षत्र कहेवाय छे. जे नक्षत्र वक्री ग्रहे अधिष्ठित होय ते विड्डर कहेवाय छे. जे नक्षत्र क्रूर ग्रहे अधिष्ठित होय ते सग्रह कहेवाय छे. १२९. जे नक्षत्र सूर्यनी पाछळ होय ते विलंबी कहेवाय छे. जे नक्षत्रमां ग्रहण थयुं होय ते राहुहत कहेवाय छे. जे नक्षत्रनी मध्यमां थइने कोइ ग्रह जतो होय ते ग्रहभिन्न कहेवाय छे. १३०. आ संध्यागत विगेरे नक्षत्रोमां कार्य करवाथी शुं फळ थाय छे ? ते कहे छे—संध्यागत नक्षत्रमां कार्य करवाथी कलह थाय छे, विलंबी नक्षत्रमां करवाथी विवाद थाय छे, विड्डरमां करवाथी शत्रुनो जय थाय छे, सूर्यगतमां करवाथी अनिर्वाण (अशांति) थाय छे. १३१. जे सग्रह नक्षत्रमां कार्य करे छे तेनो पण ग्रह थाय छे एटले ते पकडाय छे, राहुहतमां कार्य करवाथी मरण थाय छे अने ग्रहभिन्न नक्षत्रमां कार्य करवाथी लोहीनुं वमन थाय छे. १३२.

रविरिक्खाउ हेया उवग्गहा पंचमऽठ-चउदसमा ।
अठारस उगुणीसा बावीसा तेवीस चउवीसा ॥ १३३ ॥

सूर्यना नक्षत्रथी पांचमुं, आठमुं, चौदमुं, अढारमुं, ओगणीशमुं, बावीशमुं, त्रेवीशमुं अने चोवीशमुं, एटलां नक्षत्रो उपग्रह कहेवाय छे. ते शुभ कार्यमां तजवा योग्य छे. १३३.

॥ इति उपग्रहाः ॥

एकार्गल योग विषे.—

सेगविसमजोगऊ सम अऊ चउदसंख सिरिरिक्कम् ।
दाउं चउद्दससिलाए ससिरवि इक्कग्गलं वज्जे ॥ १३४ ॥

प्रथम ३७ मी गाथामां विष्कंभ १, अतिगंड ६, शूळ ९, गंड १०, व्याघात १३, वज्र १५, व्यतीपात १७, परिघ १९, वैधृति २७, ए नव अशुभ योगो कह्या छे. तेमां जे

विषम (एकी) संख्यावाळो योग होय तेमां एक वधारीने तेना अर्ध करवा अने सम (बेकी) संख्यावाळो होय तेना अर्ध करी पछी चौद वधारवा. जे संख्या आवे तेटलामुं नक्षत्र एकार्गल यंत्रने माथे मूकी त्यारपछीनां नक्षत्रो अनुक्रमे मूकवां. ते यंत्र तेर लींटी आडी अने एक ऊभी एम चौद लींटीनुं करवुं. पछी सूर्य अने चंद्र जे नक्षत्रमां होय ते नक्षत्र उपर सूर्य अने चंद्र मूकवा. जो ते बन्ने सामसामा आवे तो ते एकार्गल वर्जवा योग्य छे. जेमके विष्कंभ योग पहेलो छे. ते विषम छे, माटे एक उमेरवाथी बे थया. तेने अर्ध करवाथी एक आव्यो, तेथी पहेलुं अश्विनी नक्षत्र माथे मूकवुं. ए रीते गंड योग दशमो छे. ते सम छे तेने अर्ध करवाथी पांच आवे. तेमां चौद उमेरवाथी ओगणीश थाय, तेथी ओगणीशमुं मूळ नक्षत्र माथे मूकवुं. शूल योग नवमो छे ते विषम छे, तेथी तेमां एक उमेरवाथी दश थाय, तेनुं अर्ध पांच थाय, तेथी पांचमुं नक्षत्र मृगशिर माथे मूकवुं. १३४.

मृगशिर

रोहिणी	आर्द्रा
कृत्तिका	पुनर्वसु
भरणी	पुष्य
अश्विनी	अश्लेषा
रेवती	मघा
उत्तरा	पूर्वा
पूर्वा	उत्तरा
शतभिषा	हस्त
धनिष्ठा	चित्रा
श्रवण	स्वाति
अभिजित्	विशाखा
उत्तरा	अनुराधा
पूर्वा	ज्येष्ठा

मूळ

हवे पात योग कहे छे.—

अस्से म चि अणु सव रे विसमारेहा उ सेसमज्झिहिउं ।
रविरेहस्सिणि गणिए छठे रिक्के विसमि पाउ ॥ १३५ ॥

अश्लेषा १, मघा २, चित्रा ३, अनुराधा ४, श्रवण ५, रेवती ६, आ नक्षत्रोथी उत्क्रमे रेखा करी तेमां शेष नक्षत्रो स्थापन करी ज्यां सूर्य नक्षत्र होय त्यांसुधी आ छ नक्षत्रोथी गणवुं. जे जे संख्या आवे अश्विनीथी उत्क्रमे गणतां ते ते संख्यावाळां नक्षत्रमां पात जाणवो. तात्पर्य ए छे जे सूर्य कृत्तिकानो छे तो अश्लेषादिक छ नक्षत्रथी सूर्य २२—२१—१७—१४—९—४ थाय तो अश्विनीथी उत्क्रमे बावीशमुं विगेरे पुनर्वसु, पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, स्वाति, पूर्वाषाढा अने पूर्वाभाद्रपद आदि छ नक्षत्रमां पात जाणवो. १३५.

रविमुक्का निअरिक्का बार छम तिअ तिवीसं छठं च ।
पणवीस अिगवीसं कुणंति लत्ताहयं रिक्कं ॥ १३६ ॥

सूर्य जे नक्षत्रमां रहेल होय ते नक्षत्रथी बारमा नक्षत्रने, चंद्र आठमा नक्षत्रने, मंगळ त्रीजा नक्षत्रने, बुध त्रेवीशमा नक्षत्रने, गुरु छठा नक्षत्रने, शुक्र पचीशमा नक्षत्रने शनि आठमा नक्षत्रने अने राहु एकवीशमा नक्षत्रने लत्ता दोषथी हणेलुं करे छे. १३६.

हवे वेधने कहे छे.—

सत्त सिलाए कित्तिअमाई रिक्के ठवित्तु जोएह ।
गहवेहमिठरिक्के उवरि अहो वा पयत्तेण ॥ १३७ ॥

सात शलाका (लींटी) आडी तथा उभी करवी. पछी मध्याळे कृत्तिकाथी अनुक्रमे २८ नक्षत्रो मूकीने इष्ट नक्षत्रने विषे प्रयत्न करीने ग्रहनो वेध जोवो, एटले के सप्त शलाका यंत्रमां जे नक्षत्रो मूक्यां होय त्यां जे ठेकाणे संभवे ते ठेकाणे सर्वे ग्रहो मूकवा. तेमां जो सौम्य ग्रह अने पाप ग्रह सामसामा आवे तो ते वेध समजवो. ते वेध अशुभ छे. १३७.

सप्त शलाका यंत्र.—

	कृ.	रो.	मृ.	आ.	पुन.	पुष्य.	अश्ले.	
भ.								मघा
अ.								पूर्वा
रे.								उत्तरा
उ.								हस्त
पू.								चित्रा
श.								स्वाति
ध.								विशाखा
	श्र.	अभि.	उ.	पू.	मू.	ज्ये.	अनु.	

पंच शलाका यंत्रवडे ग्रहवेध.—

पंचसिलाए दो दो रेहा कोणेसु रोहिणीमुक्का ।
दिसि धुरि रिक्खा उ कमा वए विलोइज्ज वेहमिहं ॥ १३० ॥

पांच शलाकानो यंत्र उपर प्रमाणे करी खूणामां बबे रेखाउ करवी. पछी दिशाने मथाळे रोहिणीथी अनुक्रमे नक्षत्रो मूकवां. पछी उपर प्रमाणे ग्रह मूकीने तेनो वेध दीक्षा विषे जोवो. यंत्र नीचे प्रमाणे.—१३०.

	कृ.	रो.	मृ.	आ.	पु.	पु.	अ.	
भ.								म.
अ.								पू.
रे.								उ.
उ.								ह.
पू.								चि.
श.								स्वा.
ध.								वि.
	श्र.	अभि.	उ.	पू.	मू.	ज्ये.	अनु.	

छाया लग्न विषे.—

सिद्धछायालग्गं रविकुजबुहजीव संकुपायकमा ।
एगारस नव अह सग अह्ठा (नव) सेसवारेसु ॥ १३९ ॥

छाया लग्न आ प्रमाणे सिद्ध थाय छे.—शंकुना आंक अथवा पोतानी छायानां पगलां रविवारे अगीयार, मंगळवारे नव, बुधवारे आठ अने गुरुवारे सात थाय तथा बीजा वारोमां साढा आठ साढा आठ थाय ते वखते छाया लग्न कहेवाय छे. ते सर्व कार्यमां शुभ छे. १३९.

ध्रुव चक्रनुं फळ.—

तिरिछगे धुवे दिरका पइठाइ सुहंकरे ।
उद्धठिए धयारोव खित्तगाई समायरे ॥ १४० ॥

ध्रुव तिरछो होय त्यारे दीक्षा, प्रतिष्ठा विगेरे कार्य शुभंकर छे, अने ध्रुव ऊर्ध्व रह्यो होय त्यारे ध्वजारोपण तथा क्षेत्र वास्तु विगेरे करवां. अहीं एम समजवुं के—ध्रुवना तारानी पासे बे नाना तारा होय छे ते तारा तिरछा होय तो ध्रुव तिरछो कहेवाय छे, अने ते तारा उपर नीचे होय तो ध्रुव पण ऊर्ध्व कहेवाय छे. १४०.

शंकु छाया लग्न विषे.—

वीसं सोलस पनरस चउदस तेरस य बार बारेव ।
रविमाइसु बारंगुलसंकुछायंगुला सिद्धा ॥ १४१ ॥

बार आंगळनो शंकु करवो. पछी रविवारे ते शंकुनी छाया वीश आंगळनी थाय, सोमवारे सोळ आंगळ, मंगळवारे पंदर आंगळ, बुधवारे चौद आंगळ, गुरुवारे तेर आंगळ, शुक्रवारे बार आंगळ तथा शनिवारे पण बार आंगळनी छाया थाय त्यारे ते सिद्ध छाया कहेवाय छे. १४१.

प्रथम गोचरी, नंदी विगेरे विषे.—

तिरकुग्गमिस्स रिरकाणि चिच्चा भोमसणिछरं ।
पढमं गोअरं नंदी पमुहं सुहमायरे ॥ १४२ ॥

तीक्ष्ण, उग्र अने मिश्र नक्षत्रोने तथा मंगळ अने शनि ए बे वारने तजीने पहेली गोचरी तथा नंदी (नांद) विगेरे शुभ कार्य करवां. १४२.

इअ जोगपईवाउ पयडत्थपएहिं विहिअ उज्जोआ ।
मुणिमणभवणपयासं दिणसुद्धिपईविआ कुणउ ॥ १४३ ॥

आ रीते योगरूपी प्रदीप थकी प्रगट अर्थवाळां पदोए करीने जेनो उद्योत कर्यो छे एवी आ दिनशुद्धिरूपी दीपिका मुनिजनोनां मनरूपी भवनना प्रकाशने करो. १४३.

सिरिवयरसेणगुरुपट्टनाह सिरिहेमतिलयसूरीणं ।
पायपसाया एसा रयणसिहरसूरिणा विहिआ ॥ १४४ ॥

श्री वज्रसेन गुरुनी पाटना स्वामी श्री हेमतिलक सूरिना पादप्रसादथी आ दिनशुद्धि रत्नशेखर सूरिए रची छे.

॥ इति श्रीरत्नशेखरसूरिविरचिता दिनशुद्धिप्रदीपिका ॥

